



1990

[illegible][illegible][illegible]

25



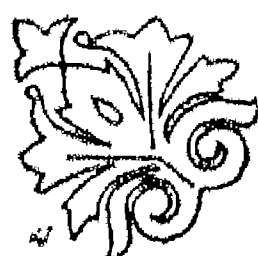




मयं सज्ज ॥ सेवक महावीर शरन् ॥



श्रीरामायणी माधवदासजी,  
तच्छिष्य रामायणी रामदासजी,





श्रीमते हनुमाने नमः

## श्रीरामचरित्र मानम रामायण की

### ॥ भूमिका ॥

मने मजन महानुभावोंको इस अथार समार मागर में हुवेन हुण  
जीवों के नाना प्रकार पाखण्ड मतबादी म्यथाहादि जल जन्तुओं के  
मयमें अत्यन्त व्याकुल जीवों को उद्धारणार्थ तथा देवादिकों को भी  
अत्यन्त दुर्लभ अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ के प्राप्त करने वाले  
शरीर का व्यर्थ मोते हुये मनुष्यों के उपकारार्थ परम कृपाधाम चारों  
वेद अथारही पराण छवों शास्त्रामिल विद्यापारावर्गाण अशरण शरण  
श्री जानकी रमण पदपदुम पराग लुब्ध मधुकर् श्री १०८ श्रीगोस्वामी  
तुलसीदासजी ने कोटिन कामधेनु कल्पवृक्ष के महिमाको अति क्रमण  
करनेवाला श्रीरामचरित्र मानमरामायण नामक ग्रन्थको निर्माण करिके  
कवितामृत बाणोंको बाग छिद्र करके हुये मजन महानुभावोंको हृदयरूप  
क्षेत्र में कल्याणतार्या लहलहाती हुई प्रेम भक्ति को बढ़ाये श्रीमीनाराम  
भक्तिलिङ्गिनी कथा में आगेपर बहुतसे दर्जन लोगोंने अमृतके तुल्य  
गोस्वामी जी की उक्तिमें विपरीत शेषक मिलाकर दीप्त करदिया इसमें  
श्रीरामायण कथानुरागियों को पठन पाठन में बहुतकंश होता रहा और  
कटे एक यंत्रालय में शुद्धकरिके मुद्रित की गई जैसे श्रीकाशी निवासी  
श्रीमान पाण्डित कन्दन पाठकजी द्वारादिके शोध हुये पुस्तक छपने पर  
भी महाशयों की शंका निवृत्ति नहुई इस हेतु श्रीअयोध्या निवासी परम  
वैष्णव श्री १०८ श्रीमहाराज रामायणी माधवदामजी के म० शिष्य  
रामदामजीने बहुपरिश्रममें जो प्रति सम्बत् १६६१ का लेख श्रीअयोध्या  
पुरीमें मधुरअली जीकेस्थानमें हे उममें व ५० रामगुलाम मिर्जापुर निवासीने  
१७१४ के सम्बत्की लिखीपुस्तकमें लिखी. उमपरमें लाला ब्रह्मलाल  
मिर्जापुर वासीने लिखी और श्रीकाशीजीमें छोटी पियरीपर भगवतदास

क्षत्री के पास १७२१ के मम्बत की लिखी पुस्तक और दो दोरी १७२२  
 के मम्बत की लिखी मिली इन पुस्तकों व श्री चन्दन पाठक जी व  
 पं० रामकुमार जी रामायणी की गोदा पुस्तक में अति शीघ्रममें यथायं  
 पाठ शुद्ध करके श्री रामायणानुशासियों के लिये तृतीय आर्चान उपवाट  
 परन्तु अत्यन्त शुद्ध होने के कारण आते ही समय में हाथों द्वारा आदर  
 पूर्वक महाशयों ने ग्रहण कर लिया अब ऐसे समय पर एक प्रति में न  
 रही और मजनों की आशा न पूरी होने के कारण नयी आर्चान पुनः  
 उक्त रामायणी जी में संशोधन कराके अति उत्तम बिकन कागज में श्री  
 अयोध्या निवासी स्वर्गीय महंत श्री विश्वभद्राजी के शिष्य राजगोपाल  
 पाठशालाध्यक्ष श्रीमान महन्त रामदास जी की महायत्ना में आपत्ता के  
 प्रकाशित किया वर्तमान समय में कागज म्यादी बगैरह के अत्यन्त महंगे  
 होने पर भी आदक मजनों के सुभान के लिये मूल्य केवल दोही २) रुपया  
 रक्कवा गया है और श्री रामायणी जी न आपनी शोभी हुई रामायण  
 तथा अपने नाम का मदा के लिये सर्वोपकार हम को दादया है जिसमें  
 कोई महाशय उक्त रामायणी जी के नाम में क्या नहीं सक्त है रामायणी  
 जी की शोभी हुई प्रति में यदि किसी महाशय की शंका या पाठ में भ्रम  
 हो तो महान्मा जी में मंदिर निवास करके पाठ कर करें ॥

## शंकानिवृत्त करने का पता

रामायणी रामदास जी प्रमोदवन

श्री रामायणी जी की कुटिया

श्री अयोध्याजी

## पुस्तक मिलनेका पता

मुंशी मथुराप्रसाद

बुगेलर श्री अयोध्याजी (अवध)

\* श्री: \*

अथ श्री १०८ महोस्वामि तुलसीदासजीकृत

श्रीरामचरित्र मानस

# रामायण का मुखपत्र



श्री १०८ महाराज परम वैष्णव श्रीअयोध्या निवासी श्रीरामायणी माधवदासजी की शुद्ध की हुई सम्बत् १६६१ की लिखी हुई पुस्तक जो अयोध्या में श्री मधुर अली जी के ऽस्थान में स्थित है उसी के अनुकूल तथा अन्य प्रतियोंसे मिलाकर चतुर्थावृत्ति छापनेको पं० रामरत्न बाजपेयी जी को दी थी परन्तु ईश्वरेक्षा आपका स्वास्थ्य अच्छा न था इस कारण छापेखाने की गलती से कुछ अशुद्धियां हो गई हैं जिनका शुद्धाशुद्ध पत्र प्रत्येक काण्ड के अखीर में लगा है जो कोई रामायण अनुरागी पाठ करें व पढ़ें वह शुद्धाशुद्ध पत्र के अनुकूल शुद्ध करलेंगे ।

ता० ११-७-१८

आप का

श्री रामायणी रामदास जी

श्री रामायणी जी की कुटिया

अयोध्या जी.





❀ श्रीः ❀

सीता स्वामा विजयतेतराम् ।

## अथ रामायण बालकाण्डम् ॥

श्लोकाः--वर्णानामर्थसंधानांरसानांछन्दसामपि ॥ मंगलानांचकर्तारौ  
वन्देबाणोविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशंकरोबंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥  
याभ्यांविनानपश्यंतिसिद्धा स्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥ वंदेबोधमयंनित्यं  
गुरुशंकररूपिणं ॥ यमाश्रितोहिवकोपिचन्द्रःसर्वत्रबन्धते ॥ ३ ॥ सीता  
रामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदेविशुद्धविज्ञानौकबीश्वरकपी  
श्वरौ ॥ ४ ॥ उद्रवस्थिति संहारकारिणीक्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करीं  
सीतांनतोहंरामबलभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलंब्रह्मादि  
देवासुरा । यत्सत्त्वादमृषैवभातिसकलंरज्जौयथाहेर्ध्रमः ॥ यत्पादप्लवमेक  
मेवहिभवांभोधस्तितीर्षावतां ॥ वंदेहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंह-  
रिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसंमतंयद्रामायणेनिगदितंकचिदन्य  
तोपि ॥ स्वांतःसुखायतुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुल  
मातनोति ॥ ७ ॥

सौ० जो सुमिरत सिधिहोइ, गननायक करिवर वदन ॥  
करौ अतुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभगुन सदन ॥ १ ॥  
मूकहोइ वाचाल, पंगुचढइ गिरिवर गहन ॥  
जासुकृपासो दयाल, द्रवौसकल कलिमल दहन ॥ २ ॥  
नीलसरोरुह स्याम, तरुन अरुन वारिज नयन ॥  
करौ सो मम उरधाम, सदा छीर सागर सयन ॥ ३ ॥  
कुंद इंदुसम देह, उमा रमन करुनाअयन ॥



जाहि दीनपर नेह, करौ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥  
 बंदों गुरुपद कंज, कृपासिंधु नर रूप हरि ॥  
 महा मोहतमपुंज, जासु वचन रविकर निकर ॥ ५ ॥

बंदों गुरु पद पदुम परागा \* सुरुचिसुवास सरसअनुरागा  
 अमिअमूरि मय चूरनचारु \* समनसकलभवरुजपरिवारु  
 सुकृतसंभुतन विमलविभूती \* मंजुल मंगल मोद प्रसूती  
 जनमनमंजुमुकुरमल हरनी \* कियेतिलकगुनगनबसकरनी  
 श्रीगुर पदनषमनिगनजोती \* सुमिरतदिव्यदृष्टिजेहिहोती  
 दलन मोह तमसो सुप्रकासू \* बडे भाग उर आवै जासू  
 उघरहिंविमलविलोचनहीके \* मिटहिं दोषदुषभवरजनीके  
 मूझाहिरामचरितमानिमानिक \* गुपुतप्रगटजहँजो जेहिषानिक  
 दो० जथा सु अंजन अंजि दृग, साधक ~~सिद्ध सुखान~~ ॥  
 कौतुक देषहिं सेलवन, भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरुपद मृदुमंजुलरजअंजन \* नयनअमियदृगदोषविमल  
 तेहिकरिविमलविवेकविलोचन \* बरनउंरामचरित भवमोचन  
 बंदों प्रथम मही सुर चरना \* मोहजनित संसयसब हरना  
 सुजनसमाजसकलगुनषानी \* करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी  
 साधुचरितसुभसरिसकपासू \* निरसविसदगुनमयफलजासू  
 जोसहिदुष पर छिद्रदुरावा \* बंदनीय जेहिंजग जसपावा  
 मुदमंगल मय संत समाजू \* जोजग जंगम तीरथ राजू  
 रामभगतिजहँसुरसरिधारा \* सरसै ब्रह्म विचार प्रचारा  
 विधिनिषेधमयकलिमलहरणी \* करमकथारविनंदिनि बरनी  
 हरिहर कथा विराजतिवेनी \* सुनत सकल मुदमंगलदेनी

वटविश्वासअचलनिजधर्मा ✽ तीरथ राजसमाज सुकर्मा  
सबहिसुलभसबदिनसबदेसा ✽ सेवत सादर समन कलेसा  
अकथ अलौकिकतीरथराऊ ✽ देइसद्य फलप्रगट प्रभाऊ  
दो० सुनिसमुझहिं जनमुदितमन, मज्जहिंअतिअनुराग ।

लहहिं चारिफल अछततन, साधु समाज प्रयाग २ ॥

मज्जनफलपेविअततकाला ✽ काकहोहिं पिकबकौमराला  
सुनिआचरजकरै जनिकोई ✽ सतसंगति महिमानहिंगोई  
बालमीक नारद घट जोनी ✽ निजरमुषनिकहीनिजहोनी  
जलचरथलचरनमचरनाना ✽ जे जड चेतन जीवजहाना  
मतिकीरतिगतिभूतिभलाई ✽ जबजेहिजतनजहांजेहिपाई  
सो जानब सतसंग प्रभाऊ ✽ लोकहु बेद नआन उपाऊ  
बिनु सतसंग विवेक न होई ✽ रामकृपा बिनु सुलभ नसोई  
सत संगति मुदमंगल मूला ✽ सोइफलसिधिसबसाधनफूला  
सठसुधरहिं सतसंगति पाई ✽ पारस परस कुधातु सुहाई  
विधिवससुजनकुसंगतिपरहीं ✽ फनिमनिसमनिजगुनअनुसरहीं  
विधिहरिहरकविकोबिदानी ✽ कहतसाधुमहिंमासकुचानी  
सोमोसन कहिजातन कैसे ✽ साकबनिकम्मनिगनगुनजैसे  
दो० बंदौं संत समानचित, हित अनहित नहिं कोउ ।

अंजलिगतसुभ सुमन जिमि, समसुगंध करदोउ ॥

संतसरल चितजगत हित, जानि सुभाउ सनेहु ।

बाल बिनय सुनिकरि कृपा, राम चरन रतिदेहु ॥ ३ ॥

बहुरिवंदि पलगन सतिभाए ✽ जेबिनुकाज दाहिनहुं बाए  
पराहितहानिलम जिन्हकरे ✽ उजरे हरष विषाद बसेरे





तेहिते कछु गुन दोष वषाने ✽ संग्रहत्यागन विनु पहिचाने  
 भलेउपोचसबविधिउपजाए ✽ गनि गुनदोष वेद बिलगाए  
 कहहिं वेद इतिहास पुराना ✽ विधिप्रपंचगुनअवगुनसाना  
 दुष सुष पापपुन्य दिनराती ✽ साधुअसाधुसुजातिकुजाती  
 दानव देव ऊंच अरु नीच ✽ अमिअसजीवनमाहुरमीच  
 माया ब्रह्म जीव जगदीसा ✽ लच्छिअलच्छिरंकअवनीसा  
 कार्सीमगसुरसरिक्रमनासा ✽ मरु मालव महिदेव गवासा  
 सरगनरक अनुराग विरागा ✽ निगमअगम गुनदोषविभागा  
 दो० जड चेतन गुन दोष मय, बिश्व कीन्ह करतार ।

संतहंस गुनगहहिं पय, परि हरि बारि विकार ॥ ६ ॥

असबिवेक जबदेइ विधाता ✽ तबतजिदोषगुनहिंमनराता  
 काल सुभाउ करमवरिआई ✽ भलेउ प्रकृतिवसचुकइभलाई  
 सोसुधारिहरिजनाजिमिलेहीं ✽ दलिदुखदोष विमलजसदेहीं  
 षलउ करहि भलपाइ सुसंगू ✽ मिटइनमलिनसुभाउअभंगू  
 लषि सुवेष जग बंचक जेऊ ✽ बेष प्रताप पूजिअहि तेऊ  
 उघरहिं अंत न होइ निबाहू ✽ कालनेमि जिमिरावनराहू  
 किएहुँ कुबेष साधु सनमानू ✽ जिमिजग जामवंत हनुमानू  
 हानि कुसंग सुसंगाति लाहू ✽ लोकहु वेदविदित सबकाहू  
 गगन चढै रजपवन प्रसंगा ✽ कीचहि मिल्इनीचजलसंगा  
 साधुअसाधुसदनसुकसारी ✽ सुमिरहिं रामदेहिं गनिगारी  
 धूम कुसंगाति कारिष होई ✽ लिषिअ पुरानमंजुमसि सोई  
 सोइजलअनलअनिलसंघाता ✽ होइजलदजग जीवन दाता  
 दो० ग्रह भेषजजल पवनपट, पाइ कुजोग सुजोग ।

होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग, लषहिं सुलच्छन लोग ॥  
 सम प्रकास तम पाषडुहं, नाम भेद विधि कीन्ह ।  
 ससिपोषकसोषक समुशि, जगजस अपजस दीन्ह ॥  
 जडचेतन जग जीवजत, सकल राममय जानि ।  
 बंदों सबके पद कमल, सदा जोरि जुग पानि ॥  
 देव दनुज नर नाग षग, प्रेत पितर गंधर्व ।  
 बंदों किन्नर रजनिचर, कृपाकरहु अब सर्व ॥ ७ ॥

आकर चारिलाष चौरासी \* जातिजीवनभजलथलवासी  
 सीयराममय सबजगजानी \* करें प्रनाम जोरि जुगपानी  
 जानि कृपाकर किंकर मोहू \* सबमिलिकरहुछाडिछलछोहू  
 निजबुधिवलभरोसमोहिनाहीं \* तातेंबिनय करें सबपाहीं  
 करनचहों रघुपतिगुनगाहा \* लघुमतिमोरिचरितअवगाहा  
 मूझन एको अंग उपाऊ \* मनअति रंक मनोरथ राऊ  
 मतिअतिनीचिऊंचिरुचिआछी \* चाहिअअमिअजग जुरैनछांछी  
 छमिहहिंसजजनमोरिदिठार्ई \* सुनिहहिं बालवचनमनलार्ई  
 ज्योंबालक कहतोतरिवाता \* सुनहिंसुदितमनपितुअरुमाता  
 हंसिहहिंकूरकुटिलकुविचारी \* जे परदूषन भूषन धारी  
 निजकवित्तकेहिलागन नीका \* सरसहोउअथवाअतिफीका  
 जेपरभनितिसुनत हरषाहीं \* ते वरपुरुष बहुत जग नाहीं  
 जगबहुर सरसरसमभाई \* जेनिजबाढिबहहिं जलपाई  
 सज्जनसमष्ट सिधुसमकोई \* दोष धूर बिधुबाढे जोई  
 मास छोट अनिलाष बड, करउं एक बिस्वास ।  
 पहिहिं सुष सुनि सुजन जन, पलकरिहहिं उपहास ॥

पलपरिहास होइ हितमोरा ✽ काक कहहिं कलकंठकठोरा  
 हंसहि वकगादुर चातकही ✽ हंसहिंमलिनपलबिमलवतकही  
 कवितरसिक न रामपदनेहू ✽ तिन्हकहैं सुषदहाँसरसएहू  
 भाषाभनितिभोरिमातिमोरी ✽ हंसिबे जोगहँसे नहिं षोरी  
 प्रभुपदप्रीतिनसामुझिनीकी ✽ तिन्हहिंकथासुनिलागिहिफीकी  
 हरिहरपदरतिमातिनकुतरकी ✽ तिन्हकहैंमधुरकथा रघुबरकी  
 रामभगतिभूषित जिअजानी ✽ सुनिहहिंसुजनसराहि सुबानी  
 कविनहोउँ नहिंचतुरप्रवीनू ✽ सकल कला सब विद्याहीनू  
 आपरअरथ अलंकृतनाना ✽ छंद प्रबंध अनेक विधाना  
 भाव भेद रस भेद अपारा ✽ कवितदोषगुनाविविधिप्रकारा  
 कवित विवेक एकनहिंमोरे ✽ सत्यकहौलिखि कागदकोरे  
 दो० भनिति मोरि सबगुनरहित, विस्वविदित गुनएक ।

सो विचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हकें विमलविवेक९  
 एहिमहरघुपतिनामउदारा ✽ अतिपावनपुरान श्रुतिसारा  
 मंगल भवन अमंगलहारी ✽ उमासहितजोहिजपतपुरारी  
 भनितिबिचित्रसुकविकृतजोऊ ✽ रामनाम बितु सोहतसोऊ  
 विधुबदनी सबभांति सँवारी ✽ सोह न बसन बिना बरनारी  
 सबगुनरहितकुक्कविकृतबानी ✽ रामनामजस अंकितजानी  
 सादरकहहिंसुनहिंबुधताही ✽ मधुकंरसरिससंत गुनग्राही  
 जदपिकवित रसएकौ नहिं ✽ रामप्रताप प्रगटएहि माहीं  
 सोइभरोस मोरे मन आवा ✽ केहिनसुसंग बढूपन पावा  
 धूमौ तजै सहज करुआई ✽ अगर प्रसंग सुगंध बसाई  
 भनितिभेदेसबस्तुभलिवरनी ✽ रामकथा जगमंगल करनी



छं० मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथकी  
गति कूरकविता सरितकीज्यों सरित पावन पाथकी  
प्रभुसुजस संगतिभनितिभलिहोइहि सुजनमनभावनी  
भवअंगभूति ममान की सुमिरत मुहावनि पावनी

दो० प्रियलागिहि अति सबहि मम, भनिति रामजससंग ।  
दारु विचारुकि करइकोउ, बंदिय मल्य प्रसंग ॥  
स्यामसुरभि पय विमद अति, गुनदकरहिं सब पान ।  
गिरा ग्राम्य सियराम जस, गावहिंसुनहिं सुजान १० ॥

मानिमानिकमुकुतालविजैसी \* अहिगिरि गजसिरसोहनतैसी  
नृपकिरीट तरुनी तनुपाई \* लहहिंसकल सोभाअधिकार्इ  
तैसेहिसुकविकवितबुधकहहीं \* उपजहिं अनतअनत बबिलहहीं  
भगतिहेतुविधिभवनबिहार्इ \* सुमिरत सारद आवतिधार्इ  
रामचरितसरविनुअन्हवाए \* सोश्रमजाय न कोटि उपाए  
कविकोबिदअसहृदयविचारो \* गावहिंहरिजसकलिमलहारी  
कीन्हेप्राकृतजन गुनगाना \* सिरधुनिगिरालगतिपडिताना  
हृदयसिंधुमतिसीपिसमाना \* स्वातीसारद कहहिं सुजाना  
जौबरषै बर बारि विचारु \* होहिकवितमुकुतामानिचारु

दो० जुगुति बेधिपुनि पोहिअहि, रामचरित वर ताग ।  
पहिरहिं सज्जन विमलउर, सोभा अति अतुराग ११

जेजनमें कलिकाल कराला \* करतबबायस बेष मराला  
चलतकुपंथ बेद मग छांटे \* कपटकलेवरकलिमल भांटे  
बंचक भगत कहाइ रामके \* किंकर कंचन कोह कामके  
तिन्हसईप्रथमरेपजगमोरी \* धिगधरमध्वज धंधकधोरी

जौ अपने अवगुनसब कहऊँ ❀ बाँटैकथा पार नहिं लहऊँ  
ताते में अति अल्प बषाने ❀ थोरेहिमहँजानिहहिंसयाने  
समुझि विविधिविनतीअबमोरी ❀ कोउनकथासुनिदेइहि षोरी  
एतेहु पर करिहहिं जेअसंका ❀ मोहुतेअधिकतेजडमतिरंका  
कबिनहोउंनहिंचतुरकहावौं ❀ मतिअनुरूप रामनुनगावौं  
कहँरघुपतिके चरित अपारा ❀ कहँमतिमोरि निरतसंसारा  
जेहिमारुत गिरिमेरुउडाहीं ❀ कहहु तूल केहिलेपे माहीं  
समुझत अमितिराम प्रभुतई ❀ करतकथामन अतिकदराई  
दो० सारद सेष महेस बिधि, आगम निगम पुरान ।

नेतिनेति कहिजासुगुन, करहिं निरंतर गान १२ ॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ❀ तदपि कहेबितु रहा न कोई  
तहां वेद अस कारण राषा ❀ भजनप्रभाउभांतिबहुभाषा  
एकअनीह अरूप अनामा ❀ अजसच्चिदानंद परधामा  
व्यापक बिस्वरूप भगवाना ❀ तेहिधरिदेहचरित कृतनाना  
सो केवलभगतन्ह हितलागी ❀ परमकृपाल प्रनत अतुरांगी  
जेहिजनपर ममताअतिछोहू ❀ तेहि करुनाकर कीन्हनकोहू  
गई बहोरि गरीब नेवाजू ❀ सरल सबल साहेब रघुराजू  
बुधवरनहिंहरिजसअसजानी ❀ करहिंपुनीतसुफलनिजबानी  
तेहिवल में रघुपति गुनगाथा ❀ कहिहउं नाइ राम पद माथा  
मुनिन्हप्रथमहरि कीरतिगाई ❀ तेहि मगचलतसुगममोहिंभाई  
दो० अति अपार जे सरित बर, जौ नृप सेतु कराहिं ।

चढिपिपीलको परम लघु, बितुश्रमपारहिंजाहिं १३ ॥

एहिप्रकारबलमनहिं देखाई ❀ करिहौं रघुपति कथा सुनाई



व्यासआदिकविपुंगवनाना \* जिन्ह सादर हरि सुजशबपाना  
 चरन कमल बंदों तिन्हकरे \* पुरवहु सकल मनोरथ मेरे  
 कलिकेकविन्ह करों परनाभा \* जिन्हवरनेरघुपतिगुनग्रामा  
 जे प्राकृतकवि परम सयाने \* भाषाजिन्हहरिचरितबषाने  
 भयेजे अहहिंजेहोइहहिंआगे \* प्रनवां सवनि कपट छतयागे  
 होहु प्रसन्न देहु बरदान \* माधुममाजभनितिमनमानू  
 जो प्रबंध बुधनहिं आदरही \* मोखमवादिबालकवि करही  
 कीरतिभनितिभूति भालमोई \* सुरसरिसममवकहं हितहोई  
 रामसुकीरति भनितिभदेसा \* असमंजसअसमोहि अंदेमा  
 तुम्हरीकृपासुलभ सो उमारे \* मिअनिसुहावनि टाटपटोरे  
 करहुअतुग्रहअमजियजाना \* विमलजसहिअतुहर सुबानी

दो० सरल कवित कीरति विमल, सोइ आदरहिं सुजान ।  
 सहज बयर बिसराइरिपु, जो सुनि करहि बषान ॥  
 सोनहोइविनुविमलमति, मोहि मतिबलअतिथोरि ।  
 करहु कृपाहरि जसकहों, पुनि पुनि करों निहोरि ॥  
 कविकोविदरघुबरचरित, मानस मंजु मराल ।  
 बालविनयसुनि सुरुचिलषि, मोपर होहु कृपाल ॥

सो० बंदों सुनि पद कंज, रामायनजेहि निरमयेउ ।  
 सषर सकोमल मंजु, दोष रहित दूषण सहित ॥  
 बंदों चारिउ वेद, भववारिधि वोहितसरिस ।  
 जिन्हहिन सपनेहु पेद, वरनतरघुबर विसदजस ॥  
 जसो निधिपद रेनु, भवसागरजेहि कीन्हयह ।  
 सत सुधाससि धेनु, प्रगटे पल विष वारुनी ॥

दो० विबुध विप्रबुध ग्रहचरन, बंदि कहों कर जोरि ॥

होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजुमनोरथ मोरि १४ ॥

पुनिबन्दोंसारद सुरसरिता ✽ जुगलपुनीतमनोहर चरिता  
मज्जन पान पाप हरएका ✽ कहतसुनतएकहर अविवेका  
गुरुपितुमातुमहेस भवानी ✽ प्रनवों दीन बंधु दिनदानी  
सेवकस्वामिसपासिय पीके ✽ हितनिरुपधिसवविधितुलसीके  
कलिविलोकिजगहितहरगिरिजा ✽ सावरमंत्रजालजिन्हसिरिजा  
अनमिलआषरअरथनजापू ✽ प्रगट प्रभाउ महेसप्रतापू  
सो महेसमोहिपर अनुकूला ✽ करउ कथा सुदमंगलमूला  
सुमिरिसिवांसिवपाइपसाउ ✽ बरनउं रामचरित चितचाउ  
भनितिमोरिसिवकृपाविभाती ✽ ससिसमाज मिलिभनहुसुराती  
जेएहि कथहि सनेहसमेता ✽ कहिहहिंसुनिहहिंसमुफिसवेता  
होइहहिरामचरन अतुरागी ✽ कलिमलरहितसुमंगलभागी

दो० सपनेहु साचेहुं मोहिपर, जाँ हर गौरि पसाउ ॥

तौफुर होइजोकहेउंसब, भाषाभनिति प्रभाउ १५ ॥

बंदोंअवधपुरीअति पावनि ✽ सरजूसरिकलिकलुषनअवनि  
प्रनवों पुर नरनारि बहोरी ✽ ममताजिनपरप्रभुहिनथोरी  
सियनिंदकअघओघनसाए ✽ लोक विशोक बनाइ वसाए  
बंदों कौसल्या दिशिप्राची ✽ कीरतिजासुसकलजगमाची  
प्रगटेउजहंरघुपति ससिचारू ✽ बिस्वसुषदषलकमल तुसारू  
दशरथराउ सहित सबरानी ✽ सुकृत सुमंगल मूरतिखानी  
करोँ प्रनाम करम मनवानी ✽ करहुकृपा सुत सेवकजानी  
जिन्हहिविरंचिबडभएउविधाता ✽ महिमाअवधिरामपितुमाता

सो० बंदों अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि रामपद ।  
बिछुरत दीनदयाल प्रियतनत्रिनइवपरिहरेउ १६ ॥

प्रनवोंपरिजन सहित बिदेहू \* जाहिराम पद गूढ सनेहू  
जोग भोग महँ राषेउगोई \* रामबिलोकत प्रगटेउ सोई  
प्रनवोंप्रथमभरत के चरना \* जासुनेम ब्रतजाइ न बरना  
रामचरन पंकज मनजासू \* लुबुधमधुप इव तजइ न पासू  
बंदों लल्लिमनपदजलजाता \* सीतलमुभगभगतसुषदाता  
रघुपतिकीरति विमलपताका \* दंडसमानभयेउ जसजाका  
सैषसहस्रसीस जग कारन \* जोअवतरेउ भूमिभयटारन  
सदा सो सानुकूलरहमोपर \* कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर  
रिपुमूदनपद कमलनमामी \* मूरसुसील भरत अनुगामी  
महावीर बिनवों हनुमाना \* रामजासु जस आपु बषाना

सो० प्रनवों पवनकुमार, षलवन पावक शान धन ।  
जासु हृदय आगार, बसहिँ रामसरचापधर ॥ १७ ॥

कपिपतिरीछनिसाचरराजा \* अंगदादि जे कीस समाजा  
बंदों सबके चरन सुहाए \* अधमसरीर राम जिन्हपाए  
रघुपति चरन उपासकजेते \* षग मृग सुरनरअसुर समेते  
बंदों पद सरोज सब केरे \* ज बिनुकाम राम के चेरे  
सुकसनकादिभगतमुनिनारद \* जेमुनिवर विज्ञान विमारद  
प्रनवोंसबहिधरनिधरिसीसा \* करहुकृपाजनजानि सुनीसा  
जनकसुताजगजननिजानकी \* अतिसय प्रियकरुनानिधानकी  
ताके जुग पदकमल मनावों \* जासुकृपानिर्मल मति पावों  
पुनिमनबचनकर्मरघुनायक \* चरन कमलबंदों सबलायक



राजिवनयनधर धनुसायक ✽ भगतविपतिभंजनसुषदायक  
दो० गिराअरथजल वीचिसम, कहियत भिन्न न मिन्न ॥

बंदौंसीताराम पद, जिन्हहिपरम प्रियषिन्न ॥ १८ ॥

बंदौं नाम राम रघुवरको ✽ हेतु कसानुभानु हिमकरको  
विधिहरिहरमय वेदप्रानसो ✽ अगुनअनूपमगुननिधानसो  
महामंत्रजोइ जपत महेसू ✽ काशी मुकुति हेतु उपदेसू  
महिमा जासु जानगनराऊ ✽ प्रथमपूजिअत नामप्रभाऊ  
जानआदि कविनामप्रतापू ✽ भयेउसुद्ध करि उलटाजापू  
सहसनामसमसुनिसिवबानी ✽ जपिजेई पिय संग भवानी  
हरषे हेतु हेरि हरही को ✽ कियेभूषनतियभूषनतीको  
नामप्रभाव जानसिवनीको ✽ कालहूटफलदीन्हअमीको  
दो० वरषारितु रघुपाति भगति, तुलसी सालि सुदास ॥

राम नाम वरवरन जुग, सावन भादौं माम ॥ १९ ॥

आषरमधुर मनोहर दोऊ ✽ वरनाविलोचनजनजिअजोऊ  
सुमिरतसुलभसुषदसबकाहू ✽ लोकलाहु परलोक निबाहू  
कहतसुनतसमुझतसुठिनीके ✽ रामलषनसमप्रिय तुलसीके  
वरनत वरनप्रीतिविलगाती ✽ ब्रह्मजीव इवसहज संघाती  
नरनारायन सरिससुभ्राता ✽ जगपालकविशेष जनत्राता  
भगतिसुतिअकलकरनविभूषन ✽ जगहितहेतु विमलविधुपूषन  
स्वादतोषसमसुगतिसुधाके ✽ कमठसेषसम धरवसुधा के  
जनमनकंज मंजुमधुकर से ✽ जीहजसोमाति हरिहलधरसे  
दो० एकछत्र एक मुकुट मनि, सब वरनन्हि पर जोउ ।

तुलसी रघुवर नाम के, वरन विराजित दोउ ॥ २० ॥

समुझतसरिसनामअरुनामी \* प्रीतिपरसपर प्रभुअनुगामी  
 नाम रूप दोउ ईस उपाधी \* अकथअनादिमुसामुभिसाधी  
 कोबड़छोट कहत अपराधू \* सुनिगुनभेदसमुझिहहिंसाधू  
 देषिअहिरूपनामआधीना \* रूपज्ञाननहिं नाम बिहीना  
 रूप विसेष नाम विनुजाने \* करतलगतनपरहिं पहिंचाने  
 सुमिरिअनामरूप विनुदेषे \* आवत हृदय सनेह विसेषे  
 नामरूपगुनअकथ कहानी \* समुझतसुषदनपरति बषानी  
 अगुनसगुनविचनाममुसाषी \* उभय प्रबोधक चतुरदुभाषी  
 दो० राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार ॥

तुलसी भीतर बाहरौ, जों चाहसि उँजियार ॥ २१ ॥

नामजीहजपिजागहिंजोगी \* विरतिविरंचिप्रपंच वियोगी  
 ब्रह्मसुषहिअनुभवहिंअनूपा \* अकथअनामय नामनरूपा  
 जानौ चहहिं गूढ गतिजेऊ \* नामजीह जपि जानहिंतेऊ  
 साधक नामजपहिं लैलाए \* होहिंसिद्ध अनिमादिकपाए  
 जपहिनामजनआरतभारी \* मिटहिंकुसंकट होहिंसुषारी  
 रामभगतजगचारिप्रकारा \* सुकृती चारिउ अनघउदारा  
 चहुँचतुर कहेंनाम अधारा \* ज्ञानी प्रभुहि विसेष पिआरा  
 चहुँजुगचहुँश्रुतिनामप्रभाऊ \* कलिविसेषनहिं आनउपाऊ  
 दो० सकल कामना हीनजे, राम भगति रसलीन ॥

नामप्रेम पीयूषहृद, तिन्हहुँ किये मनमीन ॥ २२ ॥

अगुन सगुनदुइ ब्रह्मसरूपा \* अकथअगाधअनादिअनूपा  
 हृदयमत बड नाम दुहूतै \* कियेजेहिजुगनिजवसनिजबूते  
 प्रौढसुजनजनजानहिंजनकी \* कहउँप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी

एक दारु गत देषिअ एकू \* पावक समजुग ब्रह्मविवेकू  
उभयअगमजुगसुगमनामते \* कहउँ नामबड ब्रह्मरामते  
व्यापक एकब्रह्मअबिनासी \* सतचेतन घन आनँदरासी  
असप्रभुहृदयअव्यक्तअविकारी \* सकल जीवजग दीनदुषारी  
नाम निरूपननामजतनते \* सोउप्रगटतजिमि मोलरतनते  
दो० निरगुनतैं एहिभांति बड, नाम प्रभाउ अपार ।  
कहउँ नामबड रामतैं, निजविचार अनुसार २३ ॥

रामभगत हित नरतनुधारी \* सहिसंकट कियेसाधुमुषारी  
नामसप्रेमजपत अनयासा \* भगत होहिं सुदमंगलवासा  
राम एक तापस तियतारी \* नामकोटिषलकुमति सुधारी  
रिषिहितरामसुकेतुमुताकी \* सहितसेनसुतकीन्हबिबाकी  
सहितदोष दुषदास दुरासा \* दलइनामजिमिरबिनिसिनासा  
भंजेउ राम आपु भव चापू \* भव भयभंजन नाम प्रतापू  
दंडकवनप्रभुकीन्हसुहावन \* जनमनअमितिनामकियेपावन  
निसिचरनिकरदलेरघुनंदन \* नामसकलकालि कलुषनिकंदन  
दो० सवरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्हि रघुनाथ ।

नामउधारे अमितिषल, वेद-विदित गुनगाथ २४ ॥

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ \* राषे सरन जान सबकोऊ  
नाम गरीब अनेक निवाजे \* लोक वेदवर विरद विराजे  
रामभालु कपिकटकबटोरा \* सेतु हेतु समकीन्ह न थोरा  
नाम लेत भवसिंधु सुषाहीं \* करहुविचार सुजनमनमाहीं  
रामसकुल रन रावन मारा \* सीयसहित निजपुरपगुधारा  
राजा राम अवध रजधानी \* गावतगुनसुर सुनिवरवानी



सेवक सुमिरत नामसप्रीती \* विनुस्रमप्रबलमोहदलजीती  
फिरतसनेहमगनसुषअपने \* नामप्रसाद सोच नहिं सपने

दो० ब्रह्म रामतें नामबड, वर दायक वर दानि ।  
रामचरितसतकोटिमहँ, लियेमहेसजियजानि २५ ॥

नामप्रसाद संभु अविनासी \* साजअमंगल मंगल रासी  
सुकसनकादिसाधुमुनिजोगी \* नाम प्रसाद ब्रह्म सुषभोगी  
नारद जानेउ नाम प्रतापू \* जगप्रियहरिहरहरिप्रियआपू  
नाम जपतप्रभुकीन्हप्रसादू \* भगत सिरोमनि भे प्रहलादू  
धुअसगलानिजपेउहरिनाऊ \* पायेउ अचल अनूपमठाऊ  
सुमिरिपवनसुतपावननामू \* अपने वसकरि राषे रामू  
अपतअजामिलगजगनिकाऊ \* भए मुकुत हरिनाम प्रभाऊ  
कहों कहांलगि नामबड़ाई \* राम न सकहिं नामगुनगाई

दो० नाम राम को कल्प तरु, कलि कल्याण निवास ।  
जो सुमिरतभयो भाँगते, तुलसी तुलसीदास २३ ॥

चहुँजुगतीनिकालतिहुँलोका \* भएनामजपि जीवबिसोका  
वेद पुराण संत मत एहू \* सकल सुकृतफल रामसनेहू  
ध्यानप्रथमजुगमषविधिदूजे \* द्वापर परितोषन प्रभु पूजे  
कलिकेवलमलमूल मलीना \* पापपयोनिधिजनमनमीना  
नामकामतरु कालकराला \* सुमिरतसमनसकलजंजाला  
रामनामकलिअभिमतदाता \* हितपरलोकलोकपितुमाता  
नहिंकलिकरमन भगतिविवेकू \* राम नाम अवलंबन एकू  
कालनेमिकालिकपटनिधानू \* नामसुमतिसमरथहनुमानू

दो० राम नाम नरकेसरी, कनक कसिपु कलि कालु ॥

जापकजन प्रह्लादजिमि, पालिहिदलिसुरसालु २७॥

भायकुभाय अनषआलसहं \* नामजपत मंगलदिसिदसहं  
सुमिरिसोनामरामगुनगाथा \* करों नाइरघुनाथाहि माथा  
मोरिसुधारिहि सोसबभांती \* जासुकृपानहि कृपाअघाती  
रामसुस्वामिकुसेवक मोसो \* निजदिसिदेखि दयानिधिपोसो  
लोकहु बेद सु साहेब रीती \* विनयसुनतपहिचानतप्रीती  
गनी गरीब ग्राम नर नागर \* पांडित मूढ मलीन उजागर  
सुकविकुकविनिजमतिअनुहारी \* नृपहि सराहत सब नरनारी  
साधुसुजान सुसीलनृपाला \* ईस अंसभव परम कृपाला  
सुनिसनमानहिसबाहिसुबानी \* भनितिभगतिमतिगतिपहिचानी  
यहप्राकृत महिपाल सुभाऊ \* जानसिरोमनि कोशलराऊ  
रीझत रामसनेहनि सोते \* को जगमंदमलिन मन मोते

दो० सठसेवक की प्रीतिरुचि, रषिहहिं राम कृपालु ।

उपलकियेजलजानजेहिं, सचिव सुमति कपि भालु ॥

हौंहु कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ।

साहेब सीतानाथ से, सेवक तुलसी दास ॥ २८ ॥

अतिबडि मोरिठिठार्डोरी \* सुनिअघनरकहुनाकसकोरी  
समुझिसहममोहिअपडरअपने \* सोसुधिरामकीन्हनहिसपने  
सुनिअवलोकि सुचित वषचाही \* भगतिभोरिमति स्वामिसराही  
कहतनसाइ होइ हियनीकी \* रीझतराम जानिजन जीकी  
रहतिनप्रसुचितबूककिएकी \* करत सुरति सयवारहिएकी  
जेहिअघबधेउठ्याअजिमिबाली \* फिरिसुकंठसोइकीन्हकुवाली



सोइकरतूति बिभीषन केरी \* सपनेहु सो न राम हिय हेरी  
 ते भरतहि भेटत सनमाने \* राज सभा रघुवीर बषाने  
 दो० प्रभु तरुतर कपि डारपर, ते किए आपु समान ।  
 तुलसी कहूँन रामसे, साहिव सील निधान ॥  
 राम निकाई रावरी, है सबही को नीक ।  
 जौ यह साची है सदा, तौ नीको तुलसीक ॥  
 एहिबिधिनिजगुनदोषकहि, सबहि बहुरि सिर नाइ ।  
 बरनउँरघुवर बिसदजस, मुनिकलिकलुषनसाइ २९ ॥

जागवलिक जो कथासुहाई \* भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई  
 कहिहौं सोइ संवाद बषानी \* सुनहुसकलसज्जनसुषमानी  
 संभुकीन्ह यहचरितसुहावा \* बहुरिकृपाकरि उमहिसुनावा  
 सोइशिवकागभुसुंढिहिदीन्हा \* रामभगतअधिकारीचीन्हा  
 तेहिसनजागवलिकपुनिपावा \* तिन्हपुनिभरद्वाजप्रतिगावा  
 ते स्रोता वक्ता समसीला \* सवदरसी जानहिहरिलीला  
 जानहिंतीनिकालनिजज्ञाना \* करतलगतआमलकसमाना  
 औरौ जेहरिभगति सुजाना \* कहाहिंसुनहिंसमुभाहबिधिनाना  
 दो० मैं पुनिनिज गुरसनसुनी, कथा सो सूकरषेत ।  
 समुझी नहिंतासिबालपन, तबअति रहेउँअचेत ॥  
 स्रोता वक्ता ज्ञान निधि, कथा राम कै गूढ ।  
 किमिसमुझौंमैंजीवजड, कलिमलग्रसितबिसूढ ३० ॥

तदपि कहीगुरवारहिं बारा \* समुझिपरीकछुमतिअनुसारा  
 भाषाबंध करब मैं सोई \* मोरे मनप्रबोध जेहि होई  
 जसकछु बुधिविवेक बलमेरे \* तसकहिहौं हियहरिके प्रेरे

निजसंदेह मोहभ्रम हरनी ✽ करौंकथा भवसरिता तरनी  
 बुधविश्रामसकलजनरंजनि ✽ रामकथाकलिकलुष विभंजनि  
 रामकथा कलिपन्नग भरनी ✽ पुनिविवेकपावककहुँ अरनी  
 रामकथा कलि कामदगाई ✽ सुजन सजीवनिसूरि सुहाई  
 सोइवसुधातलसुधातरंगिनि ✽ भयभंजनिभ्रममेक भुअंगिनि  
 असुरसेनसम नरकनिकंदिनि ✽ साधुबिबुधकुलहितगिरिनंदिनि  
 संत समाज पयोधिरमासी ✽ विस्वभारधर अचलछमासी  
 जमगनमुहँमसि जगजमुनासी ✽ जीवनमुकुतिहेतुजनुकासी  
 रामहिप्रियपावनितुलसीसी ✽ तुलसिदासहितहियहुलसीसी  
 सिवाप्रिय मेकलसैलसुतासी ✽ सकल सिद्धिसुषसंपतिरासी  
 सदगुनसुरगनअंब अदितिसी ✽ रघुवरभगतिप्रेमपरमितिसी  
 दो० राम कथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ।

तुलसीसुभग सनेहबन, सिय रघुवीर विहारु ॥ ३१ ॥

रामचरित चिंतामनिचारु ✽ संतसुमतितिअ सुभग सिंगारु  
 जगमंगल गुनग्राम रामके ✽ दानिमुकुतिधनधरमधामके  
 सदगुर ज्ञान विराग जोगके ✽ बिबुध बैद भवभीम रोगके  
 जननिजनकसियरामप्रेमके ✽ बीज सकल व्रत धरम नेमके  
 समन पाप संताप सोकके ✽ प्रियपालक परलोक लोक के  
 सचिवसुभटभूपतिविचारके ✽ कुंभज लोभ उदधि अपारके  
 कामकोहकलिमलकरिगनके ✽ केहरिसावकजनमन बनके  
 अतिथिपूज्य प्रियतमपुरारिके ✽ कामदघन दारिददवारिके  
 मंत्रमहामनिविषयब्यालके ✽ मेटतकठिन कुअंक भालके  
 हरनमोहतमदिनकर करसे ✽ सेवक सालिपाल जलधरसे

अभिमत दानिदेवतरुवरसे \* सेवतसुलभ सुषद हरिहरसे  
 सुकबिसरदनभमनउडगनसे \* रामभगत जन जविनधनसे  
 सकलसुकृतफलभूरिभोगसे \* जगहितनिरुपधि साधुलोगसे  
 सेवक मन मानस मरालसे \* पावन गंग तरंग मालसे  
 दो० कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाषण्ड ।  
 दहन रामगुन ग्राम जिमि, ईधन अनल प्रचंड ॥  
 राम चरित राकेस कर, सरिस सुषद मवकाहु ।  
 सज्जनकुमुद चकोर चित, हितविसेष बड लाहु ३२॥

कीन्हिप्रश्नजेहिभांतिभवानी \* जेहिबिधि शंकरकहावषानी  
 सो सबहेतु कहब मैं गाई \* कथा प्रबंध विचित्र बनाई  
 जेहिं यहकथासुनीनहिंहोई \* जनि आचरज करै सुनिमोई  
 कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी \* नहिंआचरज करहिंअसजानी  
 रामकथाकै मितिजगनाहीं \* असिप्रतीति तिनकेमनमाहीं  
 नानाभांति राम अवतारा \* रामायन सतकोटि अपारा  
 कल्प भेदहरिचरित सुहाए \* भांति अनेकमुनीसन्हगाये  
 करियनसंसयअसउरआनी \* सुनियकथा सादररतिमानी  
 दो० राम अनंत अनंत गुन, अमिति कथा विस्तार ।  
 सुनिआचरजनमानिहहिं, जिन्हकेबिमलविचार ३३ ॥

येहिबिधिसबसंसयकरिदूरी \* सिरधरि गुरुपद पंकजधूरी  
 पुनि सबही प्रनवों करजोरी \* करतकथाजेहि लगन षोरी  
 सादरसिवहिनाइअवमाथा \* वरनों बिसद राम गुनगाथा  
 संवत सोरहसै इक्कीसा \* करौं कथाहरिपदधरिसीसा  
 नौमी भौमवार मधु मासा \* अवधपुरीयहचरित प्रकासा



जेहिदिनरामजनमश्रुतिगावहिं ❀ तीरथसकलतहाँचलिआवहिं  
असुरनाग षग नरमुनिदेवा ❀ आइकरहिं रघुनायक सेवा  
जन्ममहोत्सवरचहिंसुजाना ❀ करहिं रामकलकीरति गाना  
दो० मज्जहिं सज्जन बृंद बहु, पावन सरजू नीर ।

जपहिं राम धरि ध्यानउर, सुन्दरस्याम सरीर ॥३४॥

दरसपरस मज्जनअरुपाना ❀ हरैपाप कह वेद पुराना  
नदीपुनीतअमितिमहिमाअति ❀ कहिनसकैसारदाविमलमति  
रामधामदा पुरी सुहावनि ❀ लोकसमस्त बिदित अतिपावनि  
चारिषानि जगजीवअपारा ❀ अवधतजे तन नहिं संसारा  
सबविधिपुरी मनोहरजानी ❀ सकल सिद्धिप्रद मंगलपानी  
विमलकथाकरकीन्हअरंभा ❀ सुनतनसाहिं काममददंभा  
रामचरितमानसएहिनामा ❀ सुनत स्रवन पाइअ विस्वामा  
मनकरिविषयअनलबनजरई ❀ होइसुषी जौं एहि सर परई  
रामचरितमानसमुनिभावन ❀ विरचेउ संभुसुहावन पावन  
त्रिविधिदोषदुषदारिददावन ❀ कलिकुचालिकुलिकलुषनसावन  
रचिमहेस निज मानसराषा ❀ पाइ सुसमउ सिवासनभाषा  
ताते राम चरित मानस वर ❀ धरेउ नाम हियहेरि हरषिहर  
कहौं कथासोइ सुषदसुहाई ❀ सादर सुनहुं सुजन मनलाई  
दो० जसमानस जेहि बिधि भएउ, जग प्रचार जेहि हेतु ।

अबसोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमा वृषकेतु ॥३५॥

संभुप्रसीदसुमतिहियहुलसी ❀ रामचरितमानसकवितुलसी  
करइमनोहर मतिअनुहारी ❀ सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी  
सुमतिभूमिथलदयअगाधू ❀ बेदपुरान उदाधि बन साधू

वरषहिराम सुजस वरवारी \* मधुर मनोहर मंगलकारी  
 लीलासगुनजोकहहिंबषानी \* सोइस्वच्छता करै मलहानी  
 प्रेमभगति जो बरनि न जाई \* सोइ मधुरता सुमीतलताई  
 सोजलसुकृत सालिहितहोई \* रामभगत जनजीवन सोई  
 मेधामहिगत सोजल पावन \* सकिलिश्चवनमगचलेउसुहावन  
 भरेउसुमानससुथलथिराना \* सुषदसीतरुचिचारु चिराना

दो० सुठिसुंदर संवाद वर, विरचे बुद्धि विचारि मा० पा० १  
 तेणहिपावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि ॥ ३६ ॥

सप्तप्रबंध सुभग सो पाना \* ज्ञाननयननिरपतमनमाना  
 रघुपतिमहिमाअगुनअवाधा \* वरनवसोइ वरवारिअगाधा  
 रामसीयजससालिलसुधासम \* उपमाबीचिविलासमनोरम  
 पुरइनि सघन चारु चौपाई \* जुगति मंजु मनिसीपसुहाई  
 छन्द सोरठा सुन्दर दोहा \* सोइबहुरंग कमलकुलसोहा  
 अरथ अनूप सुभावसुभासा \* सोइ पराग मकरंद सुवासा  
 सुकृतिपुंजमंजुलअलिमाला \* ज्ञान विराग विचार मराला  
 धुनिअवरेवकवितगुनजाती \* मीन मनोहर ते बहुभांती  
 अरथधरम कामादिकचारी \* कहब ज्ञान विज्ञान विचारी  
 नवरसजपतपजोग विरागा \* तेसब जलचर चारु तडागा  
 सुकृतीसाधु नामगुन गाना \* तेविचित्रजल विहगसमाना  
 संतसभा चहुँदिसि अंवरार्ई \* स्रद्धा रितुबसंत सम गार्ई  
 भगतिनिरूपनविविधिविधाना \* छमादया दुमलता विताना  
 संजमनियम फूलफलज्ञाना \* हरिपद रतिरस वेद बषाना  
 औरौ कथा अनेक प्रसङ्गा \* तेइसुक पिक बहुवरनविहंगा

दो० पुलक वाटिका बाग बन, सुष सुविहंग बिहारु ।

माली सुमन सनेह जल, सीचत लोचन चारु ॥३७॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❖ ते एहि ताल चतुर रषवारे  
सदा सुनहिं सादर नरनारी ❖ तेइसुरवरमानस अधिकारी  
अतिषलजे बिषई बक कागा ❖ एहिसरनिकट न जाहिंअभागा  
संबुक भेक सिवार समाना ❖ इहां न बिषयकथा रसनाना  
तेहि कारन आवत हियहारे ❖ कामी काकबलाक बिचारे  
आवतएहिसरअतिकठिनार्ई ❖ राम कृपाबिनु आइनजाई  
कठिन कुसंग कुपंथकराला ❖ तिन्हकेबचनबाघहरिव्याला  
गृह कारज नाना जंजाला ❖ तेइअतिदुर्गम सैल बिसाला  
बनबहु बिषम मोह मदमाना ❖ नदी कुतरक भयंकरनाना  
दो० जेस्रद्धा संवल रहित, नहिं संतन्ह कर साथ ।

तिन्हकहंमानसअगमअति, जिन्हहिनप्रियरघुनाथ ॥

जौकरि कष्टजाइ पुनिकोई ❖ जातहिं नीद जुडाई होई  
जडताजाडबिषम उरलागा ❖ गयहुनमज्जनपावअभागा  
करिनजाइ सरमज्जनपाना ❖ फिरिआवैसमेतअभिमाना  
जौबहोरि कोउ पृछन आवा ❖ सरनिन्दाकरि ताहिबुझावा  
सकलबिघ्नब्यापहिनहिंतेही ❖ रामसुकृपा विलोकहिं जेही  
सोइसादर मज्जन सरकरई ❖ महाघोर त्रयताप न जरई  
तेनर यहसर तजहिंनकाऊ ❖ जिन्हके रामचरनभलभाऊ  
जोनहाइचह एहिसर भाई ❖ सो सतसंग करै मन लाई  
असमानसमानसचषचाही ❖ भइकविबुद्धिविमलअवगाही  
भएउहृदय आनंद उछाहू ❖ उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू



चलीसुभगकवितासरितासो \* रामविमलजसजलभरितासो  
 सरजू नाम सुमंगल मूला \* लोक वेदमत मंजुल कूला  
 नदी पुनीतसुमानसनंदिनि \* कलिमलत्ननतरुमूलनिकंदिनि  
 दो० स्रोता त्रिविधि समाजपुर, ग्रामनगर दुहं कूल ।  
 संतसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

रामभगतिपुरसरितहिजाई \* मिलीसुकीरति सरजू सुहाई  
 सानुजरामसमर जसपावन \* मिलेउमहानदसोनसुहावन  
 जुगबिचभगतिदेवधुनिधारा \* सोहतिमहितसुविरतिविचारा  
 त्रिविधतापत्रासकतिमुहानी \* राम सरूप मिधुसमुहानी  
 मानसमूल मिलीपुरसरिही \* सुनतसुजनमनपावनकरिही  
 बिचबिचकथाबिचित्रविभागा \* जनुसरितीर तीर बनवागा  
 उमा महेस विवाह बराती \* तेजलचर अगनितबहुभांती  
 रघुवर जनम अनंद बधाई \* भवर तरंग मनोहरताई  
 दो० वालचरित चहुं बंधुके, बनज विपुल बहुरंग ।  
 नृपरानी परिजन सुकृत, मधुकर वारि विहंग ॥ ४० ॥

सीय स्वयंवर कथा सुहाई \* सरितसोहावनि सो छबिछाई  
 नदी नाव पटुप्रश्न अनेका \* केवट कुसलउतर सबिवेका  
 सुनिअनुकथन परसपरहोई \* पथिकसमाजसोह सरिसोई  
 घोर धार भृगुनाथ रिसानी \* घाट संबंधु राम बरबानी  
 सानुज राम विवाह उछाहू \* सोसुमउमगसुषद सबकाहू  
 कहतसुनतहरषहिंपुलकाहीं \* तेसुकृतीमन सुदित नहाहीं  
 समतिलकहितमंगलसाजा \* परवजोगजनुजुरेउ समाजा  
 काई सुमति केकई केरी \* परीजासुफल बिपाति घनेरी

दो० समन अमित उतपात सब, भरतचरित जपजाग ॥

कलिषलअघअवगुनकथन, तेजलमलवगकाग ४१

कीरति सरित छहँरितु रूरी ❖ समयसुहावनि पावनिभूरी  
हिमहिमसैलसुतासिवव्याहू ❖ सिसिरसुषदप्रभुजनमउवाहू  
बरनव राम विवाह समाजू ❖ सोमुद मंगल मय रितुराजू  
ग्रीषम दुसह राम बन गवनू ❖ पंथ कथा पर आतप पवनू  
बरषा घोर निसाचर रारी ❖ सुरकुलसालि सुमंगलकारी  
रामराज सुष विनय बढाई ❖ विसदसुषद सोइसरदसुहाई  
सतीसिरोमनिसियगुनगाथा ❖ सोइगुनअमलअनूपमपाथा  
भरत सुभाउ सु सीतलताई ❖ सदाएक रस वरनि न जाई

दो० अवलोकनिबोलनिमिलनि, प्रीति परसपरहास ।

भायप भलि चहुँ बंधुकी, जलमाधुरीसुवास ४२ ॥

आरति विनय दीनतामोरी ❖ लघुताललित सुवारिनषोरी  
अदुभुतसलिलसुनतगुनकारी ❖ आसपियास मनोमलहारी  
रामसुप्रेमाहि पोषत पानी ❖ हरतसकलकलि कलुषगलानी  
भवस्रमसोषक तोषकतोषा ❖ समनदुरित दुष दारिददोषा  
काम कोह मदमोहनसावन ❖ विमलविवेकबिराग बढावन  
सादर मज्जन पान किएते ❖ मिटहिंपाप परिताप हिएते  
जिन्हएहिवारिनमानसभ्रंश ❖ तेकायर कलिकाल विगोए  
वृषितनिराषिरविकर भववारी ❖ फिरिहहिंमृग जिमिजीवदुषारी

दो० मतिअनुहारि सुवारिगुन, गनगानि मनअन्हवाइ ।

सुमिरि भवानी संकरहि, कहकवि कथा सुवाइ ॥



अवरघुपति पदपंकरुह, हिअधरि पाइ प्रसाद ।  
कहौंजुगल मुनि वर्जकर, मिलन सुभग संवाद ४३

भरद्वाजमुनि बसहिं प्रयागा \* तिन्हहिरामपद अतिअनुरागा  
तापससमदमदया निधाना \* परमारथ पथपरम सुजाना  
माघ मकरगत रविजबहोई \* तीरथ पतिहि आव सबकोई  
देवदनुज किन्नर नर सेनी \* सादरमज्जहिं सकलत्रिवेनी  
पूजहिं माधवपदजलजाता \* परसिअषयवटहरषहिं गाता  
भरद्वाजआश्रमअतिपावन \* परमरम्य मुनिवरमनभावन  
तहांहोइ मुनिरिषयसमाजा \* जाहिंजे मज्जनतीरथराजा  
मज्जहिं प्रातसमेत उछाहा \* कहहिं परसपर हरिगुनगाहा

दो० ब्रह्म निरूपन धर्म विधि, बरनहिं तत्व विभाग ।  
कहहिं भगति भगवन्त कै, संजुत ज्ञानविराग ४४ ॥

एहिप्रकार भरिमाघनहाहीं \* पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं  
प्रतिसंवतअतिहोइ अनंदा \* मकरमज्जिगवनहिं मुनिवृन्दा  
एक बारभरि मकर नहाए \* सबमुनीसआश्रमन्हसिधाए  
जागवलिकमुनिपरम विवेकी \* भरद्वाज राषे पद टेकी  
सादर चरन सरोज पषारे \* अतिपुनीत आसन बैठारे  
करिपूजामुनिसुजसबषानी \* बोलेअति पुनीत मृदुबानी  
नाथ एक संसउ बड मोरे \* करगत बेद तत्व सब तोरे  
कहतसोमोहिलागतिभयलाजा \* जौनकहौबड होइ अकाजा

दो० संतकहहिं असनीतिप्रभु, सुति पुरान मुनिगाव ।  
होइन बिमल विवेक उर, गुरसन किए दुराव ४५ ॥  
असबिचारिप्रगटौनिजमोह \* हरहुनाथ करि जनपरछोह

रामनामकरअमितिप्रभावा\* संतपुरान उपनिषद् गावा  
संतत जपतसंभु अविनासी \* सिवभगवान ज्ञानगुनरासी  
आकरचारिजीवजगअहहीं \* कासी मरत परमपद लहहीं  
सोपिराममहिमामुनिराया \* सिवउपदेस करतकरिदाया  
राम कवन प्रभु पृछों तोहीं \* कहिय बुझाय कृपानिधि मोहीं  
एक राम अवधेस कुमारा \* तिन्हकरचरितविदितसंसारा  
नारिविरहदुखलहेउअपारा \* भए रोष रन रावन मारा  
दो० प्रभुसोइराम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ।

सत्यधाम सर्वज्ञ तुम्ह, कहहु विवेक विचारि ॥ ४६ ॥

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी \* कहहुसोकथानाथ विस्तारी  
जागवलिक बोले मुसुकाई \* तुम्हहिं विदित रघुपतिप्रभुताई  
रामभगततुम्हमन कमवानी \* चतुराई तुम्हारि मैं जानी  
चाहहु सुनै राम गुन गूढा \* कीन्हेहुप्रश्नमनहु अतिसूढा  
तात सुनहु सादर मनलाई \* कहउँ रामकै कथा सुहाई  
महामोह महिषेस बिसाला \* रामकथा कालिका कराला  
रामकथाससिकिरनसमाना \* संतचकोर करहिं जेहिपाना  
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी \* महादेव तब कहा बषानी  
दो० कहोंसोमतिअनुहारिअब, उमासंभु संवाद ।

भएउसमयजेहिहेतु जेहि, सुनुमुनिमिटहिंविषाद४७

एक बार त्रेता जुग माहीं \* संभुगए कुंभज रिषि पाहीं  
संगसतीजगजननिभवानी \* पूजे रिषि अपिलेस्वरजानी  
रामकथा सुनिवर्ज बषानी \* सुनीमहेस परम सुषमानी  
रिषिपृछीहरि भगति सुहाई \* कही संभु अधिकारी ॥ ४७ ॥

कहतसुनतरघुपतिगुनगाथा \* कछुदिनतहां रहे गिरिनाथा  
 मुनिसन बिदा मांगित्रिपुरारी \* चलेभवन संग दच्छकुमारी  
 तेहिअवसरभंजनमहिभारा \* हरिघुवंस लीन्ह अवतारा  
 पितावचनतजिराज उदासी \* दंडकवनविचरतअबिनासी  
 दो० हृदय बिचारत जातहर, केहिविधि दरसन होइ ।  
 गुप्तरूपअवतरेउ प्रभु, गए जान सब कोइ ॥

सो० संकरउर अतिछोभु, सतीनजानइमरमसोइ ।  
 तुलसी दरसन लोभ, मनडर लोचन लालची ४८ ॥

रावनमरनमनुज करजांचा \* प्रभुविधिवचन कीन्हवहसांचा  
 जौनहिं जाउँरहै पछितावा \* करतविचार न बनत बनावा  
 एहिविधिभए सोचबसईसा \* तेही समय जाइ दससीसा  
 लीन्हनीच मारीचाहि संगी \* भएउ तुरत सोइकपटकुरंगा  
 करि छल मूढ हरी बैदेही \* प्रभुप्रभाउतस विदितनतेही  
 मृगबधिवंधुसहितप्रभुआए \* आश्रम देषि नयनजलछाए  
 विरहविकल नर इव रघुराई \* षोजत बिपिन फिरत दोउभाई  
 कबहुं जोगवियोग न जाके \* देषा प्रगट विरह दुष ताके  
 दो० अतिविचित्ररघुपतिचरित, जानहिं परमसुजान ।  
 जेमातिमंद विमोहवस, हृदयधरहिंकछुआन ४९ ॥

संभुसमयतोहि रामाहि देषा \* उपजाहियअतिहरषविसेषा  
 भरिलोचनछविमिधुनिहारी \* कुसमयजानिनकीन्हचिन्हारी  
 जयसच्चिदानंदजगपावन \* असकाहिचलेउ मनोजनसावन  
 चले जात सिवसती समेता \* पुनिपुनि पुलकत कृपानिकेता  
 सती सो दसा संभुकै देखी \* उर उपजा संदेह विसेपी



संकर जगत बंध जगदीसा ✽ सुरनरमुनिसवनावहिंसीसा  
तिन्हनृपसुतहिकीन्हपरनामा ✽ कहिसच्चिदानंद परधामा  
भएमगनछवितासुविलोकी ✽ अजहुँप्रीतिउररहतिनरोकी  
दो० ब्रह्मजोब्यापक विरजअज, अकलअनीह अभेद ।

सोकि देहधरि होइनर, जाहिन जानत वेद ५० ॥

विष्णुजोसुरहितनरतनधारी ✽ सोउ सरबज्ञ जथा त्रिपुरारी  
षो जै सोकि अज्ञइव नारी ✽ ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी  
संभुगिरा पुनि मृषा न होई ✽ सिव सर्वज्ञ जान सब कोई  
अससंसयमनभयउअपारा ✽ होइन हृदय प्रबोध प्रचारा  
जद्यपिप्रगटनकहेउभवानी ✽ हर अंतरजामी सब जानी  
सुनाहिसतीतवनारि सुभाऊ ✽ संसयअसन धरिअउरकाऊ  
जासुकथा कुंभजारिषि गार्ड ✽ भगतिजासुमेंमुनिहिसुनाई  
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा ✽ सेवतजाहिसदा मुनि धीरा  
छं० मुनिधीर जोगीसिद्धसंतत विमलमनजेहिध्यावहीं ।  
कहिनेतिनिगमपुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥  
सोइराम व्यापकब्रह्म भुअननिकायपाति मायाधनी ।  
अवतरेउअपने भगतहित निजतंत्रनितरघुकुलमनी ॥

सो० लाग न उर उपदेस, जदपिकहेउ सिव वार बहु ।

बोलेविहंसिमहेस, हरिमायाबलजानि जिय ५१ ॥

जौ तुम्हरे मन अति संदेह ✽ तौ कि न जाइ परिछा लेहू  
तबलगि बैठ अहोंबटछाहीं ✽ जबलगितुम्हरेहहुमोहिपाहीं  
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी ✽ करेहुसोजतनविवेकविचारी  
चली सती सिव आयसुपाई ✽ करइविचार करौ का भाई

इहां संभुअसमनअनुमाना \* दच्छसुताकहँनहिंकल्याना  
 मोरेहु कहे न संसय जाहीं \* विधिविपरीति भलाई नाहीं  
 होइहिसोइ जोरामरचिराषा \* को करितरक बढावै साषा  
 असकहिजपनलगेहरिनामा \* गईसतीजहँ प्रभुसुष धामा

दो० पुनिपुनिहृदयविचारकरि, धरि सीता कररूप ।

आगेहोइचलिपंथतेहि, जेहिआवत नरभूप ॥ ५२ ॥

लल्लिमन दीषउमाकृतवेषा \* चकितभयेभ्रमहृदयविशेषा  
 कहिनसकतकछुअतिगम्भीरा \* प्रभुप्रभाउजानत मतिधीरा  
 सतीकपटजानेउसुरस्वामी \* सबदरसी सब अंतरजामी  
 सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना \* सोइ सरवज्ञ राम भगवाना  
 सतीकीन्ह चहतहउँ दुराऊ \* देषहु नारि सुभाउ प्रभाऊ  
 निजमायाबल हृदय बषानी \* बोलेबिहँसि राममृदु बानी  
 जोरिपानिप्रभु कीन्हप्रनामू \* पितासमेतलीन्ह निजनामू  
 कहेउबहोरि कहाँ वृष केतू \* विपिनअकेलिफिरहु केहिहेतू

दो० रामवचन मृदुगूढ सुनि, उपजा अति संकोच ।

सतीसभीत महेसपहिँ, चली हृदय बडसोच ५३ ॥

मैं संकर कर कहा न माना \* निज अज्ञान रामपर आना  
 जाइउतर अब देइहौं काहा \* उरउपजा अतिदारुनदाहा  
 जानाराम सती दुष पावा \* निजप्रभाउ कछु प्रगटिजनावा  
 सतीदीष कौतुकमग जांता \* आगेराम सहित श्री भ्राता  
 फिरिचितवा पाछे प्रभु देषा \* सहितबंधु सियसुन्दर बेषा  
 जहँचितवहितहँप्रभुआसीना \* सेवहिंसिद्ध मुनीस प्रवीना  
 देषेसिव विधिविष्णुअनेका \* अमित प्रभाउ एक्तेएका

बंदत चरन करत प्रभु सेवा ❀ विविधि वेष देशे सब देवा  
दो० सतीविधात्री इंदिरा, देशी अमित अनूप ।

जेहिजेहि वेषअजादिसुर, तेहितेहितनअनूरूप ५४॥

देशे जहँतहँ रघुपति जेते ❀ सक्तिनसहित सकल सुरतेते  
जीव चराचर जे संसारा ❀ देखे सकल अनेक प्रकारा  
पूजहिं प्रभुहि देव बहुवेषा ❀ राम रूप दूसर नहिं देशा  
अवलोकै रघुपति बहुतेरे ❀ सीता सहित न वेष घनेरे  
सोइरघुबरसोइलछिमनसीता ❀ देखि सती अतिभईसभीता  
हृदयकंपतन सुधिकछुनहीं ❀ नयन मूँदि बैठी मगमाहीं  
बहुरिविलोकेउ नयनउधारी ❀ कछुन दीखतहँ दक्षकुमारी  
पुनिपुनिनाइरामपदसीसां ❀ चली तहाँ जहँ रहे गिरीसा  
दो० गई समीप महेस तब, हंसि पूँछी कुसलात ॥

लीन्ह परिछाकवन विधि, कहहुसत्यसबबात ५५॥

सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ ❀ भयवसप्रभुसनकीन्हदुराऊ  
कछुन परिछा लीन्ह गुसाई ❀ कीन्हप्रनामतुम्हारिहिनाई  
जो तुम्हकहा सो मृषानहोई ❀ मोरेमन प्रतीत अतिसोई  
तब संकर देखेउ धरिध्याना ❀ सतीजोकीन्हचरितसब जाना  
बहुरि राममायाहि सिर नावा ❀ प्रेरिसतिहि जेहिझूठकहावा  
हरि इच्छा भावी बलवाना ❀ हृदयविचारतसम्भुसुजाना  
सती कीन्ह सीता कर वेषा ❀ सिवउरभयउविषादविसेषा  
जो अब करौं सती सनप्रीती ❀ मिटइभगतिपथहोइ भनीती  
दो० परम पुनीत न जायतजि, कियेप्रेमबडपाप ॥

प्रगट न कहत महेस कछु, हृदय अधिक संताप ५६॥



तवसंकर प्रभुपद सिर नावा \* सुमिरतरामहृदयअसआवा  
 एहितनसतिहिभेटमोहिनाहीं \* सिवसंकल्प कीन्हमनमाहीं  
 असविचारिसंकरमतिधीरा \* चलेभवन सुमिरत रघुवीरा  
 चलतगगन भइ गिरासुहाई \* जयमहैसभलिभगतिदिहाई  
 असपनतुम्हविनुकरैकोआना \* रामभगतसमरथ भगवाना  
 सुनिनभगिरासतीउरसोचा \* पूछा सिवाहि समेतसकोचा  
 कीन्हकवनपनकहहुकृपाला \* सत्यधाम प्रभु दीनदयाला  
 जदपि सती पूछा बहु भाँती \* तदपिनकहेउत्रिपुरआराती  
 दो० सतीहृदय अनुमानकिय, सबजाने सरवज्ञ ।

कीन्हकपट में संभुसन, नारिसहज जडअज्ञ ॥

सो० जलुपयसरिसबिकाइ, देषहुप्रीति कि रीतिभलि ।  
 विलगहोतरसजाइ, कपट षटाई परतही ५७ ॥

हृदयसोचसमुझतनिजकरनी \* चिंताअमितिजाइनहिबरनी  
 कृपासिंधु सिवपरम अगाधा \* प्रगटनकहेउ मोरअपराधा  
 संकररुष अवलोकि भवानी \* प्रभुमोहितजेउहृदयअकुलानी  
 निजअघसमुझिनकलुकहिजाई \* तपै अवांइव उर अधिकाई  
 सतिहिससोचजानिवृषकेतू \* कहीकथा सुन्दर सुख हेतू  
 वरनतपंथविविधिइतिहासा \* विस्वनाथ पहुँचे कैलासा  
 तहंपुनिसंभुसमुझिपनआपन \* बैठेबटतर करि कमलासन  
 संकर सहज सरूप सँभारा \* लागिसमाधि अखडअपारा

दो० सती बसाहि कैलास तव, अधिक सोच मनमाहि ।

मास न कोऊजान कछु, जुगसमदिवस सिराहि ५८ ॥

नितनवसावसती उरभारा \* कब जैहों दुष सागर पारा

मैंजोकीन्हरघुपतिअपमाना❀ पुनिपतिवचनमृषाकरिजाना  
 सोफलमोहि विधातादीन्हा ❀ जोकछुउचितरहासोइ कीन्हा  
 अबविधिअसबूझिअनाहिं तोहीं❀ संकरविमुषजिआवासिमोहीं  
 कहिनजाइकछुहृदयगलानी ❀ मनमहंरामहिसुमिरिसयानी  
 जौ प्रभुदीनदयालकहावा ❀ आरति हरन वेदजसगावा  
 तौ मैं विनयकरौं कर जोरी ❀ छटौ बेगि देह यह मोरी  
 जौं मोरे सिव चरन सनेहू ❀ मनक्रम बचन सत्यव्रतएहू  
 दो० तौ सब दरसीसुनिअप्रभु करौ सो बेगि उपाय ॥

होइ मरन जेहि विनहिश्रम, दुसहविपत्ति बिहाइ ५९  
 यहिविधिदुषितप्रजेसकुमारी❀ अकथनीयदारुण दुखभारी  
 बीते संवत सहस सतासी ❀ तजीसमाधिसंभुअबिनासी  
 राम नाम सिव सुमिरनलागे ❀ जानेउसती जगतपतिजागे  
 जाइ संभु पद बंदन कीन्हा ❀ मनमुषसंकर आसन दीन्हा  
 लगेकहनहरि कथा रसाला ❀ दच्छप्रजेस भये तोहि काला  
 देखाविधिविचारिसब लायक❀ दच्छहिकीन्हप्रजापतिनायक  
 बडअधिकारदच्छजबपावा ❀ अतिआभिमानहृदयतबआवा  
 नाहिअसकोउजनमाजगमाहीं❀ प्रभुतापाइजाहि मद नाहीं  
 दो० दच्छ लिये मुनि बोलि सब, करन लगे बडजाग ॥

नवत सादर सकल सुर, जो पावतमष भाग ६० ॥  
 किन्नर नाग सिद्ध गंधर्वा ❀ बधुन समेत चले सुरसवा  
 बिष्णु विरांचि महेस बिहाई ❀ चले सकलसुर जान बनाई  
 सती बिलोकेव्योमबिमाना ❀ जात चलसुन्दर विधिनाना  
 सुरसुंदरी करहिं कलगाना ❀ सुनतश्रवनछूटहिंसुनि ध्यान



पूछउ तवसिवकहेउवषानी \* पिताजज्ञमुनि कछुहरपानी  
 जौं महसमोहि आयसुदेहीं \* कछु दिनजाइरहों मिमएहीं  
 पतिपरित्यागहृदयदुषभारी \* कहइननिजअपराधविचारी  
 बोली सती मनोहर बानी \* भय संकोच प्रेमरम मानी  
 दो० पिता भवन उत्सव परम, जौ प्रभु आयसुहोइ ।  
 तौ मैं जाउँ कृपा अयन, सादर देपन मोइ ॥ ६१ ॥

कहेहुनीक मोरेहुमनभावा \* यहअनुचितनहिनेवत पठावा  
 दच्छसकलनिजसुताबोलाई \* हमरे वयर तुम्हो विमराई  
 ब्रह्मसभा हमसनदुखमाना \* ताहितेअजहुंकरहिअपमाना  
 जौं विनुबोले जाहु भवानी \* रहे न सील मनेह न कानी  
 जदपिमित्रप्रभुपितुगुर गेहा \* जाइय विनु बोले न मंदेहा  
 तदपि विरोधमानजहँ कोई \* तहाँ गए कल्यान न होई  
 भांति अनेक संभु समुझावा \* भावीवम न ज्ञानउरआवा  
 कहप्रभुजाहुजोबिनहिवोलाए \* नहिं भलिवात हमाराहिभाए  
 दो० कहिदेषा हर जतनबहु, रहे न दच्छकुमारि ।  
 दिए मुष्य गन संग तव, विदा कीन्ह त्रिपुरार दर ॥

पिता भवनजब गई भवानी \* दच्छत्राम काहुनमनमानी  
 सादरभलेहिमिलीएकमाता \* भगिनीमिलीवहु मुमकाता  
 दच्छ न कछुपूछीकुसलाता \* सतिहिविलोकिजरैमवगाता  
 सती जाइ देषेउ तब जागा \* कतहु न दीप संभुकरभागा  
 तबचितचढेउजोसंकरकहेऊ \* प्रभुअपमानममुझि उरदहेऊ  
 पाछिलदुषअसहृदयनव्यापा \* जसयहभएउमहापरितापा  
 जद्यपिजगदारुन दुष नाना \* सवतेकठिनजातिअपमाना

समुझिसोसतिहिभयेउअतिक्रोधा ❖ बहु विधिजननी कीन्ह प्रबोधा  
दो० सिव अपमान न जाइ सहि, हृदय न होइ प्रबोध ।

सकलसभहि हठिहटकितव, बोली वचनसक्रोधद ३।  
सुनहुसभासदसकलमुनिंदा ❖ कहीसुनी जिन्ह संकरनिंदा  
सोफल तुरत लहव सबकाहु ❖ भलीभाँति पछिताव पिताहु  
संत संभु श्रीपति अपवादा ❖ सुनिअजहाँतहँअसिमरजादा  
काहिअतासु जीभजोवसाई ❖ सवनमूदि नत चलिअ पराई  
जगदातमा महेस पुरारी ❖ जगतजनकसबके हितकारी  
पिता मंदमति निंदत तेही ❖ दच्छ सुक्र संभव यह देही  
तजिहों तुरत देह तेहि हेतू ❖ उरधरि चन्द्रमौलि वृषकेतू  
असकहिजोगअगिनितनजारा ❖ भयउसकल मष हाहाकारा  
दो० सती मरन सुनि संभुगन, लगे करन मष पीस ।

जज्ञविधंस विलोकिभृगु, रछाकीन्हिसुनीस ॥ ६४ ॥

समाचार सब सकर पाये ❖ वीरभद्र करि कोप पठाए  
जज्ञविधंसजायतिन्हकीन्हा ❖ सकलपुरनविधिवतकलदीन्हा  
भइजगविदितदच्छगतिसोई ❖ जसिकछुसंभु विमुपकै होई  
यहइतिहाससकलजगजानी ❖ ताते में संछेप वषानी  
सतीमरत हरिसनवर मांगां ❖ जनम २ सिव पद अनुरागा  
तेहिकारनहिमिगिरिगृहजाई ❖ जनमी पारवती तन पाई  
जबते उमा सैल गृह जाई ❖ सकल सिद्धिसंपति तहँ छाई  
जहँतहँसुनिन्हसुआश्रमकीन्हे ❖ उचितवास हिमभूधर दीन्हे  
दो० सदा सुमन फल सहितसब, दुमनव नानाजाति ।

प्रगटी सुंदर सैलपर,मनिआकर बहु भाँति ॥ ६५ ॥

सरितासब पुनीत जलबहहीं \* पगमृगमधुप सुषी सवरहहीं  
 सहज वैर सब जीवन त्यागा \* गिरिपरसकलकरहिं अनुरागा  
 सोहसैल गिरिजा गृह आए \* जिमिजन रामभगतिके पाए  
 नित नूतन मंगल गृह तामू \* ब्रह्मादिकगावहिं जम जामू  
 नारद समाचार सब पाए \* कौतुकहीं गिरि गेह मिधाए  
 सैलराज बड आदर कीन्हा \* पदपपारि बर आमन दीन्हा  
 नारिसहितमुनिपदशिरनावा \* चरनमलिलसबभवन सिचावा  
 निजसौभाजबहुतविधिवरना \* सुताबोलि मेली मुनि चरना  
 दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम्ह, गति सर्वत्र तुम्हारि ।

कहहुसुता के दोष गुन, मुनिवर हृदयविचारि ॥६६॥

कहमुनिविहँसिगूढमृदुबानी \* सुतातुम्हारि सकलगुनपानी  
 सुंदरि सहज सुसील सयानी \* नाम उमा अंबिका भवानी  
 सब लच्छन संपन्न कुमारी \* होइहिसंतत पियहि पियारा  
 सदाअचलएहिकरअहिवाता \* एहिते जम पेहहिं पितुमाता  
 होइहिपूज्यसकल जगमाहीं \* एहिमेवत कछु दुर्लभ नाहीं  
 एहिकर नाममुमिरि संसारा \* त्रियचट्टिहहिं पतिव्रतअसिधारा  
 सैलसुलच्छन सुता तुम्हारी \* मुनहुजोअबअवगुनदुइचारी  
 अगुनअमानमातुपितुहीना \* उदासीन सबसंमय छीना  
 दो० जोगी जटिल अकाम मन, नगन अमङ्गल वेप ।

असस्वामी एहिकहँ मिलिहि, परीहस्तअसिरेप ६७

सुनिमुनिगिरासत्यजियजानी \* दुष दंपतिहि उमा हरपानी  
 नारदहँ यह भेद न जाना \* दसा एक समुझव विलगाना  
 सकलसर्षीगिरिजागिरिमैना \* पुलक सरीर भरे जल नैना



होइ न मृषादेव रिषि भाषा \* उमासोवचनहृदयधरिराषा  
उपजेउ सिवपद कमलसनेह \* मिलन कठिन भा मन संदेह  
जानिकु अँसर प्रीति दुराई \* सपी उछंगवैठि पुनि जाई  
झूठि न होइ देव रिषि बानी \* सोचहिं दंपति सपी सयानी  
उरधरि धीर कहै गिरिराऊ \* कहहु नाथका करियउपाऊ  
दो० कहमुनीस हिमवंत सुनु, जो विधि लिषा लिलार ।

देवदनुज नरनाग मुनि, कोउ न मेटनि हार ॥ ६८ ॥  
तदपि एक में कहों उपाई \* होइ करै जों दैउ सहाई  
जसवरमें बरनेउं तुम्ह पाहीं \* मिलिहिउमहितस संसयनाहीं  
जे जे बरकें दोष बपाने \* ते सब सिवपहिं में अनुमाने  
जों विवाह संकरसन होई \* दोषौ गुन समकह सबकोई  
जों अहिसेजसयन हरिकरहीं \* बुधकहुतिन्हकरदोषनधरहीं  
भानु कृसानु सर्व रस पाहीं \* तिन्हकहेंमंदकहतकोउनाहीं  
सुभअरुअसुभसलिलसववहई \* सुरसरिकोउअपुनीतनकहई  
समरथ को नहिं दोष गुसाई \* रवि पावक सुरसरि की नाई  
दो० जों असहिसिपाकरहिंनर, जड़ विवेक अभिमान ।

परहिकल्पभरि नरक महँ, जीवकिईस समान ॥ ६९ ॥  
सुरसरिजलकृतवारुनिजाना \* कबहुनसंतकरहि तहिपाना  
सुरसरि मिले सोपावन जैसे \* ईस अनीसहि अंतर तैसे  
संभु सहज समरथ भगवाना \* एहिविवाहसबविधि कल्याना  
दुराराध्य पे अहहिं महेसू \* आसुतोपपुनि किए कलेसू  
जों तप करै कुमारि तुम्हारी \* भाविउमेटिसकहिंविपुरारी  
जद्यपि वर अनेक जगमाहीं \* एहिकहेंसिवताजि दूसरनाहीं



वर दायक प्रनतारतिभंजन \* कृपासिंधु मेवक मनरंजन  
इच्छितफल विनुसिवअवराध \* लहिअनकोटिजोगजपसाधे

दो० असकहि नारदसुमिरिहरि, गिरिजहिदीन्ह अमीम ।

होइहिअव कल्यानसव, संसय तजहु गिरीम ॥७०॥

असकहिब्रह्मभवनमुनिगयऊ \* आगिलचरितमुनहुजसभयऊ  
पतिहिइकांत पाइ कह मैना \* नाथ न में बूझे मुनि वयना  
जौं घरवर कुल होइ अनूपा \* करिअविवाह सुताअनुरूपा  
नत कन्या बरु रहौ कुँआरी \* कन्त उमा मम प्रानापिआरी  
जौनमिलिहिवरगिरिजहियोगू \* गिरिजटसहजकहिहिसवलोगू  
सोइविचारिपतिकरेहुविवाहू \* जेहि न बहोरि होइ उर दाहू  
असकहिपरीचरनधरिसीसा \* बोले सहित सनेह गिरीमा  
वरुपावक प्रगटै ससि माहीं \* नारद वचन अन्यथा नाहीं

दो० प्रिया सोचपरिहरहुअव, सुमिरहु श्रीभगवान ।

पारवतिहिनिरमयेउजेहि, सोइकरिहि कल्यान॥७१॥

अब जौं तुम्हहि सुता परनेहू \* तो अम जाइ सिपावन देहू  
करइसोतपुजेहिमिलहिमहेसू \* आनउपाइन मिटिहिकलेसू  
नारद वचन सगर्भ सहेतू \* सुंदर सबगुन निधि वृषकेतू  
असविचारिसबतजहुअसंका \* सबहि भातिसंकरअकलंका  
सुनिपतिवचनहरषिमनमाहीं \* गईतुरतउठि गिरिजा पाहीं  
उमहिंबिलोकिनयनभरेबारी \* सहित सनेह गोद बैठारी  
वारहिवार लेति उर लाई \* गदगदकंठन कछु कहिजाई  
जगत मातु सर्वज्ञ भवानी \* मातुसुषद बोली मृदुबानी

दो० सुनहि मातु मैं दीष अस, सपन सुनावौं तोहि ॥

सुंदर गौर सुविप्रवर, अस उपदेसेउमोहि ७२ पा० मा०  
करहि जाइ तप सैलकुमारी ❀ नारद कहा सो सत्य विचार  
मातुपितहिपुनि यहमतभावा ❀ तप सुषप्रद दुषदोष नसाव  
तप बल रचै प्रपंच विधाता ❀ तपबलविष्णुसकलजगत्राता  
तप बल संसु करहिं संघारा ❀ तप बल सेप धरें माहि भारा  
तप आधार सबसृष्टिभवानी ❀ करहिजाइतपअसजियजानी  
सुनतबचनविसमितमहतारी ❀ सपनसुनायउगिरिहिहँकारी  
मातुपिताहिवहुविधिसमुझाई ❀ चली उमा तपहित हरषाई  
प्रियपरिवार पिताअरुमाता ❀ भयउविकलमुषआवनवाता  
दो० वेदसिरामुनि आइ तव, सबहि कहा समुझाई ।

पारवती महिमा सुनत, रहे प्रबोधाहि पाइ ॥ ७३ ॥

उरधरि उमाप्रानपतिचरना ❀ जाइविपिनि लागीतपकरना  
अतिसुकुमारिनितनतपजोगू ❀ पतिपदसुमिरि तजेसबभोगू  
नितनवचरनउपजअनुरागा ❀ विसरी देह तपहि मनलागा  
संवत सहस मूल फल पाए ❀ साग पाइ सतवरष गवांए  
कछुदिनभोजनवारिवतासा ❀ किएकठिनकछुदिनउपवासा  
बेलपात महिपरै सुपाई ❀ तीनिसहस संवत सोइ षाई  
पुनिपरिहरे सुपाने परना ❀ उमहिनामतवभयउअपरना  
दोषिउमाहि तप पीन सरीरा ❀ ब्रह्मागिरा भइगगन गंभीरा  
दो० भयउ मनोरथसुफलतव, सुनुगिरिराज कुमारि ।

परिहरु दुसह कलेस सब, अवामिलिहहित्रिपुरारि ७४  
असतपकाहुनकीन्हभवानी ❀ भए अनेकधीर सुानेजानी

अब उर धरहु ब्रह्मवरवानी \* सत्यमदा संतत सुचि जानी  
 आवैपिता बोलैवन जवहीं \* हठपरिहरि धरजायेहुतवहीं  
 मिलिहितुमहिजवसप्तशिखीसा \* जानिहु तव प्रमानवागीसा  
 सुनतगिराविधिगगनवपानी \* पुलकगातगिरिजा हरपानी  
 उमाचरित सुन्दर मैं गावा \* सुनहुसंभु कर चरितसुहावा  
 जवते सती जाइतन त्यागा \* तवतेसिवमनभए उविरागा  
 जपहिं सदारघुनायकनामा \* जहंतहं मुनहिंरामगुनग्रामा  
 दो० चिदानंद सुषधाम सिव, विगत मोहमद काम ।

विचरहिंमहिधरिहृदयहरि, सकललोकअभिराम ७५  
 कतहुंमुनिन्हउपदेसहिंज्ञाना \* कतहुंरामगुन करहिंवपाना  
 जदपिअकामतदपिभगवाना \* भगतविरहहुपदुपितसुजाना  
 एहिविधिगयउकालवहुबीती \* नितनइ होइ रामपद प्रीती  
 नेमप्रेम संकर कर देषा \* अविचरुहृदयभगाति कैरेषा  
 प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला \* रूपमीलनिधि तेजविसाला  
 बहुप्रकार संकरहि सराहा \* तुम्हाबिनुअमव्रतकोनिरवाहा  
 बहुविधिरामसिवाहिममुभावा \* पारवती कर जनम मुनावा  
 अतिपुनीतागिरिजाकैकरनी \* विस्तरसहितकृपानिधिवरनी  
 दो० अब विनती ममसुनहु सिव, जों मोपर निज नेहु ॥

जाइ विवाहहु सैलजहि, यह मोहि मागेदेहु ॥ ७६ ॥  
 कहसिवजदपिउचितअसनाहीं \* नाथवचन पुनिमेटिनजाहीं  
 सिरधरिआयसुकारियतुम्हारा \* परम धरम यह नाथहमारा  
 मातु पिता प्रभु गुरकै बानी \* विनहिविचारकरिअसुभजानी  
 तुम्हसबभाँतिपरमहितकारी \* अज्ञा सिरपर नाथ तुम्हारी

प्रभुतोषेउ सुनि संकरवचना ✽ भक्ति विवेक धर्मजुत रचना  
कहप्रभु हरतुझार पनरहेऊ ✽ अवउरराषेहुहम जो कहेऊ  
अंतर धान भए अस भाषी ✽ संकर सोइ मूरति उरराषी  
तबहिंसप्तारिषिसिवपाहिंआए ✽ बोलेप्रभुअति वचन सोहाए  
दो० पारवती पहिं जाइ तुम्ह, प्रेम परिछा लेहु ।

गिरिहि प्रेरि पठ्यहु भवन, दूरि करेहु संदेहु ७७ ॥

रिषिन्ह गौरि देषीतहँ कैसी ✽ मूरतिवंत तपस्या जैसी  
बोले सुनि सुन सैलकुमारी ✽ करहु कवनकारन तपभारी  
केहि अवरधहुकातुम्हचहहू ✽ हमसन सत्यमरम सबकहहू  
सुनतरिषिनकेवचनभवानी ✽ बोली गूढ मनोहरबानी  
कहतमरममनअतिसकुचाई ✽ हँसिहहुसुनिहमारि जडताई  
मनहठ परा नसुनै सिषावा ✽ चहतवारिपरभीत उठावा  
नारद कहा सत्य सोइ जाना ✽ वितुपंषन्हहमचहहिंउडाना  
देषहु सुनि अविवेक हमारा ✽ चाहियसिवहिसदाभरतारा  
दो० सुनत वचन विहँसे रिषय, गिरि संभव तवदेह ॥

नारद कर उपदेस सुनि, कहहु बसेउ किमुगेह ७८ ॥

दच्छसुतन्हिउपदेसेन्हिजाई ✽ तिन्हफिरिभवननदेषाआई  
चित्र केतुकरघर उन्ह घाला ✽ कनककंसिपुकरपुनिअसहाला  
नारद सिषजे सुनहिंनरनारी ✽ अवसिहोहिंतजिभवनभिषारी  
मनकपटीतनसज्जनचीन्हा ✽ आपुसारिसबहीचहकीन्हा  
तेहिकेवचनमानि बिस्वासा ✽ तुम्हचाहहुपातिसंहजउदासा  
निर्गुननिलज कुबेषकपाली ✽ अकुलअगेहदिगंबर ब्याली  
कहहुकवनसुष असवर पाए ✽ भल भूलिहु ठगके बौराए



पंचकहैं सिवसती विवाही \* पुनिअवटेरिमराएन्हिताही  
दो० अवसुष सोवत सोचनहिं, भीषमागि भवपाहिं ॥

सहज एकाकिन्हके भवन, कबहुँकि नारि पटाहिं ७९

अजहूँ मानहुँ कहा हमारा \* हमतुम्हकहँवर नीकविचारा  
अतिसुंदरसुचिसुपदसुसीला \* गावहिंवेदजासु जमलीला  
दूषन रहित सकलगुनरासी \* श्रीपति पुर वैकुंठ निवासी  
असवरतुम्हहिमिलाउबआनी \* सुनतवचनकह बिहँसि भवानी  
सत्य कहेहुगिरिभवतनएहा \* हठ न छूट छूटै वरु देहा  
कनकौ पुनि पषान ते होई \* जारेहु सहज न परिहरसोई  
नारद वचन न मैं परि हरऊँ \* वसौभवन उजरौनहिंटरऊँ  
गुरकेवचन प्रतीत न जेही \* सपनेहुसुगमनसुख सिधि तेह  
दो० महादेव अवगुन भवन, विष्णु सकल गुनधाम ॥

जेहिकर मनरम जाहिसन, तेहि तेही सनकाम ८०

जौतुम्हमिलतेहुप्रथममुनीसा \* सुनति उँसिपतुम्हारि धरिसीसा  
अब मैं जनम संभुसैं हारा \* कोगुन दूषन करइ विचारा  
जौं तुम्हरे हठहृदय विसेषी \* रहि न जाइ विनुकिए वरेषी  
तौकौतुकिअन्हआलसनाहीं \* वरकन्या अनेक जगमाहीं  
जनमकोटिलगिरगरिहमारी \* वरों संभु नतरहों कुँआरी  
तजौं न नारदकर उपदेसू \* आपु कहहिं सतवार महेसू  
मैं पाँ परों कहै जगदंवा \* तुम्हगृहगवनहुभएउविलंवा  
देखि प्रेम बीले मुनिज्ञानी \* जयजय जगदंवि के भवानी  
दो० तुम्हमाया भगवान सिव, सकलजगत पितुमात ।

नाइ चरन सिर मुनि चले, पुनिपुनि हरषतगात ॥ ८१

जाइसुनिन्ह हिमवंत पठाए ❀ करिविनतीगिरिजहिगृहल्याए  
बहुरिसप्तारिषिसिवपहिंजाई ❀ कथा उमा कै सकल सुनाई  
भएमगनसिव सुनतसनेहा ❀ हरषि सप्तारिषि गवने गेहा  
मनकरिथिरतवसंभुसुजाना ❀ लगे करन रघुनायक ध्याना  
तारकुअसुरभएउतेहिकाला ❀ भुजप्रतापबल तेज विसाला  
तेहिंसवलोकलोकपतिजीते ❀ भए देव सुष संपति रीते  
अजरअमरसोजीतिन जाई ❀ हारेसुर करि विविधि लराई  
तव विरंचि पहिं जाइ पुकारे ❀ देषे विधि सब देव दुषारे  
दो० सबसन कहाबुझाइ विधि, दनुज निधन तव होइ ।

संभु सुक्र संभूत सुत, एहिजीते रन सोइ ॥ ८२ ॥

मोरकहा सुनि करहु उपाई ❀ होइहिईस्वर करिहि सहाई  
सती जोतजी दच्छमषदेहा ❀ जनमी जाइ हिमाचल गेहा  
तेहितपकीन्हसंभुपतिलागी ❀ सिव समाधि बैठे सब त्यागी  
जदपिअहै असमंजसभारी ❀ तदपि बातयक सुनहु हमारी  
पठवहु काम जाइसिवपाहीं ❀ करै छोम संकर मनमाहीं  
तवहम जाइसिवहिसिरनाई ❀ करवाउब विवाह वरिआई  
एहिविधिभलेहिदेवहितहोई ❀ मतअति नीक कहै सब कोई  
अस्तुतिसुरन्हकीन्हअतिहेतू ❀ प्रगटेउ विषम वानशष केतू  
दो० सुरन्ह कही निजविपतिसब, सुनि मनकीन्ह विचार ।

संभुविरोधन कुसलमोहि, विहांसिकहेउ असमार ८३  
तदपि करवमैं काजतुम्हारा ❀ श्रुतिकहपरमधरमउपकारा  
परहित लागितजै जे देही ❀ संतत संत प्रसंसहिं तेही  
असकहिचलेउसबहिसिरनाई ❀ सुमन धनुष कर लेत सहाई

चलतमारअसहृदयविचारा \* सिवविरोध धव मरनहमारा  
 तब आपन प्रभाव विस्तारा \* निजबसकीन्ह सकलसंमारा  
 कोपेउ जबहिं वारिचर केतू \* छनमह मिटेसकल श्रुतिसेतू  
 ब्रह्मचर्ज ब्रतसंजम नाना \* धीरज धरमज्ञान बिज्ञाना  
 सदाचार जपयोग विरागा \* सभयविवेककटकसबभागा  
 छ० भागेउ विवेक सहाय सहित सो सुभटसंजुगमहिमुरे ॥  
 सदग्रंथ पर्वत कंदरनि महं जाइतेहि अँवमरदुरे ॥  
 होनिहारका करतारको रपवार जग परभर परा ॥  
 दुइमाथकहिरति नाथ जेहि कहं कोपिकर धनुसरधरा ॥  
 दो० ज सजीव जगचर अचर, नारि पुरुष असनाम ॥  
 निजनिज मरजादताजि, भए सकल बसकाम ८४

सबकेहृदयमदनअभिलाषा \* लतानिहारिनवाहिं तरुसाषा  
 नदीउमागि अंबुधिकहं धाई \* संगमकरहिं तलाव तलाई  
 जहँअसिदसाजडन्हकैबरनी \* कोकहि सके सचेतन करनी  
 पसु पंछी नभ जलथलचारी \* भए कामबस समय बिसारी  
 मदनअंधव्याकुलसबलोका \* निसिदिन नहिंअवलोकहिकोका  
 देवदनुज नरकिन्नरब्याला \* प्रेत पिशाच भूत बैताला  
 इन्हकैदसा न कहेउँवषानी \* सदा काम के चेरे जानी  
 सिद्ध विरक्तमहामुनिजोगी \* तोपि काम बस भए वियोगी  
 छं० भयकाम बस जोगीस तापस पावरनि की को कहे ॥  
 देषहिं चराचर नारि मय जे ब्रह्म मय देषत रहे ॥  
 अवलाबिलोकहिंपुरुषमय जगपुरुष सब अवलामयं ॥  
 दुइदंड भरिब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं ॥

सो० धरीनकाहू धीर, सबके मन मनसिज हरे ।

जेराषे रघुवीर, ते उबरेतहि कालमहं ॥ ८५ ॥

उभयघरी असकौतुकभयऊ ❖ जबलगिकामसंभुपहिंगयऊ  
सिवहिविलोकिससंकेउमारू ❖ भएउजथाथितिसब संसारू  
भए तुरत सबजीव सुषारे ❖ जिमि मदउतारिगएमतवारे  
रुद्रहि देषिमदन भयमाना ❖ दुरा धरष दुर्गम भगवाना  
फिरतलाजकछुकारिनिहिजाई ❖ मरनठानि मनरचेसिउपाई  
प्रगटेसितुरतरुचिररितुराजा ❖ कुसमितनवतरुसषाविराजा  
वन उपवनवापिका तडागा ❖ परमसुभगसबदिसाबिभागा  
जहँतहँजनु उमगतअनुरागा ❖ देषिमुएहुमनमनसिजजागा

छं० जागेउमनोभव मुएहुमन वनसुभगतान परैकही ॥  
सीतल सुगंध सुमंदमारुतमदन अनलसषासही ॥  
विगसेसरन्हि बहुकंज गुंजतपुंज मंजुल मधुकरा ॥  
कलहंसपिकसुकसरसरव करिगाननाचहिं अपछरा ॥

दो० सकल कलाकरि कोटि विधि, हारेउ सेन समेत ।

चली न अचलसमाधि सिव, कोपेउहृदयनिकेत ८६

देषिरसाल बिटप वर साषा ❖ तेहिपरचढ़ेउमदनमनमाषा  
सुमन चाप निजसरसंधाने ❖ अतिरिसताकिस्रवनलगिताने  
छाडे विषमविसिषउरलागे ❖ छूटि समाधि संभु तब जागे  
भएउ ईसमनछोभ बिसेषी ❖ नयनउधारिसकलदिसिदेषी  
सौरभपल्लवमदनविलोका ❖ भएउ कोप कंपेउ त्रैलोका  
तबसिवतीसर नयनउधारा ❖ चितवतकामभयउजरिछारा  
हा हा कार भयउजगभारी ❖ डरपे सुर भये असुर सुषारी



समुझिकामसुपसोचहिंमोगी \* भए अकंटक भावकजोगी  
 छं० जोगीअकंटकभएपतिगति सुनतरतिमुसलित भई ॥  
 रोदतिवदति बहुभांति करुनाकरति संकरपहिंगई ॥  
 अतिप्रेमकरिविनतीविविधिविधिजोरिकरमनमुपरही  
 प्रभुआसुतापकृपाल सिवअवला निरपिबोले मही ॥

दो० अबतैरति तव नाथकर, होइहि नाम अनंग ।

विनुवपुव्यापिहिसवाहिपुनि, सुनुनिजमिलनप्रमंग ८७

जब जडुबंस कृष्ण अवतारा \* होइहि हरन महामहिभारा  
 कृष्ण तनय होइहि पतितोरा \* वचन अन्यया होइन मारा  
 रतिगवनीसुनि संकर बानी \* कथाअपरअब कहो वपानी  
 देवन्ह समाचार सब पाए \* ब्रह्मादिक वकुंड मिथ्याए  
 सबसुर विष्णुबिरचिसमेता \* गए जहांमिव कृपा निकेता  
 पृथकपृथकतिन्हकीन्हप्रसंसा \* भए प्रसन्न चन्द्र अवतंमा  
 बोले कृपासिंधु वृपकेतू \* कहहु अमर आए केहि हेतू  
 कहविधितुल्यप्रभुअंतरजामी \* तदपिभगतिवमविनवोस्वामी  
 दो० सकल सुरन्ह के हृदय अस, संकर परम उल्लाह ।

निज नयनन्हि देषा चैं, नाथ तुम्हार विवाह ८८॥

यहउत्सवदेखियभारिलोचन \* सोइकछुकरहुमदनमदमोचन  
 कामजारिरतिकहँबरदीन्हा \* कृपासिंधुयहअतिमल कीन्हा  
 सीसतिकरिपुनिकरहिँपसाऊ \* नाथप्रभुन्हकरसहजसुभाऊ  
 पारवती तप कीन्ह अपारा \* करहुतासु अब अंगीकारा  
 सुनिविधिविनयसमुझिप्रभुबानी \* ऐसेइ होउ कहा सुप मानी  
 तब देवन्ह दुंदुभी बजाई \* बरषिसुमन जयजयसुरसाइ

अवसरजानसप्तारषि आए ✽ तुरतहिविधिगिरिभवनपठाए  
प्रथम गए जहँरही भवानी ✽ बोलै मधुर वचन छलसानी  
दो० कहाहमार न सुनेउतव, नारद के उपदेस ॥

अवभासूठतुम्हार प्रन, जारेउकाममहेस ॥८९॥

सुनिबोली मुसुकाइभवानी ✽ उचितकहेउमुनिवरविज्ञानी  
तुम्हरेजान काम अवजारा ✽ अवलगि संभु रहेसविकारा  
हमरे जान सदासिवयोगी ✽ अजअनवद्यअकामअभोगी  
जो मैं सिव सेए असजानी ✽ प्रीति समेत करममनवानी  
तौ हमार पनसुनहु मुनीसा ✽ करिहहिं सत्यकृपानिधिईसा  
तुम्हजेकहा हरजारउमारा ✽ सोइअतिबडअविवेकतुम्हारा  
तातअनलकरसहजसुभाऊ ✽ हिमतेहिनिकटजाइनहिंकाऊ  
गएसमीपसो अवसिनसाई ✽ असिमनमथमहेसकइ नाई

दो० हिय हरषे मुनि वचन सुनि, देषिप्रीति विस्वास ॥

चले भवानिहि नाइसिर, गए हिमाचलपास ॥९०॥

सबप्रसंगगिरिपातिहि सुनावी ✽ मदनदहनसुनिआतिदुषपावा  
बहुरिकहेउरतिकर वरदाना ✽ सुनिहिमवंतबहुतसुष माना  
हृदय विचारि संभु प्रभुताई ✽ सादर मुनिवर लिए बोलाई  
सुदिन सुनपतसुघरीसोचाई ✽ वेगिवेद विधिलगन धराई  
पत्रीसप्तारिषिन्ह सो दीन्ही ✽ गहिपदविनयहिमाचलकीन्ही  
जाइविधिहितिन्हदीन्हीसोपाती ✽ बाँचत प्रीतिन हृदय संमाती  
लगनबाँचिविधिसवहिसुनाई ✽ हरषे मुनिसब सुर समुदाई  
सुमनवृष्टिनभवाजन बाजे ✽ मंगलसकलदसहुदिसि साजे

दा० लगेसवारन सकल सुर बाहन विविधि विमान॥

होहिंसगुन मंगल सुभग, करहिं अपछरा गान९१

सिवहिसंभुगनकरहिंसिंगारा \* जटामुकुटअहिमौर सँवारा  
कुंडल कंकनपहिरे ब्याला \* तनविभूतिपटकेहरि छाला  
ससि ललाट सुंदरसिरगंगा \* नयन तीन उपवीतभुजंगा  
गरलकंठ उरनरसिर माला \* असिववेषसिवधाम कृपाला  
करत्रिसूलअरुडमरुविराजा \* चलेवसहचढिवाजहिं वाजा  
देषिसिवहिसुरत्रिय मुसुकाहीं \* वरलायकदुलहिनिजगनाहीं  
बिष्णुबिरंचिआदिसुरद्राता \* चढिचढि बाहन चलेवराता  
सुर समाजसबभांतिअनूपा \* नहिं वरात दूल्ह अनुरूपा

दो० बिष्णुकहाअसबिहांसि तब, बोलिमकलदिमि राज ।

बिलगबिलगहोइचलहु सब, निजनिजमहितसमाज ॥

बर अनुहारि वरात न भाई \* हँसी करैहहु पर पुर जाई  
बिष्णुबचनसुनिसुरमुसकाने \* निजनिजसेनसहिताबिलगाने  
मनही मन महेस मुसकाहीं \* हरिकैब्यंगवचन नहिं जाहीं  
अतिप्रियवचनसुनतप्रियकेरे \* भृंगिहि प्रेरि सकलगन टेरे  
सिवअनुसासनसुनिसबआए \* प्रभुपदजलजसीसतिन्हनाए  
नाना बाहन नाना वेषा \* बिहंसेसिवसमाज निज देपा  
कोउमुषहीनविपुलमुषकाहू \* विनुपदकरकोउ बहु पदबाहू  
बिपुलनयनकोउनयनविहीना \* रिष्टपुष्टकोउ अतितनपीना  
छं० तनपीनकोउ अतिपीनपावनकोउ अपावनगातिधरें ॥  
भूषनकरालकपालकर सबसद्यसोनिततनभरें ॥

परस्वानसुअर सृगालमुषगनवेष अगनित कोगेनै ॥  
बहुजिनसप्रेतपिसाच जोगिजमातिवरतन नहिं बनै ॥

सो० नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।

देखतअतिविपरीत, बोलहिं वचनविचित्रविधि ९३।

जस दूल्ह तसबनी बराता ✽ कौतुकविविधहोहिं मगजाता  
इहां हिमाचलरचेउ बिताना ✽ अतिविचित्रनहिं जात बषाना  
सैलसकलजहँ लगिजगमाहीं ✽ लघुबिसालनहिं वरनिसिराहीं  
वन सागरनद नदी तलावा ✽ हिमागिरिसब कहँ नेवत पठावा  
काम रूप सुंदर तन धारी ✽ सहितसमाज सहितवरनारी  
गए सकल तुहिमाचल गेहा ✽ गावहिं मंगलसहित स्नेहा  
प्रथमाहिगिरिवहुगृह सँवराए ✽ जथाजोग जहँ तहँ सबछाए  
पुर सोभा अवलोकिसुहाई ✽ लागै लघु बिरंचि निपुनाई  
छं० लघुलाग विधिकी निपुनता अवलोकिपुर सोभासही ॥

वनवाग कूप तडाग सरिता सुभग सबसक को कही ॥

मंगल विपुल तोरन पताका केतुगृह गृह सोहहीं ॥

वनितापुरुष सुंदरचतुरछवि देखिसुनिमन मोहहीं ॥

दो० जगदंबा जहँ अवतरी, सो पुर वरनि कि जाइ ।

रिधिसिधिसंपतिसकलमुख, नितनूतनअधिकाइ ९४

नगर निकटबरातसुनिआई ✽ पुर परभर सोभा अधिकाई  
करिबनावसजि बाहननाना ✽ चले लेन सादर अगवाना  
हिअ हरषे सुर सेननिहारी ✽ हरिहिदेषिअतिभयेसुखारी  
सिव समाज जब दैषनलागे ✽ बिडरिचले बाहन सबभागे  
धरि धीरज तहँ रहे सयाने ✽ बालक सब लैजीव पराने



गए भवन पूछहिं पितुमाता \* कहहिं वचन भयकं पितगाता  
 कहिय काह कहि जाइन बाता \* जमकर धारि किधौं वारियाता  
 वर वौराह वरद असवारा \* ब्याल कपाल विभूषन छारा  
 छं० तनछार ब्याल कपालभूषन नगन जटिल भयंकरा ।  
 संग भूतप्रेत पिसाच जोगिनि विकट मुखर जनीचरा ॥  
 जो जिय तरहिहि बरात देखत पुन्यबट तेहि कर सही ।  
 देखिहि सो उमा विवाह घर घर वात असिल रिक्किन्हि कही

दो० समुझि महेस समाज सब, जननि जनक मुसुकाहिं ।

बालबुझाए विविधि विधि, निडर होहु डर नाहिं ९५ ।

लै अगवान बरातहिं आए \* दिए सबहि जनवास सुहाए  
 मैना सुभ आरती सँवारी \* संग सुमंगल गावहिं नारी  
 कंचन थार सोह वर पानी \* परिछन चलीं हरहि हर पानी  
 विकट बैष रुद्रहि जब देषा \* अवलन्ह उर भय भए उ विसेषा  
 भागि भवन पैठीं अति त्रासा \* गयउ महेस जहां जनवासा  
 मैना हृदय भयउ दुख भारी \* लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी  
 अधिक सनेह गोद बैठारी \* स्याम सरोज नयन भरे वारी  
 जेहिं विधितुम्हहि रूप अस दीन्हा \* तेहिं जटवरवा उर कस कीन्हा

छं० कस कीन्हा बरबौराह विधि जेहि तुम्हहि सुंदरता दर्ई ।

जो फल चाहिअ धुरतरुहि सो बरबस बरहिला गर्ई ॥

तुम्ह सहित गिरित गिरौं पावक जरौं जल निधि महँ परौं ।

घर जाउ अपज सहोउ जग जीवत विवाहन हों करौं ॥

दो० भई विकल अबला सकल, दुखित देखि गिरि नारि ।

करि बिलाप रोदति बदति, सुता सनेह सँभारि ९६ ॥

नारद कर मैं काह बिगारा ✽ भवनमोरजिन्हवसतउजारा  
असउपदेसउमहिजिन्हदीन्हा ✽ बौरे बरहि लागि तप कीन्हा  
सांचेउ उनके मोहन माया ✽ उदासीन धन धामनजाया  
पर घर घालक लाजनभीरा ✽ बांझ किजान प्रसवकै पीरा  
जननिहिविकलबिलोकिभवानी ✽ बोलीजुत विवेक मृदुबानी  
असविचारिसोचाहिमातिमाता ✽ सो न टरै जो रचै बिधाता  
करम लिखा जौं वाउर नाहू ✽ तौकत दोस लगाइअ काहू  
तुम्हसनामिटिहिंकिविधिकेअंका ✽ मातुव्यर्थ जनिलेहु कलंका

छं० जनिलेहु मातुकलंककरुनापरिहरहुअवसरुनहीं ।

दुखसुखजो लिषालिलारहमरेजाबजहँ पाउवतहीं ॥

सुनिउमावचन विनीतकोमलसकलअबलासोचहीं ।

बहुभांतिविधिहिलगाइदूषननयनवारि बिमोचहीं ॥

दो० तेहि अवसर नारद सहित, अरु रिषि सप्त समेत ।

समाचारसुनितुहिनगिरि, गवनेतुरतनिकेत ॥ ९७ ॥

तब नारद सबही समुझावा ✽ पूरव कथा प्रसंग सुनावा

मयनासत्य सुनहु ममबानी ✽ जगदंबा तव सुता भवानी

अजाअनादिसक्तिअबिनासिनि ✽ सदासभुअरधंगनिवासिनि

जगसंभवपालनलयकारिनि ✽ निजइछालीलावपु धारिनि

जनमी प्रथम दछ गृह जाई ✽ नाम सती सुंदर तन पाई

तहउँसती संकरहि बिवाहीं ✽ कथाप्रसिद्धसकलजगमाहीं

एक बार आवत सिव संगी ✽ देषेउ रघुकुल कमल पतंगी

भएउमोहसिवकहानकीन्हा ✽ भ्रमवसवेष सीयकरलीन्हा

छं० सियवेषसतीजोकीन्हतेहि अपराधसंकरपरिहरी ॥

हरविरहजाइबहोरिपितुके जग्य जोगानलजरी ।  
 अबजनमितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुनतपुकिया ॥  
 असजानिसंसयतजहुगिरिजासर्वदा संकरप्रिया ॥

दो० सुनि नारद के बचन तब, सब कर मिटा विपाद ।

छनमहँब्यापेउसकलपुर, घर घर यह संवाद ॥ ९८ ॥

तब मयना हिमवंत अनंदे \* पुनि पुनि पारवती पद वंदे  
 नारिपुरुषसिसु जुवा सयाने \* नगरलोग सब अतिहरपाने  
 लगे होन पुर मंगल गाना \* सजेसवाहिं हाटकघटनाना  
 भाँति अनेक भई जेवनारा \* सूपसास्त्रजस कछुव्यवहारा  
 सोजेवनार कि जाइ वषानी \* बसहिंभवनजेहिंमातु भवानी  
 सादर बोले सकल बराती \* विष्णुविरंचि देव सब जाती  
 विविधिपाँति बैठी जेवनारा \* लागेपरुसन निपुन सुआरा  
 नारि चंद सुर जेवत जानी \* लगीं देन गारी मृदु बानी

छं० गारीमधुरसुरदेहिंसुंदरि व्यंजवचनसुनावहीं ।

भोजनकरहिंसुरअतिविलंबविनोदसुनिसचुपावहीं ॥

जेवँतजोबढ्यौ अनंदसोमुखकोटिहूनपरैकह्यौ ।

अचवाइदीन्हेपानगवनेवासजहँजाकोरह्यौ ॥

दो० बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ, लगन सुनाई आइ ।

समय बिलोकि विवाह कर, पठये देव बोलाइ ९९ ॥

बोलि सकल सुरसादर लीन्हे \* सबहिजथोचितआसनदीन्हे  
 बेदी बेद विधान सँवारी \* सुभग सुमंगलगावहिं नारी  
 सिंहासन अतिदिव्यसुहावा \* जाइनबरानि विरंचि बनावा  
 बैठे सिव विप्रन सिरनाई \* हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई

बहुरि मुनीसन्ह उमाबोलाई ✽ करि सिंगार सखी लै आई  
देखत रूपसकल सुर मोहे ✽ बरनैछविअसजगकबिकोहे  
जगदंबिकाजानिभव भामा ✽ सुरन्हमनहिमनकीन्ह प्रनामा  
सुंदरता मरजाद भवानी ✽ जाइनकोटिहुवदन वखानी

छं० कोटिहुवदन नहिबनैबरनत जगजननिसोभामहा ।  
सकुचहिंकहतश्रुतिसेषसारद मंदमतितुलसीकहा ॥  
छविषानिमातुभवानिगवनी मध्यमंडप सिवजहाँ ।  
अवलोकिसकहिनसकुचपतिपदकमलमनमधुकरतहाँ ॥

दो० मुनि अनुसासनगनपतिहि, पूजेउसंभुभवानि ॥  
कोउमुनिसंसयकरैजनि, सुरअनादिजिअजानि १००

जसिविवाहकैविधिश्रुति गाई ✽ महामुनिन्ह सोसबकरवाई  
गहिगिरीसकुस कन्यापानी ✽ भवहिसमरपीजानिभवानी  
पानिग्रहन जबकीन्हमहेसा ✽ हियहरषे तब सकलसुरेसा  
वेदमंत्र मुनिवर उच्चरहीं ✽ जयजयजय संकरसुरकरहीं  
बाजहिंवाजनविविधिविधाना ✽ सुमनवृष्टिनभभैविधिनाना  
हरगिरिजाकरभयउ विबाहू ✽ सकल भुवनभरिहा उछाहू  
दासी दास तुरग रथ नागा ✽ धेनुबसनमनि वस्तुविभागा  
अन्नकनकभाजनभरिजाना ✽ दाइजदीन्ह न जाइ बषाना

छं० दाइजदियोबहुभांतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यौ ।  
कादेउँ पूरनकामसंकर चरनपंकज गहिरह्यौ ॥  
सिवकृपासागरससुरकर संतोषसबभांतिहिकियो ।  
पुनिगहे पदपाथोजमयना प्रेमपरिपूरनहियो ॥



दो० नाथ उमा मम प्रान प्रिय, गृह किंकरी करेहु ।

छमहुसकलअपराधअव, होइप्रसन्नवरुदेहु १०१ ॥

बहुविधि संभु सासु समुझाई \* गवनीभवन चरन मिरनाई  
जननीउमाबोलितबलीन्ही \* लै उछंग सुंदर मिष दीन्ही  
करेहु सदा संकर पद पूजा \* नारिधरम पतिदेव न दूजा  
बचनकहतभरि लोचन बारी \* बहुरिलाइ उरलीन्हकुमारी  
कतविधिसृजीनारि जगमाहीं \* पराधीन सपनेहु सुख नाहीं  
भइअतिप्रेमबिकलमहतारी \* धीरजकीन्हकुसमयविचारी  
पुनिपुनि मिलतिपरतिगहिचरना \* परमप्रेमकछु जाइनवरना  
सवनारिन्हमिलिभेंटिभवानी \* जाइजननि उरपुनिलपटानी

छं० जननिहिंबहुरि मिलिचलीं उचितअसीससबकाहूँदई  
फिरिफिरिविलोकति मातुतन जबसखीलैसिवपहिंगई  
जाचकसकलसंतोषि संकरउमासहित भवनाहि चले  
सब अमरहरषे सुमनवरषि निसाननभवाजे भले

दो० चले संगहिमवंत तव, पहुचावन अति हेतु ।

बिबिध भाँतिपरितोष करि, विदाकीन्हवृषकेतु १०२

तुरतभवनआए गिरि राई \* सकलसैल सर लिये बोलाई  
आदर दान विनयबहुमाना \* सबकरविदाकीन्हहिमवाना  
जबहिंसंभु कैलासहि आए \* सुरसबनिजनिजलोकसिधाए  
जगतमातुपितुसंभु भवानी \* तेहि सिंगार न कहौं बखानी  
करहिंबिबिधिविधिभोगविलासा \* गनन्हसमेत बसहिंकैलासा  
हरगिरिजाविहारनितनएऊ \* एहिबिधिविपुलकालचलिगएऊ  
तबजनमेउषटबदनकुमारा \* तारकुअसुरसमरजेहिंमारा

आगमनिगमप्रसिद्ध पुराना ✽ षट्मुखजनमसकलजगजाना

छं० जगजान षट्मुख जनमकर्म प्रताप पुरुषार्थ महा ।

तेहिहेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहिं कहा ॥

यह उमासंभु विवाह जेनर नारि सुनहिं जे गावहीं ।

कल्यान काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥

दो० चरित सिंधु गिरिजा रवन, वेद न पावे पार ।

बरनै तुलसीदासकिमि, अतिमतिमंदगँवार १०३॥

संभुचरित सुनि सरससुहावा ✽ भरद्वाजमुनिअति सुषपावा

बहु लालसा कथा पर बाढ़ी ✽ नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी

प्रेम विवस सुषआवन बानी ✽ दसादेखि हरषे मुनि ज्ञानी

अहोधन्य तवजन्म मुनीसा ✽ तुम्हहिप्रानसमप्रियगौरीसा

सिवपदकमलजिन्हहिरतिनाहीं ✽ रामहि तेसपनेहु न सुहाहीं

बिनुछल विश्वनाथ पदनेहू ✽ राम भगत कर लच्छन एहू

सिवसमकोरघुपातिव्रतधारी ✽ बिनुअघतजीसतीआसिनारी

पनकरिरघुपातिभगतिदृढ़ाई ✽ को सिवसमरामहिंप्रियभाई

दो० प्रथमहि कहि मैं सिव चरित, बूझा परम तुम्हार ।

सुचि सेवक तुह्य रामके, रहितसमस्तविकार १०४॥

मैं जाना तुम्हार गुनसीला ✽ कहौं सुनहुअवरघुपतिलीला

सुनुमुनि आजसमागमतोरे ✽ कहिनजायजससुखमनमोरे

रामचरितअति अमितमुनीसा ✽ कहि नसकहिंसतकोटि अहीसा

तदपिजथाश्रुतिकहौंबषानी ✽ सुमिरिगिरापातिप्रभु धनुपानी

सारद दारुनारिसम स्वामी ✽ राम मूत्रधर अंतरजामी

जेहिपरकृपाकरहिंजनजानी ✽ कविउरअजिरनचावहिंशानी

प्रनवों सोइकृपाल रघुनाथा \* वरनोंविमद तासुगुन गाथा  
परमरम्य गिरिवर कैलामू \* सदाजहां सिवउमा निवामू  
दो० सिद्ध तपोधन जोगि जन, सुरकिन्नर मुनि वृन्द ।

वसहितहाँसुकृती सकल, सेवहिंसिवसुखकन्द १०५॥

हरिहर विमुषधर्म रतिनाहीं \* तेनरतहं सपनेहु नहिंजाहीं  
तेहिगिरिपरवटबिटपविसाला \* नितनूतन सुंदर सब काला  
त्रिविधसमीरसुसीतलछाया \* सिवविस्रामविपटश्रुतिगाया  
एकवार तेहितर प्रभु गयऊ \* तरुबिलोकिउरअतिसुख भयऊ  
निजकरडासिनागरिपूछाला \* बैठे सहजहिं मंभु कृपाला  
कुंद इंदुदर गौर सरीरा \* भुजप्रलंबपारिधनमुनि चीरा  
तरुनअरुन अंबुजसमचरना \* नपहुतिभगतहृदयतमहरना  
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी \* आनन सरदचन्दलविहारी  
दो० जटामुकुट मुरसरित सिर, लोचन नलिनविसाल ।

नीलकंठलावन्यनिधि, सोहवालविधुभाल १०६ ॥

बैठे सोह कांम रिपु कैसे \* धरे सरीर सांतरस जैसे  
पारवती भलअवसर जानी \* गई मंभु पहिं मातु भवानी  
जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा \* वामभाग आसनहर दीन्हा  
बैठी सिव समीप हरषाई \* पूरव जन्म कथा चितआई  
पतिहियहेतुअधिकअनुमानी \* बिहांसिउमा बोली मृदुबानी  
कथाजोसकललोकहितकारी \* सोइ पूछन चह सैल कुमारी  
बिस्वनाथ ममनाथ पुरारी \* त्रिभुवनमाहिमाविदित तुम्हारी  
चरअरु अचर नागनर देवा \* सकल करहिंपद पंकजसेवा  
दो० प्रभु समरथसरबज्ञ सिव, सकलकला गुनधाम ॥

जोगज्ञानवैराज्ञनिधि. प्रनतकलपतरुनाम ॥ १०७ ॥

जों मोपर प्रसन्न सुपरासी ✽ जानियसत्यमोहिनिजदासी  
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ✽ कहिरघुनाथकथाविधिनाना  
जासु भवन सुरतरुतर होई ✽ सहिकिदरिद्र जनितदुषसोई  
ससिभूषनअसहृदयविचारी ✽ हरहुनाथमममतिभ्रमभारी  
प्रभुजे मुनि परमारथ वादी ✽ कहहिं रामकहैं ब्रह्मअनादी  
सेम सारदा वेद पुराना ✽ सकलकरहिंरघुपतिगुनगाना  
तुम्हपुनिरामराम दिनराती ✽ सादर जपहु अनंग अराती  
रामसाअवधनृपतिमुतसोई ✽ कीअजअगुनअलषगतिकोई  
दो० जौनृपतनयतब्रह्मकिमि, नारि विरहमति भोरि ।

देषिचरित महिमा सुनत, भ्रमति बुद्धि अतिमोरि १०८  
जों अनीहव्यापकविभुकोऊ ✽ कहहुबुझाइ नाथमोहसोऊ  
अज्ञजानिरिसउर जनिधरहू ✽ जेहिविधिमोहमितैसोइकरहू  
मैं बनदीष राम प्रभुताई ✽ अतिभयविकलनतुम्हहिसुनाई  
तदपिमालिनमनबोधनआवा ✽ सोफलभली भाँति हमपावा  
अजहं कछुसंसय मनमोरे ✽ करहुकृपा बिनवों करजोरे  
प्रभुतवमोहिवहुभाँतिप्रबोधा ✽ नाथसोसमुझिकरहुजनिक्रोधा  
तवकरअसविमोहअबनाहीं ✽ रामकथा पररुचिअनमाहीं  
कहहु पुनीत रामगुन गाथा ✽ भुजगराज भूषन सुरनाथा  
शे० बंदों पदधरि धरनिसिर, बिनयकरोँ करजोरि ।

वरनहरघुवरविसदजस, अतिसिद्धांतनिचोरि १०९ मा० पा० १  
जदपिजोषिताअनअधिकारी ✽ दासीमनक्रमबचनतुम्हारी  
गूढौ तत्वनसाधु दुरावहिं ✽ आरतअधिकारीजहँपावहिं



अति आरतिपूछों सुरराया \* रघुपतिकया कहहु करिदाया  
 प्रथमसोकारन कहहु बिचारी \* निर्गुन ब्रह्म मगुन वपुधारी  
 पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा \* बालचरित पुनि कहहु उदारा  
 कहहु जथा जानकी विवाही \* राजतजा मो रूपन काही  
 बनवासि कीन्हे चरित अपारा \* कहहु नाथ जिमि रावन मारा  
 राज बैठि कीन्ही बहुलीला \* सकल कहहु संकर सुपमीला  
 दो० बहुरि कहहु करुनायतन, कीन्ह जो अचरजराम ।

प्रजा सहित रघुवंसमनि, किमि गवने निजधाम ११० ॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी \* जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी  
 भगति ज्ञान विज्ञान विरागा \* पुनि सब वरनहु महित विभागा  
 औरौ राम रहस्य अनेका \* कहहु नाथ अति विमल विवेका  
 जो प्रभु में पूछा नहिं होई \* सो उदयाल रापहु जनि गोई  
 तुम्ह त्रिभुवन गुरवेद बषाना \* आन जीव पांवरका जाना  
 प्रश्न उमा के सहज सुहाई \* छल विहीन मुनि मिमन भाई  
 हरहिय राम चरित सब आए \* प्रेम पुलक लोचन जल छाए  
 श्री रघुनाथ रूप उर आवा \* परमानंद अमित सुपपावा  
 दो० मगन ध्यान रस दंड जुग, पुनि मन बाहेर कीन्ह ॥

रघुपति चरित महे सतव, हरषित बरनै लीन्ह १११ ॥

झूठे उसत्य जाहि विनु जानै \* जिमि भुजंग विनुरजुपहि चानै  
 जेहि जाने जग जाइ हेराई \* जागे जथा सपन भ्रम जाई  
 बंदों बालरूप सोइ रामू \* सब विधि सुलभ जपत जिसु नामू  
 मंगल भवन अमंगल हारी \* द्रवौ सो दशरथ अजिर बिहारी  
 करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी \* हरषि सुधासम गिरा उचारी

धन्य धन्यगिरिराज कुमारी ✽ तुमसमाननहिंकोउ उपकारी  
पूँछेहु रघुपाति कथा प्रसंगा ✽ सकल लोकजगपावनिगङ्गा  
तुम रघुवीर चरन अनुरागी ✽ कीन्हिहुप्रश्नजगतहितलागी  
दो० रामकृपा ते हिमसुता, सपनेहु तव मन माहिं ॥

सोकमोह संदेह भ्रम, ममविचारकछुनाहिं॥११२॥

तदपिअसंका कीन्हिहुसोई ✽ कहत सुनत सबकरहितहोई  
जिन्हहरिकथासुनीनहिंकांना ✽ सवनरंध्रअहि भवनसमाना  
नयनन्हि संत दरसनहिदेषा ✽ लोचन मोर पंष कर लेषा  
ते सिरकटुतूवरिसम तूला ✽ जेननमत हरि गुरपद मूला  
जिन्हहरिभगतिहृदयनहिआना ✽ जीवत सबसमान तेइ प्रानी  
जो नहिं करै राम गुनगाना ✽ जीहसो दादुरजीह समाना  
कुलिसकठोरनिठुरसई आती ✽ सुनिहरिचरितनजोहरषाती  
गिरिजा सुनहु रामकै लीला ✽ सुरहितदनुजविमोहनसीला  
दो० राम कथा सुरधेनुसम, सेवत सब सुष दानि ॥

सतसमाज सुरलोकसम, कोनसुनैअसजानि११३॥

राम कथा सुंदर करतारी ✽ संसय विहंग उडावनि हारी  
रामकथाकलिविटपकुठारी ✽ सादर सुनु गिरिराजकुमारी  
राम नामगुन चरित सुहाए ✽ जनमकरमअगनित श्रुतिगाए  
जथा अनंतराम भगवाना ✽ तथा कथा कीरति गुननाना  
तदपिजथाश्रुतेजसिआतिमोरी ✽ कहिहोंदोपिप्रीति अतितोरी  
उमाप्रश्न तव सहज सुहाई ✽ सुपद संत संमत मोहि भाई  
एक बातनहिंमोहिं सोहानी ✽ जदपिमोहबसकहेहुभवानी  
तुझजोकहारामकोउ आना ✽ जेहिश्रुतिगावधरहिंसुनिध्याना

दो० कहहिं सुनहिं असअधमनर, ग्रसेजो मोहपिमाच ।

पाषंडी हरिपद विमुष, जानहिंझूठ न मांच ११४ ॥

अज्ञअकोंविद अंध अभागी\* काई विषयमुकुर मन लागी  
लंपट कपटी कुटिल विसेषी\* सपनेहु संत मभानहिं देपी  
कहहिं ते वेद असंमत बानी\* जिन्हहिनसूझलाभनहिंहानी  
मुकुरमलिनअरुनयनविहीना\* रामरूपदेपहिं किमि दीना  
जिन्हकेअगुननसगुनबिबेका\* जल्पहिंकल्पितवचन अनेका  
हरिमायावसजगत भ्रमाहीं\* तिन्हहिकहतकलुअघटिनहीं  
बातुल भूत विवस मतवारे\* ते नहिं बोलहिं वचनविचारे  
जिन्हकृतमहामोहमदणाना\* तिन्हकरकहाकरिअनहिंकाना  
सो० अस निज हृदयविचारि, तजु संसय भजु राम पद ।

सुनु गिरिराजकुमारि, भ्रमतमरविकरवचनमम ११५

सगुनहिअगुनहिंनहिंकलुभेदा\* गावहिंमुनि पुरानबुध वेदा  
अगुनअरूपअलषअजजोई\* भगत प्रेमवसमगुन मो होई  
जोगुनरहितसगुन सोइ कैसे\* जलहिमउपलविलगनहिंजैसे  
जासुनामभ्रमतिमिरपतंगा\* तेहिकिमिकहि प्र विमोहप्रसंगा  
राम साच्चिदानंद दिनेसा\* नहिंतहैं मोहनिमा लवलेसा  
सहज प्रकासरूप भगवाना\* नहिंतहैंपुनि विज्ञानविहाना  
हरष विषाद ज्ञानअज्ञाना\* जीवधर्मअहमितिअभिमाना  
राम ब्रह्मव्यापकजगजाना\* परमानंद परेम पुराना

दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकासनिधि, प्रगट परावर नाथ ।

रघुकुलमानिमसस्वामिसोइ, कहिसिवनाएउमाथ ११६

निजभ्रमनहिंसमुझाहिअज्ञानी\* प्रभुपरमोहधरहिंजड प्रानी

जथागगनघन पटलनिहारी ✽ झापेउभानुकहहिंकुबिचारी  
चितवजोलोचनअंगुलिलाए ✽ प्रगटजुगलसंसितेहिकेभांए  
उमाराम विषइकअसमोहा ✽ नभतमधूमधूरिजिमिसोहा  
विषयकरन सुरजीव समेता ✽ सकल एकतेएक सचेता  
सबकर परमप्रकासक जोई ✽ रामअनादि अवधपतिसोई  
जगतप्रकास्यप्रकासक रामू ✽ माया धीस ज्ञान गुनधामू  
जासु सत्यतातें जड माया ✽ भाससत्य इव मोह सहाया  
दो० रजत सीप महभास जिमि, जथाभानुकर वारि ।

जदपिमृषातिहुंकालसोइ, भ्रमनसकैकोउटारि ११७  
एहिविधिजगहरि आश्रितरहई ✽ जदपि असत्य देतदुषअहई  
जों सपने सिर काटै कोई ✽ विनु जागें नदूरि दुषहोई  
जासुकृपाअसभ्रममिटिजाई ✽ गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई  
आदिअंतकोउजासुनपावा ✽ मतिअनुमाननिगमअसगावा  
विनुपद चलैसुनै विनु काना ✽ करविनुकरमकरैविधिनाना  
आननरहितसकलरसभोगी ✽ विनुवानी वक्ता बडजोगी  
तनविनुपरस नयनविनुदेपा ✽ ग्रहै घान विनुवास असेषा  
असिसवभांति अलौकिककरनी ✽ महिमाजासुजाइनहिंवरनी  
दो० जेहि इमि गावहिं वेदबुध, जाहि धरहिं मुनिध्यान ।

सोइदसरथसुतभगताहित, कोसलपति भगवान ११८  
कासी मरतजंतु अवलोकी ✽ जासुनामवलकरउँ विसोकी  
सोइप्रभुमोर चराचर स्वामी ✽ रघुवर सब उर अंतरजामी  
विवसहुजासु नामनरकहहीं ✽ जनमअनेकसंचितअघदहहीं  
सादर सुमिरन जेनर करहीं ✽ भववारिधि गोपदइव तरहीं



रामसौ परमातमा भवानी \* तहंभ्रमअति अविदितनववानो  
 अससंसय आनत उरमाहीं \* ज्ञानविराग मकळुनजाहीं  
 सुनिसिवकेभ्रमभंजनवचना \* मिटिगेमव कुतरकक्केरचना  
 भइरघुपति पदप्रीतिप्रतीती \* दारुन अमंभावना बीती  
 दो० पुनिपुनि प्रभुपद कमलगहि, जोरिपंकसूह पानि ।

बोलीगिरिजा वचन बर, मनहुंप्रेमरम मानि ११९

ससिकरसमसुनिगिरातुम्हारी \* मिटा मोह सरदातप भारी  
 तुम्हकृपाल सबसंसय हरेऊ \* रामस्वरूप जानिमोहिंपरेऊ  
 नाथकृपाअवगयउविपादा \* सुपीभयउ प्रभुचरनप्रमादा  
 अवमोहिआपनिकिंकारजानी \* जदपिमहजजडनारिअयानी  
 प्रथम जोमैपूछासोइ कहहू \* जों मोपर प्रमन्नप्रभु अहहू  
 रामब्रह्मचिनमयअविनामी \* मर्वरहित मव उरपुरवामी  
 नाथ धरेउ नरतनकेहि हेतू \* मोहिममुझाइ कहहु वृषकेतू  
 उमावचनसुनिपरमविनीता \* रामकथा पर प्रीति पुनीता  
 दो० हियहरषे कामारि तव, संकर महज मुजान ।

बहुविधि उमहि प्रसंसिपुनि, बोले कृपा निधान ॥

सो० सुनुसुभ कथाभवानि, रामचरित मानम विमल ॥

कहाभुसुंढि बषानि, सुनाविहग नायक गरुड ॥

सोसंवाद उदार, जेहिंविधि भा आगे कहव ॥

सुनहुराम अवतार, चरित परम सुंदर अनघ ॥

हरिगुन नामअपार, कथारूप अगनित अमित ॥

मैनिजमतिअनुसार, कहौउमासादरसुनहु १२० ॥ नवाह १

सुनुगिरिजाहरिचरितसुहाए \* विपुलविसदनिगमागमगाए

हरि अवतार हेतु जेहि होई ✽ इदमित्थं कहि जाइन सोई  
 रामअतर्क्य बुद्धिमन बानी ✽ मतहमारअससुनहिसयानी  
 तदपि संतमुनि वेद पुराना ✽ जसकछु कहहिस्वमति अनुमाना  
 तस में सुमुषिसुनावौ तोही ✽ समुझि परे जस कारन मोही  
 जबजब होइधरम के हानी ✽ बाढहिंअसुरअधम अभिमानी  
 करहिंअनीतिजाइनहिंवरना ✽ सीदहिं विप्रधेनु सुरधरनी  
 तबतबप्रभुधरिविविधसरीरा ✽ हरहिंकृपानिधिसज्जनपीरा  
 दो० असुर मारियापहिंसुरन्ह, राषहिंनिज श्रुति सेतु ।

जगविस्तारहिंविमदजस, राम जनमकरहेतु १२१॥

सोइजसगाइभगतभव तरहीं ✽ कृपासिंधुजनाहिततन धरहीं  
 राम जनम के हेतु अनेका ✽ परम बिचित्र एकतेँ एका  
 जनम एक दुइ कहौ वषानी ✽ सावधानसुनुसुमतिभवानी  
 द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ ✽ जयअरुविजयजानसबकोऊ  
 विप्र स्राप तें दूनों भाई ✽ तामसअसुर देह तिन्ह पाई  
 कनककसिपुअरुहाटकलोचन ✽ जगतविदितसुरपतिमदमोचन  
 विजई समर बीर विष्याता ✽ धरिवराह वपु एक निपाता  
 होइ नरहरिदूसर पुनिमारा ✽ जनप्रहलादसुजस विस्तारा  
 दो० भएनिसाचर जाइतेइ, महावीर बलवान ।

कुंभकरनरावनसुभट, सुरविजई जगजान १२२ ॥

मुकुत न भए हते भगवाना ✽ तीनजनमद्विजवचनप्रमाना  
 एकवार तिन्हके हितलागी ✽ धरेउसरीर भगत अनुरागी  
 कस्यपअदितितहांपितुमाता ✽ दशरथ कौसल्या विष्याता  
 एककल्पएहिविधिअवतारा ✽ चरित पवित्र किये संसारा

एक कल्पसुर देपि दुषारे \* समर जलंधर मनमव हारे  
 संभु कीन्ह संग्राम अपारा \* दनुज महाबल मरे न मारा  
 परम सती असुराधिपनारी \* तेहिवन्ताहिनजितहिंशुगरी  
 दो० छलकरि टारेउ तासुव्रत, प्रभुसुर कारज कीन्ह ।

जबतेहिजानेउ मरमतव, सापकोप करिदीन्ह १२३  
 तासुसापहरि कीन्ह प्रमाना \* कौतुकनिधि कृपालु भगवाना  
 तहां जलंधर रावन भयऊ \* रनहति राम परमपददण्ड  
 एक जनम करकारन एहा \* जेहिलगिरामधरी नर देहा  
 प्रति अवतार कथाप्रभुकेशी \* मुनिमुनिवरनी कविन्हवनेरी  
 नारद श्राप दीन्ह एकवार \* कल्पएकतेहिलगिअवतारा  
 गिरिजाचकितभईमुनिवानी \* नारदविष्णुभगतपुनिज्ञानी  
 कारनकवनश्रापमुनिदीन्हा \* काअपराधरमा पति कीन्हा  
 यहप्रसंग मोहि कहहु पुरारी \* मुनिमनमोहआचरजभारी  
 दो० बोले बिहँसिमहेसतव, ज्ञानी मूढ न कोइ ।

जेहिजसरघुपतिकरहिं जब, सोतम तेहि छनहोइ ॥  
 सो० कहौ रामगुनगाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ।

भव भंजन रघुनाथ, भजुतुलमी तजि मानमद १२४  
 हिमगिरिगुहाएकअतिपावनि \* वहसमीपसुरमरी सुहावनि  
 आश्रम परमपुनीत सुहावा \* देषिदेवरिपिमनअतिभावा  
 निरषिसैलसरिविपिनविभागा \* भएउरमापति पदअनुरागा  
 सुमिरतहरिहिसापगतिवाधी \* सहजविमलमनलागिपमाधी  
 मुनिगति देषि सुरेस डेराना \* कामहिवोलिकीन्हसनमाना  
 सहित सहाय जाहु ममहेतू \* चलेउहराषिहियजलचर केतू

सुनासीर मनमहँअतिवासा ✽ चहत देवरिषि ममपुरवासा  
ज कामी लोलुप जगमाहीं ✽ कुटिलकाकडवसबहिडेराहीं  
दो० मूषहाडलै भागसठ, स्वान निरिषि मृगराज ॥

छीनलेइ जनिजानजड, तिमिसुरपतिहिनलाज १२५

तेहिआश्रमहिमदनजवगयऊ ✽ निजमाया वसंत निरमयऊ  
कुसुमित विविधिविटपबहुरंगा ✽ कूजहिंकोकिल गुंजहिंभृंगा  
चलीसुहावनितविधिवयारी ✽ कामकसानु जगावनिहारी  
रंभादिक सुरनारि नवीना ✽ सकलअसमसरकलाप्रवीना  
करहिं गान बहुतान तरंगा ✽ बहुविधिक्रीडहिंपानिपतंगा  
देखि सहाय मदन हरषाना ✽ कीन्हैसिपुनिप्रपंचविधिनाना  
कामकलाकछुमुनिहिनव्यापी ✽ निजभयडरेउमनोभवपापी  
सीमकिचापिसकैकोउतामू ✽ बड रखवार रमापति जामू

दो० सहित सहाय समीत अति, मानिहारि मनमैन ॥

गहेसि जाइमुनिचरनकहि, सुठिआरत मृदुवैन १२६

भएउन नारदमनकछुरोषा ✽ कहिपुण्यवचनकामपरितोषा  
नाइ चरन सिर आयसुपाई ✽ गएउमदनतव सहितसहाई  
मुनिसुसीलताआपनिकरनी ✽ सुरपतिसभा जाइसबवरनी  
मुनिसबकैमनअचरजआवा ✽ मुनिहिप्रसंसिहारिहिसिरनावा  
तव नारद गवने सिवपाहीं ✽ जिताकामअहमितिमनमाहीं  
मार चरित संकरहि सुनाए ✽ अतिप्रियजानिमहेससिषाए  
बारबार बिनवों मुनि तोही ✽ जिमियहकथासुनायहुमोही  
तिमिजनिहारिहिसुनायहुकबहुँ ✽ चलेहुप्रसंग दुरायहु तबहुँ ॥



दो० संभुदीन्ह उपदेस हित, नहिनारदाहि सोहान ॥

भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरिइच्छा बलवान १२७ ॥

रामकीन्ह चाहहिं सोइहोई \* करै अन्यथा असनहिंकोई  
संभुवचन मुनिमननहिभाए \* तवबिरंचिके लोक मिधाए  
एकबार करतल बर बीना \* गावत हरिगुन गानप्रवीना  
छीरसिंधु गवने मुनि नाथा \* जहँवसश्रीनिवासश्रुतिमाथा  
हरषिमिले उठिरमानिकेता \* बैठेआसन रिषिहि समेता  
बोले बिहंसिचराचर राया \* बहुतोदिनन्हिकीन्हमुनिदाया  
कामचरित नारद सबभाषे \* जद्यपिप्रथमवरजि सिवराषे  
अतिप्रचंडरघुपाति कैमाया \* जेहिंनमोहअसकोजगजाया  
दो० रूपवदनकरि वचनमृदु, बोले श्रीभगवान ॥

तुम्हरे सुमिरनते मिटहिं, मोह मारमदमान १२८

सुनुमुनिमोह होइ मनताके \* ज्ञान विरागहृदय नहिजाके  
ब्रह्मचरज ब्रतरत मतिधीरा \* तुम्हहिंकि करै मनोभवपीरा  
नारदकहेउसहितअभिमाना \* कृपातुम्हारिसकलभगवाना  
करुनानिधिमनदीषविचारी \* उरअंकुरेउ गर्व तरुभारी  
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी \* पन हमार सेवक हितकारी  
मुनिकरहितममकौतुकहोई \* अवसिं उपाय करविमैंसोई  
तब नारद हरिपद सिरनाई \* चलहृदयअहमितिआधिकार  
श्रीपति निजमाया तबप्रेरी \* सुनहुकठिनकरनीतेहिकेरी

दो० बिरचेउमग महँनगरतेहिं, सत जोजन विस्तार ।

श्रीनिवासपुरते अधिक, रचना विविधप्रकार १२९

वसहिं नगर सुंदर नरनारी \* जनुबहुमनसिजरतितनधारी

तेहिपुरबसै सीलनिधि राजा \* अगनितहयगयसेनसमाजा  
सतसुरेससमाविभव विलासा \* रूप तेजबल नीति निवासा  
विश्व मोहनी तासु कुमारी \* श्रीविमोहजिसु रूपनिहारी  
सोइहरिमाया सब गुनपानी \* सोभातासुकि जाइबपानी  
करै स्वयंबर सो नृपबाला \* आएतहँअगनितमहिपाला  
मुनिकौतुकीनगरतेहिगयऊ \* पुरवासिन्हसनपूछत भयऊ  
मुनिसबचरित भूपगृह आए \* करि पूजा नृपमुनि बैठाये  
दो० आनिदेष्टाई नारदहि, भूपति राजकुमारि ।

कहहुनाथगुनदोषसब, एहिके हृदयविचारि १३० ॥

दोषिरूपमुनि विरतिबिसारी \* बडी बारलंगि रहे निहारी  
लच्छनतासुविलोकि भुलाने \* हृदयहरषनहि प्रगटबखाने  
जोएहि बरै अमर सोइ होई \* समरभूमितोहिजीतन कोई  
सेवहिं सकल चराचर ताहीं \* बरै सीलनिधि कन्याजाहीं  
लच्छनसब विचारि उरराषे \* कछुकबनाइ भूपसन भाषे  
सुतासुलच्छनिकहिनृपपाहीं \* नारद चले सोच मनमाहीं  
करौंजाइसोइ जतन विचारी \* जोहिप्रकारमोहि बरैकुमारी  
जपतपकछुनहोइ एहिकाला \* होविधिमिलैकवनविधिबाला  
दो० एहिअवसरचाहिअपरम, सोभारूपविसाल ।

जोविलोकिरीझैकुंअरि, तब मेलइजयमाल १३१ ॥

हरि सन मागौं सुंदरताई \* होइहि जात गहरुअतिभाई  
मोरें हितहरिसमनहिं कोऊ \* एहिऔंसर सहायसोइहोऊ  
बहुविधिविनयकीन्हतेहिकाला \* प्रगटेउप्रभुकौतुकी कृपाला  
प्रभुविलोकिमुनिनयनजुड़ानें \* होइहि काज हिए हरषानें

अतिआरतिकहिकथा सुनाई \* करहु कृपा प्रभु होहु महाई  
 आपन रूप देहु प्रभु मोही \* आनभाँति नहिं पावों ओहा  
 जेहिविधिनाथ होइ हित मोरा \* करहु मो बेगि दास में तोरा  
 निजमायाबल दोषि बिसाला \* हियहाँसि बोले दीनदयाला  
 दो० जेहिविधि होइहि परमाहित, नारद सुनहु तुम्हार ।

सोइहम करव न आनकछु, वचन न मृषाहमार १३२  
 कुपथमागरुज व्याकुलरोगी \* वेदनदेइ सुनहु मुनि जोगी  
 एहिविधिहित तुम्हारमेंठयऊ \* कहिअमअंतरहित प्रभु भयऊ  
 माया विवस मये मुनिमूढा \* समुझीनहि हरिगिरानिगूढा  
 गवने तुरत तहाँ रिषिराई \* जहाँ स्वयम्बर भूमि बनाई  
 निजनिज आसन बैठे राजा \* बहुवनावकरिमहितममाजा  
 मुनिमनहरष रूप अतिमोरे \* मोहितजि आनहि वरिहिनभोर  
 मुनिहितकारन कृपानिधाना \* दीन्ह कुरूप न जाइवखाना  
 सोचरिनि लखि काहुनपावा \* नारद जानिमवाहि सिरनावा  
 दो० रहेतहाँ दुइरुद्र गन, ते जानहिं सब भेउ ॥

विप्रवेषदेषत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ १३३ ॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई \* हृदयरूप अहमिति अधिकार  
 तहँ बैठे महेश गन दोऊ \* विप्रवेष गतिलखइ न कोऊ  
 करहिं कूट नारदहि सुनाई \* नीकि दीन्हि हरिसुंदरताई  
 रीझिहिराजकुं अरिछविदेषी \* इन्हहिं वरिहि हरिजानि विमेषी  
 मुनिहि मोहमनहाथ परायें \* हैंसहिं संभुगन अतिसत्पुपायें  
 जदपि सुनाहिं मुनि अटपटिबानी \* समुझिनपरै बुद्धिभ्रमसानी  
 काहुनलखा सोचरितविशेषा \* सो सरूप नृप कन्या देषा

मकट वदन भयंकर देही ✽ दखत हृदय क्रोधभा तेही  
दो० सर्पीसंगलै कुंवरितव, चलिजनु राजमराल ।

देषत फिरैमहीप सब, करसरोज जयमाल १३४ ॥

जेहिदिसि बैठे नारद फूली ✽ सोदिसितेहिनिबिलोकीभूली  
पुनिपुनिमुनिउकसहिअकुलाहीं ✽ देषिदसा हरगन मुसुकाहीं  
धरिनुपतनतहंगएउकृपाला ✽ कुअरिहरषिमेलेउजयमाला  
दुलहिनिले गयेलछिनिवासा ✽ नृपसमाजसबभएउनिरासा  
मुनिअतिविकलमोहमतिनांठी ✽ मनिगिरिगईछटिजनुगांठी  
तव हरगन बोले मुसुकाई ✽ निजमुषमुकुरबिलोकहुजाई  
असकहिदोउभागेभयभारी ✽ वदनदीपमुनिवारि निहारी  
वेषुबिलोकिक्रोध अतिवाढा ✽ तिन्हहिसरापदीन्हअतिगाढा  
दो० होहु निसाचर जाइ तुम्ह, कपटी पापी दोउ ॥

हँसेहुहमहिसोलेहुफल, बहुरिहँसेहुमुनिकोउ १३५

पुनिजल दीषरूप निजपावा ✽ तदापि हृदय संतोषनआवा  
फरकत अधरकोपमनमाहीं ✽ सपदिचलेकमलापति पाहीं  
देहों साप कि मरिहों जाई ✽ जगत मोरिउपहास कराई  
बीचहि पंथ मिले दनुजारी ✽ संगरमा सोइ राजकुमारी  
बोले मधुर वचन सुर साई ✽ मुनिकहँचले विकल कीनाई  
सुनतवचनउपजा अतिक्रोधा ✽ माया बस न रहामन बोधा  
परसंपदा सकहु नाहिं देषी ✽ तुम्हरे इरिषाकपट बिसेषी  
मथतसिंधु रुद्रहि बौराएहु ✽ सुरन्हप्रेरिविषपान कराएहु  
दो० असुर सुरा विष संकरहि, आपु रमा मनिचारु ।

स्वारथसाधककुटिलतुम्हँ, सदा कपट व्यवहारु १३६



परमस्वतंत्र न सिरपर कोई \* भावै मनाहि करहुतुम्ह मोई  
 भलेहिमंदमंदहि भलकरहु \* विसमयहरपनहियकछुधरहु  
 डहकिडहकिपरचेहुसबकाहु \* अतिअमंक मनमदाउछाहु  
 कर्मसुभासुभतुम्हहिनबाधा \* अवलगितुमाहि नकाहुमाधा  
 भलेभवनअब वायनदीन्हा \* पावहुगे फल आपन कीन्हा  
 बंचेहु मोहिजवनि धरिदेहा \* सोइ तनधरहु मापममएहा  
 कपिआकृतितुम्हकीन्हिहमारो \* करिहहिंकीम महायतुम्हारी  
 ममअपकारकीन्हतुम्हभारी \* नारि विरह तुम्हहोव दुपारी  
 दो० सापसीस धरिहराषि हिय प्रभुबहु विनती कीन्हि ।

निजमायाकै प्रबलता, करपि कृपानिधि लीन्हि १३७  
 जबहरि माया दूरिनिवारी \* नहिंतहरमा न राजकुमारी  
 तबमुनिअतिसभीतहरिचरना \* गहेपाहि प्रनतारति हरना  
 मृषाहोउ मम श्राप कृपाला \* ममइच्छा कह दीनदयाला  
 मैं दुर्वचन कहे बहुतेरे \* कहसुनिपापमिटिहिकिमिमेरे  
 जपहुजाइ संकर सतनामा \* होइहि हृदय तुरत विश्रामा  
 कोउनहिंसिवसमान प्रियमारे \* असिपरतीतितजहुजनि भारे  
 जेहिपरकृपानकरहिं पुरारी \* सोनपावमुनिभगतिहमारी  
 असउरधरिमाहि विरचहुजाई \* अबनतुमाहि माया नियराई  
 दो० बहुविधि मुनिहि प्रबोधिप्रभु, तव भये अंतरध्यान ।

सत्यलोक नारद चले, करत राम गुन गान १३८ ॥

हरगनमुनिहि जातपथ देशी \* विगतमोहमन हरप विसेषी  
 अतिसभीतनारदपहि आए \* गहि पदआरतवचनमुनाए  
 हरगन हमन बिप्रमुनिराया \* बडअपराधकीन फलपाया

सापअनुग्रह करहु कृपाला ✽ बाल नारद दीन दयाला  
निशिचरजाइहोहु तुम्हदोऊ ✽ वैभवविपुल तेज बलहोऊ  
भुजबलविस्वजितवतुम्हजहिआ ✽ धरिहहिंविष्णु मनुजतनुतहिआ  
समरमरनहरि हाथतुम्हारा ✽ होइहहुमुकुत नपुनिसंसारा  
चलेजुगलमुनिपद सिरनाई ✽ भए निसाचरकालहि पाई  
दा० एककल्पएहि हेतुप्रभु, लीन्ह मनुजअवतार ।

सुररंजन सज्जन सुषद, हरिभंजनभुविभार १३९ ॥  
एहिविधिजनमकरमहरिकेरे ✽ सुंदर सुषद विचित्रघनेरे  
कल्पकल्पप्रातिप्रभुअवतरहीं ✽ चारुचरितनानाविधिकरहीं  
तबतब कथासुनीसन्ह गाई ✽ परमविचित्र प्रबंध बनाई  
विविध प्रसंग अनूपवषाने ✽ करहिंसुनिआचरजसयाने  
हरिअनंत हरिकथा अनंता ✽ कहहिंसुनहिंबहुविधिश्रुतिसंता  
रामचन्द्र के चरित सुहाए ✽ कल्पकोटिलगिजाहिंनगाए  
यहप्रसंग मै कहा भवानी ✽ हरिमाया मोहहिंसुनिज्ञानी  
प्रभुकौतुकी प्रनतहितकारी ✽ सेवतसुलभ सकल दुषहारी  
सो० सुरनरमुनि कोउनाहि, जहि न मोहमाया प्रबल ।

असविचारिमनमाहि, भजिअमहामायापतिहि १४०  
अपर हेतुसुनु सैल कुमारी ✽ कहीं विचित्रकथाविस्तारी  
जेहिकारनअजअणुनअनूपा ✽ ब्रह्मभएउ कोसलपुर भूपा  
जोप्रभुविपिनाफिरततुम्हदेखा ✽ बंधुसमेत धरें मुनि वेषा  
जासुचरितअवलोकिभवानी ✽ सती सरीररहिहु वौरानी  
अजहुनछायामिटतितुम्हारी ✽ तासुचरितमुनुभ्रमरुजहारी  
लीलाकीन्हिजोतेहिअवतारा ✽ सोसबकहिहोमतिअनुसारा

भरद्वाज सुनिसंकर वानी \* सकुचिमप्रेमउमामुमकानी  
 लगेवहुरि वरनै वृषकेतू \* सो अवतार भएउ जेहिहेतू  
 दो० सो मैं तुम्हसनकहों सब, सुनुमुनीम मनलाइ ।

रामकथा कलिमल हरनि, मगलकरनि सुहाइ १४१

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा \* जिन्हते में नरमृष्टि अनूपा  
 दंपति धरम आचरननीका \* अजहुंगावश्रुतिजिन्हकैलीका  
 नृपउत्तानपाद सुत तामू \* ध्रुवहरिभगतभएउसुतजामू  
 लघुसुत नामप्रियव्रत ताही \* वेदपुरान प्रमंमाहि जाही  
 देवहुती पुनितासु कुमारी \* जो मुनिकर्दमकै प्रियनारी  
 आदि देवप्रभु दीनदयाला \* जठरधरे उजेहिंकपिलकृपाला  
 सांख्यसास्त्रजिन्हप्रगटव्याना \* तत्त्वविचार निपुनभगवाना  
 तेहिमनुराजकीन्हबहुकाला \* प्रभुआयमुबहुविधिप्रातिपाला

सो० होइन विषय विराग, भवन बसतभा चौथपनु ॥

हृदय बहुत दुख लाग, जनमगएउ हरिभगतिबिनु १४२

बरवसराजसुताहि नृपदीन्हा \* नारिसमेत गवनवनकीन्हा  
 तीरथवर नैमिष विष्याता \* अतिपुनीतमाधकसिधिदाता  
 बसहिंतहाँमुनिसिद्धसमाजा \* तहंहिअहरापिचलेमनुराजा  
 पंथजात सोहहिं मतिधीरा \* ज्ञानभगति जनु धरे सरीरा  
 पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा \* हरपि नहाने निरमल नीरा  
 आएमिलनसिद्धमुनिज्ञानी \* धरमधुरंधर नृपारिपि जानी  
 जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए \* मुनिन्हसकलसादरकरवाए  
 कससरीरमुनिपटपरिधाना \* सतसमाजनितसुनहिंपुराना

दो० द्वादस अच्छर मंत्रवर, जपहिं सहित अनुराग ॥

वासुदेव पदपंकरुह, दंपति मन अतिलाग १४३॥

करहिं अहारसाकफलकंदा ✽ सुमिरहिं ब्रह्मसाच्चिदानंदा  
पुनिहरि हेतुकरन तपलागे ✽ बारि आधार मूलफलत्यागे  
उरआभिलाष निरंतर होई ✽ देषिअनयन परम प्रभु सोई  
अगुन अपंड अनंत अनादी ✽ जेहिचिंतहिं परमारथ वादी  
नेति नेतिजेहि वेद निरूपा ✽ चिदानंद निरूपाधि अनूपा  
संभु विरंचिविस्तु भगवाना ✽ उपजहिं जासु अंसतेनाना  
ऐसेउप्रभुसेवक वस अहई ✽ भगत हेतुलीला तन गहई  
जौयहवचनसत्यश्रुतिभाषा ✽ तौहमारपूजिहि अभिलाषा

दो० एहिविधि वीते वरष षट, सहस बारि आहार ॥

संवत सप्त सहस्र पुनि, रहे समीर आधार १४४॥

वरषसहसदसत्यागेउ सोऊ ✽ ठाढे रहे एकपद दोऊ  
विधिहरिहरतपदेषि अपारा ✽ मनु समीप आए बहुबारा  
मागहुधरबहु भांति लोभाए ✽ परमधीरनहिंचलहिं चलए  
अस्थिमात्रहोइरहेउ सरीरा ✽ तदपिमनागमनाहिमहिपीरा  
प्रभु सर्वज्ञ दास निजजानी ✽ गति अनन्यतापसनृपरानी  
माणुमाणु करमै नम वानी ✽ परम गंभीर कृपामृतसानी  
मृतकजिआवनिगिरासुहाई ✽ स्रवनरधहोइ उर जब आई  
रिष्ट पुष्ट तन भए सुहाए ✽ मानहु अवाहि भवनतेआए

दो० श्रवनसुधासमवचन सुनि, पुलकप्रफुल्लितगात मा०पा० १

बोलेमनु करिदंडवत, प्रेमन हृदय समात ॥ १४५ ॥

सुनुसेवक सुरतरु सुरधेनु ✽ विधिहरिहर बंदित पदरेनु



सेवत सुलभसकलसुपदायक\* प्रनतपालमचराचर नायक  
 जों अनाथ हितहम परनेहू\* तौ प्रमन्न होइ यहवर देहू  
 जोसरूप वस सिवमन माहीं\* जेहिकारनमुनि जतनकराहीं  
 जो भुसुंढि मनमानसहंसा\* सगुनअगुनजेहिनिगम प्रसंसा  
 देषहिं हमसरूपभरिलोचन\* कृपाकरहु प्रनतारतिमोचन  
 दंपतिवचन परम प्रियलागे\* मृदुल विनीत प्रेमरम पागे  
 भगतवल्लभप्रभुकृपानिधाना\* विस्ववाम प्रगटे भगवाना  
 दो० नीसरोरुह नीलमानि, नील नीरधर स्याम ॥

लाजहितनसोभानिरपि, कोटिकोटिमतकाम १४६  
 सरद मयंक वदन छबिसीवा\* चारुकपोल चिबुकदरग्रीवां  
 अधर अरुनरदसुंदर नासा\* विधुकरनिकरविनिंदकदासा  
 नवअंबुजअंबकछवि नीकी\* चितवनिललितभावतीजीकी  
 भृकुटिमनोजचापछविहारी\* तिलकललाटपटलदुतिकारी  
 कुंडलमकरमुकुटसिरभ्राजा\* कुटिलकेसजनुमधुप समाजा  
 उर श्रीवत्स रुचिरवनमाला\* पदिकहारभूपन मनि जाला  
 केहरि कंधर चारु जनऊ\* वा विभूपन सुंदर तेऊ  
 करिकरसरिससुभगभुजदंडा\* कटिनिपंगकर मरकोदंडा  
 दो० ताडित विनिंदकपीतपट, उदर रेपवर तीनि ॥

नाभि मनोहर लेतिजनु, जसुनभँवरछविछीनि १४७  
 पदराजीववरानिनहिं जाहीं\* मुनिमनमधुपवसाहिजिन्हमाहीं  
 वामभागसोभति अनुकूला\* आदिसक्तिछविनिधिजगमूला  
 जासुअंसउपजहिं गुनषानी\* अगनितलाच्छ उमाब्रह्मानी  
 भृकुटिविलासजासुजगहोई\* राम वाम दिसि सीतासोई

छवि समुद्र हरिरूपविलोकी ✽ एकटक रहे नयनपटरोकी  
चितवहिं सादर रूप अनूपा ✽ तृप्तिनमानहिं मनु सतरूपा  
हरष विवसतनदसाभुलानी ✽ परे दंडइव गहि पद पानी  
सिरपरसेप्रभु निजकरकंजा ✽ तुरत उठाए करुना पुंजा  
दो० बोलेकृपानिधानपुनि, अतिप्रसन्नमोहिजानि ।

मागहुवरजोइभावमन, महादानिअनुमानि ॥१४८॥

सुनिप्रभुवचनजोरिजुगपानी ✽ धरि धीरज बोले मृदुवानी  
नाथ देषि पदकमलतुम्हारे ✽ अब पूरे सबकाम हमारे  
एक लालसा बडिउर माहीं ✽ सुगमअगमकहिजातसोनाहीं  
तुम्हहिदेतअतिसुगमगुसाई ✽ अगमलागमोहि निजकृपिनाई  
जथा दरिद्र विबुध तरुपाई ✽ बहु संपति मागत सकुचाई  
तासु प्रभाउ न जानाहि सोई ✽ तथा हृदय मम संसय होई  
सोतुम्हजानहु अंतर जामी ✽ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी  
सकुचिविहाइ मागुनृपमोही ✽ मोरे नहिं अदेय कछु तोही  
दो० दानिसिरोमनिकृपानिधि, नाथकहौं सति भाउ ।

चाहातुम्हहि समानसुत, प्रभुसनकवनदुराव १४९ ॥

देषिप्रीतिसुनि वचनअमोले ✽ एवमस्तु करुना निधिबोले  
आपु सरिसषोजौं कहें जाई ✽ नृपतव तनय होव मैं आई  
सतरूपहिविलोकि करजोरें ✽ देवि मागु बरजो रुचितोरें  
जोवरनाथ चतुरनृप मागा ✽ सोइकृपालमोहिअतिप्रियलागा  
प्रभु परंतु सुठिहोतिदिठाई ✽ जदपिभगताहिततुम्हहिसुहाई  
तुम्हब्रह्मादिजनकजगस्वामी ✽ ब्रह्म सकलउर अंतरजामी  
अस समुझत मन संसयहोई ✽ कहाजोप्रभुप्रमान पुनिसोई

जेनिजभगतनाथतबअहहीं \* जोसुपपावहिंजोगतिलहहीं  
दो० सोइसुपसोइगतिसोइभगति, सोइनिजचरनमनेहु ।

सोइविवेकसोइरहनिप्रभु, हमहिंकृपाकरिदेहु १५० ॥

सुनिमृदुगूढ रुचिरवचरचना \* कृपासिंधु बोले मृदु वचना  
जोकछुरुचि तुम्हरेमनमाहीं \* में सो दीन्ह मवमंमयनाहीं  
मातुविवेक अलौकिक तोरे \* कबहुंनमिटिहिअनुग्रहमोरे  
वंदि चरनमनु कहेउ बहोरी \* अवरएक विनती प्रभुमोरी  
सुत विषैक तबपदरति होऊ \* मोहिवटमृदुकहे किनकोऊ  
मनिविनुफनिजिमिजलविनुमीना \* ममजीवनतिमि तुम्हहिअधीना  
असवरमांगिचरनगहिरहेऊ \* एवमस्तुकस्नानिधि कहेऊ  
अबतुम्हममअनुसासनमानी \* बसहुजाइ सुरपतिरजधानी  
सो० तहँकरिभोगविसाल, तातगएँ कछुकालपुनि ।

होइहहुअवधभुआल, तब मै होव तुम्हारसुत १५१

इछा मय नर वेष सँवारे \* होइहों प्रगट निवेततुम्हारे  
अंसन्ह सहितदेहधरिताता \* करिहोंचरितभगतमुखदाता  
जे सुनिसादर नरबट भागी \* भवतरिहहिंममतामदत्यागी  
आदिसक्तिजेहिजग उपजाया \* सोउअवतरिहिमोरयहमाया  
पुरवव मै अभिलाषतुम्हारा \* सत्यसत्य प्रन सत्य हमारा  
पुनिपुनिअसकहिकृपानिधाना \* अन्तर धानभए भगवाना  
दंपतिउरधरिभगतिकृपाला \* तेहिआस्रमनिवसेकछुकाला  
समयपाइतनतजिअनयासा \* जाइकीन्ह अमरावतिवासा  
दो० यहइतिहासपुनीतअति, उमहिकहीवृषकेतु ।

भरद्वाजसुनुअपरपुनि, रामजनमकरहेतु ॥ १५२ ॥



सुनुमुनि कथापुनीतपुरानी \* जोगिरिजाप्रतिसंभुवखानी  
विस्वविदित एककैक्यदेसू \* सत्य केतु तहें बसै नरेसू  
धरम धुरंधर नीति निधाना \* तेज प्रताप सील बलवाना  
तेहिके भए जुगल सुतवीरा \* सबगुन धाम महारन धीरा  
राजधनी जो जेठसुतआही \* नामप्रताप भानु असताही  
अपरसुतहि अरिमर्दननामा \* भुजबलअतुलअचल संग्रामा  
भाइहि भाइ परसपर प्रीती \* सकलदोषछलवर जितरीती  
जेठेसुतहि राज नृप दीन्हा \* हरिहितआपुगवनवनकीन्हा  
दो० जब प्रताप रविभयउ नृप, फिरी दोहाई देस ।

प्रजापाल अति वेदविधि, कतहुँ नहीं अघ लेस १५३

नृपहितकारकसचिवसयाना \* नामधरमरुचिसुक्र समाना  
सचिव सयान वंधुबल वीरा \* आपु प्रताप पुंज रनधीरा  
सेनसंग चतुरंग अपारा \* अमितसुभटसबसमरजुभारा  
सेन विलोकि राउ हरषाना \* अरु बाजे गह गहे निसाना  
विजय हेतु कटकई बनाई \* सुदिनसाधिनृपचलेउबजाई  
जहें तहें परी अनेक लराई \* जीते सकल भूप बरिआई  
सप्तदीप भुजबल बसकीन्हे \* लैलै दंड छाडि नृप दीन्हे  
सकलअवनिमंडलतेहिकाला \* एक प्रतापभानु महिपाला  
दो० स्ववसाविस्व करिवाहु बल, निजपुर कीन्ह प्रवेस ।

अरथ धरम कामादिसुष, सेवै समय नरेस ॥१५४॥

भूप प्रतापभानु बल पाई \* काम धेनु भै भूमि सुहाई  
सब दुष बराजितप्रजासुषारी \* धरम सील सुंदर नरनारी  
साचिवधरमरुचिहरिपदप्रीती \* नृपहितहेतुसिषवानितनीती



गुरुसुर संत पितरमाहि देवा \* करे मदा नृप सबके मेवा  
भूप धरम जे वेद वषाने \* सकल करे मादर मुपमाने  
दिनप्रतिदेइविविधिविधिदाना \* सुने मास्र वर वेद पुराना  
नाना वापी भूप तडागा \* मुमन वाटिका सुंदर वागा  
विप्रभवन सुरभवन सुहाये \* सब तीरथन्ह विचित्रवनाए  
दो० जहं लगि कहे पुरान श्रुति, एक एक सबजाग ॥

बार सहस्र सहस्र नृप, किए महित अनुराग १५५

हृदयनकछुफल अनुसंधाना \* भूप विवेकी परम मुजाना  
करइ जेधरमकरममनवानी \* वासुदेव आपित नृप ज्ञानी  
चाढि बरबाजिवार एकराजा \* मृगयाकर सबमाजिममाजा  
बिंध्याचल गंभीर वन गयऊ \* मृग पुनीत बहुमारतभयऊ  
फिरत विपिन नृपदीपबराह \* जनुवनदुरे उममिहिग्रमिराह  
बढविधुनहिसमातमुपमाहीं \* मनहुक्रोधवमउगिलतनाहीं  
कोलकरालदसनछवि गाई \* तनविमालपीवर अधिकाई  
घुरघुरात हय आरो पाए \* चकितविलोकितकानउठाए  
दो० नील महीधर सिषरसम, देपि विमाल बराह ॥

चपरि चलेउहयमुटुकिनृप, हांकिनहोइनिवाह १५६

आवतदेषि अधिकरववाजी \* चलेउबराहमस्तगतिभाजी  
तुरतकीन्ह नृपसर संधाना \* माहिमालिगयउ विलोकितवाना  
तकितकितीरमहीसचलावा \* करिल्लसुअरसरीर बचावा  
प्रगटत दुरत जाइमृगभागा \* रिसवसभूपचलेउ संगलागा  
गएउ दूरिघन गहन बराह \* जहंनाहिनगजवाजि निबाह  
अतिअकेलवनविपुल कलेसू \* तदपिन मृग मगतजै नरसू

कोलविलोकि भूप बडधीरा ✽ भागि पैठगिरि गुहागंभीरा  
अगमदेषिन्टपअतिपछिताई ✽ फिरेउ महावन परेउमुलाई  
दो० षेदषिन्न छुद्धित तृपित, राजा बाजि समेत ॥

पोजत व्याकुलसरितसर, जलबिनुभएउअचेत १५७

फिरतविपिनआस्रमएकदेषा ✽ तहँवसनृपतिकपटमुनिवेषा  
जासुदेस नृप लीन्ह छुडाई ✽ समर सेन तजिगयउ पराई  
समयप्रताप भानुकर जानी ✽ आपनअतिअसमयअनुमानी  
गएउनगृहमनबहुतगलानी ✽ मिलानराजहिन्टपअभिमानी  
रिसउरमारिरिंकजिमिराजा ✽ विपिन वसै तापसके साजा  
तासुसमीपगवननृपकीन्हा ✽ यहप्रतापरवितेहितवचीन्हा  
राउतृपितनहिंसोपहिचाना ✽ दोषि सुवेष महामुनि जाना  
उतरि तुरगते कीन्हप्रनामा ✽ परमचतुरनकहेउनिजनामा  
दो० भूपाति तृपित विलोकि हेहि, सरवर दीन्ह देषाई ।

मज्जन पानसमेत हय, कीन्ह नृपति हरपाई १५८ ॥

गैस्रम सकलसुपी नृपभयऊ ✽ निजआस्रम तापसलैगयऊ  
आसनदीन्हअस्तरविजानी ✽ पुनितापस बोलेउमृदुबानी  
कोतुम्हकसवनफिरहुअकेले ✽ सुंदर जुवा जीवपर हेले  
चक्रवर्ति के लछन तोरें ✽ देपत दया लागि अति मोरें  
नाम प्रताप भानु अवनीसा ✽ तासु सचिवमें सुनहुमुनीसा  
फिरत अहैरें परेउँ मुलाई ✽ बडे भाग देषेउँ पग आई  
हमकह दुर्लभ दरस तुम्हारा ✽ जानतहोंकछुभलहोनिहारा  
कहमुनितातभएउअंधियारा ✽ जोजनसत्तर नगर तुम्हारा

दो० निसाघोरगंभीर बन, पंथ न सुनहु मृजान ॥  
 बसहु आजतुम्ह जानि अम, जाणहु होत विहान ॥  
 तुलसी जसि भवितव्यता, तेमीमिले महाइ ॥  
 आपु न आवैताहि पहि, ताहि तहां लेजाइ १५९ ॥

भलेहिनाथआयसुधरिसीसा \* बांधि तुरग तरु बैठ महीसा  
 नृपबहुभांति प्रसंसेउ ताही \* चरनवांदिनिजभाग्यसराही  
 पुनिबोलेउ मृदुगिरा सुहाई \* जानि पिताप्रभु करोंदिठाई  
 मोहिमुनीससुतसेवकजानी \* नाथ नामनिजकहहुवपानी  
 तेहिनजाननृपनृपाहिसोजाना \* भूपसुहृद मो कपटमयाना  
 बरी पुनि छत्री पुनि राजा \* ललधल्कीन्हचहैनिजकाजा  
 समुझिराजसुषदुपितअराती \* अंवाअनल इव सुलगैछाती  
 सरलवचननृपके सुनिकाना \* वयरसंभारि हृदय हरपाना

दो० कपट बोरि वानी मृदुल, बोलेउ जुगुति समेत ॥

नाम हमार भिषारि अब, निरधन रहितनिकेत १६०

कह नृपजे विज्ञान निधाना \* तुम्हमारिपेगालितअभिमाना  
 सदारहहिं अपनपौ दुराए \* सबविधि कुसलकुवेपवनाए  
 तेहि तें कहहिं संतश्रुति टेरे \* परम अकिंचन प्रियहरिकेरे  
 तुम्हसमअधनभिषारिअगेहा \* होत विरंचि सिवाहि संदेहा  
 जोसिसोसितवचरननमामी \* मोपरकृपाकरिअअवस्वामी  
 सहज प्रीति भूपतिके देषी \* आपुविषय विस्वासविसेषी  
 सबप्रकार राजहि अपनाई \* बोलेउअधिक सनेह जनाई  
 सुनुसतिभाउकहींमहिपाला \* इहां वसत बीते बहु काला

दो० अवलगि मोहि न मिलेउकोउ, मैनजनावों काहु ।  
लोक मान्यता अनल सम, करतप कानन दाहु ॥

सो० तुलसी देषि सुवेषु, भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ॥  
सुंदरके किहिपेपि, वचन सुधासमअसनअहि १६१

तार्ते गुप्त रहों बन माहीं ❖ हरितजिकिमपिप्रयोजननाहीं  
प्रभुजानतसबविनाहिजनाएँ ❖ कहहुकवनसिधिलोगरिभाएँ  
तुम्हसुचिसुमतिपरमप्रियमोरे ❖ प्रीति प्रतीतिमोहि परतारे  
अब जौंतात दुरावा तोहा ❖ दारुन दोष घटै अतिमोहीं  
जिमजिमतापसकथेउदासा ❖ तिमितिमिनुपहिउपजबिस्वासा  
देपास्ववस कर्म मन बानी ❖ तब बोला तापसबगंध्यानी  
नाम हमार एक तन भाई ❖ सुनिनृपबोलेउपुनिसिरनाई  
कहहु नाम करअरथवपानी ❖ मोहिसेवकअतिआपनजानी

दो० आदि सृष्टि उपजी जबहि, तब उत्पति भइमोरि ।

नाम एक तन हेतु तेहि, देह न धरी बहोरि ॥ १६२ ॥

जनिआचरजकरहुमनमाहीं ❖ सुततपतैं दुर्लभ कछु नाहीं  
तपबलतेजग सिजैं विधाता ❖ तपबल विष्णु भएपरित्राता  
तपबल संभु करहिं संघारा ❖ तपतैं अगम न कछु संसारा  
भएउनृपहिसुनिअतिअनुरागा ❖ कथापुरातन कहैसो लागा  
करमधरम इतिहासअनेका ❖ करइनिरूपनविरति विवेका  
उदभवपालनप्रलय कहानी ❖ कहैसिअमितआचरजवपानी  
सुनिमहीसतापसवसभयऊ ❖ आपननामकहनतब लयऊ  
कहतापस नृप जानों तोही ❖ कीन्हैउकपटलागभलमोही



सो० सुनुमहीसअसिनीति जहँ, तहँ नामन कहहिं नृप ।

मोहितोहिपरअतिप्रीति, सोइचतुरताविचारितव १६३  
 नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा \* सत्यकेतु तव पिता नरेसा  
 गुंरुप्रसादसब जानि अराजा \* कहियनआपन जानिअकाजा  
 दैषिताततव सहज सुधाई \* प्रीतिप्रतीति नीतिनिपुनाई  
 उपजिपरी ममता मनमोरें \* कह्यो कथा निज पृछेतोरें  
 अब प्रसन्न मैं संसय नाही \* माणुजो भूपभावमन माही  
 सुनिसुबचन भूपातिहरपाना \* गहिपदविनयकीन्हविधिनाना  
 कृपासिंधु मुनिदरसन तोरें \* चारि पदारथ करतल मोरें  
 प्रभुहितथापिप्रसन्नविलोकी \* मागिअगमबरहोउँविसोकी  
 दो० जरामरनदुपरहिततन, समर जितौजनिकोउ ।

एकछत्ररिपुहीनमहि, राज कल्पसतहोउ ॥ १६४ ॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ \* कारन एक कठिनमुनुसोऊ  
 कालौ तुअ पदनाइहिसीसा \* एकविप्रकुल छाडि महीसा  
 तपवल विप्र सदा वरिआरा \* तिन्हकैकोपनकोउरपवारा  
 जौविप्रन्हबस करहु नरेसा \* तौतुअवसविधिविशुमहेसा  
 चलैनब्रह्मकुलसनवरि आई \* सत्यकहों दोउभुजा उठाई  
 विप्रसाप बिनुमुनु महिपाला \* तोरनासनहिं कवनेहु काला  
 हरषेउराउ बचनसुनितासू \* नाथन होइ मोर अवनसू  
 तवप्रसाद प्रभुकृपा निधाना \* मोकहें सर्व काल कल्याना  
 दो० एवमस्तु कहिकपट मुनि, बोलाकुटिल बहोरि ।

मिलवहमार भुलावनिज, कहहुतहमहिनषोरि १६५  
 तातैमै तोहि बरजों राजा \* कहें कथातवपरम अकाजा

छठेंसवन यह परत कहानी ✽ नासतुम्हार सत्य ममवानी  
 यहप्रगटें अथवा द्विजसापा ✽ नासतोर सुनुमानु प्रतापा  
 आनउपाय निधनतवनाहीं ✽ जौहरिहरकोपहि मनमाहीं  
 सत्यनाथपदगाहि नृपभाषा ✽ द्विजगुरकोप कहहुको राषा  
 रापइ गुरुजों कोप विधाता ✽ गुरविरोधनहिंकोउजगत्राता  
 जौनचलव हम कहे तुम्हारे ✽ होउनास नहि सोच हमारे  
 एकहि डर डरपत मनमोरा ✽ प्रभुमहिदेवसाप अतिघोरा  
 दो० होहिविप्रवसकवनविधि, कहहु कृपाकरिसोउ ।

तुम्हतजि दीनदयाल निज, हितूनदेखौकोउ १६६ ॥  
 सुनुनृपविविधिजतनजगमाहीं ✽ कष्टसाध्यपुनिहोहिकिनाहीं  
 अहइएक अतिसुगमउपाई ✽ तहां परंतु एक कठिनाई  
 ममआधीन जुगुतिनृपसोई ✽ मोरजाव तव नगर न होई  
 आजलगें अरुजवते भयऊँ ✽ काहूके गृहग्राम न गयऊँ  
 जौन जाऊँ तौ होइ अकाजू ✽ बनाआइ असमंजस आजू  
 सुनिमहीसबोलेउ मृदुवानी ✽ नाथनिगमआसिनीति बषानी  
 बडेसनेहलबुन्ह पर करहीं ✽ गिरिनिजसिरन्हिसदातृनधरहीं  
 जलधिअगाधमौलिवहफेनू ✽ संतत धरनि धरतसिरुनेनू  
 दो० असकहि गहेनरेसपद, स्वामी होहुकृपाल ।

मोहिलागि दुषसहिअप्रभु, सज्जनदीनदयाल १६७  
 जानिनृपहिआपनआधीना ✽ वोला तापसकपट प्रवीना  
 सत्यकहौं भूपति सुनुतोही ✽ जगनाहिन दुर्लभकछुमोही  
 अवसिकाज मैं करिहों तोरा ✽ मनक्रमवचन भगततैंमोरा  
 जोग जुगुतिजपमंत्र प्रभाऊ ✽ फलैतवहिंजवकरिअ दुराऊ

जौनरेस में करौं रसोई \* तुम्हपरमहुमोहिजाननकोई  
अन्नसोजोइजोइभोजनकरई \* मोइमोइतवआयमुअनुमरई  
पुनितिन्हकेगृहजेंवै जोऊ \* तव बमहोइ भूपमुनु मोऊ  
जाइ उपाय रचहु नृप एहू \* संवतभरि संकल्प करेहु  
दो० नितनूतन द्विजमहस मत, बरेहु महित परिवार ।

में तुम्हरे संकल्पलगि, दिनहिंकरवि जेवनार १६८  
एहिविधि भूपकष्टअति थोरें \* होइहहिंसकल विप्रवमतोरें  
करिहहिं विप्र होम मपसेवा \* तोहिप्रमंगमह जेहिंवम देवा  
औरएक तोहि कहौलखाऊ \* में एहि बेष न आउव काऊ  
तुम्हरे उपरोहित कहैं राया \* हरिआनवमैकरिनिजमाया  
तपबलतोहिंकरिआपुममाना \* रपिहों इहां वरप परमाना  
में धरि तामु बेष भुनु राजा \* मयविधितोर संवारवकाजा  
गैनिखिबहुत सैन अवकीजै \* मोहितोहिं भूपभेंटदिनतीजै  
मै तपबलतोहिं तुरगसमेता \* पहुचैहों मोवतहि निकेता  
दो० में आउव सोइ बेषधरि, पहिचानहु तव मोहि ।

जब एकांत बोलाइ सब, कथा सुनावों तोहि १६९

सयनकीन्हनृपआयसुमानी \* आमन जाइ बैठ छलज्ञानी  
समित भूप निद्राअति आई \* मोकिमिमोवमोचअधिकई  
कालकेतु निसिचरतहंआवा \* जेहिमूकरहोइनृपहिमुलावा  
परममित्र तापस नृपकेरा \* जानै सो अतिकपट घनेरा  
तोहिकेसत सुत अरुदसभाई \* षलअतिअजय देवदुखदाई  
प्रथमाहिंभूप समर सब मारे \* विप्र सैंत सुर देखि दुषारे  
तोहिषलपाछिलवयरसंभारा \* तापसनृपमिलिमंत्र विचारा



जेहिरिपुछयसोइरचेन्हिउपाऊ✽ भाबीवस न जानकछुराउ  
दो० रिपु तेजसी अकेल अपि, लयुकरि गनिअनताहु ॥

अजहुँ देतदुष रवि ससिहि, सिर अवसेषितराहु १७०  
तापसनृपनिजसपहिनिहारी✽ हरषिमिलेउठि भएउ सुषारी  
मित्रहिकहिसव कथासुनाई ✽ जातुधान वोला सुखपाई  
अव साधेउ रिपुसुनहुनरेसा✽ जौतुम्ह कीन्ह मोरउपदेसा  
परिहरि सोच रहहुतुम्ह सोई ✽ विनओषधविआधि विधिषोई  
कुलसमेत रिपु मूल बहाई ✽ चौथे दिवस मिलवमें आई  
तापसनृपहि बहुतपरितोषी ✽ चलामहा कपटी अतिरोषी  
भानुप्रतापहि वाजि समेता✽ पहुचाएसि छनमाझनिकेता  
नृपहिनारिपहिं सयनकराई ✽ हयगृहवाँधेसि वाजिवनाई  
दो० राजाके उपरोहितहि, हरिलै गयउ बहोरि ।

लैराखेसि गिरि पोहमहँ, भाया करि मतिभोरि १७१  
आपुविरचि उपरोहितरूपा ✽ परेउ जाइतोहि सेजअनूपा  
जागेउ नृपअनभए बिहाना ✽ देषिभवनअतिअचरजमाना  
मुनिमहिमामनमहँअनुमानी ✽ उठेउगवहिजेहिजाननरानी  
काननगएउ वाजिचढितेहीं ✽ पुरनरनारि न जानेउ केहीं  
गएजाम जुगभूपति आवा ✽ घरघर उत्सववाज बधावा  
उपरोहितहि देष जव राजा ✽ चकित विलोकसुमिरिसोईकाजा  
जुगसमनृपहिगएउदिनतीनी ✽ कपटीमुनिपदरहमाति लीनी  
समयजानिउपरोहितआवा ✽ नृपहिमतेसवकहिसमुझावा  
दो० नृपहरषेउ पहिचानिगुरु, भ्रमवसरहा नचेत ।

वरेतुरतसत सहसवर, विप्रकुटुम्बसमेत ॥ १७२ ॥



उपरोहितजेवनार वनाई \* छरमचारिविधि जमिश्रुतिगाई  
 मायामय तेहि कीन्हरसोई \* विंजनबहुगनि मकै न कोई  
 विविधिमृगन्हकर आमिपरांथा \* तेहिमहंविप्रमामपठ मांथा  
 भोजनकहँसव विप्र बोलाए \* पदपपारि मादर बैठाए  
 परसनजवहिलागमहिपाला \* भइअकामवानीतोहि काला  
 विप्रवृंद उठि उठि गृहजाहू \* हेवटिहानि अन्नजनिखाहू  
 भएउरसोई भूसुर मामू \* मवादिजउठे मानिविन्वासू  
 भूपविकल मतिमोहभुलानी \* भावीवम न आवमुपवानी  
 दो० बोलेविप्रसकोपतव, नहि कछु कीन्ह विचार ।

जाइनिसाचर होहुनृप, मूढमहित परिवार ॥ १७३ ॥  
 छत्रबंधु तैं विप्र बोलाई \* घालें लिए महित ममुदाई  
 इस्वर राषा धरम हमारा \* जेहमि ते ममेत परिवारा  
 सम्वत मध्यनास तव होऊ \* जलदाता न रहे कुलकोऊ  
 नृपसुनिसापविकल अति \* भइवहोरिवरगिरा अकासा  
 विप्रहुसाप विचारिन दीन्हा \* नहिअपराधभूपकछुकीन्हा  
 चकितविप्रसवसुनिनभवानी \* भूप गएउजहं भोजनपानी  
 तहँनअसननहिंविप्रसुआरा \* फिरउराउमनसोचअपारा  
 सबप्रसंग माहिंसुरन सुनाई \* त्रामितपरेउअवनीअकुलाई  
 दो० भूपति भावी मिटैनहि, जदापि न दूषनतोर ॥

किए अन्यथा होइ नहिं, विप्रसाप अतिघोर १७४  
 असकहिसवमहिदेवसिधाए \* समाचार पुरलोगन्ह पाए  
 सोचहिं दूषन देवहिं देही \* विरचत हंसकागकिअजहौ  
 उपरोहिताहि भवन पहुँचाई \* असुरतापसहिं षवारिजनाई

तेहिषल जहँतहँ पत्रपठाए ✽ सजिसजि सेन भूपसवधाए  
घेरेन्हिनगर निसानबजाई ✽ विविधिभांतिनितहोइलराई  
जूझैसकल सुभटकरिकरनी ✽ बंधुसमेत परेउ नृप धरनी  
सत्यकेतुकुलकोउनहिंवांचा ✽ विप्रसाप किमिहोइअसांचा  
रिपुजितिसवनृपनगरबसाई ✽ निजपुरगवने जयजसपाई  
दो० भरद्वाज सुनु जाहिजब होइ विधाता वाम ॥

धूरिमेरु समजनकजम, ताहि व्यालसमदाम १७५  
कालपाइमुनिसुनु सोइराजा ✽ भएउनिसाचरसाहितसमाजा  
दस सिरताहि बीसभुजदंडा ✽ रावन नाम बीर बरि बंडा  
भूप अनुजअरि मर्दननामा ✽ भएउसोकुंभकरनबलधामा  
सचिवजोरहाधरमरुचिजामू ✽ भएउविमात्र बंधुलघुतामू  
नामविभीषनजेहिजगजाना ✽ विष्णुभगतविज्ञाननिधाना  
रहेजेसुत सेवक नृपकेरे ✽ भए निसाचर घोर घनेरे  
कामरूपपल जिनसअनेका ✽ कुटिलभयंकरविगताविवेका  
कृपारहित हिंसक सब पापी ✽ बरनिनजाहिंविस्वपरितापी  
दो० उपजे जदपिपुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप ।

तदपि महीसुर सापवस, भएसकल अघरूप १७६ ॥  
कीन्हविविधितपतीनिउभाई ✽ परम उग्रनहि बरनिसोजाई  
गयउनिकटतपदेपिविधाता ✽ मागहु बर प्रसन्न मै ताता  
करिविनतीपदगहिदससीसा ✽ बोले बचन सुनहु जगदीसा  
हमकाहूके मरहिं न मारे ✽ बानरमनुज जाति दुइ बारे  
एवमस्तु तुमबडतप कीन्हा ✽ मैब्रह्मामिलि तोहि बरदीन्हा  
पुनिप्रभुकुंभकरनपहिगएऊ ✽ तेहिविलोकिमनबिसमयभयऊ

जौएहिपलनितकरवअहारु \* होइहि मव उजारि मंमारु  
सारद प्रेरि तासुमति फेरी \* मागेसि नीदमाम पटकेरी  
दो० गएविभीषन पासपुनि, कहेउपुत्र वरमागु ।

तेहिमागेउ भगवंत पद, कमल अमलअनुगगु १७७  
तिन्हहि देइवर ब्रह्मसिधाए \* हरपितते अपने गृहआए  
मयतनुजा मंदोदरि नामा \* परमसुंदरी नारि लक्ष्मामा  
सोइमयदीन्हिरावनहिआना \* होइहि जातुधानपति रानी  
हरषित भएउनारिभालिपाई \* पुनिदो उबंधुविआहेमिजाई  
गिरित्रिकूटएकसिंधुमझारी \* विधिनिमित्तदुर्गमअतिभारी  
सोइमयदानव बहुरिसंवारा \* कनकरचितमनिभवनअपारा  
भोगावतिजसिअहिकुलवासा \* अमरावतिजमिमक्रनिवासा  
तिन्हतेअधिकरम्यअतिवंका \* जगविप्यात नामतेहिलंका  
दो० पाँई सिंधु गंभीर अति, चारिहुंदिमि फिरिआव ।

कनककोट मनिपचित दृढ, वरनिन जाइवनाव ॥

हरिप्रेरित जेहिकल्प जोइ, जातुधानपति होइ ।

मूरप्रतापी अतुलवल, दलममेत वमसोइ १७८ ॥

रहेतहां निसिचर भटभारे \* ते सब सुरन्ह समर संघारे  
अवतहैं रहहिं सक के प्रेरे \* रलक कोटि जछपति केरे  
दसमुषकतहुषवरिअसिपाई \* सेनसाजि गढघेरेमि जाई  
देषिविकटभटबडिकटकाई \* जछजीव लै गए पराई  
फिरिसवनगर दसानन देषा \* गएउसोचमुषभएउविसेषा  
सुंदरसहज अगमअनुमानी \* कीन्हि तहां रावनरजधानी  
जेहिजसजोगवाटिगृहदीन्हे \* सुषीसकल रजनीचर कीन्हे

एकवार कुबेर पर धावा ✽ पुष्पक जान जीतिलै आवा  
दो० कौतुकहीं कैलास पुनि, लीन्हिसिजाइ उठाइ ॥

मनहु तौलि निजबाहु बल, चला बहुत सुषपाइ १७९॥  
सुष संपति सुतसेन सहाई ✽ जयप्रताप बलबुद्धि बढाई  
नित नूतन सब बाढतजाई ✽ जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई  
अतिवलकुंभकरनअस आता ✽ जेहिकहंनहिप्रतिभटजग जाता  
करइ पान सोवै षटमासा ✽ जागत होइतिहं पुर त्रासा  
जौंदिन प्रतिअहार करसोई ✽ बिस्वबेगि सबचौपट होई  
समरधीरनहिंजाइ बखाना ✽ तेहिसमअधिकनकोउबलवाना  
बारिदनाद जेठसुत तामू ✽ भटमहंप्रथमलीकजगजामू  
जेहिन होइरन सनमुष कोई ✽ सुर पुरनितहि परावनहोई  
दो० कुमुष अकंपन कुलिसरद, धूमकेतु अतिकाय ॥

एक एक जगजीति सक, ऐसे सुभट निकाय १८०  
कामरूप जानहिसब माया ✽ सपनहुजिन्हकेधरमनदाया  
दसमुष बैठसभा एकवारा ✽ देषिअमितआपनपरिवारा  
सुतसमूहजनपरिजन नाती ✽ गनैको पारनिसाचर जाती  
सेनविलोकिसहजआभिमानि ✽ बोला बचनक्रोध मदसानी  
सुनहुसकल रजनीचर जूथा ✽ हमरे बैरी बिबुध बरूथा  
तेसनमुष नाहिं करहिं लराई ✽ देषिसवल रिपु जाहिं पराई  
तिन्हकरमरन एकविधिहोई ✽ कहोंबुझाइ सुनहु अवसोई  
द्विज भोजनमषहोमसराधा ✽ सबकै जाइ करहुतुम्हबाधा  
दो० छुधाछीन बलहीन सुर, सहजेहि मिलिहहिं आइ ।

तवमारिहोंकिछाडिहों, भलीभांतिअपनाइ १८१ मा० पा० ४



मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा \* दीन्ही मिपबलवयरवदावा  
 जेसुर समरधीर बलवाना \* जिन्हकेकरिवेकर अभिमाना  
 तिन्हहिजीतिरनआनेसुवांधी \* उठिसुतापितुअनुमासनकांधी  
 एहिविधिसवहीअज्ञा दीन्ही \* आपुनचलेउगदाकरलीन्ही  
 चलतदसानन डोलतअवनी \* गजजंत गर्भस्रवत मुररवनी  
 रावन आवतसुनेउ सकाहा \* देवन्हतकेमेरु गिरि पोहा  
 दिगपालन्हकेलोक सिधाए \* मूनेमकल दमानन पाए  
 पुनिपुनिसिंहनादकरिभारी \* देइ देवतन्ह गारि पचारी  
 रनमद मत्ताफिरइजगधावा \* प्रतिभटपोजतकतहुनपावा  
 रविसासि पवन बरुन धनधारी \* अगिनिकालजमसवअधिकारी  
 किन्नरसिद्धमनुजसुर नागा \* हठिमवहीके पंथाहि लागा  
 ब्रह्मसृष्टि जहँलग तन धारी \* दममुप वम वर्ती नरनारी  
 आयसुकरहिंसकलभयभीता \* नवहिआइनितचरन विनीता  
 दो० भुजबल विश्व वस्य करि, रापेमि कोउन मुतंत्र ॥

मंडलीकमनि रावन, राजकरै निज मंत्र ॥

देवजछगंधर्व नर, किन्नर नाग कुमारि ।

जीतिवरी निजवाहु बल, बहु सुंदरिवरनारि १८२ ॥

इंद्रजीतसन जो कछु कहेऊ \* सो सबजनुपहितहिकरिहेऊ  
 प्रथमहिजिन्हकहँआयसुदीन्हा \* तिन्हकरचारितसुनहुजोकीन्हा  
 देषत भीमरूप सब पापी \* निमिचरनिकरदेवपरितापी  
 करहिं उपद्रवअसुरनिकाया \* नाना रूपधरहिं करिमाया  
 जेहिविधि होइधर्म निर्मूला \* सो सबकरहिं वेदप्रतिकूला  
 जेहिजेहिदेसधेनुद्विजपावहिं \* नगरगांउपुरआगिलगावहिं

सुभआचरन कतहुँ नहिं होई ✽ देव विप्रगुरु मान न कोई  
नहिं हरिभगति जज्ञत पज्ञाना ✽ सपनेहु सुनिअन वेदपुराना

छं० जपजोगविरागातपमपभागा स्रवन सुनैदससीसा ॥

आपुन उठिधावैरहेनपावै धरिसबघालैपीसा ॥

असभ्रष्टअचाराभासंसारा धर्मसुनिअनहिकाना ॥

तेहिबहुविधिनासै देसनिकासैजोकहवेदपुराना ॥

सो० बरनिनजाइअनीति, घोर निमाचरजोकरहिं ॥

हिंसापरअतिप्रीतितिन्हकेपापहिक्वानिमिति १८३

वाढे षल बहुचोर जुआरा ✽ जेलंपट पर धन पर दारा

मानहिं मातु पितानहिदेवा ✽ साधुन्हसन करवावहिं सेवा

जिन्हकेयहआचरनभवानी ✽ तेजानहु निसिचरसमप्रानी

अतिसै देषि धर्म कै हानी ✽ परमसभीत धरा अकुलानी

गिरिसरिसिंधुभारनहिंमोही ✽ जसमोहिगरुअ एकपरद्रोही

सकल धर्म देपै विपरीता ✽ कहिन सके रावनभयभीता

धेनु रूप धरि हृदय विचारी ✽ गईतहां जहँ सुर मुनि शारी

निज संताप सुनाएसि रोई ✽ काहूते कहू काज न होई

छं० सुरमुनिगंधर्वा मिलिकरि सर्वागेविरांचिके लोका ॥

संगगोतनधारीभूमिविचारीपरमविकल भयसोका ॥

ब्रह्मासवजानामनअनुमाना मोरोकछुनवसाई ॥

जाकरितैदासीसोअविनासी हमरेउतोरसहाई ॥

सो० धरनिधरहिंमनधीर, कहबिरांचिहरिपदसुमिरु ॥

जानतजनकीपीर, प्रभुभंजिहिदारुनविपति १८४ ॥

बैठे सुर सब करहिं विचारा ✽ कहँपाइयप्रभु करियपुकारा

पुर बैकुंठ जान कह कोई \* कोउ कह पयानिधिवमप्रभुमाई  
 जाकेहृदयभगति जसप्रीती \* प्रभुतहंप्रगट मदातेहि रीती  
 तेहिसमाजगिरिजामें रहेऊं \* अवंसरपाइ वचनएककहेऊं  
 हरिव्यापक सर्वत्र समाना \* प्रेमते प्रगट होहि में जाना  
 देसकालदिसिविदिसिहुमाही \* कहहुमोकहां जहां प्रभुनाही  
 अगजगमयसवरहितविरागी \* प्रेमते प्रभुप्रगटे जिमि आगी  
 मोर वचन सबके मनमाना \* माधुमाधुकहि ब्रह्म बपाना

दो० सुनिविरंचिमन हरपतन, पुलक नयन बह नीर ॥

अस्तुति करत जोरि कर, सावधान मतिधीर १८५ ॥

छं० जयजयसुरनायकजनमुपदायक प्रनतपालभगवंता ॥  
 गोद्विजहितकारीजयअमुरारी मिंधुमुताप्रियकन्ता ॥  
 पालनसुरधरनीअद्भुतकरनी मरमनजाने कोई ॥  
 जोसहज कृपाला दीनदयाला करो अनुग्रह सोई ॥  
 जयजय अविनासीसबघटवामी व्यापकपरमानंदा ॥  
 अबिगत गोतीतंचरितपुनीतं मायारहितमुकुंदा ॥  
 जेहिलागिविरागीअतिअनुरागीविगतमोहमुनिवृंदा ॥  
 निसिवासरुध्यावहिं गुनगनगावहिं जयतिसच्चिदानंदा ॥  
 जेहिसृष्टिउपाई त्रिविधवनाई संगसहाय न दूजा ॥  
 सो करउ अघारी चिंतहमारी जानियभगतिनपूजा ॥  
 जोभवभयभंजन मुनिमनरंजनगंजनविपातिवरूथा ॥  
 मनवचक्रमबानी छाडिसयानी सरनसकलसुरजूथा ॥  
 सारदश्रुतिसेषारिषय असेषाजाकहैंकोउनहिंजाना ॥  
 जेहिदीन पिआरे बेदपुकारे द्रवौसो श्रीभगवाना ॥

भववारिधिमंदरसवविधिसुंदरगुनमंदिर सुषपुंजा ॥

मुनिसिद्धिसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपद कंजा  
दो० जानिसभय सुरभूमि सुनि, वचन समेत सनेह ॥

गगन गिरा गंभीर भइ, हरनि सोकसन्देह ॥ १८६ ॥

जनिडरपहु मुनिसिद्धसुरेसा \* तुम्हहिलागिधरिहौं नरवेसा  
अंसनसहित मनुजअवतारा \* लेहौं दिन करवंस उदारा  
कस्यपअदितिमहातपकीन्हा \* तिनकहँ मै पूरववर दीन्हा  
ते दसरथ कौसल्या रूपा \* कोसल पुरी प्रगटनर भूपा  
तिन्हकेगृह अवतारिहौं जाई \* रघुकुलतिलकसो चारिउ भाई  
नारदवचनसत्य सब करिहौं \* परमसक्तिसमेत अवतारिहौं  
हरिहौं सकल भूमिगरु आई \* निर्भय होहु देव समुदाई  
गगनब्रह्म बानी सुनि काना \* तुरत फिरेसुरहृदय जुडाना  
तवब्रह्मा धरनिहि समुझावा \* अभयभईभरोसजियआवा  
दो० निजलोकहि विरंचिगे, देवन्ह इहै सिषाइ ।

वानरतनधारिधरिमाहि, हरिपदसेवहु जाइ ॥ १८७ ॥

गणदेव सबानिज निज धामा \* भूमिसहित पाए विस्वामा  
जोकछुआयसुब्रह्मा दीन्हा \* हरषे देव वेलंवन कीन्हा  
वनचरदेह धरीछिति माहीं \* अतुलितबलप्रताप तिन्ह पाहीं  
गिरितरुनषआयुधसबवीरा \* हरिमारगचितवहिंमतिधीरा  
गिरिकाननजहंतहंमहिपूरी \* रहेनिजानिजअनीकर चिरूरी  
यहसबरुचिर चरितमैंभाषा \* अबसोसुनहुजोबीचहिराषा  
अवधपुरी रघुकुलमनिराऊ \* वेदविदिततेहिदसरथ नाऊ  
धर्म धुरंधर गुननिधि ज्ञानी \* हृदयभगतिमतिसारंगपानी



दो० कौसल्यादि नारि प्रिय, मव आचरण पुनीत ।

पतिअन कूलप्रेमदृढ, हरिपदकमलविनीत ॥ १८८ ॥

एक समै भूपति मन माहीं \* भे गलानि मारे सुतनाहीं  
गुरगृह गएतुरत महिपाला \* चरनलागिकरि विनयविमाला  
निजदुषसुपसवगुरुहिमुनाएउ \* कहिवमिष्टबहुविधिममुभाएउ  
धरहु धीरहोइहहिं सुतचारी \* त्रिभुवनविदितभगतभयहारी  
शृंगी रिपिहिवमिष्टबोलावा \* पुत्र काम मुभजग्य करावा  
भगतिसहितमुनिआहुतिदीन्हें \* प्रगटे अगिनिचरुकरलीन्हें  
जोवसिष्ट कह्यहृदय विचारा \* सकललज्जामिद्वतुम्हारा  
यह हविवांटे देहु नृपजाई \* जथा जोग जेहिभागवनाई  
दो० तवअदृश्यभएपावक, सकलममहि ममुझाई ।

परमानंदमगननृप, हरप न हृदय समाई ॥ १८९ ॥

तबहि रायप्रियनारि बोलाई \* कौसल्यादितहां चलिआई  
अर्द्धभाग कौसल्याहिदीन्हा \* उभयभाग अधिकरकीन्हा  
कैकई कहें नृप सोइ दयऊ \* रह्योसो उभयभागपुनि भयऊ  
कौसल्या कैकई हाथ धरि \* दीन्हमुमित्रहिमनप्रसन्नकरि  
एहिविधिगर्भसहितसवनारी \* भईहृदय हरपित सुष भारी  
जादिन तेहरि गर्भहि आए \* सकललोकमुप संपति छाप  
मंदिर महँ सब राजहिरानी \* सोभा सील तेजकी पानी  
सुषजुतकछुककाल चलिगयऊ \* जेहिप्रभुप्रगट सो अवसरभयऊ  
दो० जोगलग्नग्रहवार तिथि, सकलभएअनुकूल ।

चरअरुअचरहरषजुत, रामजनमसुषमूल ॥ १९० ॥

नौमीतिथि मधुमासपुनीता \* सुकलपछअभिजितहरिप्रीता

मध्यदिवसअतिसीतनवामा \* पावन काललोक विश्रामा  
सीतल मंद सुरभिवहवाऊ \* हरषित सुरसंतन्हमनचाऊ  
वनकुसुमितगिरिगनमनिआरा \* स्रवहिंसकलसरितामृतधारा  
सो अवसरविरंचिजवजाना \* चलेसकलसुरसाजि विमाना  
गगनविमल संकुलसुरजूथा \* गावहिं गुन गंधर्व वरूथा  
वरषहिंसुमनसुअंजलिमाजी \* गहगहि गगन हुंदभी वाजी  
अस्तुतिकरहिंनागमुनिदेवा \* बहुविधिलावाहिनिजनिजसेवा

दो० सुरसमूह बिनतीकरि, पहुँचे निजनिज धाम ॥

जगनिवास प्रभुप्रगटे, अखिललोक विश्राम ॥

छं० भएप्रगटकृपालापरमदयाला कौसल्या हितकारी ॥  
हरषितमहंतारीमुनिमन हारीअद्भुत रूप निहारी ॥  
लोचनअभिरामंतनु धनस्यामंनिजआयुधभुजचारी ॥  
भूषन वन माला नयन विसालासोभा सिंधु परारी ॥  
कहदुइकरजोरीअस्तुतितोरीकेहिविधिकरउँअनंता ॥  
माया गुनज्ञाना तीतअमाना वेद पुरान भनंता ॥  
करुनासुपसागरसवगुनआगरजेहिगावहिं श्रुतिसंता ॥  
सोममहितलागीजन अनुरागी भएप्रगट श्रीकंता ॥  
ब्रह्मांडनिकायानिर्मितमायारोमरोमप्रतिवेदकहै ॥  
ममउरसोवासीयहउपहासीसुनतधीरमतिथिरनरहै ॥  
उपजाजवज्ञानाप्रभुमुसुकानाचरितबहुताविधिकीन्हचहै  
कहिकथा सुनाई मातृबुझाई जेहिप्रकार सुतप्रेमलहै ॥  
मातापुनि बोली सोमति डोली तजहुतातयहरूपा ॥  
कीजैसिसुलीलाअतिप्रियसीला यहसुषपरमअनूपा ॥

सुनिबचनसुजानारोदनठानाहोइवाल्क्यमुरभृपा ॥  
यहचरितजेगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरहिंभवकृपा॥

दो० विप्रधेनु सुरसंत हित, लीन्हमनुज अवतार ॥  
निजइच्छा निर्मिततन, माया गुनगोपार १९२ ॥

सुनिसिसुरुदनपरमप्रियवानी \* संभ्रमचलिआई मव रानी  
हरषित जहंतहं धाई दासी \* आनंदमगनमकलपुरवासी  
दसरथ पुत्रजन्म सुनिकाना \* मानहु ब्रह्मानंद ममाना  
परम प्रेम मन पुलक सरीरा \* चाहतउठन करतमतिधीरा  
जाकर नाम सुनत सुभहोई \* मोरे गृह आवा प्रभु सोई  
परमानंद पूरि मन राजा \* कहाबोलाइ बजावहु बाजा  
गुरुवसिष्ठ कहंगयउ हंकारा \* आएद्विजन्हसहितनृपद्वारा  
अनुपमबालक देपिन्हजाई \* रूपरासिगुन कहिनसिराई

दो० नंदीमुष सराध करि, जात करम मव कीन्ह ॥

हाटक धेनु बसन मनि, नृपविप्रन कहं दीन्ह १९३

ध्वज पताकतोरन पुरछावा \* कहिनजाइजेहिभांतिबनावा  
सुमन वृष्टि अकास तें होई \* ब्रह्मानंद मगन सब कोई  
बृंद बृंद मिलि चलीं लौगाई \* सहजसिंगारकिणैं उठिधाई  
कनककलसमंगलभरिथारा \* गावत पैठहिं भूप दुआरा  
करिआरतीनिछावरिकरहीं \* बारबार सिसुचरनन्हिपरहीं  
मागध सूत बंदिगन गायक \* पावनगुन गावहिं रघुनायक  
सर्वसदान दीन्ह सब काहूँ \* जेहिं पावा राषानहिं ताहूँ  
मृगमदचंदनकुमकुमकीचा \* मचीसकलबीथिन्हबिचबीचा

दो० गृह गृह बाज बधाव सुभ, प्रगटेउ प्रभुसुष कंद ॥

हरष वंत सब जहँ तहँ, नगर नारिनर वृंद १९४ ॥

कैकय सुता सुमित्रा दोऊ ❖ सुंदर सुतजनमतभई ओऊ  
वोहसुषसंपतिसमयसमाजा ❖ कहिनसकै सारदअहिराजा  
अवधपुरी सोहै येहि भांती ❖ प्रभुहिमिलनआई जनुराती  
देषि भानुजनुमनसकुचानी ❖ तदपिवनी संध्याअनुमानी  
अगर धूपबहुजनुअंधियारी ❖ उडैअवीर मनहुं अरुनारी  
मंदिर मनिसमूहजनु तारा ❖ नृपगृहकलससो इंदुउदारा  
भवनवेदधुनिअतिमृदुबानी ❖ जनुषगमुषरसमयसुषसानी  
कौतुक देषि पतंग भुलाना ❖ एक मांसतेइ जातन जाना

दो० मांस दिवस कर दिवसभा, मरम नजानै कोइ ॥

रथसमेत रविथाकेउ, निसा कवनि विधि होइ १९५

यह रहस्य काहू नहि जाना ❖ दिनमनि चलेकरत गुनगाना  
देषि महोत्सवसुरमुनिनागा ❖ चलेभवनबरनतनिज भागा  
औरो एककहौं निज चोरी ❖ सुनुगिरिजाअति दृढमतितोरी  
काकभुसुडिसंग हम दोऊ ❖ मनुज रूपजानै नहिं कोऊ  
परमानंद प्रेम सुष फूले ❖ बीथिन्हफिरहिंमगन मन भूले  
यहसुभ चरित जान पै सोई ❖ कृपा राम कै जापर होई  
तोहिअवंसरजोजेहिविधिआवा ❖ दीन्हभूपजोजेहिमन भावा  
गजरथ तुरग हेमगो हीरा ❖ दीन्हेनृप नानाविधि चीरा  
दो० मनसंतोष सबनिके, जहँ तहँ देहिं असीस ॥

सकल तनय चिरजीवहु, तुलसि दास के ईस ॥ १९६

कछुक दिवसबीतेयेहिभांती ❖ जातनजानिअदिनअरुनाती



नामकरन करअवसरजानी \* भूपबोलि पठएमुनि ज्ञानी  
 करिपूजा भूपति असभाषा \* धरियनाम जोमुनिगुनिराषा  
 इन्हके नाम अनेकअनूपा \* मेनृपकहवस्वमतिअनुरूपा  
 जो आनंद सिंधु सुप रासी \* सीकरते त्रैलोक सुपासी  
 सो सुषधाम रामअस नामा \* अपिल्लोकदायकविश्रामा  
 विस्वभरन पोषनकर जोई \* ताकरनाम भरत असहोई  
 जाके सुमिरनते रिपु नासा \* नाम सत्रुहन वेद प्रकासा  
 दो० लछन धाम राम प्रिय, सकल जगत आधार ॥

गुरुवसिष्ठ तोहिराषा, लछिमन नाम उदार १९७

धरे नाम गुरु हृदय विचारी \* वेदतत्व नृप तव सुत चारी  
 मुनिधनजनसरबससिवप्राना \* बालकेलिरसतेहिंसुष माना  
 वारेहिते निजहितपातिजानी \* लछिमनरामचरनरतिमानी  
 भरत शत्रुहन दूनो भाई \* प्रभुसेवकजसिप्रीति बढाई  
 स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी \* निरषहिंछविजननीतृनतारी  
 चारिछ सीलरूप गुन धामा \* तदपिअधिकमुपसागररामा  
 हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा \* सूचत किरनमनोहर हासा  
 कवहुँउछंग कबहुवर पलना \* मातुदुलारै कहिप्रियललना  
 दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन विगत विनोद ॥

सोअज प्रेमभगति बस, कौसल्या के गोद १९८ ॥

कामकोटिछविस्यामसरीरा \* नील कंज बारिद गंभीरा  
 अरुन चरन पंकजनपजोती \* कमलदलन्हि बैठेजनुमोती  
 रेषकुलिसध्वज अकुससोहें \* नूपुरधुनिसुनिसुनिमनमोहें  
 कटिकिंकिनी उदरत्रयरेषा \* नाभिगंभीरजानजेहि देष

भुजविसाल भूषण जुतभूरी \* हियहरिनषअतिसोभारूरी  
 उरमानिहारपादिककी सोभा \* विप्रचरन देशतमन लोभा  
 कंबुकंठ अतिचिबुक सुहाई \* आननअमितमदन छविछाई  
 दुइदुइदसन अधर अरुनारे \* नासातिलक को बरनै पारे  
 सुंदर स्रवन सुचारु कपोला \* अतिप्रियमधुरतोतरे बोला  
 नीलकमलदोउनयनविसाला \* विकटभृकुटि लटकनवरभाला  
 चिक्कनकच कुंचितगभुआरे \* बहुप्रकार रचिमातु संवारे  
 पीत झंगुलियातन पाहिराई \* जानुपानिविचरनिमोहिभाई  
 रूपसकहिंनहिकहिश्चतिसेषा \* सो जानै सपनेहु जेहि देशा  
 दो० सुष संदोह मोह पर, ज्ञानगिरा गोतीत ॥

दंपतिपरमप्रेमवस, करांसिसुचरितपुनीत १९९ ॥

एहिविधिरामजगतापितुमाता \* कोसलपुरवासिन्हसुषदाता  
 जिन्हरघुनाथचरनरतिमानी \* तिन्हकीयहगति प्रगटभवानी  
 रघुपातिविमुषजतनकरकोरी \* कवनसकैभव बंधन छोरी  
 जीव चराचर बसकै राषे \* सोमाया प्रभुसोंभय भाषे  
 भृकुटि विलासनचावै ताही \* असप्रभुछाडि भजियकहुकाही  
 मनक्रमवचनछाडि चतुराई \* भजतकृपा करिहहिंरघुराई  
 एहिविधिसिसुबिनोदप्रभुकीन्हा \* सकलनगरवासिन्हसुषदीन्हा  
 लैउछंग कबहुँक हलरावै \* कबहुँ पालने घालि झुलावै  
 दो० प्रेम मगन कोसल्या, निसि दिन जात न जान ॥

सुत सनेह बस माता, बाल चरित करगान २०० ॥

एकवार जननी अन्हवाए \* करिसिंगार पलना पौढाए  
 निज कुलइष्ट देव भगवाना \* पूजाहेतु कीन्ह अस्नाना

करि पूजानैवेद चढावा \* आपु गई जहं पाक बनावा  
 वहरिमातु तहँवाचलि आई \* भोजन करतंदेपि सुतजाई  
 गइजननीसिसुपहिंभयभीता \* देषा बाल तहाँ पुनि सूता  
 बहुरि आई देखा सुतमोई \* हृदय कंप मनधीर न होई  
 इहाँ उहाँ दुइ बालक देषा \* मतिभ्रममोरिकि आनविसेष  
 देखिराम जननी अकुलानी \* प्रभुहंमिदीन्हमधुरमुमुकानी  
 दो० देखरावामाताहिनिज, अद्भुतरूप अखंड ॥

रोम रोमप्रतिलागे, कोटि कोटि ब्रह्मंड २०१ ॥

अगिनित रविससिसिवचतुरानन \* बहुगिरिसरितमिंधुमहिकानन  
 काल कर्म गुनज्ञान सुभाऊ \* सोउदेखा जो मुनानकाऊ  
 देखी माया सब विधिगाढी \* अतिमभीत जोरें करठाढी  
 देखा जीवनचावै जाही \* देखी भगति जो छोरेताही  
 तनपुलकितमुखवचननआवा \* नयनमृदिचरननिसिरनावा  
 विसमयवंत देखि महंतारी \* भए बहुरि सिसुरूपखरारी  
 अस्तुतिकरिनजाइभयमाना \* जगतपितामैसुतकरिजाना  
 हरिजननीबहुविधि समुझाई \* यहजनिकतहुँकहसिसुनुभाई  
 दो० बारबार कौसल्या, विनयकरै कर जोरि ।

अबजानि कबहुँ व्यापइ, प्रभुमोहि मायातोरि २०२  
 बालचरितहरिबहुविधिकीन्हा \* अतिअनंददासन्हकहँदीन्हा  
 कछुक कालबीते सबभाई \* बड़े भएपरिजन सुषदाई  
 चूडा करन कीन्ह गुरजाई \* विप्रन्ह पुनिदछिनावहुपाई  
 परममनोहर चरित अपारा \* करतफिरतचारिउसुकुमार  
 मनक्रमवचन अगोचर जोई \* दसरथअजिरविचरप्रभुसोई

भोजन करत बोलजवराजा ❀ नहि आवतताजि बालसमाजा  
कौसल्या जब बोलन जाई ❀ ठुमुकठुमुकप्रभु चलहिंपराई  
निगमनेतिसिव अंतनपावा ❀ ताहिधरै जननी हाठि धावा  
धूसरधूरि भरेतन आए ❀ भूपति विहांसि गोद बैठाए  
दो० भोजन करत चपलचित, इतउतअवंसर पाइ ॥

भाजिचले किलकतमुष, दधि ओदनलपटाइ २०३  
बालचरित अतिसरलसुहाए ❀ सारद सेष संभु श्रुति गाए  
जिन्हकरमनइन्हसननहिंराता ❀ तेजनवंचित किए विधाता  
भएकुमार जबहिं सबभ्राता ❀ दीन्हजनेऊ गुरुपितु माता  
गुरुगृह गए पढन रघुराई ❀ अल्पकाल विद्यासबआई  
जाकीसहज स्वांसश्रुतिचारी ❀ सो हरिपद यहकौतुकभारी  
विद्याबिनय निपुनगुनसीला ❀ षेलहिंषेल सकलनृप लीला  
करतलवानधनुष अतिसोहा ❀ देषतरूप चराचर मोहा  
जिन्हबीथिनविहरहिंसबभाई ❀ थकितहोहिंसबलोग लुगाई  
दो० कोसलपुर वासीनर, नारिवृद्ध अरु बाल ।

प्रानहुते प्रिय लागत, सबकहैं राम कृपाल २०४ ॥  
बंधुसषा संगलेहिं बोलाई ❀ बनमृगयानित षेलहिं जाई  
पावनमृगमारहिंजियजानी ❀ दिनप्रतिनृपहिंदेषावहिंआनी  
जेमृग राम बानके मारे ❀ ते तनताजि सुरलोक सिधारे  
अनुजसषासंगभोजनकरहीं ❀ मातुपिता अज्ञा अनुसरहीं  
जेहिविधिसुषीहोहिपुरलोगा ❀ करहिंकृपानिधिसोइसंजोगा  
वेदपुरान सुनहिं मनलाई ❀ आपुकहहिंअनुजन्हसमुझाई  
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा ❀ मातुपिता गुरनावहिं साथी



आयसुमांगिकरहिंपुरकाजा \* देषिचरित हरपे मनराजा  
दो० व्यापक अकल अनीह अज, निर्गुननामनरूप ।

भगतहेतु नाना विधि, करत चरित्र अनूप २०५ ॥

यह सब चरित कहा मै गाई \* आगिलिकथामुनहुमनलाई  
विस्वामित्र महामुनि ज्ञानी \* बसहिंविपिनसुभयाश्रमजानी  
तहँजपजोगजज्ञ मुनिकरहीं \* अतिमारीच सुवाहुहिडरहीं  
देषतजज्ञ निसाचर धावहिं \* करहिंउपद्रवमुनिदुपपावहिं  
गाधितनयमन चिंताव्यापी \* हरिविनुमरहिंनानिमिचरवापी  
तवमुनिवरमनकीन्हविचारा \* प्रभुअवतरेउहरन महिभारा  
एहिमिस देषों प्रभुपदजाई \* करिविनती आनोदोउभाई  
ज्ञानविरागसकलगुनअयना \* सोप्रभु मेंदेषव भरि नयना  
दो० बहुविधि करत मनोरथ, जातलागि नहि बार ॥

करि मज्जन सरजू जल, गएभूप दरबार २०६ ॥

मुनिआगमनमुनाजबराजा \* मिलनगएउ लैविप्रसमाजा  
करिदंडवतमुनिहिसनमानी \* निजआसनवैठारेन्हिआनी  
चरन पषारिकीन्हअतिपूजा \* मोसमआजुधन्यनाहि दूजा  
बिबिधिभांतिभोजनकरवावा \* मुनिवरहृदयहरषअतिपावा  
पुनिचरननिं मेले सुत चारी \* रामदेषि मुनि देह बिसारी  
भएमगन देखत मुखसोभा \* जनुचकोर पूरन ससिलोभा  
तबमनहरषि वचनकहराऊ \* मुनिअसकृपानकीन्हहु काऊ  
केहिकारनआगमनतुम्हारा \* कहहुसो करतनलावों बारा  
असुर समूहसतावहिं मोहीं \* मैजाचन आएउँ नृप तोहीं  
अनुज समेत देहु रघुनाथा \* निसिचरबध मैहोव सनाथा

दो० देहु भूपमन हरषित, तजहु मोह अज्ञान ॥

धर्मसुजसन्तपतुम्हको, इन्हकहँ अतिकल्यान २०७

मुनिराजा अति अप्रियवानी ✽ हृदयकंपमुष दुतिकुंभलानी  
चौथेपन पायउँ सुत चारी ✽ विप्रवचननहिंकहेहु विचारी  
माँगहु भूमिधेनु धन कोसा ✽ सर्वस देउँ आजु सहरोसा  
देह प्रान ते प्रियकछु नाही ✽ सोउ मुनिदेउँ निमिष एकमाहीं  
सवसुता प्रियमोहि प्रान किनाई ✽ रामदेत नहिं बनइ गोसाई  
कहँ निमिचर अति घोर कठोरा ✽ कहँ सुंदर सुत परम किमोरा  
मुनिनृप गिरा प्रेम रसमानी ✽ हृदय हरषमाना मुनिज्ञानी  
तबवासिष्टबहुविधिसमुझावा ✽ नृप संदेह नास कहँ पावा  
अति आदर दोउ तनय बोलाए ✽ हृदय लाइ बहु भांति सिषाए  
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ ✽ तुम्ह मुनि पिता आननहि कोऊ

दो० सौं पे भूपरिषिहि सुत, बहु विधि देय असीस ॥

जननी भवन गए प्रभु, चलेनाइ पद सीस ॥

सो० पुरुषसिंह दोउबीर, हरषि चले मुनि भयहरन ॥

कृपासिंधु मतिधीर, अखिलविस्व कारनकरन २०८

अरुननयन उरवाहु विसाला ✽ नीलजलजंतन स्यामतमाला  
कटिपट पीतकसेवर माथा ✽ रुचिर चापसायकदुहुँ हाथा  
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई ✽ विस्वामित्र महानिधि पाई  
प्रभु ब्रह्मन्य देव मै जाना ✽ मोहिनिति पिता तजे उभगवाना  
चले जात मुनिदीन्हि देखार्इ ✽ मुनिताडका क्रोध करि धार्इ  
एकहि वानप्रान हरि लीन्हा ✽ दीन जानितोहि निजपद दीन्हा  
तवरिषिनि जनाथाहि जिय चीन्हा ✽ विद्यानिधि कहविद्या दीन्हा

जात लाग न छुधापियामा \* अतुलितवलतनतेजप्रकासा  
दो० आयुध सर्वसमर्पिके, प्रभुनिज आस्रम आनि ॥

कंदमूल फलभोजन, दीन्ह भगताहितजानि २०९ ॥

प्रात कहा मुनिसन रघुराई \* निर्भय जज्ञकरहु तुम जाई  
होमकरन लागे मुनि शारी \* आपुरहे मखकी रखवारी  
मुनिमारीच निसाचरकोही \* लैमहाय धावा मुनि द्रोही  
बिनु फरवानरामतेहि मारा \* सत योजन गा सागर पारा  
पावकसरमुवाहु पुनि जारा \* अनुजनिमाचरकटकसंधारा  
मारिअसुराद्विजनिर्भयकारी \* अस्तुतिकरहिंदेवमुनिशारी  
तहँपुनिकछुकदिवसरघुराया \* रहेकीन्ह विप्रन्ह पर दाया  
भगाते हेतुबहु कथा पुराना \* कहें विप्र जगपि प्रभुजाना  
तबमुनि सादर कहा बुझाई \* चरितएक प्रभु देखिअजाई  
धनुष यज्ञमुनिरघुकुलनाथा \* हरापि चले मुनिबरके साथ  
आश्रम एकदीखमग माहीं \* खगमृग जीवजंतुतहंनहीं  
पूछा मुनिहि सिलाप्रभुदेखी \* सकलकथामुनिकहीविसेखी  
दो० गौतमनारिसापवस, उपलदेहधरिधीर ॥

चरन कमलरजचाहति, कृपाकरहु रघुबीर २१० ॥

छं० परसतपदपावन सोकनसावन प्रगटभईतपपुंजसही ॥  
देखवरघुनायकजनसुखदायकसममुखहोइकरजोरिरही ॥  
अतिप्रेमअधीरापुलकसरीरामुखनहिंआवैवचन कही ॥  
अतिसयबढभागीचरनन्हिलागीजुगलनयनजलधारवही ॥  
धीरजमनकीन्हाप्रभुकहुंचीन्हारघुपतिकृपाभगतिपाई ॥  
अतिनिर्मलवानी अस्तुतिठानीज्ञानगम्यजयरघुराई ॥

मैनारिअपावनप्रभुजगपावनरावनरिपु जनसुखदाई ॥  
 राजीवविलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिसरनहिंआई ॥  
 मुनिसासजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमै माना ॥  
 देखेउँभरिलोचनहरिभवमोचनइहेलाभसंकरजाना ॥  
 बिनतीप्रभुमोरीमममतिभोरीनाथनवरमागौंआना ॥  
 पदकमलपरागारसअनुरागामममनमधुपकरइपाना ॥  
 जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईसिवसीसधरी ॥  
 सोईपदपंकजजेहिपूजतअजममसिरधरेउकृपालहरी ॥  
 येहिभांतिसिधारीगौतमनारीवारवारहरिचरनपरी ॥  
 जोअतिमनभावासोवरपावागैपतिलोकअनंदभरी ॥  
 दो० असप्रभु दीनबंधु हरि, कारन रहित दयाल ॥

तुलसिदाससठतेहिभजु, छांडिकपटजंजाल २११ ॥

चलेराम लल्लिमन मुनिसंगा ✽ गए जहां जगपावनिगंगा  
 गाधिसूनु सबकथा सुनाई ✽ जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई  
 तबप्रभुरिषिन्ह समेतनहाये ✽ विविधदान महिदेवन्हपाये  
 हरषि चले मुनि वृंदसहाए ✽ बेगिविदेह नगर नियराए  
 पुररम्यता राम जब देषी ✽ हरषे अनुज समत विसेषी  
 वापी कूप सरित सरनाना ✽ सलिलसुधासममनिसोपाना  
 गुंजत मजुमत्तरस भृंगा ✽ कूजत कलबहुवरन बिहंगा  
 बरन बरन विकसे वन जाता ✽ त्रिविधसमीरसदासुखदाता  
 दो० सुमन बाटिका बागवन, विपुल बिहंगनिवास ।

फूलत फलत सुपल्लवत, सोहत पुर चहुंपास २१२ ॥  
 बनइ न वरनत नगर निकाई ✽ जहांजाइ मनतहई लोभाई



चारु बजार विचित्र अवांरी \* मनिमयजनुविधिम्बकरमँवारी  
 धनिकवनिकवरधनदममाना \* बैठे मकल वस्तुले नाना  
 चौहट सुन्दर गलीं सुहाई \* सन्तत रहहिं सुगंधमिचाई  
 मंगल मय मन्दिर सब केरे \* चित्रितजभुरति नाथचितेरे  
 पुरनरनारिसुभग सुचिसंता \* धरम मील ज्ञानी गुनवंता  
 अतिअनूपजहँजनकनिवास \* विथकहिंविबुधविलोकिविलास  
 होतचकितचितकोटविलोकी \* मकलभुअनमोभाजनुरोकी  
 दो० धवल धाम मनि पुरटपटु, सुघटित नानाभांति ।

सियनिवास सुंदरमदन, सोभाकिमिकहिजाति २१३

सुभगद्वारसबकुलिसकपाटा \* भूप भीरनट मागधभाटा  
 बनीविसाल वाजिगजमाला \* हयगयरथ मंकुल सबकाला  
 मूरसचिव सेनप बहुतेरे \* नृपगृह सरिममदन सबकेरे  
 पुर बाहेर सरसरित समीपा \* उतरे जहतहं विपुलमहीपा  
 देशि अनूप एक अँवराई \* सबमुपाम सब भांतिमुहाई  
 कौसिककहेउमोरमनमाना \* इहां रहिअरबुधीर मुजाना  
 भलेहिनाथकहिकृपानिकेता \* उतरे तहंमुनि वृन्दममेता  
 विस्वामित्र महामुनि आए \* समाचार मिथिलापतिपाए  
 दो० संगसचिव सुचि भरिभट, भूसुर वरगुरु ज्ञाति ॥

चलेमिलनमुनिनायकहिं, सुदितराउयेहिभांति २१४

कीन्हप्रनामचरन धरिमाथा \* दीन्हअसीसमुदितमुनिनाथा  
 बिप्र वृन्द सब सादर बन्दे \* जानिभाग्यवटाराउअनन्दे  
 कुसल प्रसन्नकहिंवारहिंवारा \* विस्वामित्र नृपहि बैठारा  
 तेहिअवसर आए दोउभाई \* गये रहे देषन फुलवाइ

स्यामगौरमृदुवयस किसोरा \* लोचनसुषद विस्वचितचोरा  
उठे सकलजवरघुपतिआए \* विस्वामित्र निकट बैठाए  
भये सबसुषीदेपिदोउभ्राता \* वारिविलोचनपुलकितगाता  
मूराति मधुर मनोहर देखी \* भयेउ विदेह विदेह विसेखी  
दो० प्रेम मगन मन जानिनुप, करि विवेक धरि धीर ॥  
बोलेउमुनिपदनाइसिर, गदगद गिरागंभीर २१५॥

कहहु नाथसुंदरदोउवालक \* मुनिकुल तिलककिनुपकुलपालक  
ब्रह्मजोनिगमनेतिकहिगावा \* उभयवेषधरिकीसोइ आवा  
सहज विरागरूप मन मोरा \* थकितहोताजिमिचंदचकोरा  
ताते प्रभु पृछौं सति भाऊ \* कहहुनाथ जनिकरहु दुराऊ  
इन्हहिविलोकतअतिअनुरागा \* बरवसब्रह्मसुषहिमन त्यागा  
कहमुनिविहंसि कहेहुनुप नोका \* बचनतुम्हारनहोइ अलीका  
एप्रियसबहि जहांलगिप्रानी \* मनसुसुकाहिरामसुनिवानी  
रघुकुलमनि दसरथके जाए \* ममहितलागि नरेस पठाए  
दो० रामलषन दोउबंधुवर, रूप सील बलधाम ॥  
मखराखेउ सबसाखि जग, जिते असुर संग्राम २१६

मुनितवचरनदेखिकह राऊ \* कहिनसकौंनिजपुन्य प्रभाऊ  
सुंदर स्याम गौरदोउभ्राता \* आनंदहू के आनंद दाता  
इन्हकैप्रीति परसपरपावनि \* कहिनजाइमनभावसुहावनि  
सुनहुनाथ कहमुदित विदेह \* ब्रह्मजीव इव सहज समेह  
पुनिपुनिप्रभुहिचितवनरनाहू \* पुलकगातउरअधिकउछाहू  
मुनिहि प्रसंसिनाइपद सीसू \* चलेउलेवाइ नगर अवनीसू  
सुंदरसदन सुखदसबकाला \* तहांवासलै दीन्ह भुआला

करिपूजासब विधि सेवकाई \* गण्ड राउ गृह विदाकराई  
दो० रिषयसंगरबुवंसमानि, करिभोजनविभ्राम मा०पा०। ६।

बैठेप्रभुभ्रातासहित, दिवमरहामरिजाम ॥ २१७ ॥

लषनहृदयललसा विशेषी \* जाइजनकपुर आइय देषी  
प्रभुभयबहुरिमुनिहिमकुचाहीं \* प्रगटनकहहि मनहि मुमुकाहीं  
रामअनुजमनकीगतिजानी \* भगतबहुलताहियहुलमानी  
परमविनीतसकुचिमुमुकाई \* बोले गुरु अनुमामन पाई  
नाथ लषनपुर देषन चहहीं \* प्रभुमकोचट्टप्रगटन कहहीं  
जों राउरआयसु मै पावऊं \* नगर देपाइ तुरत लेआवऊं  
मुनिमुनीसकहबचन सप्रीती \* कमनरामतुम्ह रापहु नीता  
धरम सेतुपालक तुम ताता \* प्रेमबिबम मेवक सुपदाता  
दो० जाइदेखिआवहुनगर, सुपनिधानदोउ भाइ ।

करहु सुफल सबके नयन, सुंदर बदन देपाइ २१८ ॥

मुनिपदकमलबंदिदोउभ्राता \* चलेओक लोचनमुप दाता  
बालक बृंद देषिअति सोभा \* लगे संग लोचन मन लोभा  
पीतबसनपरिकरकटिभाथा \* चारु चापसर सोहत हाथा  
तन अनुहरत सुचंदन पोरी \* स्यामल गौरमनोहर जोरी  
केहरि कंधर बाहु बिसाला \* उरअतिरुचिरनागमनिमाला  
सुभगसोनसरसीरुह लोचन \* बदनमयंकतापत्रय मोचन  
कानन्हिकनकफूलछाबिदेहीं \* चितवतचितहिचोरिजनुलेहीं  
चितवनिचारुभृकुटिबरबाँकी \* तिलकरेखसोभाजनु चाँकी  
दो० रुचिर चौतनी सुभग सिर, मेचक कुंचित केस ॥

नखसिख सुंदर बंधु दोउ, सोभा सकल मुदेस २१९



दखन नगर भूप सुत आये ✽ समाचार पुरवासिन्ह पाए  
 धाए धाम काम सब त्यागी ✽ मनहुरंक निधिलूटनलागी  
 निरखि सहजसुंदरदोउभाई ✽ होहिंसुखी लोचन फलपाई  
 जुवतीभवनझरोखन्हिलागी ✽ निरखहिं रामरूप अनुरागी  
 कहहिं परस्पर वचनसप्रीती ✽ सपिउन्हकोटि कामछविजीता  
 सुरनरअसुरनाग मुनिमाहीं ✽ सोभाअसिकहुंसुनिअतिनाहीं  
 विष्णुचारिभुजविधिमुखचारी ✽ विकट बेख मुष पंच पुरारी  
 अपरदेउ असकोउनआहीं ✽ यहछविसषीपटतरिअजाहीं  
 दो० वयकिसोर सुखमा सदन, स्याम गौरमुष धाम ॥  
 अंग अंग परवारि अहि, कोटि कोटि सतकाम २२०  
 कहहु सषी असको तनधारी ✽ जोन मोह यह रूप निहारी  
 कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी ✽ जोमैसुनासो सुनहु सयानी  
 ए दोउ नृप दसरथके ढोटा ✽ बालमरालन्हिके कलजोटा  
 मुनि कौसिकमषके रषवारे ✽ जिन्हरनअजिरनिसाचरमारे  
 स्यामगातकलकंजबिलोचन ✽ जोमारीचसुभुजमदमोचन  
 कौसल्यासुत सो सुखखानी ✽ नाम राम धनुसायक पानी  
 गौर किसोर बेषवर काछें ✽ कर सरचाप रामके पाछें  
 लछिमननामरामलघुभ्राता ✽ सुनुसखितासुसुमित्रा माता  
 दो० विप्रकाज करिवंधुदोउ, मग मुनिबधू उधारि ॥  
 आये दैषन चाप मष, मुनिहरषीसवनारि ॥ २२१ ॥  
 दैषिरामछविकोउएककहई ✽ जोगजानकिहियहवरअहई  
 जौं सखिइन्हहिं दैष नरनाहू ✽ पनपरिहरि हठि करैविवाहू  
 कोउकह ए भूपति पहिचाने ✽ मुनिसमेत सादर सनमाने  
 सपि परंतुपन राउ न तजई ✽ विधिवसहठिअबिवेकहिभजई



को उक्कहजों भल अहं विधाता \* मधकहं मुनि अ उचित फल दाता  
 तौ जान किहि मिमिहि वाण्ह \* नाहिन आनि इहां मंदेह  
 जों विधिवम अम वने मंजोगू \* तौ कृत कृत्य होइ मवलोगू  
 सापि हमरे आरति अतिताते \* बहुकण आवहिं एहि नाते  
 दो० नाहित हमकहं मुनहुमापि इन्हकर दग्गमनहरि ॥

यह संघट तव होइ जब पुन्य पुगकृत मूरि २२२ ॥

बोली अपर कहे उमापिनी का \* येहि विआह अतिहित मक्की का  
 को उक्कह संकर चाप कठोरा \* एम्या मरु मृदुगात किमोरा  
 सब असमंजस अहं मयानी \* यह मुनि अगकहइ मृदुवानी  
 सापि इन्हकहं को उर अमकहती \* बट प्रभाउ देपत लघु अहरी  
 परसि जामु पद पंकज धूरी \* तरी अहल्या कृत अघ भूरी  
 सोकिरहि विनु सिवधनुतोर \* यह प्रतीति परिहरि अनभोर  
 जेहि बिरांचिरचि सीय भवारी \* तेहि स्यामल वरगचे उविचारी  
 तासु वचन मुनि मवहर पानी \* अमेइ हो उक्कहहिं मृदुवानी  
 दो० हिय हरपहिं वरपहिं मुमन, मुमुपि मुल्लोचनि वृंद ।

जाहिं जहां जहं बंधु दोउ, तहं तहं परमानंद २२३ ॥

पुर पुरब दिसिगे दोउ भाई \* जह धनुमपहित भूमि वनाई  
 अति बिस्तार चारुगचढारी \* विमल वेदिका रुचिर संवारी  
 चहुं दिसि कंचन मञ्जु बिसाला \* रचे जहां बैठहिं महिपाला  
 तेहि पाछे समीप चहुं पासा \* अपर मंच मंडली बिलासा  
 कहुं ऊचि सब भांति सुहाई \* बैठहिं नगर लोग जहं जाई  
 निन्ह के निकट बिसाल सोहाए \* धवल धाम बहु वरन बनाए  
 जहं बैठे देषहिं सब नारी \* जथा जोगनि जकुल अनुहारी

पुरबालककहिकहिमृदुवचना ❀ सादर प्रभुहिंदेषावहिरचना  
दो० सवासिसुयहिमिस प्रेमवस, परसि मनोहर गात ॥

तनपुलकहिंअतिहरपहिय, देखि दखिदोउभ्रात२२४  
सिसु सब रामप्रेम वस जाने ❀ प्रीति समेत निकेत वखाने  
निजनिजरुचिसवलेहिंभोलाई ❀ सहितसनेहजाहिं दोउभाई  
रामदेषावहिंअनुजहिरचना ❀ कहिमृदुमधुरमनोहरवचना  
लवनिमेषमहंभुवननिकाया ❀ रचै जासु अनुसासनमाया  
भगतिहेतुसोई दीन दयाला ❀ चितवतचकितधनुषमपसाला  
कौतुक दोषिचले गुरुपाहीं ❀ जानिविलंब त्रासमनमाहीं  
जासु त्रासदरकहँ दर होई ❀ भजन प्रभाव देषावतसोई  
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई ❀ किणविदा बालक वरिआई  
दो० सभय सप्रेम विनीतअति, सकुचसहितदोउभाइ ॥

गुरुपद पंकज नाइसिर, बैठे आयसु पाइ ॥ २२५ ॥

निसिप्रवेसमुनिआयसुदीन्हा ❀ सवहीं संध्याबंदन कीन्हा  
कहतकथा इतिहासपुरानी ❀ रुचिररजनिजुगजामसिरानी  
मुनिवरसयनकीन्हितवजाई ❀ लगेचरन चापन दोउभाइ  
जिन्हके चरनसरोरुहलागी ❀ करतविविधजपजोगाविरागी  
तेइदोउ बंधुप्रेम जनु जीते ❀ गुरुपद पदुम पलोटत प्रीते  
बारबार मुनि आज्ञा दीन्हीं ❀ रघुवरजाइसयन तबकीन्हीं  
चापत चरनलपन उरलाए ❀ सभय सप्रेम परमसत्पुण  
पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता ❀ पौढे धरिउर पद जलजाता  
दो० उठेलपननिसिविगतमुनि, अरुनसिपाधुनिकान ॥

गुरुतैंपहिलेहि जगतपति, जागे राम सुजान २२६ ॥

सकल सौच रि जाइनहाये \* नित्यनिवाहि मुनिहिमिरनाये  
 समयजानिगुरु आयमु पाई \* लेनप्रसून चले दोउ माई  
 भूपबाग वरदेखेउ जाई \* जह वमन्तरितुरही लोभाई  
 लागे बिटप मनोहर नाना \* बरनवरनवर बेलि बिताना  
 नवपल्लव फल सुमनसुहाए \* निजसपति मुररूप लजाए  
 चातककोकिल कीरचकोरा \* कूजतविहगनचतकल मोरा  
 मध्यबाग सरसोह मुहावा \* मानिसोपानविचित्र बनावा  
 विमलसलिलसरसिजबहुरंगा \* जलखगकूजतगुंजत भृंगा  
 दो० बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु, हरपे बन्धु समेत ॥

परम रम्य आराम यह, जो रामहि सुखदेत २२७ ॥

चहुदिसिचितइपूछिमालीगन \* लगेलेन दलफूल मुदितमन  
 तोहि अवँसर सीता तहँ आई \* गिरजापूजनजनानि पठाई  
 संगसर्षीं सब सुभग सयानी \* गावहिं गीतमनोहर बानी  
 सरसमीप गिरिजागृह सोहा \* वरनिनजाइ देपि मनमोहा  
 मज्जनकरिसरसपिन्हसमेता \* गईमुदितमन गौरि निकेता  
 पूजाकीन्हिअधिकअनुरागा \* निजअनुरूपसुभगवरमांगा  
 एक सखा सिय संग बिहाई \* गई रही देखन फुलवाई  
 तेहि दोउबंधु बिलोके जाई \* प्रेम विवस सीतापहिं आई  
 दो० वासुदसा देषी सखिन्ह, पुलक गात जल नयन ।

कहु कारन निजहरष कर पूछहिं सब मृदुबयन २२८

बान बाग कुअँरदुइ आए \* बयकिसोर सबभाँतिसुहाए  
 स्यामगोविंदमिकह उँबखानी \* गिराअनयननयनबिनुबानी  
 सुनिहरषीं सबसखा सयानी \* सियहियअतिउतकंठाजानी



एक कहइ नृपसुततेइ आली ❖ सुनेजेमुनि संगआए काली  
जिन्ह निजरूपमोहनीडारी ❖ कीन्हे स्ववस नगरनरनारी  
बरनत छविजहतहंसबलोगू ❖ अवसिदेषिअहिदेखनजोगू  
तासुबचनअतिसियहिसुहाने❖ दरसलागिलोचनअकुलाने  
चलीअग्रकरि प्रियसपिसोई ❖ प्रीति पुरातन लपै न कोई  
दो० सुमिरि सीय नारद वचन, उपजी प्रीति पुनीत ॥

चकितविलोकतिसकलदिसि, जनुसिसुमृगीसभीतर २२९  
कंकनकिंकिनिनूपुरधुनिसुनि❖ कहतलपनसनरामहृदयगुनि  
मानहु मदन दुंदभी दीन्ही ❖ मनसाविस्वविजयकहँकान्ही  
असकहिफिरिचितयेतेहिओरा❖ सियमुषसासिभयेनयनचकोरा  
भए बिलोचनचारुअ चंचल❖ मनहुंसकुचिनिमितजेहगंचल  
देखि सीयसोभासुख पावा ❖ हृदयसराहत वचन नआवा  
जनुविरंचिसवनिजनिपुनाई❖ विरचि विस्वकहँप्रगटदेषाई  
सुंदरता कहँ सुंदर करई❖ छविगृहदीप सिषाजनुवरई  
सबउपमा कविरहे जुठारी ❖ केहिपटतरौं विदेह कुमारी  
दो० सियसोभाहियवरनिप्रभु, आपनिदसाविचारि ॥

बोलेमुचिमनअनुजसन, वचनसमयअनुहारि २३०  
तात जनक तनयायह सोई ❖ धनुषजग्य जेहिकारनहोई  
पूजन गौरि सषीं लै आई ❖ करतप्रकासफिरहिं फुलवाई  
जासुबिलोकिअलौकिकसोभा❖ सहजपुनीतमोरमन छोभा  
सोसब कारन जानविधाता ❖ फरकहिंसुभगअंगसुनु भ्राता  
रघुवंसिन्हकरसहज सुभाऊ ❖ मनकुपंथपग धरैं न काऊ  
मोहिअतिसयप्रतीतमनकेरी ❖ जेहिंसपनेहुपरनारिन हेरी



जिन्हकैलहहिंनरिपुरनपीठी \* नहिपावहिंपरतियमनडीठी  
मंगनहहिं न जिन्हकै नाहीं \* ते नर वर थोरै जग माहीं  
दो० करतवतकहीअनुजसन, मनमियरूपलोभान ॥

मुपसरोजमकरंदछवि, करैमधुपइवपान २३१ ॥

चितवतिचकितचहूंदिसिमीता \* कहंगणनृपकिमोरमनचिंता  
जहाँबिलोकमृगसावकनयनी \* जनुतहंवारिमकमलसित खेनी  
लताओटतवसाखिन्हलपाए \* स्यामलगौर किमोर मुहाए  
देखि रूप लोचन ललचाने \* हरपेजनुनिजनिधिपाहिचाने  
थकेनयन रघुपति छवि देपे \* पलकान्हिहंपरिहरीं निमेषे  
अधिक सनेह देहभइभोरी \* मरदमामिहिजनुचितवचकोरी  
लोचनमगरामहिउर आनी \* दीन्हे पलककपाट सयानी  
जबसियसपिन्हप्रेमवसजानी \* कहिनमकहिं कलुमनसकुचानी  
दो० लताभवनतैप्रगटभए, तेहिअवमर दोउभाइ ॥

निकसेजनुजुगविमलविधु, जलदपटल बिलगाइ २३२

सोभा सीवसुभग दोउबीरा \* नीलपीत जलजात सरीरा  
काकपक्ष सिर सोहत नीके \* गुच्छेविचविचकुसुम कलीके  
भाल तिलक श्रमबिंदुमुहाए \* सवनसुभगभूपन छविछाए  
विकटभृकुटि कचधूधरवारै \* नव सरोज लोचन रतनारै  
चारुचिबुकनासिकाकपोला \* हासविलास लेत मनमोला  
मुषलविकहिनजाइमोहिपाहीं \* जोबिलोकिबहुकाम लजाहीं  
उरमनिमालकंबुकल श्रीवाँ \* कामकलभकरभुजवलसीवाँ  
सुमन समेत बामकर दोना \* साँवरकुँअरसपी सुठिलोना

दो० केहरिकटिपटपीतधर, सुखमासीलनिधान ॥

देषिभानुकुलभूषनहिं, विसरासखिन्हअपान २३३

धरिधीरजएक आलिसयानी ✽ सीतासन बोली गहिपानी  
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू ✽ भूपकिसोर देखि किनलेहू  
सकुचिसीय तवनयन उघारे ✽ मनमुखदोउरधुसिंह निहारे  
नषसिष देखिरामकै सोभा ✽ सुमिरिपितापनमनअतिछोभा  
परवससपिन्हलखीजवसीता ✽ भये उगहरुसबकहहिं सभीता  
पुनिआउवएहि बेरिआं काली ✽ असकहिमनबिहंसी एकआली  
गूढगिरासुनिसियसकुचानी ✽ भयेउ विलंबमातुभयमानी  
धरि बड़धीर राम उरआने ✽ फिरीअपनपउपितुवसजाने  
दो० देषनमिसमृगाबिहंगतरु, फिरइबहोरि बहोरि ॥

निराषिनिराषि रघुवीरछवि, बाढैप्रीतिनथोरि २३४ ॥

जानिकठिनसिवचापविमूरति ✽ चलीराषिउर स्यामलमूरति  
प्रभुजवजात जानकी जानी ✽ सुखसनेहसोभा गुनखानी  
परमप्रेममयमृदु मसिकीन्ही ✽ चारुचित्रभीतलिषि लीन्ही  
गई भवानी भवन बहोरी ✽ बन्दिचरन बोली करजोरी  
जयजयगिरिवरराजकिसोरी ✽ जयमहेस मुखचन्दचकोरी  
जयगजबदनषटानन माता ✽ जगतजननिदामिनिदुतिगाता  
नाहितबआदिमध्यअवसाना ✽ अमितप्रभाउबेदनहिजाना  
भवभवविभवपराभवकारिनि ✽ विस्व विमोहनिस्ववसबिहारिनि

दो० पतिदेवता सुतीयमहँ, मातुप्रथम तब रेष ॥

माहिमा अमित न सकहिकहि, सहससारदासेष २३५  
सेवततोहि सुलभफल चारी ✽ वरदायनी पुरारि पियारी

देवि पूजिपदकमल तुम्हारे \* सुगनर मुनिमवहोहिं मुखारे  
 मोर मनोरथ जानहु नीकें \* बमहु मदा उरपुर मवहीकें  
 कीन्हैउं प्रगटनकारन तेही \* अमकहि चरनगहे बेदेही  
 विनय प्रेमवस भई भवानी \* पमीमाळ मृगति मुमुकानी  
 सादर सियप्रसादमिरधरेऊ \* बोलीगौरि हरप हियभरेऊ  
 सुनुसिय सत्यअमीमहमारी \* पूजिहिमनकामना तुम्हारी  
 नारदवचनमदा सुचिमाचा \* मोवरामिलिहिजाहिमनराचा  
 छं० मनजाहिराचेउ मिलिहि मोवरमहज मुन्दर माँवरो ।  
 करुनानिधान मुजानमीलमनेह जानतरावरो ॥  
 एहिभांतिगौरिअमीममुनिसियमहितहियहरपींअलीं  
 तुलसीभवानिहिपूजिपुनिपुनि मुदितमनमाँदिरचलीं ।

सो० जानिगौरिअनुकूल, सियहियहरपनजायकहि ॥

मंजुलमंगलमूल, वामअंगफरकनलगें ॥ २३६ ॥

हृदय सराहत सीय लोनाई \* गुर ममीप गवने दोउभाई  
 राम कहासवकौमिक पाहीं \* मरलमुभाउ छुआल्लुनाहीं  
 सुमन पाइ मुनिपूजाकीन्ही \* पुनिअमीमदुहुंभाइनदीन्ही  
 सुफल मनोरथ होहु तुम्हारे \* रामलपन मुनिभण मुखारे  
 करिभोजन मुनिवरविज्ञानी \* लगेकहन कछु कथापुरानी  
 विगतादिवसगुर आयसु पाई \* संध्या करन चलेदोउभाई  
 प्राचीदिसिससिउएउसुहावा \* सियमुखसारिसदेपिसुखपावा  
 बहुरिबिचार कीन्हमनमाहीं \* सीयवदनसमहिमकरनाहीं  
 दो० जनमसिंधुपुनिबंधुविष, दिनमलीन सकलंक ॥

सियमुख समतापावकिमि, चंदवापुरोरंक ॥ २३७ ॥

घटै बटै विरहिनि दुखदाई \* ग्रसेराहु निज संधिहि पाई  
 कोक सोक प्रद पंकज द्रोही \* अवगुन बहुत चंद्रमा तोही  
 वैदेही मुख पटतर दीन्है \* होइदोष बडअनुचितकीन्है  
 सियमुखछविबिधुव्याजबखानी \* गुरुपहिंचलेनिसाबडिजानी  
 करिमुनिचरनसरोजप्रनामा \* आयसुपाइ कीन्ह विस्त्रामा  
 विगतनिसा रघुनायक जागे \* बंधुविलोकि कहनअसलागे  
 उएउअरुनअवलोकहुताता \* पंकजकोकलोक सुखदाता  
 बोले लपन जोरि युग पानी \* प्रभुप्रभाउ सूचक मृदुबानी  
 दो० अरुनोदय सकुचे कुमुद, उडगनजोतिमलीन ॥  
 जिमितुम्हारआगमनसुनि, भएनृपति बलहीन २३८

नृपसवनखतकरहिंउजिआरी \* टारिनसकहिं चापतमभारी  
 कमलकोकमधुकरखगनाना \* हरषेसकल निसाअवसाना  
 औसेहिं प्रभुसबभगततुम्हारे \* होइहहिं टूटे धनुष सुखारे  
 उएउभानुविनुस्रमतमनासा \* दुरे नखत जग तेज प्रकासा  
 रविनिजउदयव्याजरघुराया \* प्रभुप्रतापसवननृपन्हदेखाया  
 तबभुजबलमहिमाउदघाटी \* प्रगटाधनु विघटनपरिपाटी  
 बंधुबचनसुनि प्रभु सुसकाने \* होइसुचिसहजपुनीतनहाने  
 नित्यकृयाकरि गुरुपहिंआए \* चरनसरोज सुभग सिरनाए  
 सतानन्द तब जनकबुलाए \* कौसिकमुनिपहितुरतपठाए  
 जनकबिनयतिन्हआइसुनाई \* हरषेबोलि लिए दोउ भाई  
 दो० सतानंद पद बंदि प्रभु, बैठेगुरु पाहिंजाइ ॥  
 चलहुतातसुनि कहेउतब, पठवा जनक बोलाइ २३९

श्रीय स्वयंबर देखिअजाई \* ईस काहि धौं देइ बडाई



लपन कहा जमभाजन मोई \* नाथ कृपा तव जापर होई  
 हरषे मुनिसव मुनिवरवानी \* दीन्हि अमीममवहिमुखमानी  
 पुनिमुनि वृंद समेत कृपाळा \* देखन चले धनुष मग्यमाळा  
 रंगभूमि आये दोउ भाई \* अमिमुधिमवपुर्वा मिन्हवाई  
 चलेसकल गृह काजविमारी \* बाल जुवान जगठ न नारी  
 देखी जनक भीर भ भारी \* मुचिमेवक मवलिये हंकारी  
 तुरतसकल लोगन्ह पहिजाहू \* आमन उचित देहु मवकाहू  
 दो० कहि मृदुवचन विनीत तिन्ह, बैठागे नरनारि ॥

उत्तममध्यमनीचलबु, निजनिजथल अनुहारि २४०  
 राजकुँअरतेहि अवसरआण \* मनहु मनोहरता तन छाप  
 गुन सागर नागर बर वीरा \* मुंदर स्यामल गौर मरीरा  
 राज समाज विराजत रुरे \* उटुगनमहंजनु जुग विधुपूरे  
 जिन्हकें रही भावना जैसी \* प्रभु मूरति तिन्हदेखी तैसी  
 देषहिं धूप महारन धीरा \* मनहुवीर रम धरे मरीरा  
 डरेकुटिलनृपप्रभुहिनिहारी \* मनहु भयानक मूरतिभारी  
 रहे असुर छलछोनिप बेपा \* तिन्हप्रभुप्रगटकालसमदेषा  
 पुर बासिन्ह देखे दोउ भाई \* नरभूपन लोचन सुखदाई  
 दो० नारिबिलोकहिं हरपि हिय, निज निज रुचि अनुरूप  
 जनुसोहत संगारधरि, मूरति परम अनूप ॥ २४१ ॥

बिदुखन्हप्रभुविराटमयदीसा \* बहुमुखकरपग लोचनसीसा  
 जनकजातिअवलोकहिंकैसे \* सजनसगे प्रियलागहिं जैसे  
 सहितबिदेहबिलोकहिं रानी \* सिसुसमप्रीतिनजातिवखानी  
 जोगिन्हपरमतत्वमयभासा \* सांतसुद्धसम सहज प्रकासा

हरि भगतन्हदेखेदोउभ्राता \* इष्टदेव इवसब सुख दाता  
रामहिचितवभावजोहिसीया \* सोसनेहसुषनहि कथनीया  
उरअनुभवातिनकहि सकसोऊ \* कवन प्रकारकहैकविकोऊ  
एहिविधिरहाजाहिजसभाऊ \* तेहितसदेषउ कोसलराऊ  
दो० राजत राजसमाज महँ, कोसलराज किसोर ॥

सुंदर स्यामल गौरतन, विस्व विलोचन चोर २४२ ॥  
सहज मनोहरमूरति दोऊ \* कोटिकामउपमा लघुसोऊ  
सरदचंद निंदक मुख नीके \* नीरजनयन भावते जीके  
चितवनिचारुमारमनहरनी \* भावतिहृदयजातिनहिबरनी  
कलकपोलश्रुतिकुंडललोला \* चिबुकअधर सुंदरमृदुबोला  
कुमुद बंधुकर निंदकहासा \* भृकुटीबिकटमनोहरनासा  
भालबिसालतिलकझलकाहीं \* कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं  
पीतचौतनी सिरन्हिसुहाई \* कुसुमकली बिचबीचबनाई  
रैपैरुचिर कंबुकल ग्रीवाँ \* जनुतिमुअनसुखमाकीसीवाँ  
दो० कुंजरमनि कंठाकलित, उरन्हि तुलसिका माल ॥

वृषभकंधकेहरिठवानि, बलनिधिबाहु विसाल २४३ ॥  
कटितूनीर पीतपट बांधे \* करसर धनुषबाम वरकांधे  
पीतजग्य उपवीत सुहाए \* नषसिखमंजु महाछविछाए  
देखिलोग सबभए सुखारे \* एकटकलोचन चलतनतार  
हरषे जनक देखि दोउभाई \* मुनिपदकमल गहेतव जाई  
हरिविनतीनिजकथासुनाई \* रंगअवानिसबमुनिहिदेखाई  
तहँजहँजाहिँकुँअरवर दोऊ \* तहँतहँ चकिताचितवसबकोऊ  
नेजनिजरुचि रामहि सबदेखा \* कोउनजानकछुमरमविसेषा

भालि रचना सुनि नृप मन कहैऊ ॥ राजा सुदित महामुपलहेऊ  
दो० सब मंचन्है ते मंचणक, सुंदर विमल विमाल ॥ नवाह २ ॥

सुनिसमेत दो उबंधु तह, बैठोर महिपाल ॥ २४४ ॥

प्रभुहि दोपि सब नृप हिय हारे \* जनुराके म उदय भये तारे  
असि प्रतीतिसवके मनमार्ही \* रामचाप तोरवमक नार्ही  
बिनु भंजेहु भवधनुष विमाल \* मैलिहि मीय राम उरमाल  
असविचारि गवनहु घरभाई \* जमप्रताप बलतेज गंवाई  
बिहंसे अपर भूपसुनि बानी \* जे आविधंक अध अभिमानी  
तोरेहु धनुष व्याह अवगाहा \* विनु तोरे को कुवरि विवाहा  
एकवार काल उकिन होऊ \* मियहित मम रजित वहम सोऊ  
यह सुनि अवर महिप सुसुकाने \* धरम मील हरि भगत मयाने  
सो० सीय विआह वि राम, गरव हरि करि नृपन्ह को ।

जीतिको मक मंग्राम, दमरथ के रनवां कुरे २४५ ॥

व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई \* मनमोद कहि कि प्रग्व बुताई  
सिखह मारि सुनि परम पुनीता \* जगदंबा जानहु जिय सीता  
जगतपितारघुपति हि विचारी \* भरिलोचन छवि लेहु निहारी  
सुंदर मुखद सकल गुनरासी \* एदो उ बंधु मंभु उर बासी  
सुधा समुद्र समीप बिहाई \* मृगजल निराखि मरहु कत धाई  
करहु जाइ जा कहं जोइ भावा \* हम तो आज जनम फल पावा  
अस कहि भले प्रूप अतुरागे \* रूप अनूप बिलोकन लागे  
देखहिं सुरनभ चढ़े बिमाना \* बरषहिं सुमन करहिं कलगाना  
दो० जानि सुअवसर सीय तब, पठई जनक बोलाइ ।

चतुरसखी सुंदर सकल, सादर चली लवाइ २४६ ॥

सियसोभा नहिंजाइवखानी \* जगदंबिका रूपगुन खानी  
उपमासकलमोहिलघुलागीं \* प्राकृतनारि अंग अनुरागीं  
सिय वरनियतेइ उपमा देई \* कुकविकहाइ अजसकोलेई  
जौंपटतरिअतीय समसाया \* जगअसिजुवातिकहाँ कमनीया  
गिरामुषरतन अरध भवानी \* रतिअतिदुषितअतनपतिजानी  
विष बारुनी बंधुप्रिय जेही \* कहियरमास किमि बैदेही  
जौंछवि सुधापयोनिधि होई \* परमरूप मयकच्छप सोई  
सोभारजु मन्दर सिंगारु \* मथैपानि पंकजनिज मारु  
दो० एहिंविधिउपजैलच्छिजव, सुंदरतासुखमूल ।

तदापिसकोच समेतकवि, कहाहिसयिसमतूल २४७ ॥  
चली संगलै सखी सयानी \* गावत गीत मनोहरवानी  
सोहनवलतन सुन्दर सारी \* जगतजननिअतुलितछविभारी  
भूषन सकल सुदेस सुहाए \* अंगअंगरचिसखिन्हवनाए  
रंगभूमि जवासिय पगुधारी \* देखिरूप मोहे नर नारी  
हरषि सुरन्ह हुंदुभी बजाई \* बरषि प्रसून अपछरा गाई  
पानि सरोज सोहजयमाला \* अवचटचितएसकल भुआला  
सीयचकिताचितरामहिचाहा \* भयेमोह बस सब नरनाहा  
मुनि समीप देषे दोउ भाई \* लगेललकिलोचननिधिपाई  
दो० गुरजनलाजसमाजवड, देषिसीयसकुचानि ।

लागिविलोकनसखिन्हतन, रघुवीरहिउरआनि २४८  
रामरूप अरुसिय छविदेखें \* नरनारिन्ह परिहरीनिमेखें  
सोचहिंसकलकहतसकुचाही \* विधिसनबिनय करहिमनमाहीं  
हराविधि बेगिजनकजडताई \* मतिहमारिअसिदेहि सुहाई



बिनु विचारपनताजिनरनाहू \* सीय रामकर करे विवाह  
जगमलकहिहिभावसबकाहू \* हठ कीन्हें अंतहु उरदाहू  
येहिलालसा मगन सबलोगू \* वर साँवरो जानकी जोगू  
तब बंदीजन जनक बोलाए \* विरदावली कहतचलिआए  
कहनृप जाइ कहहुपनमोरा \* चले भाटहिय हरपन थोरा  
दो० बोले बंदी बचन वर, सुनहु सकल माहिपाल ॥

पनविदेहकरकहहिं, भुजा उठाइ विमाल ॥ २४९ ॥

नृपभुजबलविधुसिवधनुराहू \* गरुअकठोर विदितमवकाहू  
रावन बान महा भट मारे \* देखिमरामन गवहिं सिधारे  
सोइ पुरारि को दंड कठोरा \* राजसमाज आजजोइतोरा  
त्रिभुवन जय समेत बैदेही \* विनहि विचारबरै हठितेही  
सुनिपनसकलभूपअभिलाषे \* भटमानी अतिमयमनमाषे  
परिकर बाँधिउठे अकुलाई \* चले इष्ट देवन्ह सिरनाई  
तमाकिताकिताकिसिवधनुधरही \* उठइनकोटिभाँति बलकरही  
जिन्हकेकछुविचारमनमाहा \* चाप ममीप महीपनजाही  
दो० तमाकि धरहिं धनुमूढ नृप, उठेन चलहिं लजाइ ।

मनहु पाइभटबाहुबल, अधिक अधिक गरुआइ २५०  
भूप सहसदस एकहिं वारा \* लगे उठावन टरै न टारा  
डगै न संभु सरासन कैसें \* कामी बचन मतीमन जैसें  
सबनृप भये जोग उपहासी \* जैसें बिनुविराग मन्यासी  
कीरति बिजय बीरता भारी \* चले चापकर वरवम हारी  
श्रीहत भए हारि हिय राजा \* बैठेनिज निजजाइ समाजा  
नृपन्हविलोकिजनकअकुलाने \* बोलेबचन रोपजनु साने

दीप दीप के भूपति नाना \* आएसुनि हमजोपनठाना  
देवदनुज धरि मनुज सररी \* विपुल वीर आए रनधीरा  
दो० कुंवरि मनोहर विजयबडि, कीरतिअतिकमनीय ।

पावनिहार विरंचि जनु, रचेउनधनुदमनीय २५१ ॥

कहहुकाहियहलाभन भावा \* काहुन संकर चाप चढावा  
रहौ चढाउव तोरव भाई \* तिलभारिभूमिनसके छुडाई  
अवजनिफोउमाखैभटगानी \* वीर बिहीन मही में जानी  
तजहुआसनिजनिजगृह जाहू \* लिखानविधि बैदेहि विवाह  
सुकृतजाइ जौ पनपरिहरऊं \* कुंअरि कुंआरिहौ काकरऊं  
जौजनतेउंविनुभटभूमिभाई \* तोपनकरि होतेउं न हँसाई  
जनकवचनसुनिसबनरनारी \* देखि जानकिहि भएदुषारी  
माषे लषन कुटिल मै भौं हैं \* रदपटफरकत नयनरिसोहैं  
दो० कहिनसकत रघुवीर डर, लगेवचनजनुवान ॥

नाइरामपदकमलसिर, बोले गिराप्रमान ॥ २५२ ॥

रघुवंसिन्ह महँजहँकोउहोई \* तेहिसमाज असकहैन कोई  
कहीजनकजसिअनुचितबानी \* विद्यमानरघुकुलमनि जानी  
सुनहुभानुकुल पंकज भानू \* कहौंसुभावनकछुअभिमानू  
जौतुम्हारि अनुसासन पावौं \* कंदुकइव ब्रह्मांड उठावौं  
काचे घट जिमिटारौं फारी \* सकौंमेरुमूलक जिमितोरी  
तौ प्रताप महिमा भगवाना \* कोबापुरो पिनाक पुराना  
नाथजानिअस आयसुहोऊ \* कौतुककरउंबिलोकि असोऊ  
कमलनालजिमिचापचढावौं \* जोजनसत प्रमानलै धावौं

दो० तोरों छत्रक दंड जिमि, तव प्रताप बलनाथ ॥

जौं नकरों प्रभुपद मपय, करनधरों धनुनाथ २५३॥  
 लषनसकोप वचनजब बोले \* दुगमगानिमाहिदिग्गजडोले  
 सकल लोग सब भूप डेराने \* मियहियहरपजनक सकुचाने  
 गुरगुपतिसबमुनिमनमाहीं \* मुदितभणपुनिपुनिपुल माहीं  
 सयनाहिरगुपातिलपननिवारै \* प्रेम ममेत निकट बैठारै  
 बिस्वामित्र समयसुभजानी \* बोले अतिमनेह मयवानी  
 उठहु राम भंजहु भवचापा \* भेटहुतात जनक परितापा  
 सुनिगुरवचनचरनासिरनावा \* हरपविपादन कछुउरआवा  
 ठाढ़भए उठिसहज सुभाएँ \* ठवनि जुबामृगराज लजाएँ  
 दो० उदितउदयगिरिमंचपर, रघुवरवाल्मपतंग मा० पा० ७

बिकसेसंतसरोजमव, हरपेलोचनभृंग ॥ २५४ ॥

नृपन्हकेरिआसानिसिनासी \* वचननखतअलीन प्रकासी  
 मानीमहिप कुमुदसकुचाने \* कपटी भूप उलूक लुकाने  
 भणबिसोक कोक मुनिदेवा \* बरिसहिंसुमनजनावहिसेवा  
 गुरपद बंदिसहित अनुरागा \* रामसुन्हिसनआयसु मागा  
 सहजहिचलेसकलजगस्वामी \* मत्त मंजुवर कुंजर गामी  
 चलत रामसबपुर नरनारी \* पुलकपूरितन भए सुखारी  
 बंदिपितर सुरसुकृत संभारे \* जौं कछुपुन्य प्रभाउ हमारे  
 तौ सिवधनु मृनालकी नाई \* तोरहिं राम गनेस गोसाई

दो० रामहिप्रेमसमेतलषि, सषिन्हसभीपबोलाय ॥

सीतामातुसनेहवस, वचनकहेबिलषाई ॥ २५५ ॥

सखिसब कौतुक देशनिहारै \* जेउ कहावत हितु हमारे

कोउन बुझाइकहे नृपपार्हीं \* एवालकअसिहठभालिनाहीं  
 रावन वान छुआनहिंचापा \* हारे सकलभूप करिदापा  
 सोधनुराज कुँअर करदेहीं \* बाल मरालाकि मन्दरलेहीं  
 भूपसयानप सकल सिरानी \* सषिविधिगतिकछुजातिनजानी  
 बोली चतुर सषी मृदुबानी \* तेजवंतलयुगनिअ न रानी  
 कहँकुंभज कहँसिंधु अपारा \* सोखेउसुजस सकल संसारा  
 रविमंडल देखत लघुलागा \* उदयतासुतिभुवनतमभागा  
 दो० मंत्रपरम लघुजासु बस, विधिहरिहर सुरसर्व ।

महामत्तगजराज कहँ, बस करअंकुस पर्व ॥ २५६ ॥  
 कामकुसुमधनुसायकलीन्हे \* सकलभुअनअपनेबसकीन्हे  
 देवितजिअसंसउअसजानी \* भंजव धनुष रामसुनुरानी  
 सखीवचनसुनि भै परतीती \* मिटाविषादवढीअतिप्रीती  
 तब रामहि बिलोकि वैदेही \* सभयहृदयविनवतिजेहितेही  
 मनहीमन मनावअकुलानी \* होहुप्रसन्न महेस भवानी  
 करहुसफलआपनि सेवकाई \* करिहितहरहु चापगरुआई  
 गन नायक बरदायक देवा \* आजुलगे कीन्हेउतुअसेवा  
 बार बार विनती सुनिमोरी \* करहुचापगरुता अतिथोरी  
 दो० देखिदेखिरघुबीरतन, सुरमनावधरिधीर ॥

भरेबिलोचनप्रेमजल, पुलकावलीसरीर ॥ ५२७ ॥  
 नीकेनिरखिनयनभरिसोभा \* पितुपनसुमिरिवहुरिमनछोभा  
 अहहतात दारुन हठठानी \* समुझतनहिकछुलाभनहानी  
 सचिवसभयासिख देइनकोई \* बुधसमाजबडअनुचितहोई  
 कहँधनुकुलिसहुँचाहिकठोरा \* कहँस्यामलमृदुगात किसोरा



विधिकेहिभांतिधरों उरधीरा \* मिरममुमनकनवेधिअहीरा  
 सकल सभाकै मतिभै भोरी \* अबमोहिमंभुचापगतितोरी  
 निजजडतालोगन्ह परहारी \* होहिहमअरुपतिहिनिहारी  
 अतिपारिताप सीयमनमाहीं \* लवनिमंगवजुगमयममजाहीं  
 दो० प्रभुहिचितइपुनिचितवमहि, राजतलेंचनलोल ।

खेलतमनसिजमीनजुग, जनुविधुमंडलडोल २५८ ॥

गिराअलिनिमुपपंकजरोकी \* प्रगटनलाजनिमाअवलकी  
 लोचन जलरहलोचन कोना \* जेमंपगम कृपिन कसोना  
 सकुचीव्याकुलतावडिजानी \* धरिधीरजप्रतीति उरआनी  
 तनमनबचन मोरपनमाचा \* रघुपतिपद मगोज मनराचा  
 तौभगवान सकल उरवामी \* करिहिमोहि रघुवरकैदासी  
 जेहि के जेहिपर सत्यमनेहू \* मोतेहि मिलनकछु मन्देहू  
 प्रभु तन चितै प्रेमपनठाना \* कृपानिधानराममव जाना  
 सियहिविलोकितकेउचनुकैमे \* चितवगरुडलबुव्यालहिजैसे  
 दो० लपनलपेउरधुवंसमनि, ताकेउहरकोदंड ॥

पुलकिगात बोलवचन, चरणचापिव्रह्मंड ॥ २५९ ॥

दिसिकुअरहुकमठअहिकोला \* धरहुधरानि धरिधीरनडोला  
 राम चहाहिं संकर धनुतोरा \* होहुसजगमुनि आयसुमोरा  
 चाप समीप राम जबआए \* नरनारिन्हसुरमुकृत मनाए  
 सबकर संसउ अरु अज्ञानू \* मंदमहीपन्हकर अभिमानू  
 भृगुपति केरिगरवगरु आई \* सुरमुनिवरन्ह केरि कदराई  
 सियकरसोचजनकपछितावा \* रानिन्हिकर दारुनदुषदावा  
 संभु चाप बड बोहित पाई \* चढेजाइ सब संग बनाई

रामबाहु बल सिंधु अपारु \* चहतपारुनहिंकोउकडहारु  
दो० रामबिलोके लोगसब, चित्रलिखेसेदेषि ।

चितईसीयकृपायतन, जानीविकलविसोषि २६०  
देखी विपुल विकल बैदेही \* निमिषविहातकल्पसमतेही  
तृषितवारिविनुजोतनत्यागा \* मुए करैका सुधा तडागा  
का बरषा सब कृषी सुखाने \* समय चुकेपुनिकापाछिताने  
असजियजानिजानकीदेखी \* प्रभुपुलकेलखिप्रीतिविसेखी  
गुरहिप्रनाममनहिमनकीन्हा \* अतिलाघवउठाइधनुलीन्हा  
दमकेउदामिनिजिमिजवलयऊ \* पुनिधनुनभ मंडलसमभयऊ  
लेत चढावत खेंचत गाढे \* काहुन लखा देख सबठाढे  
तेहिछनराम मध्य धनुतोर \* भरेभुवन धुनिघोर कठोरा  
छं० भरेभुवनघोरकठोररवरवि वाजितजिमारग चले ॥

चिकरहिंदिग्गजडोलमाहिअहिकोलकूरमकलमले॥  
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हेसकलविकलविचारहीं॥  
कोदंडपंडेउ रामतुलसी जयतिवचन उचारहीं ॥

सो० संकरचाप जहाज, सागर रघुवर बाहुबल ॥

बूढसोसकलसमाज, चढाजो प्रथमाहि मोहवस २६१  
प्रभु दोउ चापखंडमाहिडारे \* देषि लोग सबभये सुषारे  
कौसिकरूपपयोनिधिपावन \* प्रेमवारि अवगाह सुहावन  
राम रूप राकेस निहारी \* बढतबीचिपुलकावलिभारी  
बाजे नभ गह गहे निसाना \* देवबधू नाचहिं करि गाना  
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा \* प्रभुहिप्रसंसहिं देहिंअसीसा  
वरसहिंसुमन रंग बहुमाला \* गावहिं किन्नर गीतरसाला

रहीभुअनभरिजयजयवानी \* धनुपमंगधुनि जातनजानी  
मुदितकहाहिजहंतहंनरनारी \* भंजेंउ राम मंभुधनु भारी  
दो० वंदीमागध सतगन, विरदवदहिं मतिधीर ।

करहिं निछावरिलोगसब, हयगयधनमनिचीर २६२  
झांझ मृदंग संख सहनाई \* भेरि ढोल हुंदुभी सुहाई  
बाजहिं बहु बाजने सुहाए \* जहंतहंजुवतिन्ह मंगलगाए  
साषिन्हसहितहरपींअतिरानी \* सुखत धान पराजनु पानी  
जनक लहेउसुखसोचविहाई \* पैरत थके थाह जनु पाई  
श्रीहत भए अप धनु टूटे \* जेमे दिवस दीप छवि छूटे  
सीयसुषाहिवरनियकेहि भाता \* जनुचातकीपाइजल स्वाती  
रामहि लपन विलोकतकेसे \* ममिहिचकोराकिमोरकजैसे  
सतानंद तव आयसु दीन्हा \* मीतागमन रामपहिंकीन्हा  
दो० संग सपी सुन्दर चतुर, गावहिं मंगल चार ।

गवनीवाल मराल गति, सुखमा अंग अपार २६३  
साषिनमध्यसियसोहातिकेसी \* छविगनमध्यमहाछविजैसे  
कर सरोज जयमाल सुहाई \* विस्वविजयसोभाजेहिछाई  
तनसकोच मन परमउछाहू \* गृहप्रेम लखिपरैन काहू  
जाइ समीप रामछवि देपी \* रहिजनुकुंअरिचित्रअवरेपी  
चतुर सपी लषिकहा बुझाई \* पहिरावहु जयमाल सुहाई  
सुनतजुगलकर मालउठाई \* प्रेमविवस पहिराय न जाई  
सोहतजनुजुगजलजसनाला \* सासिहिसभीतदेतजयमाला  
गावहिंछविअवलोकिसहेली \* सियजयमाल रामउरमेली  
सो० सुबरउरजयमाल, देषि देवबरसहिंसुमन ।

सकुचेसकलभुवाल, जनुबिलोकिरबिकुमुदगन २६४



पुरअरु व्योमवाजने बाजे ✽ षलभएमलिनसाधु सबराजे  
 सुरकिन्नर नर नागमुनीसा ✽ जयजयजयकहिदेहिंअसीसा  
 नाचहिंगावहिं विबुधबधूटी ✽ बारबार कुसुमांजलि छटी  
 जहंतहं विप्रवेदधुनि करहीं ✽ बंदी विरदावलि उच्चरहीं  
 महिपातालव्योमजसव्यापा ✽ रामवरी सिय भंजेउ चापा  
 करहिं आरती पुर नर नारी ✽ देहिं निछावरि वित्तविसौरी  
 सोहति सीय राम कै जोरी ✽ छविसिंगार मनहुं इकठोरी  
 सखीकहहिंप्रभुपदगहुसीता ✽ करतिनचरनपरसअतिभीता  
 दो० गौतमतियगतिसुरति करि, नहिपरसतिपगपानि ।

मनाविहंसेरघुवंशमनि, प्रीतिअलौकिकजानि २६५  
 तवसियदेखि भूपअभिलाषे ✽ कूर कपूत मूढ मन माषे  
 उठिउठिपहिरिसनाहअभागे ✽ जहंतहं गाल बजावनलागे  
 लेहुछडाइ सीयकह कोऊ ✽ धरिबाँधहु नृपबालक दोऊ  
 तोरे धनुष चाडनहिं सरई ✽ जीवतहमहिकुअँरिकोबरई  
 जौबिदेह कछु करइ सहाई ✽ जीतहुसमरसहितदोउभाई  
 साधु भूप बोले सुनि बानी ✽ राज समाजहिलाजलजानी  
 बल प्रताप वीरता बडाई ✽ नाकपिनाकहि संग सिधाई  
 सोइसूरता किअबकहुं पाई ✽ असिबुधितौविधिमुहँमसिलाई  
 दो० देखहुरामहिं नयन भरि, तजिइरषा मदमोह ॥

लपन रोषपावकप्रबल, जानिसलभ जनिहोहु २६६॥  
 बैनतैयबलि जिमिचह कागू ✽ जिमिससचहैनागअरिभागू  
 जिमिचहकुसलअकारनकोही ✽ सब संपदा चहै सिवद्रोही  
 लोभलोलुपकलकीरतिचहई ✽ अकलंकता कि कामीलहई



हरिपदविमुपसुगतिजिमिचाहा \* तमतुम्हार लालचनरनाहा  
कोलाहल सुनिसीयसकानी \* मखी लवाइगई जह रानी  
राम सुभाय चले गुर पाहीं \* मियमनेह बरनतमनमाहीं  
रानिन्हसहितसोचवसमीया \* अवधौंविधिहिकाहकरनीया  
भूपवचनसुनिइतउततकहीं \* लपनरामडरबोलिनमकहीं  
दो० अरुन नयन भृकुटीकुटिल, चितवतनृपन्हमकोप ।

मनहुँमत्तगजगनानिरखि, सिंहकिमोरहिचोप २६७  
खरभरदेखि विकलनरनारी \* मवमिल्दिहेहिमहीपन्हगारी  
तेहिअवसरसुनिसिवधनुभंगा \* आयउभृगुकुलकमलपतंगा  
देषिमहीप सकल सकुचाने \* वाजझपटजनु लवा लुकाने  
गौरसरीर भूतिभलभ्राजा \* भालविमाल त्रिपुंड विराजा  
सीसजटाससिवदन सुहावा \* रिमवसकछुक अरुनहोइभावा  
भृकुटीकुटिलनयनरिसराते \* सहजहुचितवतमनहुरिसाते  
वृषभकंधउर बाहु विसाला \* चारुजनेउ माल मृगछाल  
कटि सुनिवसन तूनहुइबांधे \* धनुसरकरकुठार कल कांधे  
दो० सांतवेष करनी कठिन, बरनिनजाइ मरूप ।

धरिसुनितनजनुवीररस, आएउजहं सबभूप २६८  
देखत भृगुपति वेष कराला \* उठेसकलभयविकल भुआला  
पितुसमेतकहिरनिजनामा \* लगेकरन मव दंड प्रनामा  
जेहिसुभाय चितवहिंहितजानी \* सोजानै जनु आइ खुटानी  
जनकबहोरिआइसिरनावा \* सीयबोलाइ प्रनाम करावा  
आसिषदीन्ह सखीहरषानी \* निजसमाज लगई सयानी  
बिस्वामित्र मिले पुनि आई \* पदसरोज मेले दोउ भाई

रामलखनदशरथ के ढोटा ✽ दीन्हअसीसदेखिभलजोटा  
रामहिंचितइ रहेथकिलोचन ✽ रूपअपार मार मदमोचन  
दो० बहुरि विलोकि विदेहसन, कहहु काह अतिभीर ॥

पूछातिजानि अजानजिमि, व्यापेउकोप शरीर २६९

समाचारकहि जनकसुनाये ✽ जेहिकारन महीपसब आये  
सुनतबचनफिरअनतनिहारे ✽ देखे चापखंड महि डारे  
अतिरिसबोलबचन कठोरा ✽ कहहुजडजनकधनुषकेइंतोरा  
बेगि देखाउ मूढनत आजू ✽ उलटौमहिजहलगितबराजू  
अतिडर उतरदेतनृप नाहा ✽ कुटिल भूप हरषे मनमाहीं  
सुरमुनि नागनगर नरनारी ✽ सोचहिं सकलत्रासउरभारी  
मनपछिताति सीयमहतारी ✽ विधिअवसवरीवातविगारी  
भृगुपतिकरसुभाउसुनिसीता ✽ अरधनिमेषकल्प समबीता  
दो० समय विलोके लोग सब, जानि जानकी भीरु ॥

हृदयनहरषविषाद कछु, बोले श्री रघुबीरु २७० ॥

नाथसंभु धनु भंजनि हारा ✽ होइहिकोउएकदासतुम्हारा  
आएसुकाहकहिअकिनमोही ✽ सुनि रिसाइबोलेमुनिकोही  
सेवकसो जो करें सेवकाई ✽ अरिकरनीकरिकरिअलराइ  
सुनहुरामजेहिंसिव धनुतोरा ✽ सहसबाहु समसोरिपु मोरा  
सोबिलगाउविहाइ समाजा ✽ नत मारेजैहहिं सब राजा  
सुनिमुनिबचनलपनमुसुकाने ✽ बोले परसुधरहि अपमाने  
बहुधनुही तोरी लरिकाई ✽ कबहुनतुम्हरिसकीन्हगोसाई  
येहिधनुपर ममता केहिहेतू ✽ सुनिरिसाइकहभृगुकुलकेतू

दो० रेनुपबालक कालवस, बोलत तोहिनमंभार ॥

धनुही समातिपुरारिधनु, विदित सकलमंभार २७१॥

लषनकहाहंसि हमरे जाना \* सुनहुदेव सबधनुष समाना  
काछतिलाभ जून धनु तोरे \* देखा राम नएकें भीरे  
छुअतट्ट रघुपतिहुन दोसू \* मुनिविनुकाजकरिअरु रोस  
बोलेचितै परसुकी ओरा \* रेमठसुनेहि सुभाउन मोरा  
बालकबोलि बधौं नहिंताही \* केवलमुनिजटजानाहिमोही  
बालब्रह्मचारी अति कोही \* बिम्बाविदितछत्रियकुलद्रोही  
भुजबलभूमिभूपविनुकीन्ही \* विपुलवारमाहि देवन्हदीन्ही  
सहसबाहु भुज छेदन हारा \* परसुबिलोकुमहीप कुमारा  
दो० मातुपितहि जनिमोचवस, करमि महीप किमोर ।

गर्भनके अर्भकदलन, परसुमोर अति घोर २७२ ॥

बिहंसिलषन बोलेमृदु बानी \* अहोमुनीममहामट मानी  
पुनिपुनिमोहिदेखावकुठारू \* चहत उडावनफ्रकि पहारू  
इहाँकुम्हडवातिआकाउनाहीं \* जेतरजनी देखिमरि जाहीं  
दोष कुठार सरासन बाना \* मेंकछुकहामहितअभिमाना  
भृगुकुलसमुझिजनेउविलोकी \* जोकछुकहहुसह उरिसरोकी  
सुरमाहिसुरहरिजनअरु गाई \* हमरेकुल इन्हपर न सुराई  
बधेपाप अपकीरति - हारे \* मारतहू पाँपरिअ तुम्हारे  
कोटिकुलिससमबचनतुम्हारा \* व्यर्थधरहु धनुवान कुठारा  
दो० जोबिलोकि अनुचितकैहेउँ, छमहुमहामुनिधीर ।

सुनिसरोष भृगुवंसमानि, बोले गिरागंभीर २७३ ॥

कौसिकसुनहुमंदयह बालक \* कुटिलकालवसनिजकुलघालक



भानुबस राकेस कलंकू ❖ निपटनिरंकुसअबुधअसंकू  
कालकवलहोइहि छनमाही ❖ कहोंपुकारिषोरिमोहिनाहीं  
तुम्हहटकहु जोचहहु उवारा ❖ कहिप्रताप बलरोष हमारा  
लषनकहेउमुनिसुजस तुम्हारा ❖ तुम्हहिअछतकोबरनै पारा  
अपनेमुखतुम्हआपनिकरनी ❖ बारअनेक भाँतिबहु बरनी  
नहिंसंतोषतौपुनिकछुकहहु ❖ जनिरिसरोकिदुसह दुषसहहु  
बीरव्रती तुम्हधीर अछोभा ❖ गारी देत न पावहु सोभा  
दो० मूरसमरकरनीकरहिं, कहिनजनावहिं आप ॥

विद्यामानरनपाइरिपु, कायरकथाहिं प्रलाप २७४ ॥  
तुम्हतौ कालहाँकजनुलावा ❖ बारबारमोहिलागि बोलावा  
सुनतलषन के बचनकठोरा ❖ परसु सुधारिधरयो करघोरा  
अब जानिदेइदोषमोहिलोगू ❖ कटुबादी बालक बधजोगू  
बाल बिलोकिबहुत में बाँचा ❖ अब यहमरनिहारभा साँचा  
कौसिककहाछामिअअपराधू ❖ बालदोषगुन गनहिन साधू  
करकुठार में अकरन कोही ❖ आगे अपराधी गुरु द्रोही  
उतर देत छाडों बिनु मारें ❖ केवलकौसिक सील तुम्हारें  
नतएंहिकाटि कुठारकठोरे ❖ गुरहिउरिन होतेउँ समथोरे  
दो० गाधिसूनुकहहृदयहँसि, मुनिहिहरिअरेइमूझ ॥

अयमयषाँडनऊषमय, अजहुँनबूझअबूझ २७५ ॥  
कहेउलषनमुनिसीलतुम्हारा ❖ कोनहिजान बिदित संसारा  
माताहिपिताहिउरिनभयनीके ❖ गुरुरिनरहा सोच बडजीके  
सो जनुहमराहि माथें काढा ❖ दिनचलिगएब्याजबडबाढा  
अवआनियब्यौहरिआबोली ❖ तुरत देउँ में थैली खाली



सुनिकटुवचनकुठारसुधारा \* हायहायमव मभा पुकारा  
 भृगुवर परसु देपावहु मोही \* विप्र विचारिवचोन्टप द्रोही  
 मिलेन कबहुसुभटरन गाढे \* द्विज देवता घरहिं के बाढे  
 अनुचितकहिसवलोगपुकारे \* रघुपतिमयनहिलपन नेवारे  
 दो० लषनउतरआहुतिमरिम, भृगुवरकोप कृमानु ।

बढतदेखिजलममवचन, बोलेरघुकुलभानु २७६ ॥

नाथ करहु बालकपर छोहू \* मूधदूध मुप करियनकोहू  
 जोपै प्रभुप्रभाउ कछुजाना \* तोकिवरावरि करहु अयाना  
 जौलरिकाकिछु अचगरिकरही \* गुरुपितुमातुमोदमन भरही  
 करिअकृपासिसुसेवकजानी \* तुम्हमममीलधीरमुनिज्ञानी  
 रामवचनसुनिकछुकजुटाने \* कहिक डुलपनबहुरिसुमुकाने  
 हंसतदेखिनपासिषिरिमव्यापी \* राम तोर भ्राता बडपापी  
 गौर सरीर स्याम मनमाही \* कालकूटमुखपयमुख नाही  
 सहज टेढ अनुहरै न तोही \* नीचमीचमम देखन मोही  
 दो० लखनकहेउहंसिसुनुहुमुनि, क्रोधपापकरमूल ॥

जेहिवसजनअनुचितकरहिं, होहिंविस्वप्रतिकूल २७७

मैंतुम्हार अनुचर सुनिराया \* परिहरिकोपकरिअअवदाया  
 दूटचापनहिंजुरिहि रिसाने \* बैठिअहोइहहिं पाय पिराने  
 जौअतिप्रियतौकरिअउपाई \* जोरिअकोउबडगुनीबुलई  
 बोलतलषनहिजनक डेराही \* मष्टकरहुअनुचितभलनाही  
 थरथर काँपहिं पुरनर नारी \* छोटकुमारखोटअति भारी  
 रघुपतिसुनिसुनिनिरभयवानी \* रिसतन जरैहोइ बलहानी  
 बोले रामहि देइ निहोरा \* वचौं विचारि बंधुलबु तोरा

मन मलीन तन सुंदर कैसे ✽ विपरसभरा कनकघट जैसे  
दो० सुनिलछिमनविहँसेवहुरि, नयनतरेरेराम ।

गुरुसमीपगवनेसकुचि, परिहरिवानीवाम ॥ २७८ ॥  
अतिविनीतमृदुसीतलवानी ✽ बोले रामजोरि जुगपानी  
सुनहुनाथतुम्हसहजसुजाना ✽ बालकवचनकरियनहिंकाना  
बररै बालक एक सुभाऊ ✽ इन्हहिनबिदुषबिदूषहिंकाऊ  
तेहिनाहीं कछुकाजविगारा ✽ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा  
कृपाकोप बधबंध गोसाईं ✽ मोपर करिअ दासकी नाई  
कहिअवेगिजेहिविधिरिसजाई ✽ मुनिनायकसोइकरउँउपाई  
कहमुनि रामजाइ रिसकैसें ✽ अजहुँअनुजतवचितवअनैसैं  
एहिकें कंठ कुठारन दीन्हा ✽ तौ मैंकाहकोप करिकीन्हा  
दो० गर्भस्रवाहिं अवनिपरवनि, सुनिकुठार गतिघोर ।

परसु अछतदेषौंजियत बैरीभूष किसोर ॥ २७९ ॥  
बहैनहाथ दहै रिसछाता ✽ भाकुठार कुंठित नृपघाती  
भयेउबामविधिफिरेउसुभाऊ ✽ मोरेहृदय कृपा कसि काऊ  
आज दयादुष दुसहसहावा ✽ सुनिसोमित्रिविहंसिसिरनावा  
बाउकृपा मूरति अनुकूला ✽ बोलतवचन झरत जनुफूला  
जोपैकृपा जरहिं मुनिगाता ✽ क्रोधभयें तनराख विधाता  
देखुजनक हाठि बालक एहू ✽ कीन्ह चहत जटजमपुरगेह  
बेगिकरहुकिनआषिन्हओटा ✽ देखत छोट खोट नृपढोटा  
विहँसेलपन कहामुनिपार्हीं ✽ मूढ़ेंआखिकतहुं कोउ नाहीं  
दो० परसुराम तब रामप्रति, बोलेउरअतिक्रोध ।

संभुसरासन तोरिसठ, करसिहमार प्रबोध २८० ॥

बंधु कहै कटु संमत तोरें \* तूछल विनयकरसिकरजोरें  
 करु परितोष मोर संग्रामा \* नाहितछाडु कहा उबरामा  
 छलतजिकरहिसमरशिवद्रोही \* बंधुमहित नत मारें तोही  
 भृगुपतिबकहिं कुठारउठाए \* मनमुमुकाहिराम मिरनाए  
 गुनह लषनकर हमपररोषू \* कतहुं सुधाइहुते बडदोषू  
 टेढ जानि संका सबकाहू \* बक्रचंद्रमहि ग्रसे न राहू  
 रामकहेउरिसताजिअमुनीसा \* करकुठार आगेएहि सीसा  
 जेहिरिसजाइकरिअसोइस्वामी \* मोहिजानिअआपनअनुगामी  
 दो० प्रभुहिसेवकहि समरकस, तजहु विप्रवररोम ।

वेषबिलोकेकहेसिकछु, बालकहंनहिंदोस ॥ २८१ ॥

देखिकुठार बानधनु धारी \* भइलरिकहिरिमवीरविचारी  
 नामजानपै तुम्हहिनचीन्हा \* वमसुभाय उतरतेहिदीन्हा  
 जौतुम्हऔतेहु सुनिकी नाई \* पदरजसिरमिमृधरतगोसाई  
 छमहुचूक अनजानत केरी \* चाहियविप्र उर कृपा घनेरी  
 हमहितुम्हहिसरवरिकसिनाथा \* कहहुनकहां चरनकहंमाथा  
 राम मात्र लघु नाम हमारा \* परसुमहितवडनामतुम्हारा  
 देव एक गुन धनुष हमारे \* नवगुन परमपुनीत तुम्हारे  
 सबप्रकार हम तुम्हसन हारे \* छमहु विप्र अपराध हमारे  
 दो० बारबारमुनि विप्रवर, कहा रामसन राम ।

बोले भृगुपति सरूप हसि, तहूं बंधुसमवाम २८२ ॥

निपटहिद्विजकरिजानहिमोही \* मैं जस विप्र सुनावों तोही  
 चापशुवासर आहुति जानू \* कोपमोर अति घोरकृसानू  
 समिधिसेन चतुरंग सुहाई \* महामहीप भएपसु आई



मैंएहिपरसुकाटिबालि दीन्हे ✽ समरजग्यजगकोटिन्ह कीन्हे  
मोरप्रभाउ विदितनहिंतोरे ✽ बोलसिनिदरिबिप्रकें भोरे  
भंजेउ चाप दाप बडबाढा ✽ अहमितिमनहुजीतिजगगढा  
रामकहासुनि कहहु विचारी ✽ रिसअतिबाडिलयुचूकहमारी  
छुअतहिट्टपिनाक पुराना ✽ मैं केहिहेतु करौं अभिमाना  
दो० जौंहमनिदरहिंबिप्रबदि, सत्य सुनहुभृगुनाथ ।

तौअसकोजगसुभटजोहि, भयवसनावहिंमाथ २८३  
देवदनुजभूपति भट नाना ✽ समबलअधिकहोउबलवाना  
जौ रन हमहि पचारै कोऊ ✽ लरहिंसुखेनकाल किनहोऊ  
छत्रियतनधरिसमर सकाना ✽ कुलकलंक तोहिपाँवरआना  
कहौंसुभाउनकुलहि प्रसंसी ✽ कालहु डरहिं न रनरघुवंसी  
बिप्र बंसकै असि प्रभुताई ✽ अभयहोइजौं तुम्हाहिडेराई  
सुनिमृदुगूढबचन रघुपतिके ✽ उघरेपटलपरसुधर मतिके  
राम रमापति करधनु लेहू ✽ खेंचहु मितै मोर संदेहू  
देतचाप आपुहिचढिगयऊ ✽ परसराममनाविसमय भयऊ  
दो० जानारामप्रभाउतव, पुलकप्रफुल्लितगात ।

जोरिपानिबोलेबचन, हृदयन प्रेम अमात ॥२८४॥  
जय रघुवंस बनजवनभानू ✽ गहनदनुजकुलदहन कृसानू  
जयसुर बिप्र धेनु हितकारी ✽ जयमदमोहकोहभ्रम हारी  
बिनयसीलकरुनागुनसागर ✽ जयतिबचनरचनाअतिनागर  
सेवकसुषदसुभग सब अंगा ✽ जयसरीरछबिकोटिअनंगा  
करौं काह मुखएक प्रसंसा ✽ जयमहेस मनमानस हंसा  
अनुचितबहुतकहेउँअज्ञाता ✽ छमहुछमामंदिर दोउभ्राता



कहिजयजयजयरघुकुलकेतू \* भृगुपतिगये वनहितप हेतू  
अपभय कुटिलमही पटेराने \* जहं तहं कायर गवहिपराने  
दो० देवन्हदीन्हीदुंदुभी, प्रभुपरवरपहिंफूल ।

हरपपुरनरनारि मव, मिटीमोहमयमूल ॥ २८५ ॥

अति गह गहे वाजने वाज \* मवहिमनोहरमंगल साजे  
जूथजूथमिलिसुमुपि सुनयनी \* करहिंगानकलकोकिलयनी  
सुखविदेह करवरानि नजाई \* जन्म दरिद्रमनहु निधिपाई  
विगतत्रासभइ सीय सुपारी \* जनुविधु उदयचकोरकुमारी  
जनककीन्हकोसिकहिप्रनामा \* प्रभुप्रमाद धनुभंजउरामा  
मोहिकृतकृत्यकीन्हदुहुंभाई \* अवजो उचित मोकहिअगोसाई  
कहसुनि सुनुनरनाथप्रवीना \* रहा विवाह चाप आधीना  
टूटतही धनु भयउ विवाह \* मुरनरनाग विदितमवकाह  
दो० तदपि जाइतुम्हकरहुअव, जथा वंमव्यवहार ।

बूझि विप्रकुल वृद्धगुरु, वेदविदित आचार ॥ २८६ ॥

दूत अवधपुर पठवहु जाह \* आनहिंनृपदमरथहिवोलाई  
मुदितराउकहिभलेहिअपाला \* पठए दूतबोलि तेहि काल  
बहुरिमहाजनसकलबोलाए \* आइसवन्हिमादरसिर नाए  
हाट बाट मंदिर मुर वामा \* नगर सवारहु चारिहु पासा  
हरषिचलेनिजनिजगृहआए \* पुनिपरिचारक बोलिपठाए  
रचहु विचित्र वितानवनाई \* सिर धरिवचनचले सचुपाई  
पठए बोलिशुनीतिन्ह नाना \* जेवितानाविधिकुसलसुजाना  
विधिहिवांदितिन्हकीन्हअरंभा \* बिरचेकनक केदलिके पंभा  
दो० हरित मानिन्हके पत्रफल, पदुमराग के फूल ।

रचना देखिविचित्र अति, मनाविरंचिकरभूल २८७

वेनुहरित मनिमयसबकीन्हे ✽ सरलसपरनपरहिंनहिचीन्हे  
कनककलितअहिवेलिवनाई ✽ लखिनहि परइ सपरन सुहाई  
तेहिके रचिपचिवंध बनाए ✽ विचविच मुक्तादामसुहाए  
मानिकमरकत कुलिसपिरोजा ✽ चीरिकोरि पचिरचे सरोजा  
किए भृंगबहुरंग बिहंगा ✽ गुंजहिकूंजहिं पवन प्रसंगा  
सुरप्रतिमापंभन्हिगठिकाठीं ✽ मंगल द्रव्य लिए सब ठाठीं  
चौकैं भाँति अनेक पुराई ✽ सिंधुरमनिमय सहज सुहाई  
दो० सौरभ पल्लव सुभग सुठि, किए नीलमनिकोरि ॥

हेमबौरिमरकत घवरि, लसाति पाटमयडोरि २८८ ॥  
रचे रुचिर बर बंदनिवारे ✽ मनहु मनौभव फंद सँवारे  
मंगल कलस अनेक बनाए ✽ ध्वजपताक पटचमरसुहाए  
दीप मनोहर मनिमयनाना ✽ जाइनबरनिबिचित्रविताना  
जेहि मंडप दुलहिनि वैदेही ✽ सोबरनै असिमतिकविकेही  
दूलह राम रूप गुन सागर ✽ सोवितानतिहुँलोकउजागर  
जनकभवन कइसोभाजैसी ✽ गृहगृह प्रतिपुर देषिअतैसी  
जेहितेरहुतितेहिसमयनिहारी ✽ तेहिलघुलाग भुवनदसचारी  
जो संपदा नीच गृह सोहा ✽ सोबिलोकिसुरनायकमोहा  
दो० बसैनगर जेहिलछिकरि, कपटनारिवरवेष मा० पा० ८

तोहि पुरकैं सोभाकहत, सकुचहिं सारदसेष २८९ ॥  
पहुँचे दूत राम पुर पावन ✽ हरपे नगर विलोकिसुहावन  
भूपद्वार तिन्हषवरि जनाई ✽ दसरथनृपसुनिलिए बोलाई  
करिप्रनामतिन्हपातीदीन्ही ✽ मुदितमहीपआपउठितीन्ही  
बारि विलोचन बांचतपाती ✽ पुलकगात आई भरि छाती

रामलषन उरकर वर चीठी \* रहिगए कहतन पाटीमीठी  
 पुनिधरि धीर पत्रिका बांची \* हरषी मभा बातमुनि सांची  
 षेलत रहे तहाँ सुधि पाई \* आएभगत महितहित भाई  
 पूछतअति सनेह सकुचाई \* तात कहाँ ते पाती आई  
 दो० कुसल प्रान प्रियबंधुदोउ, अहहिंकहहु केहिदेस ॥

मुनिसनेहसानेवचन, बांचीबहुरि नरेम ॥ २९० ॥

मुनिपाती पुलकेदोउ भ्राता \* अधिकमनेहममातनगाता  
 प्रीति पुनीत भरत के देपी \* सकलमभासुपल्हे उबिसेपी  
 तब नृप दूत निकट बैठारे \* मधुर मनोहर वचन उचारे  
 भैआकहहु कुसल दोउवारे \* तुम्हनीके निजनयननिहारे  
 स्यामलगौर धरें धनुभाथा \* वयकिमोरकोमिकमुनिसाथा  
 पहिचानहुतुम्हकहहुमुभाऊ \* प्रेमविवमपुनिपुनि कहराऊ  
 जादिनते मुनि गए लिवाई \* तबते आजु माँचि सुधिपाई  
 कहहुबिदेहकवनिविधिजाने \* मुनिप्रियवचनदूत सुसुकाने  
 दो० सुनहुमहीपतिमुकुटमनि, तुम्हममधन्यनकोउ ॥

रामलषन जाकेतनय, विस्वविभूषनदोउ ॥ २९१ ॥

पूछन जोग न तनय तुम्हारे \* पुरुषसिंह तिहुँपुर उंजिआरे  
 जिन्हके जस प्रतापके आगे \* ससिमलीनरविसीतल लागे  
 तिन्हकहँकहियनाथकिमिचोन्दे \* देपिअरविकि दीपकरलीन्दे  
 सीय स्वयंबर भूप अनेका \* समिटे सुभट एकते एका  
 संभु सरासन काहुन टारा \* हारे सकल वीर बरिआरा  
 तीनिलोकमहँजे भट मानी \* सबकेसकति संभुधनुभानी  
 सकइ उठाइ सरासुर मेरु \* सोउहियहारिगएउकरिफेरु



जेहिकौतुक सिवसैलउठावा ✽ सोउतेहिसभापराभउपावा  
दो० तहाँरामरघुवंसमनि, सुनिअ महामहिपाल ॥

भंजेउचापप्रयासविनु, जिमिगजपंकजनाल २९२ ॥  
सुनिसरोष भृगुनायकआए ✽ बहुतभांतिनिन्हआँषिदेषाए  
देखिरामवलनिजधनुदीन्हा ✽ करिवहुविनयगवनवनकीन्हा  
राजन राम अतुलबल जैसे ✽ तेजनिधान लषन पुनितैसे  
कंपहिभूप विलोकत जाकें ✽ जिमिगजहरिकिसोरकेंताकें  
देवदेषि तव बालकं दोऊ ✽ अवनआँषितरआवतकोऊ  
दूतवचन रचनाप्रिय लागी ✽ प्रेम प्रताप वीररस पागी  
सभो समेत राउ अनुरागे ✽ दूतन देन निछावरि लागे  
कहि अनीतितेमूदहिं काना ✽ धरमविचारिसबहिंसुखमाना  
दो० तवउठिभूपवासिष्टकहँ, दीन्हपत्रिकाजाइ ॥

कथासुनाईगुरुहिसब, सादरदूतबोलाइ ॥ २९३  
सुनिबोले गुरुअति सुखपाई ✽ पुन्यपुरुषकहँ महिसुखछाई  
जिमिसरितासागरमहँजाहीं ✽ जद्यपि ताहि कामनानाहीं  
तिमिसुखसंपतिविनाहिबोलाए ✽ धरमसीलपहिं जाहिंसुभाए  
तुम्ह गुरु विप्रधेनु सुरसेवी ✽ तसिपुनीत कौसल्या देवी  
सुकृतीतुम्हसमानजगमाहीं ✽ भयउनहै कोउहोनेउनाहीं  
तुम्हतेअधिकपुन्यबडकाके ✽ राजन राम सरिससुतजाके  
वीर विनीत धरम ब्रतधारी ✽ गुनसागर बरबालक चारी  
तुम्हकहँ सर्वकालकल्याना ✽ सजहुवरात बजाइ निसाना  
दो० चलहु बेगिसुनि गुरुवचन, भलेहिनाथ सिरनाइ ।  
भूपतिगवने भवन तव, दूतन्ह वास देवाइ २९४ ॥



राजा सब रनिवाम बोलाई \* जनक पत्रिका वाचिमुनाई  
 सुनि संदेश सकल हरपानी \* अपरकथा सब भूपवपानी  
 प्रेम प्रफुलित राजहिरानी \* मनहुमिपिनिमुनिवारिद्वानी  
 मुदित असीम देहिगुनारी \* अतिआनंद मगनमहतारी  
 लैहिंपरस्पर अतिप्रियपाती \* हृदयलगाइ जुडावहिंछाती  
 राम लषनकै कीरति करनी \* बारहिं बार भूपवर बरनी  
 मुनि प्रसादकहि द्वारसिधाए \* रानिन्ह तव महिदेव बुलाए  
 दिए दान आनंद समेता \* चले विप्रवर आमिष देता  
 सो० जाचकलिए हंकारि, दीन्हनिछावरि कौटिविधि ॥

चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्तिदमग्यके २९५ ॥

कहत चले पहिरे पटनाना \* हरपि हने गहगहे निसाना  
 समाचार सब लोगन्हपाए \* लागे घर घर होन बधाए  
 भुअनचारि दसभरा उछाहू \* जनकभृतारघुवीर बिआहू  
 सुनिसुभकथालोग अनुरागे \* मगगृहगन्त्री मंवारन लागे  
 जद्यपिअवध सदैवसुहावनि \* रामपुरी मंगलमय पावनि  
 तदपि प्रीतिकै रीति सुहाई \* मंगल रचना रची बनाई  
 ध्वज पताक पटचामरचारु \* छावा परम विचित्र बजारु  
 कनककलसतोरनमानिजाता \* हरददूब दधिअच्छतमाला  
 दो० मंगलमय निज निज भवन, लोगन्ह रचवनाइ ॥

बीथीसीची चतुरसम, चौकेचारु पुराइ ॥ २९६ ॥

जहँतहँजूथजूथमिलिभामिनि \* सजिनवसप्तसकलदुतिदामिनि  
 विधुबदनीमृगसावकलोचनि \* निजसरूपरतिमान बिमोचनि  
 गावहिं मंगल मंजुल बानी \* सुनिकलरवकलकंठिलजानी

भूपभवन किमि जाइवषाना \* विस्त्रविमोहनरचेउविताना  
मंगल द्रव्य मनोहर नाना \* राजतवाजतविपुलनिसाना  
कतहुँ विरद वंदी उच्चरहीं \* कतहुँवेदधुनि भूसुर करहीं  
गावहिं सुंदरि मंगल गीता \* लैलैनाम राम अरु सीता  
बहुत उछाहभवनअतिथोरा \* मानहुउमगिचलाचहुँओरा  
दो० सोभादसरथ भवन कइ, को कविवरने पार ॥

जहाँसकलसुरसीसमानि, रामलीन्हअवतार २९७ ॥

भूपभरत पुनि लिए बोलाई \* हयगयस्यंदन साजहु जाई  
चलहु वेगि रघुवीर बराता \* सुनतपुलक पूरेदोउ भ्राता  
भरत सकल साहनीबोलाए \* आएसुदीन्हमुदितउठिधाए  
रचिरुचिजीनतुरगतिन्हसाजे \* वरनवरन वर बाजि विराजे  
सुभगसकलसुठिचंचलकरनी \* अयइवजरतधरतपग धरनी  
नाना जाति न जाहिं वषाने \* निदरिपवनजनुचहतउडाने  
तिन्हसबछयलभएअसवारा \* भरतसरिससब राजकुमारा  
सब सुंदर सब भूषन धारी \* करसर चापतून कटिभारी  
दो० छरेछबीले छेल सब, मूर सुजान नवीन ॥

जुगपदचरअसवारप्राति, जेअसिकलाप्रवीन २९८ ॥

बाँधे विरद वीर रन गाढे \* निकसिभये पुरवाहेर ठाढे  
फेरहिंचतुर तुरगगति नाना \* हरषाहिसुनिधुनिपनवनिसाना  
रथ सारथिन्ह विचित्रवनाए \* ध्वजपताकमानिभूषन लाए  
चँवरचारुकिंकिनिधुनिकरहीं \* भानु जान सोभाअपहरहीं  
सावकरन अगनित हयहोते \* तेतिन्हरथन्हसारथिन्हजोते  
सुंदर सकल अलंकृत सोहे \* जिन्हहिं विलोकतमुनिमनमोहे

जे जलचलहिंथलहि कीनाई \* टापन बूट वेग अधिकाई  
अस्र सस्र सबसाज बनाई \* रथीमारथिन्ह लिए बालाई  
दो० चढि चढि रथवाहेर नगर, लागी जुरन बरात ॥

होतसगुन सुंदर मवाहि, जोजेहि कारज जात २९९ ॥  
कलितकरिवरन्हिपरीअंवारी \* कहिन जाइजेहिभांतिअंवारी  
चले मत्त गज घंट विराजी \* मनहुसुभगमावनघन राजी  
वाहनअपर अनेक विधाना \* मिविकामुभगमुपामनजाना  
तिन्ह चढिचले विप्रवरवृंदा \* जनुतनधरें मकलश्रुति छंदा  
मागध मूत बंदि गुनगायक \* चलेजानचढिजो जेहिलायक  
वेसर ऊटवृषभ बहु जाती \* चलेवस्तुभारिअगानित भांती  
कोटिन्हकांवारिचले कंहारा \* विविधि वस्तुको वरनैपारा  
चले सकल सेवक समुदाई \* निजनिजमाजममाजबनाई  
दो० सबके उर निर्भर हरप, पुरितपुलकमरीर ।

कबहिंदेपिवेनयनभरि, रामलपन दो उबीर ३०० ॥  
गरजहिं गज घंटा धुनिघोरा \* रथरववाजिहिमहिंचहुंओरा  
निदरिघनहिघुम्मरहिंनिसाना \* निजपराइकछुमुनिअनकाना  
महा भीर भूपाति कें द्वारे \* रजहोइ जाइ पषान पवारे  
चढी अटारिन्ह देपहिंनारी \* लिए आरती मंगल थारी  
गावहिं गीत मनोहर नाना \* अति आनंद न जाइ बषाना  
तब सुमंत्र दुइस्यंदन साजी \* जोते रविहय निंदक वाजी  
दोउरथरुचिर भूपपहिं आने \* नहिंसारदपहिं जाहिंबषाने  
राज समाज एक रथसाजा \* दूसर तेज पुंज अति भ्राजा  
दो० तेहिरथ रुचिर बसिष्टकह, हराषि चढाइ नरेस ।

आपचढेउ स्यंदन सुमिरि, हरगुरु गौरिगनेस ३०० ।

सहितवसिष्ठ सोहनृप कैसें ✽ सुरगुर संग पुरंदर जैसें  
करिकुलरीतिवेद विधिराऊ ✽ देखिसबहिंसबभातिबनाऊ  
सुमिरि रामगुर आयसुपाई ✽ चले महीपति संख बजाई  
हरषे विबुध बिलोकिवराता ✽ वरषहिं सुमन सुमंग दाता  
भयेउ कोलाहलहय गयगाजे ✽ ब्यौम वरात वाजने बाजे  
सुरनर नारि सुमंगल गाई ✽ सरसराग बाजहिं सहनाई  
घंटघंटिधुनि वरनिनजाहीं ✽ सरवकरहिं पाइक फहराहीं  
करहिं विदूषककौतुकनाना ✽ हासकुसलकलगान सुजाना  
दो० तुरगनचावहिं कुअरवर, अकनिमृदंगनिसान

नागरनटचितवहिं चकित, डगहिंनतालबंधान ३०२  
बनैनवरनत बनी वराता ✽ होहिं सगुन सुंदर सुभदाता  
चाराचाषु वामदिसि लेई ✽ मनहुसकलमंगल कहि देई  
दाहिन कागसुषेत सुहावा ✽ नकुल दरस सवकाहू पावा  
सानकूलवह त्रिविधिवयारी ✽ सघटसवाल आवर नारी  
लोआफिरिफिरिदरसदेषावा ✽ सुरभी सनमुष सिसुहिपियावा  
मृगमालाफिरिदाहिनिआई ✽ मंगलगन जनुदीन्हि देषाई  
छेमकरी कहछेम विसेखी ✽ स्यामावाम सुतरु परदेखी  
सनमुखआएउदाधि अरुमीना ✽ करपुस्तक दुइ विप्र प्रवीना  
दो० मंगलमय कल्याणमय, अभिमति फलदातार ॥

जनुसब साँचे होनाहित, भएसगुन एकवार ३२३ ॥  
मंगलसगुन सुगम सबताके ✽ सगुन ब्रह्मसुंदर सुत जाके  
रामसरिसबरदुलाहिनि सीता ✽ समधी दसरथजनकपुनीता  
सुनिअसब्याहसगुन सबनाचे ✽ अबकीन्हें विरंचि हमसाँचे



एहिविधिकीन्हवरात प्याना ॥ हयगय गाजहिहने निमाना  
 आवत जानि भानुकुल केतू ॥ मरितन्ह जनक बंधाएसेतू  
 बीचबीच वरवाम बनाए ॥ मुरपुर मरिम मंपदा छाए  
 असनसयनवर वसनमुहाए ॥ पावहिंमवानिजनिजमनभाए  
 नितनूतन सुपलपि अनु कूले ॥ मकळ वरातिन्ह मंदिर भूले  
 दो० आवत जानि वरातवर, मुनि गहगहं निसान ॥

सजिगजरथपदचरतुरग, लेनचले अगवान ३०४ ॥

कनककलमकलकोपरथारा ॥ भाजनललित अनेकप्रकारा  
 भरेसुधा समसव पकवाने ॥ भांतिभांति नहिंजाहिंबखाने  
 फलअनेक वरवस्तु मुहाई ॥ हरपिभेंट हित भूप पठाई  
 भूषन वसनमहामनि नाना ॥ पगमृगहयगयबहुविधिजाना  
 मंगलसगुन सुगंध मुहाये ॥ बहुतभांति महिपाल पठाए  
 दधिचिउरा उपहार अपारा ॥ भरिभरिकावरि चलेकहारा  
 अगवानन्ह जबदेखिवराता ॥ उरआनंद पुलक भरेगाता  
 देख बनावसहित अगवाना ॥ मुदित वरातीहने निसाना  
 दो० हरपि परमपर मिलनहित, कलुकचले बगमेल् ॥

जनुआनंद ममुद्र दोइ मिलत विहाइ सुबेल् ३०५  
 वरषिसुमनसुरसुंदरि गावहिं ॥ मुदितदेव हुंहुभी बजावहिं  
 वस्तुसकल राषी नृप आगे ॥ विनय कीन्हतिन्ह अतिअनुरागे  
 प्रेमसमेत रायसब लीन्हा ॥ भैवकसीम जाचकन्हिदीन्हा  
 करिपूजा मान्यता बड़ाई ॥ जनवासे कहं चले लवाई  
 वसन बिचित्रपाँवडे परहीं ॥ देखिधनदधनमद परिहरहीं  
 अतिसुंदरदीन्हेउ जनवासा ॥ जहंसबकहंसबभांतिमुपासा

जानीसिय बरात पुरआई \* कछुनिजमहिमाप्रगाटिजनाई  
हृदयसुमिरिसवासिद्धिबोलाई \* भूप पहुनई करन पठाई

दो० सिधिसव सिय आयसु अकनि, गई जहाँ जनवास ।

लिएसंपदा सकल सुख, सुरपुर भोग विलास ३०६

निज २ वासविलोकिवराती \* सुरसुषसकलसुलभसब भांती  
विभवभेदकछुकोउनजाना \* सकलजनककरकरहिंबषाना  
सियमहिमारघुनायकजानी \* हरषे हृदय हेतु पहिचानी  
पितुआगवनसुनतदोउभाई \* हृदयन अतिआनंद अमाई  
सकुचन्हकहिनसकतगुरगारी \* पितुदरसनलालचमनमाहीं  
विस्वामित्र विनय बडिदेषी \* उपजाउर संतोष विसेषी  
हरषिवंधु दोउहृदय लगाए \* पुलक अंग अंवक जलछाए  
चले जहाँ दसरथ जनवासे \* मनहुसरोवरतकेउ पिआसे

दो० भूप विलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन्ह समेत ॥

उठेहरषिसुखसिंधुमहं, चलै थाह सी लेत ॥ ३०७ ॥

मुनिहिदंडवतकीन्हमहीसा \* बारबार पदरज धरि सीसा  
कौसिकराउ लिये उरलाई \* कहिअसीस पूछी कुसलाई  
पुनि दंडवत करत दोउभाई \* देखिनृपतिउरसुखनसमाई  
सुतहिय लाइ दुसह दुखमेंटे \* मृतक सरीर प्रानजनु भेंटे  
पुनिवसिष्टपदसिरतिन्हनाए \* प्रेममुदित मुनिवर उरलाए  
विप्र बृंद बन्दे दुहं भाई \* मन भावती असीसैं पाई  
भरतसहानुज कीन्हप्रनामा \* लिये उठाइ लाइ उररामा  
हरषे लषन देखि दोउ भ्राता \* मिले प्रेम परिपूरित गाता

दो० पुरजन परिजन जाति जन, जाचक मंत्री मीत ॥

मिलेजथाविधिमवाहिप्रभु, परमकृपालविनीत ३०८॥  
 रामहिदेखि वरात जुड़ानी \* प्रीतिकिरीतिनजातिग्वानी  
 नृपसमीप सोहहिं सुतचारी \* जनुधनधरमादिकतनुधारी  
 सुतन्हसमेत दसरथहि देखी \* सुदितनगरनन्नागिविमेखी  
 सुमनवरसिसुरहनहिंनिमाना \* नाकनटीनाचहिं करिगाना  
 सतानंदअसुविप्र मचिवगन \* मागधमूत विदुष बंदीजन  
 सहित वरातराउ मनमाना \* आयमुमांगिफिरे अगवाना  
 प्रथम वरात लगनतें आई \* तातेपुर प्रमोद अधिकआई  
 ब्रह्मानंद लोगमव लहहीं \* बटहुदिवमनिमिविधिमनरुहहीं

दो० रामसीय मोभा अवधि, सुकृत अवधि दो उगज ॥

जहंतहंपुरजनकहहिंअम, मिलिनरनारिममाज ३०९  
 जनक सुकृत मूरति बैदेही \* दसरथसुकृत रामधरे देही  
 इन्हसमकाहुनसिवअवराधे \* काहुंनइन्हममान फल्लाधे  
 इन्हसमकोउनभएउजगमाहीं \* हे नहिकतहूं होनेउ नाही  
 हमसवसकल सुकृतके रामी \* भएजगजनमिजनकपुरवासी  
 जिन्हजानकीरामलविदेखी \* कोसुकृतीहममारिमविमेखी  
 पुनि देखब रघुवीर विआहू \* लेव भलीविधि लोचनलाहू  
 कहहिंपरसपरकोकिलबयनी \* एहिंविवाहबडलाभमुनयनी  
 बडें भाग विधि बात बनाई \* नयनअतिथिहोइहहिंदोउभाई  
 दो० बारहिंबारसनेहबस, जनकबोलाउवसीय ॥

लेनआइहहिंबंधुदोउ, कोटिकामकमनीय ॥ ३१० ॥

विविधिभाति होइहिपहुनाई \* प्रियनकाहिअस सासुरमाई  
 तबतवराम लषनहि निहारी \* होइहहिंसबपुरलोग सुखारी



साखिजसरामलषनकरजोटा ✽ तेसेइ भूप संग दुइ ढोटा  
स्यामगौर सब अंग सुहाए ✽ तेसबकहहिं देखि जेआए  
कहा एक मै आज निहारे ✽ जनुबिरांचि निजहाथसँवारे  
भरत राम हीकी अनुहारी ✽ सहसालखिनसकहिंनरनारी  
लषन सत्रसूदन एक रूपा ✽ नखसिखेत सबअंग अनूपा  
मनभावहिंमुखवरनिनजाहीं ✽ उपमाकहंत्रिभुअनकोउनाही

छं० उपमानकोउकहदासतुलसी कतहुँकविकोविदकहै ॥

वलविनयविद्या सीलसोभा सिंधुइन्हसमएइ अहै ॥

पुरनारिसकलपसारिअचलविधिहिवचनसुनावहीं ॥

ब्याहिअहुचारिउ भाइ एहिपुरहम सुमंगलगावहीं ॥

सो० कहहिंपरसपरनारि, बारिविलोचनपुलकतन ॥

साखिसबकरवपुरारि, पुन्यपयोनिधिभूप दोउ ३११

एहिंविधिसकलमनोरथकरहीं ✽ आनंदउमगिउमगिउरभरहीं  
जेनृपसीय स्वयंबर आए ✽ देखिवंधुसब तिन्हसुखपाए  
कहतारामजसबिसदविसाला ✽ निजनिज गेहगयेमहिपाला  
गएवीतिकछुदिनएहिभाँती ✽ प्रसुदितपुरजनसकलबराती  
मंगल मूललगनदिन आवा ✽ हिमरितुअगहनमाससुहावा  
ग्रहतिथिनखतजोगवरवारू ✽ लगनसोधिबिधिकीन्हविचारू  
पैठे दीन्हनारद सन सोई ✽ गनीजनककेगनकन्ह जोई  
सुनीसकललोगन्हयह वाता ✽ कहहिंजोतिषीअपरविधाता  
दो० धेनुधरि बेला विमल, सकल सुमंगल मूल ॥

विप्रन्ह कहेउ विदेहसन, जानिसगुन अनुकूल ३१२  
उपरोहितहि कहेउनरनाहा ✽ अबविलंबकरकारन काहा



सतानंद तव सचिव बोलाए \* मंगलमकलमाजिमवल्याए  
 संख निमान पनवबहु बाजे \* मंगलकलममगुन सुभमाजे  
 सुभगसुआमिनिगावहिं गीता \* कर्गहिं वेदधुनिविप्र पुनीता  
 लेनचले सादर एहि भांती \* गणजहां जनवाम बराती  
 कोसलपति करदोखिममाजू \* अतिलुगुलागतिन्हहि पुराजू  
 भएउसमउअवधारिअपाऊ \* यहमुनिपरानिमानन्हिघाऊ  
 गुरहिपुल्लिकरिकुलविधिराजा \* चलेमंगमुनि माधुममाजा  
 दो० भाग्य विभवअवधेमकर, देग्विदेवब्रह्मादि ॥

लगेसराहनमहममुग्ध, जानिजनमनिजवादि ३१३

सुरन्हसुमंगलअवमर जाना \* वरपहिंसुमनवजाइनिमाना  
 सिवब्रह्मादिक विबुध बरूथा \* चढे विमानन्हि नानाजूथा  
 प्रेमपुलक तन हृदय उल्लाहू \* चले विलोकन गमविआहू  
 देखिजनक पुरसुर अनुरागे \* निजनिजलोकमवहिनधुलागे  
 चितवहिंचकितविचित्राविताना \* रचनामकलअलौकिकनाना  
 नगरनारि नर रूप निधाना \* सुघरसुधरमसुमील सुजाना  
 तिन्हहिं देषिसवसुरसुरनारी \* भएनपतजनुविधु उजियारी  
 विधिहिभएउआचरजविमेषी \* निजकरनीकडुकतहुनदेषी  
 दो० सिव समुझाए देवसव, जानि आचरज भुलाहु ॥

हृदय विचारहु धीरधरि, सियरघुबीर विआहु ३१४

जिन्हकर नामलेतजगमाहीं \* सकल अमंगलमूल नसाहीं  
 करतल होहिंपदारथ चारी \* तेइ सियराम कहे उकामारी  
 एहिबिधिसमुसुरन्हसमुभावा \* पुनिआगे बरवसह चलावा  
 देवन्ह देषे दसरथ जाता \* महामोद मनपुलकितगाता

साधु समाज संगमहिं देवा \* जनुतन धरे करहिं सुरसेवा  
सोहत साथ सुभगसुतचारी \* जनुअपवरगसकलतनधारी  
मरकतकनक वरनवरजोरी \* देषिसुरन्ह भै प्रीति नथोरी  
पुनिरामहिविलोकिहियहरषे \* नृपहिसराहिसुमनतिन्हवरषे  
दो० रामरूप नषसिष सुभग, वारहि वार निहारि ॥

पुलकगात लोचनसजल, उमासमेतपुरारि ३१५ ॥

कोकिकंठ दुतिस्यामल अंगा \* ताडितविनिंदकवसनसुरंगा  
ब्याहविभूपनविविधिवनाए \* मंगल मयसबभाँति सुहाए  
सरदविमलबिधुवदनसुहावन \* नयननवलराजी बलजावन  
सकलअलौकिक सुन्दरताई \* कहिनजाइ मनहींमनभाई  
बन्धु मनोहर सोहहिं संगी \* जात नचावत चपल तुरंगा  
राजकुँअर वरवाजिनचावहिं \* वंसप्रसंसक विरद मुनावहिं  
जेहि तुरगपर राम विराजे \* गतिविलोकिषगनायकलाजे  
कहिनजाइसबभाँतिसुहावा \* वाजिवेषजनु काम वनावा

छं० जनुवाजिवेषवनाइमनासिजरामहितअतिसोहई ॥

आपनेवयवलरूपगुनगति सकल भुअनविमोहई ॥

जगमगतजीनजरावजोतिसुमोतिमनिमानिकलगे ॥

किंकिनिललामलगामललितविलोकिपुरनरमुनिठगे ॥

दा० प्रभुमनसहिल्यलीनमन, चलतचाल छविपाव ।

भूषितउडगनतडितघन, जनुवरवरहि नचाव ३१६

जेहिवरवाजि राम असवारा \* तेहिसारदउ न वरनै पारा  
संकर राम रूप अनुरागे \* नयनपंचदस आतिप्रियलागे  
हरिहितसहितरामजव जोहे \* रमा समेत रमापति मोहे

निरखिरामछविबिधिहरपाने\* आठैनयनजानि पछिताने  
 मुरसेनप उरबहुत उछाहू\* विधिते देव सुलोचन लाहू  
 रामहि चितवमुरेस मुजाना\* गौतमसापपरमहित माना  
 देवसकलमुर पतिहिसिहाही\* आजपुरंदर समको उनाही  
 मुदित देवगन रामहिं देषी\* नृपसमाज दुहुहरप विसेषी  
 छं० अतिहरप राजसमाज दुहुदिसिदुहुभीवाजहिंघनी ॥  
 वरषहिंसुमनमुरहरषिकहिजयजयतिजयरबुकुलमनी  
 एहिभांति जानिबरात आवत वाजने बहुवाजहीं ॥  
 १ रानीसुआसिनि बोलि परिछनि हेतमंगल साजहीं ॥  
 दो० सजि आरती अनेक विधि, मंगल सकल सवारि ॥  
 चलींमुदितपरिछनिकरन, गजगामिनिवरनारि ३१७  
 विधुबदनीसवसवमृग लोचनि\* सवनिजतनबिरतिमदमोचनि  
 पहिरे वरन वरन वरचीरा\* सकल विधूपन सजेसरीरा  
 सकल सुमंगल अंग बनाए\* करहिंगानकल कंठिलजाए  
 कंकनकिंकिनि नूपरवाजहिं\* चालविलोकिकामग जला जहिं  
 वाजहिंवाजनविविधिप्रकारा\* नभअरुनगर सुमंगलचारा  
 सची सारदा रमा भवानी\* जेसुरतियसुचिसहजसयानी  
 कपट नारि वरवेष बनाई\* मिलींसकलरानिवासाहिआई  
 करहिं गानकल मंगलबानी\* हरषबिबससबकाहुनजानी  
 छं० कोजानकेहि आनन्दवससबब्रह्मवर परिछनचली ।  
 कलगानमधुरनिसान वरषहिं सुमन मुरसोभाभली ॥  
 आनंद कंदविलोकि दूलह सकल हिय हरपितभई ॥  
 अंभोज अंबक अंबुउमगि सुअंगपुलकावलछई ॥

दो० जो सुखभासियमातुमन, देखिराम वरवेष ॥

सोनसकहिकहिकलपसत, सहससारदासेष ३१८ ॥

नयन नीरहठिमंगल जानी \* परिछनिकरहिं मुदितमनरानी  
वेदविहितअरुकुल आचारू \* कीन्हभली विधि सब व्यवहारू  
पंच सवदधुनि मंगल गाना \* पटपाँवडे परहिं विधिनाना  
करिआरतीअरघतिन्हरीन्हा \* रामगवन मंडपतव कीन्हा  
दसरथसाहितसमाज विराजे \* विभव बिलोकि लोकपतिलाजे  
समयसमयसुर वरषहिंफूला \* सांतिपढहिं महिसुर अनुकूला  
नभअरुनगर कोलाहलहोई \* आपनिपर कछुसुनइनकोई  
एहिंविधिराममंडपहि आए \* अरघ देइ आसन बैठाए

छं० बैठारिआसनआरतीकरिनिरषिवरमुषपावहीं ॥

मनिवसनभूषनभूरिवारहिंनारिमंगलगावहीं ॥

ब्रह्मादिसुरवर विप्रवेषवनाइ कौतुक देखहीं ॥

अवलोकिरधुकुलकमलरविछविसुफलजीवन लेखहीं ॥

दो० नाऊवारी भाटनट, राम निछावरि पाइ ॥

मुदितअसीसाहिंनाइसिर, हरषनहृदयसमाइ ॥ ३१९ ॥

मिलेजनकदसरथअति प्रीती \* करिवैदिक लौकिक सबरीती  
मिलतमहादोउ राजविराजे \* उपमाखोजिखोजि कविलाजे  
लहीनकतहुँहारि हियमानी \* इन्हसमएइउपमाउरआनी  
साँमध देषिदेव अनुरागे \* सुमनवरषिजस गावनलागे  
जगाविरंचि उपजावा जबतें \* देखेसुने ब्याह बहु तबतें  
सकलभांति सबसाजसमाजू \* सम समधी देषे हम आजू  
देवगिरा सुनि सुंदर साँची \* प्रीति अलौकिकदुहुँदिसिमाची



देत पाँवडे अरघ सुहाये \* सादरजनक मंडपहिल्याए  
छं० मंडप बिलोकिविचित्र रचनारुचिरता मुनिमनहरे ।

निजपानि जनकसुजान सबकहँ आनि मिहासनधरे ॥

कुलइष्ट सरिस बसिष्टपूजे विनयकरि आमिषलही ।

कौसिकहि पूजत परमप्रीति कि रीति तौनपरैकही ॥

दो० वामदेव आदिक रिषय, पूजेमुदित महीस ॥

दियोदिव्यआसन सबहि, सबसनलही असीस ३२० ॥

बहुरिकीन्हकोसलपतिपूजा \* जानिईससम भाउ न दूजा

कीन्ह जोरिकरविनयबड़ाई \* कहिनिजभाग्य विभवबहुताई

पूजे भूपति सकल बराती \* समधीसमसादर सब भाँती

आसन उचितदिए सबकाहू \* कहों कहामुष एकउछाहू

सकल बरात जनक सनमानी \* दानमान विनती वरबानी

विधिहरिहरदिसिपतिदिनराऊ \* जेजानहिं रघुवीर प्रभाऊ

कपट विप्र वरवेष बनाएँ \* कौतुक देषहिं अतिसचुपाएँ

पूजे जनक देव सम जाने \* दिएसुआसनबितु पहिचाने

छं० पहिचानको केहिजानसबहि अपानसुधिभारीभई ॥

आनंदकंदबिलोकिदूलह उभयदिसिआनंदमई ॥

सुरलखे रामसुजानपूजे मानसिकआसन दए ॥

अवलोकिसीलसुभाउप्रभुकोविबुधमनप्रमुदित भए ॥

दो० रामचंद्रमुषचंद्र छवि, लोचनचारु चकोर ।

करतपानसादरसकल, प्रेमप्रमोद न थोर ॥

समउबिलोकिवसिष्टबोलाये \* सादर सतानंद मुनिआए

बोगिकुअँरिअवआनहु जाई \* चले मुदितमुनिआयसुपाई

रानी सुनि उपरोहित बानी \* प्रमुदितसखिन्हसमेतमयानी  
विप्र वधूकुल वृद्ध बोलार्दै \* करिकुल रीति सुमंगलगार्दै  
नारि वेष जे सुर वरवामा \* सकल सुभाय सुंदरी स्यामा  
तिन्हहिंदेखिसुखपावहिं भारी \* विनुपहिचानिप्रानते प्यारी  
बार बार मनमानहिं रानी \* उमारमा सारद सम जानी  
सीय सँवारि समाज बनाई \* मुदित मंडपहि चलीलवाई  
छं० चलिल्यायसीताहिसपीसादरसाजिसुमंगलभामिनी ॥  
नवसप्तसाजेंसुंदरीसबमत्तकुंजरगामिनी ॥

कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिकामकोकिललाजहीं ॥  
मंजीरनूपुरकलितकंकनतालगातिबरवाजहीं ॥  
दो० सोहतवनिता वृंदमहं, सहजसुहावनिसीय ॥

छबिललनागनमध्यजनु, सुखमातियकमनीय ॥३२२॥  
सिय सुंदरता वरनि न आई \* लघुमति बहुत मनोहरताई  
आवत दीषिवरातिन्हसीता \* रूपरासिसब भाँति पुनीता  
सबहिंमनहिंमनकिणप्रनामा \* देषिराम भए पूरन कामा  
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता \* कहिनजाइउर आनंदजेता  
सुरप्रनामकरिवारिसहिं फूला \* मुनिअसीसधुनिमंगलमूला  
गाननिसानकोलाहल भारी \* प्रेम प्रमोद मगन नरनारी  
एहिविधिसीयमंडपहि आई \* प्रमुदितसांतिपढाहिमुनिराई  
तेहिअवँसरकरविधिव्यवहारु \* दुहुँकुलगुरुसबकीन्हअचारु

छं० आचारकरिगुरुगौरिगनपातिसुदिताविप्रपुजावहीं ॥  
सुरप्रगटिपूजालेहिंदेहिं असीसअतिसुषपावहीं ॥  
मधुपर्कमंगलद्रव्यजोजेहिसमयमुनिमनमहँचहैं ॥

भरेकनककोपरकलससोतवल्लिएपरिचारकरहें ॥  
 कुलरीतिप्रीतिसमेतरविकहिदेतसबसादरकिए ॥  
 एहिभाँतिदेवपुजाइसीताहिसुभगसिंघासनदिए ॥  
 सियरामअवलोकनिपरसपरप्रेमकाहुनलपिपरै ॥  
 मनबुद्धिवरवानी अगोचरप्रगटकविकैसैंकरै ॥

दो० होमसमयतनधरिअनल, अतिसुखआहुतिलेहिं ॥  
 विप्रवेषधरिवेदसब, कहिविवाहविधिदेहिं ३२३ ॥

जनकपाटमहिषीजगजानी \* सीयमातुकिमिजाइवखानी  
 सुजससुकृत सुष सुंदरताई \* सबसमेटि विधिरची बनाई  
 समउजानिसुनिवरन्हबोलाई \* सुनतसुआसिनिसादरल्याई  
 जनकवामादिसिसोह पुनयना \* हिमगिरिसंगवनीजनुमयना  
 कनककलसमनि कोपररुरे \* सुचि सुगंध मंगळ जलपूरे  
 निजकरसुदितरायअरुनी \* धरे रामके आगे आनी  
 पढहिंबेद सुनि मंगलवानी \* गगनसुमनझरिअवसरजानी  
 बरबिलोकि दंपति अनुरागे \* पायपुनीत पषारन लागे  
 छं० लागेपषारनपायपंकजप्रेमतनपुलकावली ॥

नभनगरगाननिसानजयधुनिउमागिजनुचहुँदिशिचली  
 जेपदसरोजुमनोजअरि उरसरसदैवविराजहीं ॥  
 जेसुकृतसुमिरतविमलतामनसकलकलिमलभाजहीं ॥  
 जेपरसिसुनिबनितालहीगातिरहीजोपातक मई ॥  
 मकरंदजिन्हकोसंभुसिरसुचिताअवाधिसुरवरनई ॥  
 करिमधुपमनसुनिजोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहैं ॥  
 तेपदपषारतभाग्यभाजनजनकजयजयसबकहैं ॥

बरकुँअरिकरतलजोरिसापोच्चारदोउकुलगुरुकरैं ॥  
 भयोपानिगहनविलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनंदभरैं  
 सुषमूलदलहदेखिदंपतिपुलकतनहुलस्योहियो ॥  
 करिलोकवेदविधानकन्यादाननृपभूषनकियो ॥  
 हिमवंत जिमिगिरिजा महेसहि हरिहि श्रीसागरदर्ई ॥  
 तिमिजनक रामहिंसियसमर्पीविस्वकलकीरतिनई ॥  
 क्योंकरैविनय विदेह कियोविदेह मूरति साँवरी ॥  
 करि होम विधिवतगाँठि जोरीहोन लागी भाँवरी ॥  
 दो० जयधुनिबंदीवेदधुनि, मंगलगाननिसान ॥  
 मुनिहरषहिंवरषहिंविबुध, सुरतरुसुमनसुजान ३२४॥

कुँअरिकुँअरकलभाँवरिदेहीं ✽ नयन लाभ सब सादरलेहीं  
 जाइ न वरनिमनोहर जोरी ✽ जोउपमाकहुकहोंसो थोरी  
 राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं ✽ जगमगातिमानिखंभन्हमाहीं  
 मनहुमदनरति धरि बहुरूपा ✽ देखत राम विवाह अनूपा  
 दरस लालसा सकुचन थोरी ✽ प्रगटत दुरत बहोरिबहोरी  
 भए मगन सब देखिनिहारे ✽ जनकसमानअपान विसारे  
 प्रसुदित मुनिन्हभाँवरीफेरी ✽ नेगसाहितसब रीति निवेरी  
 राम सीय सिरसैदुर देहीं ✽ सोभाकहिनजातिविधिकेहीं  
 अरुनपराग जलजभरिनीके ✽ ससिहिभूषअहिलोभअमीके  
 बहुरिबसिष्टदीन्हअनुसासन ✽ वरदुलहिनबैठे एक आसन

छं० बैठेबरासनरामजानकिमुदितमनदसरथभए ॥  
 तनपुलकपुनिपुनिदेखिअपनेसुकृतसुरतरुफलनए ॥  
 भरिभुअनरहाउछाहरामविवाहभासबहीकहा ॥



केहिभाँतिवरनिसिरातरसनाएकयहमंगलमहा ॥  
 तबजनकपाइवसिष्टआयमुव्याहसाजमंवारिकै ॥  
 मांडवीश्रुतिकीरतिउमैलाकुंअरिलईहंकारिकै ॥  
 कुसकेतुकन्या प्रथमजोगुनसीलमुखसोभामई ॥  
 सबरीतिप्रीतिसमेतकरिसोव्याहिनृपभरतहिदई ॥  
 जानकीलयुभगिनीसकलसुंदरिसिरोमनिजानिकै ॥  
 सोजनकदीन्हीव्याहिलषनहिसकलविधिमनमानिकै  
 जेहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुषिमवगुन आगरी  
 सोदई रिपुसूदनहिं भूपतिरूप सील उजागरी ॥  
 अनुरूपवरदुलहिनिपरसपरलपिसकुचिहियहरपहीं ॥  
 सबसुदित सुंदरतासराहहिं सुमन सुरगन बरपहीं ॥  
 सुंदरी सुंदर बरन्हसह सबएक मंडप राजहीं ॥  
 जनुजीवउरचारिउअवस्थाविभुन सहितविराजहीं ॥

दो० सुदितअवधपतिसकलसुत, वधुन्हसमेतनिहारिषा प०

जनुपाएमहिपालमनि, क्यनसहितफलचारि ३२५॥

जसिरघुबीरव्याहविधिवरनी \* सकलकुंअरव्याहेतोहिकरनी  
 कहिनजाइ कछुदाइज घूरी \* रहा कनकमनि मंडप घूरी  
 कंवल बसन विचित्र पटोरे \* भाँति भाँति बहुमोलनथोरे  
 गजरथतुरंग दासअरुदासीं \* धेनुअलंकृत काम दुहासीं  
 वस्तुअनेककरिअकिमिलेषा \* कहिनजाइजानहिंजिन्हदेषा  
 लोकपाल अवलोकिसिहाने \* लीन्हअवधपतिसबसुषमाने  
 दीन्हजाचकन्हिजाजोहिभावा \* उबरा सो जनवासाहि आवा  
 तबकरजोरिजनकमृदुबानी \* बोलेसब बरात सनमानी

छे० सनमानि सकलवरात आदरदानविनयवडाइके ॥  
 प्रसादित महामुनि वृंद वंदे पूजि प्रेम लडाइ के ॥  
 सिरनाइ देवमनाइ सबसन कहतकरसंपुटकिणैं ॥  
 मुरसाधुचाहतभाउसिंधुकि तोपजलअंजलिदिणैं ॥  
 करजोरि जनक बहोरिविंधुसमेत कोसलरायसो ॥  
 बोलेमनोहर वयन सानिसनेह सील सुभायसो ॥  
 संवंधराजन रावरैं हमबडे अब सबाविधि भए ॥  
 येहिराज साजसमेत सेवक जानिवोविनुगथलए ॥  
 एदारिका परिचारिका करि पालिबी करुनामई ॥  
 अपराध छमिवो बोलि पठएबहुत हौं ठीठयोदई ॥  
 पुनिभानुकुलपूषनसकल सनमानविधिसमधीकिए ॥  
 कहिजातिनहिं विनतीपरस्पर प्रेमपरिपूरनहिण ॥  
 वृंदारकागनसुमन वारिसहिं राउ जनवासे चले ॥  
 दुंदुभीजय धुनिवेद धुनि नभ नगर कौतूहलभले ॥  
 तबसखीं मंगलगान करत मुनीस आयसु पाइके ॥  
 दूलहदुलहिनिन्ह सहितसुंदरिचलीं कोहवरल्याइके ॥  
 दो० पुनिपुनि रामहिचितवासिय, सकुचातिमनसकुचैन ॥  
 हरत मनोहर मीनछवि, प्रेम पियासे नैन ३२६ ॥

स्यामसरीर सुभाय सुहावन \* सोभाकोटिमनोजलजावन  
 जाविके जुतपदकमल सुहाए \* मुनिमनमधुपरहतजिन्हझाए  
 पीत पुनीत मनोहर धोती \* हरतिवालरविदामिनिजोती  
 कलकिंकिनिकटिसूत्रमनोहर \* बाहुविसाल विभूषन सुन्दर  
 पीत जनेउ महा छवि देई \* करमुद्रिका चोरि चितलेई

सोहत व्याह साजसब साजे \* उर आयत उर भूषन राजे  
 पिअर उपरना काँषा सोती \* दुहुँ आचरन्हिलगेमनिमोती  
 नयनकमलकलकुंडलकाना \* बदनसकलसौंदर्ज निधाना  
 सुंदर भृकुटि मनोहर नासा \* भालतिलकरुचिरतानिवासा  
 सोहत मोर मनोहर माथें \* मंगल मयमुकुतामनिगार्थें  
 छं० गार्थें महामनि मोरमंजुल अंग सब चित चोरहीं ॥

पुरनारि सुरसुंदरी बरन्ह विलोकिसवतिनतोरहीं ॥  
 मनिबसन भूषनवारिआरति करहिंमंगलगावहीं ॥  
 सुरसुमनवरिसहिं सूतमागधवंदि सुजसमुनावहीं ॥  
 कोहबरहिआनेकुँअरकुँअरिसुआसिनिन्हमुपपाइकै ॥  
 अतिप्रीति लौकिक रीतिलार्गीकरनमंगलगाइकै ॥  
 लहकौरि गौरिसिषाव रामहि सीय सनसारदकहैं ॥  
 रनिवासहास बिलाससबस जन्मकोफलमवलहैं ॥  
 निजपानिमनिमहँदेषि प्रतिमूरति सरूपनिधानकी ॥  
 चालतिनभुजबल्ली बिलोकनिविरहभयवसजानकी ॥  
 कौतुकविनोदप्रमोदप्रेमनजाइकहि जानहिंअली ॥  
 वरकुँअरिसुंदरसकलसपीलवाइजनवासे चली ॥  
 तेहिसमयसुनिअअसीसजहँतहँनगरनभआनंदमहा ॥  
 चिरजिअहुजोरीचारुचारयौमुदितमनसबहींकहा ॥  
 जोगींद्रसिद्धमुनीसदेव विलोकिप्रभु दुंदुभि हनी ॥  
 चलेहरषिवरषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी ॥

दो० सहितवधूटिन्हकुँअरसब, तबआएपितुपास ॥

सोभामंगलमोदभरि, उमगेउजनुजनवास ॥ ३२७॥

पुनि जेवनार भई बहुभाँती ✽ पठए जनक बोलाइ बराती  
 परतपाँवडे बसन अनूपा ✽ सुतनसमेत गवनकियोभूपा  
 सादर सबके पाँय परवारे ✽ जथाजोग पीठन बैठारे  
 धोएजनक अवधपतिचरना ✽ सीलसनेह जाइनहिं बरना  
 बहुरि रामपद पंकज धोए ✽ जे हर हृदय कमल महँगोए  
 तीनिउ भाइ रामसमजानी ✽ धोएचरनजनक निजपानी  
 आसनउचितसबहिनृपदीन्हे ✽ बोलिसूपकारक सबलीन्हे  
 सादर लगे परन पनवारे ✽ कनककील मनिपानसँवारे  
 दो० मूपोदन सुरभी सरपि, सुंदर स्वाद पुनीत ॥

छनमहँसबके परसिगे, चतुरसुआर विनीत ३२८ ॥

पंच कवलिकरि जेवन लागे ✽ गारिगानसुनिआतिअनुरागे  
 भाँतिअनेक परे पकवाने ✽ सुधासरिसनहिंजाहिंबखाने  
 परसन लगे सुआर सुजाना ✽ बिंजनविविधनामकोजाना  
 चारिभाँति भोजनविधिगार्ई ✽ एकएकविधिवरानि नजाई  
 छरसरुचिर बिंजन बहुजाती ✽ एकएकरस अगनितभाँती  
 जेवतदेहिं मधुरधुनि गारीं ✽ लैलैनाम पुरुष अरु नारीं  
 समयसुहावनिगारिविराजा ✽ हँसतराउसुनिसहितसमाजा  
 एहिविधिसबहींभोजनकीन्हा ✽ आदरसहितआचमनलीन्हा  
 दो० देइ पानपूजे जनक, दसरथ सहित समाज ॥

जनवासेहि गवने मुदित, सकलभूप सिरताज ३२९ ॥

नितनूतन मंगल पुरमाहीं ✽ निमिषिसरिसदिनजामिनिजाहीं  
 बडैभोर भूपाति मनिजागे ✽ जाचक गुनगनगावन लागे  
 दोषिकुँअर बरबधुन्ह समेता ✽ किमिकहिजातमोदमन जेता



प्रातकृया करिगे गुरु पाहीं \* महाप्रमोद प्रेम मनमाहीं  
 करि प्रनाम पूजा कर जोरी \* बोले गिराअमिअ जनुबोरी  
 तुम्हरीकृपासुनहु मुनिराजा \* भएउँआज मैं पूरन काजा  
 अबसब विप्रबोलाइ गोसाँई \* देहुधेनु सब भाँति बनाई  
 सुनिगुरुकरिमहिपालबडाई \* पुनिपठए मुनिचंद बोलाई  
 दो० वामदेउअरुदेवारिषि, वालमीकिजावाल्लि ॥

आएमुनिवरनिकरतव, कौसिकादितपसाल्लि ३३० ॥

दंडप्रनाम सबहि नृपकीन्हें \* पूजिसप्रेम बरासन दीन्हें  
 चारिलच्छ वरधेनु मगाई \* कामसुरभिसम सीलसुहाई  
 सर्वाविधिसकलअलंकृतकीन्ही \* मुदितमाहिप महिदेवन्ह दीन्ही  
 करतविनयबहुविधिनरनाहू \* लहेउँ आजजगजीवन लाहू  
 पाइ असीस महीस अनंदा \* लिएबोलिपुनिजाचक चंदा  
 कनकवसनमनिहयगयस्यंदन \* दियेबूझिरुचिरविकुल नंदन  
 चलेपढत गावत गुन गाथा \* जयजयजयदिनकरकुलनाथा  
 एहिविधिरामविवाहउछाहू \* सकैन वरनि सहस मुखजाहू  
 दो० बारबारकौसिकचरन, सीसनाइ कहराउ ।

यहसबसुखमुनिराजतव, कृपाकटाच्छ प्रभाउ ३३१॥

जनक सनेह सील करतूती \* नृप सब राति सराहत बीती  
 दिनउठिबिदाअवधपतिमागा \* राषहिंजनकसाहितअनुरागा  
 नितनूतन आदर अधिकाई \* दिनप्रतिसहसभाँतिपहुनाई  
 नितनवनगर अनंद उछाहू \* दसरथगवन सोहाइनकाहू  
 बहुत दिवस बीतेएहि भाँती \* जनुसनेह रजु बंधे बराती  
 कौसिक सतानंद तब जाई \* कहाबिदेह नृपहि समुझाई

अब दसरथ कहँ आयसुदेहू ✽ जद्यपिछाडि न सकहुसनेहू  
भलेहिनाथकहिसचिवबोलाए ✽ कहिजयजीवसीसतिन्हनाए  
दो० अवध नाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाउ ।

भएप्रेमवस सचिव सुनि, विप्रसभासदराउ ३३२ ॥

पुरवासी सुनिचलिहिवराता ✽ बूझत विकलपरस पर बाता  
सत्यगवनसुनि सबबिलषाने ✽ मनहुसाँझसरसिजसकुचाने  
जहँजहँ आवत बसे बराती ✽ तहँतहँ सिद्धचला बहुभाँती  
बिबिधिभाँतिमेवापकवाना ✽ भोजनसाज नजाइ बखाना  
भरिभरिवसहअपार कहारा ✽ पठए जनक अनेक सुआरा  
तुरग लाखरथ सहसपचीसा ✽ सकलसँवारै नष अरु सीसा  
मत्त सहसदससिंधुर साजे ✽ जिन्हहिदेखिदिसिकुंजरलाजे  
कनकबसनमनिभरिरजाना ✽ महिषीधेनु वस्तुबिधिनाना  
दो० दाइज अमिति नसकिअ कहि, दीन्हविदेहँबहोरि ॥

जोअवलोकतलोकपति, लोकसंपदाथोरि ३३३ ॥

सबसमाज एहिभाँतिबनाई ✽ जनक अवधपुर दीन्हपठाई  
चलीवरात सुनत सब रानी ✽ विकलमीनगनजनुलघुपानी  
पुनिपुनिसीय गोदकरिलेहीं ✽ देइअसीस सिखावन देहीं  
होएहु संततपिअहिपियारी ✽ चिरअहिवात असीसहमारी  
सासु ससुर गुरुसेवा करेहू ✽ पतिरुषलषिआयसुअनुसरेहू  
अतिसनेहवस सखीसयानी ✽ नारिधरमसिषवहिंमृदुबानी  
सादरसकलकुँअरि समुझाई ✽ रानिन्ह बार बार उरलाई  
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी ✽ कहहिंविरंचिरचीं कतनारी

दो० तेहिअवसर भाइन्हसहित, राम भानु कुलकेतु ।

चलेजनक मंदिरमुदित, विदाकरावनहेतु ॥ ३३४ ॥

चारिउ भायसुभाय सुहाए \* नगर नारिनर देखन धाये  
कोउकहचलनचहतहहिंआजू \* कीन्हविदेह विदाकर साजू  
लेहु नयन भरि रूपनिहारी \* प्रिय पाहुने भूपसुत चारी  
कोजानै केहिसुकृत सयानी \* नयनअतिथिकीन्हैविधिआनी  
मरनसील जिमि पाव पिगूषा \* सुरतरु लहै जनमकर भृषा  
पाव नारकी हरिपद जैसें \* इन्हकरदरसनहमकहैं तैसें  
निरखि रामसोभा उर धरहू \* निजमनफनिमूरातिमानिकरहू  
येहिबिधिसंबाहिनयनरुलदेता \* गएकुँवर सब राज निकैता  
दो० रूपसिंधु सब बंधुलषि, हरषि उठैउ रनिवासु ॥

करहिनिछावरिआरती, महामुदित मनसासु ३३५ ॥

देखिरामछाँविअतिअनुरागी \* प्रेमबिबसपुनिपुनिपदलागी  
रही न लाज प्रीति उर छाई \* सहजसनेहबरनिकिमिजाई  
भाइन्हसहितउवाटिअन्हवाए \* छरसअसनअतिहेत जेवाए  
बोले राम सुअवसर जानी \* सीलसनेह सकुचमय बानी  
राव अवधपुर चहत सिधाए \* विदाहोन हम इहाँ पठाए  
मातु मुदित मन आयसुदेहू \* बालकजानि करब नितनेहू  
सुनतबचनविलषेउरनिवासू \* बोलिन सकहिंप्रेमबस सासू  
हृदयलगाइकुँअरिसबलीन्ही \* पतिन्हसौंपिबिनतीअतिकीन्ही

छं० करिविनयसियरामहिंसमरपीजोरिकरपुनिपुनिकहै ॥

बलिजाउतातसुजानतुम्हकहैंबिदितगतिसबकीअहै ॥

परिवारपुरजनमोहिराजहिप्रानप्रियसियजानिवी ॥

तुलसीसुसीलसनेहलषिनिजकिंकरीकरिमानवी ॥

सो० तुम्हपरि पूरन काम, जानसिरोमनि भावप्रिय ॥

जनगुनगाहकराम, दोषदलनकरुनायतन ॥ ३३६ ॥

असकहिरहीचरन गहिरानी ✽ प्रेमपंकजनु गिरा समानी  
सुनि सनेह सानी बरवानी ✽ बहुविधिरामसासुसनमानी  
रामविदा माँगा करजोरी ✽ कीन्हप्रनाम बहोरि बहोरी  
पाइ असीस बहुरि सिरनाई ✽ भाइन्ह सहित चलेरचुराई  
मंजुमधुर मूरति उर आनी ✽ भईसनेह सिथिल सबरानी  
पुनिधीरजधारिकुँअरिहँकारी ✽ वारवार भेंटहिं महँतारी  
पहुचावहिंफिरिमिलहिंबहोरी ✽ बढीपरसपर प्रीतिन थोरी  
पुनिपुनिमिलतसखिनबिलगाई ✽ वालवच्छ जिमिधेनु ल्वाई  
दो० प्रेम विवसनरनारिसब, सखिन्ह सहित रनिवास ॥

मानहुकीन्हविदेहपुर, करुनाविरहानिवास ३३७ ॥

सुकसारिका जानकी ज्याए ✽ कनकपिंजरन्हिराखिपढाए  
ब्याकुल कहहिं कहाँबैदेही ✽ सुनिधीरज परिहरैन केही  
भएविकलषगमृगएहिभाँती ✽ मनुजदसा कैसे कहिजाती  
बंधुसमेत जनक तब आए ✽ प्रेमउमगि लोचन जलछाए  
सीयविलोकि धीरता भागी ✽ रहे कहावत परम विरागी  
लीन्हिरायउर लाइ जानकी ✽ मिटीमहामरजाद ज्ञानकी  
समुझावतसबसचिव सयाने ✽ कीन्हविचार अनवसरजाने  
वारहिं वार सुता उर लाई ✽ सजिसुन्दर पालकी मगाई  
दो० प्रेमविवस परिवारसब, जानिसुलगन नरेस ॥

कुँअरि चढाई पालकिन्ह, सुमिरेसिद्धगनेस ३३८ ॥

बहुविधि भूपसुता समुझाई ✽ नारिधरम कुलरीति सिषाई



दासी दास दिए बहुतेरे \* सुचिसवकजे प्रिय सिय केरे  
 सीयचलतव्याकुल पुरवासी \* होहिं सगुनसुभ भंगलरासी  
 भूसुरसचिव समेत समाजा \* संगचले पहुँचावन राजा  
 समय बिलोकिवाजने बाजे \* रथगजवाजिवरातिन्हसाजे  
 दसरथ विप्र बोलिसव लीन्हे \* दानमान परिपूरन कीन्हे  
 चरनसरोज धूरिधरि सीसा \* मुदितमहीपतिपाइअसीसा  
 सुमिरिगजाननकीन्हपयाना \* मंगलमूल सगुन भय नाना  
 दो० सुरप्रसून बरषहिं हरषि, करहिं अपछरागान ।

चलेअवधपति अवधपुर, मुदितबजाइ निसान ३३९ ॥

नृपकरि विनय महाजनफेरे \* सादर सकल मांगने टेरे  
 भूषनबसन बाजिगज दीन्हे \* प्रेमपोषि ठाढे सब कीन्हे  
 बारबार बिरदावलि भाषी \* फिरेसकल रामहि उरराषी  
 बहुरिबहुरिकोसलपतिकहहीं \* जनक प्रेमवसफिरेंनचहहीं  
 पुनिकह भूपति बचनसुहाए \* फिरिअमहीसदूरिवाडिआए  
 राउबहोरि उतरि भएठाढे \* प्रेमप्रवाह बिलोचन बाढे  
 तबबिदेह बोले करजोरी \* बचन सनेह सुधाजनु बोरी  
 करौंकवनविधिबिनयबनाई \* महाराज मोहि दीन्हबडाई  
 दो० कोसलपतिसमधीसजन, सनमाने सबभाँति ।

मिलनिपरसपरबिनयअति, प्रातिनहृदयसमाति ३४० ॥

मुनिमंडलिहिजनकसिरनावा \* आसिरवादसबहि सनपावा  
 सादर पुनि भेंटे जामाता \* रूपसीलगुननिधिसबभ्राता  
 जोरि पंकरुहपानि सुहाए \* बोले बचन प्रेम जनु जाए  
 रामकरोँ केहिभाँति प्रसंसा \* मुनिमहेस मनमानस हंसा

करहिंजोगजोगी जेहिलागी ✽ कोह मोहममता मदत्यागी  
व्यापकब्रह्मअलषअविनासी ✽ चितानंद निरगुनगुनरासी  
मनसमेतजेहिजानन वानी ✽ तराकिनसकहिंसकलअनुमानी  
महिमानिगमनेतिकहिकहई ✽ जोतिहुंकाल एकरस अहई  
दो० नयनविषयमो कहँभयउ, सो समस्तसुषमूल ।

सबइसुलभजगजिवि कहँ, भएईसअनुकूल ॥ ३४१ ॥

सबहिभाँतिमोहि दीन्हिबडाई ✽ निजजनजानिलीन्ह अपनाई  
होहिं सहस दससारद सेवा ✽ करहिकल्पकोटिकभरिलेषा  
मोरभाग्यराउर गुन गाथा ✽ कहिनसिराहिंसुनहुरघुनाथा  
मैंकछुकहौं एकवल मोरे ✽ तुमरीशुह सनेह सुठि थोरे  
वारवार माँगौं करजोरे ✽ मनपरि हरै चरन जानिभोरे  
सुनिवर वचन प्रेमजनुपोषे ✽ पूरन काम राम परितोषे  
करिवराविनय ससुरसनमाने ✽ पितुकौसिकवासिष्टसमजाने  
विनतीबहुतभरतसनकीन्ही ✽ मिलिसप्रेमपुनिआसिषदीन्ही  
दो० मिलेलषन रिपुसूदनहि, दीन्हि असीसमहीस ।

भएपरस पर प्रेम वस, फिरिफिरि नावहिंसीस ३४२ ॥

वारवार करि विनय बडाई ✽ रघुपाति चले संगसब भाई  
जनकगहे कौसिक पदजाई ✽ चरनरेनुसिरनयनन्हि लाई  
सुनु मुनीसवर दरसन तोरें ✽ अगमनकछुप्रतीतमन मोरें  
जोसुखसुजसलोकपातिबहहीं ✽ करतमनोरथसकुचतअहहीं  
सोसुषसुजससुलभमोहिस्वामी ✽ सबसिधितवदरसनअनुगामी  
कीन्हविनयपुनिपुनिसिरनाई ✽ फिरेमहीस आसिषा पाई  
चली बरात निसान बजाई ✽ मुदितछोटबड सबसमुदाई

रामहिंनिरषि ग्रामनरनारी \* पाइनयनफल होहिं सुषारी  
दो० बीचबीच वरवासकरि, मगलोगन्हसुपदेत ।

अवधसमीप पुनीतदिन, पहुँचीआइजनेत ३४३ ॥

हने निसान पनव वरवाजे \* भेरिसंखधुनि हय गयगाजे  
झांझ वीन डिंडिमी सुहाई \* सरसराग बाजहिं सहनाई  
पुरजनआवतअकनिवराता \* मुदितसकलपुलकावालिगाता  
निजनिज सुंदर सदनसँवारे \* हाट बाट चौहट पुर द्वारे  
गलीं सकलअरगजा सिचाई \* जहँ तहँ चौके चारु पुराई  
बना बजार न जाइ बखाना \* तोरन केतुपताक बिताना  
सफलपुंगफल कदलिरसाला \* रोपे वकुल कदंब तमाला  
लगे सुभगतरु परसतधरनी \* मनिमयआलवालकलकरनी  
दो० विविधभाँति मंगलकलस, गृहगृह रचे सँवारि ।

सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघुवर पुरी निहारि ३४४ ॥

भूपभवन तेहि अवसरसोहा \* रचनादेखि मदन मनमोहा  
मंगल सगुन मनोहर ताई \* रिधिसिधिसुषसंपदा सुहाई  
जनु उछाहसबसहजसुहाए \* तनधारिधिरिदसरथ गृहछाए  
देखन हेतु राम बैदेही \* कहहु लालसा होइन केही  
जूथजूथमिलिचलींसुआसिनि \* निजछविनिदरहिंमदनबिलासिनि  
सकलसुमंगल सजे आरती \* गावहिं जनुबहु वेषभारती  
भूपति भवन कोलाहल होई \* जाइनवरानि समउसुखसोई  
कोसल्यादि राम महतारी \* प्रेमबिबसतनदसा विसारी  
दो० दियेदानविप्रन्हविपुल, पूजिगनेस पुरारि ।

प्रमुदितपरम दरिद्रजनु, पायपदारथचारि ३४५ ॥

प्रेम प्रमोदविवस सब माता ✽ चलहिंनचरनसिथिलभयेगाता  
 रामदरस हितअतिअनुरागीं ✽ परिछिनसाज सजन सब लागीं  
 विविध विधान बाजने बाजे ✽ मंगल मुदित सुमित्रा साजे  
 हरद दूबदधि पल्लवफूला ✽ पान पूंगफल मंगल मूला  
 अछत अंकुर रोचनलाजा ✽ मंजुलमंजरि तुलसिविराजा  
 छुहे पुरटघट सहज मुहाए ✽ मदनसकुन जनुनीड बनाए  
 सगुन सुगंधनजाहि बषानी ✽ मंगल सकलसजहिं सबरानी  
 रचीं आरतीं बहुतविधाना ✽ मुदितकरहिं कलमंगलगाना  
 दो० कनकथारभरि मंगलन्हि, कमलकरन्हिलियेंमातु ॥  
 चलींमुदितपरिछानिकरन, पुलकपल्लवितगातु ३४६॥

धूपधूमनभ मचक भएऊ ✽ सावनघनघमंड जनुठयऊ  
 सुरतरुसुमनमालसुरवरषहिं ✽ मनहुँबलाकअवलि मन करषहिं  
 मंजुल मानिमय वंदनि वारे ✽ मनहु पाकरिपुचाप सँवारे  
 प्रगटहिदुरहिंअटन्हिपरभामिनि ✽ चारुचपलजनुदमकर्हिंदामिनि  
 दुंदुभिधुनिघनगरजानिघोरा ✽ जाचकचातक दादुरमोरा  
 सुरसुगंध सुचि वरषहिंवारी ✽ सुखीसकलससि पुरनरनारी  
 समउजानिगुरुआयसु दीन्हा ✽ पुरप्रवेसरघुकुल मनिकीन्हा  
 सुमिरिसंभुगिरिजागनराजा ✽ मुदितमहीपतिसहितसमाजा  
 दो० होहिंसगुन वरषहिंसुमन, सुरदुंदुभी बजाइ ॥  
 विबुध बधूनाचहिं मुदित, मंजुल मंगलगाइ ॥ ३४७॥

मागध सूत बंदि नट नागर ✽ गावहिंजसातिहुँलोकउजागर  
 जयधुनिविमलवेद वरबानी ✽ दसदिसिसुनियसुमंगलसानी  
 विपुल बाजने बाजनलागे ✽ नभसुरनगर लोग अनुरागे



बने बराती बरनिन जाहीं \* महामुदितमनसुखनसमाहीं  
 पुरवासिन्ह तबराउ जोहारे \* देखत रामहिं भए सुखारे  
 करहिंनिछावरिमनिगनचोरी \* वारि बिलोचनपुलकसरीरा  
 आरतिकरहिंमुदितपुरनारी \* हरषहिंनिरखि कुँअरवरचारी  
 सिविकासुभगओहारउधारी \* देखिदुलहिनिन्हहोहिंसुपारी  
 दो० एहिबिधि सबहीदेत सुख, आए राज दुआर ॥

मुदितमातुपरिछनि करहिं, बधुन्हसमेतकुमार ३४८॥

करहिं आरती बारहिवारा \* प्रेम प्रमोद कहै को पारा  
 भूषन मनिपट नाना जाती \* करहिंनिछावरि अगनित भाँती  
 बधुनसमेत देखिसुतचारी \* परमानंद मगन महंतारी  
 पुनिपुनिसीय रामछविदेषी \* मुदितसफलजगजीवनलेशी  
 सषीसीयमुखपुनिपुनिचाहीं \* गानकरहिंनिजमुकृतसराहीं  
 बर्षहिं सुमनछनहिंछनदेवा \* नाचहिंगावहिं लावहिं सेवा  
 देषि मनोहर चारिउ जोरी \* सारद उपमा सकल ढँढोरी  
 देतनबनहिंनिपटलबुलागी \* एकटकरहीं रूप अनुरागी  
 दो० निगम नीति कुलरीति करि, अरघ पांवडे देत ॥

बधुनसहितसुतपरिछिसब, चलीलवाइ निकेत ३४९॥

चारिसिंहासन सहज मुहाए \* जनुमनोज निजहाथबनाए  
 तिन्हपरकुँअरि कुँअरबैठारे \* सादर पाय पुनीत पषारे  
 धूप दीप नैबेद बेद बिधि \* पूजेवरदुलहिनि मंगलनिधि  
 बारहि बार आरती करहीं \* व्यजनचारुचामरसिरदरहीं  
 बस्तु अनेक निछावरिहोहीं \* भरीप्रमोद मातुसब सोहीं  
 पावा परम तत्त्वजनु जोगी \* अमृतलहेउ जनुसंततरीगी

जनमरंकजनु पारस पावा ✽ अंधहिलोचन लाभसुहावा  
मूक वदन जनु सारद छाई ✽ मानहु समर सूर जय पाई  
दो० यहिसुखते सतकोटिगुन, पावहिं मातु अनंद ।

भाइन्हसहित बिआहिघर, आए रघुकुलचंद ॥

लोकरीति जननी करहिं, वरदुलहिनिसकुचाहिं ।

मोदबिनोदबिलोकिबड, राममनहिं मुसुकाहिं ३५० ॥

देवपितर पूजे विधि नीकी ✽ पूजांसकल वासना जीकी  
सबहिं बंदिमागहिं वरदाना ✽ भाइन्हसहित रामकल्याना  
अंतरहित सुर आसिष देहीं ✽ मुदितमातु अंचलभरिलेहीं  
भूपति बोलि वराती लीन्हे ✽ जानवसन मनिभूषनदीन्हे  
आयसुपाइराषि उर रामाहे ✽ मुदितगणसबनिजरधामाहि  
पुरनर नारि सकल पहिराए ✽ घरघर वाजन लगे बधाए  
जाचकजनजाचहिंजोइजोई ✽ प्रमुदितराउ देहिं सोइ सोई  
सेवकसकलवजनिआनाना ✽ पूरन किए दान सनमाना  
दो० देहिं असीस जोहारि सब, गावहिं गुनगन गाथ ॥

तबगुरु भूसुरसहितगृह, गवनकीन्हनरनाथ ३५१ ॥

जो बसिष्टअनुसासनदीन्ही ✽ लोकवेदविधि सादरकीन्ही  
भूसुर भीर दोषि सब रानी ✽ सादरउठीं भाग्यबडजानी  
पायपषारि सकलअन्हवाए ✽ पूजिभली विधि भूपजेवांए  
आदर दान प्रेम परि पोषे ✽ देतअसीस चले मन तोषे  
बहुविधिकीन्हिगाधिमुतपूजा ✽ नाथमोहि सम धन्यनदूजा  
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी ✽ रानिन्हसहितलीन्हिपगधूरी  
भीतर भवन दीन्ह वरबासू ✽ मनजोगवतरहन्टप रनिवासू

पूजे गुरुपद कमल बहोरी \* कीन्हिविनय उरप्रीतिनथोरी  
दो० बधुन्हसमेत कुमार सब, रानिन्ह सहित महीस ॥

पुनिपुनिवंदतगुरुचरन, देतअसीसमुनीस ३५२ ॥

विनयकीन्हिउर अतिअनुरागे \* सुत संपदा राषि सब आगे  
नेगमागिमुनिनायकलीन्हा \* आसिरवादबहुतविधिदीन्हा  
उरधरिरामहि सीय समेता \* हरषिकीन्हगुरुगवननिकेता  
विप्र बधू सब भूप बोलाई \* चैल चारु भूषन पहिराई  
बहुरिबोलाईसुआसिनिलीन्ही \* रुचिविचारिपहिरावनि दोन्ही  
नेगी नेग जोग सब लेहीं \* रुचिअनुरूप भूपमनि देहीं  
प्रिय पाँहुने पूज्य जे जाने \* भूपति भलीभाँति सनमाने  
देव देषि रघुवीर विवाह \* वरषिप्रसून प्रसंसि उछाह  
दो० चले निसान बजाइ सुर, निज निज पुरसुषपाइ ॥

कहतपरसपररामजस, प्रेमनहृदयसमाइ ३५३ ॥

सबविधिसबहिसमदिनरनाहू \* रहाहृदय भरि पूरि उछाहू  
जहँ रनिवास तहाँ पगुधारे \* सहितबधूटिन्हकुँअरनिहारे  
लिए गोदकरि मोद समेता \* कोकहिसकै भए सुष जेता  
बधू सप्रेम गोद बैठारीं \* बारबारहिय हरषि दुलारीं  
देषिसमाज सुदितरनिवास \* सबकेउर अनंदकियो वास  
कहेउभूपजिमिभएउविवाह \* सुनिसुनिहरषहोइ सबकाहू  
जनकराज गुन सीलबडाई \* प्रीति रीति संपदा सुहाई  
बहुविधिभूपभाटजिमिबरनी \* रानीसबप्रसुदितसुनिकरनी  
दो० सुतन्ह समेत नहाइनृप, बोलिविप्र गुरजाति ॥

भोजनकीन्हअनेकविधि, घरीपंचगइराति ३५४ ॥

मंगलगानकरहिंवरभामिनि \* भैसुपमूलमनोहर जामिनि  
अचैपान सबकाहू पाए \* स्रगसुगंध भूषित छविछाए  
रामहि देषि रजायसु पाई \* निजनिजभवनचलेसिरनाई  
प्रेमप्रमोद विनोद बडाई \* समउ समाज मनोहरताई  
कहिनसकहिं सतसारदसेमू \* वेद विरंचि महेस गनेमू  
सोमैं कहों कवनविधिवरनी \* भुमिनाग सिरधरै किधरनी  
नृपसबभांतिसबाहिसनमानी \* कहिमृदु बचनबोलाईरानी  
बधू लरिकनी परघर आई \* राषेहुनयन पलककी नाई  
दो० लरिकास्रमितउनींदवस, सयन करावहु जाइ ॥  
असकहिंगेविस्रामगृह, रामचरनचितलाइ ३५५ ॥

भूपवचन सुनिसहज सुहाए \* जटितकनकमनिपलंगडसाए  
सुभगसुरभिपयफेन समाना \* कोमलकलित सुपेती नाना  
उपबरहन बरबरानि न जाहीं \* स्रगसुगंध मनिमंदिर माहीं  
रतनदीप सुठिचारुचंदोवा \* कहतनवनैजान जेहिंजोवा  
सेजरुचिर रचि राम उठाए \* प्रेमसमेत पलंग पौठाए  
अज्ञापुनिपुनिभाइन्हदीन्ही \* निजनिजसेजसयनतिन्हकीन्ही  
देषि स्याम मृदुमंजुल गाता \* कहहिंसप्रेमवचन सबमाता  
मारगजात भयावनि भारी \* केहिविधितातताडकामारी  
दो० घोरानिसाचरबिकटभट, समरगनहिं नहिंकाहु ॥

मारेसहितसहायकिमि, पलमारीच सुवाहु ३५६ ॥  
मुनिप्रसादबलिताततुम्हारी \* ईस अनेक करवरैं टारी  
मष रखवारी करि दुहुंभाई \* गुरुप्रसाद सब विद्या पाई  
मुनि तियतरी लगतपगधूरी \* कीरतिरही भुअनभरिपूरी



कमठ पीठिपबिकूट कठोरा \* नृपसमाजमहँसिवधनुतोरा  
 विस्वविजयजसजानकिपाई \* आएभवन व्याहि सबभाई  
 सकलअमानुष करमतुम्हारे \* केवल कौसिक कृपा सुधारे  
 आजसुफलजगजनमहमारा \* देषितात बिधुबदन तुम्हारा  
 जोदिन गणतुम्हहि बिनु देषे \* तेविरंचि जनि पारहिलेपे  
 दो० रामप्रतोषीमातुसब, कहिविनीतमृदुबयन ॥  
 सुमिरिसंभुगुरुविप्रपद, किएनीदबसनयन ३५७ ॥

नीदउबदन सोहसुठि लोना \* मनहुँसाँझ सरसीरुहसोना  
 घरघरकरहिं जागरन नारी \* देहिं परसपर मंगल गारी  
 पुरी विराजति राजतिरजनी \* रानीकहहिंबिलोकहुसजनी  
 सुन्दर बधुन्ह सामुलै सोई \* फनिकन्हजनु सिरमनिउरगोई  
 प्रात पुनीत काल प्रभु जागे \* अरुनचूड बर बोलन लागे  
 बंदिमागधन्हि गुनगनगाए \* पुरजन द्वारजोहारन आए  
 बंदि विप्र सुरगुरु पितुमाता \* पाइअसीसमुदित सबभ्राता  
 जननिन्हिसादरबदननिहारे \* भूपति संग द्वार पग धारे  
 दो० कीन्हिसौचसबसहजमुचि, सरित पुनीत नहाइ ॥  
 प्रातकृयाकरितातपहि, आए चारिउभाइ ॥ ३५८ ॥

भूपबिलोकि लिए उर लाई \* बैठेहरषि रजायसु पाई  
 देखिराम सबसभा जुडानी \* लोचनलाभअवाधि अनुमानी  
 पुनिबसिष्टमुनिकौसिकआए \* सुभगआसनन्हिसुनिबैठाए  
 सुतन्हसमेत पूजि पग लागे \* निरषिरामदोउगुरुअनुरागे  
 कहहिंबसिष्टधरम इतिहासा \* मुनहिमहीससहितरनिवासा  
 मुनिमनअगमगाधिसुंतकरनी \* मुदितबसिष्ट विपुलबिधिवरनी

बोले वामदेउ सब साचीं \* कीरतिकलितलोकतिहुँमाचं  
मुनिआनंदभयउसब काहू \* रामलपनउरअतिहिउछाहू  
दो० मंगल मोदउछाह नित, जाहि दिवस एहिभाँति ।

उमगीअवधअनंदभरि, अधिकअधिकअधिकाति ३५९॥  
मुदिनसाधिकल कंकनछोरे \* मंगल मोद विनोदन थोरे  
नितनवसुखसुरदेखिसिहाहीं \* अवधजनमजाचहिंविधिपाहीं  
विस्वामित्रचलननितचहहीं \* रामसप्रेम विनयवस रहहीं  
दिनदिनसयगुनभूपतिभाऊ \* देखि सराह महामुनिराऊ  
मागत विदा राउ अनुरागे \* सुतन्ह समेतठाढभएआगे  
नाथ सकल संपदातुम्हारी \* मैं सेवक समेत सुत नारी  
करवसदा लरिकन्हपर छोहू \* दरसन देतरहब मुनिमोहू  
असकहिराउसाहितसुतरानी \* परेउचरनमुष आवनबानी  
दीन्ह असीस विप्रबहुभाँती \* चलेनप्रीतिरीतिकहिजाती  
राम सप्रेम संग सब भाई \* आयसु पाइ फिरे पहुँचाई  
दो० राम रूप भूपति भगति, व्याह उछाह अनंद ।

जात सराहत मनहिमन, मुदितगाधिकुलचंद ३६०॥  
वामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी \* बहुरिगाधिपुत कथावषानी  
मुनिमुनिसुजसमनहिमन राऊ \* बरनतआपन पुन्य प्रभाऊ  
बहुरे लोग रजायसु भयऊ \* सुतन्हसमेतनृपातिगृहगयेऊ  
जहँतहँ रामव्याह सबगावा \* सुजसपुनीतलोकतिहुँछावा  
आये व्याहि रामघर जबतैं \* बसैंअनंद अवधसब तबतैं  
प्रभुबिआहजसभएउउछाहू \* सकहिँनवरानिगिराअहिनाहू  
कविकुलजीवनपावनजानी \* रामसीय जसमंगल पानी

तेहि तें में कछु कहा वषानी \* करन पुनीतहेत निजवानी

छं० निजगिरापावनिकरनकारनरामजसतुलसीकह्यो ।

रघुबीरचरितअपारवारिधिपारकविकौनेलह्यो ॥

उपवीतब्याहउछाहमंगलसुनिजेसादरगावहीं ॥

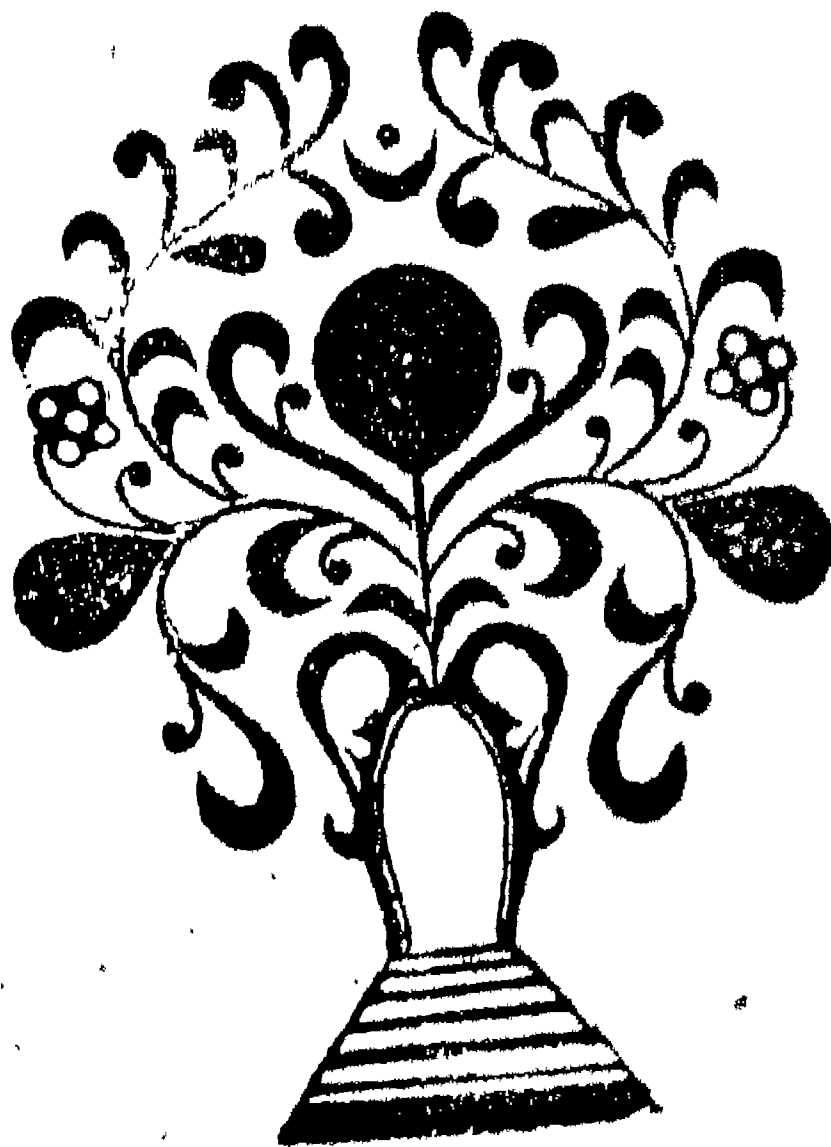
वैदेहिरामप्रसादतेजनसर्वदासुषपावहीं ॥

सो० सियरघुबीर विवाह, जेसप्रेमगावहिंसुनहिं मा०प० १०

तिन्हकहसदाउछाहमंगलायतनरामजस ३६१ नवाह ३ ॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने  
प्रथमोसोपानःसमाप्तः ॥

ग्रंथ संख्या श्लोक ३११३



\* शुद्धाशुद्ध पत्र बालकाण्ड २ \*

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	१६	जान	जाने
५९	२०	श्रुत	श्रुति
	२३	काउ	कोउ
६०	२२	मस	मम
६१	२२	दहहा	दहहीं
६२	१६	जोह	जेहि
६३	६	वरना	वरनी
६४	२	ज	जे
७१	१	बाल	बोले
७३	१६	रंघ	रंघ
७४	८	नी	नील
८१	८	दुरावाताहा	दुरावाँतोही
८१	६	कथे	कथे
८४	१	जा	जों
८६	१४	भासा	त्रासा
१०३	१६	चल	चले
१०४	६	जात	जाते
	१६	देपव	देपति
१०९	३	सास	साप
११४	२	मंगन दाहन	मंगल लहनिन
१२१	६	स	सम
१२२	७	कहहि	कहहि हन
१२३	७	म	मानी
१२४	१६	मुन्दि	मुनिन्दि
१२६	१	मंग	भंग
१३४	४	विनात	विनीत
१३७	१४	परस	परसु
१४१	१४	सान	सानु
	१६	अमिमति	अभिमत
१६२	१	प्रम	प्रेम
१६४	१४	हेत	हेतु
	१६	बाल	बोले
१६७	२२	कान्ह	कीन्ह
		इति	



❖ शुद्धाशुद्ध पत्र बालकाण्ड १ ❖

बालकाण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		स्वामा	स्वामी
१	१	राज	साज
३	१	सोहत	सोहन
७	१६	मरे	मोरे
१०	२	मोर	मोरे
१०	१०	जविन	जेचिनु
१२	१६	ज्ञान	ज्ञान
१२	१२	धर	धरे
१३	१	जार्द	जोई
	७	प्रति	प्रोति
	१७	जपाहु	जपहि
१४	१४	दुईत	दुईते
	२२	नेवत	नेचते
३३	१६	सवा	सर्वा
	२०	जात चल	जात चले
	२२	महस	महंम
३४	२	रार	रारि
	१६	स्वामा	स्वामी
३६	२०	राध	राधे
३८	२	तेहिक	तेहिके
४१	२१	तेह	तेही
४२	११	कहि	केहि
४४	६	ज	जे
	१०	त	ते
	११	जाम	जामि
४७	१	वष	वेष
४०	१३	रुर	सुर
	१६	भिरित	गिरिते
	२०	म	मै
४४	१८	य	म
४५	१६	रामसा	रामसा
४७	६	अ	धु
४७	२१		

❀ श्रीः ❀

## अथ रामायण त्रयोध्याकाण्ड ॥

॥ श्रीजानकी बल्लभोविजयते ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

श्लोक—वामांकेवविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके ॥ भालेबालविधुर्  
लेचगरलंयस्योरसिब्यालराट् ॥ सोयंभूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः  
सर्वदा ॥ सर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातुमां ॥ १ ॥  
प्रसन्नतांयानगताभिषेकतस्तथानमस्तेवनवासदुःखतः ॥ मुखाम्बुजश्री रघु-  
नन्दनस्यमेसदास्तुसामंजुलमंगलप्रदा ॥ २ ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं  
सीतासमारोपितवामभागं ॥ पाणौमहासायकचारुचापंनमामिरामंरघुवंश  
नाथं ॥ ३ ॥

दो० श्रीगुरचरन मरोजरज, निजमन मुकुर सुधारि ।  
बरनउँरघुवरविमलजस, जोदायकफलचारि ॥ १ ॥  
जबते राम ब्याहि घर आए ❀ नितनव मंगलमोद बधाए  
भुअन चारिदस भूधरभारी ❀ सुकृतमेघ वरषहिं सुखवारी  
रिधिमिधिमंपतिनदी सुहाई ❀ उमगिअवधअंबुधिकहँआई  
मनिगनपुरनरनारिसुजाती ❀ सुचिअमोल सुंदर सबभाँती  
कहिनजाइकहुन गराविभूती ❀ जगुएतनिअविरंचिकरतूती  
सबविधिसबपुरले गगुखारी ❀ रामदन्दमुखचंद निहारी  
सुदित मातु सबसखीसहेलैं ❀ फलितविलां किमनोरथबेलीं  
रामरूप गुनमील सुभाऊ ❀ प्रसुदित होइदेखि सुनिराऊ

दो० सबकें उरअभिलाषअस, कहहिं मनाइ महेस ॥

आपु अछतजुवराजपद, रामहि देउनरेस ॥ १ ॥

एकसमयसबसाहित समाजा \* राज सभा रघुराज विराजा  
सकल सुकृतमूरति नरनाहू \* रामसुजससुनिअतिहिउब्बाहू  
नृपसबरहहिं कृपाअभिलाषे \* लोकपकरहिं प्रीतिरुषराषे  
तिभुअनतीनिकालजगमाहीं \* भूरिभाग दसरथ समनाहीं  
मंगल मूल राम सुत जामू \* जोकछुकहिअथोर सबतासू  
रायसुभाय मुकुर करलीन्हा \* बदनविलोकिमुकुटसमकीन्हा  
श्रवनसमीप भए सितकेसा \* मनहुं जरठपनअसउपदेसा  
नृप जुवराज रामकहँ देहू \* जीवन जनम लाहुकिनलेहू

दो० यह बिचार उरआनिनृप, सुदिन सुअवँसर पाइ ॥

प्रेमपुलकितन मुदितमन, गुरहि सुनाएउजाइ ॥ २ ॥

कहइभुआलसुनिअमुनिनायक \* भएरामसबविधिसबलायक  
सेवक सचिवसकल पुरवासी \* जेहमरे अरि मित्र उदासी  
सवहिरामप्रियजेहिबिधिमोही \* प्रभुअसीसजनुतनधरिसोही  
विप्र साहित परिवार गोसाई \* करहिँछोह सवरोंरोहि नाई  
जेगुर चरन रेनु सिर धरहीं \* तेजनसकल विभववसकरही  
मोहिसमयहअनुभएउनदूजे \* सबपाएउँ रजपावनि पूजे  
अबअभिलाष एक मनमोरें \* पूजिहि नाथअनुग्रह तोरें  
मुनिप्रसन्न लषिसहज सनेहू \* कहेउ नरेस रजायसु देहू

दो० राजन राउर नामजस, सब अभिमत दातार ॥

फलअनुगामीमहिपमानि, मनअभिलापतुम्हार ३ ॥

सबविधिगुरुप्रसन्नजिअजानी \* बोलेउराउर हंसि मृदुबानी

नाथराम करिअहि जुबराजू ✽ कहिअकृपाकरिकरिअसमाजू  
मोहिअछत यह होइ उछाहू ✽ लहहिंलोग सब लोचनलाहू  
प्रभुप्रसादसिवसबइ निवाहीं ✽ यहलालसा एक मन माहीं  
पुनिन सोचतनरहउकिजाऊ ✽ जेहिन होइ पाँछ पछिताऊ  
सुनिमुनिदसरथवचनसुहाए ✽ मंगल मोद मूलमन भाए  
सुनुनृपजासुविमुखपछिताहीं ✽ जासुभजनबिनुजरनिनजाहीं  
भएउतुम्हारतनयसोइस्वामी ✽ राम पुनीत प्रेम अनुगामी  
दो० बेगि बिलंबन करिअ नृप, साजिअ सबइसमाज ॥

सुदिन सुमंगल तबहिंजब, रामहोहिं जुबराज ॥ ४ ॥

सुदित महीपति मंदिरआए ✽ सेवकसचिवसुमंत्र बोलाए  
कहिजयजीवसीसतिन्हनाए ✽ भूप सुमंगल वचन सुनाए  
प्रसुदितमोहि कहेउगुरुआजू ✽ रामहि रायदेहु जुबराजू  
जौंपाँचहि मतलागइ नीका ✽ करहुहरषिहियरामहिटीका  
मंत्री सुदित सुनत प्रियवानी ✽ अभिमतविरवपरे उजनुपानी  
बिनतीसचिवकरहिंकरजोरी ✽ जिअहुजगतपतिवरिसकरोरी  
जगमंगल भलकाजबिचारा ✽ बेगिहि नाथन लाइअ बारा  
नृपहिमोदसुनिसचिव सुभाषा ✽ बढतबौंड जनुलहीं सुसाषा  
दो० कहेउभूपमुनिराजकर, जोइजोइआयसुहोइ ॥

रामराजअभिषेकहित, बेगिकरहुसोइसोइ ॥ ५ ॥

हरषिमुनीस कहेउ मृदुबानी ✽ आनहुसकलसुतीरथ पानी  
औषध मूल फूल फल पाना ✽ कहेनामगनि मंगल नाना  
चामर चमर बसन बहुभाँती ✽ रोमपाटपट अगनितजाती  
मनिगन मंगल वस्तुअनेका ✽ जोजगजोगभूप अभिषेका



वेदविहितकहिसकल विधाना \* कहेउरचहुपुरविविधविताना  
 सफल रसाल पूंगफल केरा \* रोपहु वीथिन पुर चहुं फेरा  
 रचहु मंजुमनि चौकड़ चारु \* कहहु बनावन बेगि बजारु  
 पूजहु गनपति गुरुकुल देवा \* सबविधिकरहुभूमि सुरसेवा  
 दो० ध्वजपताकतोरनकलस, सजहुतुरगरथनाथ ॥

सिरधरिमुनिवरवचनसब, निजनिजकाजहिलाग ॥ ६ ॥  
 जोमुनीसजेहिआयसुदीन्हा \* सोतेहिकाजप्रथमजनुकीन्हा  
 बिप्र साधु सुरपूजत राजा \* करतरामहितमंगल काजा  
 सुनतराम अभिषेक सुहावा \* बाजगहागह अवधबधावा  
 रामसीय तनसगुन जनाए \* फरकहिं मंगल अंगसुहाए  
 पुलकि सप्रेमपरसपर कहहीं \* भरतआगमनसूचक अहहीं  
 भए बहुतदिन अतिअवसेरी \* सगुनप्रतीत भेंटप्रिय केरी  
 भरतसरिसप्रियकोजगमाहीं \* इहइसगुन फलदूसर नाहीं  
 रामहि बंधुसोच दिन राती \* अंडानिकमठहृदउजेहिभांता  
 दो० यहिअवसर मंगलपरम, सुनि रहैसेउ रनिवास ॥

सोभतलषिविधुबढतजनु, बारिधिबीचिविलास ॥ ७ ॥  
 प्रथमजाइजिन्हवचनसुनाए \* भूषनवसन भूरितिन्ह पाए  
 प्रेमपुलकितनमन अनुरागी \* मंगलकलससजन सबलार्गी  
 चौंकड़ चारु सुमित्रा पूरी \* मनिमयविविधि भांतिअतिरूरी  
 आनंद मगन राम महंतारी \* दिएदान बहुबिप्र हँकारी  
 पूजी ग्राम. देवि सुर नागा \* कहे बहोरि देन बलि भागा  
 जेहि विधिहोइ रामकल्यान \* देहुदया करि सो बरदान  
 गावहिंमंगल कोकिलबयनी \* विधुबदनीमृगसावकनयनी

दो० रामराजअभिषेकसुनि, हियहरषेनरनारि ॥

लगेसुमंगलसजनसब, विधिअतुकूलविचारि ॥ ८ ॥

तब नरनाह बसिष्ट बोलाए \* राम धाम सिषदेन पठाए  
गुरु आगमनसुनत रघुनाथा \* द्वार आई पद नाएउ माथा  
सादर अरघ देइ घरआने \* सोरह भांतिपूजि सनमाने  
गहे चरन सियसहित बहोरी \* बोले राम कमल करजोरी  
सेवक सदन स्वामिआगमनू \* मंगलमूल अमंगल दमनू  
तदपिउचितजनबोलिसप्रीती \* पठइअकाज नाथ असनीती  
प्रभुतातजि प्रभु कीन्ह सनेहू \* भएउ पुनीत आजयहगेहू  
आयसुहोइ सो करौं गोसाई \* सेवकलहइ स्वामि सेवकाई  
दो० सुनिसनेह सानेबचन, मुनिरघुवरहिप्रसंस ॥

रामकसन तुम्हकहहु अस, हंसवंसअवतंस ॥ ९ ॥

बरनिराम गुन सील सुभाऊ \* बोलेप्रेम पुलकि मुनिराऊ  
भूपसजेउ अभिषेकसमाजू \* चाहत देन तुम्हाहि जुवराजू  
रामकरहु सब संजम आजू \* जौंविधिकुसलनिवाहइकाजू  
गुरुसिखदेइ रायपाहिं गयऊ \* रामहृदयअसबिस्मउभयऊ  
जनमे एकसंग सब भाई \* भोजनसयन केलिलरिकाई  
करन बेधउपवीत विआहा \* संगसंग सबभए उछाहा  
बिमलवंसयह अनुचित एकू \* बंधुबिहाय बडेहि अभिषेकू  
प्रभुसप्रेम पाछितानि सुहाई \* हरउभगत मनकैकुटिलाई  
दो० तेहिअवसरआएलपन, मगन प्रेमआनन्द ॥

सनमाने प्रियवचनकहि, रघुकुलकैरवचन्द ॥ १० ॥

बाजहिबाजनाविविधिविधाना \* पुरप्रमोद नहिं जाइबाखाना

भरतआगमनसकलमनावहिं \* आवहुवेगिनयनफरुपावहिं  
 हाटवाट घरगली अथाई \* कहहिंपरसपर लोगलोगाई  
 कालिलुगनभलिकेतिकबारा \* पूजिहिविधिअभिलापहमारा  
 कनकसिंहासन सीयसमेता \* बैठहिं राम होइचित चेता  
 सकलकहहिंकबहोइहिकाली \* बिघनमनावहिं देवकुचाली  
 तिन्हहिंसोहाइनअवधधावा \* चोरहिं चंदिनिरातिन भावा  
 सारदबोलि विनयसुरकरहीं \* बारहि बार पाँय लइ परहीं  
 दो० विपतिहमारिविलोकिबडि, मातुकरिअसोइआज ।

रामजाहिंवनराजतजि, होइसकलसुरकाज ॥ ११ ॥

सुनिसुरविनयठाढिपछिनाती \* भइउंसरोजविपिनहिमराती  
 देशिदेव पुनि कहहिं निहोरी \* मातुतोहिनाहिं थोरिवषोरी  
 विसमय हरषराहित रघुराऊ \* तुम्हजानहु सबरामप्रभाऊ  
 जीवकरम बससुष दुषभागी \* जाइअअवधदेव हितलागी  
 बारबारगहि चरन सकोची \* चलीविचारिविबुधमतिगोची  
 ऊँचनिवास नीचि करतूती \* देशिनसकहिं पराइ विभूती  
 आगिलकाजविचारि बहोरी \* करिहाहिंचाहकुसलकविमोरी  
 हरषिहृदय दसरथ पुरआई \* जनुग्रहदसा दुसह दुषदाई  
 दो० नाम मंथरा मंदमति, चेरी कै कै केरि ।

अजसपेटारी ताहिकरि, गई गिरामतिफेरि ॥ १२ ॥

देशि मंथरा नगर बनावा \* मंजुलमंगल बाज बधावा  
 पूछेसि लोगन्ह काहउछाहू \* रामतिलक सुनिभाउरदाहू  
 करैविचार कुबुद्धि कुजाती \* होइअकाजकवनविधिराती  
 देशिलागिमधुकुटिलकिराती \* जिमिगँवतकइलेउँ केहिभांती

भरतमातुपाहिंगइ बिलषानी \* काअनमनिहसिकहहँसिरानी  
उतरदेइ न लेइ उसाँसू \* नारि चरितकरिठारइआँसू  
हँसि कहरानिगालबड़ तोरे \* दीन्हलपनासिषअसमनमोरे  
तबहुँनबोलवेरिबडिपापिनि \* छाडइस्वासकारि अनुसाँपनि

दो० सभयरानि कहकहासिकिन, कुसलराममहिपाल ॥  
लपनभरत रिपुदवनसुनि, भाकुवरी उरसाल ॥ १३ ॥

कतासिषदेइ हमहिकोउमाई \* गालकरब केहिकर बलपाई  
रामहिछाडिकुसलकेहिआजू \* जिन्हहिं जनेस देइ जुबराजू  
भयउकौसितहिविधिअतिदाहिन \* दोषतगरब रहत उरनाहिन  
देषहु कसनजाइ सब सोभा \* जोअवलोकिमोरमनछोभा  
पूतविदेस न सोच तुम्हारे \* जानाँतहहु बस नाह हमारे  
नीदबहुत प्रियसेज तुराई \* लपहुन भूपकपट चतुराई  
सुनिप्रियवचनमतिनमनजानी \* झुकीरानिअवरहु अरगानी  
पुनिअसकबहुकहासिघरफोरी \* तबधरिजीभ कढावौं तारी  
दो० काने पोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ॥  
तियविसेषिपुनिचेरिकहि, भरतमातु मुसकानि ॥ १४ ॥

प्रियवादिनिसिषदीन्हि उँतोही \* सपनेहु तोपरकोपन मोही  
सुदिन सुमंगल दायक सोई \* तोरकहाफुरजेहि दिन होई  
जेठस्वामि सेवक लघुभाई \* यह दिनकरकुलरीतिसुहाई  
रामतिलक जौं साँचेहु काली \* देउँमागुमन भावत आली  
कौसल्या समसब महंतारी \* रामहिसहजसुभायपिआरी  
मोपर करहिं सनेह बिसेषी \* में करि प्रीति परीछा देषी  
जौंविधिजनम देइकरि छोहू \* होहु राम सियपूत पतोहू



प्रानतैअधिकरामप्रिय मोरें \* तिन्हकतिलकछोभकसतोरें  
दो० भरतसपथतोहिसत्यकहु, परिहरिकपटदुराउ ॥

हरषसमयविसमउकरासि, कारन मोहि सुनाउ ॥ १५ ॥

एकहि बार आस सब पूजी \* अबकछुकहवजीभकरिदजी  
फोरइ जोग कपार अभागा \* भलेउकहतदुपरौरैहि लगा  
कहहिं झूठिफुरि बात बनाई \* तेप्रियतुम्हहिं करुइ में माई  
हमहुँकहवअवठकुरसोहाती \* नाहितमोनैरहव दिनराती  
करिकुरूपविधिपरवस कीन्हा \* बवासोलुनिअलहिअजोदीन्हा  
कोउनृपहोउहमहिकाहानी \* चेरिछाडि अबहोवाकिरानी  
जारइ जोग सुभाउ हमारा \* अनभलदेपिनजाइ तुम्हारा  
ताते कछुकबात अनुसारी \* छमिअदेविवटिचूकहमारी  
दो० गूढकपटप्रियवचनसुनि, तीयअधरबुधिरानि ॥

सुरमायावसबैरिनिहि, मुहदजानिपतिआनि ॥ १६ ॥

सादरपुनिपुनिपूछति ओही \* सबरीगान मृगीजनु मोही  
तसिमतिफिरीअहइजसिमावी \* रहँसीचेरि घातभलिफावी  
तुम्ह पूँछहु में कहतडेराऊँ \* धरेहु मोर घर फोरी नाऊँ  
सजिप्रतीतिबहुविधिगढिछोली \* अवधसाढसातीजनु बोली  
प्रियसियरामकहातुम्ह रानी \* रामहितुम्हप्रियसोफुरिबानी  
रहा प्रथम अबते दिन बीते \* समउफिरे रिपुहोहिंपिरीते  
भानुकमलकुलपोषनि हारा \* बिनुजलजारिकरइसो छारा  
जरितुम्हारिचहसवाति उपरी \* रूँधहु करि उपाउ बरबारी  
दी० तुम्हाहिनसोचसोहागबल, निजवसजानहुराउ ॥

मनमलीनमुहँमीठनृप, राउरसरलसुभाउ ॥ १७ ॥

चतुर गंभीर राम महतारी \* बीचपाइ निज बात सँवारी  
पठए भरत भूप ननिओरें \* राम मातु मत जानव रौरें  
सेवाहिंसकलसवातिमोहिनीकें \* गरवित भरत मातुबलपीकें  
सालतुम्हार कौसलहि माई \* कपटचतुर नहिं होइ जनाई  
राजहिं तुमपर प्रेम विसेषा \* सवतिसुभाउसकइ नहिंदेपी  
रचिप्रपंच भूपहि अपनाई \* रामतिलकहितलगन धराई  
यहकुलउचितरामकहँटीका \* सवहिसोहाइमोहिसुठिनीका  
आगिलबातसमुझिडरमाही \* देउदैउफिरि सोफलओही  
दो० रचिपाचिकोटिककुटिलपन, कीन्हैसिकपटप्रबोध ।  
कहेसिकथासतसवातिके, जेहिविधिबाढविरोध ॥ १८ ॥

भावी बस प्रतीति उर आई \* पूँछरानि पुनि सपथ देवाई  
कापूँछहुतुमअजहुँ न जाना \* निजहितअनहितपसुपहिंचाना  
भएउपाषादिनसजतसमाजू \* तुम्हपाईसुधिमोहिसनआजू  
षाइअपहिरिअ राज तुम्हारें \* सत्य कहँनहिं दोष हमारें  
जौं अमत्यकछु कहववनाई \* तौविधिदइहि हमहिसजाई  
रामहितिलककालिजौभयरु \* तुमकहँविपतिबीजविधिवथऊ  
रेष षचाइकहउँ बल मापी \* भामिनिभइहु दूधकी मापी  
जौसुतसहित करहु सेवकाई \* तौ घर रहहु न आन उपाई  
दो० कदूबिनतहि दीन्हहुष, तुम्हहि कौसिलादेव ॥  
भरत बाँदि गृह सेइहहिं, लपनरामकेनेव ॥ १९ ॥

कैकयसुता सुनत कटुवाना \* कहिनसकइकछुसहामिसुषानी  
ननपसेवकदली जिमिकाँपी \* कुबरीदसन जीभतव चाँपी  
रहिरकोटिककपटकहानी \* धीरजधरहु प्रबोधिसि रानी

कीन्हिसिकठिनपढाइकुपाहू \* फिरिननवइजिमिउकठिकुकाहू  
 फिराकरमाप्रियलागि कुचाली \* बकिहिमराहइ मानिमराली  
 सुनुमंथरा बात फुरि तोरी \* दाहिनिआंषिनितफरकइमोरी  
 दिनप्रतिदेषउंराति कुसपने \* कहउंनतोहि मोहबसअपने  
 कहाकरोँ सषि मूध सुभाऊ \* दाहिनवामन जानउँ काऊ  
 दो० अपनेचलतनआजलागि, अनभलकाहुककीन्ह ॥

केहिअघएकहिवारमोहि, दइअहुसहदुपदीन्ह ॥२०॥

नैहरजनम भरव बरु जाई \* जिअतिनकरवमवतिमेवकाई  
 अरिबसदैउजिआवतजाही \* मरननीक तोहिजीवन चाही  
 दीनबचन कहबहुविधिरानी \* सुनिकुवरी तियमाया ठानी  
 असकसकहहुमानिमनऊना \* सुषसोहागतुमकहंदिनदूना  
 जेहिराउरअतिअनभलताका \* सोइपाइहियहफलपरिपाका  
 जबतेकुमतसुनामैस्वामिनि \* भूपनवासरनींद नजामिनि  
 पूछेउगुनिन्ह रेषतिन्हपाँची \* भरतभुआलहोहिं यहमाँची  
 भामिनिकरहुतकहउँउपाऊ \* है तुम्हरी सेवा बस राऊ  
 दो० परौंकूपतुअ बचनपर, सकौँ पूत पाति त्यागि ॥

कहसिमोरदुखदेखिबड, कसनकरबहितलागि ॥२१॥

कुवरी करि कबूलि कैकेई \* कपट छुरी उर पाहन टेई  
 लषइनरानिनिकट दुखकैसे \* चरइहरितत्रिन बलपसु जैसे  
 सुनत बात मृदुअंत कठोरी \* देतिमनहु मध्र माहुर घोरी  
 कहइचेरिसुधिअहइकिनाहीं \* स्वामिनिकहिहुकथामोहिपाहीं  
 दुइबरदान भूप सन थाती \* माँगहु आज जुटावहु छाती  
 सुताहिराज रामहि बनवासू \* देहुलेहु सब सवति हुलसू

भूपति रामसपथ जबकरई ✽ तवमाँगेहु जेहिवचननटरई  
होइअकाज आजनिमिती ✽ बचनमोर प्रियमानहु जीतें  
दो० बडकुघात करिपातकिनि कहेसि कोपगृहजाहु ॥

काजसँवारेहुसजगसब, सहसा जनि पतिआहु ॥ २२ ॥  
कुवरिहिरानिप्रानप्रियजानी ✽ बारबार बडिबुद्धि बखानी  
तोहिसम हितनमोर संसारा ✽ बहेजात कइ भइसि अधारा  
जौंविधि पुरवमनोरथ काली ✽ करौंतोहि चषपूतरि आली  
बहुविधि चेरिहि आदर देई ✽ कोप भवन गवनी कैकेई  
विपति बीज वरषारितु चेरी ✽ भुइँभइ कुमतिकइकई केरी  
पाइकपटजल अंकुर जामा ✽ वरदो उदलदुषफलपरिनामा  
कोपसमाजसाजि सब सोई ✽ राजकरतनिजकुमतिविगोई  
राउर नगरकोलाहल होई ✽ यहकुचालि कछुजाननकोई  
दो० प्रमुदितपुरनरनारिसब, सजाहिंसुमंगल चार ॥

एकप्रविसहिं एकनिर्गमहिं, भीरभूपदरवार ॥ २३ ॥  
बालसखा सुनिहियहरषाहीं ✽ मिलिदसपाँचरामपाहिंजाहीं  
प्रभु आदरहिं प्रेमपहिचानी ✽ पूँछहिं कुसलषेम मृदुबानी  
फिरहिंभवनप्रियआयसुपाई ✽ करत परसपर राम बडाई  
को रघुवीर सरिस संसारा ✽ सील सनेह निवाहनिहारा  
जेहि२जोनिकरमवसभ्रमहीं ✽ तहँतहँ ईस देउ यह हमहीं  
सेवक हमस्वामी सियनाहू ✽ होहु नात यह ओर निवाहू  
असआभिलाषनगरसबकाहू ✽ कैकयसुता हृदयअति दाहू  
को न कुसंगति पाइ नसाई ✽ रहै न नीच मते चतुराई  
दो० साँझसमयसानंदनृप, गयउकैकईगोह ।

गवननिठुरतानिकटकिय, जनुधारिदेहसनेह ॥ २४ ॥



कोप भवनसुनिसकुचे राऊ \* भयवसअगहुडपरइन पाऊ  
 सुरपतिवसइ बाँहवल जाकें \* नरपतिसकलरहाहिंरुष ताकें  
 सोसुनितियरिसगएउसुपाई \* देषहु कामप्रताप बडाई  
 मूलकुलिसअसिअंगवनिहारे \* तेरतिनाथ सुमन सरमारे  
 सभय नरेस प्रियापहिंगएऊ \* देषिदसाहुष दारुन भयऊ  
 भूमि सयन पट मोटपुराना \* दिएटारितन भूपन नाना  
 कुमतिहिकसिकुबेषताफावी \* अनअहिवातमूचजनुभावी  
 जाइनिकटनृपकहमृदुवानी \* प्रानप्रियाकेहिहेतु रिसानी  
 छं० केहिहेतुरानिरिसानिपरसतपानिपतिहिनेवारई ॥

मानहुसरोषभुअंगभामिनि विषमभाँतिनिहारई ॥  
 दोउवासनारसनादसनवर मरमठाहरदेषई ॥  
 तुलसीनृपति भवतव्यतावस कामकौतुकलेपई ॥

सो० बारबारकहराउ, सुमुषिसुलोचनिपिकवचनि ॥

कारनमोहिसुनाउ, गजगामिनिनिजकोपकर ॥२५॥  
 अनहिततोरप्रियाकेइकीन्हा \* केहिदुइसिरकेहि जमचहलीन्हा  
 कहु केहि रकहि करों नरेमू \* कहुकेहिनृपहिनिकासउँदेमू  
 सकौंतोर अरिअमरउमारी \* काहकीट बपुरे नर नारी  
 जानसि मोर सुभाव बरोरू \* मनतव आननचंद चकोरू  
 प्रियाप्रान सुत सरवस मोरें \* परिजन प्रजा सकलवसतोरें  
 जौंकछुकहउँकपटकरितोही \* भामिनिरामसपथसतमोही  
 बिहँसिमाँगुमनभावतिबाता \* भूषनसजहि मनोहरगाता  
 घरी कुघरी समुझि जियदेषू \* बेगि प्रियापरिहरहि कुबेषू  
 दो० यहसुनिमनगुनिसपथबडि, बिहँसिउठीमतिमंद ॥

भूषनसजतिबिलोकिमृग, मनहुकिरातिनिफंद ॥२६॥

पुनिकहराउसुहृदजिअ जानी \* प्रेमपुलकिमृदु मंजुल बानी  
 भामिनिभएउ तोरमनभावा \* घरघरनगर अनंद बधावा  
 रामहि देउं कालि जुवराजू \* सजहिसुलोचनिमंगलसाजू  
 दलकिउठेउसुनिहृदय छेरू \* जनुछुइगएउपाकवर तोरू  
 ऐसिउपीर विहंसि उर गोई \* चोरनारिजिमिप्रगाटिनरोई  
 लषीन भूप कपट चतुराई \* कोटिकुटिलमनिगुरूपढाई  
 यद्यपिनीति निपुन नरनाहू \* नारिचरितजलनिधिअवगाहू  
 कपट सनेह बढाइ बहोरी \* बोलीविहंसिनयनसुहं मोरी  
 दो० मागुमागुं पै कहहु पिय, कवहुंन देहु नलेहु ॥  
 देनकहेहुवरदानदुइ, तेउपावतसंदेहु ॥ २७ ॥

जानेउंमरमराउहंसि कहई \* तुम्हहिंकोहावपरमप्रियअहई  
 थातीराखिनमांगिहु काऊ \* बिसरिगयउमोहिभोरसुभाऊ  
 झूठेहुं हमहिंदोम जनिदेहू \* दुइकैचारि मांगि मकुलेहू  
 रघुकुलसीति सदा चलिआई \* प्रानजाहु वरुवचन नजाई  
 नहिंसत्यसमपातक पुंजा \* गिरिसमहोहिंकिकोटिकगुंजा  
 सत्य मूल सब सुकृतसुहाए \* वेदपुरान विदित मनुगाए  
 तोहिपरराम सपथ करिआई \* सुकृत सनेह अवाधिरघुराई  
 बातदिढाइकुमति हैसिवोली \* कुमतकुविहंगकुलह जनुपोली  
 दो० भूपमनोरथसुभगवन, सुपपुविहंगसमाज ।

भिल्लनिजिमिछाडनचहाति, वचनभयंकरबाज ॥ २८ ॥  
 सुनहु प्रानप्रियभावतजीका \* देहुएक वरभरतहि टीका  
 मागौं दूसर वर करजोरी \* पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी  
 तापस वेषविसेषि उदासी \* चौदहबारिस रामवनवासी

सुनिमृदुवचनभूप हियसोकू \* ससिकर लुअतविकलजिमिकोकू  
 गएउसहमिनाहिं रुकुहिश्रावा \* जनुमचानवनझपटे उलावा  
 विवरनभएउनिपटनरपालू \* दामिनिहने उमनहुतरुतालू  
 माथे हाथमूदिदोउ लोचन \* तनधरिसोचलागजनु सोचन  
 मोर मनोरथ सुरतरु फूला \* फरतकरिनि जिमिहनेउ समूला  
 अवध उजारि कीन्ह कैकेई \* दीन्हिसिअचलविपतिकैनेई  
 दो० कवने अवसरका भएउ, गयउँ नारिविस्वास ॥

जोगसिद्धिफलसमयजिमि, जतिहिअविद्यानास॥२९॥

एहिविधिराउमनाहिमनभांषा \* देषिकुभांतिकुमतिमनंभांषा  
 भरतकि राउर पूतन होहीं \* आनेहुमोलवेमाहिकिमोहीं  
 जोसुनिसरअसलाग तुम्हारें \* काहेनबोलेहु वचन सभारें  
 देहुउतर अरुकहुहुकिनाहीं \* सत्यसंधतुम्हरबुकुल माहीं  
 देनकहेहु अब जनि वर देहु \* तजहुसत्यजगअपजस लेहु  
 सत्य सराहि कहेहु बरदेना \* जानेहु लेइहि मांगि चबेना  
 सिविदधीचबलिजोक ठुभाषा \* तनधनतजेउवचनपनराषा  
 अतिकटुवचनकहति कैकेई \* मानहु लोन जरे पर देई  
 दो० धरम धुरंधर धीरधरि, नयन उघारेराय ॥

सिरधुनिलीन्हि उसासअसि, मारेसिमोहिकुठाय ३०

आगेदीषि जरतिरिसभारी \* मनहु रोष तरवारि उघारी  
 मूठि कुबुद्धि धार निठुराई \* धरि कुबरी पर सानबनाई  
 लषी महीप कराल कठोरा \* सत्यकि जीवनलेइहि मोरा  
 बोले राउकठिन करिछाती \* बानीसविनय तासु सोहाती  
 प्रियावचनकसकहासिकुभांती \* भीरुप्रतीतिप्रीति करिहाती

मोरे भरत रामहुइ आँपी \* सत्यकह उँकरि संकर सापी  
अवसि दूतमें पठउव प्राता \* ऐहिंवेगि सुनतदोउभ्राता  
सुदिनसोधिसवसाज सजाई \* देउँभरत कहें राज बजाई  
दो० लोभन रामहि राजकर, बहुत भरत पर प्रीति ।

मैं बडछोटविचारिजिय, करतरहेउँनृपनीति ॥ ३१ ॥

रामसपथ सतकहउँ सुभाऊ \* राममातुकछु कहेउनकाऊ  
मैंसवकीन्हतोहि बिनु पूछे \* तेहिते परेउ मनोरथ छूछे  
रिसपरिहरुअव मंगल साजू \* कछु दिनगएभरत जुवराजू  
एकहिबातमोहि दुष लागा \* बरुदूसर असमंजस मागा  
अजहँहृदयजरततोहि आँचा \* रिसपरिहाँसकिसाँचेहुसाँचा  
कहु तजि रोष राम अपराधू \* सबको उकहइरामसुठिसाधू  
तुहँसराहासि करसि सनेहू \* अवसुनि मोहिंभएउ संदेहू  
जासुसुभाउअरिहुँ अनु कूला \* सोकिभिकरिहिमातुप्रतिकूला  
दो० प्रिया हाँसरिस परि हरहि, मागु विचारि विवेक ॥

जेहिदेपौं अब नयन भरि, भरतराजअभिषेक ॥ ३२ ॥

जिएमीनवरु वारि विहीना \* मनिबिनुफनिकजिएदुषदीना  
कहउँसुभाउनछरुमनमाहीं \* जीवनमोर राम बिनु नाहीं  
समुझिदेषुजियाप्रिया प्रवीना \* जीवन रामदरस आधीना  
सुनिमृदुवचनकुमतिअतिजरई \* मनहुअनलआहुति घृतपरई  
कहइकरहुकिनकोटि उपाया \* इराँनलगिहि राउरि माया  
देहुकिलेहु अजसकरि नाहीं \* मोहिनबहुत परपंचसुहाहीं  
राम साधुतुम्हसाधु सयाने \* राममातु भलिसवपाहिचाने  
जसकौसिलामोर भलताका \* तसफल उन्हहिदेउँकरिसाका



दो० होत प्रात मुनिवेषधरि, जौन राम वन जाहिं ॥

मोरमरन राउरअजम, नृपममुझिअमनमाहिं ॥३३॥

असकहिकुटिलभईउठिगद्दी \* मानहु गोप तरंगिनि वादी  
पाप पहार प्रगट भई मोई \* भगीक्रोधजल जाइन जोई  
दोउवरकूल कठिन हठधारा \* भंवरकृवगी वचन प्रचार  
ठाहति भूपरूप तरु मूला \* चलीविपतिवारिधिअनुकूल  
लषी नरेस बात सबमाची \* तियमिममीचमीमपरनाची  
गहिपदविनयकीन्हि बैठारी \* जनिदिनकरकुलहोमिकुगारी  
माणुमाथ अवहीं देउतोही \* रामविग्रहजनि मागमिमोही  
राघुराम कहँजेहितेहिभांती \* नाहितजगिहिजनमभरिब्याती  
दो० देषी व्याधि अमाधिनृप, पंउ धरनि धुनिमाथ ॥

कहत परमआरत वचन, रामगम गनुनाथ ॥३४॥

व्याकुलराउसिथिलमव गाना \* करिनिक्लपतरुमनहुनिपाता  
कंठ मूष मुष आवन बानी \* जनुपाटीन दीनविनु पानी  
पुनि कहकटु कठोर कैकई \* मनहु घाय महमाहुर दे  
जौं अंतहुअस करतव रहे \* मांगुमांगुग्रहकैहिवल कहे  
हुइकिहोहिँएकसमयहुआला \* हमवठ्याह फुलाउब गाल  
दानिकहाउब अरुहपिनाई \* होइकि पेम कुमल रौताई  
छाडहुवचनकि धीरज धरहु \* जनिअबलाजिमि करुनाकह  
तनतियतनयधामधनधरनी \* मत्यमंधकहचिनसम वरनी  
दो० मरम वचनसुनि राउकह, कहु कछुदोपन तोर ॥

लागेउतोहिपिसाचजिमि, कालकहावतमोर ॥ ३५॥

चहतन भरत भूपपद भारे \* विधिवमकुमतिवसीजियती

सोसब मोर पाप परिनामू \* भयउकुठाहरजेहि विधिबामू  
 सुवसवसिहिफिरि अवधसुहाई \* सबगुनधाम राम प्रभुताई  
 करिहिहिंभाइसकल सेवकाई \* होइहि तिहुँपुर राम बडाई  
 तोर कलंक मोर पछिताऊ \* मुएहुनमिटिहि न जाइहिकाऊ  
 अबतोहिनीक लागकरुसोई \* लोचन बोट बैठु मुहँ गोई  
 जबलगिजिअउँकहँकरजोरी \* तबलगिजनिकछु कहसिबहोरी  
 फिरिपछितैहसिअंतअभागी \* मारसि गाइ नहारु लागी  
 दो० परेउराउकहि कोटिविधि, काहे करसि निदान ॥

कपटसयानिन कहतिकछु, जागतिमनहुमसान॥३६॥

रामराम रटविकल भुआलू \* जनुबिनु पंख बिहंग बेहालू  
 हृदय मनाव भोरजनि होई \* रामहि जाइकहइजनि कोई  
 उदयकरहुजनिरविरधुकुलगुर \* अवधविलोकिमूलहोइहिउर  
 भूप प्रीति कैकइ कठिनाई \* उभयअवधिविधिरची बनाई  
 विलपतनृपहिभयउभिनुसारा \* बीना बेनु संखधुनि द्वारा  
 पढहिंभाटगुनगावहिंगायक \* सुनतनृपहिजनु लागहिंसायक  
 मंगल सकल सोहाहिंन कैसे \* सहगामिनिहि बिभूषन जैसे  
 तेहि निसिनीदपरीनहिंकाहू \* रामदरस लालसा उछाहू  
 दो० द्वारभीरसेवक सचिव, कहहिंउदितरबिदेखि मा०पा० ११

जागेउअजहुँन अवधपति, कारन कवनबिसोखि॥३७॥

पछिले पहरभूपनित जागा \* आजहमहिवडअचरजलागा  
 जाहुसुमंत्र जगावहु जाई \* कीजिअकाजरजायसु पाई  
 गये सुमंत्र तब राउर पाहीं \* देखिभयावन जात डेराहीं  
 धाइ खाइ जनुजाइन हेरा \* मानहुविपति विषाद बसेरा

पूछे कोउन ऊतर देई \* गए जेहिभवन भूप कैकेई  
 कहिजयजीवबैठ सिरनाई \* देखिभूप गतिगएउ सुखाई  
 सोचविकलविवरनमहिपरेऊ \* मानहुँकमल मूलपरिहरेऊ  
 सचिव समीत सकैनहिपूछी \* बोली असुभ भरीसुभछूछी  
 दो० परीन राजहिं नींद निसि, हेतु जान जगदीस ॥

रामराम रटि भोर किय, कहइनमरममहीस ॥३८॥

आनहु रामहि बेगि बोलाई \* समाचार तब पूछहु आई  
 चलेउसुमंत्रराय रुखजानी \* लखीकुचालिकीन्हकछुरानी  
 सोचविकल मगपरइन पाऊ \* रामहिवोलिकहिहिकाराऊ  
 उरधरि धीरज गएउहुआरे \* पूछहिंसकल देखिमन मारे  
 समाधान करिसो सबहीका \* गयउजहाँदिनकरकुलटीका  
 रामसुमंत्रहि आवत देखा \* आदरकीन्ह पितासमलेखा  
 निरखिवदन कहिभूप रजाई \* रघुकुलदीपहि चलेउलेवाई  
 रामकुभाँतिसचिवसंगजाहीं \* देखिलोगजहतहबिलखाहीं  
 दो० जाइदीख रघुवंस मनि, नरपति निकट कुसाज ॥

सहमिपरेउ लखिसिंधिनिहि, मनहु वृद्धगजराज३९॥

सूखहिं अधर जरहु सबअंगू \* मनहु दीनमनिहीन सुअंगू  
 सरुष समीप दीषि कैकेई \* मानहु मीचघरी गनिलेई  
 करुना मयमृदु राम सुभाऊ \* प्रथमदीषदुषसुना न कांऊ  
 तदपिधीरधरिसमउ विचारी \* पूछीमधुर वचन महतारी  
 मोहिकहुमाततातदुष कारन \* करिअजतन जेहिदोइनिवारन  
 सुनहु राम सब कारन एहू \* राजहि तुमपर बहुत सनेहू  
 देनकहेन्हिमोहिदुइवरदाना \* मांगेउजोकहुमोहिसोहाना

सो सुनिभएउ भूपउरसोचू \* छाडिनसकहिंतुम्हारसको-  
दो० सुतसनेह इत बचन उत, संकट परेउ नरेस ॥  
सकहुत आयसु धरहु सिर, भेटहु कठिन कलेस ४०॥

निधरक बैठिकहे कटुबानी \* सुनतकठिनता अतिअकुलानी  
जीभकमान बचन सरनाना \* मनहुमहिपमृदुलच्छसमाना  
जनु कठोर पनधरे सरीरु \* सिषइधनुष विद्या वरवीरु  
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई \* बैठिमनहुतन धरिनिठुराई  
मनमुसुकाई भानुकुल भानू \* रामसहज आनंदनिधानू  
बोलेबचन विगत सब दूषन \* मृदुमंजुलजनुवाग विभूषन  
सुनुजननीसोइसुतबडभागी \* जोपितुमातुबचनअनुरागी  
तनय मातु पितुतोषनिहारा \* दुर्लभजनानि सकल संसारा  
दो० सुनिगनमिलन विसेषिवन, सबहिभाँतिहितमोर ॥  
तेहिमहँपितुआयसुबहुरि, सम्मत जननी तोर ॥४१॥

भरतप्रानप्रिय पावहिं राजू \* विधिसवविधिमोहिसन्मुषआजू  
जौं न जाउँवनऐसेहु काजा \* प्रथमगनिअमोहिमूढसमाजा  
सेवहि अरंडकलपतरुत्यागी \* परिहरिअमृतलेहिंविषमाँगी  
ते उनपायअससमउ चुकाहीं \* देषुविचारि मातुमन माहीं  
अब एक दुषमोहि विसेषी \* निपटबिकलनरनायकदेषी  
थोरोहिवात पितहिदुष भारी \* होतिप्रतीतिनमोहिमहँतारी  
राउधीर गुनउदाधि अगाधू \* भामोहितेकछुबड अपराधू  
जातेमोहिन कहतकछु राऊ \* मोरिसपथतोहिकहु सतिभाऊ  
दो० सहजसरल रघुवरबचन, कुमतिकुटिल करिजान ॥  
चलइजौंक जिमिबक्रगति, यद्यपिसलिलसमान ४२॥



रहँसी रानि रामरुष पाई \* बोली कपट सनेह जनाई  
 सपथतुम्हारभरतकइआना \* हेतुन दूसर में कछु जाना  
 तुम्हअपराधजोगनहिताता \* जननीजनक बंधुसुपदाता  
 रामसत्य सबजोकछु कहहू \* तुम्हपितुमातुवचनरतअहहू  
 पितहिंबुझाई कहहु बलिसोई \* चौथेपन जेहिअजसन होई  
 तुम्हसमसुअनसुकृतजेहिदीन्हे \* उचितनतासुनिरादरकीन्हे  
 लागहिं कुमुषवचन सुभकैसे \* मगह गयादिक तीरथजैसे  
 रामहि मातु वचन सब भाए \* जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाए  
 दो० गइमुरछा रामहि सुमिरि, नृपफिरि करवटलीन्हि ॥

सचिवरामआगमनकहि, विनयसमयसमकीन्हि ४३॥

अवनिपअकनिरामपगधारे \* धरिधीरज तवनयन उधारे  
 सचिव सँभारि राव बैठारे \* चरनपरत नृपराम निहारे  
 लिए सनेह बिकल उरलाई \* गइमनिमनहुफनिकफिरिपाई  
 रामहि चितइ रहेउ नरनाहू \* चला बिलोचनवारि प्रबाहू  
 सोकबिबसकछु कहइनपारा \* हृदयलगावत बारहिं बारा  
 विधिहिमनावराउमनमाहीं \* जेहिरघुनाथनकानन जाहीं  
 सुमिरिमहेसहि कहइनिहोरी \* विनतीसुनहुसदासिवमोरी  
 आसुतोष तुहम्अवढर दानी \* आरातिहरहु दीनजनजानी  
 दो० तुम्ह प्रेरक सबके हृदय, सोमति रामहि देहु ॥

वचन मोरि तजिरहहिं घर, परिहरिसीलसनेहु ॥ ४४॥

अजसहोउजगसुजसनसाऊ \* नरकपरौं बरुसुरपुर जाऊ  
 सबदुष दुसह सहावहु मोहीं \* लोचन वोटरामजनि होहीं  
 असमनगुनइराउ नहिंबोला \* पीपरपात सरिसमन डोला

रघुपातिपिताहि प्रेमवसजानी \* पुनिकछुकहिहिमातुअनुमानी  
देसकाल अवँसर अनुसारी \* बोलेवचन विनीत विचारी  
तात कहौं कछुकरौं टिठाई \* अनुचितछमवजानिलरिकाई  
अतिलघुवातलागि दुषपावा \* काहुनमोहिकहिप्रथमजनावा  
देषि गोसाँइहि पूछिउंमाता \* सुनिप्रसंगभए सीतलगाता  
दो० मंगलसमय सनेहवस, सोचपरिहरिअतात ।  
आयसुदेइअहरषि हिय, कहिपुलके प्रभुगात ४५ ॥

धन्य जनम जगतीतलतासू \* पितहिप्रमोदचरितसुनिजासू  
चारिपदारथ करतल ताके \* प्रियपितुमातुप्रानसमजाके  
आयसुपालिजनम फलपाई \* अहँ उँ बैगिहि होउ रजाई  
विदामातुसन आवौं माँगी \* चलिहौंवनहिवहुरिपगलागी  
असकहिरामगवनतबकीन्हा \* भूपसोक बस उतरनदीन्हा  
नगरब्यापिगइवात सुतीछी \* छुअतचढीजनुसवतनबीछी  
सुनिभएविकलसकलनरनारी \* बेलिविटपजिमिदेषिदवारी  
जोजहँसुनइ धुनइ सिरसोई \* बढविषादनहि धीरज होई  
दो० सुषसुषाहिलोचनश्रवहिं, सोकनहृदय समाइ ।

मनहुकरुन रसकटकई, उतरीअवधवजाइ ४६ ॥  
मिलेहिमाँझविधिवातविगारी \* जहँतहँ देहिं कैकइहिगारी  
एहिपापिनिहि बूझिकापरेऊ \* छाइभवन परपावक धरेऊ  
निजकरनयनकाढिचहदीषा \* डारिसुधा विषचाहतिचीषा  
कुटिलकठोरकुबुद्धिअभागी \* भइ रघुवंस बेनुवन आगी  
पालव बैठिपेटएहि काटा \* सुषमहँ सोकठाटधरिठाटा  
सदाराम एहि प्रान समाना \* करनकवनकुटिलपनठाना

सत्यकहहिं कबिनारिसुभाऊ \* सबविधिअगहअगाधदुराऊ  
निजप्रतिबिंबवरुगहिजाई \* जानिनजाइनारिगति भाई  
दो० काहनपावकजारिसक, कानसमुद्र समाइ ।

कानकरइ अबलाप्रबल, केहिजगकालनपाइ ४७

कासुनाइ विधिकाह सुनावा \* कादेपाइ चहकाह देपावा  
एककहहिं भल भूपनकीन्हा \* बरविचारिनहिकुमतिहिदीन्हा  
जोहठिभएउसकलदुषभाजनु \* अबलाविवसग्यानगुनगाजनु  
एकधरमपरमिति पहिचाने \* नृपहि दोसनहिदेहिं मयाने  
सिबिदधीचिहरिचंद कहानी \* एकएक मनकहहिं वपानी  
एकभरतकर संमत कहहीं \* एकउदास भायमुनि रहहीं  
कानमूंदिकर रदगहि जीहा \* एककहहिंयह वातअलीहा  
सुकृतजाहिंसकहततुम्हारे \* रामभरत कहं परमापिआरे

दो० चंदचवडवरुअनलकन, सुधाहोइ विषतूल ॥

सपनेहुकबहुं नकरहिं कछु, भरतरामप्रतिकूल ४८

एक विधाताहि दूषन देहीं \* सुधादिपाइ दीन्ह विषजेहीं  
परभरनगर सोच सब काहू \* दुसह दाहउरमिट्टा उछाहू  
विप्रबधूकुल मान्य जठेरी \* जोप्रियपरम कैकडू केरी  
लगीं देनसिपसील सराही \* बचनवान समलागहिंताही  
भरतनमोहिप्रियरामसमाना \* सदाकहहुयहसबजगजाना  
करहु रामपर सहज सनेहू \* केहिअपराध आज बनदेहू  
कबहुंन किएहु सवतिआरेसू \* प्रीतिप्रतीति जान सबदेसू  
कौसल्या अब काह बिगारा \* तुम्हजेहिलागिबज्र पुरपारा

दो० सीयकिपियसंगपरिहरिहि, लषन किरहिहहिंधाम ॥

राजकिभूजवभरतपुर, नृपकिजिइहिविनुराम ४९ ॥

असविचारि उरछाडहु कोहू \*सोककलंक कोठिजनिहोहू  
भरतहिअवासि देहु जुबराजू \*कानन काहराम कर काजू  
नाहिन राम राज के भूषे \*धरमधुरीन विषय रसरूपे  
गुग्गुह बसहु रामतजि गेहू \*नृपसन असवर दूसर लेहू  
जौं नहिंलगिहहु कहे हमारे \*नहिंलागिहिकछुहाथतुम्हारे  
जौंपरिहांस कीन्हकछु होई \*तौकहिप्रगट जनावहु सोई  
रामसरिससुतकानन जोगू \*काहकहिहिसुनितुम्हकहँलोगू  
उठहुवेगि सोइ करहुउपाई \*जेहिबिधिसोककलंकनसाई  
छं० जेहिभाँतिसोककलंकजाइउपायकरिकुलपालही ॥

हठिफेररामहिजातवनजनिवातदूसरचालही ॥

जिमिभानुविनुदिनप्रानविनुतनचंदविनुजिमिजामिनी  
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुविनुसमुश्रुधौंजियभामिनी ॥

सो० सखिन्ह सिखावनदीन्ह, सुनतमधुरपरि नामाहित ॥

तेहि कछुकान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ५० ॥

उतरन देइ दुसहरिसरूपी \*मृगिन्हचितवजनुबाधिनिभूषी  
व्याधिअसाधिजानितिन्हत्यागी \*चलींकहतमतिमंद अभागी  
राजकरत येहिदैव विगोई \*कीन्हेसिअसजसकरइनकोई  
एहिविधिविलपहिंपुरनरनारी \*देहिंकुचालिहिकोटिकगारी  
जरहिंविषमजरलोहिंउसासा \*कवनिरामविनुजीवनआसा  
विपुलवियोगप्रजाअकुलानी \*जनुजलचरगन सूषत पानी  
अतिविषादवस लोगलोगाई \*गए मातु पहिराम गोसाई



मुषप्रसन्न चितचौगुन चाऊ \* इहइ सो वजनि रापै राऊ  
दो० नवगयंद रघुवीर मनु, राज अलान समान ॥

छटजानिवनगवनसुनि, उरअनंद अधिकान ५१ ॥

रघुकुलतिलकजोरिदोउहाथा \* मुदितमातुपदनाएउ माथा  
दीन्हि असीसलाइउरलीन्है \* भूपन वसननिछावरिकीन्है  
बार बार मुष चूमति माता \* नयननेहजलपुलकितगाता  
गोदराषि पुनि हृदय लगाए \* श्रवतप्रेम रमपयद सुहाए  
प्रेम प्रमोदनकछु कहिजाई \* रंकधनद पदवी जनु पाई  
सादर सुंदर बदन निहारी \* बोलीमधुर वचन महतारी  
कहहुतात जननी बलिहारी \* कबहिलगनमुदमंगल कारी  
सुकृत सीलमुष सीव सुहाई \* जनमलाभकइअवधिअघाई  
दो० जेहिचाहत नरनारिसब, अतिआरत एहिभांति ॥

जिमिचातकचातकि तृषित, दृष्टिसरदरितुस्वाति ५२  
तात जाउँबलि बेगि नहाहू \* जोमनभाव मधुर कछुषाहू  
पितुसमीप तबजाएहु मैया \* मै बढिवार जाइबलि मैया  
मातुवचनसुनिअतिअनुकूल \* जनुमनेह सुरतरुके फूल  
मुषमकरंद भरे श्री मूला \* निरपिराम मनभँवरनभूला  
धरमधुरीन धरमगति जानी \* कहेउमातुसनअति मृदुवाना  
पितादीन्ह मोहिकाननराजू \* जहँ सबभांतिमोरबडकाजू  
आयसुदेहिमुदित मनमाता \* जेहिमुदमंगलकानन जाता  
जनिसनेहबस डरपसि मोरें \* आनँद अंब अनुग्रह तोरें  
दो० वरषचारिदसविपिनवसि, करिपितु वचन प्रमान ॥

आइपाइपुनि देषिहों, मनजनि करसिमलान ५३ ॥

वचन विनीत मधुररघुवरके \* सरसमल्लो मातु उरकरवं  
सहमिसृषिसुनिसीतल बानी \* जिमिजवासपरेपावस पानी  
कहिनज। इकहुहृदय विषाद \* मनहुमृगी सुनि केहरिनाद  
नयनसजलतनथरथर कापी \* माँजहिषाईमीनजनु मापी  
धरि धीरज सुत वदननिहारी \* गदगदवचनकहातिमहतारी  
तात पितहि तुम्हप्रानपियारे \* देखिमुदितनितचरिततुम्हारे  
राजदेन कहँ सुभादिनसाधा \* कहे उजानवनकैहिअपराधा  
तातसुनावहु मोहि निदानू \* कोदिनकरकुलभए उकसानू  
दो० निराषि रामरूप सचिवसुत, कारन कहे उ बुझाइ ॥  
सुनिप्रसंग रहिमूकजिमि, दसावरनिनाहिजाइ ॥५४॥

राषिनसकइनकहिसक जाहू \* दुहँ माँति उर दारुन दाहू  
लिषत सुधाकरगालिषिराहू \* विधिगतिवामसदासवकाहू  
धरम सनेह उभयमति घेरी \* भइगतिसाँपछुँदरि केरी  
राषों सुताहि करों अनुरोध \* धरमजाइ अरुबंधु विरोध  
कहोंजान बनतौ बडि हानी \* संकटसोच विवस भइरानी  
बहुरिससुझितियधरमज्यानी \* रामभरतदोउसुतसमजानी  
सरल सुभाउ राम महतारी \* वाली वचन धीरधरि भारी  
तातजा उँवालीकीन्हहुनीका \* पितुआयसुसवधरमकटीका  
दो० राजदेन कहि दीन्ह बन, मोहिन सोच दुष लेस ॥  
तुम्हबिनुभरतहिभूपतिहि, प्रजहि प्रचंडकलस ॥५५॥

जौं केवलपितुआयसु ताता \* तौजनिजाहुजानिबडि माता  
जौं पितुमातुकहेउवनजाना \* तौकाननसतअवधसमाना  
पितु बनदेव मातु बनदेवी \* षगमृगचरन सरोरुह सेवी

अंतहुँ उचित नृपहि बनवासू \* वयबिलोकि हियहोइहरामू  
 बहभागी बनअवधअभागी \* जोरघुबंसतिलकतुम्हत्यागी  
 जों सुतकहों संग मोहि लेहू \* तुम्हरे हृदय होइ संदेहू  
 पूतपरमप्रिय तुम्ह सबहीके \* प्रान प्रानके जीवन जीके  
 तेतुम्हकहहु मातुवन जाऊँ \* में सुनिबचनबोठिपाछिताऊँ  
 दो० यहविचारि नहिं करों हठ झूठ मनेह बढाइ ॥

मानिमातुकरनातबलि, सुरतिविसरिजनिजाइ ॥ ५६ ॥  
 देवपितरसबतुम्हहिं गोसाई \* राषहु पलकनयनकी नाई  
 अवधिअंबुप्रियपरिजनमीना \* तुम्हकरुनाकरधरमधुरीना  
 असविचारिसोइकरेहुउपाई \* सबहिजिअतजेहिमेंटहुआई  
 जाहुसुषेन बनहि बलिजाऊँ \* करिअनाथजनपरिजनगाऊँ  
 सबकरआजसुकृतफलबीता \* भएउकरालकाल विपरीता  
 बहुविधिविलपिचरन तपयानी \* परमअभागिनिआपुहिजानी  
 दारुन दुसह दाहउर व्यापा \* बरनिनजाइविलाप कलापा  
 राम उठाइ मातु उरलाई \* कहिमृदुवचनबहुरिसमुझाई  
 दो० समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाइ ॥

जाइसासु पदकमल जुग, बंदि बैठि सिरनाइ ॥ ५७ ॥  
 दीन्हिअसीससासु मृदुबानी \* अतिसुकुमारिदेपिअकुलानी  
 बैठि नमितमुषसोचतिसीता \* रूपरासि पतिप्रेम पुनीता  
 चलन चहतवन जीवननाथू \* केहिसुकृतीसनहोइहिसाथू  
 कीतन प्रानकिकेवलप्राना \* बिधिकरतबकछुजाइनजाना  
 चारु चरन नषलेपतिधरनी \* नूपुरमुषरमधुर कविवरनी  
 मनहु प्रेमवसाधितनी करहीं \* हमहिसीयपदजनिपरिहरहीं

मंजु विलोचन मोचतिबारी ✽ बोली देषि राम महंतारी  
तातसुनहुसियअतिसुकुमारी ✽ सासुससुरपरिजनहिपिशारी

दो० पिताजनक भूपाल मनि, ससुर भानु कुल भानु ।

पतिरविकुल कैरवविपिन, विधुगुनरूपनिधानु ॥५८॥

मैं पुनि पुत्रवधू प्रियपाई ✽ रूपरासि गुनसील सुहाई  
नयनपुतारिकरि प्रीतिबढाई ✽ राषे उँप्रान जानकिहि लाई  
कलपबेलिजिमिवहुविधिलाली ✽ सींचिसनेहसालिलप्रतिपाली  
फूलतफलतभएउविधिबामा ✽ जानिनजाइ काहपरिनामा  
पलँगपीठितजिगोदहिं डोरा ✽ सियनदीन्हपगअवानिकठोरा  
जिअनमूरिजिमिजोगवतरहऊँ ✽ दीपवातिनहिं टारन कहऊँ  
सोइसियचलनचहातिवनसाथा ✽ आयसु काहहोइ रघुनाथा  
चंदकिरिन रसरसिकचकोरी ✽ रविरुषनयनसकैकिमिजोरी

दो० करि केहरि निसिचर चरहिं. दुष्ट जंतु बन भूरि ।

विषवाटिका किसोहसुत, सुभग सजीवनिमूरि ॥५९॥

वनहितकोलकिराताकिसोरी ✽ रचीबिरांचि विषयसुष भोरी  
पाहनकृमिजिमि कठिनसुभाऊ ✽ तिन्हहिंकलेसनकाननकाऊ  
कैतापस तियकानन जोगू ✽ जिन्हतपहेतु तजासबभोगू  
सियबनवासिहितातकेहिभांती ✽ चित्रलिषितकपिदेपिडराती  
सुरसर सुभगवनज बनचारी ✽ डावर जोग कि हंस कुमारी  
असविचारि जसआयसुहोई ✽ मैंसिपदेउँ जानकिहि सोई  
जौंसिय भवनरहइकह अंबा ✽ मोहिं कहँहोइवहुतअवलंबा  
सुनिरघुवीर मातु प्रियबानी ✽ सीलसनेह सुधाजनु सानी



दो० कहि प्रिय वचन विवेकमय, कीन्हमातु परितोष ॥

लगेप्रबोधनजानकिहि, प्रगटिविपिनगुनदोष ॥ ६० ॥

मातुसमीप कहत सकुचाहीं \* बोलेसमउममुझि मनमाहीं  
राजकुमारिसिषावन सुनहू \* आनभाँतिजिय ननिरुहुगुनहू  
आपन मोरनीक जौं चहहू \* वचनहमार मानि गृहरहहू  
आयपु मोर सासु सेवकाई \* सबविधिभामिनि भवनभलाई  
येहितेअधिक धरमनहिंदूजा \* सादरसासु ससुरपद पूजा  
जबजबमातुकरिहिसुधिमोरी \* होइहिप्रेमविकलमतिभोरी  
तबतबतुम्हकहिकथापुरानी \* सुंदरि समुझाएहु मृदुवानी  
कहौंसुभाव सपथसत मोही \* सुमुषि मातुहितरापों तोही  
दो० गुरु श्रुति संमत धरमफल, पाइअविनहिं कलेस ॥

हठवस सब संकट सहे, गालवनहुष नरेम ॥ ६१ ॥

मैं पुनिकरिप्रमान पिबुवानी \* बेगिफिरवसुनुमुमुपि सयानी  
दिवसजातनहिलागिहिवारा \* सुंदरिसिपवन सुनहु हमारा  
जौं हटकरहु प्रेम बस बामा \* तौतुम्ह दुपपा उवपरिनामा  
काननकाठिन भयंकर भारी \* घोर घामहिमवारि बयारी  
कुसकंटक मगकाँकर नाना \* चलवपयादेहिवितुपदत्राना  
चरनकमल मृदुमंजु तुम्हारे \* मारग अगम भूमिधरभारे  
कंदर पोह नदी नद नारे \* अगमअगाधनजाहिनिहारे  
भालु बाघ वृक केहरिनागा \* करहिनादसुनिधीरजभागा  
दो० भूमिसयन बलकल बसन, असन कंदफल मूल ॥

तेकिसदा सबदिनमिलहिं, समयसमयअनुकूल ॥ ६२ ॥

नरअहार रजनीचर करहीं \* कपटवेषविधिकोटिकधरहीं

लागइ अति पहारकर पानी \* विपिनविपतिनाहिं जाइवानी  
ब्यालकरालविहंग वनघोरा \* निसिचर निकरनारि नरचोरा  
डरपहिं धीरगहनसुधिआये \* मृगलोचनितुहभीरुसुभाए  
हंसगवनितुम्हनाहिंवनजोगू \* सुनिअपजसमोहिं देइहिलोगू  
मानससलिलधुधाप्रतिपाली \* जिअइकिलवन पयोधिमराली  
नवरसाल वनविहरन सीला \* सोहकिकोकिल विपिन करीला  
रहुभवनअसहदय विचारी \* चंदवदनि दुष कानन भारी  
दो० सहजसुहृदगुरुस्वामिसिष, जोनकरइ सिरमानि ॥  
सो पछिताइ अघाइउर, अवसिहोइहितहानि ॥६३॥

सुनिमृदुवचनमनोहरपियके \* लोचनललितभरे जलसिअके  
सीतालिसिष दाहक भइकैसे \* चकइहिसरदचंद निसिजैसे  
उतरन आव विकल वैदेही \* तजनचहतसुचि स्वामिसनेही  
बरबसरोकि बिलोचन बारी \* धरिधीरजउरअवनिकुमारी  
लागिसासुपग कहकरजोरी \* छमावि देविवडि अविनयमारी  
दीन्हिप्रानपतिमोहिं सिषसोई \* जेहिबिधिमोरपरमहितहोई  
मैं पुनिसमुझिदीपमनमाहीं \* पियवियोगसमदुष जगनाहीं  
दो० प्रान नाथ करुना यतन, सुंदर सुषद सुजान ॥

तुम्हबितुरबुकुलकुमुद विधु, सुरपुरनरकसमान ॥६४॥  
मातु पिताभगिनीप्रियभाई \* प्रियपरिवार सुहृद समुदाई  
सासु समरगुरु मुजन सहाई \* सुतसुंदर सुसील सुषदाई  
जहलगि नाथनेह अरुनाते \* पियविनु तिअहितरनिहुतेताते  
तनधन धामधरानि पुरराजू \* पति बिहीनसब सोकसमाजू  
भोग रोग सम भूषन भारू \* जमजातना सारिस संसारू

प्राणनाथतुम्हबिनुजगमाहीं \* मोकहंसुषदकतहुं कछुनाहीं  
जियबिनुदेह नदी बिनुबारी \* तैसिअनाथ पुरुष बिनुनारी  
नाथ सकलसुषसाथ तुम्हारे \* सरदाविमलविधुवदन निहारे  
दो० षगमृग परिजन नगरवन, बलकल विमल दुकूल ।

नाथसाथ सुरसदन सम, परनसालसुषमूल ॥ ६५ ॥

वन देवी वनदेव उदारा \* करिहहिं सासु समुर समसारा  
कुसकिसलय साथी मुहाई \* प्रभुसंग मञ्जुमनोज तुराई  
कंदमूलफल अमिअअहारू \* अवधमौधसत मरिमपहारू  
छिनछिनप्रभुपदकमलविलोकी \* रहिहोंमुदित दिवसजिमिकोकी  
वन दुषनाथ कहे बहुतेरे \* भयविपाद परिताप घनेरे  
प्रभुवियोग लल्लेस समाना \* सबमिलिहोहिंन कृपानिधाना  
असजियजानिसुजानसिरोमनि \* लेइअसंगमोहिंछाटि अजनि  
बिनती बहुतकरोँका स्वामी \* करुनामय उरअंतरजामी  
दो० राषिअअवधजोअवधि अगि, रहतजानिअहि प्राण ।

दीनबंधु सुंदर सुषद, सील सनेह निधान ॥ ६६ ॥

मोहिमगचलतनहोइहिहारी \* छिनछिनचरनमरोज निहारी  
सबहिभाँतिपिअसेवाकरिहों \* मारगजनितमकलअमहरिहों  
पाय पषारि बैठि तरु छाहीं \* करिहोंबाउमुदितमनमाहीं  
श्रमकनसहित स्यामतनदेषे \* कहंदुपसमउ प्राणपति पेषे  
सममहित्रिनतरुपल्लवडासो \* पायपलोटिहिमव निसिदासा  
बार बार मृदु मूरति जोही \* लागिहितातिवयारु न मोही  
कोप्रभुसंगमोहि चितवनिहारा \* सिंधुबधुहिजिमिप्रसकसियारा  
मैं सुकुमारि नाथवन जोगू \* तुम्हहि उचिततपमोकहंभोगू

दो० ऐसेउबचन कठार सुनि जौन हृदउ विलगान ॥

तौप्रभु विषम वियोग दुष, सहिहहिं पाँवरप्रान॥६७॥  
असकहिसीयविकलभइभारी \* वचनवियोगनसकी सँभारी  
देषिदसारघुपाति जिअजाना \* हठिरापेनाहि राषिहिप्राना  
कहेउ कृपालभाबुकुल नाथा \* परिहरिसोचचलहुवनसाथा  
नाहिंविषादकरअँसर आजू \* बेगिकरहुवन गवन समाजू  
कहिप्रियवचनप्रियासमुझाई \* लगेमातु पद आसिष पाई  
बेगि प्रजादुष मेटव आई \* जननीनिठुरविसरिजनिजाई  
फिरिहिदसाविधिवहुरिकिमोरी \* देषिहोंनयन मनोहर जोरी  
सुदिनसुघरीतात कवहोइहि \* जननीजिअतबदनविधुजोइहि  
दो० बहुरि बछकहि लालकहि, रघुपाति रघुवर तात ॥

कवाहिं बोलाइलगाइहिय, हरषिनिरषिहों गात ॥६८॥  
लषिसनेह कातरि महतारी \* वचननआवविकलभइभारी  
रामप्रबोधकीन्ह विधिनाना \* समउ सनेहन जाइ बषाना  
तब जानकी सासुपग लागी \* सुनिअमायमँपरमअभागी  
सेवासमय दइअवन दीन्हा \* मोरमनोरथसफलनकीन्हा  
तजबछोभजनिल्लाडिअछोहू \* करमकठिनकछुदोषनमोहू  
सुनिसियवचनसासुअकुजानी \* दसाकवनिविधिकहों बषानी  
बारहिंबार लाइउर लीन्ही \* धरिधीरजसिषआसिषदीन्ही  
अचलहोहुअहिवात तुम्हारा \* जबलगिंगजमुनजलधारा  
दो० सीतहि सासुअसीससिष, दीन्ह अनेक प्रकार ॥

चलीनाइपदपदुमासिर, अतिहित बारहिबार ॥६९॥  
समाचारजब लछिमनपाये \* व्याकुलविलषबदन उठिधाये



कंपपुलकतननयन सनीरा \* गहेचरन अतिप्रेम अधीरा  
 कहिनसकतक मुचितवत ठाढ़े \* मीनदीन जगुजल्लेत काढ़े  
 सोचहृदयविधिकाहोनिहारा \* सबसुपसुकुतामिरान हमारा  
 मोकहंकाह कहब रघुनाथा \* रपिहहिंभवनकिलेइहिंसाथा  
 राम बिलोकि बंधुकर जोरे \* देह गेहसब सन त्रिन तोरे  
 बोले वचन राम नयनागर \* सीलसनेह सरल सुपमागर  
 तात प्रेमवस जनिकदराइ \* समुझिहृदयपरिनाम उछाइ  
 दो० मातु पितागुरु स्वामिसिष, सिरधरिहरहिंमुभायं ॥

लहेउलाभतिन्हजनमकर, नतरुजनमजगजायं ॥ ७० ॥  
 असजियजानिसुनहुसिष भाई \* करहुमातु पितु पद मेवकाई  
 भवनभरत रिपुमूदन नाहीं \* राववृद्धमम दुप मन माहीं  
 मैवनजाउँतुम्हहिलेइ साथी \* होइमवहिंविधिअवधग्रनाथा  
 गुरु पितुमातुप्रजा परिवारु \* सबकह परैहुमह दुपभारु  
 रहहु करहु सबकर परितोष \* नतरुतात होइहि बड दोष  
 जासुराज प्रियप्रजा दुषारी \* सोनृपअधामिनरकअधिकारी  
 रहहुतात असिनीतिविचारी \* सुनतलपनभयेब्याकुलभारी  
 सिअरे वचन सूषिगए कैसे \* परसततुहिन तामरस जैसे  
 दो० उतरुनआवत प्रेमवस, गहे चरनअकुलाइ ॥

नाथदासमइ स्वामितुम्ह, तजहुतकाहवसाइ ॥ ७१ ॥  
 दीन्हिमोहिसिषनीकिगोसाई \* लागिअगमअपनी कदराई  
 नरवर धीर धरम धुरधारी \* निगमनीतिकहेतेअधिकारी  
 मैसिसु प्रभुसनेह प्रतिपाला \* मंदर मेरुकि लेहिं मराला  
 गुरु पितुमातु नजानों काइ \* कहों सुभाउनाथ पातिआइ

जहँलगि जगत सनेहसगाई \* प्रीतिप्रतीतिनिगमनिजगाई  
मोरेसबइ एक तुम्ह स्वामी \* दीनबंधु उर अन्तर जामी  
धरम नीतिउपदेसिअताही \* कीरतिभूतिमुगतिप्रियजाही  
मनक्रम वचन चरनरतहोई \* कृपासिंधुपरि हरिअकिसोई  
दो० करुना सिंधुसुबंधु के, सुनि मृदुवचन विनीत ॥

समुझाए उरलाय प्रभु, जानिसनेह समीत ॥७२॥

मागहु विदा मातु सन जाई \* आवहुवेगि चलहु बनभाई  
मुदितभए सुनि रघुबरवानी \* भएउलाभवडगइवडिहानी  
हरषितहृदय मातु पहिआए \* मनहुँ अंधफिरिलोचनपाए  
जाइजननिपदनाएउमाथा \* मरुघुनंदन जानकिसाथा  
पूछे मातु मलिन मन देषी \* लषनकही सबकथा विसपी  
गई सहामिसुनिवचनकठोरा \* मृगीदेषि दवजनु चहुँओरा  
लषन लषे उभाअनरथआजू \* एहि सनेहबसकरव अकाजू  
मागतविदासभय सकुचाहीं \* जाइसंगविधिकहिहिकिनाहीं  
दो० समुझि सुमित्रा रामसिय, रूप सुसील सुभाउ ॥

नृपसनेह लषिधुनेउ सिर, पापिनिदीन्हकुदाउ ॥७३॥

धीरज धरेउ कुँअवसरजानी \* सहजसुहृय बोली मृदुवानी  
तात तुम्हारि मातु वैदेही \* पिताराम सबभाँति सनेही  
अवधतहाँजहँ राम निवास \* तहँइदिवसजहँ भानुप्रकास  
जौपै सीय राम बन जाहीं \* अवधतुम्हारकाजकछुनाहीं  
गुर पितुमातु बंधुसुरसाँई \* सेइअहि सकलप्राणकीनाँई  
रामप्राणप्रिय जीवन जीके \* स्वारथ रहितसषा सबहीके  
पूजनीय प्रिय परम जहाँते \* सबमानिअहि रामके नाते

असजियजानि संगवनजाहू \* लेहुतात जग जीवन लाहू  
 दो० भूरिभागभाजनभएउ, मोहिसमेतबलिजाउँ मा० प० १२  
 जौं तुम्हरेमन छाडिछल, कीन्हरामपदठाउँ ७४ ॥

पुत्रवती जुवती जग सोई \* रघुपति भगतजासुसुतहोई  
 नतरुवाँझभलिवादिविआनी \* राम विमुपसुततेहितजानी  
 तुम्हरेहिभागराम बनजाहौं \* दूसर हेतु तात कछु नाहीं  
 सकल सुकृतकरबड फलयेहू \* राम सीयपद सहज सनेहू  
 राग शेषइरिषामद मोहू \* जानि सपनेहुइन्हकेवसहोहू  
 सकल प्रकार विकार विहाई \* मनक्रमबचनकरेहु सेवकाई  
 तुम्हकहँवनसबभाँति सुपासू \* संगपितुमातु रामसियजासू  
 जेहिनराम बनलहहिं कलेसू \* सुतसोइकरेहु इहइ उपदेसू  
 छं० उपदेसयहजेहिजाततुम्हरेरामसियसुपपावहीं ॥

पितुमातुप्रियपरिवारपुरसुषसुरतिवनविसरावहीं ॥

तुलसीप्रभुहिसिषदेइआयसुदीन्हपुनिआसिपदई ॥

रतिहोउअविरलअमलसियरघुवीरपदनितनितनई ॥

सो० मातु चरन सिरनाइ, चले तुरत संकितहृदय ।

बागुर बिषम तोराइ, मनहुभागमृगभागवस ॥ ७५ ॥

गएलपन जहँ जानकिनाथू \* भेमन मुदितपाइप्रियसाथू  
 बंदिराम सियचरन सुहाए \* चले संग नृप मंदिर आए  
 कहहिं परसपर पुरनरनारी \* भलिवनाइविधिवातविगारी  
 तनकसमनहुष बदन मलीने \* विकलमनहु मापीमधुछीने  
 करमीजहिंसिरधुनिपछिताहौं \* जगुबिनुपषविहगअकुलही  
 भइ बडि भीर भूप दरबारा \* वरनिनजाइविषाद अपारा

सचिव उठाइ राउ बैठारे ✽ कहिप्रियवचन रामपगधारे  
सियसमेतदोउतनयनिहारी ✽ व्याकुलभयउभूमिपतिभारी  
दो० सीयसहितसुतसुभगदोउ, देखिदेखिअकुलाइ ॥  
बारहिंवार सनेहवस, राउलेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइनबोलि विकलनरनाहू ✽ सोक जनितउर दारुनदाहू  
नाइसीस पदअति अनुरागा ✽ उठिरघुबीर विदातवमागा  
पितुअसीसआयसु मोंहिदीजै ✽ हरषसमयविसमउक्तकीजै  
तात किए प्रिय प्रेमप्रमादू ✽ जसजगजाइ होइ अपवादू  
मुनिसनेह बसउठिनरनाहाँ ✽ बैठारे रघुपाति गहि बाहाँ  
सुनहुताततुम्हकहँ मुनिकहहीं ✽ राम चराचर नायक अहहीं  
सुभअरुअसुभकरम अनुहारी ✽ ईसदेइ फल हृदय विचारी  
करै जो करम पावफलसोई ✽ निगम नीति असिकहसबकोई  
दो० औरकरइअपराधकोउ, औरपावफल भोग ॥

अतिबैचित्रभगवंतगति, को जगजानइजोग ॥ ७७ ॥  
राय राम राखनहित लागी ✽ बहुतउपायकिए छलयागी  
लखीराम रुख रहतन जाने ✽ धरम धुरंधर धीर सयाने  
तबनृपसीय लाइउर लीन्ही ✽ अतिहितबहुतभाँतिसिपदीन्ही  
कहि बनके दुषदुसह सुनाए ✽ सासुससुरापितुसुष समुझाए  
सियमनरामचरन अनुरागा ✽ घरनसुगमवनविषमन लागा  
औरौ सबाहिंसीय समुझाई ✽ कहिकहि बिपिनबिपतिअधिकाई  
सचिवनारिगुर नारिसयानी ✽ सहितसनेहकहहिं मृदुबानी  
मुम्हकहँतौ न दीन्हवनवामू ✽ करहुजोकहहिंससुर गुरेसासू  
दो० सिषसीतलहितमधुरमृदु, मुनिसीतहिनसोहानि ॥

सरदचंदचंदिनिलगत, जनुचकईअकुलानि ॥ ७८ ॥



सीय सकुच बस उतरनदेई \* सो सुनि तमकि उठी कैकेई  
 मुनिपटभूषनभाजन आनी \* आगे धरि बोली मृदुबानी  
 नृपहिप्रानप्रियतुम्ह रघुवीरा \* सीलसनेह न छाडिहिभीरा  
 सुकृतसुजस परलोक नसाऊ \* तुम्हहिजानवनकहिहिनकाऊ  
 असविचारिसोइकरहु जोभावा \* रामजनानिसिपसुनि सुषपावा  
 भूपहि वचन बान समलागे \* करहिंनप्रानपयान अभागे  
 लोगविकल मुरछितनरनाहू \* काहकरिअकछुमूझन काहू  
 रामतुरत मुनि वेष बनाई \* चलेजनकजनानिहिसिरनाई  
 दो० सजिवनसाजसमाजसव, बनिताबंधसमेत ॥

बंदिबिप्रगुरचरनप्रभु, चलेकरिसवहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि बसिष्ट द्वारभण्ठाटे \* देषे लोग विरह दवदाटे  
 कहिप्रियवचनसकल समुभाए \* विप्र वृंद रघुवीर बोलाए  
 गुरसनकहि वरपासन दीन्हे \* आदरदान विनयबसकीन्हे  
 जाचक दान मान संतोषे \* मीत पुनीत प्रेम परितोषे  
 दासी दास बोलाइ बहोरी \* गुरहि सोंपि बोले करजोरी  
 सबकै सार संभार गोसाई \* करविजनकजननी कीनाई  
 बारहिं बार जोरि जुगपानी \* कहतराम सबसन मृदुबानी  
 सोइसबभाँतिमोर हितकारी \* जेहिते रहइभुआल सुषारी  
 दो० मातुसकलमोरे विरह, जेहिनहोहिंदुषदीन ॥

सोइउपाउतुम्हकरेहुसब, पुरजनपरमप्रवीन ॥ ८० ॥

एहिबिधिरामसबहिंसमुभावा \* गुरपदपदुमहराषि सिरनावा  
 गनपति गौरि गिरीसमनाई \* चले असीस पाइ रघुराई  
 रामचलतअतिभणउ विषाद \* सुनिनजाइ पुरआरत नाद

कुसगुनलंकअवधअतिसोकू \* हरष विषादविवस सुरलोकू  
गइमुरछा तव भूपाति जागे \* बोलिसुमंत्र कहनअसलागे  
राम चलेवन प्रान न जाहीं \* केहिसुपलागिरहततनमाहीं  
एहितें कवनव्यथा बलवाना \* जोहुपपाइ तजहितनप्राना  
पुनि धरिधीर कहैरनाहू \* लैरथ संगसषा तुम्ह जाहू  
दो० सुठिसुकुमारकुमारदोउ, जनकसुतासुकुमारि ॥  
रथचढाइदेपराइवन, फिरेहुगएदिनचारि ॥ ८१ ॥

जौनहिं फिरहिंधीरदोउभाई \* सत्य संध दृढव्रत रघुराई  
तौतुम्हैबिनय करेहुकरजोरी \* फेरिअप्रभुमिथिलसकिसोरी  
जबसिय कानन देपिडराई \* कहेहुमोरिसिष अवसरपाई  
सासु समुर असकहेउ सँदेसू \* पुत्रिफिरिअवन बहुतकलेसू  
पितुगृहकबहुं कबहुंससुरारी \* रहेउजहाँ रुचिहोइतुम्हारी  
एहिविधिकरेहु उपाइकदंवा \* फिरइत होइ प्रान अवलंबा  
नाहित मोरमरन परिनामा \* कछुनवसाइभए विधिवामा  
असकहिमुरुछिपरामहिराऊ \* रामलपनसियआनिदेपाऊ  
दो० पाइरजायसुनाइसिर, रथअतिवेगवनाइ ॥  
गएउजहाँ बाहेरनगर, सीयसहितदोउभाइ ॥ ८२ ॥

तवसुमंत्र नृप वचन सुनाए \* करिविनती रथराम चढाए  
चढिरथसीयसहित दोउभाई \* चलेहृदयअवधहि सिरनाई  
चलतरामलपिअवधअनाथा \* विकल लोगसबलागे साथ  
कृपासिंधुबहुविधिसमुझावहिं \* फिरहिंप्रेमवसपुनिफिरिआवहिं  
लागतिअवधभयावनिभारी \* मानहु कालरातिआधियारी  
घोरजंतु समपुर नर नारी \* डरपहिं एकहिएक निहारी

घरमसान परिजनजनु पूता \* सुताहितमीतमनहु जमदूता  
बागन्हबिटपवेलिकुंमिलाहीं \* सारैतसरोवर देखि नजाहीं  
दो० हयगयकोटिन्हकेलिमृग, पुरपसुचातकमोर ।

पिकरथांगसुकसारिका, सारस हंसचकोर ॥ ८३ ॥

रामवियोग विकल सबठाहें \* जहँतहँमनहुचित्रलिपिकाहें  
नगर सफलवनगहवर भारी \* षगमृगविपुलसकलनरनारी  
विधिकैकईकिरातिनिकीन्ही \* जेहिंदवदुसहदसहुदिसिदीन्ही  
सहिनसके रघुवर विरहागी \* चलेलोग सबव्याकुलभागी  
सबहिंविचारकीन्हमनमाहीं \* रामलपनसियविनुसुषनाहीं  
जहाँरामतहँ सबइ समाज \* विनुरघुवीरअवधनहिकाजू  
चले साथ असमंत्र दिटाई \* सुरदुल्लभसुपसदन विहाई  
रामचरनपंकजप्रियजिन्हहीं \* विषयभोगवस हरहिकतिन्हहीं

दो० बालकवृद्धविहाइगृह लगे लोग सब साथ ।

तमसातीरनिवासकिय, प्रथमदिवसरघुनाथ ॥ ८४ ॥

रघुपति प्रजाप्रेमबस देषी \* सदयहृदयदुपभयउविसेषी  
करुनामय रघुनाथ गोसाँई \* वेगिपाइअहिं पीर पराई  
कहिसप्रेम मृदुवचन सुहाए \* बहुविधि रामलोगसमुझाए  
किएधरम उपदेस घनेरे \* लोगप्रेम बसफिरहिंन फेरे  
सीलसनेह छाडिनहिं जाई \* असमंजस बसभे रघुराई  
लोगसोग श्रमबस गएसोई \* कछुक देवमाया मतिमोई  
जवाहिंजामजुगजामिनिबोती \* रामसचिवसनकहेउसप्रीती  
पोजमारि रथहाँकहु ताता \* आनउपायवनिहिनाहिंवाता

दो० रामलपन सियजानचढि, संभुचरनासिरनाइ ।  
सचिवचलाएउ तुरतरथ, इतउतपोजहुराइ ॥ ८५ ॥

जागेसकल लोगभए भोरू \* गेरघुनाथभएउ अति सोरू  
रथकरषोजकतहुँनहिंपावहिं \* रामरामकहिचहुदिसिधावहिं  
मनहुँ बारिनिधिवूड जहाजू \* भएउविकलबडु वनिकसमाजू  
एकहिएक देहिं उपदेसू \* तजे रामहमजानि कलेसू  
निंदाहि आपसराहाहिं मीना \* धिगजीवन रघुवीर बिहीना  
जौपैप्रियवियोगविधिकीन्हा \* तौ कसमरन नमागेदीन्हा  
एहिविधिकरतप्रलापकलापा \* आए अवधभरे परितापा  
विषम वियोगनजाइ बषाना \* अवाधिआससवराषहिंप्राना  
दो० रामदरसहितनेमव्रत, लगे करननरनारि ॥

मनहु कोककोकी कमल, दीनबिहीनतमारि ॥ ८६ ॥  
सीतासचिवसहित दोउभाई \* संग बेरपुर पहुँचे जाई  
उतरे राम देवसरि देषी \* कीन्हदंडवत हरष बिसेषी  
लपनसचिवसियाकिण प्रनामा \* सवहिंसहितसुषपाएउरामा  
गंग सकल मुदमंगल मूला \* सवसुषकरनिहरनिसवमूला  
कहिकहिकोटिककथाप्रसंगा \* राम विलोकहि गंगतरंगा  
सचिवहिअनुजहिप्रियहिसुनाई \* विबुधनदीमहिमाअधिकार्इ  
मज्जनकीन्हपंथस्रम गथऊ \* सुचिजलपि अतमुदितमनभयऊ  
सुमिरतजाहिमिटइश्रमभारू \* तेहिस्रमयहलौकिकव्यवहारू  
दो० शुद्ध सच्चदानंदमय, कन्द भारुकुलकेतु ॥

चरितकरतनरअनुहरत, संसृतिसागरसेतु ॥ ८७ ॥  
यहसुधिगुहनिषाद जब पाई \* सुदितलिए प्रियबंधु बोलाई



लिएफलमूल भेट भरिभारा \* मिलनचलेउहिअहरष अपारा  
 करि दंडवत भेटधरि आगे \* प्रभुहिविलोकतअति प्रचुरागे  
 सहज सनेह विवस रघुराई \* पूछी कुसल निकट बैठाई  
 नाथ कुसल पद पंकज देषे \* भएँ उभागभजन जनलेषे  
 देवधरनि धनधाम तुम्हारा \* मैजन नीचसहित परिवारा  
 कृपाकरिअ पुर धारिअपाऊ \* थापिअजनसवलोगसिहाऊ  
 कहेहु सत्यसवसपा सुजाना \* मोहिदीन्हपितुआयसुआना  
 दो० वरषचारिदस वासवन, मुनिव्रतवेष अहार ॥

ग्रामवासनहिंउचितसुनि, गुहहिभएउदुपभार ॥८८॥

रामलषनसिय रूप निहारी \* कहहिं सप्रेमग्राम नरनारी  
 तेपितुमातु कहहु सषिकैसे \* जिन्हपठए बनवालक ऐसे  
 एककहहिंभलभूपतिकीन्हा \* लोचनलाहुहमहिविधिदीन्हा  
 तबनिषादपतिउरअनुमाना \* तरुसिसुपा मनोहर जाना  
 लै रघुनाथहिं ठाँव देषावा \* कहेहु रामसवभांति सुहावा  
 पुरजनकरिजोहार घरआए \* रघुवर संध्याकरन सिधाए  
 गुह सँवारि साथरी डसाई \* कुसकिसलयमयमृदुल सुहाई  
 सुचिफलमूलमधुर मृदुजानी \* दोनाभरिभरिरापेसिआनी  
 दो० सियसुमंत्र भ्राता सहित, कंदमूल फलपाइ ॥

सयनकीन्हि रघुवंसमनि, पायपलोटत भाइ ८९ ॥

उठेलषन प्रभुसोवत जानी \* कहिसचिवहिसोवनमृदुबानी  
 कछुकदूरिसजिवान सरासन \* जागन लगे बैठि बीरासन  
 गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती \* ठाँव ठाँव रापे अति प्रीती  
 आपु लषन पहिं बैठेउ जाई \* कटिभाथा सरचाप चढाई

सोवतप्रभुहिनिहारि निषाद \* भएउ प्रेमवस हृदयविषाद  
तनपुलकितजल लोचनबहई \* वचन सप्रेमलपनसन कहई  
भूपति भवनसुभाय सुहावा \* सुरपतिसदन नपटतरपावा  
मनिमय रचित चारुचौवारे \* जनुरतिपतिनिजहाथसँवारे  
दो० सुचि सुविचित्र सुभोगमय, सुमन सुगंध सुवास ॥  
पलंगमंजुमनिदीपजहँ, सबविधिसकलमुपास ॥९०॥

विविधिवसन उपधानतुराई \* छीरफेन मृदु विसद सुहाई  
तहँसियरामसयननिसिकरहीं \* निजछाविरतिमनोजमदहरहीं  
तेइसियराम साथरी सोए \* श्रमितवसनविनुजाहिंनजोए  
मातुपिता परिजनपुर वासी \* सषासुसील दास अरुदासी  
जोगवहिंजिन्हहिंप्रानकीनाई \* महिसोवत तेइराम गोसाई  
पिताजनकजगविदित प्रभाऊ \* ससुर सुरेस सषा रघुराऊ  
रामचंद पति सो बैदेही \* सोवतिमहिविधिवामनकेही  
सियरघुबीर कि काननजोगू \* करमप्रधान सत्यकह लोगू  
दो० कैकयनादिनिमंदमति, कठिन कुटिल पनकीन्ह ॥

जेहिंरघुनंदन जानकिहि, सुषअँवसर दुषदीन्ह ॥९१॥  
भइदिनकरकुलबिटपकुठारी \* कुमतिकीन्हिसबबिस्वदुषारी  
भयउ विषादनिषादहिभारी \* रामसीयमहिसयन निहारी  
बोले लपन मधुर मृदुबानी \* ग्यानविरागभगतिरससानी  
काहुनकोउसुषदुषकरदाता \* निजकृतकरमभोगसबभ्राता  
जोगवियोग भोग भलमंदा \* हितअनाहितमध्यम भ्रमफंदा  
जनममरनजहँलगिजगजालू \* संपतिविपतिकरमअरुकातू  
धरनिधाम धनपुर परिवारू \* सरगनरवजहँलगिव्यवहारू

देषिअसुनिअगुनिअमनमाही \* मोहमूल परमारथ नाही  
दो० सपने होइ भिषारि नृप, रंकनाक पति होइ

जागेलाभन हानिकछु, तिमि प्रपंच जियजोइ ॥९२॥

असविचारिनिहिंकीजिअरोसू \* काहुहि वादिन देइअ दोसू  
मोह निसासव सोवनि हारा \* देषिअसपन अनेक प्रकार  
एहिजगजामिनिजागहिं जोगी \* परमारथी प्रपंच वियोगी  
जानिअतवहिंजीवजगजागा \* जबसबविषयविलासविरागा  
होइ विवेक मोह भ्रम भागा \* तव रघुनाथ चरन अनुरागा  
सषा परम परमारथ एहू \* मनक्रम बचन रामपद नेहू  
रामब्रह्म परमारथ रूपा \* अविगतअलपअनादिअनूपा  
सकलविकार रहितगतभेदा \* कहिनितनेतिनिरूपाहिंवेदा  
दो० भगत भूमिभूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपाल ॥

करतचरितधरिमनुजतन, सुनतमिटहिंजगजाल ॥९३॥

सषा समुझिअसपरिहरिमोहू \* सियरघुवीर चरन रतहोहू  
कहत रामगुन भाभिनुसारा \* जागे जगमंगल दातारा  
सकलसौचकरि रामनहावा \* सुचिसुजान बटछीरमँगावा  
अनुजसहितसिरजटावनाए \* देषिसुमंत्र नयनजल छाए  
हृदयदाहअति बदनमलीना \* कहकरजोरिवचनअतिदीना  
नाथकहेउअस कौसलनाथा \* लै रथजाहु रामके साथ  
बनदेषाई सुरसरि अन्हवाई \* आनेहु फेरिवेगि दोउभाई  
लषनराम सिय आनेहुफेरी \* संसयसकल सकोच निबेरी  
दो० नृपअस कहेउ गोसाईंजस, कहिय करौं बलिसोइ ॥

करिविनतीपायन्हपरेउ, दीनबालजिमिरोइ ९४ ॥

तातकृपा करिकीजिअसोई ✽ जाते अवध अनाथ न होई  
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा ✽ तातधरममगतुम्हसब सोधा  
सिवि दधीच हरिचंदनरेसा ✽ सहेधरमहित कोटि कलेसा  
रंतिदेव बलिभूप सुजाना ✽ धरमधरेउसाहि संकटनाना  
धरमन दूसर सत्य समाना ✽ आगमनिगम पुरानवषाना  
मैंसोइधरमसुलभ करिपावा ✽ तजे तिहँपुर अपजसछावा  
संभावित कहँ अपजसलाहू ✽ मरनकोटिसम दारुन दाहू  
तुम्हसनतात बहुतकाकहउँ ✽ दिएउतरफिरिपातकलहउँ  
दो० पितुपदगहि कहि कोटिनाति, विनयकरवकरजोरि ॥

चिंताकवानिहुवातकै, तातकरिअजनिमोरि ॥ ९५ ॥

तुम्हपुनिपितुसमअतिहितमोरें ✽ विनती करौंतात करजोरें  
सबविधिसोइकरतव्यतुम्हारे ✽ दुषन पाव पितु सोच हमारे  
सुनि रघुनाथ सचिव संवाद ✽ भएउसपरिजनविकलनिषाद  
पुनिकछुलषनकहीकटुबानी ✽ प्रभुवरजेबड अनुचितजानी  
सकुचिराम निजसपथदेवाई ✽ लषनसँदेसकहिअजनिजाई  
कहसुमंत्र पुनि भूपसंदेसू ✽ सहिनसकिहिसियविपिनकलेसू  
जोहिविधिअवधआवफिरिसीया ✽ सोइरघुवरहितुम्हाहिकरनीया  
नतरुनिपट अवलंबविहीना ✽ मैंनजिअबजिमिजलबिनुमीना  
दो० मइकेससुरेसकलसुष, जबहिंजहाँमनमान ॥

तहँतबरहहिसुषेनसिय, जबलगिविपतिविहान ॥ ९६ ॥

विनती भूपकीन्हजेहिभाँती ✽ आरातिप्रीतिनसोकहिजाती  
पितुसँदेससुनिकृपानिधाना ✽ सियहिदीन्हिसिपकोटिविधाना  
सासुससुरगुर प्रिय परिवारू ✽ फिरहुतसबकरमिटइषभारू



सुनिपतिवचनकहति बैदेही \* सुनहुप्रान पति परमसनेही  
 प्रभु करुनामय परमविवेकी \* तनतजिरहतिछाँह किमिछेकी  
 प्रभाजाइ कहँभानु बिहाई \* कहँचंद्रिका चंदतजि जाई  
 पतिहि प्रेममय विनयसुनाई \* कहतिमचिवमनगिरासुहाई  
 तुम्हपितुससुरसरिसहितकारी \* उतरदे उँकरि अनुचितभारी  
 दो० आरतिवससनसुषभइ उँ, विलगनमानवतात ॥

आरजसुतपदकमलविनु, वादिजहांलगिनात ॥ ९७ ॥

पितु बैभव विलासमयडीठा \* नृपमनिमुकुट मिलितपदपीठा  
 सुषनिधान असपितुगृहमोरे \* प्रियविहीन मन भावनमोरे  
 ससुर चक्कवइ कोसलराऊ \* सुअनचारिदमप्रगटप्रभाऊ  
 आगेहोइ जेहि सुरपति लेई \* अरध मिंघामन आसनदेई  
 ससुरएतादस अवध निवामू \* प्रियपरिवार मातु समसार  
 विनुरघुपति पदपदुमपरागा \* मोहिकेउमपनेहुसुपदनलागा  
 अगमपंथ बनभूमि पहारा \* करिकेहरि मरमरितअपारा  
 कोल किरात कुरंग बिहंगा \* मोहिमवमुषदप्रानपतिसंगा  
 दो० सासुससुरमनमोरिहुँति, विनयकरवि परिपांय ॥

मोरिसोचजनिकरिअकछु, मँवनसुपीसुभायं ॥ ९८ ॥

प्राननाथ प्रिय देवर भाथा \* वीरधुरीन धरधनु भाथा  
 नहिमगश्रमभ्रमदुषमनमोरे \* मोहिलगिमोचकरिअजनिमोरे  
 सुनिसुमंत्रसिथ सीतलबानी \* भएउबिकलजनुफनिमनिहानी  
 नयनसूझनहिं सुनइ नकाना \* कहिनसकइकछुअतिअकसाना  
 रामप्रबोध वीन्ह बहुभांती \* तदपिहोतिनहिंसीतलछांती  
 जतन अनेकसाथहितकीन्हे \* उचितउतर रघुनंदनदीन्हे

मेटिजाइ नहिं राम रजाई \* कठिनकरमगतिकछुनवसाई  
रामलपन सियपद सिरनाई \* फिरेउवनिक जनुमूरगँवाई  
दो० रथहाँकेउ हयरामतन, हेरिहेरि हिहिनाहिं ॥

देषिनिषाद विषादवस, धुनहिंसीसपाछिताहिं॥९९॥

जासुवियोग विकलपसु ऐसे \* प्रजामातु पितुजीहहिं कैसे  
बरवस राम सुमंत्र पठाए \* सुरसरि तीर आपुतवआए  
माँगी नाव न केवट आना \* कहइतुम्हार मरममें जाना  
चरनकमलरजकहँ सबकहई \* मातुपकरनिमूरि कछुअहई  
छुवतसिला भइनारिसुहाई \* पाहन ते न काठ कठिनाई  
तरनिउमुनिघरनीहोइ जाई \* बाट परै मोरि नाउ उडाई  
येहिप्रातिपालउँ सबपरिवारु \* नहिं जानौकछुअवरकवारु  
जौप्रभु पारअवासि गा चहइ \* मोहिपदपहुमपषारन कहइ  
छं० पदकमलधोइ चढाइनावननाथउतराई चहौं ॥

मोहिरामराउरिआनदसरथसपथसबसाँचीकहौं ॥

बरुतीरमारहुलपनपैजबलगिनपायपषारिहौं ॥

तबलगिनतुलसीदासनाथकृपालपारउतारिहौं ॥

सो० सुनि केवटकेवयन, प्रेम लपेटे अटपटे ॥

विहँसेकरुनाअयन, चितइजानकीलपनतन ॥१००॥

कृपासिंधु बोले सुसुकाई \* सोइकरुजेहिंतवनावनजाई  
बेगि आनुजलपाय पषारु \* होत बिलंब उतारहि पारु  
जासुनाम सुमिरत एकबारा \* उतरहिंनर भवसिंधुअपारा  
सोइकृपालु केवटाहिनिहोरा \* जेहिंजगकिणतिहुँपगहुतेथोरा  
दनषनिराषि देवसरिहरषी \* सुनिप्रभुवचनमोह मतिकरषी

केवट राम रजायसु पावा \* पानिकठवताभरिलेइआवा  
 अतिआनंदउमगिअनुरागा \* चरन सरोज पपारन लागा  
 वरषिसुमनसुरसकलसिहाहीं \* एहिसमपुन्यपुंजकोउनाहीं  
 दो० पदपषारि जलपान करि, आपुसहित परिवार ॥  
 पितरपारकरिप्रभुहिपुनि, मुदितगएउलेपार ॥१०१॥

उतरि ठाढभए सुरसरिरेता \* सीय रामगुहलपन समेता  
 केवट उतरिदंडवत कीन्हा \* प्रभुहिसकुचएहिनहिकछुदीन्हा  
 पियाहियकीसियजाननिहारी \* मनिमुंदरीमनमुदितउतारी  
 कहेउ कृपाल लेहि उतराई \* केवट चरन गहे अकुलाई  
 नाथ आजमँइकाहन पावा \* मिटे दोप दुप दारिद दावा  
 बहुतकालमँइ कीन्हिमजूरी \* आजदीन्हिविधिवनिभलिभूरी  
 अबकछुमाथ न चाहिअमोरें \* दीन दयाल अनुग्रह तोरें  
 फिरती बार मोहिजोइ देवा \* सोप्रसाद मइंसिर धरिलेवा  
 दो० बहुत कीन्ह प्रभुलपनसिय, नहिकछु केवट लेइ ॥  
 विदाकीन्ह करुनायतन, भगतिविमलवरदेइ ॥१०२॥

तबमज्जनकरिघुकुलनाथा \* पूजिपारथिव नाएउ माथा  
 सियसुरसरिहिकहेउकरजोरी \* मातु मनोरथ पुरउविमोरी  
 पति देवर सँगकुसल बहोरी \* आइकरउ जेहिपूजा तोरी  
 सुनिसियबिनयप्रेमरससानी \* भइतबविमलवारि वरबानी  
 सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही \* तबप्रभाउजगविदितनकेही  
 लोकप होहिं विलोकततोरें \* तोहिसेवहिसवसिधिकरजोरें  
 तुमजोहमहिबडिविनयसुनाई \* कृपाकीन्हसोहिदीन्हि बडाई  
 तदपि देविमइंदेव असीसा \* सफलहोनहितानिजबागीसा

दो० प्राननाथ देवर सहित, कुसल कोसला आइ ॥

पूजिहिसवमनकामना, सुजसरहिहिजगछाइ ॥१०३॥

गंगवचन सुनिमंगल मूला \* मुदितसीयसुरसरिअनुकूला  
तवप्रभुगुहहि कहेउघरजाहू \* सुनत मूषमुष भाउर दाहू  
दीन वचनगुहकहकरजोरी \* विनयसुनहुरघुकुलमनिमोरी  
नाथ साथ रहि पंथादिखाई \* करिदिनचारि चरन सेवकाई  
जेहि बनजाइ रहब रघुराई \* परन कुटीमहँकरवि सुहाई  
तवमोहिकहँजसिदोविरजाई \* सोइकरिहों रघुवीर दोहाई  
सहज सनेह रामलपि तामू \* संगलीन्ह गुहहृदय हुलामू  
पुनिगुहग्यातिबोलिसबलीन्है \* करिपरितोषविदासबकीन्है  
दो० तवगनपति सिवसुमिरिप्रभु, नाइसुरसरिहिमाथ ॥

सषाअनुजसियसहितवन, गवनकीन्हरघुनाथ ॥१०४॥

तेहिदिनभएउबिटपतरवामू \* लपन सषासबकीन्हसुपामू  
प्रातप्रातकृत करि रघुराई \* तीरथ राजदीप प्रभु जाई  
साचिव सत्यसद्धा प्रियनारी \* माधवसरिसमीतहितकारी  
चारि पदारथ भरा भंडारू \* पुन्य प्रदेश देस अतिचारू  
छेत्र अगम गढगाढसुहावा \* सपनेहुनहिप्रतिपक्षिन्हपावा  
सेन सकल तीरथ बरवीरा \* कलुषअनीकदलनरनधीरा  
संगमसिंघासन सुठि सोहा \* छत्रअपयबटसुनिमनमोहा  
चँवर जमुन अरुगंग तरंगा \* देषिहोहिं दुष दारिद भंगा  
दो० सवाहिं सुकृती साधु सुचि, पावहिं सब मनकाम ॥

बंदी वेद पुरान गन, कहहिं विमल गुनग्राम ॥१०५॥

कोकहिसकइ प्रयागप्रभाऊ \* कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ



अस तीरथ पतिदेपिसुहावा \* सुषसागर रघुवर सुषपावा  
 कहिसियउपनहिसपहिसुनाई \* श्रीसुष तीरथ राज बडाई  
 करि प्रनाम देषत बनबागा \* कहतमहातमअतिअनुरागा  
 एहिविधिआइविलोकीवेनी \* सुमिरत सकल सुमंगलदेनी  
 मुदितनहाइकीन्हिसिवसेवा \* पूजिजयाविधि तीरथ देवा  
 तब प्रभु भरद्वाज पहिआए \* करत दंडवत मुनिउरलाए  
 मुनिमनमोदनकहुकहिजाई \* ब्रह्मानंद रामि जनु पाई  
 दो० दीन्हि असीस मुनीसउर, अतिअनंदअसजानि ॥

लोचनगोचरसुकृतफल, मनहुँ किए विधिआनि ॥ १०६ ॥

कुसलप्रश्नकरिआसनदीन्हे \* पूजिप्रेम परिपूरन कीन्हे  
 कंदमूल फल अंकुर नीके \* दिएआनिमुनिमनहु अमीके  
 सीयलपन जनसहित सुहाए \* अतिरुचिराम मूलफलषाए  
 भए विगत स्मराम सुपारे \* भरद्वाज मृदुवचन उचारे  
 आजसुफल तपतीरथ त्यागू \* आजसुफलजपजोगविरागू  
 सफलसकलसुभसाधनसाजू \* रामतुम्हहिअवलोकतआजू  
 लाभअवधिसुषअवधिनदूजी \* तुम्हरेदरस आमभव पूजी  
 अवकरि कृपा देहु वर एहू \* निजपदमरमिजमहजसनेहू  
 दो० करमवचनमनछाडिल्लु, जवलगिजनन तुम्हार ॥

तबलगिसुषसपनेहुनहीं, किँकोटि उपचार ॥ १०७ ॥

मुनिमुनिवचनरामसकुचाने \* भावभगति आनंद अघाने  
 तवरघुवरमुनि सुजसमुहावा \* कोटिभाँतिकहिसवहिँमुनावा  
 सोबड सोसव गुनगनगेहू \* जेहिमुनीस तुम्हआदर देहू  
 मुनिरघुवीर परसपर नवहीं \* वचनअगोचरसुषअनुभवहीं

यहसुधिपाइ प्रयागनिवासी \* बहुतापसमुनिसिद्धउदासी  
भरद्वाज आश्रम सब आए \* देपनदसरथ सुअन सुहाए  
रामप्रनाम कीन्ह सबकाहू \* सुदितभएलहि लोचनलाहू  
देहिंअसीस परम सुपपाई \* फिरे सराहत सुंदरताई  
दो० रामकीन्ह विश्रामनिमि, प्रातप्रयागनहाइ ॥

चलेसहितासियलपनजन, सुदितमुनिहिसिरनाइ १०८॥

रामसप्रेम कहेउ मुनिपाहीं \* नाथकहिअहमकेहिमगजाहीं  
मुनिमनविहंसिरामसनकहहीं \* सुगमसकलमगतुम्हकहँअहहीं  
साथलागिमुनिसिष्यबुलाए \* मुनिमनसुदितपचासकआए  
सबन्हिराम पदप्रेम अपारा \* सकलकहहिंमगदीप हमारा  
मुनिबटुचारिमंग तव दीन्हें \* जिन्हबहुजनमसुकृतसबकीन्हें  
करिप्रनामरिपि आयसुपाई \* प्रसुदित हृदयचले रघुराई  
ग्रामानिकटनिकसहिंजवजाई \* देषहिंदरस नारिनर धाई  
होहिंसनाथ जनमफलपाई \* फिरहिंदुषित मनसंगपठाई  
दो० विदाकिण्वटु विनयकरि, फिरेपाइमनकाम ॥ १०९ ॥

उत्तरिनहाए जमुनजल, जोसरीरसमस्याम ॥ १०९ ॥

मुनततीर वामी नरनारी \* धाएनिजनिजकाजविसारी  
लपन रामसिय सुंदर ताई \* देषिन्हहिं निजभाग्यबडाई  
अतिलालसासबहिमन माहीं \* नाउंगाउँ बूझत सकुचाहीं  
जेतिन्हमहँवयाविरिधिसयाने \* तिन्हकरिछुतिरामपहिचाने  
सकलकथातिन्हसबहिनुनाई \* बनहिचले पितुआयसुपाई  
मुनिसविपादभकलपछिताहीं \* रानीराय कीन्ह भलनाहीं  
तेहिअवसरएकतापसआवा \* तेजपुंजलधु वयस सुहावा

कविअलपितगतिवेषविरागी\* मनक्रमवचन रामअनुरागी  
दा० सजल नयनतन पुलकिनिज, इष्टदेउपाहिचानि ॥

परेउदंडजिमिधरानितल, दसानजाइवपानि ॥११०॥

रामसप्रेम पुलकि उरलावा\* परमरंकजनु पारम पावा  
मनहुप्रेम परमारथ दोऊ\* मिलत धरेतनकहसवकोऊ  
बहुरिलपन पायनसोइलागा\* लीन्हउठाइउमगिअनुरागा  
पुनिसियचरनधूरिधरिसीसा\* जननिजानिसिसुदोन्हिअसीसा  
कीन्ह निषाददंडवत तेही\* मिलेउमुदितलपिरामसनेही  
पिअत नयनपुटरूप पियूषा\* मुदितसुअमनपाइजिमिभूषा  
तेपितुमातु कहहु साधिकैस\* जिन्हपठए वनवाल्क ऐसे  
रामलपन सियरूप निहारी\* सोचमनेह विकल नरनारी  
दो० तवरघुबीर अनेकविधि, सपहिसिपावनदीन्ह ।

रामरजायसुसीसधरि, भवनगवनतेइंकीन्ह ॥१११॥

पुनिसियरामलपनकरजोरी\* जमुनहिकीन्हप्रनामबहोरी  
चलेससीयमुदित दोउभाई\* रावितनुजा कैकरत बडाई  
पथिकअनेकामिलहिंमगजाता\* कहहिंसप्रेम देपिदोउभ्राता  
राजलपन सब अंगतुम्हारे\* देपिसोच अति हृदयहमारे  
मारग चलहु पयादेहि पाएँ\* जोतिप झूठ हमारेँ भाएँ  
अगम पंथगिरिकाननभारी\* तेहिमहंसाथनारि सुकुमारी  
करि केहरि वनजाइन जोई\* हमसँगचलहिंजोआयसुहोई  
जावजहाँलगी तहं पहुँचाई\* फिरववहोरि तुम्हहिसिरनाई  
दो० येहिविधि पूँछहिं प्रेमवस, पुलकगात जलनेन ॥

कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं, कहिविनीतमृदुबैन ॥११२॥



जेपुरगाँव बसहिं मगमाहीं ✽ तिन्हहिं नागसुरनमर सिहाहीं  
 केहिंसुकृती केहिघरी बसाए ✽ धन्यपुन्य मयपरम सुहाए  
 जहँजहँरामचरन चलिजाहीं ✽ तिन्हसमानअमरावतिनाहीं  
 पुन्यपुंजमग निकटनेवासी ✽ तिन्हहिंसराहहिंसुरपुरवासी  
 जेभरिनयनविलोकहिंरामहिं ✽ सीतालपनसहितघनस्यामहिं  
 जेसरसरितराम अव गाहहिं ✽ तिन्हहिंदेउसरसरितसरहहिं  
 जेहितरु तरप्रभु बैठहिं जाई ✽ करहिं कलपतरुतासु बडाई  
 परसि रामपद पदुम परागा ✽ मानति भूमिभूरिनिजभागा  
 दो० छाँहकरहिं घनविवुधगन, बरषहिं सुमनसिहाहिं ॥  
 देषत गिरिवनविहंग मृग, रामचलेमग जाहिं ॥११३॥

सीता लपन सहित रघुराई ✽ गाँवनिकटजवनिकसहिंजाई  
 सुनिमव बालवृद्ध नरनारी ✽ चलहिंतुरतगृहकाजबिसारी  
 राम लपन सिय रूपनिहारी ✽ पाइनयन फलहोहिं सुषारी  
 सजलविलोचन पुलकसरीरा ✽ सबभएमगन देषिदोउबीरा  
 बरनिन जाइदमा तिन्हकेरी ✽ लहिजनुंरंकन्हिसुरमनिढेरी  
 एकन्ह एकबोलि सिपदेहीं ✽ लोचन लाहु लेहुछन एहीं  
 रामहि देषि एक अनुरागे ✽ चितवत चलेजाहिंसंग लागे  
 एकनयनमगछविउरआनी ✽ होहिंसिथिलतनमनवरवानी  
 दो० एक देषिवट छाँहभलि, डासिमृदुल त्रिनपात ॥

कहहिंगवाइअछिनकश्रम, गवनवअवहिंकिप्रात ११६  
 एककलसभरि आनाहिंपानी ✽ अँचइअनाथकहहिंमृदुवानी  
 सुनिप्रियवचनप्रीतिअतिदेशी ✽ राम कृपाल सुसील बिसेषी  
 जानीस्रमितसीय मनमाहीं ✽ घरिकविलंब कीन्हवटछाहीं



मुदितनारिनर देषहिं सोभा \* रूपअनूप नयन मनलोभा  
 एकटकसबसोहहिं चहुँओरा \* रामचंद सुपचंद चकोरा  
 तरुन तमाल बरन तनसोहा \* देपत कोटिभदन मनसोहा  
 दामिनिबरनलपनसुठिनीके \* नषसिपसुभग भावते जीके  
 मुनिपटकटिन्ह कसेतूनीरा \* सोहहिंकरकमलनिधनुतीरा  
 दो० जटामुकुट सीसनिमुभग, उरभुज नयन विमाल ॥

सरदपरबविधुबदनवर, लसतस्वेदकनजाल ॥११५॥

बरनिन जाइ मनोहर जोरी \* सोभावहुत थोरिमति मोरी  
 राम लपन सिय सुंदरताई \* सबचितवहिंचितमनमतिलाई  
 थके नारिनर प्रेम पिआसे \* मनहुँमृगी मृगदेषि दियासे  
 सीयसमीप ग्रामतिय जाहीं \* पूछतअति सनेह मकुचाहीं  
 बार बार सब लागहिं पाए \* कहहिंवचन मृदुमरलसुभाए  
 राजकुमारिविनयहमकरहीं \* तियसुभाय कछुपूछत डरहीं  
 स्वामिनिअबिलकुमविहमारी \* बिलगनमानविजानिगंवारी  
 राजकुअरदोउसहजसलोने \* इन्हतेलहिदुतिमरकत सोने  
 दो० स्यामल गौर किमोरवर, सुंदर सुपमा अयन ॥

सरद सर्वरी नाथमुष, सरद सरोरुह नयन ॥११६॥

कोटि मनोज लजावनि हारे \* सुमुषिकहहुकोआहिं तुमारे  
 सुनि सनेहमय मंजुल बानी \* सकुचिमीयमनमहंसुकानी  
 तिन्हहिविलोकिबिलोकतिधरनी \* दुहुँसकोचमकुचतिबरवरनी  
 सकुचिसप्रेम बालमृगनयनी \* बोलीमधुरवचनापिकबयनी  
 सहजसुभाय सुभगतन गोरे \* नाम लपनलघु देवरमोरे  
 बहुरिवदनविधुअंचलटाँकी \* पिअतनचितइमोहकरिबाँकी

पंजन मञ्जुतिरीछे नयननि \* निजपतिकहेउतिन्हहिसियसवननि  
भई मुदित सब ग्रामबधूटी \* रंकन्ह रायरासि जनु लूटी  
दो० अतिसप्रेम सियपाय परि, बहुविधि देहिं असीस ॥

सदासोहागिनिहोहुतुह, जवलगिमहिअहिसीस ॥ ११७  
पारवती सम पति प्रियहोहु \* देविन हमपर छाँडविछोहु  
पुनिपुनिविनयकरिअकरजोरी \* जौएहिमारगफिरिअवहोरी  
दरसनदेवजानि निजदासी \* लपीसीय सब प्रेम पिआसी  
मधुरवचनकहिकहि परितोपी \* जनुकुसुदिनी कौमुदीपोपी  
तवाहिलपन रघुवररूपजानी \* पूछेउमगलोगन्हि मृदुवानी  
सुनत नारिनर भए दुपारी \* पुलकितगात विलोचनवारी  
मिटामोदमन भए मलीने \* विधिनिधिदीन्हिलेतजनुछीने  
समुझिकरमगतिधीरजकोन्हा \* सोधिषुगममगतिन्ह काह दीन्हा  
दो० लपन जानकी सहिततव, गवन कीन्ह रघुनाथ ॥

फेरे सबप्रिय वचनकहि, लिएलाइमनसाथ ॥ ११८ ॥  
फिरतनारिनरअति पछिताली \* देअहि दोषदेहिं मनमाहीं  
सहितविपादपरसपरकहहीं \* विधिकरतवउलटेसबअहहीं  
निपटनिरंकुस निठुरानिसंकू \* जेहिंससिकीन्हसरुजसकलंकू  
रूपकलपतरु सागर पारा \* तेहिंपठए वन राजकुमारा  
जौपै इन्हहि दीन्ह वनवासू \* कीन्हवादिविधिभोगविलासू  
एविचरहिमगविनुपद त्राना \* रचेवादिविधि वाहन नाना  
एमहि परहिंडासिकुसपाता \* सुभगमेजकतमृजतविधाता  
तरुतरवासइन्हहिविधिदीन्हा \* धवलधामरचिरचिश्रमकीन्हा  
दो० जौएसुनि पटधर जटिल, सुंदर सुठि सुकुमार ॥

विविधिभांति भूषनवसन, बादिकिएकरतार ॥ ११९ ॥

जौंए कंदमूल फल पाहीं \* वादिसुधादिअसनजगमाहीं  
 एक कहहिं एसहज सुहाए \* आपप्रगटमएविधिनवनाए  
 जहँलगिवेदकहीविधि करनी \* श्रवननयनमनगोचर वरनी  
 देषहुषोजि भुवनदस चारी \* कहँअसपुरुषकहाँअमिनारी  
 इन्हहिंदेपिविधिमनअचुरागा \* पटतर जोग वनावडू लागी  
 कीन्ह बहुतश्रमऐकन आए \* तेहिइरिषावन आनिदुराए  
 एककहहिंहमबहुतनजानहिं \* आपुहिपरमधन्यकरि मानहिं  
 तेपुनि पुन्य पुंजहम लेषे \* जेदेपहिं देपिहहिं जिन्हदेपे  
 दो० एहिविधिकहिकहिवचनप्रिय, लेहिंनयनभरिनीर ॥

किमिचलिहहिंमारगअगम, सुठिसुकुमारमरीर १२०॥

नारि सनेह विकलबसहोही \* चकई भाँझममय जनुमोही  
 मृदुपदकमलकठिनमगजानी \* गहवरिहृदयकहहिंमृदुबानी  
 परसतमृदुल चरन अरुनारे \* सकुचतिमहिजिमि हृदयहमारे  
 जौंजगदीसइन्हहिंवन दीन्हा \* कसनसुमनमयमारगकीन्हा  
 जौंमाँगापाइअविधि पाहीं \* एरिअहिसपिआंपिन्हमाहीं  
 जेनरनारिन अँसर आए \* तिन्हसिय रामन देषनपाए  
 सुनिसरूपबूझहिं अकुलाई \* अबलगिगए कहाँलगिभाई  
 समरथ धाइविलोकहिंजाई \* प्रसुदितफिरहिंजनम फलपाई  
 दो० अबला बालकवृद्ध जन, कर मीजहिं पछिताहिं ॥

होहिं प्रेमबस लोगइमि, रामजहाँ जहँ जाहिं ॥ १२१॥

गाँव गाँव असहोइ अनंद \* देषिभानुकुल केरव चंद  
 जेकछु समाचारसुनिपावहिं \* तेनृपरानिहि दोसु लगावहिं  
 कहाँएक अतिभलनरनाहू \* दीन्हहमहिंजेहिलोचनलाहू



कहहिं परसपर लोग लोगार्है ✽ बातैं सरल सनेह सुहाई  
तेपितुमातुधन्य जिन्हजाए ✽ धन्यसो नगर जहाते आए  
धन्यसो देस सैलवन गाऊँ ✽ जहँजहँजाहिं धन्यसोइठाऊँ  
सुष पाएउ विरंचि रचितेही ✽ एजैहिकेसब भाँति सनेही  
रामलपन पथि कथा सुहाई ✽ रहीसकल मगकानन छाई  
दो० एहिविधि रघुकुल कमलरवि, मगलोगन्ह सुषदेत ॥

जाहिं चलेदेषत विपिन, सिय सौमित्र समेत ॥१२२॥

आगे रामलपन पुनिपाछे ✽ तापस वेषविराजत काछे  
उभयबीचमियसोहति कैसे ✽ ब्रह्मजीव विचमाया जैसे  
बहुरिकहउँछविजसिमनवसई ✽ जनुमधुमदनमध्यरतिलसई  
उपमाबहुरिकहउँजियजोही ✽ जनुबुधविधुविचरोहिनि सोही  
प्रभुपदरेषिवीचविच सीता ✽ धरतिचरनमगचलति सभीता  
सीयराम पदअंक बराए ✽ लपनचलहिं मगदाहिनलाए  
रामलपनामियप्रीति सुहाई ✽ वचन अगोचरकिमिकहिजाई  
षगमृगमगन देपिलविहोही ✽ लिएचोरि चितराम बटोही  
दो० जिन्हजिन्ह देपेपथिकप्रिय, सियसमेत दोउभाइ ॥

भवमग अगम अनंदतेइ, विनुश्रम रहेमिराइ ॥१२३॥

अजहुँजामुउर मपनेहुकाऊ ✽ वसहिं लपनसियरामवटाऊ  
राम धाम पथ पाइहि सोई ✽ जोपथपावकबहुँ मुनि कोई  
तवरघुबीरस्रमितसियजानी ✽ देपिनिकटवट सीतलपानी  
तहँवासि कंदमूल फल पाई ✽ प्रात नहाइचले रघुराई  
देषतवनसर सैल मुहाए ✽ बालमीक आश्रमप्रभु आए  
राम दीपमुनि वाससुहावन ✽ सुंदर गिरिकाननजलपावन



सरनिसरोज बिटप वनभूले \* गुंजतमंहु मधुपरम भूले  
 पगमृगविपुलकोलाहलकरहौ \* विरहितवैर सुदितमनचरहीं  
 दो० सुचिसुंदरआश्रमनिराषि, हरपेराजिवनयन ॥

मुनिरघुवर आगमनमुनि, आगेआए उलैन ॥१२४॥

मुनिकहँ रामदंडवतकीन्हा \* आमिरवाद विप्रवर दीन्हा  
 देषिरामछवि नयनजुडाने \* करिसनमानआश्रमहिंआने  
 मुनिवरअतिथिप्रानप्रियपाए \* कंदमूलफल मधुर मगाए  
 सियसौमित्रि रामफलषाए \* तवमुनि आमन दिगमुहाए  
 बालमीकि मनआनंदभारी \* मंगल मूरति नयननिहारी  
 तवकर कमल जोरिरघुराई \* बोलेबचन श्रवन सुषदाई  
 तुम्हत्रिकालदरसीमुनिनाथा \* विस्ववदरजिमितुम्हरेहाथा  
 असकहिप्रभुसबकथावपानी \* जेहिजेहिमांतिदीन्हवनरानी

दो० तात बचनपुनिमातु हित, भाइ भरत अमराउ ॥

मोकहँदरसतुम्हारप्रभु, सबममपुन्यप्रमाउ ॥१२५॥

देषिपाय मुनिराय तुम्हारे \* भएसुकृत सब सुफल हमारे  
 अब जहँ राउर आयसुहोई \* मुनिउदवेगन पावइ कोई  
 मुनितापसजिन्हतेदुपलहहीं \* तेनरेम विगुपाक दहहीं  
 मंगल मूल विप्र परितोषू \* दहइकोटि कुल धूमुर रोषू  
 असजियजानिकहियसोझाऊं \* सियसौमित्रिसहितजहँजाऊं  
 तहँरचिरुचिरपरनत्रिनसाला \* बासकरउंकछुकाल कृपाला  
 सहजसरलमुनिरघुवरवानी \* साधुसाधु बोलेमुनिग्यानी  
 कसनकहहुअस रघुकुलकेतू \* तुम्ह पालक संततश्रतिसेतू

छं० श्रुतिसेतु पालकरामतुम्ह जगदीस माया जानकी ॥  
जोसृजतिजगपालतिहरति रूपपाइकृपानिधानकी ॥  
जोसहससीस अहीसमहिधरलषन सचराचरधनी ॥  
सुरकाजधारिनरराजतनचलेदलनषलनिसिचरअनी ॥

सो० राम सरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिपर ॥

अविगतअलषअपार, नेतिनेतिनितनिगमकह १२६  
जगपेषन तुम्हदेषन्हिहारे ✽ विधिहरिसंभुनचावनि हारे  
तेउनजानहिं मरमतुम्हारा ✽ अवरतुम्हहिंकोजाननिहारा  
सोइजानइ जेहिदेहु जनार्इ ✽ जानततुम्हहिंतुम्हइहोइजाई  
तुम्हरिहिकृपातुम्हहिरघुनंदन ✽ जानहिंभगतभगतउरचंदन  
चिदानंद मयदेह तुम्हारी ✽ विगतविकारजानअधिकारी  
नरतन धरेहु संतसुरकाजा ✽ कहहु करहुजस प्राकृतराजा  
रामदेपिसुनि चरिततुम्हारे ✽ जइमोहहिंबुध होहिंसुपारे  
तुम्हजोकहहु करहुसवसाँचा ✽ जसकाछिअतसचाहिअनाचा  
दो० पुछेहुमोहि कि रहौं कहँ, मैं पूछत सकुचाउँ

जहँनहोहुतहँदेहुकहि, तुम्हहि देषावउँठाउँ ॥१२७॥

सुनिसुनिवचनप्रेमरस साने ✽ सकुचिराममनमहँ मुसुकाने  
बालमीकिहँसिकहँहिवहोरी ✽ वानीमधुर अमिअरसवोरी  
सुनहुरामअवकहउँनिकेता ✽ जहाँबसहुसिअ लषनसमेता  
जिन्हकेश्रवनममुद्रसमाना ✽ कथातुम्हारिसुभगसरिनाना  
भरहिं निरंतर होहिंन पूरे ✽ तिन्हके हियतुम्हकहँगृहरूरे  
लोचनचातकजिन्हकरिराषे ✽ रहहिंदरसजलधरअभिलाषे  
निदरहिंमरित सिंधुसरवारी ✽ रूपबिंदुजल होहिं सुपारी

तिन्हकेहृदयसदन सुषदायक \* वसहुबंधु सियसहरघुनायक  
दो० जसतुहार मानसविमल, हंसिनिजीहा जासु ॥

मुकताहलगुनगनचुनइ, रामवसहुमनतासु १२८ ॥

प्रभुप्रसादसुचिसुभगसुवासा \* सादरजासु लहइनित नासा  
तुम्हहिनिबोदितभोजनकरहीं \* प्रभुप्रसाद पटभूषन धरहीं  
सीस नवहिंसुरगुरद्विजदेषी \* प्रीतिसहितकरिंविनयविसेषी  
करनितकरहिं रामपदपूजा \* रामभरोस हृदयनहिं दूजा  
चरनराम तीरथ चलिजाहीं \* रामवसहु तिन्हके मनमाहीं  
मंत्रराज नितजपहिं तुहारा \* पूजहिंतुम्हहिसहितपरिवारा  
तरपनहोमकरहिंविधिनाना \* बिप्र जैवाइ देहिंबहु दाना  
तुम्हतेअधिकगुरहिंजियजानी \* सकलभायसेवाहिं सनमानी  
दो० सबकरि माँगहिं एक फल, राम चरन रतिहोउ ॥

तिनकेमनमंदिरवसहु, सियरघुनंदन दोउ १२९ ॥

कामकोहमद मानन मोहा \* लोभन छोभन रागनद्रोहा  
जिनकेकपटदंभनहिं माया \* तिन्हके हृदयवसहु रघुराया  
सबके प्रियसबके हितकारी \* दुषसुषसरिस प्रसंसागारी  
कहहिंसत्यप्रियवचन विचारी \* जागतसोवत भरनतुहारी  
तुम्हहिंछाड़िगतिदूसरिनाहीं \* रामवसहु तिन्हकेमनमाहीं  
जननी समजानहिंपरनारी \* धनपराव विपते विषभारी  
जे हरषहिं परसंपति देषी \* दुषितहोहिंपरविपातिविसेषी  
जिन्हहिरामतुहप्रान पिआरे \* तिन्हकेमनसुभसदनतुम्हारे  
दो० स्वामिसषा पितुमातुगुर, जिन्हके सबतुम्हतात ॥

मनमंदिर तिन्हकेवसहु, सीयसहित दोउभ्रात १३० ॥

अवगुनतजिसबकेगुनगहहीं ✽ विप्र धेनुहित संकट सहहीं  
नीतिनिपुनजिन्हकइजगलीका ✽ घरतुम्हारतिन्हकरमननीका  
गुनतुम्हारसमुझइनिजदोसा ✽ जेहिसबभाँतितुम्हारभरोसा  
रामभगत प्रियलागहिंजेही ✽ तेहिउर बसहुसहित बैदेही  
जातिपाँति धनधरमबडाई ✽ प्रियपरिवार सदन सुषदाई  
सबताजितुम्हहिंरहइलउलाई ✽ तिहि के हृदय रहहु रघुराई  
सरग नरकअपवरगसमाना ✽ जहँतहँ देष धरे धनु बाना  
करम बचन मनराउर चेरा ✽ रामकरहु तेहिके उरडेरा  
दो० जाहिनचाहिअ कबहुँकछु, तुम्हसनसहजसनेह ॥  
बसहुनिरंतरतासुमन, सोराउरनिजगेह ॥ १३१ ॥

एहिविधिमुनिवरभवनदेषाए ✽ बचन सप्रेमराम मन भाए  
कहमुनिसुनहुभानुकुलनायक ✽ आश्रमकहउँसमय सुषदायक  
चित्रकूट गिरि करहुनिवामू ✽ जहँ तुम्हारसबभाँतिसुपामू  
सैल सुहावन कानन चारू ✽ करिकेहरिमृगबिहंग बिहारू  
नदी पुनीत पुरान बषानी ✽ अत्रिपियानिजतपवलआनी  
सुरसरि धारनाउँमंदाकिनि ✽ जोसब पातकपोतकडाकिनि  
अत्रिआदिमुनिवरबहुबसहीं ✽ करहिंजोगजपतपतन कसहीं  
चलहुसफलश्रमसबकरकरहू ✽ रामदेहु गौरव गिरिवरहू  
दो० चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाइ ॥

आइ नहाए सरितवर, सियसमेतदोउभाइ ॥ १३२ ॥  
रघुवर कहेउ लषनभलघातू ✽ करहु कतहुँ अबठाहरठाटू  
लषनदीष पयउतर करारा ✽ चहुँदिसिफिरेउधनुषजिभिनारा  
नदीपनच सरसमदमदाना ✽ सकलकलुषकलिसाउजनाना



चित्रकूट जनु अचल अहेरी \* चुकइन घात मारमुठ भेरी  
 असकहिलपन ठाउँदेपरावा \* थलविलोकिरघुवर मुपपावा  
 रमेउ राम मनदेवन्ह जाना \* चले सहितसुरपतिपरधाना  
 कोल किरात वेषसव आए \* रचेपरन त्रिनमदन सुहाए  
 बरनिन जाहिं मंजुहुइसाला \* एकललितलघुएक विमाला  
 दो० लपनजानकीसहितप्रभु, राजत रुचिर निकेत ॥

सोहमदनमुनिवेषजनु, रतिरितु राज ममेत ॥१३३॥

अमरनागकिन्नरदिसिपाला \* चित्रकूट आए तेहिकाला  
 रामप्रनाम कीन्ह सवकाहू \* मुदितदेव लहिलोचन लाहू  
 बरषि सुमन कहदेवसमाजू \* नाथ सनाथ भए हम आजू  
 करिबिनतीहुषहुसह सुनाए \* हरपितनिजनिजमदनमिथाए  
 चित्रकूट रघुनंदन छाए \* समाचारमुनिमुनिमुनिआए  
 आवत देषिमुदितमुनिवृंदा \* कीन्हदंडवत रघुकुल चंदा  
 मुनिरघुवरहि लाइ उरलेहीं \* सुफलहोन हितआसिपदेहीं  
 सियसौमित्रिरामछविदेपहिं \* साधनसकलमफलकरिलेपहिं  
 दो० जथाजोग सनमानि प्रभु, विदाकिए मुनिवृन्द नवाइ

करहिंजोगजपजागतप, निजआश्रमन्हिसुछन्द १३४

यहसुधिकोलाकिरातन्हपाई \* हरपे जनुनवनिधिघर आई  
 कंदमूलफल भरिभरि दोना \* चले रंकजनु लूटन सोना  
 तिन्हमहंजिन्हदेपेदो उभाता \* अपरतिन्हहिंपूछहिंमगजाता  
 कहत सुनत रघुवीर निकाई \* आइ सबन्हि देपे रघुराई  
 करहिं जोहार भेंटधरिआगे \* प्रभुहिविलोकहिंअतिअनुरागे  
 चित्रलिपे जनुजहं तहं ठाढे \* पुलकसरीर नयन जलवाढे

राम सनेह मगनसब जाने ✽ कहिप्रियवचनसकलसनमाने  
प्रभुहि जोहारिबहोरिवहोरी ✽ वचनविनीतकहहिंकरजोरी  
दो० अबहम नाथसनाथ सब, भए देषि प्रभुपाय ॥

भाग हमारे आगमन, राउर कोसलराय १३५ ॥

धन्यभूमि वन पंथ पहारा ✽ जहँजहँनाथ पाउतुम्ह धारा  
धन्यविहंग मृगकाननचारी ✽ सफलजनमभएतुम्हहिनिहारी  
हमसब धन्यसहितपरिवारा ✽ दीपदरसभरि नयनतुम्हारा  
कीन्हवासमलिठाउँविचारी ✽ इहाँसकल रितुरहब सुषारी  
हमसबभाँति करव सेवकाई ✽ करिकेहरि अहि बाघवराई  
वनबेहड गिरि कन्दरपोहा ✽ सबहमार प्रभुपगपग जोहा  
जहँतहँतुम्हहिअहेरपेलाउब ✽ सरनिझर भलठाँउ देषाउब  
हम सेवक परिवार समेता ✽ नाथनसकुचव आयसु देता

दो० वेद वचन मुनिमन अगम, ते प्रभुकरुना अयन ॥

वचनकिरातनकेसुनत, जिमिपितुबालकवयन १३६

रामहि केवल प्रेम पियारा ✽ जानिलेउ जो जाननिहारा  
रामसकल वनचर तब तोषे ✽ कहिमृदुवचन प्रेमपरितोषे  
विदाकिए सिरनाइ सिधाए ✽ प्रभुगुनकहतसुनत घरआए  
एहिबिधिसियसमेत दोउभाई ✽ बसहिंविपिनसुरमुनि सुषदाई  
जवते आइरहे रघुनायक ✽ तवते भएउबनमंगलदायक  
फूलहिंफलहिंबिटपविधिनाना ✽ मंजुबलितवर बेलि बिताना  
सुरतरुसरिस सुभायसुहाए ✽ मनहुविबुधवनपरिहरिआए  
गुंज मंजु तर मधुकर श्रेणी ✽ त्रिविधवयारि बहइसुषदेनी

दो० नीलकंठ कलकंठ सुक, चातक चक्र चकोर ॥

भाँतिभाँतिबोलहिंविहंग, श्रवनसुषदचितचोर ॥ १३७ ॥

करिकेहरि कपिकोलकुरंगा \* विगतवैरविचरहिं सब संग  
फिरत अहेर रामलुवि देषी \* होहिंसुदित मृगवृंद विसेषी  
बिबुधविपिनजहँलगिजगमाहीं \* देषिराम बनमकल सिहाहीं  
सुरसरिसरसइदिनकरकन्या \* मेकलसुता गोदावरि धन्या  
सब सर सिंधुनदी नदनाना \* मंदाकिनिकरकरहिं बषाना  
उदयअस्तगिरि अरुकैलामू \* मंदरमेरु सकल सुरबामू  
सैलहिमाचल आदिक जेते \* चित्रकूट जमगावहिं तेते  
बिंधिसुदित मनसुषनसमाई \* समबिनु विपुलबडाई पाई  
दो० चित्रकूटके बिहंगमृग, बेलि बिटपत्रिन जाति ।

पुन्यपुंजसबधन्यअस, कहहिं देवदिनराति ॥ १३८ ॥

नयनवंत रघुबरहिं बिलोकी \* पाइजनमफलहोहिंविसेकी  
परसिचरनरजअचरसुषारी \* भएपरम पदके अधिकारी  
सोबन सैलसुभाय सुहावन \* मंगलमयअति पावनपावन  
महिमाकहिअ कवनविधितासू \* सुषसागरजहँकीन्ह निवासू  
पयपयोधितजिअवधबिहाई \* जहँ सियलपनरामरहे आई  
कहिनसकहिंसुषमाजसिकानन \* जौंसतसहमहोंहिं सहसानन  
सो मैं बरनि कहोंबिधिकेहीं \* टावरकमठ किमंदरलेहीं  
सेवहिं लषनकरममनबानी \* जाइ न सीलसनेह बषानी  
दो० छिनछिन लषिसियरामपद, जानिआपुपरनेह ॥

करत न सपनेहु लषनचित, बंधु मातुपितुगेह ॥ १३९ ॥

रामसंग सियरहति सुषारी \* पुरपरिजनगृहसुरतिबिसारी

छिनछिनापियविधुबदननिहारी\*प्रमुदितमनहुचकोरकुमारी  
नाहनेह नितबढतबिलोकी\*हरषितरहतिदिवसजन्मुकोकी  
सियमनरामचरनअनुरागा\*अवधसहससमबनप्रियलागा  
परनकुटीप्रियप्रिअतमसंगा\*प्रियपरिवार कुरंग बिहंगा  
सासुससुरसममुनितियमुनिवर\*असन अमिअसमकंदमूलफर  
नाथ साथ साथरी सुहाई\*मयन सयनसयसमसुखदाई  
लोकपहोहिंबिलोक्त जामू\*तेहिकिमोहिसकविषयविलासू  
दो० सुमिरतरामहितजहिंजन, त्रिनसमविषय विलासु ।

रामप्रियजगजननिसिय, कछुनआचरजुतासु॥१४०॥

सीयलपनजेहिविधसुखलहर्हा\*सोइरघुनाथकरहिंसोइकहर्ही  
कहहिंपुरातन कथाकहानी\*सुनहिंलपनसियअतिसुषमानी  
जबजवरामअवधसुधिकरही\*तबतबवारि विलोचनभरही  
सुमिरिमातुपितुपरिजनभाई\*भरत सनेह सील सेवकाई  
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी\*धीरजधरहिंकुसमउविचारी  
लषिसियलपनविकलहोइजाही\*जिमिपुरुषहिंअनुसरपरिछाही  
प्रियाबंधु गति लषिरघुनंदन\*धीरकृपालभगतउर चन्दन  
लगे कहनकछुकथा पुनीता\*सुनिसुषलहहिंलपनअरुसीत।  
दो० रामलपन सीता सहित, सोहत परन निकेत ।

जिमिवासव बस अमरपुर, सची जयंत समेत॥१४१॥

जोगवहिंप्रभुसियलपनहिंकैसे\*पलकविलोचनगोलकजैसे  
सेवहिंलपन सीयरघुवीरहिं\*जिमिअविवेकीपुरुषसरीरहिं  
एहिविधिप्रभुवनबसहिंसुपारी\*षगमृगसुरतापस हितकारी  
कहेउराम बनगवन सुहावा\*सुनहुसुमंत्रअवधजिमिआवा



फिरेउनिषादप्रभुहिपहुँचाई \* सचिवसहितरथदेपिसिआई  
 मंत्रीविकल विलोकिनिषाद \* कहिनजाइजमभएउविषाद  
 रामरामसियलपन पुकारी \* परेउधरनितलव्याकुलभारी  
 देषिदपिनदिसिहयहिहिनाही \* जनुबिनुपंखविहंगअकुलही  
 दो० नहिंत्रिनचरहिं न पिअहिंजल, मोचहिंलोचनवारि ।

व्याकुलभएउनिषादपति, रघुवरवाजिनिहारि १४२॥

धरिधीरजतब कहइ निषाद \* अवसुमंत्र परिहरहु विषाद  
 तुम्हपंडित परमारथ ज्ञाता \* धरहुधीरलपिविमुपविधाता  
 विविधकथाकहिकहिमृदुवानी \* रथ बैठारेउ वरवम आनी  
 सोकसिथिलरथसकैनहाँकी \* रघुवर विरहपीर उरबाँकी  
 तरफराहिं मगचलहिं नघारे \* वनमृगमनहु आनिरथजोरे  
 अहुकिपरहिंफिरिहेराहिंपीछे \* रामवियोगविकलदुप तीछे  
 जो कह राम लपन बैदेही \* हिकरि हिकरिहितहेरहितेही  
 बाजिविरहगतिकहिकिमिजाती \* विनुमनिफनिक विकलजेहिभांती  
 दो० भएउ निषाद विषाद वस, देपत सचिव तुरंग ।

बोलि सुसेवक चारितव, दिए सारथी मंग ॥ १४३ ॥

गुहसारथिहि फिरेउपहुँचाई \* विरहविषादवरनिनहिंजाई  
 चलेअवधलेइरथहि निषादा \* होहिंछिनहिछिनमगनविषादा  
 सोचसुमंत्रविकल दुखदीना \* धिगजीवनरघुवीर विहीना  
 रही न अंतहु अधम सरीरु \* जरनलहेउविछुरतरघुवीरु  
 भएअजस अघभाजनप्राना \* कवनहेतुनहिं करत पयाना  
 अहह मंदमन अवसर चूका \* अजहुंन हृदय होतहुइट्टका  
 मीजिहाथसिरधुनिपल्लताई \* मनहुकपिनधनरासि गँवाई

विरद बाँधि वरवीर कहाई \* चलेउ समरजनुसुभटपराई  
दो० विप्रविवेकीबेदविद, संमतसाधु सुजाति ।

जिमिधोषे मदपानकर, सचिवसोचतेहिभाँति ॥ १४४ ॥  
जिमिकुलीनतियसाधुसयानी \* पतिदेवता करम मन बानी  
रहैकरम बस परिहरि नाहू \* सचिवहृदयतिमिदारुनदाहू  
लोचनसजलढीठि भइथोरी \* सुनइनश्रवनविकलमतिभोरी  
सूषहिंअधरलागि मुहँलाटी \* जिउनजाइउरअवधि कपाटी  
विवरनभयउनजाइनिहारी \* मारेसि मनहुपिता महतारी  
हानिगलानिविपुलमनव्यापी \* जमपुरपंथ सोचजिमिपापी  
वचन न आवहृदयपछिताई \* अवध काह में देषव जाई  
रामरहित रथदेषिहि जोई \* सकुचिहिमोहिविलोकतसोई  
दो० धाइपूछिहहिं मोहिजब, विकलनगरनरनारि ।

उतरदेवमें सबहितव, हृदयवज्रवैठारि १४५ पा० प० १४  
पूछिहहिंदीनदुषितसबमाता \* कहवकाहमैंतिन्हहिबिधाता  
पूछिहिजबहिलषनमहतारी \* कहिहोंकवन सँदेस सुषारी  
रामजनिन जबआइहि धाई \* सुमिरिबल्ल जिमिधेन लवाई  
पूछत उतर देवमें तेही \* गोवन राम लषन बैदेही  
जोइपूछिहितोहि उतर देवा \* जाइअवध अबएह सुषलेवा  
पूछिहिजबहिं राउदुष दीना \* जिवनजासुरघुनाथअधीना  
देहों उतर कवन मुहलाई \* आएउँ कुसलकुअँरपहुँचाई  
सुनत लषनसियराम सँदेस \* त्रिनजिमितनपरिहरिहिनरेसू  
दो० हृदउन विदरेउ पंकजिमि, बिछुरतप्रीतमनारि ।

जानतहों मोहिदीन्हविधि, यहजातनासरीर ॥ १४६ ॥

एहिबिधिकरतपंथपाछितावा \* तमसातीर तुरतरथ आवा  
 विदाकिएकरिविनय निषादा \* फिरेपायपरि विकलविषादा  
 पैठत नगर सचिव सकुचाई \* जनुमारोसि गुरु बाभनगाई  
 बैठिबिटपतरादिवस गँवावा \* सांझसमय तब अँवसरपावा  
 अवधप्रवेसकीन्ह अँधिआरे \* पैठभवन रथरापि दुआरे  
 जिन्ह २ समाचार सुनिपाए \* भूपद्वाररथ देखन आए  
 रथपाहिचानिविकललषिघोरे \* गरहिंगातजिमिआतपओरे  
 नगरनारिनर व्याकुल कैसे \* निघटतनीर मीनगन जैसे  
 दो० सचिवआगमनसुनतसब, विकलभएउरनिवास ॥

भवनभयंकर लागतेहि, मानहुप्रेतनिवास ॥ १४७ ॥

अतिआरतिसबपूछहिंरानी \* उतरनआवविकलभइवानी  
 सुनइनश्रवननयननहिंसूझा \* कहहुकहां नृपजेहितेहिबूझा  
 दासिन्हदीपसचिवविकलाई \* कौशल्या गृहगई लवाई  
 जाइसुमंत्र दीपकस राजा \* अमिअरहितजनुचंदविराजा  
 आसनसयन बिभूषन हीना \* परेउभूमितलनिपटमलीना  
 लैइ उसास सोचएहिं भाँती \* सुर पुरतेजनुपसेउ जजाती  
 लेतसोचभरिछिन २ छाती \* जनुजरि पंपपरेउ संपाती  
 रामराम कह राम सनेही \* पुनिकह रामलषन बैदेही  
 दो० देषिसचिव जयजीव कहि, कीन्हेउ दंडप्रनाम ॥

सुनतउठेउब्याकुलनृपति, कहसुमंत्रकहँराम ॥ १४८ ॥

भूप सुमंत्र लीन्ह उरलाई \* बूढतंकछु आधार जनुपाई  
 सहितसनेह निकट बैठारी \* पूछतराउ नयन भरिवारी  
 रामकुसल कहसपा सनेही \* कहँ रघुनाथ लषन बैदेही

आनेफेरिकि बनहिं सिधाए \* सुनतसचिवलोचनजलछाए  
सोक विकल पुनिपूछनरेमू \* कहु सियराम लषन संदेमू  
रामरूप गुनसील सुभाऊ \* सुमिरिसुमिरउरसोचतराऊ  
राज सुनाइ दीन्ह बनवासू \* सुनि मनभएउनहरषहरामू  
सोसुत बिछुरत गएन प्राना \* को पापी बड मोहिसमाना  
दो० सषाराम सियलषनजहँ, तहाँ मोहि पहुँचाउ ॥

नाहित चाहतचलनअब, प्रान कहौं सतिभाऊ १४९  
पुनिपुनि पूछत मंत्रिहि राऊ \* प्रियतमसुअनसँदेससुनाऊ  
करहु सषा सोइवेगि उपाऊ \* रामलषनसियनयनदेपाऊ  
सचिवधीरधरि कहमृदुबानी \* महाराजतुम्ह पंडित ज्ञानी  
बीर सुधीर धुरंधर देवा \* साधुसमाज सदा तुम्हसेवा  
जनममरनसबदुषसुषभोगा \* हानिलाभप्रियमिलन वियोग  
कालकरमबस होहिं गोसाँई \* बरबसराति दिवसकी नाँई  
सुषहरषहिंजडदुषबिलषाहीं \* दोउसमधीरधरहिंमनमाहीं  
धीरजधरहु विवेक विचारी \* छाड़िअसोचसकल हितकारी  
दो० प्रथम बास तमसाभएउ, दूसर सुरसरि तीर ॥

न्हाइरहे जलपानकरि, सिय समेत दोउबीरा॥१५०॥  
केवट कीन्ह बहुत सेवकाई \* सोजामिनि सिगरीं रगवाँई  
होतप्रात बटछीर मगावा \* जटामुकुटनिजसीसबनाव  
राम सषा तवनाव मँगाई \* प्रिया चढ़ाइ चले रघुराई  
लषन बान धनुधरे बनाई \* आपुचढे प्रभु आयसु पाई  
विकलबिलोकिमोहिरघुबीरा \* बोलेमधुर बचन धरि धीरा  
तातप्रनाम तातसन कहेहू \* बार बार पद पंकज गहेहू



करविपाय परिविनय बहोरी \* तातकरिअजनिचिंता मोरी  
वनमग मंगल कुसल हमारे \* कृपाअनुग्रह पुन्य तुमारे

छं० तुम्हरेअनुग्रहतातकाननजातसबसुप पाइहों ॥

प्रतिपालिआयसुकुसलदेषनपायपुनिफिरिआइहों ॥

जननीसकलपरितोषिपरिपारिपायकरिविनतीधनी ॥

तुलसीकरेहुसोइजतनजेहि विधिकुसलरहकोसलधनी

सो० गुरसनकहव सँदेस, बारवार पद पदुमगहि ।

करवसोइउपदेस, जेहिनसोचमोहिअवधपति॥१५१॥

पुरजनपरिजनसकल निहोरी \* तात सुनायउ विनतीमोरी

सोइसबभाँतिमोर हितकारी \* जाते रह नरनाह सुपारी

कहवसँदेस भरत के आए \* नीतिनताजिअराजपद पाए

पालेहुप्रजाहि करममनबानी \* सेएहुमातु सकल समजानी

ओर निबाहेहु भायपभाई \* करिपितुमातुसुजनसेवकाई

तात भाँति तेहि राषब राऊ \* सोचमोरजेहिकरहिंन काऊ

लपनकहे कछु बचनकठोरा \* बरजिरामपुनिमोहिनिहोरा

बार बार निज सपथ देवाई \* कहविनतात लपनलरिकाई

दो० कहिप्रनामकछु कहनलिय, सियभइसिथिलसनेह ।

थकितबचनलोचनसजल,पुलकपल्लवितदेह ॥१५२॥

तेहि अँवसर रघुबर रुषपाई \* केवट पारहि नाव चलाई

रघुकुलतिलकचलेएहिभाँती \* देषउँठाढकुलिसधरिछाती

मैंआपन किमिकहों कलेसू \* जियत फिरेउँलेइरामसँदेसू

असकहिसचिवबचनरहिगयऊ \* हानिगलानिसोचवसभयऊ

सूतबचन सुनतहि नरनाहू \* परेउ धरनि उरदारुनदाहू

तलफतविषममोहमनमाँपा \* माँजामनहु मीनकहँव्यापा  
करिविलापसब रोवहिरानी \* महाविपति किमिजाइवषानी  
सुनि विलाप दुषदुषलागा \* धीरजहू करधीरज भागा  
दो० भयउकोलाहल अवधअति, सुनिनृपराउर सोर ॥

विपुलविहंगवनपरेउनिशि, मानहुकुलिसकठोर १५३  
प्रानकंठगत भएउ भुवाल्हू \* मनिबिहीनजनुव्याकुलव्याल्हू  
इन्द्रीसकलविकलभइभारी \* जनुसरसरसिजवनविनुवारी  
कौसल्या नृप दीपमलाना \* रविकुलरविअथयउजियजाना  
उर धरिधीर राम महतारी \* बोली वचन समय अनुसारी  
नाथसमुझिमन करिअविचारू \* रामवियोग पयोधि अपारू  
करनधारतुम्ह अवधजहाजू \* चढेउसकल प्रिय पथिकसमाजू  
धीरजधरिअति पाइअपारू \* नाहित बूडिहि सबपरिवारू  
जौंजिअधरिअबिनयपियमोरी \* रामलपनसियमिलहिबहोरी  
दो० प्रियावचन मृदुसुनतनृप, चितएउ आँखिउघारि ॥

तलफतमीनमलीनजनु, सींचेउसीतलवारि ॥ १५४॥  
धरिधीरज उठिबैठभुआल्हू \* कहुसुमंत्र कहँ रामकृपालू  
कहाँ लपन कहँराम सनेही \* कहँ प्रियपुत्र बधू बैदेही  
बिलपतराउविकलबहुभाँती \* भइजुगसरिससिरातिनराती  
तापस अंध साप सुधिआई \* कौसल्यहि सबकथा सुनाई  
भएउविकलवरनंत इतिहासा \* रामरहित धिगजीवनआसा  
सोतन राषि करविमैं काहा \* जेहिंन प्रेमपन मोरनिवाहा  
हा रघुनंदन प्रान पिरीते \* तुम्हविनुजियतबहुतदिनबीते  
हा जानकी लपन हा रघुवर \* हापितुहितचितचातकजलधर

दो० राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ॥

तन परिहरि रघुवर विरह, राउगएउसुरधाम ॥ १५५ ॥

जिअनमरनफलदसरथपावा \* अंडअनेक अमलजसछावा  
जिअतरामविधुवदन निहारा \* रामांवेरह भलिमरनसँवारा  
सोकविकल सवरोवहिंरानी \* रूपसील बलतेज बषानी  
करहिंबिलापअनेक प्रकारा \* परहिंभूमितल बारहिंबारा  
बिलपहिंबिकलदासअरुदासी \* घरघररुदन करहिं पुरवासी  
अथयउआजभानुकुलभानू \* धरमअवधि गुनरूपनिधानू  
गारी सकल कैकइहिं देहीं \* नयनविहीन कीन्हजगजेहीं  
एहिबिधिविलपतरैनिबिहानी \* आएसकलमहामुनिग्यानी  
दो० तबवसिष्ट मुनिसमय सम, कहिअनेक इतिहास ॥

सोकनिवारैउ सबहिकर, निजबिग्यानप्रकास ॥ १५६ ॥

तेलनाव भरिनुपतन राषा \* दूतबोलाइबहुरि असभाषा  
धावहु बेगि भरत पहिंजाहू \* नृपसुधिकतहुंकहहुजनिकहू  
एतनेइ कहहुभरत सनजाई \* गुरु बोलाइ पठए दोउभाई  
मुनिमुनिआयसुधावनधाए \* चलेबेग बरबाजि लजाए  
अनरथअवध अरंभेउजवते \* कुसगुनहोहिं भरतकहँतबते  
देषहिंराति भयानकंसपना \* जागिकरहिंकटुकोटिकल्पना  
बिप्र जँवाइ देहिं दिन दाना \* सिवअभिषेककरहिंविधिनाना  
माँगहिं हृदय महेस मनाई \* कुसलमातुपितुपरिजनभाई  
दो० एहिबिधि सोचत भरतमन, धावन पहुँचे आइ ॥

गुरअनुसासन श्रवनमुनि, चलेगनेस मनाइ ॥ १५७ ॥

चले समीर बेग हय हाँके \* नाघत सरित सैल बनबाँके

हृदउसोचवड कछुनसोहाई \* असजानहिंजियजाउँ उडाई  
 एक निमोषि वरष समजाई \* एहिविधिभरतनगर निअराई  
 असगुन होहिं नगर पैठारा \* रटहिकुभाँति कुषेतकरारा  
 पर सिआर बोलहिंप्रतिकूला \* सुनिसुनिहोइभरतमन सूजा  
 श्रीहत सरसरिता बनबागा \* नगर विसोषि भयावनलागा  
 षगमृगहयगय जाहिंनजोए \* रामवियोग कुरोग बिगोए  
 नगरनारि नर निपटदुषारी \* मनहुसबन्हिसबसंपतिहारी  
 दो० पुरजनमिलहिंनकहहिंकछु, गँवहिजोहारहिंजाहिं ॥

भरतकुसलपूछिनसकहिं, भयविषादमनमाहिं ॥१५८॥

हाटबाट नाहिं जाइ निहारी \* जनुपुरदहदिसिलागिदवारी  
 आवतसुतसुनिकैकयनंदिनि \* हरपी रविकुलजल रुचंदिनि  
 सजिआरतीमुदितउठिधाई \* द्वारेहिभौंति भवनलेइ आई  
 भरत दुषितपरिवारनिहारा \* मानहु तुहिनबनजवनमारा  
 कैकेई हरषित एहि भाँती \* मनहुमुदितदवलाइकिराती  
 सुताहिससोच देषि मनमारे \* पूछति नैहर कुसल हमारे  
 सकलकुसलकहिंभरतसुनाई \* पूछीनिजकुल कुसलभलाई  
 कहुकहँ तातकहाँ सबमाता \* कहाँसियरामलषनप्रियभ्राता  
 दो० सुनिसुतवचन सनेह मय, कपटनीर भरिनयन ॥

भरत श्रवनमन मूलसम, पापिनिबोलीवयन ॥१५९॥

तात बातमें सकल सँवारी \* भइमंथरा सहाय विचारी  
 कछुककाजविधिबीचविगारेउ \* भूपतिसुरपतिपुरपगु धारेउ  
 सुनतभरतभएविवसविषादा \* जनुसहमेउकरिकेहरिनादा  
 तात तात हातात पुकारी \* परेभूमितल व्याकुल भारी



चलतन देषन पाएउँ तोही \* तातन रामहि सौपेहुमोही  
 बहुरि धीरधरि उठे सँभारी \* कहु पितुमरनहेतुमहतारी  
 सुनिमुत बचनकहाति कैकेई \* मरम पाछिजनु माहुर देई  
 आदिहुते सब आपनिकरनी \* कुटिलकठोरमुदितमनवरनी  
 दो० भरताहि विसरेउ पितुमरन, सुनतरामवनगौन ॥

हेतुअपनपउजानिजिय, थकितरहे धरिमौन॥१६०॥

विकलविलोकि सुतहिसमुभावति \* मनहुजरेपरलोनेलगावति  
 तात राउ नहिं सोचइ जोगू \* विटइमुकृतजस कीन्हेउभोगू  
 जीवतसकल जनम फलपाए \* अंतअमरपति सदनसिधाए  
 असअनुमानि सोच परिहरहू \* सहितसमाजराजपुरकरहू  
 सुनिमुठि सहमेउराजकुमारू \* पाकेछत जनुलागअंगारू  
 धीरजधरिभारिलीन्हउसासा \* पापिनिसवहिभाँतिकुलनासा  
 जौपै कुरुचिरही अतितोही \* जनमत काहेन मारेमोही  
 पेडकाटितइँ पालउ सींचा \* मीनजिअननितिवारिउलीचा  
 दो० हंसबंस दसरथ जनक, रामलपनसे भाइ ॥

जननी तूजननी भई, विधि सनकछुन बसाइ॥१६१॥

जबतेकुमतिकुमताजिअठ्यऊ \* पंडपंडहोइ हृदयउन गयऊ  
 बरमागत मनभइनहिंपीरा \* गरिनजीहमुहपरेउ नकीरा  
 भूपप्रतीतितोरिदिमिकीन्ही \* मरनकालविधिमातिहरिलीन्ही  
 विधिहुननारिहृदयगतिजानी \* सकलकपटअघअवगुनपानी  
 सरल सुसील धरम रतराऊ \* सोकिमिजानइतीय सुभाऊ  
 असको जीवजंतु जगमाहीं \* जेहिरघुनाथप्रान प्रियनाहीं  
 भेअतिअहितरामतेउतोही \* कोतू अहसिसत्यकहु मोही

जोहसिसोहसिमुँहमसिलाई \* आँषिवोट उठि बैठहिजाई  
दो० रामविरोधी हृदयते, प्रकट कीन्ह विधि मोहि ॥  
मोसमान कोपातकी, बादिकहउँ कछुतोहि ॥१६२॥

सुनिशत्रुघन मातुकुटिलाई \* जरहिंगातरिस कछुनवसाई  
तेहिअवँसर कुवरी तहँआई \* वसनविभूषन विविध बनाई  
लषिरिसभरेउलपनलघुभाई \* वरतअनल घृतआहुति पाई  
हुमगि लाततकि कूबरमारा \* परिमुहभरमाहिकरतिपुकारा  
कूबर दूटेउ फूट कपारु \* दलितदसनमुषरुधिरप्रचारु  
आहिदइअ में काहनसावा \* करतनीकफलअनइसपावा  
सुनिरिपुहनलपिनषसिषणोटी \* लगेघसीटन धरिधरि झौंटी  
भरतदयानिधिदीन्ह छुटाई \* कौसल्या पहिगे दोउ भाई  
दो० मलिनवसन विवरन विकल, कृमसररिदुषभार ॥  
कनककलपवरवेलिवन, मानहुहनीतुसार ॥१६३॥

भरतहि देषि मातु उठिधाई \* मुरछितअवनि परीझँइआई  
देषतभरत विकलभयेभारी \* परेचरन तनदसा बिसारी  
मातु तात कहें देहि देपाई \* कहँसियरामलपनदोउभाई  
कइकइकतजनमीजगमाँझा \* जौंजनमितभइ काहेनबाँझा  
कुलकलंकजेहिजनमेउमोही \* अपजसभाजनप्रियजनद्रोही  
कोतिभुअनमोहिसरिसअभागी \* गतिअसितोरिमातुजेहिलागी  
पितु सुरपुरवन रघुवर केतू \* में केवल सबअनरथ हेतू  
धिगमोहिभए उँवेनुवनआगी \* दुसह दाह दुष दूषन भागी  
दो० मातुभरतके वचन मृदु, सुनिपुनि उठी सँभारि ॥  
लिएउठाइलगाइउर, लोचनमोचतिवारि ॥ १६४ ॥

सरलसुभाय माय हियलाए \* अतिहितमनहुरामफिरिआए  
 भेंटेउबहुरि लषन लघुभाई \* सोकसनेह न हृदय समाई  
 देषि सुभाउ कहत सबकोई \* राममातु असकाहे न होई  
 माता भरत गोद बैठारे \* आंसुपोंछि मृदुवचन उचारे  
 अजहुँ बछुबलि धीरज धरहू \* कुसमउसमुझिसोकपरिहरहू  
 जनिमानहुहियहानिगलानी \* कालकरमगाति अघटितजानी  
 काहुहि दोसदेहु जनि ताता \* भामोहिसवविधि बामविधाता  
 जोएतेहुदुष मोहि जिआवा \* अजहुँकोजानैकातेहिभावा  
 दो० पितु आयसु भूषन बसन, तात तजे रघुबीर ॥

बिसमउहरषनहृदयकछु, पहिरेवलकलचीर ॥१६५॥

मुष प्रसन्न मन रागन रोषू \* सबकरसवविधिकरिपरितोषू  
 चलेबिपिनसुनिसियसँगलागी \* रहइ न राम चरन अनुरागी  
 सुनतहिलषनचलेउठिसाथा \* रहहिंनजतन किएरघुनाथा  
 तब रघुपति सबही सिरनाई \* चले संगसिय अरु लघुभाई  
 रामलषनसियबनहिसिधाए \* गइउँन संग न प्रान पठाए  
 यहसबभाइन्हआपिनआगे \* तउनतजातन जीव अभागे  
 मोहिनलाजनिजनेहनिहारी \* राम सरिस सुत में महतारी  
 जिअइमरइभलभूपतिजाना \* मोरहृदयसतकुलिससमाना  
 दो० कौसल्या के वचनसुनि, भरतसहित रनिवास ॥

ब्याकुलबिलपतराजगृह, मानहुसोकनिवास १६६ ॥

बिलपहिं बिकलभरतदोउभाई \* कौसल्या लिए हृदय लगाई  
 भाँतिअनेक भरत समुझाए \* कहिविवेकमय वचनसुनाए  
 भरतहु मातु सकल समुझाई \* कहि पुरानश्रुति कथासुहाई

छलविहीनसुचिसरल सुवानी \* बोलै भरत जोरि जुगपानी  
जे अघमातु पिता गुरुमारे \* गाइगोठ महिसुर पुरजारे  
जे अघतियबालकबधकीन्है \* मीतमहीपतिमाहुर दीन्है  
जेपातकउपपातक अहहीं \* करमवचनमनभवकबिकहहीं  
तेपातक मोहिहोहु विधाता \* जौंयहुहोइ मोर मत माता  
दो० जेपरिहरि हरिहरचरन, भजहिं भूत घन घोर ॥  
तिन्हकइ गतिमोहिदेउविधि, जौंजननीमतमोर १६७॥

बेचहिं बेद धरम दुहिलेहीं \* पिसुनपराय पाप कहिदेहीं  
कपटीकुटिलकलहप्रियक्रोधी \* बेदविदूषक बिस्व विरोधी  
लोभी लंपट लोलुप चारा \* जेताकहिं परधन परदारा  
पावउँमैंतिन्हकइ गतिघोरा \* जौंजननी यह संमतमोरा  
जेनहिं साधु संग अनुरागे \* परमारथपथ विमुषअभागे  
जेनभजहिंहरि नरतन पाई \* जिन्हहिनहरिहरसुजससोहाई  
तजिश्रुतिपंथवामपथचलहीं \* बंचक विरचिवेषजगछलहीं  
तिन्हकइ गतिमोहिसंकरदेऊ \* जननी जौंयहजानउँ भेऊ  
दो० मातु भरतके वचन सुनि, साँचे सरल सुभाय ॥  
कहातिरामप्रियताततुम्ह, सदावचनमनकाय ॥१६८॥

रामप्रानहुते प्रान तुम्हारे \* तुम्हरघुपतिहिप्रानहुते प्यारे  
विधुविषचवइश्रवइ हिमआगी \* होइवारिचर वारि विरागी  
भएग्यान बरुमिटइन मोहू \* तुम्ह रामहि प्रतिकूलनहोहू  
मततुम्हारयहजोजगकहहीं \* सोसपनेहुसुषसुगतिनलहहीं  
असकहिमातुभरतहियलाए \* थनपयश्रवहिंनयनजलछाए  
रतविलाप बहुतएहिभाँती \* बैठेहि बीतिगई सब राती



बामदेव वसिष्ठ तब आए \* सचिवमहाजनसकलबोलाए  
मुनि बहुभाँतिभरतउपदेसे \* कहिपरमारथ वचन सुदेसे  
दो० तातहृदय धीरज धरहु, करहुजो अवँसर आज ॥

उठे भरतगुरुवचनसुनि, करनकहेउसबकाज ॥१६९॥

नृपतनवेदविहितअन्हवावा \* परमविचित्रविमान बनावा  
गाहिपग भरतमातुसवराषी \* रहींरामदरसन अभिलाषी  
चंदन अगर भारबहुआए \* अमित अनेक सुगंधसुहाए  
सरजूतीर रचि चिताबनाई \* जनुसुरपुर सोपान सुहाई  
एहिबिधिदाहाक्रियासबकीन्ही \* विधिवतन्हाइतिलांजलिदीन्ही  
सोधिमुमिति सब वेदपुराना \* कीन्हभरतदमगात विधाना  
जहँजसमुनिवरआयसुदांहा \* तहँतससहसभाँतिसबकीन्हा  
भए विमुद्ध दिए सबदाना \* धेनुवाजि गजवाहन नाना  
दो० सिंघासन भूषनवसन, अन्न धरनि धन धाम ॥

दिएभरत लहि भूमिसुर, मे परिपूरन काम ॥१७०॥

पितुहितभरत कीन्हजसकरनी \* सोमुषलाप जाइनहिंवरनी  
सुदिनसोधिमुनिवरतवआए \* सचिवमहाजनसकलबोलाए  
बैठे राज सभा सब जाई \* पठए बोलि भरतदोउभाई  
भरतवसिष्ठ निकट बैठारे \* नीतिधरम मयवचनउचारे  
प्रथमकथासबमुनिवरवरनी \* कहकइकुटिलकीन्हजसिकरनी  
भूपधरम ब्रत सत्य सराहा \* जेहितनपरिहरिप्रेम निवाहा  
कहतराम गुनसीलसुभाऊ \* सजलनयनपुलकेउमुनिराऊ  
बहुरिलषनसियप्रीतिवषानी \* सोकसनेहमगन मुनि ज्ञानी  
दो० सुनहुभरत भावी प्रबल, बिलषिकहेउ मुनिनाथ ॥

हानिलाभजीवनमरन, जसअपजस बिधिहाथ ॥१७१॥

असविचारिकेहि देइअ दोम् \* व्यर्थकाहिपरकीजिअरोसू  
तात विचार करहु मनमाहीं \* सोचजोग दसरथनृपनाहीं  
सोचिअ विप्रजो वेद विहीना \* तजिनिजधरमविषयलयलीना  
सोचिअनृपतिजो नीतिनजाना \* जेहिनिप्रजाप्रियप्रानसमाना  
सोचिअ वयस कृपिन धनवान् \* जोन अतिथिसिवभगतिसुजान्  
सोचिय मूढ़ विप्र अपमानी \* सुपरमान प्रियग्यानगुमानी  
सोचिअपुनि पतिवंचकनारी \* कुटिलकलह प्रियइच्छाचारी  
सोचिअबटुनिजव्रतपरिहरई \* जोनहिंगुर आयुस अनुसरई  
दो० सोचिअ गृहीजो मोहवस, करइकरम पथत्याग ॥  
सोचिअ जतीप्रपंच रत, विगतविवेकविराग ॥१७२॥

वैषानस सोइ सोचइ जोगू \* तप विहाइजेहिभावइभोगू  
सोचिअपिसुनअकारनक्रोधी \* जननिजनकगुरुबंधुविरोधी  
सबविधिसोचिअपर अपकारी \* निजतनपोषकनिरदयभारी  
सोचनीय सबही विधिसोई \* जोनछाडि छलहरिजनहोई  
सोचनीअ नाहिं कोमलराऊ \* भुअनचारिदसप्रगट प्रभाऊ  
भएउनअहइनअवहोनिहारा \* भूपभरतजस पिता तुम्हारा  
विधिहरिहरसुरपतिदिगिनाथा \* वरनहिं सबदसरथगुनगाथा  
दो० कहहुतात केहि भांति कोउ, करिहि बडाई तासु ॥

रामलपनतुम्ह सवहुन, सरिससुअनसुचिजासु १७३॥  
सबप्रकार भूपाति बडभागी \* वादिविषादकरिअतोहिलागी  
यहसुनिसमुझिसोचपरिहरहू \* सिरधरि राजरजायसु करहू  
रायराजपदतुम्हकहं दीन्हा \* पितावचनफुरचाहिअकीन्हा  
तजेरामजेहि वचनहिं लागी \* तनपरिहरेउ रामविरहागी

नृपहिबचनप्रियनहिं प्रियप्राना \* करहुतातपितुबचनप्रमाना  
 करहु सीस धरि भूप रजाई \* हइतुम्हकहँ सब भांतिभलाई  
 परसुराम पितु अग्या राषी \* मारीमातु लोग सबसाषी  
 तनयजजातिहिजो बनदयऊ \* पितुअग्याअघअजसनभयऊ  
 दो० अनुचितउचितविचारतजि, जेपालहिं पितुबचन ।

तेभाजनसुषसुजसके, बसहिंअमरपतिअयन ॥ १७४ ॥

अवसि नरेसबचन फुरकरहु \* पालहुप्रजा सोक परिहरहु  
 सुरपुर नृप पाइहि परितोष \* तुम्हकहँसुकृतसुजसनहिंदोष  
 वेदविहित संमत सबहीका \* जेहिपितुदेइसोपावइटीका  
 करहु राज परिहरहु गलानी \* मानहुमोरबचनहितजानी  
 सुनि सुष लहव राम बैदेही \* अनुचितकहवनपंडितकेही  
 कौसल्यादि सकलमहतारी \* तेउप्रजा सुपहोहि सुषारी  
 प्रेमतुम्हाररामकर जानिहि \* सोसबविधितुम्हसनभलमानिहि  
 सौपेहुराज राम के आए \* सेवा करहु सनेह सुहाए  
 दो० कीजिअगुरआयसुअवसि, कहहिंसचिवकरजोरि ॥

रघुपतिआएउचितजस, तसतबकरबबहोरि ॥ १७५ ॥

कौसल्या धरि धीरजकहई \* पूतपथ्यगुर आयसु अहई  
 सोआदरिअकरिअहितमानी \* तजिअविषाद कालगतिजानी  
 बन रघुपति सुरपुर नरनाहू \* तुम्हएहि भाँतितातकदराहू  
 परिजनप्रजासचिवसबअंबा \* तुम्हहीसुत सबकहँअवलंबा  
 लषिबिधिवामकालकठिनाई \* धीरज धरहुमातु बलिजाई  
 सिरधरिगुरआयसुअनुसरहु \* प्रजा पालिपुरजन दुषहरहु  
 गुरकेबचनसचिवअभिनंदन \* सुनेभरतहियाहितजनुचंदन

सुनी बहोरिमातु मृदुवानी \* सीलसनेह सरल रस सानी  
छं० सानी सरल रसमातुवानी सुनिभरत व्याकुलभए ॥

लोचन सरोरुहश्रवतसींचत विरहउरअंकुरनए ॥  
सो दसादेषतसमयतेहिविसरीसबाहिसुधिदेहकी ॥  
तुलसीसराहतसकलसादरसींसहज सनेहकी ॥

सो० भरत कमल करजोरि, धीरधुरंधर धीर धरि ॥

बचन अमिय जनुबोरि, दैतउचितउत्तरसबाहि १७६ ॥

मोहिउपदेस दीन्हगुरनीका \* प्रजासचिवसंमत सबहीका  
मातुउचितपुनिआयसुदीन्हा \* अवसिसीसधरिचाहौंकीन्हा  
गुरपितुमातुस्वामिहितवानी \* सुनिमनमुदितकरिअभलिजानी  
उचितकिअनुचितकिएविचारू \* धरमजाइ सिरपातक भारू  
तुम्हतौ देहुभरल सिप सोई \* जो आचरत मोरभल होई  
जद्यपि यहसमुझतह उंनीके \* तदपि होत परितोषनजीके  
अबतुम्हबिनयमोरिसुनलेहू \* मोहिअनुहरत सिषावनदेहू  
उत्तर देऊं छमव अपराधू \* दुषितदोषगुनगनहिंन साधू  
दो० पितुसुरपुर सियरामवन, करन कहहु मोहिराज ॥

एहिते जानहु मोरहित, कैआपन बडकाज ॥ १७७ ॥

हितहमारासिय पतिसेवकाई \* सो हरिलीन्हमातुकुटिलाई  
मैं अनुमानि दीपमनमाहीं \* आन उपाय मोरहितनाहीं  
सोक समाज राज केहिलेपे \* लपनराम सियपदविनु देशे  
बादिवसन विनुभूपनभारू \* बादिविरतिविनुब्रह्मविचारू  
सरुजसरीर बादि बहुभोगा \* विनुहरिभगतिजायजपजेगा  
जाय जीव विनु देहसुहाई \* बादिमोर सब विनु रघुराई



जाउँ रामपहिं आयसु देहू \* एकहि आँक मोर हितएहू  
मोहिनृपकरिभल आपनचहहू \* सोउसनेह जडताबस कहहू

दो० कैकइ सुअन कुटिलमति, राम विमुष गतलाज ॥

तुम्हचाहत सुषमोहबस, मोहिसेअधमकेराज १७८

कहों साँचसबसुनिपतिआहू \* चाहिअधरम सीलनरनाहू  
मोहिराजहंठि देइहहुजबहीं \* रसारसातल जाइहि तबहीं  
मोहिसमानको पापनिवामू \* जेहिलगि सीयरामवनवामू  
रायराम कहँकानन दीन्हा \* विछुरत गमन अमरपुरकीन्हा  
मैं सठसब अनरथ करहेतू \* बैठवात सब सुनउँ सचेतू  
बितुरघुबीर बिलोकिअवामू \* रहेप्रानसहि जग उपहामू  
राम पुनीति बिषय, रसरूपे \* लोलुप भूमि भोगके भूषे  
कहँलगिकहोंहृदयकठिनाई \* निदरिकुलिमजेहिलहीबडाई

दो० कारनते कारज कठिन, होइ दोस नहिं मोर ॥

कुलिम अस्थिते उपलते, लोहकरालकठोर १७९ ॥

कैकेई भवतन अनुरागे \* पाँवर प्रान अघाइ अभागे  
जौंप्रियबिरह प्रानप्रियलागे \* देषव सुनव बहुत अवआगे  
लषनरामसियकहँबनुदीन्हा \* पठइअमरपुरपतिहितकीन्हा  
लीन्हाविधवपनअपजसआपू \* दीन्हेउप्रजहि मोक संतापू  
मोहिदीन्हा सुषसुजससुराजू \* कीन्हा कइकई सबकरकाजू  
एहिते मोरकाह अब नीका \* तेहिपरदेन कहहुतुम्हटीका  
कइकइजठरजनामिजगमाहीं \* यहमोहिकहँकठुअनुचितनाहीं  
मोरिवातसबाविधिहि बनाई \* प्रजापाँच कतकरहु सहाई

दो० ग्रहग्रहीत पुनिवातवस, तेहिपुनिबीछीमार ॥  
तेहिपिआइअवारुनी, कहहु कवन उपचार १८० ॥

कैकइसुअन जोग जगजोइ \* चतुरविरंचिदीन्ह मोहिसोई  
दसरथ तनय राम लवुभाई \* दीन्हिमोहिविधिबादिवडाई  
तुम्हसबकहहुकटावनटीका \* रायराज सबही कहँ नीका  
उतरदेउँकेहिविधि केहिकेही \* कहहुसुषेन जथारुचिजेही  
मोहि कुमातु समेत बिहाई \* कहहुकहिहिकेकीन्हि भलाई  
मोबिनुको सचराचर माहीं \* जेहिसियरामप्रानप्रियनाहीं  
परमहानि सबकहँ बडलाहू \* अदिनमोरनहिं दूषन काहू  
संसयसील प्रेम बसअहहू \* सबइउचितसबजोकहुकहहू  
दो० राममातुसुठिसरलचित, मोपरप्रेमविसेषि ॥  
कहइसुभायसेनेहवस, मोरिदीनता देषि ॥ १८१ ॥

गुरबिवेकसागर जगजाना \* जिन्हहिविस्वकरबदरसमाना  
मोकहँतिलकसाजसजसोऊ \* भयेविधिविमुष विमुषसबकोऊ  
परिहरि रामसीय जगमाहीं \* कोनाकहहि मोर मतनाहीं  
सोमैं सुनबसहव सुषमानी \* अंतहु कीचतहाँजहँ पानी  
ढरनमोहिजगकहिहिकिपोचू \* परलोकहु करनाहिन सोचू  
एकइ उरबड दुसह दवारी \* मोहिलगिभेसियरामदुषारी  
जीवनलाहु लपनभल पावा \* सबतजि रामचरनमनलावा  
मोरजनम रघुवर बनलागी \* झूठकाह पछिताउँ अभागी  
दो० आपनिदासुन दीनता, कहउँ सबहिसिरनाइ ॥  
देषेबिबुरबुनाथपद, जिअकै जरनिनजाइ ॥ १८२ ॥

आनउपाउमोहि नहिमूझा \* को जिअकै रघुवर बिनुबूझा

एकहि आँकड़है मनमाहीं \* प्रातकाल चलिहों प्रभुपाहीं  
 जद्यपिमैंअनभल अपराधी \* भइमोहिकारनसकल उपाधी  
 तदपिसरनसनमुष मोहिदेषी \* छमिसवकरिहहिंकृपाविसेषी  
 सीलसकुचसुठिसरलसुभाऊ \* कृपासनेह सदन रघुराऊ  
 अरिहुकअनभलकीन्हनरामा \* मैसिसुसेवक जद्यपि वामा  
 तुम्हपै पाँचमोर भलमानी \* आयसु आसिष देहुसुवानी  
 जेहिसुनिबिनयमोहिजनजानी \* आवहिंबहुरि रामरजधानी  
 दो० जद्यपिजनमकुमातुते, मै सठसदासदोस ॥

आपनजानिनत्यागिहहिं, मोहिरघुबीरभरोस १८३॥

भरतवचनसवकहँप्रियलागे \* रामसनेह सुधा जनु पागे  
 लोगवियोगविषम विषदागे \* मंत्रसबीज सुनत जनुजागे  
 मातुसचिव गुरपुर नरनारी \* सकलसनेहविकलभएभारी  
 भरतहिकहहिंसराहिसराही \* रामप्रेम मूरति तन आही  
 तातभरत असकाहेनकहदू \* प्रानसमान रामप्रिय अहदू  
 जो पाँवर अपनी जडताई \* तुम्हहिसुगाइमातु कुटिलाई  
 सोसठ कोटिकपुरुषसमेता \* बसहिंकलपसतनरकनिकेता  
 अहिअघअवगुननहिमनिगहई \* हरइगरलदुष दारिद दहई  
 दो० अवसिचलियवनरामजहँ, भरतमंत्रुभल कीन्ह ॥

सोकसिंधुबूडतसबहि, तुम्हअवलंवनदीन्ह १८४मा०पा० १५

भासवके मनमोद न थोरा \* जनुघनधुनिसुनिचातकमोरा  
 चलवप्रातलपिनिरनउनीके \* भरतप्रान प्रियमे सबहीके  
 मुनिहिंबदिभरताहिसिरनाई \* चले सकलघर विदाकराई  
 धन्यभरत जीवनजगमाहीं \* सीलसनेह सराहत जाहीं

कहहिं परसपर भा बडकाजू ✽ सकलचलै करसाजहिं साजू  
जेहिं राषहिं रहघरखवारी ✽ सोजानै जनु गरदनि मारी  
कोउकहरहनकहिअनहिकाहू ✽ कोनचहइ जग जीवनलाहू  
दो० जरउसो संपतिसदनसुष, सुहृद मातुपितुभाइ ॥

सनसुषहोतजो रामपद, करइन सहस सहाइ ॥ ९८५ ॥

घरघर साजहिं बाहन नाना ✽ हरषहृदय परभात पयाना  
भरत जाइघरकीन्ह विचारू ✽ नगरवाजिगजभवनभँडारू  
संपति सबरघुपति कैआही ✽ जौंविनु जतनचलउँतजिताही  
तौपरिनाम न मोरि भलाई ✽ पापसिरोमनि साँइ दोहाई  
करइस्वामि हित सेवकसोई ✽ दूषनकोटि देइकिन कोई  
असबिचारि सुचिसेवकबोले ✽ जेसपनेहुनिज धरमन डोले  
कहिसबमरमधरमभलभाषा ✽ जोजेहिलायक सो तहराषा  
करिसव जतन राषिरषवारे ✽ राममातुपहिं भरत सिधारे  
दो० आरतजननी जानिसव, भरत सनेह सुजान ॥

कहेउ बनावन पालकीं, सजन सुषासन जान ॥ ९८६ ॥

चक्रचक्रि जिमि पुरनरनारी ✽ चहतप्रात उरआरत भारी  
जागतसबनिसिभएउबिहाना ✽ भरतबोलाएसचिवसुजाना  
कहेउलेहुसब तिलकसमाजू ✽ बनहिंदेव मुनि रामहिराजू  
बेगिचलहुसुनिसचिवजोहारे ✽ तुरत तुरंग रथनाग सँवारे  
अरुंधतीअरुअगिनिसमाऊ ✽ रथचढिचले प्रथममुनिराऊ  
बिप्रवृन्द चढि बाहननाना ✽ चलेसकल तपतेज निधाना  
नगरलोगसबसजिसजिजाना ✽ चित्रकूटकहँ कीन्ह पयाना  
सेविकासुभगनजाहिंषानी ✽ चढिचढिचलतभई सबरानी



दो० सौंपि नगर सुचिसेवकनि, सादरसबहि चलाइ ॥

सुमिरिरामसियचरनतब, चलेभरत दोउभाइ ॥ १८७॥

रामदरसबस सब नरनारी \* जनुकरिकरिनिचलेतकिवारी  
वनसिअरामसमुझिमनमार्ही \* सानुजभरत पयादेहिं जाहीं  
देषि सनेह लोग अनुरागे \* उतरिचले हय गयरथत्यागे  
जाइसमीप राषिनिजडोली \* राममातु मृदुबानी बोली  
तात चढहु रथबलिमहतारी \* होइहिप्रिय परिवार दुषारी  
तुम्हरे चलतचलिहिसबलोगू \* सकलसोककृमनहिंमगजोगू  
सिरधरिवचन चरनसिरनाई \* रथचढिचलत भएदोउभाई  
तमसाप्रथम दिवसकरिवामू \* दूमर गोमति तीर निवामू

दो० पय अहार फलअसनएक, निसिभोजनएकलोग ॥

करतरामहितनेमव्रत, परिहरिषृषनभोग ॥ १८८॥

सईतीर बसिचले विहाने \* शृंगवेरपुर सब निअराने  
समाचार सब सुने निषादा \* हृदय विचारकरै मविषादा  
कारन कवन भरतवनजाहीं \* हे कछु कपटभा उमनमार्ही  
जौंपैजिअन होतिकुटिलाई \* तौकतमंग लीन्हि कटकाई  
जानहिंसानुज रामहिमारी \* करों अकंटक राज सुषारी  
भरतन राजनीतिउरआनी \* तबकलंक अब जीवनहानी  
सकल सुरासुरजुरहिंजुझारा \* रामहि समरन जीतनिहारा  
काआचरजभरतअसकरहीं \* नहिंविषबेलिअमियफलफस्हीं

दो० असविचारि गुहग्यातिसन, कहेउ सजगसबहोहु ॥

हथबासहु बोरहु तरनि, कीजिअ घाटारोहु ॥ १८९॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा \* ठाटहु सकल मरइकैठाटा

सनमुष लोह भरतसनलेऊं \* जिअतनसुरसरितरनदेऊं  
 समरमरन पुनिसुरसरितीरा \* रामकाज छनभंग सरीरा  
 भरतभाइ नृप मैजन नीच \* बड़े भागअस पाइअमीच  
 स्वामिकाजकरिहुँ रनरारी \* जसधवलिहुँ मुअनदसचारी  
 तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरे \* दुहँहाथ मुद मोदक मोरे  
 साधु समाजन जाकर लेषा \* रामभगत महँजासु नरेषा  
 जायजिअतजगसोमहिभारु \* जननीजौवन बिटपकुठारु  
 दो० बिगत विषाद निषाद पति, सबहि बढाइ उछाहु ॥

सुमिरि राममाँगेउतुरत, तरकसधनुषसनाहु १९०॥  
 बेगहु भाइहु सजहु सजोऊ \* सुनिरजाइ कदराइ न कोऊ  
 भलेहिनाथसबकहाहिँ सहरषा \* एकहि एकबढावइ करषा  
 चलेनिषाद जोहारिजोहारी \* मूर सकल रन रूचै रारी  
 सुमिरि रामपदपंकजपनहीं \* भाथाबाँधिचढाइन्हधनुहीं  
 अँगरीपहिरि कूँडिसिरधरहीं \* फरसाबाँस सेल समकरहीं  
 एककुसल अति वोडनषाँडे \* कूदहिंगगनमनहुछिति छाँडे  
 निजनिजसाजसमाज बनाई \* गुरराउतहि जोहारे जाई  
 दीषिसुभट सब लायकजाने \* लै लै नाम सकल सनमाने  
 दो० भाइहुलावहु धोष जनि, आजकाज बढ मोहि ॥

सुनिसरोषबोलेसुभट, वीरअधीरनहोहि ॥ १९१ ॥  
 राम प्रताप नाथ बलतारे \* करहिकटकविनुभटबिनघोरे  
 जीवत पाउंन पाछे धरहीं \* रुँडमुँड मयमेदिनि करहीं  
 दीष निषाद नाथ भलटोल \* कहेउ बाजउ जुझाऊढोल  
 एतना कहत छींक भइबाँए \* कहेउसगुनिअन्हपेतसुहाए

बूढ एककह सगुन विचारी \* भरतहि मिलिअनहोइहिरारी  
 रामहि भरत मनावनजाहीं \* सगुनकहइअस विग्रहनाहीं  
 सुनिगुह कहइनीककहबूढा \* सहसाकरिपछिताहिविमूढा  
 भरत सुभाउ सीलविनुबूझे \* बडिहितहानिजानिविनुजूझे  
 दो० गहहुघाट भटसिमिटिसब, लेउंमरम मिलिजाइ ॥

बूझिमित्रअरिमध्यगति, तबतसकरिहऊंआइ १९२॥

लषवसनेह सुभाय सुहाए \* बैरप्रीति नहिं दुरइ दुराए  
 असकहिभेंट सँजोवन लागे \* कंदमूलफल पगमृगमाँगे  
 मीन पीन पाठीन पुराने \* भरिभरिभारकँहारन्ह आने  
 मिलनसाजसजिमिलनसिधाए \* मंगलमूल सगुन सुभपाए  
 दोषि दूरिते कहि निज नामू \* कीन्ह मुनीसहि दंडप्रनामू  
 जानिरामप्रियदीन्हअसीसा \* भरतहिकहेउबुझाइमुनीसा  
 रामसषासुनि स्यंदनत्यागा \* चलेउतरिउमगतअतुरागा  
 गाउँ जाति गुहनाउँ सुनाई \* कीन्हजोहारमाथमहिलाई  
 दो० करतदंडवत देषितेहि, भरतलीन्ह उरलाइ ॥

मनहुलषन सनभेटभइ, प्रेमनहृदय समाइ १९३ ॥

भेंटतभरतताहि अतिप्रीसी \* लोग सिहाहिं प्रेमकै रीती  
 धन्य धन्य धुनि मंगलमूला \* सुरसराहितेहिवरसहिं फूला  
 लोकवेद सबभाँतिहि नीचा \* जासुछाह छुइलेइ असीचा  
 तेहिभरिअंकरामलघुभ्राता \* मिलतपुलकपरिपूरितगाता  
 राम राम कहि जेजमुहाहीं \* तिन्हहिंनपाप पुंजसमुहाहीं  
 यहतौ रामलाइ उर लीन्हा \* कुलसमेतजगपावनकीन्हा  
 करमनासजल सुरसरिपरई \* तेहिकोकहहुसीस नहिंधरई

उलटानामजपत जगजाना \* बालमीकि भए ब्रह्मसमाना  
दो० स्वपचसवरषसजमनजड, पाँवर कोलकिरात ॥  
रामकहत पावनपरम, होतभुअन विष्यात ॥ १९४ ॥

नहिअचरजजुगजुगचलिआई \* केहिनदीन्ह रघुवीर बडाई  
राम नाममाहिमासुर कहहीं \* सुनिसुनिअवधलोगसुपलहहीं  
रामसषहिमिलिभरतसप्रेमा \* पूछी कुसल सुमंगल पेमा  
देषि भरत कर सील सनेह \* भानिषाद तेहि समयविदेह  
सकुचसनेह मोद मनबाढा \* भरतहिचितवतएकटकगढा  
धरिधीरज पदबंदि बहोरी \* विनयसप्रेमकरत करजोरी  
कुसल मूलपद पंकज पेपी \* मैतिहुँकालकुसलनिजलेपी  
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे \* सहितकोटिकुलमंगल मोरे  
दो० समुझि मोरिकरतूतिकुल, प्रभुमहिमा जिअजोइ ॥  
जोनभजहिरघुवीरपद, जगविधिवांचितसोइ १९५ ॥

कपटीकायरकुमातिकुजाती \* लोकवेद बाहेर सब भाँती  
रामकीन्ह आपन जबहींते \* भएउँभुअन भूषन तबहींते  
देषिप्रीति सुनिविनय मुहाई \* मिलेउ बहोरिभरतलघुभाई  
कहिनिषादानिजनामसुबानी \* सादर सकल जोहारी रानी  
जानिलषनसमदेहिअसीसा \* जिअहुसुषीसयलाष बरीसा  
निराषि निषादनगरनरनारी \* भएसुषीजनु लषन निहारी  
कहहिँलहे उएहिजीवन लाहू \* भेंटैउ राम भद्र भरिबाहू  
सुनिनिषादानिजभागबडाई \* प्रसुदित मनलैचलेउ लवाई  
दो० सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रूपपाइ ॥  
घरतरुतर सरवाग वन, बासवनाएन्हिजाइ ॥ १९६ ॥



मृगवेरपुर भरत दीप जब \* भेसनेहसब अंग सिथिलतब  
 सोहत दिण निषादहि लागू \* जनुतनधरे विनय अनुरागू  
 एहिविधिभरतसेन सबसंगा \* दीपजाइ जगपावनि गंगा  
 रामघाट कहँ कीन प्रनामू \* भामनमगन मिले जनुरामू  
 करहिं प्रनाम नगर नरनारी \* मुदित ब्रह्ममयवारि निहारी  
 करिमज्जनमाँगाहिकरजोरी \* रामचन्द्र पदप्रीति न थोरी  
 भरतकहेउ सुरसरि तबरेनू \* सकल सुषद सेवक सुरधेनू  
 जोरि पानि वरमाँगउँ एहू \* भीयरामपद महज सनेह  
 दो० एहिविधिमज्जन भरतकरि, गुरु अनुमासन पाइ ॥

माँतुनहाँनी जानि सब, डेराचले लवाइ ॥ १९७ ॥

जहँतहँ लोगन्ह डेराकीन्हा \* भरतसोधसबही करलीन्हा  
 गुरसेवा करि आयसु पाई \* राम मातुपहिंगे दोउ भाई  
 चरनचाँपिकहिकहिमृदुबानी \* जननीसकलभरतसनमानी  
 भाइहि सौँपि मातु सेवकाई \* आपुनिपादहिलीन्हवोलाई  
 चले सषाकरसों कर जोरे \* सिथिलसरीर सनेहन थोरे  
 पूछत सषहि सोठाँउ देषाऊ \* नेकुनयनमनजरनि जुडाऊ  
 जहँसियरामलषननिसिसोये \* कहत भरेजल लोचनकोये  
 भरतवचनसुनिभएउविषादू \* तुरत तहाँ लगएउ निषादू  
 दो० जहँ सिंसुपा पुनीत तरु, रघुवर किए बिस्राम ॥

अतिसनेह सादरभरत, कीन्हेउदंडप्रनाम ॥ १९८ ॥

कुससाथरी निहारि सुहाई \* कीन्ह प्रनामप्रदछिन लाई  
 चरन रेषरज आँषिन्ह लाई \* बनइनकहतप्रीतिअधिकारि  
 कनकविन्दु दुइ चारिकदेषे \* राषे सीस सीयसम लेषे

सजलबिलोचनहृदयगलानी \* कहतसपासनवचन सुवान  
श्रीहत सीयविरह दुतिहीना \* जथाअवधनरनारि मलीन  
पिताजनक देउं पटतरकेही \* करतलभोगजोग जगजेही  
ससुर भानुकुलभानुमुआल \* जेहिसिहातअमरावतिपाल  
प्राननाथ रघुनाथ गोसाई \* जो बड़होत सोराम बडाई  
दो० पाति देवता सुतीयमनि, सीय साथरी देषि ॥

बिहरत हृदउन हहरिहर, पवितेकठिनविसेषि १९८॥  
लालन जोगलषनलघु लोने \* भेनभाइ असअहहिंनहोने  
पुरजन प्रियपितुमातुदुलारे \* सियरघुवीरहि प्रानापियारे  
मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ \* तातबाउतन लागन काऊ  
तेबनसहहिंविपाति सबभाँती \* निदरेकोटिकुलिस एहिंछाती  
रामजनमिजगकीन्हउजागर \* रूपसील सुष सबगुनसागर  
पुरजन परिजनगुरापितुमाता \* रामसुभाऊ सबहिसुषदाता  
बैरिउ राम बडाई करहीं \* बोलनिमिलनिबिनयमनहरहीं  
सादर कोटिकोटिसतसेषा \* करिनसकहिंप्रभुगुनगनलेषा  
दो० सुषसरूप रघुवंस मनि, मंगलमोद निधान ॥

तेसोवतकुसटासिमहि, विधिगतिअतिबलवान १९९॥  
रामसुनादुष कानन काऊ \* जीवनतरुजिमिजोगवइराऊ  
पलकनयनफनिमनिजेहिभाँती \* जोगवहिंजननिसकलदिनराती  
तेअवाँफिरतविपिनपदचारी \* कंदमूल फलफूल अहारी  
धिग कैकई अमंगल मूला \* भइसिप्रानप्रियतमप्रतिकूला  
मैधिगधिगअघउदधिअभागी \* सबउतपातभएउजेहि लागी  
कुलकलंककरिसृजेउविधाता \* साँइद्रोहमोहिक्कीन्ह कुमाता

सुनि सप्रेमसमुझावनिषादू \* नाथकरिअकतवादि विषादू  
 रामतुम्हाहिप्रियतुम्हाप्रियरामहि \* यहनिरजोसदोसविधिवामहि  
 छं० विधिवामकी करनीकठिन जेहिंमातुकीन्हीबावरी ॥  
 तेहिरातिपुनिपुनिकरहिं प्रभुसादरसरहनारावरी ॥  
 तुलसी न तुम्हसो रामप्रीतम कहतहों सौहैं किए ॥  
 परिनाम मंगलजानि अपनेआनिए धीरजहिए ॥

सो० अंतरजामी राम, सकुचसप्रेम कृपायतन,

चलिअकरिअविश्राम, यहविचारदृढआनिमन २००॥

सषावचनसुनिउरधरिधीरा \* बासचले सुमिरत रघुबीरा  
 यहसुधि पाइनगर नरनारी \* चलेबिलोकन आरत भारी  
 परदछिनाकरिकरहिंप्रनामा \* देहिंकैकइहिषोरि निकामा  
 भरिभरि बारिविलोचनलेहीं \* बाम विधातहि दूषनदेहीं  
 एक सराहहिं भरत सनेहू \* कोउकहनृपातिनिवाहेउनेहू  
 निंदहिंआपुसराहिनिषादहि \* कोकहिसकइविमोहविषादहि  
 एहिविधिरातिलोगसबजागा \* भा भिनुसार गुदारा लगा  
 गुरहि सुनाव चढाइ सुहाई \* नई नावसब मातु चढाई  
 दंडचारि महँभा सब पारा \* उतरिभरततवसवहिंसँभारा  
 दो० प्रातक्रियाकरिमातुपद, बंदिगुरहिसिरनाइ ॥

आगेकिएनिषादगन, दीन्हेउकटकचलाइ ॥ २०१ ॥

किएउनिषादनाथअगुआई \* मातुपालकी सकल चलाई  
 साथबोलाइभाइलघु दीन्हा \* विप्रन्हसाहितगवनगुर कीन्हा  
 आपुसुरसरिहिकीन्ह प्रनामू \* सुमिरेलषनसहितसिय रामू  
 गवने भरत पयादेहि पाए \* कोतलसंगजाहिं डोरिआए  
 कहहिं सुसेवक बारहिंबारा \* होइअनाथ अस्वअसवारा

रामपयादेहि पाय सिधाए \* हमकहँरथगज बाजिवनाए  
सिरभरजाउँउचितअस भोरा \* सबते सेवक धरम कठोरा  
देखिभरतगतिसुनिमृदुबानी \* सबसेवकगन करहिंगलानी  
दो० भरत तीसरेपहर कहँ, कीन्ह प्रवेस प्रयाग ॥  
कहतारामसियरामसिय, उमगिउमगिअनुराग २०२

झलकाझलकहिं पायन्हकैसे \* पंकजकोस ओसकन जैसे  
भरत पयादेहि आए आजू \* भएउदुषित सुनिसकलसमाजू  
षवरि लीन्ह सबलोगनहाए \* कीन्हप्रनामत्रिवेनिहिआए  
सविधिसितासितनीरनहाने \* दिएदान महिसुर सनमाने  
देषत स्यामल धवल हलोरे \* पुलकिसरीर भरत करजोरे  
सकल कामप्रद तीरथ राऊ \* वेदविदित जगप्रगटप्रभाऊ  
माँगउ भीषत्यागिनिजधरमू \* आरत काहन करइकुकरमू  
असजिअजानिसुजानसुदानी \* सफलकरहिंजगजाचकवानी  
दो० अरथन धरम न कामरुचि, गतिनचहुँनिरवान ॥  
जनमजनमरतिरामपद, यहवरदाननआन २०३ ॥

जानहुरामकुटिलकरिमोही \* लोग कहउगुर साहब द्रोही  
सीताराम चरन रतिमोरे \* अनुदिन बढउ अनुग्रहतोरे  
जलदजनमभरिसुरतिविसारउ \* जाचतजलपविपाहनडारउ  
चातकरटनि घटे घटिजाई \* बढे प्रेमसब भाँति भलाई  
कनकहिवानचढइजिमिदाहे \* तिमिप्रियतमपदप्रेमनिबाहे  
भरतवचनसुनिमाँझत्रिवेनी \* भइमृदु बानि सुमंगल देनी  
तातभरततुम्हसवविधिसाधू \* रामचरन अनुराग अगाधू  
बादिगलानि करहुमनमाहीं \* तुम्हसमरामहिकोउप्रियनाहीं



दो० तनपुलकेउ हियहरष सुनि, बेनिबचन अनुकूल ॥

भरतधन्यकहिधन्यसुर, हरषितवरषहिंफूल ॥२०४॥

प्रमुदिततीरथराज निवासी \* बैषानस बटुगृही उदासी  
कहहिंपरसपरमिलिदसपाँचा \* भरतसनेह सीलसुचिसाँचा  
सुनतराम गुनग्राम सुहाए \* भरद्वाजमुनिवर पहिं आए  
दंड प्रनाम करत सुनि देषे \* मूरतिवंत भाग्य निजलेषे  
धाइ उठाइ लाइउर लीन्हें \* दीन्हिअसीस कृतारथकीन्हें  
आसन दीन्ह नाइसिरबैठे \* चहतसकुचगृहजनुभंजिपैठे  
सुनिपूछवकिछु यहबडसोच \* बोलैरिषिलपि सीलसकोच  
सुनहुभरत हमसबसुधिपाई \* विधिकरतवपरकिछुनवसाई

दो० तुम्हगलानिजिअजनिकरहु, समझिमातुकरतूति ॥

तातकैकइहिदोसुनहि, गईगिरामतिधूति ॥ २०५ ॥

यहउकहतभलकहिहिनकोऊ \* लोक वेदबुध संमत दोऊ  
ताततुम्हार बिमलजसगाई \* पाइहि लोकहु वेद बडाई  
लोकवेद संमत सब कहई \* जेहि पितुदेइ राज सोलहई  
राउसत्यव्रत तुम्हहिबोलाई \* देतराज सुषधरम बडाई  
रामगवनवन अनरथ मूला \* जोसुनिसकलविस्वभइमूला  
सो भाबी बसरानि अयानी \* करिकुचालिअंतहुपछितानी  
तहउँतुम्हार अलपअपराध \* कहइसोअधमअयानअसाध  
करतेहुराजतोतुम्हहिनदोसू \* रामहिहोत सुनत संतोसू  
दो० अबअतिकीन्हेंहु भरतभल, तुम्हहिउचितमतएहु ॥

सकलसुमंगलमूलजग, रघुवरचरनसनेहु ॥ २०६ ॥

सो तुम्हार धन जीवनप्राना \* भूरिभागको तुम्हहिसमाना

यह तुम्हार आचरजनताता \* दसरथसुवनरामप्रियभ्राता  
 सुनहुभरतरघुपति मनमाहीं \* प्रेमपात्रतुम्हसमकोउनाहीं  
 लषनराम सीतहिअतिप्रीती \* निसिसबतुम्हहिसराहतबीती  
 जाना मरम नहात प्रयागा \* मगनहोहिंतुम्हरे अनुरागा  
 तुम्हपरअस सनेह रघुवरके \* सुषजीवनजगजसजडनरके  
 यहनअधिक रघुवीर बडाई \* प्रनत कुंटुब पाल रघुराई  
 तुम्हतउ भरतमोरमत एहू \* धरे देह जनु राम सनेह  
 दो० तुम्हकहँभरत कलंकयह, हम सब कहँ उपदेस ॥  
 रामभगतिरससिद्धिहित, भायहसमउ गनेस ॥२०७॥

नवविधुविमलतातजसतोरा \* रघुवर किंकरकुमुद चकोरा  
 उदितसदाअथइहि कबहुँना \* घटिहिनजगनभदिनदिनदना  
 कोकतिलोकप्रीतिअतिकरिही \* प्रभुप्रतापरबिछविहिनहरिही  
 निसिदिनसुषदसदासबकाहू \* ग्रसिहिन कैकड करतबराहू  
 पूरन राम सुप्रेम पियूषा \* गुरअपमान दोष नहिं दूषा  
 रामभगतअबअमिअअघाहू \* कीन्हिहुसुलभसुधाबसुधाहू  
 भूप भगीरथ सुरसरि आनी \* सुमिरतसकलसुमंगलपानी  
 दसरथ गुनगनवरनिनजाहीं \* अधिककहाँजेहिसमजगनाहीं  
 दो० जासु सनेह सकोच बस, राम प्रगट भयेआइ ॥  
 जेहिरहिय नयननिकबहुँ, निरषे नहीं अघाइ २०८ ॥

कीरतिविधुतुम्हकीन्हिअनूपा \* जहँबस राम प्रेम मृग रूपा  
 तातगलानिकरहुजिअजाए \* डरहु दरिद्रहि पारस पाए  
 नहु भरतहम झूठन कहहीं \* उदासीन तापसवन रहहीं  
 बसाधन करसुफलसुहावा \* लषन रामसियदरसनपावा

तेहिफलकरफलदरसतुम्हारा \* सहितप्रयाग सुभाग हमारा  
 भरतधन्यतुम्हजगजसजयऊ \* कहिअसप्रेममगन मुनिभयऊ  
 सुनिमुनिवचनसभासदहरषे \* साधु सराहि सुमनसुर वरषे  
 धन्यधन्यधुनिगगन प्रयागा \* सुनिमुनिभरतमगनअचुरागा  
 दो० पुलकगातहिय रामसिय, सजल सरोरुह नयन ॥

करिप्रनाममुनिमंडलिहि, बोलेगदगदवयन ॥२०९॥

मुनिसमाज अरुतीरथ राजू \* साँचिहुसपथअघाइ अकाजू  
 एहिथलजौकिछुकहिअवनाई \* एहिममअधिकनअधअधमाई  
 तुम्ह सर्वज्ञकहउँ सतिभाऊ \* उर अंतरजामी रघुराऊ  
 मोहिन मातुकरतवकरसोचू \* नहिंदुपजियजगजानिहिपोचू  
 नाहिंनडर बिगारिहिपरलोकू \* पितहुमरनकरनाहिन सोकू  
 सुकृतसुजसभरिभुअनसुहाए \* लछिमनरामसरिससुतपाए  
 राम विरह तजितनछनभंगू \* भूप सोचकर कवन प्रसंगू  
 रामलषनसियबिनुपगपनहीं \* करिमुनिवेषफिरहिंबनवनहीं  
 दो० अजिनवसनफलअसनमहि, सयनडासिकुसपात ।

बसितरु तरनित सहताहिम, आतपवरपावात २१० ॥

एहिदुष दाहदहइनितछाती \* भूपन बासर नीदन राती  
 एहिकुरोगकर औषध नाही \* सोधेउँसकलविस्वमनमाहीं  
 मातुकुमत बढई अघ मूला \* तेहिंहमारहित कीन्हबमूला  
 कलिकुकाठकरकीन्हकुजंत्रू \* गाडिअवधपठिकठिनकुमंत्रू  
 मोहिंलगियहकुठाटतेहिगटा \* घालेसिसब जग बारहबाटा  
 मिटइकुरोगरामफिरिआए \* बसइअवधनाहि आनउपाए  
 भरतवचनमुनिमुनिसुषपाई \* सबहिंकीन्हबहुभाँति बडाई

तात करहुजनिसोचविसेषी \* सबहुष मिटिहिरामपददेषी  
दो० करिप्रबोध मुनिवरकहेउ, अतिथि प्रेमप्रिअहोहु ।  
कंदमूल फलफूल हम, देहिलेहु करिछोहु ॥ २१२ ॥

मुनिमुनिवचनभरतहियसोच \* भयउकुअँवसर कठिनसकोच  
जानि गरुड़गुर गिरा बहोरी \* चरन बंदिबोले करजोरी  
सिरधरिआयसुकरिअतुम्हारा \* परम धरम यहनाथ हमारा  
भरतवचनमुनिवरमनभाए \* सुचिसेवकसिपनिकटबोलाए  
चाहिअकीन्हिभरतपहुनाई \* कंदमूल फल आनहु जाई  
भलेहिनाथकहितिन्हसिरनाए \* प्रसुदित निजनिजकाजसिधाए  
मुनिहिसोचपाहुनबड नेवता \* तसिपूजाचाहिअजसदेवता  
मुनिरिधिसिधिअनिमादिकआई \* आयसुहोइसोकरहिं गोसाई  
दो० रामविरह व्याकुल भरत, सानुज सहित समाज ॥  
पहुनाई करिहरहुश्रम, कहासुदितमुनिराज ॥ २१२ ॥

रिधिसिधिसिरधरिमुनिवरवानी \* बडभागिनिआपुहि अनुमानी  
कहहिंपरसपरसिधिसमुदाई \* अतुलितअतिथिरामलघुभाई  
मुनिपदबंदिकरिअ सोइआजू \* होहिंसुषी सबराज समाजू  
असकहि रचेउरुचिरगहनाना \* जेविलोकिविलषाहिं विमाना  
भोग विभूतिभूरि भरिरापे \* देषतजिन्हहिंअमर अभिलाषे  
दासी दास साजसबलीन्हे \* जोगवतरहहिंमनहिं मनदीन्हे  
सबसमाजसाजिसिधिपलमाहीं \* जेसुष सुरपुर सपनेहुनाहीं  
प्रथमहि बासं दियेसबकेही \* सुंदर सुषद जथा रुचिजेही  
दो० बहुरिसपरिजनभरतकहँ, रिषिअसआयसुदीन्ह ।  
विधिविसमयदायकविभव, मुनिवरतपबलकीन्ह २१३



मुनिप्रभाउजबभरतबिलोका \* सबलघुलगे लोकपतिलोका  
 सुषसमाज नहिंजाइबपानी \* देखत विरतिविसारहिंज्ञानी  
 आसनसयनसुबसनबिताना \* बनवाटिकाबिहंग मृगनाना  
 सुरभिफूलफल अमिअसमाना \* विमलजलामय विविधविधाना  
 असनपानसुचिअमिअमीसे \* देषिलोग सकुचात जमीसे  
 सुरसुरभी सुरतरु सबहीके \* लषि अभिलाषसुरेससचीके  
 रितुबसंत बहत्रिविधवयारी \* सबकहंसुलभ पदारथचारी  
 सकचंदनबनितादिकभोगा \* देषिहरपविसमयवस लोगा  
 दो० संपति चकई भरत चक, मुनिआयसु पेलवार ॥

तेहिनिमि आश्रमपिंजरा, राषेभाभिनुसार ॥२१४॥

कीन्हनिमज्जनतीरथराजा \* नाइमुनिहिसिरमहितसमाजा  
 रिषिआयसुअसीससिरराषी \* करिदंडवतबिनय बहुभाषी  
 पथगतिकुसलसाथसबलीन्हे \* चले चित्रकूटहि चितदीन्हे  
 राम सषाकर दीन्हे लागू \* चलतदेह धरिजनु अनुरागू  
 नहिंपदत्रानसीसनहिंछाया \* प्रेमनेम व्रतधरम अमाया  
 लषन रामसिय पंथकहानी \* पृच्छतसपहिं कहतमृदुबानी  
 रामवास थलबिटप बिलोके \* उरअनुराग रहत नहिंरोके  
 देषिदसा सुर वरिसहिं फूला \* भइमृदुमाहि मगमंगलमूला  
 दो० किए जाहिंछाया जलद, सुषद बहइ बरबात ॥

तसमगभएउनरामकहँ, जसभा भरतहिजात २१५  
 जड चेतन मगजीव घनेरे \* जेचितए प्रभुजिन्ह प्रभुहेरे  
 ते सब भए परम पद जोगू \* भरत दरस मेटाभव रोगू  
 यह बडिवातभरतकइनाहीं \* सुमिरतजिन्हहिराममनमाहीं

वारक रामकहत जगजेऊ \* होत तरन तारन नरतेऊ  
भरतरामप्रियपुनिलधुभ्राता \* कसनहोयमग मंगलदाता  
सिद्धसाधुमुनिवरअसकहहीं \* भरतहिनिरपिहरषहियलहहीं  
दोषिप्रभाउ सुरेसहि सोचू \* जगभलभ अहिपोचकहँपोचू  
गुरसनकहेउ करियप्रभुसोई \* रामहि भरतहि भेंटनहोई  
दो० रामसकोची प्रेमवस, भरतसुप्रेम पयोधि ॥  
वनीवातविगरनचहति, करिअजतनछलसोधि ॥

वचनसुनतसुर गुरमुसकाने \* सहसनयनबिनु लोचनजाने  
कहगुरवादि छोभ छलछाँड़ \* इहाँ कपटकरि होइअभाँड़  
मायापाति सेवकसन माया \* करइत उलटि परइसुरराया  
तबकिछुकीन्हरामरूपजानी \* अबकुचालिकरिहोइहिहानी  
सुनुसुरेस रघुनाथ सुभाऊ \* निजअपराधरिसाहिंनकाऊ  
जो अपराध भगतकरकरई \* रामरोष पावक सो जरई  
लोकहुवेद विदितइतिहासा \* यहमहिमा जानहिंदुरबासा  
भरत सरिसको रामसनेही \* जगजपराम रामजप जेही  
दो० मनहुनआनिय अमरपति, रघुवरभगतअकाज ॥  
अजसलोकपरलोकदुष, दिनदिनसोकसमाज ॥

सुनुसुरेस उपदेस हमारा \* रामहिसेवक परम पिआरा  
मानत सुष सेवक सेवकाई \* सेवकबयर बयर अधिकार  
जद्यपि समनहिं रागनरोष \* गहहिंन पापपुंन गुनदोष  
हरमप्रधान विस्वकरिराषा \* जोजसकरइसोतसफलचाखा  
दपिकरहिंसमविषमबिहारा \* भगतअभगतहृदयअनुसारा  
गुनअलेप अमानएकरस \* रामसगुनभए भगतप्रमेवस

रामसदा सेवक रुचि राषी \* वेद पुरान साधु सुर साषी  
असजिअजानितजहुकुटिलाई \* करहु भरतपद प्रीति सुहाई

दो० रामभगतपरहितनिरत, परदुषदुषीदयालु मा० पा० १६  
भगतसिरोमनिभरतते, जनिटरपहु सुरपाल ॥२१८॥

सत्यसंधप्रभु सुर हितकारी \* भरतरामआयसु अनुसारी  
स्वारथविवसविकलतुम्हहोहू \* भरतदोस नहिं राउरमोहू  
मुनिसुरवर सुरगुर बरवानी \* भाप्रमोद मनमिटीगलानी  
बरषि प्रमून हरषि सुरराऊ \* लगे सराहन भरत सुभाऊ  
एहिविधिभरतचलेमगजाहीं \* दसादोषि मुनिसिद्ध सिहाहीं  
जबहिरामकहिलेहिंउसासा \* उमगतप्रेम मनहुचहुंपासा  
द्रवहिंबचनमुनिकुलिसपषाना \* पुरजन प्रेमनजाइ बषाना  
बीचवासकरि जमुनहिंआए \* निरषिनीर लोचन जलछाए

दो० रघुवर बरन बिलोकि बर, बारि समेत समाज ॥

होतमगन बारिधि विरह, चढे विवेकजहाज ॥२१९॥

जमुनतीरतेहिदिनकरिवामू \* भएउसमयसमसबहिसुपामू  
रातिहि घाटघाटकी तरनी \* आईअगनित जाहिंनवरनी  
प्रातपार भए एकहि षेवा \* तोषे राम सषाकी सेवा  
चले नहाइ नदिहि सिरनाई \* साथ निषादनाथ दोउभाई  
आगे मुनिबर वाहन आछे \* राज समाज जाइसब पाछे  
तेहि पाछे दोउ बंधु पयादे \* भूषन बसन बेषसुठि सादे  
सेवकसुहृद सचिवमुतसाथा \* सुमिरतलषन सीयरघुनाथा  
जहँ जहँ रामवास विश्रामा \* तहँतहँ करहिं सप्रेमप्रनामा

दो० मगवासी नरनारि सुनि, धाम काम तजिधाइ ॥

देषि सरूप सनेहवस, मुदित जनम फलपाइ ॥२२०॥

कहहिं सप्रेम एकयकपाहीं ✽ रामलपनसपिहोहिंकिनाहीं  
वयवपु वरनरूप सोइआली ✽ सीलसनेहसरिस समचाली  
वेषन सोसपि सीयन संगी ✽ आगे अनीचली चतुरंगा  
नहिप्रसन्न मुषमानस पेदा ✽ सपि संदेहहोइ एहिभेदा  
तासुतरकतियगनमनमानी ✽ कहहिंसकलतोहिसमनसयानी  
तेहिसराहि बानीफुरि पूजी ✽ बोलीमधुर वचन तियदूजी  
कहि सप्रेम सबकथा प्रसंगू ✽ जेहिविधिराम राजरसभंगू  
भरतहिवहुरि सराहनलागी ✽ सीलसनेह सुभाय सुभागी

दो० चलतपयादेषातफल, पितादीन्ह तजि राज ॥

जातमनावनरघुबरहि, भरतसरिस को आज २२१॥

भायपभगति भरतआचरनू ✽ कहतसुनत दुषदूषन हरनू  
जोकछु कहवथोर सपिसोई ✽ राम बंधु असकाहेन होई  
हमसब सानुज भरतहिंदेषे ✽ भइन्हधन्यजुवतीजन लेषे  
सुनिगुन देषिदसापछिताहीं ✽ कैकइजननि जोगसुतनाहीं  
कोउकहदूषनरानिहिनाहिन ✽ विधिसबकीन्हहमहिजोदाहिन  
कहंहमलोक बेदविधि हीनी ✽ लघुतियकुलकरतूतिमलीनी  
बसहिंकुदेस कुगाँवकुवामा ✽ कहंयहदरसपुन्य परिनामा  
असअनंदअचरजप्रति ग्रामा ✽ जनुमरुभूमिकलपतरुजामा

दो० भरत दरस देषतषुलेउ, मग लोगन्ह कर भाग ॥

जनुसिंघलबासिन्हभएउ, विधिवससुलभप्रयाग २२२॥

निजगुनसहितरामगुनगाथा ✽ सुनतजाहिंसुमिरतरघुनाथा



तीरथमुनिआश्रमसुरधामा \*निरषिनिमज्जहिंकरहिंप्रनामा  
 मनही मनमाँगहिं वर एहू \*सीयराम पदपदुम सनेहू  
 मिलहिंकिरातकोलवनवासी \*वैषानस बटुजती उदासी  
 करिप्रनाम पूछाहिजेहितेही \*केहिवन लषन राम वैदेही  
 ते प्रभुसमाचार सब कहहीं \*भरतहिदेषिजनमभल लहहीं  
 जेजनकहहिं कुसल हमदेषे \*ते प्रियरामलषन सम लेषे  
 एहिविधिबूझतसबहिसुवानी \*सुनतरामवन वास कहानी  
 दो० तेहि वासर बसिप्रातहीं, चलेसुमिरिरघुनाथ ॥

रामदरसकी लालसा, भरत सरिस सबसाथ ॥२२३॥  
 मंगलसगुन होहिं सबकाहू \*फरकहिंसुषद बिलोचनबाहू  
 भरतहिसहितसमाजउछाहू \*मिलिहहिंरामामिटिहिदुषदाहू  
 करतमनोरथजसजियजाके \*जाहिं सनेहसुरा सब छाके  
 सिथिलअंगपगमगडगिडोलहिं \*बिहवलवचनप्रेमबसबोलहिं  
 रामसषा तेहिसमयेदेषावा \*सैरुसिरोमनि सहज सुहावा  
 जासुसमीप सरितपयतीरा \*सीयसमेत बसहिं दोउबीरा  
 देषि करहिंसब दंड प्रनामा \*कहिजयजानकिजीवनरामा  
 प्रेममगन असराज समाजू \*जनुफिरिअवधचले रघुराजू  
 दो० भरत प्रेमतेहि समयजस, तसकहि सकइन सेषु ॥

कबहिअगमाजिमिब्रह्मसुष,अहमममलिनजनेषु २२४॥  
 सकलसनेहसिथिलरघुवरके \*गए कोसदुइदिन करहरके  
 जलथल देषि बसेनिसिबीते \*कन्हगवन रघुनाथ पिरीते  
 जहाँ राम रजनी अबसेषा \*जागेसीय सपन अस देषा  
 सहितरामाजभरतजनुआये \*नाथ बियोग तापतनताये

सकलमालिनमनदीनहुषारी \* देषीसासु आन अनुहारी  
सुनिसियसपनभरेजललोचन \* भएसोचवससोच विमोचन  
लषन सपनयह नीकनहोई \* कठिनकुचाहसुनाइहि कोई  
असकहि बधुसमेत नहाने \* पूजिपुरारि साधु सनमाने

छं० सनमानि सुरमुनि बंदिबैठेउतर दिसिदेषत भए ॥  
नभधूरिषगमृगधूरिभागे विकलप्रभु आस्रमगए ॥  
तुलसीउठेअवलोकिकारनकाहाचित चक्रितरहे ॥  
सवसमाचारकिरातकोलन्हिआइतेहिअँवसरकहे ॥  
सो० सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर ॥  
सरद सरोरुहनैन, तुलसीभरे सनेहजल ॥ २२५ ॥

बहुरि सोचवस भेसिअरवनू \* कारनकवन भरतआगवनू  
एक आइ अस कहा बहोरी \* सेन संग चतुरंगन थोरी  
सोसुनिरामहिंभाअतिसोच \* इतापितुवचउत बंधुसकोच  
भरतसुभाउसमुझिमनमाही \* प्रभुचितहितथिति पावतनाही  
समाधान तब भायह जाने \* भरत कहेमहँ साधु सयाने  
लषनलषेउप्रभुहृदयपभारू \* कहतसमयसमनीति विचारू  
बितुपूछे कहुकहउँ गोसाँई \* सेवकसमय न ढीठ ढिठाई  
तुम्हसर्वज्ञसिरोमनि स्वामी \* आपनि समुझि कहइअनुगामी  
दो० नाथसुहृद सुठिसरलचित, सील सनेह निधान ॥  
सबपरप्रीतिप्रतीतिजिय, जानियँ आपुसमान २२६

विषई जीव पाइ प्रभुताई \* मूढ मोहवस होहिं जनाई  
भरतनीतिरतसाधु सुजाना \* प्रभुपदप्रेमसकल जगजाना  
तेऊ आज राज पद पाई \* चलेधरम मरजाद मिटाई

कुटिलकुबंधुकुअवँसर ताकी \* जानिरामवनवास एकाकी  
 करिकुमंत्रमनसाजिसमाजू \* आए करइ अकंटकराजू  
 कोटिप्रकारकलपिकुटिलाई \* आएदल बटोरि दोउभाई  
 जौंजिअहोति न कपटकुचाली \* केहिसोहातिरथ बाजिगजाली  
 भरतहि दोस देइ को जाए \* जग बौराय राज पद पाए  
 दो० ससिगुरतियगामीनहुष, चढेउ भूमिसुरजान ॥

लोकवेदतें विमुषभा, अधमनवेनुसमान ॥ २२७ ॥

सहस बाहु सुरनाथ त्रिसंकू \* केहिनराजमददीन्ह कलंकू  
 भरतकीन्हयहउचितउपाऊ \* रिपुरिनरंचन राषव काऊ  
 एककीन्हिनहिं भरतभलाई \* निदरे रामजानि असहाई  
 समुझिपरिहिसोउ आजविसेषी \* समरसरोष राममुष पेषी  
 एतना कहत नीतिरसभूला \* रनरसबिटपपुलकमिसफूला  
 प्रभुपद बंदि सीस रज राषी \* बोलेसत्य सहज बलभाषी  
 अनुचितनाथन मानवमोरा \* भरतहमहि उपचारनथोरा  
 कहँलगिसहिअरहिअमनमारें \* नाथसाथ धनुहाथ हमारें  
 दो० छत्रिजाति रघुकुल जनम, राम अनुज जगजान ॥

लातहुँमारें चढति सिर, नीचकोधूरि समान ॥ २२८ ॥

उठिकरजोरिरजायसुमाँगा \* मनहुँबीररस सोवत जागा  
 बाँधिजटा सिरकसिकटिभाथा \* साजि सरासन सायकहाथा  
 आज राम सेवक जस लेऊँ \* भरतहि समर सिषावन देऊँ  
 राम निरादर करफल पाई \* सोवहुसमर सेंजदोउ भाई  
 आइबनाभल संकलसमाजू \* प्रगटकरउँरिस पाछिलआजू  
 जिमिकरिनिकरदलइमृगराजू \* लेइलपेटि लवाजिमि बाजू

तैसोहि भरताहि सेन समेता \* सानुजनिदरिनिपातउँपेत  
जौं सहायकर संकर आई \* तौ मारउँ रनराम दोहाः  
दो० अतिसरोष माषे लषन, लषिसुनि सपथ प्रवान ॥

सभयलोकसवलोकपति, चाहतभभरिभगान २२९ ॥  
जगभयमगनगगनभइवानी \* लषनबाहुवलविपुल वषानी  
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा \* कोकहिसकइकोजाननिहारा  
अनुचितउचितकाजकछुहोऊ \* समुझिकरिअभलकहसबकोऊ  
सहसा करि पाछेंपछिताहीं \* कहहिंवेद बुधते बुधनाहीं  
सुनिसुरवचनलषनसकुचाने \* रामसीय सादर सनमाने  
कहीतात तुम्हनीति सुहाई \* सबतेकठिन राजमद भाई  
जो अँचवत नृप माताहितेई \* नाहिन साधुसभाजेहिं सेई  
सुनहुलषनभलभरत सरीसा \* विधिप्रपंच महंसुना नदीसा  
दो० भरतहिहोइ न राजमद, विधिहरिहरपदपाइ ॥

कबहुँकिकाँजी सीकरनि, छीरसिंधुविनसाइ ॥२३०॥  
तिमिरतरुनतरनिहिमकुगिलाई \* गगनमगनमकुमेघाहिमिलई  
गोपदजल बूढहिं घटजोनी \* सहजछमा बरुछाडइ छोनी  
मसकफूक मकु मेरुउडाई \* होइन नृपमद भरतहिभाई  
लषनतुम्हारसपथपितुआना \* सुचिसुबधुनहिभरतसमाना  
सुगुनपीरअवगुनजल ताता \* मिलइरचइ परपंच विधाता  
भरतहंस राबिवंस तडागा \* जनमिकीन्हिगुनदोषविभागा  
गहिगुनपयतजिअवगुनभरी \* निजजसजगतकीन्हिउजियारी  
कहतभरतगुनसील सुभाऊ \* प्रेमपयोधि मगन रघुराऊ  
दो० सुनिरघुवरवानी विबुध, देषिभरतपरहेतु ।  
सकलसराहतरामसौ, प्रभुको कृपानिकेत ॥ २३१ ॥



जौंनहोतजगजनमभरतको \* सकलधरमधुरधरनिधरतको  
 कविकुलअगमभरतगुनगाथा \* कोजानइतुम्हबिनुरघुनाथा  
 लषनरामसियसुनिसुरवानी \* अतिसुषलहेउनजाइवपानी  
 इहाँभरतसबसहितसहाए \* मंदाकिनीपुनीतनहाए  
 सरितसमीपराषिसबलोगा \* मागिमातुगुरसचिवनियोगा  
 चलेभरतजहंसियरघुराई \* साथनिषादनाथलघुभाई  
 समुझिमातुकरतवसकुचाहीं \* करतकुतरककोटिमनमाहीं  
 रामलषनसियसुनिममनाऊ \* उठिजनिअनतजाहितजिठाऊँ  
 दो० मातुमतेमहंमानिमोहिं, जोकरुकरहिं सो थोर ॥

अघअवगुनछमिआदरहिं, समुझिआपनीओर ॥ २३२ ॥

जौंपरिहरहिंमलिनमनजानी \* जौंसनमानहिंसेवकमानी  
 मोरेसरनरामकीपनही \* रामसुस्वामिदोससबजनही  
 जगजसभाजनचातकमीना \* नेमप्रेमनिजनिपुननबीना  
 असमनगुनतचलेमगजाता \* सकुचसनेहसिथिलसबगाता  
 फेरतिमनहिंमातुकृतषोरी \* चलतभगतिबलधीरजधोरी  
 जबसमुझतरघुनाथसुभाऊ \* तवपथपरतउताइलपाऊ  
 भरतदसातेहिअवसरकैसी \* जलप्रवाहजलअलिगतिजैसी  
 देषिभरतकरसोचसनेहू \* भानिषादतेहिसमयबिदेहू  
 दो० लगेहोनमंगलसगुन, सुनिगुनकहतनिषाद ॥

मिटिहिसोचहोइहिहरष, पुनिपरिनामबिषाद ॥ २३३ ॥

सेवकवचनसत्यसबजाने \* आश्रमनिकटजाइनियराने  
 भरतदीषवनसैलसमाजू \* सुदितधुधितजनुपाइसुनाजू  
 ईतिभीतिजनुप्रजादुपारी \* त्रिविधितापपीडितग्रहमारी

जाइ सुराज सुदेससुपारी \* होहिभरतगतितोहिअनुहारी  
राम वासवन संपति भ्राजा \* सुषीप्रजा जनुपाइ सुराजा  
सचिवविराग विवेक नरेसू \* विपिन सुहावन पावनदेसू  
भटजमानियमसैलरजधानी \* सातिमुमतिमुचिसुंदरिरानी  
सकल अंगसंपन्न सुराऊ \* रामचरनआसितचितचाऊ  
दो० जीतिमोह महिपाल दल, सहित विवेकभुआल ॥  
करतअकंटकराज्यपुर, सुषसंपदा सुकाल २३४ ॥

वन प्रदेसमुनि वास घनेरे \* जनुपुरनगर गाँवगन पेरे  
विपुलविचित्रविहंगमृगनाना \* प्रजासमाज नजाइ बषाना  
षगहा करिहरिबाघ वराहा \* देषिमहिष वृषसाजसराहा  
वयर बिहाइचरहिं एकसंगा \* जहँतहँ मनहुसेन चतुरंगा  
शरनाशरहिंमत्तगजगाजहिं \* मनहुनिसानविविधिविधिवाजहिं  
चकचकोरचातकमुकपिकगन \* कूजतमंजु मराल सुदितमन  
अलिगनगावत नाचतमोरा \* जनुसुराज मंगल चहुँओरा  
बेलिविटपत्रिनसफलसफूला \* सबसमाज सुदमंगलमूला  
दो० रामसैल सोभा निरषि, भरत हृदय अति प्रेम ।

तापसतप फलपाइजिमि, सुषीसिरानेनेम ॥ २३५ ॥  
तबकेवट ऊँचे चढि धाई \* कहेउभरतसन भुजाउठाई  
नाथदेषिअहिविटपविसाला \* पाकरि जंघु रसाल तमाला  
तिन्हतरुबरन्हमध्यवटसोहा \* मंजुविसाल देषि मनमोहा  
नीलसघनपल्लवफललाला \* अबिरलछाँहसुषदसबकाला  
मानहुतिमिरअरुनमयरासी \* विरचीविधिसकेलिसुषमासी  
एतरु सरित समीप गोसाँई \* रघुवर परनकुटी जहँछाई

तुलसीतरुवर विविधसोहाए \* कहुँ कहुँसि अकहुँ लपन लगाए  
बट छाया बेदिका बनाई \* सियनिज पानिसरोज सुहाई  
दो० जहाँ बैठि मुनिगन सहित, नितसिय रामसुजान ।

मुनिहिकथा इतिहास सब, आगमनिगमपुरान २३६॥  
सषाबचन मुनिबिटपनिहारी \* उमगे भरत विलोचनवारी  
करत प्रनाम चले दोउ भाई \* कहत प्रीति सारद सकुचाई  
हरषहिं निरषिरामपदअंका \* मानहु पारस पाएउ रंका  
रजसिरधरिहिय नयनन्हि लावहिं \* रघुवर मिलन सरिस सुषपावहिं  
देषि भरत गति अकथ अतीवा \* प्रेममगन मृग षगज डजीवा  
सषहि सनेहविवस मग भूला \* कहिसुपंथ सुरवरषहिं फूला  
निरषिसिद्ध साधक अनुरागे \* सहज सनेह सराहन लागे  
होतन भूतल भाउ भरतको \* अचरसचरचर अचर करतको  
दो० प्रेम अमिअ मंदर बिरह, भरत पयोधि गंभीर ॥

मथि प्रगटेउ सुरसाधु हित, कृपासिंधुरघुवीर २३७॥  
सषासमेत मनोहर जोटा \* लपेउ लपन सघनवन ओटा  
भरत दीषप्रभु आस्रमपावन \* सकलसुमंगलसदन सुहावन  
करत प्रवेस मितेदुष दावा \* जनुजोगी परमारथ पावा  
देषे भरत लपन प्रभु आगे \* पूछे वचन कहत अनुरागे  
सीसजटा कटिमुनिपटवाँधे \* तूनकसे कर सरधनु काँधे  
बेदीपर मुनिसाधु समाजू \* सीयसहित राजत रघुराजू  
बलकलवसन जटिलनस्यामा \* जनुमुनिवेषकीन्ह रतिकामा  
करकमलनिधनुसायक फेरत \* जिअकीजर निहरत हँसि हेरत  
दो० लसतमंजुमुनिमंडली, मध्यसीय रघुचंद ।

ज्ञानसभा जनुतन धरे, भगति सच्चिदानंद २३८॥

सानुजसपांसमेत मगनमन\* विसरेहरष सोकसुषदुषगन  
पाहिनाथकहि पाहिगोसाई\* भूतल परेलकुटकी नाई  
वचन सप्रेमलपन पहिचाने\* करतप्रनाम भरतजियँजाने  
बंधुसनेह सरस इहि ओरा\* उत साहिव सेवा वरजोरा  
मिलिनजाइनाहिगुदरतवनई\* सुकबिलपनमनकीगतिभनई  
रहे राषि सेवा पर भारू\* चढी चंगजनु पैच षेलारू  
कहत सप्रेमनाइमहिमाथा\* भरत प्रनामकरत रघुनाथा  
उठेराम सुनिप्रेम अधीरा\* कहँपटकहँ निपंग धनुतीरा  
दो० वरवसलिए उठाय उर, लाएकृपा निधान ॥

भरतरामकीमिलनिलषि, विसरासवाहिअपान२३९॥  
मिलनिप्रीतिकिमिजाइवपानी\* कविकुलअगमकरममनवानी  
परम प्रेमपूरन दोउ भाई\* मनबुधिचितअहमितिबिसराई  
कहहु सुप्रेम प्रगटको करई\* केहिछायाकवि मतिअनुसरई  
कविहिअरथआषरबलसांचा\* अनुहरितालगतिहिनटनाचा  
अगम सनेहभरतरघुवरको\* जहँनजाइमनविधिहरहरको  
सोमईकुमातिकहउँकेहिभांती\* बाजसुराग किगाँडरताँती  
मिलनिबिलोकिभरतरघुवरको\* सुरगनसभयधकधकीधरकी  
समुझाए सुर गुरु जट जागे\* वरषि प्रसून प्रसंसन लागे  
दो० मिलिसप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम ॥

शूरिभाग भेंटेभरत, लछिमन करतप्रनाम ॥ २४० ॥  
भेंटेउ लषनललकिलबुभाई\* बहुरिनिषाद लीन्ह उरलाई  
गुनि सुनिगन दुहुँ भाइन्हबंदे\* अभिमतआसिषपाइअनंदे  
सानुजभरतउमागिअनुगंगा\* धरिसिरासियपदपहुस परागा



पुनिपुनि करतप्रनामउठाए \* सिर करकमलपरसि बैठाए  
सीयअसीसदीन्हिमनमाहीं \* मगन सनेहदेह सुधिनाहीं  
सबविधिसानुकुललपिसीता \* भेनिसोचउर अपहरबीता  
कोउकिछुकहइनकोउकिछुपूछा \* प्रेमभरामननिजगति छूछा  
तेहिअवँसरकेवटधीरजधरि \* जोरिपानिबिनवतप्रनामकरि  
दो० नाथ साथमुनि नाथके, मातुसकल पुरलोग ॥

सेवकसेनपसचिव सब, आणविकलवियोग २४१ ॥

सील सिंधुमुनि गुरआगवनू \* सियसमीप राषेरिपुदवनू  
चले सवेगराम तेहि काला \* धीरधरम धुरदीन दयाला  
गुरहिदेषि सानुज अनुरागे \* दंड प्रनाम करन प्रभुलागे  
मुनिबर धाइलिए उरलाई \* प्रेम उमगि भेंटे दोउभाई  
प्रेमपुलकि केवट कहिनामू \* कीन्ह दूरिते दंड प्रनामू  
रामसषारिषि बरवस भेंटा \* जनुमहि छुटतसनेहसभेंटा  
रघुपतिभगतिमुमंगलमूला \* नभसराहि सुरवारिषहिंफूला  
एहिसमनिपटनींच कोउनाहीं \* बडबसिष्टसम कोजगमाहीं  
दो० जेहिलपिलपनहुते अधिक, मिलेमुदितमुनिराउ ॥

सो सीतापति भजनको, प्रगट प्रताप प्रभाउ २४२ ॥

आरत लोग रामसब जाना \* करुनाकरमुजान भगवाना  
जोजेहिभायरहाअभिलाषी \* तेहितेहिकैतसितासि रुचिराषी  
सानुजामिलिपलमहँसबकाहू \* कीन्हदूरि दुष दारुन दाहू  
यह बडि बात रामके नाहीं \* जिमिघटकोटिएकरबिछाहीं  
मिलिकेवटहिउमगिअनुरागा \* पुरजनसकल सराहहिंभागा  
देषाराम दुषित महँतारी \* जनुसुबेलि अवलीहिममारी

प्रथम राम भैंटी कैकेई \* सरल सुभाय भगति मति भेई  
पगपरि कीन्ह प्रबोधवहोरी \* कालकरम विधिसि रधरिषोरी  
दो० भैंटी रघुवर मातु सब करि प्रबोध परितोष ॥

अंबईस आधीन जग काहुन देइअ दोष ॥ २४३ ॥  
गुरुतिय पदबंदे दुहुँ भाई \* सहित विप्रतिय जेसँग आई  
गंगगौरि समसब सनमानी \* देहिंअसीसमुदित मृदुबानी  
गहिपद लगे सुमित्रा अंका \* जनुभैंटी संपति अतिरंका  
पुनिजननी चरननिदोउ भ्राता \* परेप्रेम व्याकुल सब गाता  
अति अनुराग अंबउर लाये \* नयनसनेहसलिल अन्हवाये  
तेहिअवँसर कर हरषाविषाद \* किमिकविकहइमूकजिमिस्वाद  
मिलिजननिहिसानुजरधुराऊ \* गुरसनकहेउकिधारिअपाऊ  
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू \* जलथलतकितकिउतरेलोगू  
दो० महिसुर मंत्री मातु गुर, गने लोग लिए साथ ।

पावन आस्रमगवनकिय, भरतलषनरघुनाथ २४४ ॥  
सीय आइमुनिवर पगलागी \* उचितअसीसलहीमनमाँगी  
गुरपतिनिहिमुनितियनसमेता \* मिलीप्रेमकहि जाइन जेता  
बंदिबंदि पगसिय सबहीके \* आसिर वचन लहेप्रियजीके  
सासुसकल जबसीय निहारी \* मूँदेनयन सहमि सुकुमारी  
परीबधिकवसमनहु मराली \* काहकीन्ह करतार कुचाली  
तिन्हसियनिराषिनिपटदुषावा \* सोसब सहिअजोदैउसहावा  
जनकसुता तवउरधरिधीरा \* नीलनलिनलोचनभरिनीरा  
मिलीसकलसासुन्हसियजाई \* तेहिअवँसर करुनामहिछाई  
दो० लागिलागिपगसबानिसिय, भैंटीअतिअनुराग ॥  
हृदयअसीसहिंप्रेमवस, रहिअहुभरीसोहाग २४५ ॥

विकल सनेह सीयसब रानी \* बैठनसबहि कहे उगुरग्यानी  
 कहिजगगतिमायिकमुनिनाथा \* कहेकछुक परमारथ गाथा  
 नृपकर सुरपुरगवन सुनावा \* सुनिरघुनाथ दुसहदुष पावा  
 मरन हेतुनिज नेह विचारी \* भेअति विकल घीरधुरधारी  
 कुलिसकठोरमुनतकटुबानी \* बिलपतलपन सीयसबरानी  
 सोकविकलआतिसकलसमाजू \* मानहुँराज अकाजे उआजू  
 मुनिवरबहुरि राम समुझाए \* सहितसमाजमुसरित नहाए  
 ब्रतनिरंबुतोहिदिनप्रभुकीन्हा \* मुनिहुकहेजलकाहुन लीन्हा  
 दो० भोर भए रघुनंदनहि जो मुनि आयसुदीन्हा ॥

श्रद्धाभगतिसमेतप्रभु, सोसबसादरकीन्ह २४६ ॥

करिपितृक्रियाबेदजसिवरनी \* भेपुनीत पातकतम तरनी  
 जासु नाम पावक अघतूला \* सुमिरतसकलसुमंगल मूला  
 सुद्धसोभएउसाधुसंमतअस \* तीरथआवाहन सुरसरिजस  
 सुद्ध भए दुइ बासर बीते \* बोले गुर मनराम पिरीते  
 नाथलोग सबनिपट दुषारी \* कंदमूल फल अंबुअहारी  
 सानुजभरतसचिवसबमाता \* देषिमोहिपलजिमिजुगजाता  
 सब समेत पुरधारिअ पाऊ \* आपइहाँ अमरावति राऊ  
 बहुतकहेउँसबकिएउँढिठाई \* उचितहोइतसकरिअगोसाई  
 दो० धरमसेतुकरुनायतन, कसन कहहु अस राम ॥

लोगहुषित दिनहुइदरस, देषिलहेहुबिस्राम २४७ ॥

रामवचनमुनिसभयसमाजू \* जनुजलनिधिमहँविकलजहाजू  
 सुनिगुरगिरा सुमंगल मूला \* भएउमनहुमारुत अनुकूला  
 पावनिपयातिहुँ कालनहाहीं \* जोबिलोकिअघओघनसाहीं

मंगलमूरतिलोचन भरिभरि \* निरपहिंहरषिदंडवतिकरिकरि  
राम सैलवन देषन जाहीं \* जहँसुखसकलसकलदुखनाहीं  
झरनाझरहिं सुधासम बारी \* त्रिविधतापहरत्रिविधवयारी  
बिटपबेलिबिनअगनितजाती \* फलप्रमून पल्लव बहुभाँती  
सुंदरसिला सुषद तरुछाहीं \* जाइबरनिबनछवि केहिपाहीं  
दो० सरनि सरोरुह जलविहग, कूँजत गुँजत भृंग ॥

बैरविगतविहरतविपिन, मृग विहंग बहुरंग २४८ ॥

कोलकिरातभिल्लवनवासी \* मधुसुचिसुंदरस्वाद सुधासी  
भरिभरिपरनपुटी रचिरूरी \* कंद मूल फल अंकुरजूरी  
सबहिदेहिकरिविनयप्रनामा \* कहिकहिस्वादभेदगुननामा  
देहिं लोग बहुमोलन लेहीं \* फेरत राम दोहाई देहीं  
कहहिं सनेहमगन मृदुबानी \* मानत साधुप्रेम पहिचानी  
तुम्हसुकृतीहमनीचनिषादा \* पावा दरसन राम प्रसादा  
हमहिंअगम अतिदरसतुम्हारा \* जसमरुधरनि देवधुनिधारा  
रामकृपालनिषाद निवाजा \* परिजनप्रजउ चाहियजसराजा  
दो० यहजिअजानिसकोच तजि, करिअछोहलषिनेहु ॥

हमहिंकृतारथ करनलगि, फलबिनअंकुरलेहु २४९ ॥

तुम्हप्रिय पाहुनेवन पशुधारे \* सेवा जोगन भाग हमारे  
देवकाह हमतुम्हहि गोसाँई \* ईधनपात किरात मिताई  
यहहमारिअतिबडिसेवकाई \* लेहिंन वासनवसन चोराई  
हमजडजीव जीवगनघाती \* कुटिलकुचाली कुमतिकुजाती  
पापकरत निशिबासरजाहीं \* नहिंपटकटिनहिंपेट अघाहीं  
सपनेहुधरम बुद्धिकसकाऊ \* यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ



जबते प्रभुपद पदुम निहारे \* मिटेहुसह दुषदोष हमारे  
वचनसुनत पुरजन अनुरागे \* तिन्हके भागसराहनलागे  
छं० लागेसराहन भागसब अनुराग वचन सुनावहीं ॥

बोलनिमिलनिसियरामचरनसनेहलषिसुषपावहीं ॥  
नरनारिनिदरहिंनेहनिजमुनिकोलभिल्लिनिकीगिरा ॥

तुलसीकृपा रघुवंसमनिकी लोहलै नौकातिरा ॥

सो० बिहरहिंवनचहुँओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोगसब ॥

जलज्यों दादुरमोर, भएपीन पावसप्रथम २५० ॥

पुरनरनारिमगनअति प्रीती \* वासरजाहिंपलकसमबीती

सीय सासुप्रति वेष बनाई \* सादरकरइ सारिस सेवकाई

लषा न मरम राम बिनुकाहूँ \* मायासब सियमाया माहूँ

सीयसासुसेवा सब कीन्ही \* तिन्ह लहिसुषसिषआसिषदीन्ही

लषिसियसहितसरल दोउभाई \* कुटिल रानि पछितानिअघाई

अबनिजमाहि जाँचतिकैकैई \* महिनबीच विधिमीचनदेई

लोकहुबेदविहितकविकहहीं \* राम बिमुषथल नरकनलहहीं

यहसंसउ सबके मनमाहीं \* रामगवन विधिअवधकिनाहीं

दो० निसिन नीदनहिंभूषदिन, भरतविकल सुठिसोच ॥

नीचकीचबिचमगनजस, मीनहिसालिलसँकोच २५१ ॥

कीन्हिमातुमिसकालकुचाली \* इतिभीति जसपातकसाली

केहिविधिहोइरामअभिषेकू \* मोहि अवकलत उपाउनएकू

अवसिफिरहिंगुरआयसुमानी \* मुनिपुनिकहबराम रुचिजानी

मातु कहेउबहुरहिं रघुराऊ \* रामजननिहठकरबिकिकाऊ

मोहिअतुचरकर केतिकबाता \* तेहिमहँकुसमउबामधिधाता

जौहठकर उतनिपटकुकरमू ✽ हरगिरिते गुरुसेवक धरमू  
एकउ जुगुतिनमनठहरानी ✽ सोचतभरतहि रौनि बिहानी  
प्रात नहाइ प्रभुहिसिरनाई ✽ बैठत पठए रिषय बोलाई  
दो० गुरुपद कमल प्रनाम करि, बैठे आयसु पाइ ॥

विप्र महाजन सचिवसब, जुरेसभा सदआइ २५२ ॥  
बोले मुनिवर समयसमाना ✽ सुनहुसभासदभरत सुजाना  
धरम धुरीन भानुकुलभानू ✽ राजा रामस्ववस भगवानू  
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू ✽ राम जनम जगमंगल हेतू  
गुरपितु मातुवचनअनुसारी ✽ पलदलदलन देवहितकारी  
नीतिप्रीतिपरमारथस्वारथ ✽ कोउनरामसमजानजथारथ  
विधिहरिहरसासिरविदिसिपाला ✽ मायाजीवकरम कुलिकाला  
अहिपमाहिपजहँलगिप्रभुताई ✽ जोगसिद्धि निगमागमगाई  
करि विचाराजियदेषहुनीकें ✽ राम रजाइ सीस सबहीकें  
दो० राषें रामरजाइ रुप, हमसब कर हित होइ ॥

समुझिसयाने करहुअब, सबमिलिसंमतसोइ २५३ ॥  
सबकहँ सुषदरामअभिषेकू ✽ मंगल मोदमूल मगएकू  
केहिबिधिअवधचलहिरघुराऊ ✽ कहहुसमुझिसोइकरिअउपाऊ  
सब सादरसुनिमुनिवरबानी ✽ नयपरमारथ स्वारथ सानी  
उतरन आवलोगभये भोरे ✽ तबसिर नाइभरत करजोरे  
भानुवंस भये भूप घनेरे ✽ अधिक एकतैं एक बढेरे  
जनम हेतुसबकहँ पितुमाता ✽ करमसुभासुभ देइविधाता  
दलिदुषसजइसकलकल्याना ✽ असिअसीसराउरिजगजाना  
सांगोसाँइविधिगतिजेहिछेकी ✽ सकइकोटारि टेकजोटेकी

दो० बूझिअ मोहि उपाउ अब, सोसब मोर अभाग ॥

सुनिसनेह मयवचन गुर, उरउमगा अनुराग २५४॥  
 तात बात फुरि रामकृपाहीं \* रामविमुषसिधिसपनेहुनाहीं  
 सकुच उतात कहत एकवाता \* अरधतजहिं बुधसरवसजाता  
 तुम्हकाननगवनहुदो उभाई \* फेरिअ हिलषनसीय रघुराई  
 सुनिमुवचनहरषेदो उभाता \* भे प्रमोद परिपूरन गाता  
 मन प्रसन्न तनतेजविराजा \* जनुजियेराउ रामभएराजा  
 बहुतलाभलोगन्ह लघुहानी \* समदुषमुषसबरोवहिं रानी  
 कहाहिं भरतमुनि कहासो कीन्हे \* फलजगजीवन्ह अभिमतदीन्हे  
 काननकर उंजनमभरिबामू \* एहिते अधिकन मोरसुपासू  
 दो० अंतरजामीरामसिय, तुम्ह सर्वज्ञ सुजान मा० पा० १७

जौ फुर कहहुं तनाथनिज, कीजि अबचन प्रमान २५५॥

भरत वचन सुनिदेषि सनेहू \* सभासहित मुनिभएविदेहू  
 भरत महामहिमाजलरासी \* मुनिमति ठाढ़ि तीर अबलासी  
 गाचह पार जतनाहिय हेरा \* पावति नावन बोहित बेरा  
 अवरकरिहिको भरतवड़ाई \* सरसीसीपिकि सिंधुसमाई  
 भरतमुनिहमन भीरतभाए \* सहितसमाज रामपहिं आए  
 प्रभुप्रनाम करि दीन्हि सुआसन \* बैठे सब मुनिमुनि अतुसासन  
 बोले मुनिवर वचनविचारी \* देसकाल अवसर अनुहारी  
 सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना \* धरमनीति गुनग्याननिधाना  
 दो० सबके उर अंतरबसहु, जानहु भाउ कुभाउ ॥

पुरजनजननी भरताहित, होइसोकहिअ उपाउ २५६॥  
 आरत कहहिं विचारिनकाऊ \* मूझजुआरिहि आपनदाऊ

मुनिमुनिवचन कहतरघुराऊ \* नाथतुम्हारेहि हाथउपाऊ  
सबकर हित रुपरा उरि राषे \* आयसुकिए मुदितफुरभाषे  
प्रथमजोआयसु मोकहँहोई \* माथेमानि करउँ मिषसोई  
पुनिजेहिकहँजसकहवगुसाँई \* सोसबभाँतिघटिहिसेवकाई  
कहमुनिरामसत्यतुम्हभाषा \* भरतसनेह विचारन राषा  
तेहिते कहउँ बहोरि बहोरी \* भरतभगतिवसभइमतिमोरी  
मोरेंजान भरतरुचि राषी \* जोकीजियसोसुभसिवसाषी  
दो० भरतविनय सादरमुनिअ, करिअ विचारबहोरि ॥

करवसाधुमतलोकमत, नृपनयनिगमनिचोरि २५७॥

गुर अनुराग भरत परदेसी \* राम हृदय आनंद विसेषी  
भरतहि धरम धुरंधर जानी \* निजसेवक तनमानसबानी  
बोलेगुर आयसु अनुकूल \* बचन मंजुमृदु मंगलमूल  
नाथसपथ पितुचरनदोहाई \* भएउनभुअनभरतसमभाई  
जे गुरपद अंबुज अनुरागी \* ते लोकहुँ बेदहुँ बढभागी  
राउर जापर अस अनुराग \* कोकहिसकइ भरतकरभाग  
लषि लवुबंधु बुद्धि सकुचाई \* करत बदनपर भरतबडाई  
भरतकहहिंसोइ किँभलाई \* असकहिराम रहे अरगाई  
दो० तबमुनिबोले भरतसन, सब सकोच तजि तात ॥

कृपासिंधुप्रिय बंधुसन, कहहुहृदय कइवात ॥२५८॥

मुनिमुनिवचन रामरुषपाई \* गुरसाहिब अनुकूल अघाई  
लषिअपनेसिर सबछरभारु \* कहिनसकहिं कछु करहिबिचारु  
पुलकि सरीर सभा भएठाढे \* नीरजनयन नेहजल बाढे  
कहबमोर मुनिनाथनिबाहा \* एहितेंअधिक कहौं मैकाहा



मैं जानउँ निजनाथसुभाऊ \* अपराधिहुँपर कोहनकाऊ  
 मोपर कृपा सनेह विसेषी \* षेलत पुनिस न कवहुँ देषी  
 सिसुपन तैं परिहरेउ न संगू \* कवहुँन कीन्ह मोरमनभंगू  
 मैंप्रभु कृपारीति जियजोही \* हारिहुँषेल जितावहिं मोही  
 दो० महुँसनेह सकौच बस, सनमुष कहेन बयन ॥

दरसनतृपितनआजलगि, प्रेमपियासेनयन ॥२५९॥

विधिनसकेउसहिमोरदुलारा \* नीचबीच जननी मिसपारा  
 यहउकहतमोहिआजनसोभा \* अपनीसमुझिसाधुसुचिकोभा  
 मातुमंदमइ साधु सुचाली \* उरअसआनतकोटिकुचाली  
 फरइकिकोदववालिमुसाली \* मुकुताप्रसव किसंबुकताली  
 सपनेहु दोसकलेस न काहू \* मोरअभाग उदधिअवगाहू  
 बिनसमुझैनिजअघपरिपाकू \* जारैउंजायजननिकहिकाकू  
 हृदयहेरि हारेउं सबओरा \* एकहिभाँतिभलेहिभलमोरा  
 गुरुगोसाइँ साहिव सियरामू \* लागत मोहिनीक परिनामू  
 दो० साधुसभा गुरप्रभुनिकट, कहउं सुथलसतिभाउ ॥

प्रेमप्रपंच कि झूठफुर, जानहिंमुनिरघुराउ २६० ॥

भूपतिमरन प्रेम पनराषी \* जननीकुमतिजगतसबसाषी  
 देषिनजाहिंबिकलमहतारीं \* जरहिंदुसहजर पुर नरनारीं  
 महींसकल अनरथकरमूला \* सोसुनिसमुझिसहेउं सबमूला  
 सुनिबनगवनकीन्हरघुनाथा \* करिसुनिवेषलषनसियसाथा  
 बिनपानहिन्हपयादेहिपाए \* संकरसाषि रहेउं एहिघाएँ  
 बहुरिनिहारि निषाद सनेहू \* कुलिसकठिनउरभएउनबेहू  
 अवसवआँषिन्ह देषेउंआई \* जिअतजीव जडसबइसहाई

जिन्हहिनिर्षेमगसापिनिचीछीं ✽ तजहिंविषमविषतापसुतीछीं  
दो० तेइरघुनंदन लपन सिय, अनहित लागे जाहि ॥

तासुतनयताजिहुसहदुष, दैउसहावइकाहि ॥ २६१ ॥

सुनिअतिविकलभरतवरबानी ✽ आरतिप्रीतिविनयनयसानी  
सोक मगन सबसभाषभारू ✽ मनहुकमलवनपरेउ तुसारू  
कहिअनेकविधिकथापुरानी ✽ भरतप्रबोधकीन्हमुनिग्यानी  
बोले उचित वचन रघुनंदू ✽ दिनकर कुलकैरव वनचंदू  
तातजायजियकरहु गलानी ✽ ईसअधीन जीवगति जानी  
तीनिकालतिहुअनमतमोरे ✽ पुन्यसलोक ताततर तोरे  
उरआनततुम्हपरकुटिलाई ✽ जाइलोक परलोक नसाई  
दोसदेहिं जननिहि जडतेई ✽ जिन्हगुरसाधुसभा नहिंसेई  
दो० मिटिहई पाप प्रपंचसब, अपिउ अमंगल भार ॥

लोकसुजसपरलोकसुष, सुमिरतनाम तुम्हार २६२ ॥

कहउँसुभाउसत्यसिवसाषी ✽ भरतभूमिरह राउरि राषी  
तात कुतरककरहुजनिजाए ✽ बैरप्रेमनहिं दुरइ दुराए  
मुनिगननिकटबिहंगमृगजार्ही ✽ बाधकबाधिकबिलोकिपराहीं  
हितअनहितपसुपांछिउजाना ✽ मानुषतनगुनग्याननिधाना  
तात तुम्हहिमईजानउँनीकें ✽ करउँकाह असमंजस जीकें  
राषेउराय सत्यमोहित्यागी ✽ तनपरिहरेउ प्रेमप्रन लागी  
तासुवचन भेटत मन सोचू ✽ तेहितेअधिकतुम्हारसकोचू  
तापरगुरमोहिआयसुदीन्हा ✽ अवसिजोकहहुचहउँसोइकीन्हा  
दो० मनप्रसन्नकरिसकुचताजि, कहहुकरउँसोइआज ॥

सत्यसंधरघुबरवचन, सुनिभासुषीसमाज ॥ २६३ ॥

सुरगनसहित सभयपुरराज \* सोचहिं चाहत होनअकाजू  
 करतउपाउ बनतकछुनाहीं \* रामसरन सबगे मनमाहीं  
 बहुरि विचारिपरसपरकहहीं \* रघुपतिभगतभगतिवसअहहीं  
 सुधिकरि अंबरीष दुरवासा \* भेसुरसुरपतिनिपट निरासा  
 सहेसुरन्ह बहुकाल विषादा \* नरहरि किएप्रगट प्रहउदा  
 लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा \* अबसुरकाज भरतकें हाथा  
 आन उपाउन देषिअदेवा \* मानतराम सुसेवक सेवा  
 हियसप्रेमसुमिरहुसब भरतहि \* निजगुनसीलरामवसकरतहि  
 दो० सुनिसुरमत सुरगुर कहेउ, भलतुम्हार बडभाग ॥

सकलसुमंगलमूलजग, भरतचरनअनुराग ॥ २६४ ॥

सीतापति सेवक सेवकाई \* कामधेनुसय सरिस सुहाई  
 भरतभगति तुम्हरे मनआई \* तजहुसोचविधि बात बनाई  
 देषु देवपति भरत प्रभाऊ \* सहजसुभाय बिबसरघुराऊ  
 मनथिर करहुदेव डरुनाहीं \* भरतहिजानिरामपरिछाहीं  
 सुनिसुरगुर सुरसंमत सोचू \* अंतरजामी प्रभुहि सकोचू  
 निजसिरभारभरतजियजाना \* करतकोटिविधिउरअनुमाना  
 करि विचारमनदीन्हीठीका \* रामरजायसु आपन नीका  
 निजपनतजिराषेउपनमोरा \* छोहसनेह कीन्ह नहिंथोरा  
 दो० कीन्ह अनुग्रहअमितअति, सबविधिसीतानाथ ॥

करिप्रनाम बोलेभरत, जोरिजलजजुगहाथ २६५ ॥

कहउँकहावउँकाअबस्वामी \* कृपाअंबुनिधि अंतरजामी  
 गुरप्रसन्न साहेब अनुकूल \* मिटीमालिनमनकलपितसूला  
 अपडर डरेउँ नसोच समूले \* रबिहिन दोसदेव दिसिभूले

मोरअभाग मातु कुटिलाई \* विधि गति विषमकालकठिनाई  
पाउँरोपिसवमिलिमाहिवाला \* प्रनतपालपन आपन पाला  
यहनइरीति न राउरि होई \* लोकहु बेदविदित नहिंगोई  
जगअनभलभलएकगोसाई \* कहिअहोइभलकासु भलाई  
देउदेवतरु सरिस सुभाऊ \* सनमुष विमुषनकाहुहिकाऊ  
दो० जाइनिकटपहिचानितरु, छाँहसमनिसबसोच ॥

माँगतअभिमतपावजग, राउरंकभलपोच ॥ २६६ ॥

लाषिसवाविधिगुरुस्वामिसनेह \* मिटेउछोभनहिं मनसंदेह  
अवकरुनाकर कीजिअसोई \* जनाहितप्रभुचितछोभनहोई  
जोसेवकसाहिवाहि सकोची \* निजहितचहइतासु मतिपोची  
सेवकहित साहेव सेवकाई \* करइसकल सुपलोभविहाई  
स्वारथनाथ फिरें सबहीका \* किएँरजाइकोटिविधिनीका  
यह स्वारथ परमारथ सारु \* सकलपुकृतफलपुगतिसिंगारु  
देवएक विनती सुनिमोरी \* उचितहोइ तसकरब बहोरी  
तिलकसमाजसाजिसवआना \* करिअसुफलप्रभुजौंमनमाना  
दो० सानुजपठइअ भोहिंवन, कीजिअ सबहि सनाथ ।

नतरुफेरिआहि बंधुदोउ, नाथचलउँ मइँसाथ २६७॥

नतरुजाहिं बनतीनिउभाई \* बहुरिअसीय सहित रघुराई  
जेहिबिधिप्रभुप्रसन्नमनहोई \* करुनासागर कीजिअ सोई  
देवदीन्ह सब मोहिअभारु \* मोरे नीति न धरम विचारु  
कहउँ बचन सब स्वारथहेतू \* रहतन आरत कैं चितचेतू  
उतरुदेइ सुनि स्वामिरजाई \* सोसेवक लषि लाज लजाई  
असमइँअवगुन उदिधअगाध \* स्वामि सनेह सराहत साधू



अवकृपालमोहिसोमतभावा \* सकुचस्वामिमन जाइनपावा  
 प्रभुपदसपथकह उँसतिभाऊ \* जगमंगल हितएक उपाऊ  
 दो० प्रभुप्रसन्न मनसकुच तजि, जो जेहि आयसुदेव ॥  
 सोसिरधरिधरिहरिसवामिटिहि अनटअवरेव २६८ नवाह ५  
 भरतवचनसुचिसुनि सुरहरषे \* साधुसराहि सुमन बहुवरषे  
 असमंजस वसअवधनेवासी \* प्रसुदितमन तापसवनवासी  
 चुपहि रहे रघुनाथ सकोची \* प्रभुगतिदेषि सभासवसोची  
 जनकदूततेहि अवँसरआए \* मुनिवसिष्टमुनिवेगिवोलाए  
 करिप्रनामतिन्हरामनिहारे \* देशदेषि भएनिपट दुषारे  
 दूतन्ह मुनिवर बूझी बाता \* कहहु विदेह भूपकुसलाता  
 मुनिसकुचाइनाइमहि नाथा \* बोले चरवर जोरें हाथा  
 बूझव राउर सादर साई \* कुसल हेतु सोभएउ गोसाई  
 दा० नाहित कोसल नाथकें, साथ कुसल गइ नाथ ॥  
 मिथिलाअवधविसेषते, जगसबभएउअनाथ २६९ ॥  
 कोसलपतिगतिमुनिजनकोरा \* भे सवलोग सोगवस बउरा  
 जेहिं देशेतेहि समय विदेह \* नामसत्य असलागन केहू  
 रानिकुचालिसुनत नरपालहि \* मूजन कछुजसमनिबिनुव्यालहि  
 भरत राज रघुवर बनवामू \* भामिथिलेसहि हृदयहरामू  
 नृपबूझे बुधसचिव समाजू \* कहहुविचारिउचितकाआजू  
 समुझिअवधअसमंजसदोऊ \* चलिअकिराहि अनकहकछुकोऊ  
 नृपहिं धीरधरिहृदयविचारी \* पठए अवध चतुरचर चारी  
 बूझिभरतसतिभाऊकुभाऊ \* आएहु बेगिन होइ लषाऊ  
 दो० गएअवध चरभरत गति, बूझिदेषि करतूति ॥  
 चलेचित्रकूटहि भरत, चारचलेतेरहूति ॥ २७० ॥

दूतन्ह आइभरतकइकरनी ✽ जनकसमाजजथामतिबरनी  
मुनिगुरपरिजनसाचिवमहीपति ✽ भेसवसोचसनेहविकलअति  
धरिधीरज करि भरतबडाई ✽ लिए सुभटसाहनी बोलाई  
घरपुर देस राषि रषवारे ✽ हयगयरथ बहुजान संवारे  
दुधरीसाधि चले ततकाला ✽ किएविस्त्रामनमगमहिपाला  
भोरहि आज नहाइप्रयागा ✽ चलेजमुनउतरनसब लागा  
षवरिलेनहम पठए नाथा ✽ तिनकहिअसमहि नाएउमाथा  
साथ किरातछसातकदीन्हे ✽ मुनिवरतुरतविदा चरकीन्हे  
दो० सुनत जनक आगवनसब, हरषेउ अवध समाज ॥

रघुनंदनहिं सकोचबड, सोचबिवससुरराज ॥२७१॥

गरइगलानि कुटिल कइकेई ✽ काहि कहइ केहिदूषन देई  
असमनआनिमुदितनरनारी ✽ भएउबहोरिरहव दिनचारी  
येहि प्रकार गतबासर सोऊ ✽ प्रातनहान लागसब कोऊ  
करिमज्जन पूजहिंनरनारी ✽ गनपगौरितिपुरारित मारी  
रमारमन पद बांदि बहोरी ✽ बिनवाहिंअंजुलिअंचलजोरी  
राजा राम जानकी रानी ✽ आनंदअवाधिअवधरजधानी  
सुवसवसउफिरिसहितसमाजा ✽ भरतहि रामकरहु जुबराजा  
एहिसुष सुधसींचि सबकाहू ✽ देवदेहु जगजीवन लाहू  
दो० गुर समाज भाइन्ह सहित, राम राज पुरहोउ ॥

अछतरामराजाअवध, मरिअमांगसबकोउ ॥२७२॥

मुनिसनेहमयपुरजन बानी ✽ निंदाहिंजोगविरतिमुनिग्यानी  
एहिबिधिनित्यकरमकरिपूजन ✽ रामहिकरहिंप्रनामपुलकितन  
ऊचनीच मध्यम नरनारी ✽ लहहिंदरसनिजनिजअनुहारी

सावधान सबहीसनमानहिं \* सकलसराहतकृपानिधानहिं  
 लरिकाइहि ते रघुवर बानी \* पालतनीतिप्रीतिपहिचानी  
 सील सकोच सिंधु रघुराऊ \* सुमुषसुलोचनसरल सुभाऊ  
 कहत रामगुन गनअनुरागे \* सबनिजभागसराहन लागे  
 हम सम पुन्यपुंजजगथोरें \* जिन्हहिरामजानतकरिमोरें  
 दो० प्रेममगन तेहि समयसब, सुनिआवत मिथिलेस ॥

सहितसभासंभ्रमउठेउ, रविकुलकमलदिनेसर ७३ ॥

भाइसचिव गुरपुरजनसाथा \* आगे गवन कीन्ह रघुनाथा  
 गिरिवरदीपजनकनृप जवहीं \* करिप्रनामरथत्यागेउतवहीं  
 राम दरस लालसा उछाहू \* पथस्रमलेसकलेसन काहू  
 मन तहं जहं रघुवर बैदेही \* विनुमनतनदुषसुषसुधिकेही  
 आवतजनकचलेएहिभांती \* सहितसमाज प्रेममतिमांती  
 आये निकट देषिअनुरागे \* सादर मिलन परसपर लागे  
 लगेजनकमुनिजनपदबंदन \* रिषिन्हप्रनामकीन्हरघुनंदन  
 भाइन्हसहितराममिलिराजहि \* चलेलेवाइ समेत समाजहि  
 दो० आस्रम सागर सांत रस, पूरन पावन पाथ ॥

सेन मनहु करुना सरित, लियें जात रघुनाथ २७४ ॥

बोरतिग्यान विराग करारें \* बचनससोकमिलत नदनारें  
 सोचउसास समीर तरंगा \* धीरज तटतरुवर करभंगा  
 विषमविषादतोरावतिधारा \* भयभ्रमभँवर अवर्तअपारा  
 केवटबुध विद्या बडिनावा \* सकहिंनषेइ ऐकनहिंआवा  
 बनचर कोलकिरातविचारें \* थकेबिलोकिपाथिकहिअहारें  
 आस्रमउदधिमिलीजबजाई \* मनहुउठेउअबुधि अकुलाई

सोकविकलदोउराजसमाजा ✽ रहा न ज्ञान नधीरजलाजा  
भूप रूप गुन सील सराही ✽ रोअहिंसोक सिंधुअवगाही  
छं० अवगाहिसोकसमुद्रसोचहिं नारिनरव्याकुरुमहा ॥  
दैदोषसकलसरोषबोलहिं वामविधिकीन्होकहा ॥  
सुरसिद्धतापसजोगिजन मुनिदेषिदसाविदेहकी ॥  
तुलसीनसमरथकोऊजो तरिसकैसरितसनेहकी ॥  
सो० किएअमितउपदेस, जहंतहँलोगनमुनिबरन ॥

धीरजधरिअनरेस, कहेउबसिष्टविदेहसन २७५ ॥

जासुग्यानरविभवानिसिनासा ✽ बचनकिरन मुनिकमलबिकास  
तेहिकिमोहममतानिअराई ✽ यह सिअराम सनेह बड़ाई  
बिषई साधक सिद्ध सयाने ✽ त्रिविधजीवजग वेदवषाने  
राम सनेह सरस मनजामू ✽ साधु सभा बढ आदरतामू  
सोहन राम प्रेम बिनुग्यानू ✽ करनधारबिनुजिमिजलजानू  
मुनिबहुविधिविदेहसमुझाए ✽ रामघाट सब लोग नहाए  
सकलसोक संकुल नरनारी ✽ सो बासर बीतेउ बिनुबारी  
पसुषगमृगन्हनकीन्हअहारू ✽ प्रियपरिजनकरकवनबिचारू  
दो० दोउसमाज निमिराजरघु, राजनहाने प्रात ॥

बैठेसबबटबिटपतर, मनमलीन कूसगात २७६ ॥

जे महिसुरदसरथ पुरवासी ✽ जेमिथिलापतिनगरनिवासी  
हंस बंस गुर जनक पुरोधे ✽ जिन्हजगमगपरमारथसोधा  
लगे कहन उपदेस अनेका ✽ सहितधरमनयविरतिविवेका  
कौसिककहिकहिकथापुरानी ✽ समुझाई सब सभा सुबानी  
तबरघुनाथकौसिकहिकहेऊ ✽ नाथकालिजलबिनुसबरहेऊ



मुनिकहउचितकहतरघुराई \* गएउबीति दिन पहरअढाई  
 रिषिरुषलषिकहतेरहुतिराजू \* इहांउचितनहिंअसनअनाजू  
 कहाभूप भलसबहिसोहाना \* पाइरजायसु चले नहाना  
 दो० तेहि अँवँसर फलफूल दल, मूल अनेक प्रकार ॥

लइआए बनचर विपुल, भरिभरिकाँवरिभार २७७ ॥

कामद भेगिरि रामप्रसादा \* अवलोकतअपहरतविषादा  
 सरसरितावन भूमिविभागा \* जनुउमगतआनंदअनुरागा  
 बेलिविटप सबसफलसफूला \* बोलतषगमृगअलिअनुकूला  
 तेहिंअवँसरवनअधिक उछाहू \* त्रिविधसमीर सुषदसबकाहू  
 जाइन बरनि मनोहरताई \* जनुमहिकरतिजनकपहुनाई  
 तब सब लोग नहाइ नहाई \* रामजनकमुनि आयसुपाई  
 देषि देषि तरुवर अनुरागे \* जहँतहँपुरजन उतरनलागे  
 दलफल मूल कंदविधिनाना \* पावन सुंदर सुधा समाना  
 दो० सादर सब कहँराम गुर, पठए भरि भरि भार ॥

पूजिपितरसुरअतिथिगुर, लगेकरनफलहार २७८ ॥

येहिविधिबासर बीतें चारी \* रामनिरषि नरनारि सुषारी  
 दुहुँसमाजअसिरुचिमनमाहीं \* विनुसियरामफिरबभलनाहीं  
 सीता राम संग बन वासू \* कोटि अमरपुरसरिससुपासू  
 परिहरि लषन राम बैदेही \* जेहिघरभाव बामाविधितेही  
 दाहिन दइउहोइ जबसबहीं \* रामसमीपवसिअ बनतबहीं  
 मंदाकिनिमज्जनतिहुँकाला \* रामदरस सुदमंगल माला  
 अटनरामगिरिवनतापसथल \* असनअमियसमकंदमूलफल  
 सुष समैत संमत दुइसाता \* पलसमहोहिंनजनिअहिजाता

दो० यहिसुष जोगन लोगसब, कहहिं कहाँ असभाग ॥

सहज सुभाय समाजहुँ, रामचरनअनुराग २७९ ॥

येहिविधिसकलमनोरथकरहीं \* वचनसप्रेम सुनत मनहरहीं  
सीयमातुतोहि समय पठाई \* दासींदेपि सुअँसर आई  
सावकाससुनिसबसियसामू \* आएउजनकराज रनिवासू  
कौसल्या सादर सनमानी \* आसनदिएसमयसमआनी  
सीलसनेह सरस दुहुँओरा \* द्रवहिंदेपिसुनिकुलिसकठोरा  
पुलकसिथिलतनवारिविलोचन \* महिनपलिपनलगींसबसोचन  
सबसियरामप्रीतिकिसिमूरति \* जनुकरुना बहुवेषबिमूरति  
सीयमातुकहविधिवुधिबाँकी \* जोपयफेन फोरिपबिटाँकी  
दो० सुनिआसुधा देपिअहिगरल, सबकरतूति कराल ॥

जहँतहँकाकउलूकबक, मानससकृतमराल २८० ॥

सुनिससोचकहदेवि सुमित्रा \* विधिगतिबाडि विपरीतविचित्रा  
सोसृजि पालइहरइ बहोरी \* बालकेलिसमाविधिमतिभोरी  
कौसल्या कह दोस नकाहू \* करमविवसदुषसुषल्लतिलाहू  
कठिनकरमगतिजानविधाता \* जोसुभअसुभसकलफलदाता  
ईस रजाइ सीस सबहीकें \* उतपतिथितिलयविषहुअमीकें  
देवि मोहबससोचि अबादी \* विधिप्रपंचअसअचलअनादी  
भूपतिजिअवमरबउरआनी \* सोचिअसाषिलषिनिजहितहानी  
सीय मातु कहसत्यसुबानी \* सुकृतीअवाधिअवधपतिरानी  
दो० लषनरामसिय जाहुवन, भल परिनाम न पोच ॥

गहबराहियकह कौसिला, मोहिभरतकरसोच २८१ ॥

स प्रसाद असीस तुम्हारी \* सुतसुतबधूविबुध सरि बारी

रामसपथ में कीन्हिनकाऊ \* सोकरिकहोंसषी सतिभाऊ  
 भरतसील गुनविनय बडाई \* भायपभगति भरोसभलाई  
 कहतसारदहु कर मति हीचे \* सागरसीपिकिजाहिंउलीचे  
 जानउँसदा भरत कुलदीपा \* बारवारमोहि कहेउमहीपा  
 कसैंकनकमनिपारिषि पाएँ \* पुरुषपरिषिअहिसमयसुभाएँ  
 अनुचितआजकहब असमोरा \* सोकसनेह सयानप थोरा  
 सुनिसुरसरिसमपावानिवानी \* भईसनेह विकल सब रानी  
 दो० कौसल्या कह धीरधरि, सुनहु देवि मिथिलेसि ॥

कोविवेकनिधिवल्लभहि, तुम्हहिसकइउपदेसि २८२  
 रानि रायसन अवँसर पाई \* अपनीभाँतिकहब समुझाई  
 रषिअहिलषनभरतगौनहिंवन \* जौंयहमतमानइ महीपमन  
 तौ भलजतनकरबसुविचारी \* मोरे सोचभरत कर भारी  
 गूढ सनेह भरत मन माहीं \* रहेंनीकमोहि लागत नाहीं  
 लषिसुभाउसुनिसरलसुवानी \* सबभईमगन करुनरसरानी  
 नभप्रमूनझरिधन्यधन्यधुनि \* मिथिलसनेहसिद्धिजोगीसुनि  
 सवरानिवासविथकिलषिरहेऊ \* तबधरिधीर सुभिन्ना कहेऊ  
 देवि दंड युग जामिनिबीती \* राममातुसुनिउठी सप्रीती  
 दो० बेगिपाँउ धारिअ थलहि, कह सनेह सतिभाय ॥

हमरेंतौअबईसगति, कैमिथिलेससहाय २८३ ॥

लषिसनेहसुनिवचनाबिनीता \* जनकप्रियागहे पायपुनीता  
 देविउचितअसिविनयतुम्हारी \* दसरथ घरनिराम महतारी  
 प्रभुअपने नीचहु आदरहीं \* अगिनिधूमगिरिसिरतिरनधरहीं  
 सेवक राउकरम मन बानी \* सदासहाय महेस भवानी

रौंरै अंग जोग जग कोहै \* दीपसहाय कि दिनकरसोहै  
 रामजाइवनकरि सुरकाजू \* अचलअवधपुरकरिहहिंराजू  
 अमरनागनर रामबाहुबल \* सुषवसिहहिंअपनेअपनेथल  
 यहसबजागबालिककाहिराषा \* देविनहोइ सुधामुनि भाषा  
 दो० असकाहिपगपरि प्रेमअति, सियहितविनयसुनाइ ॥

सियसमेतसियमातुतब, चलीसुआयसुपाइ २८४ ॥

प्रियपरिजनाहिमिलीबैदेही \* जो जेहिजोगभाँतितेहितेही  
 तापस वेष जानकी देषी \* भासबविकलविषाद विसेषी  
 जनक रामगुर आयसुपाई \* चलेथलहि सियदेषी आई  
 लीन्हिलाइ उरजनक जानकी \* पाहुनि पावन प्रेमपानकी  
 उरउमगेउ अंबुधिअतुरागू \* भएउ भूपमन मनहु प्रयागू  
 सियसनेह बट बाढतजोहा \* तापर राम प्रेम सिसुसोहा  
 चिरंजीवीमुनिग्यानबिकलजनु \* बूढतलहेउ वाल अवलंबनु  
 मोहमगनमतिनाहिविदेहकी \* महिमासियरघुवर सनेहकी  
 दो० सियपितु मातु सनेहबस, विकल न सकी सँभारि ॥

धरानिसुताधीरजधरेउ, समउसुधरमविचारि २८५ ॥

तापसवेष जनक सियदेषी \* भएउप्रेम परितोष विसेषी  
 पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ \* सुजसधवलजगकहसबकोऊ  
 जितिसुरसरिकीरतिसरितोरी \* गवनकीन्हविधिअंडकरोरी  
 गंग अवनितल तीनि बडेरे \* एहिं किए साधुसमाज घनेरे  
 पितु कहसत्य सनेहसुबानी \* सीयसकुचमहमनहुसमानी  
 पुनिपितुमातुलीन्हि उरलाई \* सिषआसिषहितदीन्हिसुहाई  
 कहतिनसायिसकुचिमनमाहीं \* इहाँ बसवरजनी भलनाहीं



लषिरुषरानि जनाएउराऊ \* हृदय सराहत सीलसुभाऊ  
दो० बारवार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्हिसनमानि ॥

कहीसमय सिर भरत गति, रानिसुवानिसयानि २८६  
सुनि भूपालभरत व्यवहारू \* सोन सुगन्धसुधा ससिसारू  
मूंदे सजलनयन पुलके तन \* सुजससराहनलगेमुदितमन  
सावधानसुनुसुमुषि सुलोचनि \* भरतकथाभवबंधविमोचनि  
धरमराज नयब्रह्म विचारू \* इहाँ जथामति मोर प्रचारू  
सोमतिमोरिभरतमहिमाहीं \* कहइकाहछलि लुअतिनछाहीं  
विधिगनपातिअहिपतिसिवसारद \* कविकोविदबुधबुद्धि बिसारद  
भरतचारति कीरति करतूती \* धरमसीलगुनविमलविभूती  
समुझतसुनतसुषद सबकाहू \* सुचिसुरसरिरुचि निदरसुधाहू  
दो० निरबाधिगुननिरुपमपुरुष, भरतभरत समजानि ॥

कहिअसुमेरुकिसेरसम, कविकुलमतिसकुचानि २८७  
अगमसबहिवरनतवरवरनी \* जिमिजलहीनमीनगमुधरनी  
भरतअमितमाहिमासुनुरानी \* जानहिंरामनसकहिंबषानी  
बरनिसप्रेम भरत अनुभाऊ \* तिअजिअ कीरुचिलषिकहराऊ  
बहुरहिं लषनभरतवनजाहीं \* सबकरभलसबके मनमाहीं  
देवि परंतु भरत रघुवर की \* प्रीतिप्रतीतिजाइनहिं तरकी  
भरतअबाधिसनेहममताकी \* जद्यपिराम सीमसम ताकी  
परमारथ स्वारथ सुष सारे \* भरतनसपनेहु मनहु निहारे  
साधन सिद्धि राम पगनेहू \* मोहिलषिपरतभरत मतएहू  
दो० भोरैहू भरत न पेलिहहिं, मनसहू राम रजाइ ॥

करिअन सोच सनेहवस, कहेउभूपविलषाइ २८८॥

रामभरतगुनगनत सप्रीती \* निसिदंपतिहिपलकसमवीती  
 राजसमाज प्रात जुगजागे \* न्हाइन्हाइ सुर पूजन लागे  
 गेनहाइ गुरपाहिं रघुराई \* बंदिचरन बोले रूपपाई  
 नाथभरत पुरजन महतारीं \* सोकविकल बनवास दुषारीं  
 सहितसमाजराउमिथिलेसू \* बहुतदिवस भयेसहतकलेसू  
 उचितहोइसोइकीजिअनाथा \* हितसबही कररौं हाथा  
 असकहिअतिसकुचेरघुराऊ \* मुनिपुलकेलषि सीलसुभाऊ  
 तुम्हबिनुरामसकलसुषसाजा \* नरकसरिसहुँराज समाजा  
 दो० प्रानप्रानके जीवके, जिवसुषके सुषराम ॥

तुम्हतजितातसुहातगृह, जिन्हहिहिनिहहिबिधिवाम २८९

सोसुषकरम धरमजरिजाऊ \* जहँनरामपद पंकज भाऊ  
 जोगकुजोग ग्यानअग्यानू \* जहँनहिं राम प्रेम परधानू  
 तुम्हबितुदुषी सुषीतुम्हतेही \* तुम्हजानहुजिअजोजेहिकेही  
 राउरआयसु सिर सबहीके \* विदितकृपालहिगतिमबनीके  
 आपआस्रमहिधारिअपाऊ \* भएउसनेहसिथिलमुनिराऊ  
 करिप्रनामतवराम सिधाए \* रिषिधरिधीरजनकपाहिंआए  
 रामवचन गुर नृपाहिसुनाए \* सील सनेह सुभाय सुहाए  
 महाराजअबकीजिअ सोई \* सबकरधरमसहित हित होई  
 दो० ज्ञाननिधानसुजानसुचि, धरम धीरनरपाल ॥

तुम्हबितुअसमंजससमन, कोसमरथएहिकाल २९०॥

मुनिमुनिवचनजनकअनुरागे \* लषिगतिग्यानविरागविरागे  
 सिथिलसनेहगुनतमनमाहीं \* आएइहाँ कीन्ह भलनाहीं  
 रामहि रायकहेउ बनजाना \* कीन्हआपुप्रिय प्रेमप्रवाना

हम अब बनते बनहि पठाई \* प्रमुदित फिरविवेकबढाई  
 तापसमुनिमाहिसुरसुनिदेषी \* भएप्रेमवसविकल बिसेषी  
 समउसमुझिधरिधीरजराजा \* चलेभरतपहिंसाहित समाजा  
 भरतआइ आगें होइलीन्हे \* अवसरसरिससुआसनदीन्हे  
 तातभरत कहतेरहुतिराऊ \* तुम्हहिबिदितरघुबीरसुभाऊ  
 दो० रामसत्यव्रत धरतरत, सबकरसीलसनेहु मा० पा०

संकट सहत सकोचवस, कहिअजोआयसुदेहु २९१॥

मुनितनपुलकिनयनभरिवारी \* बोलेभरत धीरधरि भारी  
 प्रभुप्रियपूज्यपितासमआपू \* कुलगुरसमाहित मायनबापू  
 कौसिकादिमुनिसचिवसमाजू \* ग्यानअंबुनिधिआपुनआजू  
 सिसेवकआयसुअनुगामी \* जानिमोहिसिषदेइअस्वामी  
 येहिसमाज थलबूझबराउर \* मौनमालिन में बोलबबाउर  
 छोटे बदन कहौं बडिवाता \* छमवतातलषिवामबिधाता  
 आगम निगमप्रसिद्धपुराना \* सेवकधरमकठिनजगजाना  
 स्वामिधरमस्वारथहिविरोधू \* बैरु अंधप्रेमहिन् प्रबोधू  
 दो० राषि रामरुष धरमव्रत, पराधीन मोहि जानि ॥

सबकेसंमत सर्वहित, करिअप्रेम पहिचानि २९२॥

भरतबचनसुनिदेषि सुभाऊ \* सहितसमाज सराहत राऊ  
 सुगमअगम मृदुमंजुकठारे \* अरथअमितअतिआषरथारे  
 ज्योंसुषसुकुरसुकुरनिजपानी \* गहिनजाइअसअदभुतबानी  
 भूपभरत सुनिसाधु समाजू \* गेजहँबिबुधकुसुद द्विजराजू  
 सुनिसुधिसोचविकलसबलोगा \* मनहुँमीनगन नवजलजोगा  
 देवप्रथम कुलगुरगति देषी \* निरषिविदेहसनेह बिसेषी

रामभगति मयभरतनिहारे \* सुरस्वारथी हहरि हिअहारे  
सब कोउ राम प्रेममयपेषा \* भए अलेष सोचवस लेषा  
दो० रामसनेहसकोचवस, कहससोचसुरराज ॥

रचहुप्रपंचहिपंचमिलि, नाहितभएउअकाज २९३ ॥  
सुरन्हसुमिरि सारदासराही \* देवि देव सरनागत पाही  
फेरिभरतमतिकरिनिजमाया \* पालुबिबुधकुलकरिल्लुछाया  
बिबुधविनयसुनिदेविसयानी \* बोलीसुर स्वारथ जडजानी  
मोसनकहहु भरतमतिफेरु \* लोचनसहसन सूझ सुमेरु  
विधिहरिहरमायाबडिभारी \* सोउनभरतमतिसकैनिहारी  
सोमतिमोहिकहतकरुभोरी \* चंदिनिकरकिचंड करचोरी  
भरतहृदयसिय रामनिवासू \* तहँकितिमिरजहंतरनिप्रकासू  
असकहिसारदगइविधिलोका \* बिबुधविकलनिमिमानहुकोका  
दो० सुर स्वारथी मलीनमन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट ॥

रचिप्रपंचमायाप्रबल, भयभ्रमअरतिउचाट २९४ ॥  
करिकुचालिसोचतसुरराजू \* भरतहाथ सब काजअकाजू  
गए जनक रघुनाथ समीपा \* सनमाने सबरविकुल दीपा  
समयसमाजधरमअविरोधा \* बोलेतब रघुवंस पुरोधा  
जनक भरत संवाद सुनाई \* भरतकहाउति कही सुहाई  
तात राम जस आयसु देहू \* सोसब करइ मोरमत एहू  
सुनिरघुनाथ जोरिजुगपानी \* बोले सत्य सरल मृदुबानी  
बिद्यमान आपुन मिथिलेसू \* मोरकहव सबभाँति भदेसू  
राउर राय रजायसु होई \* राउरि सपथ सही सिरसोई  
दो० राम सपथ सुनि मुनिजनक, सकुचेसभा समेत ॥  
सकलबिलोकतभरतमुष, बनइनऊतर देत ॥ २९५



सभासकुचवसभरतनिहारी \* रामबंधु धरिधीरज भारी  
 कुसमउदेषि सनेह सभारा \* बढतबिंजिमिघटजनिवारा  
 सोककनकलोचनमतिछोनी \* हरीविमलगुनगनजगजोनी  
 भरत विवेक वराह विसाला \* अनायासउधरी तेहिकाला  
 करिप्रनाम सबकहँ करजोरे \* राम राउ गुर साधु निहोरे  
 छमवआजअतिअनुचितमोरा \* कहउँबदनमृदुबचनकठोरा  
 हिय सुमिरी सारदा सुहाई \* मानसतें मुषपंकज आई  
 विमलविवेकधरमनयसाली \* भरत भारती मंजु मराली  
 दो० निरषिविवेकविलोचनन्हि. सिथिलसनेहसमाज ॥

करिप्रनामबोलेभरत, सुमिरिसीयरघुराज ॥ २९६ ॥

प्रभुपितुमातुसुहृदगुरुस्वामी \* पूज्यपरमहित अंतरजामी  
 सरल सुसाहिवसील निधान \* प्रनतपाल सर्वज्ञ सुजान  
 समरथ सरनागत हितकारी \* गुनगाहक अवगुनअघहारी  
 स्वामिगोसाँइहिसरिसगोसाँइ \* मोहिसमानमइँ साइँदोहाई  
 प्रभुपितुबचन मोहबसपेली \* आएउँइहाँ समाज सकेली  
 जगभलपोच ऊँचअरुनीचू \* अमिअअमरपदमाहुरमीचू  
 राम रजाइ मेटि मनमाहीं \* देषासुना कतहुँ कोउनाहीं  
 सोमइँसबविधिकीन्हढिठाई \* प्रभु मानी सनेह सेवकाई  
 दो० कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ॥

दूषनभेभूषनसरिस, सुजसचारुचहुँओर ॥ २९७ ॥

राउरि रीति सुबानि बडाई \* जगतविदितनिगमागमगाई  
 कूरकुटिलषलकुमतिकलंकी \* नीचनिसीलनिरीसनिसंकी  
 तेउ सुनि सरन सामुहेआए \* सकृतप्रनाम किएअपनाए

देवि दोष कबहुँन उरआने \* मुनिगुनसाधु समाजवषाने  
को साहिब सेवकहिनेवाजी \* आपुसमान साजसवसाजी  
निजकरतूतिनसमुझिअसपने \* सेवकसकुच सोच उरअपने  
सो गोसाँइ नहिंदूसर कोपी \* भुजा उठाइ कहौं पनरोपी  
पसु नाचतसुक पाठप्रवीना \* गुनगतिनटपाठक आधीना  
दो० यों सुधारि सनमानि जन, किएसाधु सिरमौर ॥

को कृपाल बिनु पालिहै, विरदावलिवरजोर ॥२९८॥

सोकसनेह कि बाल सुभाएँ \* आएउँ लाइ रजायसु बाँएँ  
तबहुकृपाल हेरिनिज ओरा \* सबहिंभाँतिभलमानेउमोरा  
देषेउँ पाय सुमंगल मूला \* जानेउँस्वामिसहजअनुकूला  
बडे समाज बिलोकेउँ मागू \* बढी चूकसाहिब अनुरागू  
कृपा अनुग्रह अंग अघाई \* कीन्हिकृपानिधिसवअधिकार  
राषा मोर दुलार गोसाई \* अपनेसील सुभाय भलाई  
नाथनिपटमइकीन्हिठिठाई \* स्वामिसमाजसकोचबिहाई  
अविनयविनयजथारुचिवानी \* छमिहिदेउअतिआरतजानी  
दो० सुहृदसुजान सुसाहिबहि, बहुत कहत बढिषोरि ॥

आयसु देइअ देवअब, सबइ सुधारिअ मोरि २९९ ॥

प्रभुपद पदुम पराग दोहाई \* सत्यसुकृत सुषसीवँ सुहाई  
सोकरि कहौं हिये अपनेकी \* रुचिजागत सोवत सपनेकी  
सहजसनेह स्वामि सेवकाई \* स्वारथछलफलचारि बिहाई  
अग्या समन सुसाहिब सेवा \* सो प्रसाद जनपावइ देवा  
असकहिप्रेमबिबसभएभारी \* पुलकसरीर बिलोचन बारी  
प्रभुपद कमल गहेअकुलाई \* समउ सनेहनसोकहि जाई

कृपा सिंधु सनमानि सुवानी \* बैठाए समीप गहि पानी  
 भरतविनयमुनिदेपिसुभाऊ \* सिथिल सनेह सभारघुराऊ  
 छं० रघुराऊसिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी ॥  
 मनमहंसराहतभरतभायपभगतिकीमहिमाघनी ॥  
 भरतहिप्रसंसतविवुधवरपतमुमनमानसमालिनसे ॥  
 तुलसीविकलसबलोगमुनिसकुचेनिसागमनलिनसे ॥

सो० देषि दुषारी दीन, दुहुंसमाज नरनारिसब ॥

मघवामहामलीन, मुएमारि मंगलचहत ॥ ३०० ॥

कपट कुचालिसींव सुरराजू \* परअकाजप्रियआपनकाजू  
 काक समान पाकरिपुनीती \* छलीमलीनकतहुंन प्रतीती  
 प्रथमकुमतिकरिकपटसकेला \* सोउचाट सबके सिर मेल  
 सुरमाया सब लोग विमोहे \* रामप्रेम अतिसय नबिछोहे  
 भएउचाटवसमनथिरनाहीं \* छनवनरुचिछनसदनसोहाहीं  
 दुविध मनोगतिप्रजा दुषारी \* सरितसिंधु संगमजनु बारी  
 दुचितकतहुंपरितोषनलहहीं \* एकएक सनमरमन कहहीं  
 लषिहियहंसिकहकृपानिधानू \* सरिस स्वानमघवानजुवानू  
 दो० भरतजनक मुनिगनसचिव, साधुसचेतविहाय ॥

लागिदेवमायासबहि, जथा जोगजनपाय ॥ ३०१ ॥

कृपासिंधु लषि लोग दुषारे \* निजसनेह सुरपतिछलभारे  
 सभाराऊ गुरमहि सुरमंत्री \* भरतभगति सबकैमतिजंत्री  
 रामहि चितवत चित्रलिषेसे \* सकुचत बोलतबचन सिषेसे  
 भरतप्रीतिनतिविनय बडाई \* सुनतसुषद बरनतकठिनाई  
 जासुबिलोकिभगतिलवलेसू \* प्रेममगनमुनिगनमिथिलेसू

महिमातासुकहृदि किमितुलसी \* भगति सुभाय सुमति हियहुलसी  
आपुछो टिमहिमावाडिजानी \* कविकुलकानि मानिसकुचानी  
केहिन सकति गुन रुचि अधिकई \* मतिगति बालबचन कीनाई  
दो० भरत विमलजस विमलविधु, सुमतिचकोरकुमारि ॥  
उदित विमलजन हृदयनभ, एकट करही निहारि ३०२

भरत सुभाउन सुगमनिगमहूँ \* लघुमतिचापलता कबिछमहूँ  
कहत सुनत सतिभाव भरतको \* सीयरामपद होइ नरत को  
सुमिरत भरतहि प्रेमरामको \* जेहिन सुलभतेहि सरिसवामको  
देषि दयालदसा सबही की \* रामसुजानि जानि जनजीकी  
धरमधुरीन धीर नयनागर \* सत्यसनेह सील सुषसागर  
देसकाललषि समउसमाजू \* नीतिप्रीति पालक रघुराजू  
बोलेबचन बानिसर बससे \* हितपरिनाम सुनत ससिरससे  
तात भरत तुम्ह धरमधुरीना \* लोके बेदविद प्रेमप्रवीना  
दो० करम बचनमानस विमल, तुम्हसमान तुम्हतात ॥

गुरसमाजलघुबंधुगुन, कुसमय किमिकहिजात ३०३  
जानहु ताततरनिकुलरीती \* सत्यसंध पितु कीरतिप्रीती  
समउसमाजला जगुरजनकी \* उदासीनाहित अनाहितमनकी  
तुम्हाहि विदित सबही करमरमू \* आपनमोर परमाहित धरमू  
मोहिसब भाँति भरोस तुम्हारा \* तदपि कहउँ अवसर अनुसारा  
तात तात बिनुवात हमारी \* केवल गुर कुलकृपा सँभारी  
नतरुप्रजा पुरजन परिवारू \* हमहिसहित सब होत पुआरू  
जौ बिनु अवसर अथवादिनेमू \* जगकेह कहहु न होइ कलेमू  
तसउत पाततात विधिकीन्हा \* मुनिमिथिले सराषि सबलीन्हा



दो० राजकाज सब लाजपति, धरम धरनि धनधाम ॥

गुरप्रभाउपालिहिसबहि, भलहोइहिपरिनाम ३०४ ॥

सहितसमाज तुम्हारहमारा \* घरबन गुरप्रसाद रषवारा  
मातुपिता गुरस्वामिनिदेमू \* सकलधरम धरनी धरसेमू  
सोतुम्हकरहु करावहु मोहू \* ताततरनिकुल पालक होहू  
साधनएक सकलसिधिदेनी \* कीरति सुगति भूतमयबेनी  
सोबिचारिसहि संकट भारी \* करहु प्रजा परिवारसुषारी  
बाँटीबिपतिसबहिमोहिभाई \* तुम्हहिअवधिभरिबडिकठिनाई  
जानितुम्हहिमृदुकहउँ \* कुसमयतातनअनुचितमोरा  
होहिकुठायँ सुबंधु सहाये \* ओढिअहिहाथअसनिहुकेषाये  
दो० सेवककरपदनयनसे, मुषसो साहेब होइ ॥

तुलसीप्रीतिकिरीतिसुनि, सुकबिसराहहिंसोइ ३०५

सभासकलसुनि रघुवरवानी \* प्रेमपयोधिअमिअजनुसानी  
सिथिलसमाजसनेहसमाधी \* देपिदसा चुपसारद साधी  
भरतहि भएउ परम संतोषू \* रुनमुषस्वामि विमुष दुषदोषू  
मुषप्रसन्न मनमिटा विषादू \* भाजनु गूँगेहि गिराप्रसादू  
कीन्हसप्रेम प्रनाम बहोरी \* बोलेपानि पंकरुह जोरी  
नाथभएउ मुषसाथ गएको \* लहेउँलाहुजगजनमभएको  
अबकृपाल जसआयसु होई \* करउँ सीसधरि सादर सोई  
सो अवलंब देउमोहि देई \* अवधि पारपावउँ जेहिसेई  
दो० देव देव अभिषेकहित, गुर अमुसासन पाइ ॥

आनेउँसबतीरथसलिल, तेहिकहँकाहरजाइ ३०६ ॥

एकमनोरथ बड मनमाहीं \* समयसकोचजातकहिनाहीं

कहहु तात प्रभु आयसुपाई \* बाले बानि सनेह सुहाई  
चित्रकूटमुनिथल तीरथवन \* षगमृगसरिसरनिर्झरगिरिगन  
प्रभुपदअंकितअबनिबिसेषी \* आयसुहोइत आवउँ देषी  
अवसिअत्रिआयसुसिरधरहू \* तातविगतभय काननचरहू  
मुनि प्रसादवन मंगलदाता \* पावन परम सुहावन भ्राता  
रिषिनायक जहँआयसुदेहीं \* राषेउ तीरथ जलथल तेहीं  
मुनिप्रभुवचनभरतसुषपावा \* मुनिपदकमलमुदितसिरनावा  
दो० भरतराम संवादमुनि, सकलसुमंगलमूल ॥

सुरस्वारथीसराहिकुल, वरषतसुरतरुफूल ॥ ३०७ ॥

धन्य भरत जयरामगोसाई \* कहत देवहरषत वरिआई  
मुनिमिथिलेससभासबकाहू \* भरतवचनमुनिभएउउछाहू  
भरत राम गुनग्राम सनेहू \* पुलकि प्रसंसतराउ बिदेहू  
सेवकस्वामिसुभाउसुहावन \* नेमप्रेम अतिपावन पावन  
मति अनुसारसराहन लागे \* सचिवसभासद सबअनुरागे  
मुनिमुनि रामभरत संवाद \* दुहुँसमाजहिय हरषविषाद  
राममातु दुषसुषसम जानी \* कहिगुन दोषप्रबोधी रानी  
एककरहिं रघुवीर बडाई \* एक सराहत भरत भलाई  
दो० अत्रि कहेउ तबभरत सन, सैल समीप सुकूप ॥

राषिअतीरथतोयतहँ, पावन अमलअनूप ॥ ३०८ ॥

भरत अत्रि अनुसासनपाई \* जल भाजन सबदिएचलाई  
सानुज आपुअत्रिसुनिसाधू \* सहित गएजहँ कूपअगाधू  
पावन पाथ पुन्य थल राषा \* प्रमुदितप्रेमअत्रिअसभाषा  
तात अनादिसिद्ध थल एहू \* लोपेउकालविदितनहिंकेहू  
तब सेवकन्ह सरसथल देषा \* कीन्हसुजलहितकूपबिसेषा

विधिवसभएउविस्वउपकारु \* मुगमअगमअतिधरमविचारु  
भरतकूपअबकहिहिलोगा \* अतिपावनतीरथजलजोगा  
प्रेमसनेम निमज्जतप्रानी \* होइहहिंविमलकरममनबानी  
दो० कहत कूप महिमा सकल, गएजहाँ रघुराउ ॥

अत्रिमुनाएउ रघुवरहि, तीरथपुन्यप्रभाउ ॥ ३०९ ॥  
कहत धरम इतिहाससप्रीती \* भएउभोरनिसिसोसुषवीती  
नित्यानिबाहिभरतदोउभाई \* राम अत्रिगुर आयसु पाई  
सहितसमाज साजसबसादें \* चले रामवन अटनपयादें  
कोमलचरनचलतविनुपनहीं \* भइमृदुभूमिसकुचिमनमनही  
कुस कंटक काँकरी कुराई \* कटुक कठोरकुबस्तु दुराई  
महिमंजुलमृदुमारग कीन्हे \* बहतसमीरत्रिविध सुषलीन्हे  
सुमनवरषिसुरघनकरिछाँही \* बिटपफूलिफलत्रिनमृदुलाही  
मृगविलोकिषगबोलिसुबानी \* सेवहिंसकलरामप्रियजानी  
दो० सुलभ सिद्धिसब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात ॥

रामप्रानप्रियभरतकहँ, यहनहोइबडिवात ॥ ३१० ॥  
एहिविधिभरतफिरतवनमाहीं \* नेमप्रेमलषि मुनिसकुचाहीं  
पुन्यजलास्रय भूमिविभागा \* षगमृगतरुत्रिनगिरिवनबागा  
चारु विचित्र पवित्र विसेषी \* बूझत भरत दिव्य सब देशी  
मुनिमनमुदितकहतारिषिराऊ \* हेतुनाम गुन पुन्य प्रभाऊ  
कतहुँनिमज्जनकतहुँप्रनामा \* कतहुँविलोकतमनअभिरामा  
कतहुँवैठि मुनिआयसु पाई \* सुमिरतसीयसहितदोउभाई  
देषि सुभाव सनेह सुसेवा \* देहिंअसीस मुदित बनदेवा  
फिरहिंगएँदिन पहरअढाई \* प्रभुपदकमलविलोकहिंआई  
दो० देशेथल तीरथ सकल, भरत पाँचदिन माँझ ॥

कहतसुनतहरिहरसुजस, गएउदिवसभइसाँझ ॥ ३११ ॥

भोरन्हाइ सब जुरा समाजू ✽ भरत भूमि सुरतेरहुतिराजू  
भलदिनआजजानिमनमाहों ✽ रामकृपाल कहतसकुचाहीं  
गुरनृपभरतसभाअवलौकी ✽ सकुचिरामफिरिअवनिविलौकी  
सीलसराहि सभासब सोची ✽ कहुंनरामसमस्वामिसकोची  
भरतसुजान राम रूप देषी ✽ उठिसप्रेमधरि धीर बिसेषी  
करिदंडवत कहत करजोरी ✽ रापीनाथ सकल रुचिमोरी  
मोहिलगिसहेउसबहिं सतापू ✽ बहुतभांति दुषपावा आपू  
अबगोसाई मोहि देहरजाई ✽ सेवउंअवधअवधिभरिजाई  
दो० जेहिउपाय पुनिपाय जन, देषइ दीन दयाल ॥

सोसिषदेइअअवधिलगि, कोसलपालकृपाल॥३१२॥  
पुरजनपरिजन प्रजागोसाई ✽ सबसुचि सरस सनेह सगाई  
राउरवांदि भले भव दुषदाहू ✽ प्रभुविनुवादि परमपद लाहू  
स्वामिसुजानजानसबहीकी ✽ रुचिलालसारहनिजनजीकी  
प्रनतपाल पालिहि सबकाहू ✽ देवदुहू दिसिओर निवाहू  
असमोहिसबविधिभूरिभरोसो ✽ किऐंविचार न सोच फरोसो  
आरतिमोरि नाथ करिछोहू ✽ दुहुंमिलिकीन्हढीठहठिमोहू  
यहबडदोष दूरिकरि स्वामी ✽ तजिसकोचसिषअअनुगामी  
भरतबिनयसुनिसबाहिप्रसंसी ✽ पीर नीर विबरन गतिहंसी  
दो० दीनबंधु सुनि बंधु के, बचन दीन छल हीन ॥

देसकालअवसरसरिस, बोलेराम प्रवीन ॥ ३१३ ॥  
ताततुम्हारिमोरिपरिजनकी ✽ चिंतागुरहि नृपहिघरबनकी  
माथेपर गुर मुनिमिथिलेसू ✽ हमहितुम्हहिसपनेहुनकलेसू  
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ ✽ स्वारथसुजसधरमपरमारथ  
पितुआयसुपालिअ दुहुंभाई ✽ लोक वेद भरुभूप भालाई  
गुरपितुमातुस्वामिसिषपालें ✽ चलेहुकुमग पगपरै नषालें



असविचारिसबसोच बिहाई \* पालहुअवधअवधिभरिजाई  
 देसकोस पुरजन परिवारु \* गुरपद रजहिलागछरभारु  
 तुम्हमुनिमातुसचिवसिषमानी \* पालेहु पुहुमि प्रजारजधानी  
 दो० मुषिआ मुषसों चाहिए, पान पान कहँएक ॥

पालइ पोषइसकलअँग, तुलसीसहित विवेक ॥३१४॥  
 राज धरम सरबस एतनोई \* जिमिमनमाहँ मनोरथगोई  
 बंधुप्रबोध कीन्हबहु भाँती \* बिनुअधारमनतोष नसाँती  
 भरतसीलगुरु सचिवसमाजू \* सकुचसनेह बिबस रघुराजू  
 प्रभुकरि कृपा पाँवरीदीन्ही \* सादर भरतसीसधरिलीन्ही  
 चरनपीठ करुना निधानके \* जनुजुगजामिकप्रजाप्रानके  
 संपुट भरत सनेह रतनके \* आषरजुगजनुजीव जतनके  
 कुलकपाटकरकुसलकरमके \* विमलनयन सेवा सुधरमके  
 भरत मुदितअवलंब लहेतें \* असमुष जससियराम रहेंते  
 दो० माँगेउबिदा प्रनाम करि, राम लिए उरलाइ ॥

लोग उचाटे अमरपति, कुटिलकुअवँसरपाइ ॥३१५॥  
 सोकुचालिसबकहँ भइनीकी \* अवाधिआससवजीविनजीकी  
 नतरुलषनसियरामवियोगा \* हहरिमरत सबलोग कुरोगा  
 राम कृपा अवरैब सुधारी \* विबुधधारिभइगुनदगोहारी  
 भेंटतभुजभरि भाइभरतसो \* रामप्रेमरस कहि न परतसो  
 तनमानवचनउमँगअनुरागा \* धीरधुरंधर धीरज त्यागा  
 बारिज लोचन मोचत बारी \* देषिदसासुर सभा दुषारी  
 मुनिगनगुरधुरधीर जनकसे \* ग्यानअनलमनकसेकनकसे  
 जे बिरंचि निरलेप उपाये \* पदुमपत्रजिमिजगजलजाये

दो० तेउबिलोकि रघुवर भरत, प्रीतिअनूप अपार ॥

भएमगनमनतनबचन, सहितविरागविचार ॥३१६॥

जहाँजनकगुरगतिमतिभोरी ✽ प्राकृतप्रीतिकहतबडि षोरी  
बरनत रघुवर भरत वियोगू ✽ सुनिकठोरकबिजानिहिलोगू  
सोसकोच रसअकथसुवानी ✽ समउसनेहसुमिरिसकुचानी  
भेंटिभरत रघुवर समुझाए ✽ पुनिरिपुदवनहराषिहियलाए  
सेवकसचिव भरतरुष पाई ✽ निजनिज काजलगेसबजाई  
मुनिदारुन दुष दुहँसमाजा ✽ लगेचलनके साजन साजा  
प्रभुपदपदुम बँदिदोउ भाई ✽ चलेसीस धरि राम रजाई  
मुनितापस बनदेव निहोरी ✽ सबसनमानि बहोरि बहोरी  
दो० लषनहि भेंटिप्रनामकरि, सिरधरिसियपद धूरि ।

चलेसप्रेम असीससुनि, सकलसुमंगल मूरि ॥ ३१७ ॥

सानुजराम नृपहि, सिरनाई ✽ कीन्हबहुतविधिविनयबडाई  
देव दयावस बडदुष पाएउ ✽ सहितसमाजकाननहिंआएउ  
पुरपगुधारिअ देइ असीसा ✽ कीन्हधीरधरि गवन महीसा  
मुनिमहिदेव सासु सनमाने ✽ बिदाकिए हरिहर समजाने  
सासु समीप गएदोउ भाई ✽ फिरे बँदिपग आसिष पाई  
कौसिक बामदेव जाबाली ✽ परिजनपुरजनसचिवसुचाली  
जथाजोगकरिविनयप्रनामा ✽ बिदाकिए सबसानुजरामा  
नारिपुरुष लघुमध्य बडरे ✽ सबसनमानि कृपानिधिफेरे  
दो० भरत मातु पदबँदि प्रभु सुचिसनेह मिलिभेंटि ।

बिदाकीन्हसजिपालकी, सकुचसोचसबमेटि ॥३१८॥

परिजनमातुपिताहिमिलिसीता ✽ फिरीप्रानप्रिय प्रेम पुनीता  
करि प्रनाम भेंटिसब सामू ✽ प्रीतिकहतकबिहियनहुलामू

सुनिसिषअभिमतआसिषपाई \* रहीसीय दुहुँप्रीति समाई  
 रघुपति पटु पालकी मगाई \* करिप्रबोध सबमातु चढाई  
 बार २ हिलिमिलि दुहुँभाई \* सम सनेह जननी पहुँचाई  
 साजिबाजिगजबाहननाना \* भूपभरत दलकीन्ह पयाना  
 हृदय रामसिय लषनसमेता \* चलेजाहिं सब लोग अचेता  
 बसह बाजिगजपसुहियहारें \* चलेजाहिं परबस मन मारें  
 दो० गुरगुरतिअपद बंदिप्रभु, सीता लषन समेत ॥

फिरेहरष विसमयसहित, आएपरननिकेत ॥३१९॥

विदाकीन्हसनमानिनिषाद \* चलेउहृदयबडबिरह विषाद  
 कोलकिरातभिल्लवनचारी \* फेरेफिरे जोहारि जोहारी  
 प्रभुसियलषनबैठिवटछाहीं \* प्रियपरिजनवियोगबिलषाहीं  
 भरत सनेह सुभाव सुबानी \* प्रिआअनुजसनकहतवषानी  
 प्रीतिप्रतीतिवचनमनकरनी \* श्रीमुष राम प्रेमबस बरनी  
 तेहिअवँसरषगमृगजलमीना \* चित्रकूट चर अचर मलीना  
 विबुधबिलोकिदसारघुबरकी \* बरषिसुमनकहिगतिघर२की  
 प्रभुप्रनामकरिदीन्हभरोसो \* चलेमुदित मन डरनषरोसो  
 दो० सानुजसीय समेत प्रभु, राजत परन कुटीर ।

भगतिज्ञानबैरागजनु, सोहतधरेंसरीर ॥ ३२० ॥

मुनिमहिसुरगुरभरतभुआलू \* रामबिरह सबसाज बिहालू  
 प्रभुगुनग्रामगुनतमनमाहीं \* सबचुप चाप चले मग जाहीं  
 जमुनाउतरिपारसब भयऊ \* सोबासरबिनु भोजन गयऊ  
 उतरि देवसरि दूसर बासू \* रामसषा सबकीन्ह सुपासू  
 सई उतरि गोमती नहाए \* चौथे दिवस अवधपुर आए  
 जनक रहे पुर बासर चारी \* राजकाज सबसाज सँभारी

सौंपि सचिवगुरभरतहिराजू \* तेरहुति चले साजिसवसाजू  
नगरनारिनर गुरसिषमानी \* बसे सुषेन राम रजधानी  
दो० राम दरस लगि लोग सब, करत नेम उपवास ॥

तजितजिभूषनभोगसुष, जिअतअवधिकीआस ३२१  
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे \* निजर काजपाइ सिषओधे  
पुनिसिषदीन्हिबोलिलघुभाई \* सौंपी सकल मातु सेवकाई  
भूसुर बोलि भरत कर जोरे \* करिप्रनाम बरविनयनिहोरे  
ऊँच नीच कारज भल पोचू \* आयसुदेव न करव सकोचू  
परिजन पुरजनप्रजाबोलाए \* समाधान करि सुवसवसाये  
सानुजगे गुर गेह बहोरी \* करिदंडवत कहत करजोरी  
आयसु होइतौरहउँ सनेमा \* बोलेमुनितनपुलकि सप्रेमा  
समुझवकहवकरव तुम्हजाई \* धरम सारजग होइहि सोई  
दो० सुनिसिषपाइ असीसबाडि, गनकबोलि दिनसाधि ।

सिंघासनप्रभु पादुका, बैठारे निरुपाधि ॥ ३२२ ॥

राममातु गुरपद सिरनाई \* प्रसुपद पीठ रजायसु पाई  
नंदिगाँव करि परनकुटीरा \* कीन्हनिवास धरमधुर धीरा  
जटाजूटसिर मुनिपटधारी \* महिषनिकुससाथरी सँवारी  
असनबसनवासन ब्रतनेमा \* करतकठिनरिषिधरमसप्रेमा  
भूषन बसन भोग सुषभूरी \* मनतनवचन तजे तिनतूरी  
अवधराज सुरराज सिहाई \* दसरथधनसुनि धनदलजाई  
तेहिपुरवसत भरतविनुरागा \* चंचरीकजिमि चंपक बागा  
रमा विलास राम अनुरागी \* तजतवमनजिमिजनबडभागी  
दो० रामप्रेम भाजन भरत, बडेनएहि करतूति ॥

चातकहंससराहिअत, टेकबिवेक विभूति ॥ ३२३ ॥  
देहँ दिनहु दिनद्वारि होई \* घटनतेजबल मुषछबिसोई



नित नवराम प्रेमपन पीना \* बढतधरमदलमननमलीना  
 जिमिजलनिघटतसरदप्रकासे \* बिलसतवेतसवनज विकासे  
 समदमसंजमनियमउपासा \* नषतभरतहियबिमलअकासा  
 ध्रुवविस्वासअवधिराकासी \* स्वामिसुरतिसुरबीथिविकासी  
 रामप्रेम विधुअचलअदोषा \* सहितसमाजसोहनित चोषा  
 भरतरहानिसमुझनि करतूती \* भगतिविरतिगुनबिमलविभूती  
 वरनतसकलसुकवि सकुचाहीं \* सेस गनेस गिरागम नाही  
 दो० नित पूजतप्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदय समाति ॥

माँगिमाँगिआयसुकरत, राजकाजचहुँभाँति ॥३२४॥

पुलकगातहिअसियरघुवीरू \* जीहनाम जप लोचन नीरू  
 लषनरामसियकाननवसही \* भरतभवनवसितपतनकसही  
 दोउदिसिसमुझिकहतसबलोगू \* सबविधिभरत सराहनजोगू  
 सुनिब्रतनेम साधु सकुचाहीं \* देषिदसा मुनिराजलजाहीं  
 परम पुनीत भरत आचरनू \* मधुरमंजुमुद मंगल करनू  
 हरनकठिनकलिकलुषकलेमू \* महामोहनिसिदलन दिनेमू  
 पाप पुंज कुंजर मृगराजू \* समनसकल संताप समाजू  
 जनरंजन भंजन भव भारू \* राम सनेह सुधाकर सारू  
 छं० सियरामप्रेमपियूषपूरनहोत जनमनभरतको ॥

मुनिमनअगमजमानियमसमदमविषमव्रतआचरतको  
 दुषदाहदारिददंभदूषनसुजसमिसअषहरतको ॥

कलिकालतुलसीसेसठान्हिहठिरामसनमुषकरतको ॥

सो० भरतचरितकरिनेमतुलसी जेसादरसुनाहिं ॥ मा० पा० १६

सीयरामपदप्रेम अवसिहोइ भवरसविरति ॥३२५॥

श्लोक संख्या २६८५

यह बिमल बैराग्य संदीपनी द्वितीय सोपान है इसकी शक्ति श्रीगुसाईजीने गुप्तरक्ती है

✽ शुद्धाशुद्ध पत्र अयोध्याकारण्ड १ ✽

अयोध्याकारण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	५	नाथ	नाग
१८३	७	काऊ	कोऊ
१८६	१६	बल	वाली
१८६	१८	तुह	तुम्ह
२०८	१८	वाना	वानी
२०६	२१	वयार	वयरि
	२२	सिंधु	सिंघ
२०८	१०	सुनहुसप	सुनहुसिष
२१६	४	भजन	भाजन
२२०	१	कालभ	कोसल
२२३	१६	संगम	संगम
२३१	१	रपि	रेप
२३२	२३	श्रति	श्रुति
२३७	११	निर्झर	निर्झर
२३६	६	रामप्रिय	रामप्रिया
२४५	१२	धरिअति	धरिअत
२५६	४	सहस	सहज
२६५	१५	सादर	सारद
२७३	८	मुसकाने	मुसुकाने
२७६	२२	जहाँ	उहाँ
२७८	१८	सुर्वधु	सुवंधु
२८५	२३	उदिध	उदधि
२८६	६	दंषदेषि	वेषदेपि
२८७	१८	सुध	सुधा
३०८	१६	मार	मोर
३०६	११	नागू	भागू
३११	६	सुजनि	सुजान
३१४	१२	फल	फलि
३१५	१२	वंदिभेल	वदिभल
३१५	१५	फरोसों	फरोसो

इति



❖ श्री: ❖

## अथ रामायण आरण्यकाण्ड

श्री जानकी वल्लभो विजयतेराम

श्रीगणेशायनमः

श्लोक--मूलधर्मतरोर्विवेकजलधेपूर्णेन्दुमानंददं ॥ वैराग्यांबुजभा  
स्करं ह्यवधनं ध्वांतापहंतापहं ॥ मोहांभोधरपूगपाटनविधौस्वःसंभवंशंकरं  
बन्देब्रह्मकुलं कलंकसमनं श्रीरामभूपप्रियं ॥ १ ॥ सांद्रानंदपयोदशौभ  
गतचुपीतांबरसुंदरं । पाणौवाणसरासनंकटिलसत्तूणीरभारंवरं ॥ राजी  
वायतलोचनं घृतजटाजूटेन संशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामा  
भिरामं भजे ॥ २ ॥

सो० उमारामगुनगूढ, पंडित मुनिपावहिंविरति ॥

पावहिं मोहविमूढ, जेहरिविमुपन धर्मरति ॥

पुरनरभरत प्रीति में गाई ❖ मतिअनुरूप अनूप सुहाई  
अवप्रभुचरितसुनहुअतिपावन ❖ करतजेवन सुरनर मुनिभावन  
एकवार हुनि कुसुम सुहाए ❖ निजकर भूषनराम बनाए  
सीताहि पहिराए प्रभुसादर ❖ बैठेफटिक सिलापर सुंदर  
सुरपति सुतधरि वायसवेषा ❖ सठचाहत रघुपति बल्लदेषा  
जिमिपिपीलिकासागरथाहा ❖ महामंदमति पावन चाहा  
सीताचरन चौंच हतिभागा ❖ मूढमंदमति कारन कागा  
चलारुधिर रघुनायक जाना ❖ सीकधनुष सायक संधाना  
दो० अति कृपालुरघुनायक, सदा दीन पर नेह ॥  
तासन आइ कीन्ह छल, मूरष अवगुन गेह ॥ १ ॥



प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा \* चलाभाजिवायस भयपावा  
 धरिनिजरूपगण उपितुपाहीं \* रामविमुष राषातेहि नाहीं  
 भानिरासउपजी मन त्रासा \* जथाचक्र भयरिषि दुर्वासा  
 ब्रह्मधाम सिवपुर सबलोका \* फिरास्रमितव्याकुलभयसोका  
 काहू बैठनकहा न ओही \* राषिकोसकै रामकरद्रोही  
 मातुमृत्युपितुसमन समाना \* सुधाहोइविषसुनुहरि जाना  
 मित्रकरै सत रिपुकै करनी \* ताकहँ विबुधनदी बैतरनी  
 सबजगताहिअनलहुतेताता \* जो रघुवीरविमुष सुनुभ्राता  
 नारददेषा बिकल जयंता \* लागिदया कोमलचितसंता  
 पठवा तुरत रामपहिं ताही \* कहेसिपुकारिप्रनतहितपाही  
 आतुर सभयगहेसिपदजाई \* त्राहित्राहि दयाल रघुराई  
 अतुलितबलअतुलितप्रभुताई \* में मतिमंद जानिनहि पाई  
 निजकृतकर्मजनितफलपायउँ \* अबप्रभुपाहिसरनतकिआयउँ  
 सुनिकृपालअतिआरतवानी \* एकनयन करितजा भवानी

सो० कीन्हमोहवसद्रोह, जद्यपितेहिकरवधउचित ॥

प्रभुछाड़ेउकरिल्लोह, को कृपालरघुवीरसम ॥ २ ॥

रघुपति चित्रकूट बसिनाना \* चरितकिएश्रुतिसुधासमाना  
 बहुरिरामअसमनअनुमाना \* होइहिभीरसबहिंमोहिजाना  
 सकलमुनिनसनविदाकराई \* सीता सहित चले द्यौभाई  
 अत्रिकेआश्रमजबप्रभुगयऊ \* सुनतमहामुनिहरषितभयऊ  
 पुलकितगातअत्रिउठिधाए \* देषिराम आतुर चलिआए  
 करत दंडवत मुनिउर लाए \* प्रेमबारि द्यौजन अन्हवाए  
 देषिराम छविनयन जुड़ाने \* सादरनिज आश्रमतबआने

करिपूजा कहि वचन सुहाए ✽ दियेसूल फलप्रभुमनभाए

दो० प्रभुआसनआसीन, भरिलोचनसोभानिरषि ॥

मुनिवर परमप्रवीन, जोरिपानिअस्तुतिकरत ॥ ३ ॥

छं० नमामिभक्त वत्सलं । कृपालशील कोमलं ॥

भजामिते पदांबुजं । अकामिनांस्वधामदं ॥

निकामस्याम सुंदरं । भवांबुनाथ मंदरं ॥

प्रफुल्लकंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥

प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभो प्रमेय वैभवं ॥

निषंगचाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥

दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥

मुनिंद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥

मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥

विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥

नमामि इंदिरापतिं । सुखाकरं सतांगतिं ॥

भजेससक्ति सानुजं । सचीपति प्रियानुजं ॥

त्वदांघ्रि मूलयेनराः । भजंतिहीन मत्सराः ॥

पतंतिनो भवार्णवे । वितर्क बीच संकुले ॥

विविक्तवासि नस्सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥

निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांतिते गतिस्वकं ॥

त्वमेक मद्भुतं प्रभुं । निरीह मीश्वरं विभुं ॥

जगद्गुरुं चशाश्वतं । तुरीय मेव केवलं ॥

भजामिभाववल्लभं । कुर्योगिनां सुदुर्लभं ॥

स्वभक्तकल्प पादपं । समं सुसेव्य मन्वहं ॥

अनूप रूप भूपतिं । नतोह मूर्विजा पतिं ॥  
 प्रसीद मेनमामिते । पदाब्ज भक्ति देहिमे ॥  
 पठंति येस्तवंइदं । नरादरेण ते पदं ॥  
 ब्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्तिसंजुताः ॥

दो० विनती करि मुनिनाइसिर, कहकरजोरि बहोरि ॥

चरण सरौरुह नाथ जनि, कवहुँतजैमतिमोरि ॥४॥

अनमूया के पद गहि सीता \* मिलीवहोरिसुसील विनीता  
 रिषिपतिनीमनसुषअधिकई \* आसिपदेइ निकटवैठाई  
 दिव्य वसन भूषण पहिरायै \* जे नितनूतनअमलसुहाए  
 कहिरिषि बधूसरस मृदुबानी \* नारिधर्मकछुव्याजवपानी  
 मातृपिता भ्राता हितकारी \* मितप्रदसबसुनु राजकुमारी  
 अमितदानि भर्ता वयदेही \* अधमसोनारिजो सेवनतेही  
 धीरज धर्म मित्र अरुनारी \* आपदकालपरिषिअहिचारी  
 बृद्धरोग बस जटधन हीना \* अंधवाधिरक्रोधीअतिदीना  
 ऐसेहुपतिकर किये अपमाना \* नारिपावजमपुरदुपनाना  
 एकै धर्म एक व्रत नेमा \* कायवचनमनपतिपदप्रेमा  
 जगपतिव्रताचारिविधि अहहीं \* वेदपुरानसंत सब कहहीं  
 उत्तम के असबस मनमाहीं \* सपनेहुआनपुरुषजगनाहीं  
 मध्यम परपति देषै कैसे \* भ्राता पितापुत्र निज जैसे  
 धर्मविचारि समुझि कुलरहई \* सोनिकिष्ट त्रियसुतिअसकहई  
 विनु अवैसर भयते रह जोई \* जानेहुअधमनारिजगसोई  
 पति बंचक परपति रतिकरई \* रौरवनरक कल्पसत परई  
 छनधुपलागि जनमसतकोटी \* दुपनसमुझतोहिसम कोषोटी

मिनु श्रमनारि परमगतिलहई \* पतिव्रतधर्म छाडिछलगहई  
पति प्रतिकूलजन्म जहंजाई \* विधवाहोई पाइ तरुनाई

सो० सहज अपावनिनारि, पति सेवतसुभगतिलहई ॥

जसगावत श्रुतिचारि, अजहुँतुलसिकाहरिहिप्रिय ॥

सुनु सीतातव नाम, सुमिरिनारि पतिव्रतकरहिं ॥

तोहिप्रान प्रियराम, कहिउँकथासंसारहित ॥ ५ ॥

सुनि जानकी परमसुषपावा \* सादर तासुचरनसिरनावा  
तवमुनिसनकहकृपानिधाना \* आयसुहोइजाउँवनआना  
संतत मोपरकृपा करेहू \* सेवकजानितजेहुजनिनेहू  
धर्म धुरंधर प्रसु कै वानी \* सुनिसप्रेम बोलेसुनिजानी  
जासुकृपा अजसिबसनकादी \* चहतसकलपरमारथवादी  
ते तुम्हराम अकाम पियारे \* दीनबंधुमृदु वचन उचारै  
अबजानी मैं श्री चतुराई \* भजीतुम्हहिसंबदेहुविहाई  
जेहिसमानअतिसयनहिंकोई \* ताकरसील कसनअसहोई  
केहिविधिकहौंजाहुअवस्वामी \* कहहुनाथतुम्हअंतरजामी  
असकहिप्रभुविलोकिमुनिधीरा \* लोचनजलबहपुलकसरीरा

छं० तनपुलक निर्भरप्रेमपूरन नयन सुषपंकजदिए ।

मनज्ञानगुनगोतीत प्रसु मैं दीप जपतपकाकिए ॥

जपजोग धर्म समूह ते नरभगति अनुपमपावई ।

रघुवीर चरित पुनाति निसिदिन दासतुलसीगावई ॥

दो० कलिसल समन दमनमन, रामसुजससुषमूल ।

सादर सुनहिं जेतिन्हपर, राम रहहिं अनुकूल ॥



सो० कठिनकालमलकोस, धर्मनज्ञाननजोगजप ।

परिहरि सकलभरोस, रामहि भजहिंतेचतुरनर ॥६॥

मुनिपदकमलनाइकरिसीसा \* चलेवनहि सुरनर मुनिईसा  
आगेराम अनुजपुनि पाछे \* मुनिवरवेष वने अतिकाछे  
उभय बीच श्रीसोहइ कैसी \* ब्रह्मजीव विच माया जैसी  
सरितावनगिरिअवघटघाटा \* पतिपहिचानिदेहिं वरबाटा  
जहँ जहँ जाहिंदेव रघुराया \* करहिं मेघतहतहँनभ छाया  
मिलाअसुरविराधमगजाता \* आवतहीं रघुवीर निपाता  
तुरतहिं रुचिर रूपतेहिं पावा \* देपिहुपी निज धामपठावा  
पुनिआएजहँ मुनिसरभंगा \* सुंदरअनुज जानकी संग  
दो० देषिराममुषपंकज, मुनिवरलोचन भृंग ॥

सादरपानकरतअति, धन्यजन्मसरभंग ॥ १ ॥

कहमुनिसुनुरघुवीर कृपाला \* संकर मानसराज मराला  
जातरहेउँ बिरंचिके धामा \* सुनेउँअवनवन अँहहिंरामा  
चितवत पंथ रहेउँ दिनराती \* अवप्रभु देपिछुहानी छाती  
नाथ सकल साधन मैहीना \* कीन्ही कृपाजानिजनदीना  
सोकछु देवन मोहि निहोरा \* निजपनरापेहुजनमनचोरा  
तबलगिरहहुदीन हितलागी \* जबलगिमिलेंतुम्हहितनुत्यागी  
जोगजग्यजपतपजतकीन्हा \* प्रसुकहँदेइ भगतिवरलीन्हा  
एहिविधिसररचिमुनिसरभंगा \* बैठे हृदय छाडि सब संग  
दो० सीताअनुज समेतप्रभु, नीलजलदतनस्याम ।

ममहिय बसहु निरंतर, सगुनरूप श्रीराम ॥ २ ॥

असकहिजोगअगिनितनजारा \* रामकृपा वैकुंठ सिधारा

तातेंमुनिहरि लीनन भयऊ ✽ प्रथमहिंभेदभगति बरल्यऊ  
 रिपिनिकायमुनिवर गतिदेषी ✽ सुपीभयेनिज हृदय विसेपी  
 अस्तुतिकरहिंसकलमुनिबृंदा ✽ जयतिप्रनतहितकरुनाकंदा  
 पुनिरघुनाथ चले वन आगे ✽ मुनिवरबृंद विपुल सँगलागे  
 अस्थिसमूह देषि रघुराया ✽ पूछीमुनिन्हलागिअतिदाया  
 जानतहूँ पूछि अकसस्वामी ✽ सबदरसी तुम्हअंतर जामी  
 निसिचरनिकर सकलमुनिपाए ✽ मुनि रघुवीर नयन जलछाए  
 दो० निसिचरहीनकरौंमहि, भुजउठाइ पन कीन्ह ॥

सकलमुनिन्हकेआश्रमन्हि, जाइजाइ सुषदीन्ह ॥ ३॥

मुनिअगास्तिकरसिष्यसुजाना ✽ नाम सुतीछनरति भगवाना  
 मनक्रमवचनरामपद सेवक ✽ सपनेहु आनभरोसन देवक  
 प्रभुआगवनश्रवनमुनिपावा ✽ करत मनोरथ आतुर धावा  
 हेविधि दीनबंधु रघुराया ✽ मोसे सठपर करिहहिं दाया  
 सहितअनुजमोहिरामगोसाई ✽ मिलिहहिंनिजसेवककीनाई  
 मोरे जिय भरोसट्ट नहीँ ✽ भगतिविरतिनज्ञानमन माहीं  
 नहिं सतसंगजोगजपजागा ✽ नहिंट्ट चरनकमलअनुरागा  
 एकवानि करुना निधानकी ✽ सोप्रियजाकेगतिनआनकी  
 होइहैंसुफलआजममलोचन ✽ देषिवदनपंकज भवमोचन  
 निर्भर प्रेमभगन मुनिज्ञानी ✽ कहि नजाइसो दसाभवानी  
 दिसिअरुविदिसिपंथनहिसूझा ✽ को मैं चलेऊँकहाँ नहिंबूझा  
 कबहुँक फिरिपाछे पुनिजाई ✽ कबहुँक नृत्यकरइ गुनगाई  
 अबिरलप्रेम भगतिमुनिपाई ✽ प्रभुदेषैं तरु ओट लुकाई  
 अतिसै प्रीति देषि रघुवीरा ✽ प्रगटे हृदय हरनभवभीरा

मुनिमगमाँझअचलहोइवैसा\* पुलकसरीर पनसफलजैसा  
 तवरधुनाथनिकटचलिआए\* देपिदसानिजजन मनभाए  
 मुनिहिरामबहुभाँतिजगावा\* जागनध्यानजनितसुषपावा  
 भूप रूप तव राम दुरावा\* हृदय चतुर्भुजरूप देषावा  
 मुनिअकुलाइ उठातवकर्म\* विकलहीनमानिफनिवरजैसै  
 आगे टेपि राम तन स्यामा\* सीताअनुजसहितसुषधामा  
 परेउलकुटइवचरनन्हिलागी\* प्रेममगन मुनिवरबडभागी  
 भुजविसाल गहिलिए उठाई\* परम प्रीति रापेउर लाई  
 मुनिहिमिलतअससोहकृपाजा\* कनकतरुहिजनुभैटतमाला  
 रामबदनबिलोक मुनिठाढा\* मानहुँचित्रमाँझलिपिकाढा  
 दो० तवमुनिहृदय धीरधरि, गहिपद वारहिं वार ।

निज आश्रमप्रभुआनिकरि, पूजाविविधिप्रकार ॥४॥

कहमुनिप्रभुसुनुविनतीमोरी\* अस्तुतिकरौंकवन विधितोरी  
 महिमाअमितमोरिमतिथोरी\* रविसन्मुख पद्योत अँजोरी  
 स्याम तामरस दाम सरीरं\* जटामुकुट परिधनमुनिचीरं  
 पानि चाप सरकटि तू नीरं\* नौमि निरंतर श्री रघुवीर  
 मोहविपिनघनदहनकृसानुः\* संतसरोरुह कानन भानुः  
 निसिचरकरिवरूथमृगराजः\* त्रातु सदानो भवषगवाजः  
 अरुन नयन राजीव सुबेसं\* सीतानयन चकोर निसेसं  
 हर हृदिमानस राज मरालं\* नौमिरामउर बाहु विसालं  
 संसय सर्प ग्रसन उरगादः\* समनसुकर्कसतर्क विषादः  
 भय भंजन रंजन सुर जूथः\* त्रातु सदानो कृपा वरूथः  
 निर्गुनसगुन विषमसमरूपं\* ज्ञानागिरा गोतीत मनूपं

अमलमणिल मनवद्यम पारं ✽ नौमिरामभंजन महिभारं  
 भक्त कल्प पादप आरामः ✽ तज्जनक्रोध लोभमदकामः  
 अतिनागरभव सागर सेतुः ✽ त्रातुसदादिनकरकुलकेतुः  
 अतुलितभुजप्रताप बलधामः ✽ कलिमलविपुलविभंजननामः  
 धर्मवर्म नर्मद गुन ग्रामः ✽ संतत संतनोतुमम रामः  
 जदपिविरजव्यापक अविनासी ✽ सबके हृदय निरंतरवासी  
 तदपिअनुज श्रीसहितपरारी ✽ बसतुमनसिमम काननचारा  
 जे जानहिं तैं जानहुं स्वामी ✽ सगुनअगुनउरअंतर जामी  
 जोकोसलपति राजिवनयना ✽ करौसोरामहृदय ममअयना  
 असअभिमानजाइ जनिभोरे ✽ मैं सेवक रघुपतिपतिमोरे  
 सुनिमुनिबचन राम मनभाए ✽ बहुरिहरपिमुनिवर उरलाए  
 परम प्रसन्न जानुमुनि मोही ✽ जो वरमागहुदेउंसोतोही  
 मुनिकहमैंवरकवहुं न जाँचा ✽ समुझिनपरै झूठका साँचा  
 तुम्हहि नीक लागै रघुराई ✽ सो मोहिंदेहु दाससुषदाई  
 अबिरलभगतिविरतिविज्ञाना ✽ होहुसकलगुनज्ञाननिधाना  
 प्रभुजो दीन्ह सोवर मैं पावा ✽ अब सोदेहुमोहिजोभावा  
 दो० अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप वान धरराम ॥

ममहियगगनइंदुइव, बसहुसदा निःकाम ॥ ५ ॥

एवमस्तुकाहि रमा निवासा ✽ हरषिचलेकुंभजरिषिपासा  
 बहुत दिवस गुर दरसनपाए ✽ भएमोहिएहिआश्रम आए  
 अब प्रभुसंग जाउँ गुरपाहीं ✽ तुम्हकहँनाथनिहोरानाहीं  
 देषि कृपानिधिमुनि चतुराई ✽ लिए संग बिहँसे दौभाई  
 पथकहत निज भगतिअनूपा ✽ मुनिआश्रम पहुँचेसुरभूपा



तुरत सुतीछन गुरपहिं गयऊ \* करिदंडवतकहत असभयऊ  
 नाथ कोसलाधीस कुमारा \* आएमिलनजगतआधारा  
 राम अनुज समेत बैदेही \* निसिदिनदेवजपतहहुजेही  
 सुनतअगस्तितुरत उठिधाए \* हरिविलोकि लोचनजलछाए  
 मुनि पद कमलपरे द्यौ भाई \* रिषिअतिप्रीति लिएउरलाई  
 सादर कुसलपूछिमुनि ज्ञानी \* आसन पर बैठारे आनी  
 पुनिकरि बहुप्रकार प्रभुपूजा \* मोहिसमभाग्यवंतनहिंदजा  
 जहँलगिरहे अपर मुनिवृंदा \* हरषेसब विलोकिसुषकंदा

दो० मुनिसमूह महँ बैठे, सन्मुख सबकी ओर ॥

सरदइंदुतनचितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥ ६ ॥

तवरधुबीर कहा मुनिपाहीं \* तुम्हसनप्रभुदुरावकछुनाहीं  
 तुम्हजानहुजेहिकारनआएउँ \* तातेतातनकहिसमुझाएउँ  
 अब सो मंत्र देहु प्रभुमोही \* जेहिप्रकारमारौंमुनिद्रोही  
 मुनिमुखकाने मुनिप्रभुवानी \* पूछेहुनाथ मोहिका जानी  
 तुम्हरेइ भजनप्रभावअघारी \* जानौंमहिमाकछुकतुम्हारी  
 उमरितरु विसाल तवमाया \* फलब्रह्मांडअनेकनिकाया  
 जीव चराचर जंतु समाना \* भीतरबसहिंन जानहिंआना  
 तेफलभच्छुक कठिनकराला \* तबभयदरतसदासोउकाला  
 तेतुम्हसकल लोकपति साँई \* पूछेहु मोहि मनुजकीनाई  
 यह वरमागौं कृपा निकेता \* बसहु हृदय श्रीअनुजसमेता  
 अविरलभगतिविरतिसतसंगा \* चरनसरोरुहप्रीतिअभंगा  
 जद्यपि ब्रह्म अपंड अनंता \* अनुभवगम्य भजहिंजेहिसंता  
 असतवरूप बखानौं जानौं \* फिरिफिरिसगुनब्रह्मरतिमानौं

संतत दासन देहु बडाई \* ताते मोहि पूछेहु रघुराई  
है प्रभु परम मनोहर ठाऊं \* पावन पंचवटी तेहि नाऊं  
दंडकवन पुनीत प्रभु करहु \* उग्रसाप मुनिवर करहरहु  
वास करहुतहैं रघुकुलराया \* कीजेसकलमुनिन्हपरदाया  
चलेराममुनिआयसु पाई \* तुरतहिं पंचवटी निअराई  
दो० गीधराज सैं भेंट भइ, बहुविधि प्रीति बढाइ ॥

गोदावरी निकटप्रभु, रहे पर्न गृह छाइ ॥ ७ ॥

जवते राम कीन्ह तहैं वासा \* सुपीभए मुनि बीती त्रासा  
गिरिवननदी तालछविछाए \* दिनदिनप्रतिअतिहोहिं ग्राए  
षगमृग वृंद अनंदित रहहीं \* मधुपमधुरगुंजतछविलहहीं  
सोवनवरनिनसकअहिराजा \* जहाँ प्रगट रघुवीर विराजा  
एकवार प्रभु सुष आसीना \* लछिमनबचनकहेछलहीना  
सुरनर मुनि सचराचर साई \* मैं पूछौं निज प्रभुकी नाई  
मोहिसमुझाइकहहुसोइदेवा \* सबतजिकरौं चरनरज सेवा  
कहहु ज्ञानविराग अरुमाया \* कहहुसोभगतिकरहुजेहिदाया  
दो० इस्वर जीवभेद प्रभु, सकल कहौ समुझाय ॥

जातैं होइ चरन रति, सोकमोह भ्रमजाय ॥ ८ ॥

थोरेहिमहैं सबकहौं बुझाई \* सुनहुतातमतिमनचितलाई  
मैं अरु मोर तोर तैं माया \* जेहिवसकीन्हेजीवनिकाया  
गोगोचर जहँलगि मनजाई \* सो सब माया जानेहु भाई  
तेहिकरभेदसुनहु तुम्हसोऊ \* बिद्या अपर अविद्या दोऊ  
एकदुष्ट अतिसय दुषरूपा \* जावस जीव परा भवरूपा  
एक रचै जग गुनवस जाके \* प्रभुप्रेरितनहिं निजबलताके

ज्ञान मान जहँ एकौ नाही \* देषब्रह्म समान सबमाहीं  
कहियतातसो परमविरागी \* तूनसमसिद्धितीनिगुनत्यागी  
दो० माया ईसन आपु कहँ, जानिकहिय सो जीव ॥

बंधमोक्ष प्रद सर्व पर, माया प्रेरक सीव ॥ ९ ॥

धर्मते विरति जोग ते ज्ञाना \* ज्ञानमोक्ष प्रद वेद वषाना  
जाते बेगि द्रवों मै भाई \* सोममभगति भगतसुषदाई  
सो स्वतंत्र अवलंब नआना \* तेहिआधीन ज्ञान विज्ञाना  
भगतितातअनुपम सुषमूला \* मिलइजोसंतहोहिअनुकूल  
भक्तिके साधन कहोंवषानी \* सुगमपंथ मोहिपावहिंप्रानी  
प्रथमहिंविप्रचरनअतिप्रीती \* निजनिजधर्म निरतश्रुतिरीती  
यहकरफलमनविषयाविरागा \* तवममचरनउपजअनुरागा  
श्रवनादिकनवभक्ति दृढाहीं \* ममलीलारतिअतिमनमाहीं  
संतचरन पंकजअति प्रेमा \* मनक्रमवचनभजनदृढनेमा  
गुरुपितु मातु बंधुपति देवा \* सबमोहिकहँ जानैदृढसेवा  
ममगुनगावत पुलकसरीरा \* गदगद गिरा नैन बहनीरा  
काम आदि मददंभनजाके \* तात निरंतर बसमै ताके  
दो० वचनकर्म मनमोरिगति, भजन करहिं निःकाम ॥

तिन्हकेहृदयकमलमहँ, करोंसदाविश्राम ॥ १० ॥

भक्तिजोगसुनिअतिसुषपावा \* लल्लिमनप्रभुचरनन्हिसिरनावा  
एहिविधिगएकुछुकदिनबीती \* कहतविराग ज्ञानगुननीती  
सूपनषा रावनके बहिनी \* दुष्टहृदयदारुनिजसिअहिनी  
पंचवटी सो गै इकवारा \* देषिविकलभइजुगलकुमारा  
भ्राता पिता पुत्र उरगारी \* पुरुष मनोहर निरपतनारी

होइविकलसकमननहिरोकी \* जिमिरविमनिद्रवरविहिविलोकी  
रुचिर रूपधरिप्रभु पहिजाई \* बोलीबचन मधुर मुसुकाई  
तुम्हसमपुरुषनमोसमनारी \* यहसँजोगविधिरचा विचारी  
ममअनुरूप पुरुषजग माहीं \* देषेउँषोजिलोक तिहुँनाहीं  
तातें अवलगिरहिउँकुमारी \* मनमानाकछुतुम्हहिनिहारी  
सीतहि चित्तै कही प्रभुवाता \* अहैकुमार मोरलघु भ्राता  
गइलछिमनरिपु भगिनीजानी \* प्रभुविलोकि बोलेमृदु बानी  
सुंदरि सुनुमै उन्हकर दासा \* पराधीन नहिं तोर सुपासा  
प्रभुसमर्थ कोसलपुर राजा \* जोकछुकरहिं उन्हहिंसबछाजा  
सेवकसुपचह मान भिपारी \* व्यसनीधनसुभगतिव्यभिवारी  
लोभी जस चह चारुमानी \* नभहुहि दूधचहत एप्रानी  
पुनिफिरिरामनिकटसोआई \* प्रभुलछिमनपहँबहुरिपठाई  
लछिमन कहा तोहिसोबरई \* जोतृन तोरिलाजपरिहरई  
तवषिसिआनि राम पहँगई \* रूप भयंकर प्रगटत भई  
सीतहि सभय देषि रघुराई \* कहा अनुजसनसैन बुझाई  
दो० लछिमनअतिलाघवसो, नाक कान विनु कीन्हि ।

ताकै कररावनकहँ, मनौ चुनौती दीन्हि ॥ ११ ॥

नाककान विनुमइविकरारा \* जनुश्रव सैल गेरुकै धारा  
परदूषन पहिगै विलपाता \* धिगाधिगतवपौरुषबलभ्राता  
तेहिंपूछा सबकहोसि बुझाई \* जातुधानसुनि सेनबनाई  
धाए निसिचरनिकरवरूथा \* जनुसपक्षकज्जलगिरिजूथा  
नाना वाहन नाना कारा \* नानाधुध धर घोरअपारा  
सूपनषा आगे करि लीनी \* असुभरूप श्रुतिनासाहीनी



असगुनअमितहोहिंभयकारी \* गनहिंनमृत्युविवसमवकारी  
 गर्जहिं तर्जहिं गगन उडाहीं \* देषिकटकभट अतिहरपाहीं  
 कोउकहाजियतधरहुदोउभाई \* धरि मारहु तियलेहुछडाई  
 धूरि पूरि नभ मंडल रहा \* रामबोलाइअनुजसनकहा  
 लैजानकिहि जाहु गिरिकंदर \* आवानिसिचर कटकभयंकर  
 रहेहुसजग सुनि प्रभुकै बानी \* चलेसहित श्रीसरधनुपानी  
 देषिराम रिपुदल चलिआवा \* विहंसिकठिनको दंडचढावा  
 छं० कोदंडकठिनचढाइसिरजटजूटबाँधतसोहक्यों ॥

मरकतसैलपरलरतदामिनिकोटिसोंजुगभुजगज्यौं॥  
 कटिकसिनिषंगविसालभुजगहिचापविसिपसुधारिकै  
 चितवतमनहुँमृगराजप्रभुगजराजघटानिहारिकै ॥

सो० आइगएवगमेल, धरहुधरहु धावत सुभट ॥

जथाबिलोकिअकेल, बालरविहिघेरतदनुज ॥ १२ ॥

प्रभुबिलोकिसरसकहिंन डारी \* थकितभई रजनीचरधारी  
 सचिवबोलि बोले परदूषन \* यहकोउनृपबालकनरभूषन  
 नाग असुर सुरनर मुनि जेते \* देषे जिते हते हम केते  
 हमभारिजन्म सुनहु सबभाई \* देषीनहिं असि सुंदरताई  
 जद्यपिभागिनी कीन्ह कुरूपा \* बधलायकनहिंपुरुषअनूपा  
 देहिं तुरतनिज नारि दुराई \* जीअतभवनजाहिंद्यौभाई  
 मोरकहा तुम्ह ताहि सुनावहु \* तासुबचनसुनिआतुरआबहु  
 दूतन्ह कहा राम सनजाई \* सुनतराम बोले मुसुकाई  
 हमछत्री भृगया बन करहीं \* तुन्हसेषलभृगषोजतफिरहीं  
 रिपुबलवंत देषिनहिं डरहीं \* एकवार कालहु सन लरहीं

जद्यपिमनुजदनुजकुलबालक \* मुनिपालकषलसालकबालक  
जौनहोइ बलधर फिरिजाहू \* समर विमुषमें हतौं न काहू  
रनचढिकरियकपटचतुराई \* रिपुपर कृपा परम कदराई  
दूतन्हजाइ तुरतसब कहेऊ \* मुनिपरदूषन उरअतिदहेऊ

छं० उरदहेउकहेउकिधरहुधाएविकटभटरजनीचरा ।

सरचापतोमरसक्तिमूल कृपानपरिघपरसुधरा ॥

प्रभुकीन्हिधनुषटकोरप्रथमकठोरघोरभयावहा ।

भएवधिरव्याकुलजातुधाननज्ञानतोहिअवसररहा ॥

दो० सावधान होइ धाए, जानि सबल आराति ।

लागे वरषन रामपर, अस्र सस्र बहु भाँति ॥

तिनके आयुध तिलसम, करि काटे रघुवीर ।

तानिसरासनश्रवनलगि, पुनिछाँडेनिजतीर ॥ १३ ॥

छं० तबचले वान कराल । फुंकरत जनुबहु व्याल ॥

कोपेउसमर श्रीराम । चले विसिषनिसितनिकाम ॥

अवलोकिएतरतीर । मुरिचले निसिचरवीर ॥

भएक्रुद्ध तीनिउभाइ । जो भागिरन ते जाइ ॥

तेहिवधवहमनिजपानि॥फिरेमरनमनमहँठानि॥

आयुध अनेकप्रकार । सनसुषते करहिं प्रहार ॥

रिपुपरम कोपेजानि । प्रभुधनुषसर संधानि ॥

छाडे विपुल नाराच । लगेकटनविकटपिसाच ॥

उरसीसभुजकरचरन । जहँ तहँ लगे महिपरन ॥

चिकरत लागत वान । धरपरत कुधर समान ॥

भटकटततनसतपंड । पुनिउठतकरि पाषंड ॥

नभउडतबहुभुजमुंड । विनुमौलि धावत रुंड ॥

पगकंककाकसृकाल । कटकटहिंकठिनकराल ॥

छं० कटकटहिं जंबुकभूत प्रेत पिसाच पप्परसंचहीं ॥

बेताल वीरकपाल तालवजाइ जोगिनि नंचहीं ॥

रघुवीरवान प्रचंडपंडहिं भटन्हके उरभुजसिरा ॥

जहंतहंपरहिंउठिलरहिंधरुधरुधरुकरहिंभयकरगिरा ॥

अंतावरीगहिउडत गीधपिसाच करगहिधावहीं ॥

संग्रामपुर वासीमनहु बहुवालगुडी उडावहीं ॥

मारे पछारे उर विदारे विपुल भट कहंरत परे ॥

अवल्लोकिनिजदलविकलभटतिसिरादिपरदूषनफिरे ॥

सरसक्तितोमरपरसुमूलकृपानएकहिवारहीं ॥

करिकोप श्रीरघुवीरपरअगनितनिसाचरडारहीं ॥

प्रभुनिमिषमहंरिपुसरनिवारिपचारिडारे सायका ॥

दसदसविसिषउरमांझमारेसकलनिसिचरनायका ॥

महिपरतउठिभटभिरतमरतनकरतमायाअतिघनी ॥

सुरडरतचौदहसहसप्रेत विलोकि एकअवधधनी ॥

सुरमुनिसभयप्रभुदेषिमायानाथअतिकौतुककर्यौ ॥

देषहिंपरस्पररामकरिसंग्रामरिपुदललरिमर्यौ ॥

दो० रामराम कहितन तजहिं, पावहिं पद निर्बान ॥

करि उपाइ रिपु मारे, छन महं कृपानिधान ॥

हरषित बरषहिंसुमन सुर, बाजहिं गगन निसान ॥

अस्तुतिकरि करिसवचले, सोभितविविधविमान १४ ॥

जब रघुनाथसमर रिपुजीते \* सुरनरमुनि सबके भयवीते

तबलछिमन सीताहि लैआए ✽ प्रभुपदपरतहरषि उरलाए  
सीताचितव स्याममृदुगाता ✽ परमप्रेम लोचननअघाता  
पंचवटीवसि श्री रघुनायक ✽ करतचरितसुरमुनिसुषदायक  
धुआँदेषि परदूषन केरा ✽ जाइ सुपनषा रावन प्रेरा  
बोलीवचन क्रोधकरि भारी ✽ देसकोसकै सुरति विसारी  
करसिपान सो वसिदिनराती ✽ सुधिनहिंतव सिरपरआराती  
राजनीति विनुधन विनुधर्मा ✽ हरिहिसमपें विनुसतकर्मा  
विद्याविनु विवेक उपजाए ✽ श्रमफल पढेकिए अरूपाए  
संग ते जती कुमंत्र तें राजा ✽ मानतें ज्ञान पानते लाजा  
प्रीतिप्रनय विनु मदतेंगुनी ✽ नासहिंवेगिनीतिअसमुनी  
सो० रिपुरुजपावक पाप, प्रभुअहिगनियनछोटकरि ।  
असकहिविविधविलाप, करिलागीरोदनकरन ॥

दो० सभामाँझपरिव्याकुल, बहुप्रकारकहरोइ ।

तोहिजिअत दसकंधर, मोरिकिअसिगतिहोइ॥ १५॥

सुनतसभासद उठे अकुलाई ✽ समुझाई गहि बाँहउठाई  
कहलंकेसकहसि निजवाता ✽ केइतबनासाकाननिपाता  
अवधनृपति दसरथ के जाए ✽ पुरुष सिंघवन पेलनआए  
समुझिपरीमोहिउन्हकैकरनी ✽ रहितनिमाचरकरिहहिंधरनी  
जिन्हकरभुजबलपाइदसानन ✽ अभयभएविचरतमुनिकानन  
देषत बालक काल समाना ✽ परमधीर धन्वी गुननाना  
अतुलितवल प्रतापद्वौ भ्राता ✽ पलवधरतसुरमुनिसुषदाता  
सोभाधाम राम असनामा ✽ तिन्हकेसंगनारिएकस्यामा  
रूपरासिविधि नारि सँवारी ✽ रतिसतकोटि तासुबलिहारी



गासु अनुज काटेधुतिनासा \* सुनितवभगिनि हरहिपरिहामा  
 परदूषन सुनि लगे पुकारा \* छनमहंसकल कटकउन्हमारा  
 परदूषन तिसिरा कर घाता \* सुनिदससीस जरेसबगाता  
 दो० मूपनषहि समुझायकरि, बरुबोलेसि बहुभांति ।

गएउभवन अतिसोचवस, नीदपरैनाहिंराति १६

सुरनर असुरनाग पगमाहीं \* मोरेअनुचरकहँको उनाहीं  
 परदूषन मोहिसम बलवंता \* तिन्हहि कामारहिबिनभगवंता  
 सुररंजन भंजन महिभारा \* जौंभगवंतलीन्हअवतारा  
 तउमैंजाइ बयर हाठि करउँ \* प्रभुसर प्रानतजे भवतरउँ  
 होइहि भजन न तामस देहा \* मनक्रम बचनमंत्रटटहा  
 जौंनररूप भूपसुत कोऊ \* हरिहौंनारिजीतिरनदोऊ  
 चलाअकेलजान चढितहवाँ \* बसमारीचसिंधुतटजहवाँ  
 इहाँराम जसिजुति बनाई \* सुनहु उमासो कथासुनाई  
 दो० लछिमनगए बनहिजब, लेनमूलफलकंद ।

जबक सुतासनबोले बिहंसि कृपा सुषट्ठंद १७

सुनहुप्रियाव्रत रुचिर सुसीला \* मैकछुकरवि मलितनरलीला  
 तुम्हपावकमहँ करहु निवासा \* जौंलगिकरौं निसाचरनासा  
 जबहिं रामसब कहा बषानी \* प्रभुपद धरिहियअनलसमानी  
 निजप्रतिबिंब राषितहँ सीता \* तैसेइ सीलरूप सुविनीता  
 लछिमनहँ यहमरम न जाना \* जोकछुचरितरचा भगवाना  
 दसमुष गएउ जहाँ मारीचा \* नाइमाथस्वारथ रतनीचा  
 नवनिनीचकै अति दुषदाई \* जिमिअंकुसधनुउरगाबलाई  
 भयदायकपल कै प्रियवानी \* जिमिअकालकैकुसुमभवानी

दो० करिपूजा मारीच तब, सादर पूछी बात ॥

कवनहेतुमनव्यग्रअति, अकसरआएहुतात ॥ १८ ॥

दसमुषसकलकथातेहिआगे \* कहीसहितअभिमानअभागे  
होहुकपटमृगतुहल्लकारी \* जेहिविधिहरिआनौनृपनारी  
तेहिपुनिकहासुनहुदससीसा \* ते नररूप चराचर ईसा  
तासों तात वयरनहि कीजै \* मारे मरिअ जिआए जीजै  
मुनिमपराधनगयउकुमारा \* विनुफरसररघुपतिमोहिमारा  
सतजोजनआएउँछनमाहीं \* तिन्हसनवयरकिएभलनाहीं  
भइ ममकीट भृंगकी नाई \* जहँतहँ में देषों दोउ भाई  
जौनरतात तदापिअतिसूरा \* तिन्हहिविरोधनआइहिपूरा  
दो० जेहिताडका सुबाहुहति, पंडेउ हरकोदंड ॥

परदूषन तिसिराबधेउ, मनुजकिअसवरबंद ॥ १९ ॥

जाहुभनकुलकुमलविचारी \* सुनतजरादीन्हिसिवहुगारी  
गुरुजिमिमूठकरसिममबोवा \* कहुजगमोहिसमानकोजोध  
तबमारीचहृदय अतुमाना \* नहिबिरोधे नहि कल्याना  
सखी ममी प्रभुसउ धनी \* बैद वंदिकवि मानत गुनी  
उभयभातिदेषनिजमरना \* तबताकिसिरघुनायकसरना  
उतरदेत मोहिवधवअभागे \* कसममरा रघुपति सरअगे  
असजियजानिदसाननसंगा \* चला रामपद प्रेम अभंगा  
मनअतिहरषजनावनतेही \* आज देषहों परम सनेही  
छं० निजपरमप्रीतमदेपिलोचनसुफलकरिपुपपाइहों ॥

श्रीसहितअनुजसमेत कृपानिकेतपदमन अइहों ॥

निर्बानदायकक्रोधजाकरभगतिअवसहिवसकरी ॥

निजपानिसरसंधानिसोमोहिवधिसुषसागरहरी ॥

दो० ममपाछे धर धावत, धरे सरासन बान ॥

फिरिफिरिप्रभुहिविलोकिहों, धन्यनमोसमआन ॥ २० ॥

तेहिबननिकटदसाननगएऊ \* तवमारीच कपटमृग भयऊ  
अतिविचित्रकछुवरनिनजाई \* कनकदेह मनिरचित बनाई  
सीता परम रुचिर मृग देषा \* अङ्ग अङ्ग सुमनोहर वेषा  
सुनहु देव रघुबीर कृपांला \* येहिमृगकरअतिसुंदरछांला  
सत्यसंधप्रभु बध करिएही \* आनहु चर्म कहति वैदेही  
तवरघुपतिजानतसबकारन \* उठे हरषि सुरकाज सँवारन  
मृगविलोकिकटिपरिकरबाँधा \* करतलचाप रुचिरसरसाँधा  
प्रभुलछिमनहिंकहासमुझाई \* फिरतविपिननिसिचरबहुभाई  
सीताकेरि करेहु रषवारी \* बुधिविवेकवलसमयविचारी  
प्रभुहिविलोकिचला मृगभाजी \* धाएराम सरासन साजी  
निगमनेतिसिवध्याननपावा \* माया मृगपाछे सोइधावा  
कवहुँ निकट पुनिदूरिपराई \* कवहुँकप्रगटै कवहुँ छपाई  
प्रगटतदुरत करतछल भूरी \* येहिविधिप्रभुहि गयोलेदूरी  
तवतकि रामकठिनसरमारा \* धरनिपरेउकरि घोरपुकारा  
लछिमनकरप्रथमहिलेनामा \* पाछेसुमिरेसि मनमहरामा  
प्रानतजतप्रगटोसिनिजदेहा \* सुमिरेसिराम समेत सनेहा  
अंतर प्रेम तासु पहिचाना \* मुनिदुर्लभगतिदीन्हिसुजाना  
दो० विपुलसुमनसुरवरषहिं, गावहिंप्रभुगुनाथ मा० पा० २०

निजपददीन्हिअसुरकहँ, दीनबन्धुरघुनाथ ॥ २१ ॥

पलबधि तुरताफिरे रघुबीरा \* सोहचापकर कटि तूनीरा  
आरत गिरा सुनीजब सीता \* कहलछिमनसनपरमसभीता

जाहुबेगि संकट अति भ्राता \* लछिमनविहंसिकहासुनुमाता  
 भृकुटि विलास सृष्टिलयहोई \* सपनेहु संकटपरैकि सोई  
 मरम वचन जब सीताबोली \* हरिप्रेरितलछिमनमतिडोली  
 बनदिसिदेव सौंपि सब काहू \* चलेजहां रावन ससिराहू  
 मूनबीच दसकंधर देषा \* आवा निकट जतीकेवेषा  
 जाके डर सुर असुर डेराहीं \* निसिननींद दिनअन्ननपाहीं  
 सोदससीस स्वान की नाई \* इतउतचितइचला भडिहांई  
 इमिकुपंथ पगदेत पगोसा \* रहनतेजतनबुधिवल लेसा  
 नानाविधि कहि कथासुहाई \* राजनीतिभय प्रीतिदेपाई  
 कहसीता सुनुजती गोसांई \* बोलेहु वचन दुष्टकी नाई  
 तवरावन निजरूप देपावा \* भईसभयजवनामसुनावा  
 कहसीता धरिधीरज गाढा \* आइगएउप्रभुरहुपलठाढा  
 जिमिहारिवधुहिछुद्रससचाहा \* भयेसिकालवर्सानिसिचरनाहा  
 सुनतवचन दससीस रिसाना \* मनमहँचरनबंदिसुपमाना  
 दो० क्रोधवंत तव रावन, लीन्हिसि रथ बैठाइ ॥

चला गगन पथआतुर, भयरथहाँकिनजाइ ॥ २२ ॥

हा जगदेक वीर रघुराया \* केहिअपराधविसारेहुदाया  
 आरति हरनसरन सुपदायक \* हारवुकुलसरोजदिननायक  
 हालछिमनतुम्हार नहिंदोसा \* सोफलपाएउँकीन्हेउँरोसा  
 विविध विलाप करति बैदेही \* भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही  
 विपतिमोरिकोप्रभुहि सुनावा \* पुरोडासचह रासभ पावा  
 सीताके विलाप सुनि भारी \* भए चराचर जीव दुषारी  
 गोधराजसुनि आरत बानी \* रघुकुलतिलकनारिपहिवानी



अधम निसाचर लीन्हे जाई \* जिमिमलेछवस कपिलागाई  
 सीतेपुत्रि करसि जनि त्रासा \* करिहौं जातुधानकरनासा  
 धावा क्रोध वंत षग कैसे \* छूटै पवि पर्वत कहँ जैसे  
 ररे दुष्ट ठाढ़ किन होही \* निर्भयचलेसिन जानेहिमोही  
 आवत देषि कृतांत समाना \* फिरिदसकंधरकर अनुमाना  
 की मैनाक कि षगपति होई \* ममबलजानसहित पतिसोई  
 जाना जरठ जटायू एहा \* ममकरतीरथछाडिहिदेहा  
 सुनत गीध क्रोधातुर धावा \* कहसुनुरावन मोरसिषावा  
 तजिजानकिहिकुसलगृहजाहू \* नाहितअस होइहिबहुबाहू  
 रामरोष पावक अतिघोरा \* होइहिसकलसलभकुलतोरा  
 उतरन देत दसानन जोधा \* तबहिगीधधावाकरि क्रोधा  
 धरिकचविरथकीन्हमहिगिरा \* सीतहिराषिगीधपुनिफिरा  
 चोचन्हमारि बिदारेसि देही \* दंड एक भइ मुरछा तेही  
 तबसक्रोध निसचर षिसिआना \* काढेसिपरमकरालकृपाना  
 काढेसि पंष पराषग धरनी \* सुमिरिरामकरि अद्भुतकरनी  
 सीताहि जान चढाइ बहोरी \* चलाउतायल त्रासनथोरी  
 करतिविलापजातिनभसीता \* व्याधविवसजनुमृगीसभीता  
 गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी \* कहिहरिनामदीन्ह पढ्यारी  
 एहिबिधिसीताहि सोलैगएऊ \* वनअसोकमहँराषतभएऊ  
 दो० हारि पराषल बहुविधि, भय अरु प्रीति देषाइ ॥

तबअसोक पादपतर, राषेसि जतन कराइ ॥

जेहिबिधि कपट कुरंग संग, धाइचले श्रीराम ॥

सोछावे सीताराषिउर, रटतिरहति हरिनाम ॥२३॥

रघुपतिअ उजहिआवति देषी ✽ बाहिजचिन्ताकीन्ह बिमेषी  
जनकसुतापरि हरेहु अकेली ✽ आएहुतात बचनममपेअ  
निसिचरनिकरफिरहिं बनमाहीं ✽ मममनसीताआश्रमनाहीं  
गहिपदकमलअनुजकरजोरी ✽ कहेउनाथकछुमोहिंनखोरी  
अनुज समेत गए प्रभुतहँवा ✽ गोदावरितठआश्रमजहँवा  
आश्रमदेषि जानकी हीना ✽ भएबिकलजसपाकृतदीना  
हागुनषानि जानकी सीता ✽ रूपसील ब्रतनेम पुनीता  
लछिमन समुझाए बहुभाँती ✽ पूछत चले लता तरुपाँती  
हेषगमृग हेमधुकर श्रेणी ✽ तुम्हदेषी सीतामृग नैनी  
षंजनसुक कपोत मृग मीना ✽ मधुपनिकर कोकिलाप्रवीना  
कुंदकली दाडिम दामिनी ✽ कमलसरदससिअहिभामिनी  
बनरुपास मनोज धनुहंसा ✽ गजकेहरिनिजसुनतप्रसंसा  
श्रीफल कनक कदलि हर्षाहीं ✽ नेकनसकसकुच मनमाहीं  
सुनुजानकी तोहि बिनुआजू ✽ हरषे सकल पाइजनु राजू  
किमिसहिजात अनपताहिपाहीं ✽ प्रियाबेगिप्रगटसि कसनाहीं  
एहिबिधिषोजत विलपतस्वामी ✽ मनहुमहाविरहीअति कामी  
पूरन काम राम सुषरासी ✽ मनुजचरितकरअजअबिनासी  
आगे परा गीधपति देषा ✽ सुमिरत रामचरनकी रेषा  
दो० करसरोज सिरपरसेउ, कृपा सिंधु रघुवीर ॥

निराषिरामछविधाममुष, विगतभईसबपीर २४ ॥

तबकह गीधवचन धरि धीरा ✽ सुनहु रामभंजनभवभीरा  
नाथदसानन एह गतिकीन्ही ✽ तेहिंषल जनकसुताहरिलीन्ही  
लैदछिनदिसि गएउ गोसाई ✽ बिलपतिअतिकुररी कीनाई

दरसलागिप्रभु राषेउँ प्राणा \* चलनचहतअब कृपानिधाना  
 रामकहा तनरापहु ताता \* मुषमुसुकाइकहीतेहिंवाता  
 जाकरनाम मरतमुष आवा \* अधमौमुकुतहोइ श्रुतिगावा  
 सोमम लोचन गोचर आगे \* राषों देहनाथ केहि पाँगे  
 जलभरिनयन कहहिं रघुराई \* तातकर्मनिज ते गतिपाई  
 परहितवसजिन्हके मनमाहीं \* तिन्हकहँ जगदुर्लभकछुनाहीं  
 तनतजि तातजाहु ममधामा \* देउँ काहतुम्ह पूरनकामा  
 दो० सीता हरन तातजनि, कहेउ पिता सनजाइ ॥

जौं मैरामत कुल सहित, कहिहिदसाननआइ २५  
 गोध देहतजि धरि हरिरूपा \* भूषनबहुपट पीतअनूपा  
 स्यामगात विसाल भुजचारी \* अस्तुतिकरत नयनभरिवारी  
 छुं० जयराम रूपअनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरकसही ॥  
 दससीसबाहु प्रचंड पंडन चंड सर मंडन मही ॥  
 पाथोदगात सरोज मुपराजीव आयत लोचनं ॥  
 नितनौमिरामकृपालवाहु विसाल भवभयमोचनं ॥  
 बलम प्रमेय मनादि मज मव्यक्त मेकम गोचरं ॥  
 गोविंद गोपर दंडहर विज्ञान घन धरनी धरं ॥  
 जेराम मंत्र जपंत संत अनंत जनमन रंजनं ॥  
 नितनौमिरामअकाम प्रियकामादिपलदलगंजनं ॥  
 जेहिश्रुतिनिरंजनब्रह्मव्यापकविरजअजकहिगावहीं ॥  
 करिध्यानग्यानविरागजोगअनेकमुनिजेहिपावहीं ॥  
 सोप्रगट करुनाकंद सोभा बृंदअग जग मोहई ॥  
 ममहृदय पंकजमृंग अंगअनंग बहुछवि सोहई ॥  
 जोअगमसुगमसुभावनिर्मलअसमसमसीतलसदा ॥

पस्यंतिजंजोगीजतनकरि करतमन गोबससदा ॥  
सोरामरमानिवास संतत दास बस त्रिभुवनधनी ॥  
ममउरबसउसोसमन संसृतिजासु कीरतिपावनी ॥

दो० अबिरलि भगति मांगिवर, गीधगणउहरिधाम ॥  
तेहिकीकृयाजथोचित, निजकरकीन्हीराम ॥ २६ ॥

कोमलचितअतिदीनदयाला ✽ कारनबिनु रघुनाथ कृपाला  
गीधअधमषगआमिषभोगी ✽ गतिदीन्हीजो जाचतजोगी  
सुनहुउमा ते लोग अभागी ✽ हरितजिहोहिं विषय अनुरागी  
पुनि सीतहि षोजत दोभाई ✽ चलेविलोकत वन बहुताई  
संकुललताबिटपघनकानन ✽ बहुषगमृग तहें गजपंचानन  
आवत पंथ कबंध निपाता ✽ तेहिंसबकही सापकै बाता  
दुर्बासा मोहिदीन्ही सापा ✽ प्रभुपद पेपि मिटासोपापा  
सुनु गंधर्व कहों मैं तोही ✽ मोहिनसोहाइब्रह्मकुलद्रोही  
दो० मनक्रम वचन कपट तजि, जोकर भूसुर सेव ॥

मोहिसमेत विरंचि सिव, बसताकै सबदेव ॥ २७ ॥

सापत ताडत परुष कहंता ✽ विप्रपूज्य अस गावहिंसंता  
पूजिअ विप्रसील गुनहीना ✽ सूद्रनगुनगन ग्यानप्रवीना  
कहिनिजधर्मताहिसमुझावा ✽ निजपदप्रीतिदेषिमनभावा  
रघुपतिचरनकमल सिरनाई ✽ गणउगगनआपनिगतिपाई  
ताहिदेइ गति राम उदारा ✽ सबरीकै आश्रम पगुधारा  
सबरी देषि रामगृह आए ✽ मुनिकेवचनसमुझिजियभाए  
सरसिजलोचनबाहुबिसाला ✽ जटामुकुटसिरउरबनमाला  
स्याम गौर सुंदर दोउभाई ✽ सबरी परी चरन लपटाई



प्रेम मगनमुषवचननआवा \* पुनिपुनिपदसरोजसिरनावा  
सादर जल लै चरन पषारे \* पुनिसुंदर आसन बैठारे  
दो० कंद मूलफल सुरस अति, दिणराम कहँ आनि ।

प्रेम सहित प्रभु पाए, बारंवार वषानि ॥ २८ ॥

पानिजोरि आगे भइ ठाढ़ी \* प्रभुहिंबिलोकिप्रीतिअतिबाढ़ी  
केहिबिधिअस्तुतिकरौं तुम्हारी \* अधमजातिमैं जट्टमतिभारी  
अधमतेअधमअधमअतिनारी \* तिन्हमहँ मैं अतिमंदअघारी  
कहरघुपतिसुनुभामिनिगता \* मानौं एक भगति करनाता  
जाति पाँतिकुल धर्मबडाई \* धनबलपरिजन गुनचतुराई  
भगतिहीन नरसोहै कैसा \* विनुजलवारिद देषिअजैसा  
नवधाभगतिकहौं तोहिपाहीं \* सावधान सुनुधरु मनमाहीं  
प्रथमभगति संतनकरसंगा \* दूसरिरति ममकथा प्रसंगा  
दो० गुरुपद पंकज सेवा, तीसरि भगति अमान ॥

चौथिभगति ममगुनगन, करइकपट तजिगान ॥ २९ ॥

मंत्रजाप मम दृढ विश्वासा \* पंचमभजन सोबेद प्रकासा  
छठदम शीलविरत बहुकर्मा \* निरत निरंतर सज्जनधर्मा  
सातवसममोहिमयजगदेषा \* मोतैंसंत अधिक करिलेषा  
आठवँ जथा लाभ संतोषा \* सपनेहु नहिंदेषइ परदोषा  
नवमसरलसवसनलुलहीना \* ममभरोसहिय हरषनदीना  
नवमहँ एको जिन्हके होई \* नारिपुरुष सचराचर कोई  
सोईअतिसयप्रियभामिनिमोर \* सकलप्रकार भगतिदृढ तोरे  
जोगि बृंद दुलभ गतिजोई \* तोकहँआज सुलभभइ सोई  
ममदरसनफल परमअनूपा \* जीवपाव निजसहज सरूपा

जनकसुताकइसुधिभामिनी\* जानहिकहुकरिवर गामिनी  
 पंपासरहि जाहु रघुराई\* तहँहोइहि सुग्रीव मिताई  
 सो सब कहिहि देव रघुवीरा\* जानतहँ पँछहु मतिधीरा  
 बार बार प्रभु पद सिरनाई\* प्रेमसहित सब कथा सुनाई  
 छं० कहिकथासकलविलोकिहरिमुष हृदयपदपंकजधरे ॥  
 तजिजोगपावक देहहरिपदलीनभइ जहँनहिंफिरे ॥  
 नरविविधिकर्म अधर्म बहुमतसोक प्रदसवत्यागहू ॥  
 बिस्वास करिकह दासतुलसी रामपद अनुरागहू ॥  
 दो० जातिहीनअघजन्ममहि, मुक्तकीन्हि असिनारि ॥  
 महामंदमन सुषचहसि, ऐसै प्रभुहि विसारि ॥ ३० ॥  
 चले राम त्यागा बन सोऊ\* अनुलितबल नरकेहरिदोऊ  
 विरही इवप्रभुकरत विषादा\* कहत कथा अनेक संवादा  
 लछिमनदेषुविपिनकइसोभा\* देषतकेहिकरमननहिंछोभा  
 नारिसहित सब षगमृग बृंदा\* मानहुमोरि करतहहिं निंदा  
 हमहिंदेषि मृगनिकरपराहीं\* मृगीकहहिंतुमकहँभयनाहीं  
 तुम्ह आनंद करहु मृगजाए\* कंचन मृग षोजन ए आए  
 संगलाइ करिनी करि लेहीं\* मानहु मोहिसिषावन देहीं  
 सास्त्रसुचिंतित पुनिरदेषिअ\* भूपसुसेवितवसनहिं लेषिअ  
 राषिअनारिजदपिउरमाहीं\* जुवती सास्त्रनृपाति बसनाहीं  
 देषहु तात वसंत सुहावा\* प्रियाहीनमोहिभयउपजावा  
 दो० विरहविकलबलहीनमोहि, जानेसिनिपट अकेल ॥  
 सहित विपिनमधुकर षग, मदनकीन्हि बगमेल ॥  
 देषिगएउ भ्रातासहित, तासु दूत सुनि वात ॥  
 डेराकीन्हेउमनहुतब, कटकहटकिमनजात ॥ ३१ ॥

बिटपबिसाललताअरुझानी \* विविधिवितानदिएजनुतानी  
 कदालितालवरध्वजापताका \* देषिनमोह धीर मनजाका  
 विविधिभाँतिफूले तरुनाना \* जनुबानैत बने बहु बाना  
 कहँ कहँ सुंदरबिटप सुहाए \* जनुभट बिलग २ होइछाए  
 कूजत पिकमानहु गजमाते \* ठेक महोष ऊँट बिसराते  
 मोर चकोर कीर बर बाजी \* पारावत मराल सब ताजी  
 तीतर लावक पदचर जूथा \* बरनिनजाइ मनोज बरूथा  
 रथगिरि सिलाहुंहुभी झरना \* चातक बंदीगुन गन बरना  
 मधुकर मुषरभेरि सहनाई \* त्रिविधिवयारि बसीठी आई  
 चतुरंगिनी सेन संग लीन्हें \* बिचरत सबहि चुनौतीदीन्हें  
 लछिमनदेषत कामअनीका \* रहहिंधीरतिन्हकैजगलीका  
 एहिके एक परम बल नारी \* तेहितेउबरसु भटसोइभारी  
 दो० ताततीनि अति प्रबलबल, कामक्रोध अरुलोभ ॥

मुनिबिज्ञान धाममन, करहिं निमिष महँलोभ ॥

लोभ के इच्छा दंभवल, कामके केवल नारि ।

क्रोधकेपरुषवचनबल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥३२॥

गुनातात सचराचर स्वामी \* रामउमा सब अंतरयामी  
 कामिन्हकै दीनता दिषाई \* धीरन्हकेमनबिरति दृढाई  
 क्रोधमनोज लोभमदमाया \* छुटहिं सकल रामकी दाया  
 सोनर इन्द्रजाल नहिंभूला \* जापरहोइ सो नट अनुकूला  
 उमाकहौंमैंअनुभवअपना \* सतहरिभजनजगतसबसपना  
 पुनिप्रभु गए सरोवर तीरा \* पंपानाम सुभग गंभीरा  
 संतहृदयजस निर्मल बारी \* बाँधे घाट मनोहर चारी

जहँतहँपिअहिँविविधिसृगनीरा✽ जनुउदारगृह जाचक भीरा  
दो० पुरइनिसघनओटजल, बेगिनपाइअमर्म ॥

मायाछन्न न देषिए, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥

सुषीमीनसवएकरस, अतिअगाधजलमाहिँ ॥

जथाधर्मसीलन्ह के, दिन सुषसंजुत जाहिँ ॥

विकसेसरसिज नाना रंगा ✽ मधुरमुपर गुंजत बहुभ्रंगा  
बोलतजलकुक्कुटकलहंसा ✽ प्रभुविलोकिजनुकरतप्रसंसा  
चक्रवाक बक षग समुदाई ✽ देषतवनइ वरनि नहिँ जाई  
सुंदर षगगन गिरा सोहाई ✽ जातपाथिक जनुलेत बोलाई  
तालसमीपमुनिन्हगृहछाए ✽ चहुँदिसिकाननबिटपसुहाए  
चंपकबकुल कदंब तमाला ✽ पाटलपनस पलास रसाला  
नवपल्लवकुसुमिततरुनाना ✽ चंचरीक पटली कर गाना  
सीतल मंद सुगंध सुभाऊ ✽ संततबहै मनोहर बाऊ  
कुहूकुहूकोकिल धुनिकरहीं ✽ सुनिरवसरसध्यानमुनिटरहीं  
दो० फलभरनम्रिविटपसब, रहेभूमिनिअराइ ॥

परउपकारीपुरुषजिमि, नवहिंसुसंपतिपाइ ३४ ॥

देषिराम अतिरुचिरतलावा ✽ मज्जनकीन्ह परमसुषपावा  
देषी सुंदर तरुवर छाया ✽ बैठेअनुज सहित रघुराया  
तहँपुनिसकलदेवमुनिआए ✽ अस्तुतिकरिनिजधामसिधाए  
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ✽ कहतअनुजसनकथारसाला  
बिरहवंत भगवंतहि देषी ✽ नारदमनभा सोच बिसेषी  
मोरसाप करि अंगीकारा ✽ सहत राम नाना दुषभारा  
ऐसेप्रभुहि विलोकौ जाई ✽ पुनिनबनिहिअसअवँसरआई



यहविचारि नारद करबीना \* गएजहाँ प्रभु सुष आसीना  
गावत रामचरित मृदुवानी \* प्रेमसहितबहुभाँति वषानी  
करत दंडवत लिए उठाई \* राषे बहुति वार उरलाई  
स्वागत पूछि निकट बैठारे \* लल्लिमन सादर चरन पषारे  
दो० नानाविधि विनतीकरि, प्रभुप्रसन्न जियजानि ॥३५॥

नारदबोलेवचनतब, जोरिसरोरुहपानि ॥ ३५ ॥

सुनहुउदार परमरघुनायक \* सुंदरअगम सुगम वरदायक  
देहु एक वर मागों स्वामी \* जद्यपि जानत अंतरजामी  
जानहुमुनितुम्हमोरसुभाऊ \* जनसनकबहुँकि करौंदुराऊ  
कवनवस्तुअसिप्रियमोहिलागी \* जोमुनिवरनसकहुतुम्हमागी  
जनकहुँ कछुअदेयनहिंमोरे \* असविस्वास तजहुजनिभोरे  
तब नारद बोले हरषाई \* अस वर माँगों करौं छिठाई  
जद्यपि प्रभुके नाम अनेका \* श्रुतिकहअधिक एकतैंएका  
रामसकलनामन्हतेअधिका \* होउनाथअघषगगनवधिका  
दो० राकारजनी भगति तव, रामनाम सोइ सोम ।

अपरनामउदगनविमल, बसहु भगतउरव्योम ॥

एवमस्तु मुनिसन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ ।

तवनारदमनहरषअति, प्रभुपदनाएउमाथ ॥३६॥

अतिप्रसन्न रघुनाथहिजानी \* पुनि नारद बोले मृदुवानी  
रामजबहिं प्रेरेहु निजमाया \* मोहेहुमोहि सुनहु रघुराया  
तब विवाहमें चाहेंउकीन्हा \* प्रभुकेहिकारन करैनदीन्हा  
मुनुमुनिकहौं तोहिसहरोसा \* भजहिंजेमोहितजिसकलभरोसा  
करौं सदा तिन्हकै रषवारी \* जिमिबालकहिंराषमहतारी  
गहसिसुबच्छअनलअहिधार्ई \* तहँ राषे जननी अरगाई

प्राढभए तेहिसुतपर माता ✽ प्रीतिकरै नहिं पाछिलवाता  
मोरै प्रौढ तनय समज्ञानी ✽ बालकसुतसमदासअमानी  
जनहिमोरवलनिजवलताही ✽ दुहुँकहँकामक्रोधरिपुआही  
एहविचारिपंडितमोहिभजहीं ✽ पाएहुज्ञानभगतिनहिंतजहीं  
दो० कामक्रोध लोभादिमद, प्रवल मोह कै धारि ॥

तिन्हमहँअतिदारुनदुषद, मायारूपीनारि ॥ ३७ ॥

सुनुमुनिकहपुरानश्रुतिसंता ✽ मोहविपिनकहँ नारि वसंता  
जपतप नेम जलास्रय शारी ✽ होइ शीषम सोषै सब नारी  
कामक्रोध मदमत्सर भेका ✽ इन्हहिहरष प्रद वरषा एका  
दुर्वासना कुमुद समुदाई ✽ तिन्हकहँ सरदसदा सुषदाई  
धर्मसकल सरसीरुह वृंदा ✽ होइहिमतिन्हहिदहैसुषमंदा  
पुनि ममता जवास बहुताई ✽ पलुहइनारिसिसिर रितुपाई  
पापउल्लूक निकर सुषकारी ✽ नारिनिविडिरजनीअधिआरी  
बुधिवलसील सत्यसबमीना ✽ वनसीसमत्रियकहहिंप्रवीना  
दो० अवगुन मूल मूल प्रद, प्रमदा सबदुष पानि ॥

ताते कीन्ह निवारन, मुनि में यह जियजानि ३८ ॥

मुनिरघुपतिके वचन सुहाए ✽ मुनितनपुलकनयनभरिआए  
कहहुकवन प्रभुकै असरीती ✽ सेवकपरम मता अरु प्रीती  
जेनभजहिंअसप्रभुभ्रमत्यागी ✽ ग्यानरंकनर मंद अभागी  
पुनिसादर बोले मुनिनारद ✽ सुनहराम विज्ञान विसारद  
संतन्हके लच्छन रघुवीरा ✽ कहहुनाथ भवभंजनभीरा  
सुनुमुनि संतन्हकेगुनकहऊँ ✽ जिन्हते मैं उनके वस रहऊँ  
पटविकारजितअनघअकामा ✽ अचलअकिंचन सुचिसुषधामा  
अमितबोधअनीहमितभोगी ✽ सत्यसार कविकोविदजोगी

सावधान मानद मद हीना \* धीरभक्तिपथ, परम प्रवीना  
दो० गुनागार संसारदुष, रहित विगत संदेह ।

तजिममचरनसरोजप्रिय, तिन्हकहँदेहनगेह ॥ ३९ ॥

निजगुनश्रवनसुनत सकुचाहीं \* परगुनसुनतअधिकहरषाहीं  
समसीतलनहिं त्यागहिं नीती \* सरलसुभाउसबहिसनप्रीती  
जप तप व्रतदमसंयम नेमा \* गुरगोविंद विप्र पद प्रेमा  
श्रद्धा छुमा मयत्री दाया \* मुदिताममपदप्रीतिअमाया  
विरतिविवेकविनयविग्याना \* बोध जथारथ वेद पुराना  
दंभमानमद करहिं न काऊ \* भूलि न देहिं कुमारग पाऊ  
गावहिंसुनहिं सदाममलीला \* हेतु रहित परहित रतसीला  
मुनिसुनु साधुन्हके गुनजेते \* कहिनसकैं सारदश्रुति तेते

छं० कहिसकन सारदशेषनारद सुनत पदपंकज गहे ॥

असदीनबंधुकृपाल अपनेभगतगुननिज मुषकहे ॥

सिरनाइ बारहिवार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारदगए ॥

ते धन्यतुलसीदास आसबिहाइ जेहरि रंगरँए ॥

दो० रावनारि जसपावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ।

रामभगति दृढपावहिं, विनु विराग जपजोग ॥

दीपसिषासम जुवतितन, मनजनिहोसिपतंग । नवाह ६

भजहिरामतजिकाममद, करहिसदासतसंग ॥ ४० ॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष बिध्वंसने विमल

बैराग सम्पादिनी नाम तृतीयः सोपानः समाप्तम् ॥

ग्रंथसंख्या ५६० श्लोक

शुभम् भवतु ।

✽ शुद्धाशुद्ध पत्र आरण्यकाण्डे १ ✽

आरण्यकाण्डे ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२४	१०	कहि	कहि
३२८	१८	राजाः	राजः
३२९	७	चारा	चारी
३४३	१२	बनक	बरुन
३४८	१७	शुनासात	शुनातीत
३५१	१	पाइ	पौड

इति





❀ श्रीः ❀

## अथ रामायण किस्किन्धाकाण्ड ।

श्रीगणेशायनमः

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

श्लोक—कुंदेंदीवरसुंदरावतिवल्लो विज्ञानधामाबुभौ ॥ शोभाब्जौबर  
धन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रबृंदप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौ रघुवरोसद्धर्म  
ब्रह्मां भोधिसमुद्रवंकलिमलप्रध्वंशनंचाव्ययं श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरेसंशो  
भित्तंसर्वदा संसारामयभेषजंसुखकरं श्रीजानकीजीवनं ॥ धन्यास्तेकृतिनः  
पिबंतिसततं श्रीरामनामामृतं ॥ २ ॥

सो० मुक्तिजन्ममहिजानि, ज्ञानषानि अघहानिकर ॥  
जहँवस संभु भवानि, सो कासी सेइय कसन ॥  
जरत सकल सुरबृंद, विषमगरल जेहिंपानकिय ॥  
तेहिनभजसिमनमंद, को कृपाल संकर सरिस ॥

आगे चले बहुरि रघुराया ❀ रिष्यमूक पर्वत नियराया  
तहँरह सचिवसहित सुग्रीवाँ ❀ आवतदेषि अतुलबलसीवाँ  
अतिसभीतकहसुनुहनुमाना ❀ पुरुषजुगलबलरूप निधाना  
धरि बटु रूप देषु तैं जाई ❀ कहेसुजानिजियसयनबुझाई  
पठए वालि होहिं मन मैला ❀ भागौं तुरततजौं यह मैला  
विप्ररूपधरि कपितहँ गयऊ ❀ माथनाइ पृछतअस भयऊ  
को तुम्हस्यामल गौरसरीरा ❀ छत्रीरूप फिरहु वन बीरा

कठिनभूमिकोमलपदगामी \* कवनहेतु विचरहु वनस्वामी  
 मृदुल मनोहर सुंदर गाता \* सहत दुसहवन आतपवाता  
 की तुम्ह तीनिदेवमहं कोऊ \* नर नारायन कीतुम्ह दोऊ  
 दो० जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार ॥

कीतुम्हअखिलभुवनपति, लीन्हमनुजअवतार ॥१॥

कोमलैस दसरथके जाए \* हमपितुवचनमानिवनआए  
 नामरामलछिमन दोउभाई \* संगनारि सुकुमारि सुहाई  
 इहाँ हरी निसिचर वैदेही \* विप्रफिरहिं हमषोजत तेही  
 आपनचरित कहा हम गाई \* कहहुविप्रनिज कथा बुझाई  
 प्रभुपहिचानिपरेउगहिचरना \* सोसुषउमा जाइनहिंवरना  
 पुलकिततनमुषआवनवचना \* देषत रुचिर वेष के रचना  
 पुनिधीरजधरिस्तुतिकीन्ही \* हरषहृदयनिजनाथहिचीन्ही  
 मोरन्याउ में पूछा साँई \* तुम्हपूछहु कसनरकी नाँई  
 तबमाया बसफिरौं भुलाना \* तातैं मईनहिं प्रभुपहिचाना  
 दो० एक में मंद मोहवस, कुटिल हृदय अज्ञान ॥

पुनिप्रभु मोहि विसारेउ, दीनबंधु भगवान ॥ २ ॥

जदपिनाथ बहु अवगुनमारे \* सेवक प्रभुहि परैजनि भारे  
 नाथ जीव तब माया मोहा \* सोनिस्तरै तुम्हारेहि छोहा  
 तापर मैं रघुवीर दोहाई \* जानौंनहिं कछुभजनउपाई  
 सेवक सुतपाति मातु भरोसे \* रहै असोच बनैप्रभु पोसे  
 असकहिपरेउचरनअकुलाई \* निजतनप्रगटिपीतिउरछाई  
 तब रघुपाति उठाइ उरलावा \* निजलोचनजलसींचि जुड़ावा  
 सुनु कपिजियमानसिजनिऊना \* तैंममाप्रिय लछिमनते दूना

समदरसीमोहिकहसव कोऊ \* सेवकप्रियअनन्यगतिसोऊ  
दो० सो अनन्य जाके असि, मति नटरइ हनुमंत ।

मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥

देखिपवनसुतपतिअनुकूल \* हृदय हरष वीती सवसूला  
नाथ सैलपर कपिपति रहई \* सो सुग्रीव दासतव अहई  
तेहि सननाथ मयत्री कीजे \* दीनजानितेहिअभय करीजे  
सो सीताकर पोज कराइहि \* जहंतहंमरकटकोटि पडाइहि  
एहिविधि सकल कथासमुभाई \* लिएदुऔजन पीठि चढ़ाई  
जब सुग्रीव राम कहें देषा \* अतिसय जन्मधन्य करिलेषा  
सादरमिलेउ नाइ पदमाथा \* भेटेउअनुजसहितरघुनाथा  
कपिकरमनाविचारएहि रीती \* करिहहिंविधिमोसनएप्रीती  
दो० तब हनुमंत उभयदिसि, की सब कथा सुनाइ ।

पावक साषी देखकरि, जोरी प्रीति दृढाइ ॥ ४ ॥

कीन्हिप्रीतिकहुबीचनराषा \* लल्लिमनरामचरितसवभाषा  
कहसुग्रीव नयनभरि वारी \* मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी  
मंत्रिन्हसहित इहाँएकवारा \* बैठरहेउं मैं करत विचारा  
गगन पंथ देषी मैं जाता \* परवसपरी बहुत विलपाता  
राम राम हा राम पुकारी \* हमहिदेषि दीन्हैउ पटहारी  
मागा रामतुरत तेहिंदीन्हा \* पटउरलाइसोचअतिकीन्हा  
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा \* तजहु सोचमन आनहुधीरा  
सब प्रकार करिहौं सेवकाई \* जेहिविधि मिलिहिजानकीआई  
दो० सषा वचन सुनि हरषै, कृपा सिंधु बल सीव ।

कारन कवन बसहुवन, मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥



नाथ बालि अरुमई द्वौभाई \* प्रीतिरही कछु बरनिन जाई  
 मयसुत मायावी तेहिनाऊँ \* आवासो प्रभु हमरें गाऊँ  
 अर्द्ध राति पुर द्वार पुकारा \* बाली रिपुबल सहै न पारा  
 धावा बालि देषि सो भागा \* मैं पुनिगएउं बंधु संगलागा  
 गिरिवर गुहा पैठ सो जाई \* तबबाली मोहि कहाबुझाई  
 परषेसु मोहि एक पषवारा \* नहिंआवों तबजानेसु मारा  
 मासदिवस तहँ रहेउंषरारी \* निसरीरुधिर धारतहँ भारी  
 बालिहतेसिमोहिमारिहिआई \* सिलादेइ तहँ चलेउं पराई  
 मत्रिन्ह पुर देषा बिनु साँई \* दीन्हेउमोहि राजवरिआँई  
 बाली ताहि मारिगृहआवा \* देषिमोहि जियभेद बढावा  
 रिपुसममोहिमारिसिअतिभारी \* हरिलीन्हेसिसर्वस अरुनारी  
 ताके भय रघुवीर कृपाला \* सकलभुवनमईफिरेउं बिहाला  
 इहाँ साप बस आवतनाहीं \* तदपिसभीत रहों मनमाहीं  
 सुनिसेवक दुष दीनदयाला \* फरकिउठी द्वैभुजाविशाला  
 दो० सुनु सुग्रीव मारिहों, बालिहि एकहि वान ।

ब्रह्मरुद्र सरनागत, गणन उबारिहि प्रान ॥ ६ ॥

जेनमित्र दुषहोहिं दुषारी \* तिन्हहिविलोकत पातकभारी  
 निजदुषगिरिसमरजकरिजाना \* मित्रके दुषरजमेरु समाना  
 तिन्हकेअसिमत सहजनआई \* तेसठकतहठि करत मिताई  
 कुपथनिवारिसुपंथ चलावा \* गुनप्रगटइअवगुनन्हिदुरावा  
 देतलेत मनसंक न धरई \* बलअनुमानसदा हितकरई  
 बिपतिकालकरसतगुननेहा \* श्रुतिकह संतमित्र गुनएहा  
 आगे कहमृदु वचन बनाई \* पाछेअनहित मनकुटिलाई

जाकरचितअहिगतिसमभाई\* असकुमित्रपरिहरेहिभलाई  
 सेवकसठ नृपकृपिनकुनारी\* कपटी मित्र मूलसम चारी  
 सपासोच त्यागहु बल मोरें\* सबविधिघटव काज मै तोरें  
 कहसुग्रीव सुनहु रघुबीरा\* बालिमहाबल अतिरनधीरा  
 दुंदुभि अस्थिताल देषराए\* विनप्रयास रघुनाथ दहायें  
 दोषि अमितबल बाढीप्रीती\* बालिवधव इन्हभइपरतीती  
 बारबार नावइ पद सीसा\* प्रभुहिजान मनहरषकपीसा  
 उपजाज्ञान बचन तब बोला\* नाथकृपामन भएउअलौला  
 सुषसंपति परिवार बडाई\* सबपरिहरि करिहौं सेवकाई  
 एसव रामभगति के बाधक\* कहहिं संततवपदअवराधक  
 सत्रुमित्र सुषदुप जगमाहीं\* मायाकृत परमारथ नाही  
 बालिपरमहित जासुप्रसादा\* मिलेहरामतुम्हसमनविषादा  
 सपने जेहिसन होइ लराई\* जागे समुझत मन सकुचाई  
 अवप्रभुकृपाकरहुएहिभाँती\* सबतजिभजनकरौं दिनराती  
 सुनिविरागसंजुतकपिवानी\* बोले विहंसि रामधनु पानी  
 जोकछुकहेहु सत्य सब सोई\* सपावचन मम मृषानहोई  
 नटमर्कट इवसबहिनचावत\* राम षगेसबेद अस गावत  
 लैसुग्रीव संग रघुनाथा\* चले चाप सायक गहिहाथा  
 तब रघुपति सुग्रीव पठावा\* गर्जैसिजाइ निकटबलपावा  
 सुनतबालि क्रोधातुर धावा\* गहिकरचरन नारिसमुझावा  
 सुनुपतिजिन्हहिमिलेअसुग्रीवाँ\* तेदौबंधु तेजबल सीवाँ  
 कोसलेसमुत लल्लिमनरामा\* कालहुजीति सकहिसंग्रामा  
 दो० कहवाली सुनुभीरुप्रिय, समदरसी रघुनाथ ।  
 जौकदाचि मोहि मारिहिं, तौपुनि होवसनाथ ॥ ७ ॥

असकहिचलामहाअभिमानी\* तनसमान सुग्रीवहिं जानी  
 भिरे उभौ वाली अतितर्जा \* मुठिकामारिमहाधुनिगर्जा  
 तव सुग्रीवँ विकलहोइभागा \* मुष्टिप्रहार वज्र सम लगा  
 मैं जो कहा रघुवीर कृपाला \* बंधुनहोइ मोर यह काला  
 एक रूप तुम्ह आता दोऊ \* तेहिभ्रमतेनहिं मारेउँसोऊ  
 करपरसा सुग्रीव सरीरा \* तनुमा कुलिस गई सब पीरा  
 मेली कंठ सुमन के माला \* पठवापुनिबल देइ विसाला  
 पुनि नाना विधि भई लराई \* बिटप ओट देषहिं रघुराई

दो० बहुछल बल सुग्रीवकर, हिय हारा भय मानि ॥

मारा बालिहि राम तव, हृदय माँझ सरतानि ॥ ८ ॥

परा विकल महिसरके लागे \* पुनिउठि बैठदेषिप्रभुआगे  
 स्यामगात सिर जटावनाए \* अरुननयन सरचाप चढाए  
 पुनिर चितैचरनचितदीन्हा \* सुफलजन्ममानाप्रभुचीन्हा  
 हृदयप्रीति मुषवचनकठोरा \* बोला चितै रामकी ओरा  
 धर्म हेतु अवतरेहु गोसाँई \* मारेहु मोहि व्याधकी नाई  
 मैं बैरी सुग्रीवँ पियारा \* अवगुनकवननाथमोहिमारा  
 अनुजबधू भगिनीसुतनारी \* सुनुसठ कन्यासम ए चारी  
 इन्हहिकुदृष्टि विलोकै जोई \* ताहि बधे कछु पाप न होई  
 मूढतोहिअतिसयअभिमाना \* नारिसिषावनकरसिनकाना  
 ममभुजबलआश्रिततेहिजानी \* माराचहसिअधम अभिमानी

दो० सुनहराम स्वामी सन, चलन चातुरी मोरि ॥

प्रभुअजहूँ मैं पापी, अंत काल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनतरामअतिकोमलवानी \* वालिमीस परसेउनिजपानी  
अचलकरौतन राषहु प्राणा \* वालिकहासुनु कृपानिधाना  
जन्मजन्ममुनिजतनकराहीं \* अंतरामकहि आवत नाही  
जासुनामबल संकर कासी \* देतसवहिंसमगतिअविनासी  
ममलोचन गोचरसोइआवा \* बहुरिकिप्रभुअसबनिहिवनावा

छं० मोनयनगोचर जासुगुन नितनेतिकहिश्चुतिगावहीं  
जितिपवनमनगोनिरसकरि मुनिध्यानकबहुंकपावहीं  
मोहिजानिअतिअभिमानवसप्रभु कहेउराधुसरीरहीं  
असकवनसठहाठि काटिसुरतरुवारि करिहिवबूरहीं  
अवनाथकरिकरुनाविलोकहु देहुजोबरमागऊं  
जेहिजोनिजन्मौ कर्म बसतहं रामपदअनुरागऊं  
यहतनयममसमाबिनयवलकल्यानप्रदप्रभुलीजिए  
गाहिवाँह सुरनरनाहआपन दासअंगदकीजिए

दो० रामचरनदृढप्रीति करि, वालिकीन्हतनत्याग ॥

सुमनमाल जिमिकंठतैं, गिरतन जानैनाग ॥ १० ॥

राम वालि निजधामपठावा \* नगरलोगसबव्याकुलधावा  
नाना विधिविलाप करतारा \* छूटे केसन देह सँभारा  
तारा विकल दोषि रघुराया \* दीन्हज्ञान हरिलीन्हीमाया  
छितिजलपावकगगनसमीरा \* पंचरचितअतिअधमसरीरा  
प्रगट सोतनतव आगेसोवा \* जीवनित्यकेहिलगितुम्हरोवा  
उपजा ज्ञान चरन तबलागी \* लीन्हैसिपरमभगतिबरमांगी  
उमा दारु जोषितकी नाई \* सबहिंनचावत राम गोसाई  
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा \* मृतककर्मविधिवतसबकीन्हा



रामकहाअनुजहि समुझाई \* राज देहु सुग्रीवहिं जाई  
 रघुपतिचरननाइकरिमाथा \* चले सकल प्रेरित रघुनाथा  
 दो० लछिमन तुरत बोलाए, पुरजन विप्र समाज ॥

राजदीन्ह सुग्रीवकहैं, अंगद कहैं जुवराज ॥

उमारामसमाहित जगमाहीं \* गुरपितुमातु बंधु प्रसुनाहीं  
 मुरनरमुनि सबके यह रीती \* स्वारथलागि करहिंसवप्रीती  
 बालिवासन्याकुलदिनराती \* तनबहुवन चिंताजरछाती  
 सोइसुग्रीव कीन्ह कापिराऊ \* अतिकृपाल रघुवीर सुभाऊ  
 जानतहू असप्रभुपरि हरहीं \* काहे नविपतिजालनरपरहीं  
 पुनिसुग्रीवहिं लीन्हबोलाई \* बहुप्रकार नृपनीति सिपाई  
 कहप्रभु मुनुसुग्रीव हरीसा \* पुरनजाउँ दसचारि बरीसा  
 गतश्रीषम वरषारितु आई \* रहिहों निकट सैलपर छाई  
 अंगद सहितकरहु तुम्हराजू \* संततहृदय धरेहु ममकाजू  
 जब सुग्रीवभवनफिरिआए \* राम प्रवरषण गिरिपरछाए  
 दो० प्रथमहिं देवन्हगिरिगुहा, राषेउ रुचिर बनाइ ॥

राम कृपानिधि कछुदिन, वासकरहिंगेआइ ॥१२॥

सुंदरवन कुसमित अतिसोभा \* गुंजतमधुप निकरमधुलोभा  
 कंद मूल फल पत्र मुहाए \* भए बहुत जबते प्रभुआए  
 देषि मनोहर सैल अनूपा \* रहे तहँअनुजसहितसुरभूपा  
 मधुकरषगमृगतन धरिदेवा \* करहिंसिद्धमुनि प्रभुकीसेवा  
 मंगलरूप भएउ बन तबतैं \* कीन्हनिवासरमापतिजबतैं  
 फटिकसिलाअतिसुभ्रमुहाई \* मुष आसीन तहाँ द्यौभाई  
 कहतअनुजसनकथाअनेका \* भगतिविरतिनृप नीतिबिबेका

बरषा काल मेघ नभछाये \* गरजत लागतपरम सुहाए  
दो० लछिमन देषु मोर गन, नाचत बारिद पोषि ॥

गृहीविरतिरतहरषजस, विष्णुभगतकहँदेषि ॥ ९३ ॥

घन घमंडनभगरजत घोरा \* प्रियाहीन डरपत मनमोरा  
दामिनिदमकरहनघनमाहीं \* पलकैप्रीति जथा थिरनाहीं  
बरषाहिंजलदभूमि निअराए \* जथानवहिं बुधविद्या पाए  
बूंदअघात सहहिं गिरि कैसे \* पलके वचनसंत सहजैसे  
छुटनदी भरि चली तोराई \* जसथोरैहु धनषल इतराई  
भूमि परत भाढावर पानी \* जनुजीवहि माया लपटानी  
समिटिसमिटिजलभरहिंतलावा \* जिमिसदगुनसज्जनपहिआवा  
सरिताजलजलनिधिमहुजाई \* होइअचलजिमिजिवहरिपाई  
दो० हरित भूमिनिन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ ॥

जिमि पाषंड बादतें, गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ ९४ ॥

दादुर धुनि चहुँदिसा सुहाई \* वेदपढहिं जनुबटु समुदाई  
नवपल्लवभएबिटपअनेका \* साधकमनजसामिलेविवेका  
अर्क जवासपातबिनु भएऊ \* जससुराजषल उद्यम गयऊ  
षोजतकतहुँमिलइ नहिंधूरी \* करैक्रोध जिमिधरमहि दूरी  
ससिसंपन्न सोहमाहि कैसी \* उपकारी कै संपति जैसी  
निसितमघनषद्योत विराजा \* जनुदंभिन्हकरमिलासमाजा  
महावृष्टिचलिफूटि किआरी \* जिमिस्वतंत्रभयेबिगरहिनारी  
कृषीनिरावहिंचतुर किसाना \* जिमिबुधतजहिं मोहमदमाना  
देषियत चक्रवाकषग नाहीं \* कलिहिपाइजिमिधर्मपराहीं  
ऊसर बरषै तृन नहिं जामा \* जिमिहरिजनहियउपजनकामा

विविधजंतुसंकुलमहिभ्राजा \* प्रजावाढजिमिपाइ सुराजा  
 जहँ तहँ रहे पथिकथाकिनाना \* जिमिइंद्रियगन उपजै ज्ञाना  
 दो० कबहुँ प्रबल बहमारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ॥  
 जिमि कपूतके उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ॥  
 कबहुँदिवसमहँनिबिद्धतम, कबहुँक प्रगट पतंग ॥  
 विनसइ उपजइ ज्ञानजिमि, पाइ कुसंग सुसंग ॥१५॥

वरषा विगत सरद रितुआई \* लल्लिमन देषहु परम सुहाई  
 फूलैकास सकल महिछाई \* जनुवरषा कृत प्रगट बुढाई  
 उदितअगास्तिपंथजलसोषा \* जिमेलोभहिसोषइ संतोषा  
 सरितासर निर्मल जलसोहा \* संतहृदयजस गतमद मोहा  
 रसरस मूषसरित सर पानी \* ममतात्यागकरहिजिमिज्ञानी  
 जानि सरदरितु पंजन आए \* पाइसमयजिमिसुकृतसुहाए  
 पंकनरेनु सोहअसि धरनी \* नीतिनिपुननृपकैजसिकरनी  
 जलसंकोचविकल भइमीना \* अबुधकुटुंबीजिमिधनहीना  
 विनुघननिर्मलसोहअकासा \* हरिजनइवपरिहरिसबआसा  
 कहँ कहँ वृष्टिसारदी थोरी \* कोउएकपावभगतिजिमिमोरी  
 दो० चले हरषिताजिनगरनृप, तापसवनिक भिषारि ॥  
 जिमिहरि भगपिपाइस्रम, तजहिँआश्रमीचारि ॥१६॥  
 सुषीमीन जेनीर अगाधा \* जिमिहरिसरननएकौ बाधा  
 फूले कमल सोहसर कैसा \* निर्गुन ब्रह्मसगुन भएजैसा  
 गुंजत मधुकर मुषर अनूपा \* सुंदर षगरव नाना रूपा  
 चक्र वाकमन दुषनिसिपेपी \* जिमिदुर्जन परसंपति देपी  
 चातकरटततृषा अतिओहीं \* जिमिसुषलहइनसंकरदोहीं

सरदातपनिसिसिअप हरई \* संतदरस जिमिपातक टरई  
 देषिइंदु चकोर समुदाई \* चितवहिंजिमि हरिजनहरिपाई  
 मसक दंसबीते हिम त्रासा \* जिमिद्विजद्रोह किएकुलनासा  
 दो० भूमिजीव संकुल रहे, गएसरद रितुपांड ॥ मा० ष० २१

सदगुर मिलेजाहिंजिमि, संसय भ्रमसमुदाई ॥ १७॥

वरषागत निर्मल रितुआई \* सुधिन तात सीताकै पाई  
 एकवार कैसेहुं सुधि जानौं \* कालहु जीति निमिषमहंआनौं  
 कतहुं रहौजों जीवति होई \* तातजतन करि आनौंसोई  
 सुग्रीवहुसुधि मोरि बिसारी \* पावा राज कोसपुर नारी  
 जेहि सायक मारामैं वाली \* तेहिसर हतहुंमूढ कहंकाली  
 जासुकृपा छटहिं मदमोहा \* ताकहुंउमा किसपनेहुकोहा  
 जानहिंयहचरित्रमुनिज्ञानी \* जिन्हरघुबीरचरनरतिमानी  
 लछिमनक्रोधवंतप्रभुजाना \* धनुष चढाई गहेकर बाना  
 दो० तब अनुजहि समुझावा, रघुपति करुना सीवैं ॥

भयदेषाई लैआवहु, तातसषा सुग्रीवैं ॥ १८ ॥

इहां पवनसुत हृदयविचारा \* रामकाज सुग्रीव बिसारा  
 निकटजाइचरनन्हिसिरनावा \* चारिहुविधितेहिकहिसमुझावा  
 सुनिसुग्रीवैं परम भयमाना \* विषयमोरहरिलीन्हैउझाना  
 अवमारुत सुत दूत समूहा \* पठवहु जहंतहैं बानर जूहा  
 कहहु पाषमहैं आवन जोई \* मोरे कर ताकर बध होई  
 तब हनुमंत बोलाए दूता \* सबकरकरि सनमान बहूता  
 भएअरु प्रीतिनीति देषराई \* चलेसकलचरनन्हि सिरनाई  
 एहिअवंसरलछिमनपुरआए \* क्रोधदेषि जहंतहैं कपिधाए



दो० धनुष चढाइ कहा तब, जारि करौं पुरछार ॥

ब्याकुल नगर देषि तब, आएउ बालिकुमार ॥१९॥

चरननाइसिराबिनतीकीन्ही \* लछिमनअभय बांहतेहिदीन्ही  
क्रोधवंतलछिमनमुनिकाना \* कहकपीसअतिभयअकुलाना  
मुनु हनुमंत संग लै तारा \* करिविनतीसमुझाउकुमारा  
तारा सहित जाइ हनुमाना \* चरनबांदिप्रभु सुजस बषाना  
करि बिनती मंदिर लै आए \* चरन पषारि पलंग बैठाए  
तबकपीसचरनन्हिसिरनावा \* गहिभुजलछिमनकंठलगावा  
नाथविषयसममदकछुनाहीं \* मुनिमनमोह करैछनमाहीं  
सुनतबिनीतबचनसुषपावा \* लछिमनतेहिबहुविधिसमझावा  
पवनतनय सबकथा सुनाई \* जेहि विधिगए दूत समुदाई

दो० हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपिसाथ ।

रामानुज आगेकरि, आए जहँ रघुनाथ ॥ २० ॥

नाइचरन सिर कहकरजोरी \* नाथमोहि कछुनाहिंनषोरी  
अतिसय प्रबलदेवतवमाया \* छुटहिराम करहु जौं दाया  
विषयवस्यसुरनरमुनि स्वामी \* मैपाँवरपसुकपिअतिकामी  
नारिनयनसरजाहिन लागा \* घोरक्रोधतमनिसिजोजागा  
लोभपासजेहिगरन बधाया \* सोनरतुम्ह समान रघुराया  
यहगुन साधनतैं नहि होई \* तुम्हरीकृपा पाव कोइ कोई  
तब रघुपति बोले मुसकाई \* तुम्हप्रियमोहिभरतजिमिभाई  
अवसोइजतनकरहुमनलाई \* जेहि विधिसीताकैमुधिपाई  
दो० एहिविधि होत बतकही, आए बानर जूथ ।

नानावरन सकल दिसि, देषिअ कीस बरूथ ॥२१॥

बानर कटक उमा मै देषा \* सोमूरष जो करन चह लेषा  
 आइराम पदनावहिं माथा \* निरषिवदनसबहोहिंसनाथा  
 असकपि एकन सेनामाहीं \* रामकुसल जेहि पूछी नाहीं  
 यहकछुनहिंप्रभुकइअधिकारै \* विस्वरूप व्यापक रघुराई  
 ठाढे जहँ तहँ आयसु पाई \* कहसुग्रीव सवहि समुझाई  
 रामकाज अरु मोर निहोरा \* बानर जूथजाहु चहुँ ओरा  
 जनकसुता कहँ षोजहु जाई \* मासदिवसमहँ आएहु भाई  
 अवधिमेटिजोबिनुसुधिपाए \* आवइबनिहिसो मोहिमराए  
 दो० बचन सुनत सब बानर, जहँ तहँ चले तुरंत ॥

तबसुग्रीव बोलाए, अंगद नल हनुमंत ॥२२॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना \* जामवंत मतिधीर सुजाना  
 सकलसुभटमिलिदन्धनजाहू \* सीतासुधि पूछेहु सब काहू  
 मनक्रमवचनसोजतनविचारेहु \* रामचंद्र कर.काज सँवारेहु  
 भानुपीठि सेइअ उरआगी \* स्वामिहिसर्वभावछलत्यागी  
 तजिमाया सेइअ परलोका \* मिटहिंसकलभवसंभवसोका  
 देहधरे कर यह फल भाई \* भजिअराम सबकामविहाई  
 सोइ गुनज्ञ सोई बड भागी \* जो रघुवीर चरन अनुरागी  
 आयसुमागि चरन सिरनाई \* चले हरषि सुमिरत रघुराई  
 पाछेपवन तनय सिरनावा \* जानिकाजप्रभुनिकटबोलावा  
 परसा सीस सरोरुह पानी \* करसुद्रिका दीन्ह सहिदानी  
 बहुप्रकार सीतहि समुझाएहु \* कहिबलबिरहवेगितुम्हआएहु  
 हनुमतजन्मसुफलकरिमाना \* चलेउहदयधरिकृपानिधाना  
 जद्यपिप्रभु जानत सबबाता \* राजनीति राषत सुरवाता

दो० चले सकल बन षोजत, सरिता सरगिरि षोह ॥

रामकाज लयलीन मन, विसरातनकरछोह ॥ २३ ॥

कतहुँ होइनि सिचर सैं भैंटा \* प्रानलेहिं एक एक चपेटा  
बहुप्रकारगिरिकानन हेरहिं \* कोउ मुनि मिलिइ ताहि सब धेरहिं  
लागितृषा अतिसय अकुलाने \* मिलै न जल घन गहन भुलाने  
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना \* मरन चहत सब बितु जल पाना  
चाढ़ि गिरि सिपर चहँ दिसि देषा \* भूमि विवर एक कौतुक पेषा  
चक्रवाक बकहंस उडाहीं \* बहुत कषग प्रविसहिं तोहि माहीं  
गिरिते उतरि पवन सुत आवा \* सब कहँ लै सोइ विवर देषावा  
आगे कै हनुमंताहि लीन्हा \* पैठे विवर विलंब न कीन्हा  
दो० दीषि जाइ उपवन बर, सरविगसित बहु कंज ॥

मंदिर एकरुचिर तहँ बैठि नारित प पुंज ॥ २४ ॥

दूरिते ताहि सब निहासि रनावा \* पूछे निज वृत्तांत सुनावा  
तेहिं तब कहा करहु जल पाना \* पाहु सुरस सुंदर फल नाना  
मज्जन कीन्ह मधुर फल पाए \* ता मुनि कट पुनि सब चलि आए  
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई \* मैं अब जाव जहाँ रघुराई  
मूँदहु नयन विवर तजि जाहू \* पैहहु सीताहि जनि पछिताहू  
नयन मूँदि पुनि देषहिं बीरा \* ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा  
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा \* जाइ कमल पद नाए सिमाथा  
नाना भाँति विनय तेहिं कीन्ही \* अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही  
दो० बदरीवन कहँ सो गई, प्रभु आज्ञा धरि सीस ॥

उर धरि राम चरन जुग, जेबंदत अज ईस ॥ २५ ॥

इहाँ विचारहिं कपि मन माहीं \* बीती अवधि काज कछु नाहीं

सबमिलिकहहिंपरसपरवाता \* विनुसुधिलिएकरवकाभ्राता  
 कह अंगद लोचनभरिबारी \* दुहुप्रकार भइमृत्यु हमारी  
 इहाँ नसुधि सीता के पाई \* उहाँगए मारिहिं कपिराई  
 पिता बधे पर मारत मोहीं \* राषा राम निहोरन ओहीं  
 पुनिपुनिअंगद कहसबपाहीं \* मरनभएउकछुसंसय नाहीं  
 अंगदवचन सुनत कपिवीरा \* बोलिनसकहिनयनबहनींरा  
 छनएकसोच मगनहोइ गए \* पुनिअसबचनकहतसब भए  
 हमसीताकेसुधिलीन्हे बिना \* नहिं जैहें जुवराज प्रवीना  
 असकहिलवनसिंधुतटजाई \* बैठेकपि सब दम डसाई  
 जामवंत अंगद दुष देषी \* कहीकथा उपदेस बिसेषी  
 तातराम कहँनरजनिमानहु \* निर्गुनब्रह्मअजितअजजानहु  
 हमसबसेवकअतिबडभागी \* संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी  
 दो० निजइच्छा प्रभुअवतरइ, सुरमाहि गोद्विजलागि ॥

सगुन उपासकसंगतहैं, रहहिंमोच्छसबत्यागि ॥ २६ ॥

एहिविधिकहहिकथाबहुभांती \* गिरि कंदरा सुनी संपाती  
 बाहेर होइ देषि बहु कीसा \* मोहिअहारदीन्ह जगदीसा  
 आजसबहिकहं भलनकरऊँ \* दिनबहुचलेउअहारबिनमरऊँ  
 कबहुँनमिलैभरिउदर अहारा \* आजदीन्हविधिएकहिवारा  
 दरपे गीधवचनसुनि काना \* अबभा मरनसत्यहमजाना  
 कपिसब उठे गीधकहँ देषी \* जामवंत मनसोच बिसेषी  
 कहअंगद विचारिमनमाहीं \* धन्यजटायूसम कोउनाहीं  
 रामकाज कारन तनत्यागी \* हरिपुरगएउपरम बडभागी  
 सुनिषगहरषसोकजुतबानी \* आवानिकटकपिन्हभयमानी



तिन्हहिअभयकरिपूछोसिजाई\*कथासकलतिन्हताहिसुनाई  
सुनि संपाति बंधुके करनी\*रघुपतिमहिमाबहुविधिवरनी  
दो० मोहिले जाहु सिंधुतट, देउँतिलाँजलिताहि ॥

बचन सहाइ करवि मई, पैहु षोजहु जाहि ॥२७॥

अनुजक्रियाकरिसागरतीरा\*कहिनिजकथासुनहुकपिवीरा  
हमद्वौ बंधु प्रथम तरुनाई\*गगनगएरविनिकट उडाई  
तेजनसहिसकसोफिरिआवा\*मैंअभिमानीरविनिअरावा  
जरेपंष अतितेज अपारा\*परेउँ भूमिकरिघोरचिकारा  
मुनिएक नाम चंद्रमाओही\*लगीदया देखिकरि मोही  
बहुप्रकारतेहिं ज्ञान सुनावा\*देहजनितअभिमानछडावा  
त्रेता ब्रह्म मनुज तनधारिही\*तासुनारिनिसिचरपतिहरिही  
तासुषोज पठइहि प्रभु दूता\*तिन्हहिं मिलेतैं होवपुनीता  
जमिहहिंपंषकरसिजनिचिता\*तिन्हहिं देषाइदिहेसुतैंसीता  
मुनिकइगिरासत्यभइआजू\*मुनिममबचनकरहुप्रभु काजू  
गिरिविकूट ऊपर बसलंका\*तहँरह रावन सहज असंका  
तहँ असोकउपवन जहँरहई\*सीता बैठि मोचरत अहई  
दो० मैदेषउँ तुम्ह नाहीं, गीधहि दृष्टि अपार ॥

बूढभएऊँ नत करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥२८॥

जोनावै सतयोजन सागर\*करैसो रामकाजमतिआगर  
मोहिंबिलोकिधरहुमनधीरा\*रामकृपा कस भएउसरीरा  
पापिउ जाकरनामसुमिरहीं\*अतिअपार भवसागरतरहीं  
तासुदूत तुम्हतजि कदराई\*रामहृदय धरि करहु उपाई  
असकहिगरुडगीध जबगयऊ\*तिन्हकेमनअति विस्मयभयऊ

निजनिजबलसबकाहूभाषा \* पार जाइकै संसय राषा  
जरठभएउं अब कहैरिछेसा \* नहिंनरहा प्रथम बल्लेसा  
जवाहिं त्रिविक्रमभए खरारी \* तबमें तरुन रहेउं बलभारी  
दो० बलिबाँधत प्रभुवाढेउ, सोतन बरनि न जाइ ।

उभयघरी सह दीन्ही, सातप्रदछिन धाइ ॥ २९ ॥

अंगदकहै जाउं में पारा \* जियसंसयकछु फिरतीवारा  
जामवंतकहतुम्हसबलायक \* पठइअकिमिसवही करनायक  
कहइ रीछपतिसुनुहनुमाना \* काचपसाधि रहेहु बलवाना  
पवनतनयबलपवनसमाना \* बुधिविवेकविज्ञान निधाना  
कवनसोकाजकठिनजगमाहीं \* जोनहिहोइ तात तुम्ह पाहीं  
रामकाज लगितवअवतारा \* सुनतहिं भयउ पवतार्कारा  
कनकवरनतनतेज विराजा \* मानहुअपरगिरिन्हकरराजा  
सिंहनाद करि बारहिवारा \* लीलहिनाघउंजलनिधिषारा  
सहितसहाय रावनहिमारी \* आनों इहाँ त्रिकूट उपारी  
जामवंत में पूछउं तोही \* उचित सिषावन दीजहुमोही  
एतनाकरहु तात तुम्हजाई \* सीतहि देषि कहहुसुधिआई  
तबनिजभुजबलराजिवनैना \* कउतुकलागिसंगकपिसयना  
छं० कपिसेनसंगसँघारि निसिचर रामसीतहि आनिहैं ॥

त्रैलोक पावन सुजस सुरमुनिनारदादि बषानिहैं ॥

जोसुनतगावत कहतसमुझत परमपदनर पावई ॥

रघुबीर पदपाथोजमधुकर दासतुलसी गावई ॥

दो० भवभेषजरघुनाथजस, सुनहिंजेनरअरुनारि ।

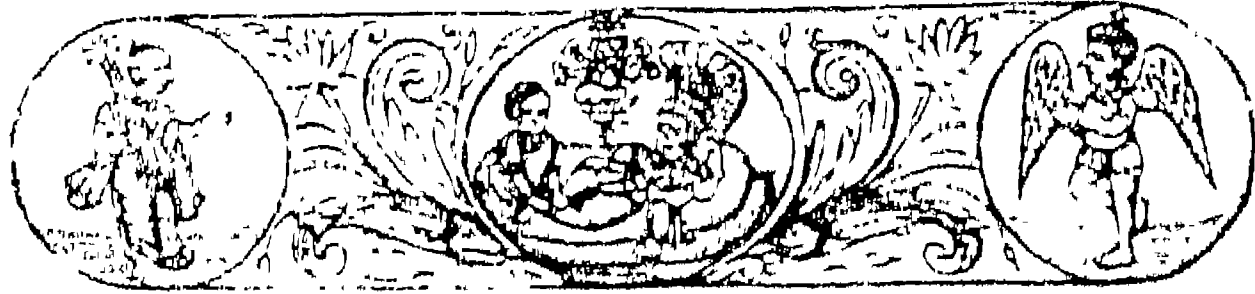
तिन्हकरसकलमनोरथ, सिद्धकरहिंत्रिपुरारि ॥

सो० नीलोत्पलतनस्याम, कामकोटि सोभाअधिक ॥  
 सुनियतामुगुनग्राम, जासुनामअघषगवधिक ॥३०॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने विसुद्ध  
 संतोष सम्पादिनी नाम चतुर्थ सोपानः समाप्तः ॥

ग्रंथसंख्या ३०९

शुभम् ।



❀ श्रीः ❀

## अथ रामायण सुन्दरकाण्ड ।

श्रीगणेशायनमः

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

श्लोक—शांतंसाश्वतमप्रमेयमनघं गीर्वाणशांतिप्रदं ॥ ब्रह्माशंभुफणींद्र  
सेव्यमनिशंबेदान्तवेद्यंविभुं ॥ रामाख्यं जगदीश्वरंसुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं  
बंदेहंकरुणाकरंरघुवरंभूपालचूडामणिं ॥ १ ॥ नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेस्म  
दीये । सत्यं वदामिचभवानखिलांतरात्मा ॥ भक्तिप्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरामे ।  
कामादिदोषरहितंकुरुमानसंच ॥ २ ॥ अतुलितबलधामंस्वर्णसैलाभदेहं ।  
दनुजवनकृशानुं ग्यानिनामग्रगण्यं ॥ सकलगुणनिधानंबानराणामधीशं ॥  
रघुपतिवरदूतंवातजातंनमामि ॥ ३ ॥

जामवंतके वचन सुहाये ❀ सुनि हनुमन्तहृदय अतिभाये  
तबलगिमोहितुम्हपरिखहुभाई ❀ सहिदुष कंदमूल फलपाई  
जबलगि आवों सीताहिदेषी ❀ होइकाजमोहि हरष बिसेषी  
असकहिनाइसबान्हि कहंमाथा ❀ चलेउहरषिहियधरिघुनाथा  
सिंधुतीर एक भूधर सुंदर ❀ कौतुककूदि चढेउता ऊपर  
बारबार रघुवीर सँभारी ❀ तरकेउपवनतनय बलभारी  
जेहिगिरिचरन देइहनुमंता ❀ चलेउसोगा पाताल तुरंता  
जिमिअमोघरघुपतिकरबाना ❀ एहीभाँति चला हनुमाना  
जलनिधिरघुपतिदूतविचारी ❀ तैं मैनाक होइ श्रमहारी  
दो० हनूमानतोहि परसा, करपुनिकीन्ह प्रनाम ॥

रामकाज कीन्हेबिनु, मोहिकहाँ विश्राम ॥ १ ॥



जातपवन सुत देवन्ह देषा \* जानै कहंवल बुद्धि विसेषा  
 सुरसानाम अहिनकै माता \* पठइन्हिआइ कही तिहिवाता  
 आजसुरन्हमोहिदीन्हअहारा \* सुनतवचनकहपवनकुमारा  
 रामकाज करि फिरि मै आवौ \* सीताकइसुधिप्रभुहि सुनावौ  
 तवतुअवदन पइठिहौं आई \* सत्यकहौं मोहिजान देमाई  
 कवनेहुजतनदेइ नहिंजाना \* ग्रससिनमोहिकहेउहनुमाना  
 जोजनभरितोहिंवदनपसारा \* कपितनकीन्हदुगुनविस्तारा  
 सोरहजोजनमुषतेहिं ठएऊ \* तुरतपवनसुतवात्तिस भयऊ  
 जसजससुरसा वदनबढावा \* तासुदून कपिरूप देषावा  
 सतजोजनतेहिंआननकीन्हा \* अतिलघुरूपपवनसुतलीन्हा  
 वदनपइठपुनि बाहेरआवा \* मागा विदाताहि सिरनावा  
 मोहिसुरन्हजोहिलागि पठावा \* बुधिवल मरमतोर में पावा  
 दो० रामकाज सब करिहहु, तुम्ह बलबुद्धि निधान ॥

आसिष देइ गईसो, हरषि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निसिचरिएकसिंधु महरहई \* करि मायानभकै षग गहई  
 जीव जंतुजे गगन उडाहीं \* जलविलोकितिन्ह कैपरिछाहीं  
 गहै छाँह सकसोन उडाई \* एहिविधि सदागगनचरषाई  
 सोइछलहनूमानकहँकीन्हा \* तासुकपटकपितुरतहि चीन्हा  
 ताहिमारि मारुत सुतवीरा \* वारिधि पारगएउमतिधीरा  
 तहाँ जाइ देषी वन सोभा \* गुंजत चंचरीक मधु लोभा  
 नाना तरु फल फूल सुहाए \* षगमृग वृंद देषि मन भाए  
 सैल बिसाल देखियकआगें \* तापर धाईचढेउ भयत्यागें  
 उमानकछुकपिकैअधिकाई \* प्रभुप्रताप जो कालहि षाई

गिरिपरचटिलंका तेहिंदेपी \* कहिनजाई अतिदुर्गविसेपी  
अतिउतंग जलनिधिचहुंपासा \* कनक कौटकरपरमप्रकासा

छं० कनक कोट विचित्रमनि कृतसुंदरायत अतिबना ॥

चउहट्ट हट्ट सुवट्ट वीथीं चारुपुर बहु विधिवना ॥

गजवाजिषच्चर निकरपदचर रथवरुथन्हिकोगनै ॥

बहुरूपनिसिचरजूथ अतिबलसेन बरनतनहिवनै ॥

वनवाग उपवन वाटिका सरकूप वापी सोहहीं ॥

नरनाग सुरगंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥

कहुंमाल देह विसाल सैलसमान अतिबलगर्जहीं ॥

नानाअपारेन्ह भिरहिं बहुविधि एकएकन्हतर्जहीं ॥

करिजतनभटकोटिन्हविकटतननगरचहुंदिसिरछहीं

कहुंमाहिषमानुषधेनुपर अजपलनिसाचरभछहीं ॥

एहिलागितुलसीदास इन्हकीकथाकछु एकहैकही ॥

रघुवीर सरतीरथ सरीरन्हि त्यागिगतिपैहहिंसही ॥

दो० पुररषवारे दोषेबहु, कपिमन कीन्ह विचार ॥

अति लघुरूप धरौनिसि, नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥

मसक समान रूपकपिधरी \* लंकहिचलेउसुमिरि नरहरी

नामलंकिनी एक निसिचरी \* सोकहचलोसि मोहि निंदरी

जानेहिं नहींमरम सठमोरा \* मोरअहार लंक कर चोरा

मुठिका एकमहा कपि हनी \* रुधिरवमत धरनी ठनमनी

पुनि संभारि उठी सो लंका \* जोरिपानिकरविनयससंका

जवरावनाहि ब्रह्मवर दीन्हा \* चलतविरंचिकहामोहिंचीन्हा

विकल होसितैं कपिकैमारैं \* तबजानेसु निसिचर संघारैं

तात मोर अति पुन्य बहूता \* देषे उँ नयन रामकर दूता  
दो० तातस्वर्ग अपवर्ग सुष, धरियतुला एक अंग ॥

तूलन ताहि सकल मिलि, जो सुष लवसतसंग ॥ ४ ॥

प्रविसिनगरकीजे सबकाजा \* हृदयराषि कोसल पुरराजा  
गरल सुधा रिपुकरै मिताई \* गोपदसिंधुअनल सितलाई  
गरुड सुमेरु रेनु सम ताही \* रामकृपाकरि चितवाजाही  
अतिलघुरूप धरेउ हनुमाना \* पैठानगर सुमिरिभगवाना  
मंदिर मंदिर प्रतिकरि सोधा \* देषे जहँतहँ अगनित जोधा  
गणउदसानन मंदिर माहीं \* अतिविचित्रकहिजातसोनाहीं  
सयन किए देषा कपि तेही \* मंदिर महँ न दीष बैदेही  
भवन एक पुनिदीष सोहावा \* हरिमंदिर तहँ भिन्नवनावा  
दो० रामायुध अंकित गृह, सोभा बरनिन जाइ ।

नव तुलसिका बृंदतहँ, देषिहरष कपिराइ ॥ ५ ॥

लंकानिसिचरनिकरनिवासा \* इहाँ कहाँ सज्जनकरवासा  
मनमहँ तरककरैकपिलागा \* तेहीं समय बिभीषन जागा  
रामरामतेहिंसुमिरनकीन्हा \* हृदयहरषकपिसज्जनचीन्हा  
एहिसनहठिकरिहों पहिचानी \* साधुते होइन कारज हानी  
विप्ररूप धरि बचन सुनाए \* सुनतबिभीषनउठितहँआए  
करिप्रनाम पूँछी कुसलाई \* विप्रकहहुनिजकथा बुझाई  
की तुहहरिदासन्हमहँकोई \* मोरैहृदय प्रीति अति होई  
की तुम्हराम दीन अनुरागी \* आएहुमोहि करनबडभागी  
दो० तब हनुमंत कही सब, राम कथा निजनाम ॥

सुनत जुगलतन पुलकमन, मगनसुमिरिगुनग्रामध ॥

सुनहुपवन सुतरहनि हमारी \* जिमिदसनन्हिमहजीभविचारी  
तातकवहुँमोहिजानिअनाथा \* करिहहिंकृपाभानुकुलनाथा  
तामस तनकछुसाधननाहीं \* प्रीतिनपद सरोजमनमाहीं  
अवमोहिभाभरोस हनुमंता \* विनुहरिकृपामिलहिं हिसंता  
जौं रघुवीर अनुग्रह कीन्हा \* तौतुन्हमोहिदरसहठिदीन्हा  
सुनहुविभीषन प्रभुकइरीती \* करहिंमदा सेवक परप्रीती  
कहहुकवनमें परम कुलीना \* कपिचंचलसवहींविधिहीना  
प्रात लेइ जो नाम हमारा \* तेहिदिनताहिनमिलैअहारा  
दो० असमें अधम सपासुनु, मोहूपर रघुवीर ॥

कीन्ही कृपासुमिरिगुन, भरे विलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहूअसस्वामि बिसारी \* फिरहिते काहेनहोहिंदुपारी  
एहिबिधिकहतारामगुनग्रामा \* पावा आनिर्वाच्य विश्रामा  
पुनिसबकथा विभीषनकही \* जेहिबिधिजनकसुतातहँरही  
तबहनुमंत कहासुनु भ्राता \* देषीचहौं जानकी माता  
जुगुतिविभीषनसकलसुनाई \* चलउपवन सुताविदा कराई  
करिसोइरूपगयउपुनितहवाँ \* बनअसोक सीतारह जहवाँ  
देखिमनहिमहँकीन्हप्रनामा \* बैठेहिवीतिजातानिसिजामा  
कसतनमीस जटा एकबेनीं \* जपतहृदय रघुपतिगुनश्रेणी  
दो० निजपद नयन दिऐंमन, रामचरण महँ लीन ॥

परमदुषी भा पवनसुत, देषिजानकी दीन ॥ ८ ॥

तरुपल्लव महँ रहा लुकाई \* करै विचार करौंका भाई  
तेहिअवसर रावनतहँआवा \* संग नारि बहुकिए बनावा  
बहुविधिषलसीतहिसमुझावा \* सामदाम भयभेद दिषावा



कहरावनसुनुसुमुषिसयानी \* मंदोदरी आदि सब रानी  
 तबअनुचरी करों पनमोरा \* एकवारविलोकु मम ओरा  
 तृनधरि ओट कहतिवैदेही \* सुमिरिअवधपतिपरममनेही  
 सुदुदसमुष पद्योत प्रकासा \* कवहुंकिनलिनीकरहुबिकास  
 असमनसमुझकहतिजानकी \* पलसुधिनहिरघुबीरवानकी  
 सठ सनेहरिआनेहि मोहीं \* अधमनिलज्जलाजनहितोही  
 दो० आपुहि सुनि पद्योतसम, रामहि भानु समान ॥

परुषवचनसुनिकाढिआसि, बोलाअतिषिसिआन ९ ॥

सीतातैं ममकृत अपमाना \* कटिहौतवसिरकठिनकृपाना  
 नाहितसपदिमानुममवानी \* सुमुषिहोतिनत जीवनहानी  
 स्यामसरोजदामसम सुन्दर \* प्रभुभुजकरिकरसमदसकंधर  
 सोभुजकंठकितवअसिघोरा \* सुनुसठ असप्रमानपनमोरा  
 चंद्रहास हर मम परिताप \* रघुपति विरह अनलसंजात  
 सीतलनिसितवअसिवरधारा \* कहसीताहरु मम दुष भारा  
 सुनतवचनपुनि मारनधावा \* मयतनयाकहिनीतिबुझावा  
 कहेसिसकलनिसिचरिन्हबोलाई \* सीतहिवहु विधित्रासहुजाई  
 मासदिवस महंकहानमाना \* तो मैंमारवि काढि कृपाना  
 दो० भवन गएउ दसकंधर, इहाँ पिसाचिनिवृंद ॥

सीताहित्रासादिषावहिं, धरहिं रूप बहुमंद ॥ १० ॥

त्रिजटानाम राछसी एका \* रामचरनरतिनिपुन विवेका  
 सबन्हौंबोलिसुनाएसिसपना \* सीतहिसेइकरहुहित अपना  
 सपने बानर लंका जारी \* जातु धान सेना सबमारी  
 परआरूढ नगन दससीसा \* मुंडितसिर पंडितभुजबीसा

एहिबिधिसोदछिनदिसिजाई ✽ लंकामनहु विभीषन पाई  
नगरफिरी रघुवीर दोहाई ✽ तबप्रभु सीताबोली पठाई  
यह सपना मैं कहों पुकारी ✽ होइहि सत्यगणैदिन चारी  
तासु वचन सुनिते सबडरीं ✽ जनक सुताकेचरनन्हिपरीं  
दो० जहँतहँगाई सकलतब, सीता करमन सोच ॥

मासदिवस बीतेमोहि, मारिहि निसिचर पोच ॥११॥  
त्रिजटा सनबोली करजोरी ✽ मातुबिपतिसंगिनितँइमोरी  
तजों देह करु बेगि उपाई ✽ दुसहबिरहअवनहिंसहिजाई  
आनि काठरचु चिताबनाई ✽ मातु अनल पुनिदेहिलगाई  
सत्यकरहिममप्रीतिसयानी ✽ सुनैको श्रवन मूलसमवानी  
सुनतवचनपदगहिसमुभाएसि ✽ प्रभुप्रतापबलसुजससुनाएसि  
निसिनअनलमिलसुनुसुकुमारी ✽ असकहिसोनिजभवनसिधारी  
कहसीताविधिभा प्रतिकूल ✽ मिलिहिनपावक मिटिहिनसूल  
देषिअत प्रगटगगनअंगारा ✽ अश्वनिन आवत एकौतारा  
पावकमयससिश्रवतनआगी ✽ मानहुमोहि जानिहतभागी  
सुनहिबिनयममबिटपअसोका ✽ सत्यनाम करुहरु ममसोका  
नूतनकिसलयअनलसमाना ✽ देहिअगिनितनकरहिनिदाना  
देषिपरम बिरहाकुल सीता ✽ सोछनकपिहिकलपसमसीता  
सो० कपिकरि हृदय विचार, दीन्हमुद्रिका डारितव ॥

जनुअसोक अंगार, दीन्हहरषिउठिकरगहेउ ॥१२॥  
तबदेषी मुद्रिका मनोहर ✽ रामनामअंकितअतिसुन्दर  
चकितचितवमुदरीपहिवानी ✽ हरषविषादहृदय अकुलानी  
जीतिकोसकैअजय रघुराई ✽ मायाते असिरचिनहिं जाई

सीतामन विचारकर नाना \* मधुरवचन बोलेउ हनुमाना  
 रामचंद्र गुनवरने लागा \* सुनतहि सीता करदुषभागा  
 लागीं सुने श्रवन मनलाई \* आदिहुते सब कथा सुनाई  
 श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई \* कही सो प्रगट होत किन भाई  
 तब हनुमंत निकट चलि गयउ \* फिरि वैठी मन विसमय भयउ  
 रामदूतमें मातु जानकी \* सत्यसपथ करुना निधानकी  
 यह मुद्रिका मातुमें आनी \* दीन्हिराम तुम्ह कहँ सहिदानी  
 नर वानरहि संग कहु कैमें \* कही कथा भै संगति जैसे  
 दो० कपिके वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विस्वास ॥

जाना मनक्रमवचन यह, कृपासिंधुकर दास ॥ १३ ॥

हरिजन जानि प्रीति अतिवादी \* सजलनयन पुलकावलि ठाढ़ी  
 बूढत विरह जलधि हनुमाना \* भए उतात मो कहँ जलजाना  
 अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी \* अनुज सहित सुषभवन परारी  
 कोमलचित कृपाल रघुराई \* कपिकेहि हेतु धरी निठुराई  
 सहजवानि सेवक सुषदायक \* कवहुँ कसुरतिकर तरघुनायक  
 कवहुँ नयन मम सीतल ताता \* होइ हहिं निरपि स्याम मृदु गाता  
 वचनन आवनयन भरिवारी \* अहह नाथ हों निपट बिसारी  
 दोषि परम विरहा कुलसीता \* बोला कपि मृदु वचन विनीता  
 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता \* तब दुष दुषी सुकृपा निकेता  
 जनि जननी मानहुँ जिअऊँ ना \* तुम्हते प्रेम रामके दूना  
 दो० रघुपति संदेस अब, सुनु जननी धरि धीर ॥

अस कहि कपि गदगद भयउ, भरे बिलोचन नीर ॥ १४ ॥

कहेउ राम वियोग तब सीता \* मो कहँ सकल भए विपरीता

नवतरुकि सलयमनहुँकुमानू \* कालनिमासमनिसिसविभानू  
 कुवलयविपिनकुंत वनसरिसा \* बारिदतपततैल जनुवरिसा  
 जेहित रहे करत तेइपीरा \* उरगस्वामसम त्रिविविसमीरा  
 कहेहुतैं कछुहुष घटि होई \* काहिकहौं यह जानन कोई  
 तत्व प्रेमकर ममअरु तोरा \* जानत प्रियाएक मनमोरा  
 सोमनसदा रहततोहि पाहीं \* जानुप्रीति रसएतनैहिमाहीं  
 प्रभु संदेस सुनत वैदेही \* मगनप्रेम तनसुधिनहितेही  
 कहकपि हृदय धीरधरुमाता \* सुमिरराम सेवकसुषदाता  
 उरआनहु रघुपति प्रभुताई \* सुनिममवचनतजहु कदराई  
 दो० निसिचर निकरपतंग सम, रघुपति बान कृसानु ।

जननी हृदय धीरधरु, जेरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥  
 जौ रघुवीर होत सुधि पाई \* करते नहिविलंब रघुराई  
 रामवान रविउए जानकी \* तमवरुथ कहँजातु धानकी  
 अवहिं मातु में जाउँ लवाई \* प्रभुआयसु नहिरामदोहाई  
 कछुकदिवसजननीधरुधीरा \* कपिन्हसहितअइहहिरघुवीरा  
 निसिचरमारितोहिलैजैहहिं \* तिहुँपुर नारदादिजसगैहहिं  
 हैसुतकपिसवतुम्हहिंसमाना \* जासुधानअतिभटवलवाना  
 मोरे हृदय परम संदेहा \* सुनिकपि प्रगट कीन्ह निजदेहा  
 कनक भूधराकार सरीरा \* समर भयंकर अतिबलवीरा  
 सीता मन भरोस तवभयउ \* पुनिलघुरूप पवनसुतलएउ  
 दो० सुनुमाता साषा मृगाहि, नहिं बलबुद्धि विसाल ।

प्रभु प्रतापतैं गरुडहि, पाइ परम लघु ब्याल ॥ १६ ॥  
 मनसंतोष सुनत कपि बानी \* भगति प्रतापतेज बलसानी



आसिषदीन्हिरामप्रियजाना \* होहुतात बलसीलनिधाना  
 अजरअमर गुननिधिसुतहोह \* करहुबहुत रघुनायक छोह  
 करहुकृपाप्रभुअससुनिकाना \* निर्भर प्रेममगन हनुमाना  
 बार बार नाएसि पद सीसा \* बोलावचन जोरिकरकीसा  
 अवकृत कृत्य भएउमैंमाता \* आसिषतवअमोघ विष्याता  
 सुनहुमातमोहिअतिसयभूषा \* लागिदेषि सुन्दरफल रूपा  
 सुनुसुतकरहिंविपिनरषवारी \* परमसुभट रजनीचर भारी  
 तिन्हकरभयमाता मोहिनाहीं \* जौंतुम्हसुषमानहु मनमाहीं  
 दो० देषिवुद्धि बलनिपुन कपि, कहेउ जानकी जाहु ।

रघुपति चरन हृदयधरि, तातमधुरफलषाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइसिर पैठेउ बागा \* फलषाएसि तरुतोरै लागा  
 रहे तहाँ बहुभट रषवारे \* कछुमारैसि कछुजाइपुकारे  
 नाथ एकआवा कपि भारी \* तेहिअसोकबाटिकाउजारी  
 षाएसिफलअरु बिटपउपारे \* रच्छुक मर्दि मर्दिमहि डारे  
 सुनिरावन पठएउभटनाना \* तिन्हहिंदेषिगजैउहनुमाना  
 सब रजनीचर कपि संघारे \* गए पुकारतकछु अधमारै  
 पुनिपठएउतेहिअछकुमारा \* चला संगलै सुभट अपारा  
 आवत देषिविटप गहितजा \* ताहिनिपातिमहाधुनिगजा  
 दो० कछुमारैसि कछुमर्देसि, कछु मिलएसि धरिधूरि ।

कछुपुनिजाइपुकारे, प्रभुमर्कट बलभूरि ॥ १८ ॥

सुनिसुतबध लंकेस रिसाना \* पठएसि मेघनाद बलवाना  
 मारसिजनिसुतबांधेसुताही \* देषिअकपिहिकहाँकरआही  
 चलाइंद्रजितअतुलितजोधा \* बंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा

कपिदेषा दारुन भट आवा \* कटकटाइ गर्जा अरुधावा  
अतिविसालतरुएक उपारा \* विरथकीन्ह लंकेस कुमारा  
रहे महाभट ताके संग \* गहिगहिकपिमर्दइ निजअंगा  
तिन्हहिनिपातिताहिसनबाजा \* भिरेजुगुल मानहु गजराजा  
मुठिका मारि चढातरुजाई \* ताहिएकछन मुरछा आई  
उठिवहोरिकीन्हेसिवहुमाया \* जीतिनजाइप्रभंजन जाया  
दो० ब्रह्म अस्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह विचार ।

जौनब्रह्मसर मानौं, महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मवान कपिकहँ तेहिमारा \* परतिहुवार कटक संघारा  
तेहिदेषाकपिमुरुछितभएऊ \* नागपास बाँधेसि लै गएऊ  
जासुनामजपिसुनहुभवानी \* भवबंधन काटहिं नरज्ञानी  
तासु दूतकि बंधतर आवा \* प्रभुकारजलगिकपिहिवँधावा  
कपिवंधनसुनिनिसचरधाए \* कौतुकलागि सभा सबआए  
दसमुखसभादीषिकंपिजाई \* कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई  
करजोरेसुर दिसिपविनीता \* भृकुटिविलोकतसकलसभीता  
देषिप्रतापन कपि मनसंका \* जिमिअहिगनमहगरुडअसंका  
दो० कपिहि बिलोकि दसानन, विहँसाकहिदुर्वाद ॥

सुतवधसुरति कीन्हिपुनि, उपजाहृदयविषाद ॥ २० ॥

कहलंकेस कवनतइ कीसा \* केहिकेवलघालेहि वनपीसा  
कीधौंश्रवनसुनेहिनहिंमोही \* देषौंअति असंक सठतोही  
मारेनिसिचर केहिअपराधा \* कहसठतोहिन प्रानकैबाधा  
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया \* पायजासुबलविरचतिमाया  
जाकेवल विरंचि हरिईसा \* पालतमृजत हरत दससीसा

जाबलसीस धरत सहसासन \* अंडकोससमेतगिरि कानन  
 धरै जोविविधिदेहसुरनाता \* तुम्हसेसठन्ह सिषावनदाता  
 हरकोदंड कठिनजेहिभंजा \* तोहिसमेत नृपदल मदगंजा  
 परदूषन त्रिसिरा अरुवाली \* बधैसकलअतुलितबरुसाली  
 दो० जाके बल लवलेस तैं, जितेहु चराचर झारि ॥

तासु दूत मै जाकरि, हरिआनिहु प्रियनारि ॥२१॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई \* सहसबाहुसन परी लराई  
 समरवालिसनकरजिस पावा \* सुनिकपिवचनविहंसिबहरावा  
 पायउँ फल प्रभु लागीभूषा \* कपि सुभावते तोरेउँरूपा  
 सबके देहपरम प्रियस्वामी \* मारहिं मोहि कुमारगंगामी  
 जिन्ह मोहिमारा ते मैं मारे \* तोहिपर बांधेउतनयतुम्हारे  
 मोहिन कछुबांधेकइ लाजा \* कीन्हचहौंनिजप्रभु करकाजा  
 बिनतीकरौं जोरिकररावन \* सुनहुमानताजिमोरसिषावन  
 देषहुतुम्हनिजकुलहिचिचारी \* भ्रमतजिभजहुभगतभयहारी  
 जाके डर अतिकाल डेराई \* जोसुर असुर चराचर पाई  
 तासों बयरुकबहुँनहिं कीजै \* मोरे कहे जानकी दीजै  
 दो० प्रनत पाल रघुनायक \* करुनासिंधु परारि ॥

गणसरन प्रभुराषिहैं, तवअपराध विसारि ॥ २२ ॥

रामचरन पंकज उर धरहु \* लंकाअचलराज तुम्ह करहु  
 रिषिपुलस्तिजस बिमलमयंका \* तेहिससिमहँजनि होउकलंका  
 रामनाम बिनुगिरान सोहा \* देषुविचारित्यागि मदमोहा  
 बसन हीन नहि सोहसुरारी \* सबभूषन भूषित वरनारी  
 राम बिमुख संपति प्रभुताई \* जाइरही पाई बिनु पाई

सजलमूलजिन्हसरित नहनाहीं \* वरषिगएपुनि तवहिंसुषाहीं  
सुनुदसकंठ कहों पनरोपी \* विमुषराम त्राता नहिंकोपी  
संकरसहसविणु अजतोही \* सकहिंनराषि रामकरद्रोही  
दो० मोहमूल बहुमूल प्रद, त्यागहु तमअभिमान ।

भजहुराम रघुनायक, कृपासिंधु भगवान ॥२३॥

जदपिकहीकपिअतिहितवानी \* भगतिविवेकविरति नयसानी  
बोलाविहंसिमहाअभिमानी \* मिलाहमहिंकपि गुरुबड़ग्यानी  
मृत्युनिकट आई पलतोही \* लागेसिअधमसिपावनमोही  
उलटा होइहि कहहुमाना \* मतिभ्रमतोरिप्रगट में जाना  
सुनिकपिवचनबहुनपिसियाना \* वेगि न हरहु मूढ कर प्राना  
सुनत निसाचर मारनधाए \* सचिवनसहिताविभीषणआये  
नाइसीस करि विनय बहूता \* नीतिविरोध न मारिय दूता  
आनदंड कलु करियगोसाई \* सबहीं कहा मंत्र भल भाई  
सुनत विहंसिवोलादसकंधर \* अंगभंग करि पठइअ बंदर  
दो० कपिके ममतापूँछपर, सबहि कह्यो समुझाय ।

तेलवोरि पटबांधिपुनि, पावकदेहु लगाय ॥२४॥

पूँछहीन वानर तहँ जाइहि \* तवसठ निजनाथहिलइआइहि  
जिन्हकैकीन्हिसिवहुत बडाई \* देषों में तिन्ह कै प्रभुताई  
वचनसुनतकपिमनमुसुकांना \* भइ सहाय सारद में जाना  
जातुधान सुनिरावन वचना \* लागेरचै मूढ सोई रचना  
रहान नगर बसन घृत तेल \* बाढी पूँछकीन्ह कपि पेल  
कौतुक कहँ आए पुरवासी \* मारहिंचरनकरहिं बहुहाँसी  
बाजहिं ढोलदेहिं सब तारी \* नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी



पावक जरत देषि हनुमंता \* भएउ परम लघुरूप तुरंता  
निबुकिचढेउकपिकनकअगारी \* भई समीत निसाचरनारी  
दो० हरिप्रेरित तेहि अवसर, चलेमरुत उनचास ।

अह्महास करि गर्जा, कपिवटि लाग अकास ॥ २५ ॥

देह विसाल परम हरुआई \* मंदिरते मंदिर चढ धाई  
जरइ नगरभा लोग बिहाला \* झपट लपटबहुकोटिकराला  
तात मातु हासुनिअ पुकारा \* एहिअवसरकोहमहिंउबारा  
हमजोकहायहकपिनहिहोई \* वानर रूप धरे सुर कोई  
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा \* जरै नगर अनाथ कर जैसा  
जारानगर निमिषएकमाहीं \* एक बिभीषन कर गृहनाहीं  
ताकरदूतअनलजेहिसिरजा \* जरानसोतेहिकारनगिरिजा  
उलटिपलटिलंका सबजारी \* कूदिपरा पुनि सिंधु मझारी  
दो० पूँछबुझाइ षोइ श्रम, धरि लघुरूप बहोरि । मा० पा० २२

जनक सुताके आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातुमोहि दीजे कछुचीन्हा \* जैसे रघुनायक मोहिदीन्हा  
चूडामनि उतारि तब दयऊ \* हरषसमेत पवनसुत लयऊ  
कहेहुतात असमोर प्रनामा \* सबप्रकार प्रभु पूरन कामा  
दीन दयाल बिरिद संभारी \* हरहु नाथमम संकट भारी  
तात सकसुत कथा सुनायहु \* वानप्रतापप्रभुहि समुझायहु  
मासदिवसमहँ नाथनआवा \* तौपुनिमोहिजियतनहिपावा  
कहुकपिकेहिविधिराषोंप्राना \* तुम्हहूतातकहत अवजाना  
तोहिदेषि सीतलि भइछाँती \* पुनिमोकहँ सोदिन सोराती

दो० जनक सुतहिसमुझाइकरि, बहुविधि धीरज दीन्ह ॥

चरनकमल सिरनाइकपि, गवनगमपाहिंकीन्ह ॥२७॥

चलतमहाधुनिगजेंसि भारी ✽ गर्भश्रवाहिंसुनिनिसिचरनारी  
नाघिसिंधुएहिपारहि आवा ✽ सबदकिलिकिला कपिन्हसुनावा  
हरपेसब बिलोकि हनुमाना ✽ नूतनजनमकपिन्हतबजाना  
मुषप्रसन्न तन तेज विराजा ✽ कीन्हेसिरामचन्द्रकरकाजा  
मिले सकलअतिभएसुपारी ✽ तलफत मीनपावजिमिवारी  
चलेहरषि रघुनायक पासा ✽ पूँछतकहत नवल इतिहासा  
तबमधुवन भीरतसबआए ✽ अंगद संमत मधुफल पाए  
रषवारे जब वरिजइ लागे ✽ मुष्टिप्रहार हनत सब भागे  
दो० जाइ पुकारे ते सब, बनउजार जुवराज ।

सुनि सुग्रीव हरष कपि, करि आए प्रभुकाज ॥ २८ ॥

जौन होत सीता सुधि पाई ✽ मधुवनकेफलसकहिंकिषाई  
एहिविधिमनविचारकराजा ✽ आइगयेकपिसहितसमाजा  
आइ सबहिं नावापद सीसा ✽ मिलेउसबान्हिअतिप्रीतिकपीसा  
पूँछी कुसल कुसल पददेषी ✽ रामकृपा भाकाज विसेषी  
नाथकाज कीन्हेउहनुमाना ✽ राषेसकल कपिन्हके प्राना  
सुनिसुग्रीवबहुरितेहिमिलेऊ ✽ कपिन्हसहितरघुपतिपहिचलेऊ  
रामकपिन्ह जबआवतदेषा ✽ किए काजमन हरषविसेषा  
फटिक सिला बैठे द्वौभाई ✽ परेसकलकपिचरनन्हिआई  
शे० प्रीति साहित सब भेंटें, रघुपति करुनापुंज ।

पूँछी कुसलनाथ अब, कुसल देषि पदकंज ॥ २९ ॥

रामवंत कह सुनु रघुराया ✽ जापरनाथ करहु तुम्हदाया

ताहिसदासुभकुसल निरंतर \* सुरनरमुनि प्रसन्नता ऊपर  
 सोइविजई विनई गुनमागर \* तासु मुजसत्रैलोक उजागर  
 प्रभुकीकृपा भएउ सबकाजू \* जन्महमारसुफल भा आजू  
 नाथपवनसुतकीन्हिजोकरनी \* सहसहुमुपन जाइसो बरनी  
 पवन तनयके चरित सुहाए \* जामवंत रघुपतिहि सुनाए  
 सुनतकृपानिधिमनअतिभाए \* पुनिहनुमानहरषिहियलाए  
 कहहुतातकेहिभाँतिजानकी \* रहतिकरतिरच्छास्वप्रानकी  
 दो० नामपाहरू रातिदिन, ध्यानतुम्हार कपाट ।

लोचननिजपदजंत्रित, जाहिंप्रानकेहिवाट ॥ ३० ॥

चलतमोहि चूडामनिदीन्ही \* रघुपतिहृदयलाइसोइलीन्ही  
 नाथ जुगललोचनभरि वारी \* वचनकहे कछुजनककुमारी  
 अनुजसमेत गहेहुप्रभुचरना \* दीनबंधु प्रनतारति हरना  
 मनक्रमवचनचरनअनुरागी \* केहिअपराध नाथहौंत्यागी  
 अवगुन एकमोर में माना \* विछुरतप्रानन कीन्हपयाना  
 नाथसोनयनन्हिकरअपराधा \* निसरतप्रानकरहिंहठिवाधा  
 विरहअगिनितनतूलसमीरा \* स्वाँसजरइछन माहिं सरीरा  
 नयनस्रवाहिंजलनिजहितलागी \* जरैन पाव देह विरहागी  
 सीताकैअतिविपतिविसाला \* विनहिंकहेभलिदीनदयाला  
 दो० निमिषनिमिष करुनानिधि, जाहिकल्पसमबीति ।

बेगिचलियप्रभुआनिअ, भुजबलषलदलजीति ॥ ३१ ॥

सुनिसीतादुषप्रभुसुषअयना \* भरिआएजल राजिवनयना  
 वचनकायमनममगातिजाही \* सपनेहुबूझियविपतिकिताही  
 कहहुनुमंत विपति प्रभुसोई \* जबतबसुमिरन भजननहोई

केतिकवातप्रभुजातुधानकी ✽ रिपुहिजीतिआनिबी जानकी  
सुनुकपितोहिसमानउपकारी ✽ नहिंकोउसुरनरमुनितनधारी  
प्रतिउपकार करौंका तोरा ✽ सन्मुखहोइनसकतमनमोरा  
सुनुसुत तोहि उरिनमैनाहीं ✽ देपेउँकरि विचार मनमाहीं  
पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता ✽ लोचननीरपुलक अतिगाता  
दो० सुनिप्रभु वचनविलोकिमुष, गातहरषि हनुमन्त ॥

चरनपरेउ प्रेमाकुल, त्राहित्राहि भगवंत ॥ ३२ ॥

बारबार प्रभु चहैं उठावा ✽ प्रेममगनतेहि उठवनभावा  
प्रभुकरपंकज कपिके सीसा ✽ सुमिरिसोदसामगनगौरीसा  
सावधानमनकरिपुनिसंकर ✽ लागेकहन कथाअतिसुन्दर  
कपिउठाइ प्रभुहृदवल्गावा ✽ करगहिपरमनिकट बैठावा  
कहुकपिरावन पालितलंका ✽ केहिविधिदहेहुहुगअतिवंका  
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ✽ बोलावचनविगतअभिमाना  
साषामृग कै बडि मनुसाई ✽ साषाते साषा परजाई  
नाधि सिंधुहाटक पुरजारा ✽ निसिचरगनवधिविपिनउजारा  
सोसब तव प्रताप रघुराई ✽ नाथन कछुमोरि प्रभुताई  
दो० ताकहैं प्रभुकछु अगमनहिं, जापर तुम्ह अनुकूल ॥

तवप्रताप बडवानलहि, जारि सकैषलु तूल ॥ ३३ ॥

नाथभगतिअतिसुपदायनी ✽ देहु कृपाकरि अनपायनी  
सुनिप्रभुपरमसरलकपिवानी ✽ एवमस्तु तवकहेउ भवानी  
उमारामसुभाउजेहिजाना ✽ ताहिभजनतेजिभावनआना  
यह संवाद जासुउर आवा ✽ रघुपतिचरनभगतिसोइपावा  
सुनिप्रभुवचनकहहिंकपिवृंदा ✽ जयजयजय कृपालुमुषकंदा



तवरघुपतिकपिपतिहिबोलावा \* कहा चले करकरहु बनावा  
 अवबिलंब केहिकारनकीजै \* तुरतकपिन्हकहँ आयसुदीजै  
 कौतुक देखिसुमन बहुवरषी \* नभते भवनचलेसुर हरषी  
 दो० कपि पति बेगि बोलाए, आए जूथप जूथ ॥

नानावरन अतुलबल, वानर भालुवरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभुपद पंकज नावहिं सीसा \* गरजहिंभालु महाबलकीमा  
 देषीराम सकल कपि सेना \* चितइकृपाकरि राजिवनैना  
 राम कृपाबल पाइ कपिन्दा \* भए पक्षजुत मनहुं गिरिंदा  
 हरषि रामतबकीन्हपयाना \* सगुन भएसुंदर सुभनाना  
 जासुसकल मंगलमयकीती \* तासुपयान सगुन यहनीती  
 प्रभु पयान जाना बैदेहीं \* फरकिवामअंगजनुकहिदेहीं  
 जोइजोइ सगुन जानकिहिहोई \* असगुनभयउ रावनहिसोई  
 चला कटकको बरनै पारा \* गरजहिंवानर भालुअपारा  
 नषआयुधगिरिपादप धारी \* चलेगगन महिइच्छा चारी  
 केहरिनाद भालुकपिकरहीं \* टगमगमहि दिग्गज चिकरहीं

छं० चिकरहिंदिग्गजडोल महिगिरिलोलसागरपरभरे ॥  
 मनहर्ष दिनकर सोमसुरमुनि नागाकिन्नर दुषटरे ॥  
 कटकटहिंमर्कटविकटभटबहुकोटिकोटिन्हधावँहीं ॥  
 जयराम प्रबलप्रताप कोसल नाथगुनगन गावहीं ॥  
 सहिसकनभारउदारअहिपति बारवारहिं मोहई ॥  
 गहदसनपुनिपुनि कमठपृष्ठकठोरसोकिमिसोहई ॥  
 रघुबीररुचिरपयनप्रस्थिति जानिपरम मुहावनी ॥  
 जनुकमठषप्परसर्पराज सोलिषतअविचलपावनी ॥

दो० येहिविधि जाइकूपानिधि, उतरे सागरतीर ॥

जहँतहँ लागे पानफल, भालुविपुल कपिवीर ॥ ३६ ॥

उहाँनिसाचर रहहिं ससंका ✽ जबतेजारिगएउ कपिलंका  
निजरगृहसबकरहिंविचारा ✽ नहिंनिसिचरकुलकेरउवारा  
जासु दूत बल बरनि न जाई ✽ तेहि आए पुरकवन भलाई  
दूतिन्हसनसुनिपुरजनवानी ✽ मंदोदरी अधिक अकुलानी  
रहसिजोरिकरपतिपदलागी ✽ बोली बचन नीतिरस पागी  
कंतकरष हरिसन परिहरहू ✽ मोरकहाअतिहितहियधरहू  
समुझत जासुदूत कइकरनी ✽ स्रवहिंगभं रजनीचर घरनी  
तासुनारिनिजसचिवबोलाई ✽ पठवहुकंत जौ चहहु भलाई  
तवकुलकमलविपिनदुषदाई ✽ सीतासीत निसासम आई  
सुनहु नाथसीता विनुदीन्हे ✽ हितनतुम्हारसंभुअजकीन्हे

दो० रामवान अहिगन सरिस, निकरनिसाचर भेक ॥

जबलगिग्रसतनतबलगि, जतनकरहु तजि टेक ॥

सवनसुनी सठताकरिवानी ✽ बिहँसाजगतविदितअभिमानि  
सभयसुभाउनारिकर साँचा ✽ मंगलमहँभयमनअतिकाँचा  
जौ आवै मर्कट कटकाई ✽ जियहिंविचारेनिसिचरपाई  
कंपहिलोकपजाकी त्रासा ✽ तासुनारिसभीत बडिहासा  
असकहिविहंसिताहिउरलाई ✽ चलेउसभाममताअधिकाई  
मंदोदरी हृदयकर चिंता ✽ भएउकंतपर विधिविपरीता  
बैठेउसभा पवरि अस पाई ✽ सिंधुपार सेना सब आई  
बूझेसिसचिवउचितमतकहहू ✽ तेसब हँसे मष्ट करि रहहू  
जितेहुसुरासुर तव समनाहीं ✽ नर वानर केहि लेष माहीं

दो० सचिववैदगुर तीनिजों, प्रिय बोलहि भयआस ॥

राजधर्म तनतीनिकर, होइवेगिही नास ॥ ३७ ॥

सोइ रावन कहैं वनी सहाई \* अस्तुतिकरहिंसुनाइ सुनाई  
अवसरजानिविभीषनआवा \* भ्राताचरन सीस तेहिनावा  
पुनिसिरनाइवैठनिजआसन \* बोलावचन पाइ अनुसासन  
जोंकृपाल पूछेहु मोहिवाता \* मतिअनुरूपकहोंहितताता  
जो आपन चाहइ कल्याना \* सुजससुमतिसुभगतिसुषनाना  
सो परनारि लिउार गोसाई \* तजौ चौथिके चंदाकि नाई  
चौदह भुवन एक पति होई \* भूत द्रोह तिष्टै नहि सोई  
गुन सागर नागर नर जोऊ \* अलपलोभ भल कहैनकोऊ

दो० काम क्रोध मदलोभ सब, नाथ नरकके पंथ ॥

सबपरिहरिघुवीरहि, भजहु भजहिंजेहिमंत ॥ ३८ ॥

तातराम नहिं नर भूपाला \* भुवनेस्वर कालहुकर काला  
ब्रह्मअनामय अजभगवंता \* व्यापकअजितअनादिअनंता  
गोद्विज धेनु देव हितकारी \* कृपासिंधु मानुष तनधारी  
जन रंजन भंजन पलव्राता \* वेद धर्म रक्षकसुनु भ्राता  
ताहिवयरतजि नाइयमाथा \* प्रनतारति भंजन खुनाथा  
देहुनाथ प्रभु कहैं वैदेही \* भजहु राम विनुहेतु सनेही  
सरनगए प्रभुताहु न त्यागा \* विस्वद्रोहकृतअघजेहिलागा  
जासुनाम त्रयतापनसावन \* सोइप्रभुप्रगटसमुद्युजियरावन

दो० बारवार पदलागउँ, विनयकरउँ दससीस ॥

परिहरिमानमोहमद, भजहु कोसलाधीस ॥

मुनिपुलस्ति निज सिष्यसन, कहिपठई यहवात ॥  
तुरतसोमैप्रभुसनकही, पाइसुअवसरतात ॥ ३९ ॥

माल्यवंतअतिसचिवसमाना \* तासुवचन सुनि अतिसुषमाना  
तातअनुजतवनीतिविभूषन \* सोउरधरहुजोकहत विभीषन  
रिपु उतकर्ष कहतसठदोऊ \* दरिन करहु इहाँहइ कोऊ  
माल्यवंत गृहगएउ बहोरी \* कहइविभीषनपुनिकरजोरी  
सुमतिकुमतिसबकेउररहहीं \* नाथपुराननिगमअसकहहीं  
जहाँसुमतितहँ संपतिनाना \* जहाँकुमतितहँविपतिनिदाना  
तवउरकुमतिवसीविपरीता \* हितअनहितमानहुरिपुप्रीता  
कालरातिनिसिचरकुलकैरी \* तेहि सीतापर प्रीति घनेरी  
दो० तात चरन गहि मागौं, राषहु मोर दुलार ।

सीतादेहु रामकहँ, अहित न होइ तुम्हार ॥ ४० ॥

बुधपुरान श्रुतिसंमत बानी \* कहीविभीषन नीतिवषानी  
सुनत दसानन उठारिसाई \* पलतोहिनिकटमृत्सुअबआई  
जियसिसदासठमोरजिआवा \* रिपुकर पक्षमूढ तोहिभावा  
कहसिनपलअसको जगमाही \* भुजबलजाहि जितामैनाहीं  
ममपुरवासितपसिनपरप्रीती \* सठमिलुजाइ तिन्हहिकहुनीती  
असकहिकीन्हेसिचरनप्रहारा \* अनुजगहे पद बारहि वारा  
उमासंत कइ इहइ बडाई \* मंदकरत जो करइ भलाई  
तुम्हपितुसरिसभलेहिमोहिमारा \* रामभजोहेत नाथ तुम्हारा  
सचिव संगलै नभपथगएऊ \* सबहिसुनाइकहतअसभएऊ  
दो० राम सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बस तोरि ॥

मैं रघुवीर सरन अब, जाउँ देहु जनि षोरि ॥ ४०



असकहिचलाविभीषनजबहीं \* आयु हीन भएसब तबहीं  
 साधु अवज्ञा तुरत भवानी \* करकल्यान अपिलकैहानी  
 रावनजबहिंविभीषनत्यागा \* भएउविभवविनु तबहिअभागा  
 चलेउहराषि रघुनायकपाहीं \* करत मनोरथबहु मनमाहीं  
 देषिहोंजाइ चरनजलजाता \* अरुनमृदुल सेवक सुषदाता  
 जे पद परसितरीशिपिनारी \* दंडक कानन पावन कारी  
 जे पद जनक सुता उरलाए \* कपट कुरंगसंग धर धाए  
 हरउर सर सरोज पद जेई \* अहो भाग्य में देषिहों तेई  
 दो० जिन्हपायन्हके पादुकन्हि, भरत रहे मनलाइ ।

तेपदआजविलोकिहों, इन्हनयनन्हिअबजाइ ४२

एहिविधि करतसप्रेमविचारा \* आएउसपदि सिंधुयेहिपारा  
 कपिन्हविभीषनआवतदेषा \* जानाकोउ रिपुदूत बिसेषा  
 ताहिराषि कपीस पहिआए \* समाचार सब ताहि सुनाए  
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई \* आवा मिलनदसानन आई  
 कह प्रभुसषा बूझिये काहा \* कहै कपीस सुनहु नरनाहा  
 जानिनजाइनिसाचरमाया \* कामरूपकेहि कारन आया  
 भेद हमार लेन सठ आवा \* राषिअवांधिमोहिअसभावा  
 सषानीतितुम्हनीकिविचारी \* ममपन सरनागत भयहारी  
 सुनिप्रभुबचनहरष हनुमाना \* सरनागत बच्छल भगवाना  
 दो० सरनागत कहँजेतजहिं, निज अनहित अनुमानि ॥

तेनर पावर पाप मय, तिन्हहिविलोकतहानि ४३

कोटि विप्र बधलागहिंजाहू \* आएसरन तजौनहिं ताहू  
 सन्मुषहोइजीवमोहिजबहीं \* जन्मकोटिअघनासहिं तबहीं

पापवंत कर सहज सुभाऊ \* भजनमोरतेहि भावनकारु  
जौपै दुष्ट हृदैं सोई होई \* मोरे सनमुष आवकि सोई  
निर्मलमनजनसोमोहिपावा \* मोहिकपटछलछिद्रनभावा  
भेद लेन पठवा दस सीसा \* तबहुँनकछुभयहानिकपीसा  
जगमहँ सषा निसाचर जेते \* लछिमनहनइनिमिषमहंतेते  
जौं सभीत आवा सरनाई \* रषिहों ताहि प्रानकी नाई  
दो० उभय भाँतितेहि आनहु, हँसि कह कृपानिकेत ॥

जयकृपाल कहिकपिचले, अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥

सादरतेहि आगे करिवानर \* चलेजहाँरघुपति करुनाकर  
दूरिहि ते देषे द्वौ भ्राता \* नयनानंद दान के दाता  
बहुरिरामछविधामबिलोकी \* रहेउठठुकि एकटकपलरोकी  
भुज प्रलंबकंजारून लोचन \* स्यामलगातप्रनतभय मोचन  
सिंघकंध आयत उर सोहा \* आननअमितमदनमनमोहा  
नयननीरपुलकितअतिगाता \* मनधरिधीर कहीमृदुवाता  
नाथ दसानन करमैं भ्राता \* निसिचर बंसजन्मसुर त्राता  
सहजपाप प्रिय तामस देहा \* जथाऊल्लूकहि तम परनेहा  
दो० श्रवन सुजस सुनि आएउँ, प्रभु भंजन भव भीर ॥

त्राहि त्राहि आरतिहरन, सरन सुषदरघुवीर ॥ ४५ ॥

असकहि करत दंडवत देषा \* तुरत उठे प्रभुहरष विसेषा  
दीन वचनसुनिप्रभुमनभावा \* भुजबिसालगाहिहृदय लगावा  
अनुज साहित मिलि ढिगबैठारी \* बोलेवचन भगत भयहारी  
कहु लंकेस साहित परिवारा \* कुसलकुठाहरवास तुम्हारा  
षलमंडली बसहु दिनराती \* सषा धर्मनिबहइ केहिभाँती

मैं जानों तुम्हारि सब रीती \* अतिनयानिपुनिन भावअनीती  
वरुभलवासनरक करताता \* दुष्टसंग जनि देइ विधाता  
अवपद देषिकुसल रघुराया \* जौं तुम्हकीन्हि जानि जनदाया  
दो० तबलगि कुसलन जीवकहँ, सपनेहु मन विश्राम ॥

जबलगि भजत नराम कहँ, सौकधाम तजिकाम ॥ ४६ ॥

तबलगि हृदयवसत पलनाना \* लोभमोह मत्सरमद माना  
जबलगि उरनवसत रघुनाथा \* धरेचाप सायक कटिभाथा  
मूमता तरुनतमी अंधियारी \* राग द्वेष उलूक सुषकारी  
तबलगि वसति जीवमनमाहीं \* जबलगि प्रभुप्रतापरविनाहीं  
अबमैं कुसल मिटेभय भारे \* दोषिराम पदकमल तुम्हारे  
तुम्हकृपाल जापर अनुकूल \* ताहिन व्यापत्रिविधभवमूल  
मैनि सिचर अति अधम सुभाऊ \* सुभआचरनकीन्हनहिकाऊ  
जासुरूपमुनि ध्यानन आवा \* तेहिं प्रभुहरषि हृदयमोहिलावा  
दो० अहोभाग्य मम अमित अति, रामकृपा सुषपुंज ॥

देषे उँनयन विरंचि सिव, सेव्य जुगल पदकंज ॥ ४७ ॥

सुनहु सषानिज कहँ उँ सुभाऊ \* जान भुसुंढि संभुगिरिजाऊ  
जौं नर होइ चराचर द्रोही \* आवइ सभय सरनत किमोही  
तजिमदमोहक पटललनाना \* करौं सद्यतोहि साधु समाना  
जननी जनक बंधु सुतदारा \* तनधनभवनसु हृदपरिवारा  
सबकै ममता ताग बटोरी \* ममपदमनहि बाँधवरि डोरी  
समदरसी इच्छा कछु नाहीं \* हरषसोकभयनहि मनमाहीं  
अस सज्जनमम उरवसकैसे \* लोभी हृदय वसै धन जैसे  
तुम्ह सारिषे संतप्रिय मोरे \* धरौं देह नहि आन निहारे

दो० सगुन उपासक परहित, निरतनीति दृढनेम ॥  
तेनर प्रानसमान मम, जिन्हके द्विजपदप्रेम ४८ ॥

सुनुलंकेस सकल गुनतारे \* तातेतुम्ह अतिसयप्रियमोरे  
राम बचन सुनिबानर जूथा \* सकलकहहिंजयकृपावरूथा  
सुनत बिभीषन प्रभुकैवानी \* नहिंअघातश्रवनामृतजानी  
पदअंबुज गहि बारहि वारा \* हृदय समातन प्रेम अपारा  
सुनहु देव सचराचर स्वामी \* प्रनत पालउर अंतरजामी  
उरकछु प्रथम वासना रही \* प्रभुपदप्रीति सरित सोवही  
अबकृपालनिजभगतिपावनी \* देहु सदासिव मन भावनी  
एवमस्तु कहि प्रभुरन धीरा \* मागा तुरतसिंधु करनीरा  
जदपि सषा तव इछा नाहीं \* मोरदरस अमोघ जगमाहीं  
असकहिरामतिलकतेहिसारा \* सुमनचृष्टि नभभई अपारा

दो० रावन क्रोध अनल निज, स्वास समीर प्रचंड ॥  
जरत बिभीषन राषेउ, दीन्हेउ राज अपंड ॥  
जोसंपति सिरावनहिं, दीन्हि दिए दसमाथ ॥  
सोइसंपदा बिभीषनहि, सकुचिदीन्हिरघुनाथ ४९ ॥

असप्रसुछाँडिभजहिंजेशाना \* तेनरपसु विनुपूँछ विषाना  
निजजनजानिताहिअपनावा \* प्रभुसुभावकपिकुलमनभावा  
पुनि सरवग्य सर्वउर बासी \* सर्वरूप सबरहित उदासी  
बोलेबचननीति प्रतिपालक \* कारनमनुजदनुजकुलघालक  
सुनुकपीस लंकापति बीरा \* केहिविधितरिअजलधिगभीरा  
संकुल मकरउरगक्षप जाती \* अतिअगाध दुस्तरसबभाँती



कहलंकेस सुनहु रघुनायक \* कोटिसिंधुसोषकतबसायक  
जद्यपि तदपिनीतिअसगाई \* विनयकरिअसागरसनजाई

दो० प्रभु तुम्हारकुलगुरजलधि, कहिहिउपायविचारि ॥

विनुप्रयाससागरतरिहिं, सकलभालुकपिधारि ५०॥

सषाकही तुम्हनीकि उपाई \* करिअ दैव जौहोइ सहाई  
मंत्रनयह लल्लिमनमनभावा \* रामबचनसुनिअतिदुषपावा  
नाथदैव करकवन भरोसा \* सोषिअसिंधुकरिअमनरोसा  
कादरमनकहँ एक अधारा \* दैव दैव आलसी पुकारा  
सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा \* असइकरव धरहुमन धीरा  
असकहिप्रभुअनुजहिसमुझाई \* सिंधु समीप गए रघुराई  
प्रथम प्रनामकीन्ह सिरनाई \* बैठे पुनि तटदर्भ डसाई  
जबहिंविभीषनप्रभुपहिंआए \* पाले रावन दूत पठाए

दो० सकल चरित तिन देषे, धरे कपट कपि देह ॥

प्रभुगुन हृदय सराहहिं, सरनागत परनेह ५१ ॥

प्रगट बषानहिं रामसुभाऊ \* अतिसप्रेम गाबिसिर दुराऊ  
रिपुकुदूत कपिन्ह तबजाने \* सकलबाँधिकपीसपहिंआने  
कह सुग्रीव सुनहुसबवनचर \* अंगभंगकरिपठवहानिसिचर  
सुनि सुग्रीव बचन कपिधाए \* बाँधिकटकचहुपास फिराए  
बहुप्रकार मारन कपि लागे \* दीनपुकारत तदपिन त्यागे  
जोहमार हरनासा काना \* तेहिकोसला धीसकै आना  
सुनिलल्लिमनसबनिकटबोलाए \* दयालागिहँसितुरत छोडाए  
रावन करदीजहु यह पाती \* लल्लिमनबचनबाँचुकुलघाती

दो० कहेउ मुषागर मूढ सन, मम संदेस उदार ॥

सीता देइ मिलहु नत, आवा काल तुम्हार ५२ ॥

तुरतनाइ लछिमनपदमाथा \* चले दूतवरनत गुनगाथा  
कहत राम जस लंका आए \* रावनचरनसीसतिन्ह नाए  
बिहँसिदसानन पूँछी वाता \* कहसिनसुकआपनिकुमलाता  
पुनिकहुषवरि विभीषनकेरी \* जाहिमृत्यु आई अतिनेरी  
करत राज लंकासठ त्यागी \* होइहिजवकरकीट अभागी  
पुनिकहुभालुकीस कटकाई \* कठिनकालप्रेरितचलि आई  
जिन्हके जीवनकर रषवारा \* भएउमृदुलचितसिंधुविचारा  
कहु तपसिन्हके वातबहोरी \* जिन्हकेहृदयत्रासअतिमोरी  
दो० कीभइ भेंट किफिरि गए, श्रवनसुजससुनिमोर ॥

कहसिन रिपुदलतेजबल, बहुतचकित चिततोर ॥५३॥

नाथ कृपाकरि पूँछहु जैसे \* मानहु कहाक्रोध तजितैसे  
मिलाजाइजबअनुजतुम्हारा \* जातहिरामतिलकतेहिसारा  
रावनदूत हमहि सुनिकाना \* कपिन्हबाँधिदीन्हेदुषनाना  
श्रवन नासिका काटइ लागे \* राम सपथदीन्हे हमत्यागे  
पूँछहु नाथ कीस कटकाई \* बदनकोटिसतवरनिन जाई  
नाना बरन भालुकपि धारी \* बिकटाननबिसालभयकारी  
जेहिंपुरदहेउहतेउ सुततोर \* सकलकपिन्हमहँतोहिवलथोर  
अमितनामभटकठिन कराला \* अमितनागबलविपुलबिसाला  
दो० द्विविद मयंद नीलनल, अंगद गद बिकटासि ॥

दधिमुष केहरि निसठ सठ, जामवंत बलरासि ॥५४॥

ए कपिसब सुग्रीवसमाना \* इन्हसमकोटिन्हगनइकोनाना

रामकृपाअतुलितबलतिन्हहीं \* तूनसमान त्रैलोकहि गनहीं  
 असमें सुना श्रवन दसकंधर \* पदुम अठारह जूथप बंदर  
 नाथकटक महँसोकपिनाहीं \* जोनतुम्हहिजीतहिरनमाहीं  
 परमक्रोधमीजहिं सबहाथा \* आएसु पैनदेहिं रघुनाथा  
 सोषहिंसिंधुसहितझषव्याला \* पूरहिंनतभरिकुधर बिसाला  
 मर्दिगर्द मिलवहिं दससीसा \* ऐसेइवचनकहहिं सबकीसा  
 गर्जहिंतर्जहिं सहज असंका \* मानहु ग्रसनचहतहहिंलंका

दो० सहज मूरकपि भालुसब, पुनि सिरपर प्रभुराम ॥

रावन कालकोटि कहँ, जीतिसकहिंसंग्राम ॥५५॥

रामतेज बलबुधि विपुलाई \* सेषसहस सत सकहिं नगाई  
 सकसरएक सोषि सतसागर \* तवभ्रातहिपूछेउ नयनागर  
 तासुबचन सुनि सागरपाहीं \* मागतपंथ कृपा मन माहीं  
 सुनतवचनबिहँसादससीसा \* जोंअसिमतिसहायकृतकीसा  
 सहज भीरुकरवचन दिटाई \* सागर मन ठानी मचलाई  
 मूढ मृषाका करसि बडाई \* रिपुबल बुद्धिथाह मई पाई  
 सचिवसभीतविभीषनजाके \* विजयविभूतिकहाँजगताके  
 सुनिषलवचन दूतरिस बाढी \* समयविचारि पत्रिकाकाढी  
 रामानुज दीन्ही यह पाती \* नाथ बचाइ जुटावहु छाती  
 बिहँसि बामकरलीन्हीरावन \* सचिवबोलिसठलागबचावन

दो० बातनमनहि रिझाइसठ, जनिघालसि कुलपीस ॥

राम विरोधन उबरसि, सरन बिष्णु अज ईस ॥

कीतजि मान अनुज इव, प्रभुपद पंकज भृंग ॥  
होइ कि रामसरानल, पलकुल सहित पतंग ॥५६॥

सुनतसभयमनमुषमुसुकाई \* कहतदसानन सवहिसुनाई  
भूमिपराकर गहत अकासा \* लघुतापसकर बागविलासा  
कहसुकनाथ सत्यसब बानी \* समुझहुछाडि प्रकृतिअभिमानी  
सुनहुवचनममपरिहरि क्रोधा \* नाथरामसन तजहु विरोधा  
अतिकोमल रघुवीर सुभाऊ \* जद्यपिअपिललोक करराऊ  
मिलतकृपातुहपरप्रभुकरिही \* उरअपराध न एकौ धरिही  
जनकसुता रघुनाथहि दीजे \* एतनाकहा मोर प्रभु कीजे  
जबतेहि कहा दैन बैदेही \* चरनप्रहार कीन्ह सठतेही  
नाइ चरन सिरचलासो तहाँ \* कृपासिंधु रघुनायक जहाँ  
करिप्रनाम निजकथासुनाई \* रामकृपा आपनि गतिपाई  
रिषिअगस्तिकीसापभवानी \* राछसभएउरहा मुनिज्ञानी  
बांदिराम पद बारहिं बारा \* मुनिनिजआश्रम कहँपगुधारा  
दो० विनय न मानत जलधिजट, गएतीनि दिनबीति ॥

बोलेराम सकोपतव, भयविनहोइ न प्रीति ॥ ५७ ॥

लछिमन बान सरासनआनू \* सोषोंवारिधिविसिष कुसानू  
सठसनविनयकुटिलसनप्रीती \* सहजकृपिनसन सुंदरनीती  
ममतारत सन ज्ञानकहानी \* अतिलोभीसनविरति वषानी  
क्रोधिहिसमकामिहिहरिकथा \* ऊसरबीज बोए फल जथा  
असकहिरघुपतिचाप चढ़ावा \* यहमतलछिमनकेमनभावा  
अंधानेउप्रभुविसिष कराला \* उठीउदधिउरअंतर ज्वाला  
करउरगझषगन अकुलाने \* जरतजंतुजलनिधिजबजाने



कनकथारभरिमनगननाना \* विप्ररूप आएउ तजिमाना  
दो० काटेहि पइकदरी फरै, कोटि जतन कोउ सींचि ॥

बिनयनमानषगेससुनु, डाटेहिपइनवैनीचि ५८ ॥

सभय सिंधुगहि पदप्रभु केरे \* छमहुनाथ सब अवगुन मेरे  
गगनसमीरअनल जलधरनी \* इन्हकइनाथसहजजडकरना  
तब प्रेरित माया उपजाए \* सृष्टिहेतु सब ग्रंथन्हि गाए  
प्रभुआयसु जेहिकहँजसिअहई \* सोतेहि भाँतिरहे सुषलहई  
प्रभुभलकीन्हमोहिसिषदोन्ही \* मरजादापुनि तुहारिअ कीन्ही  
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी \* सकलताडना के अधिकारी  
प्रभु प्रताप में जाव सुषाई \* उतरिहिकटकनमोरिबडाई  
प्रभु अज्ञा अपेल श्रुति गाई \* करौंसोबेगिजोतुहहहि सोहाई  
दो० सुनत विनीत बचन अति, कह कृपाल मुसुकाइ ॥

जेहिविधिउतरहिकपिकटक, तातसोकहहुउपाइ ५९

नाथनील नल कपि द्वौभाई \* लरिकाई रिषि आसिषपाई  
तिनकेपरसाकिए गिरि भारे \* तरिहहिंजलधिप्रतापतुम्हारे  
मैपु नि उरधरि प्रभु प्रभुताई \* करिहौंवल अनुमान सहाई  
एहिविधिनाथपयोधिबधाइअ \* जेहिएहमुजसलोकतिहुँगाइअ  
एहिसर मम उत्तरतटवासी \* हतहुनाथ पलनर अघरासी  
सुनिकृपाल सागरमन पीरा \* तुरतहि हरीराम रनधीरा  
दोषिराम बल पौरुष भारी \* हरषिपयोनिधिभयउमुषारी  
सकलचरितकहि प्रभुहिसुनावा \* चरनबाँदिपाथोधि सिधावा  
छं० निजभवनगवनेउसिंधुश्रीरघुपतिहियहमतभायऊ ॥

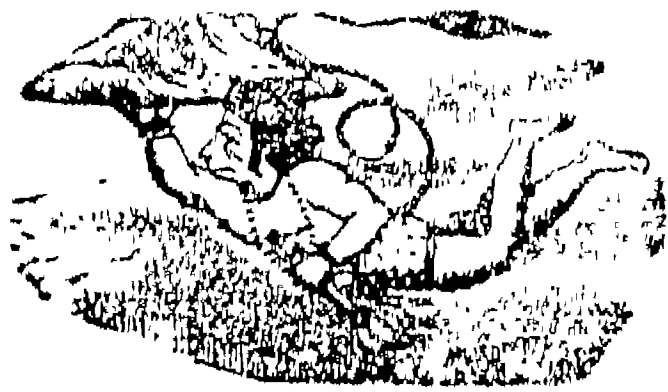
यहचरितकलिमलहरजथामतिदासतुलसीगायऊ ॥

सुषभवन संसयसमनदमन विषादरघुपतिगुनगना ।  
 तजिसकलआमभरोमगावहिसुनहिसंततमठमना ॥  
 दो० सकल सुमंगल दायक, रघुनायकगुनगान मा० प० २३  
 सादरसुनाहितेतरहिंभव, सिंधुविनाजल जान ॥६०॥

इति श्रीराम चरित मानसै सकलकलिकलुष विध्वंसने ज्ञान  
 सम्पादिनी नाम पंचमः सोपान समाप्तः ॥

ग्रंथसंख्या ५४०

शुभम् ।





सुन्दरकाण्ड ।

पत्र उ'क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३७८	२१	रघुपति	रघुपतिकर
४००	११	करौ	करा

इति





❀ श्रीः ❀

## अथ रामायण लंकाकाण्ड ।

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

श्रीगणेशायनमः

दो० लवनिमेष परवान जुग, वरषकल्पसरचंड ॥

भजसितमनतेहिरामकहं कालजासुको दंड ॥

श्लोक—रामं कामारि सेव्यं भव भयहरणं कालमत्तेभसिंहं ॥ योगी  
न्द्रज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितंनिर्गुणं निर्विकारं ॥ माया तीतं सुरेशं  
खलबध निरतंब्रह्म वृंदैक देवं ॥ वंदेकंदावदातं सरसिजनयनंदेवमूर्वीं  
शरूपं ॥ १ ॥ संखेंद्राभमंतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्मावरं ॥ कालव्याल  
कराल भूषण धरंगंगाससांकप्रियं ॥ कासीशंकलि कल्मषौघ समनं  
कल्याण कल्पद्रुपं ॥ नौमीड्यं गिरिजापतिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामहं ॥ २ ॥  
योददातिसतांशंभुः कैवल्यमपिदुर्लभं ॥ खलानां दंडकृद्यो सौशंकरः  
शंतनोतुमां ॥ ३ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सो० सिंधुवचनसुनिराम, सचिवबोलिप्रभुअसकहेउ ॥

अबबिलंबकोहिकाम, करहुसेतुउतरइकटक ॥

सुनहुभानुकुलकेतु, जामवंतकरजोरिकह ॥

नाथनामतवसेतु, नरचढिभवसागरतरहिं ॥

यहलघुजलधितरतकतिबारा❀अससुनिपुनिकहपवनकुमारा  
प्रभु प्रताप बडवानल भारी❀ सोषेउप्रथमपयोनिधिवारी

तवरिपु नारि रुदनजलधारा \* भरेउवहोरिभएउतेहि पारा  
 मुनिअतिउक्तिपवनसुतकेरी \* हरषेकपि रघुपति तनहेरी  
 जामवंत बोले दोउ भाई \* नलनीलहि सबकथा सुनाई  
 रामप्रताप सुमिरिमनमाहीं \* करहु सेतुप्रयास कछु नाहीं  
 बोलिलिएकपिनिकरबहोरी \* सकलमुनहुविनतीकछुमोरी  
 राम चरन पंकज उर धरहु \* कौतुकएक भालुकपि करहु  
 धावहु मर्कट विकट बरूथा \* आनहुबिटपगिरिन्हकेजूथा  
 मुनिकपिभालु चलेकरिहहा \* जय रघुवीर प्रताप समूहा  
 दो० अति उत्तंग गिरि पादप, लीलहि लेहिं उठाइ ॥

आनिदेहिंनलनीलहि, रचहिंतेसेतुबनाइ ॥ १ ॥

सैल विसालआनि कपिदेहीं \* कंदुक इवनलनीलते लेहीं  
 देषिसेतु अति सुंदर रचना \* विहंसिकृपानिधिवोलेवचना  
 परमरम्य उत्तम यह धरनी \* महिमाअमितजाइनहिंवरनी  
 करिहों इहाँ संभु थापना \* मोरे हृदय परम कल्पना  
 मुनि कपीस बहुदूत पठाए \* मुनिवरमकल बोलिलै आए  
 लिंगथापिविधिवतकरिपूजा \* सिवममानप्रियमोहिनदूजा  
 सिवद्रोही ममभगतकहावा \* मोनरमपनेहुमोहि न पावा  
 संकरविमुषभगाति चहमोरी \* सो नारकी मूढमति थोरी  
 दो० संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास ॥

तेनर करहिं कलुप भरि, घोरनरकमहें वाम ॥ २ ॥

जेरामेस्वर दरसन करिहहिं \* तेतनताजिममलोकसिधरिहि  
 जीर्णगाजल आनिचढ़ाइहि \* सोसाजुज्य मुक्ति नरपाइहि  
 होइअकामजोछलतजिसैइहि \* भगातिमोरि तेहिसंकरदेइहि

ममकृतसेतुजोदरसनकरिही ✽ सोविनुश्रमभवसागरतरिही  
 रामवचन सबके जिय भाए ✽ मुनिवरनिजनिज आसमआए  
 गिरिजा रघुपतिकै यहरीती ✽ संततकरहिं प्रनतपरप्रीती  
 बाँधासेतु नीलनल नागर ✽ रामकृपाजसभएउउजागर  
 बूढहिं आनहि बोरहि जेई ✽ भए उपल बोहित समतेई  
 महिमायहनजलधिकइबरनी ✽ पाहनगुननकपिन्हकइकरनी  
 दो० श्री रघुवीर प्रताप ते, सिंधुतरे पाषान ॥

ते मति मंदजे रामतजि, भजहिंजाइप्रभुआन ॥ ३ ॥

बाँधिसेतुअति सुदृढ़ बनावा ✽ देषिकृपानिधिके मनभावा  
 चली सेनकछु वरनिन जाई ✽ गर्जहिं मर्कटभट समुदाई  
 सेतु बंधाहिग चढि रघुराई ✽ चितवकृपाल सिंधुबहुताई  
 देषन कहें प्रभु करुना कंदा ✽ प्रगटभए सबजलचर वृंदा  
 मकर नक्र नाना शपव्याला ✽ सतजोजनतनपरमविसाला  
 अइसेउएकतिन्हहिजेपाहीं ✽ एकन्हके डरतेपि डेराहीं  
 प्रभुहिविलोकहिंटरहिंनटारे ✽ मनहरपित सब भएसुषारे  
 तिन्हकीओटनदेषिअवारी ✽ मगनभएहरि रूपनिहारी  
 चला कटकप्रभु आयसुपाई ✽ कोकहिसककपिदल विपुलाई  
 दो० सेतबंध भइ भीर अति, कपि नभ पंथ उडाहिं ॥

अपर जलचरन्हि ऊपर, चढि चढि पारहि जाहिं ॥ ४ ॥

असकौतुतकविलोकिदौभाई ✽ बिहांसि चलेकृपाल रघुराई  
 सेनसहित उतरे रघुवीरा ✽ कहिनजाइ कपिजूथपभीरा  
 सिंधुपार प्रभूडेरकीन्हा ✽ सकलकपिन्हकहेंआयसुदीन्हा  
 पाहुजाइ फल मूल सुहाए ✽ सुनतभालु कपिजहंतहंधाए



सबतरु फरेरामहितलागी \* रितुअरुकरितुकालगतित्यागी  
 पाहिंमधुरफल विट्प हलावहिं \* लंकासन्मुष सिपरचलावहिं  
 जहँकहुँफिरतनिसाचरपावहिं \* घेरिसकलबहु नाचनचावहिं  
 दसनन्हिकाटि नासिकाकाना \* कहिप्रभुसुजसदेहितबजाना  
 जिन्हकरनासाकाननिपाता \* तिन्हरावनहि कहीसबवाता  
 सुनतश्रवन बारिधि बंधाना \* दसमुषबोलिउठाअकुलाना  
 दो० बाँध्योवननिधि नीरनिधि, जलधिसिंधुवारीस ।

सत्यतोयनिधिकंपति, उदधिपयोधिनदीस ॥ ५ ॥

निजविकलताविचारिवहोरी \* विहँसिगएउगृहकरिभयभोरी  
 मंदोदरी सुन्यो प्रभुआयो \* कौतुकही पाथोधि बंधायो  
 करगहिपतिहिभवननिजआनी \* बोली परम मनोहर बानी  
 चरननाइसिर अंचल रोपा \* सुनहुवचनपियपरिहरिकोपा  
 नाथबयरु कीजै ताहीसो \* बुधिवलसकिअ जीतिजाहीसो  
 तुम्हहिरघुपतिहिअंतरकैसा \* पलुपद्योत दिनकरहि जैसा  
 अतिबलमधुकैटभजेहिमारें \* महावीर दिति सुत संघारें  
 जेहिंबलिबाँधिसहसभुजमारा \* सोइअवतरेउहरनमहिभारा  
 तासुविरोधन कीजिअनाथा \* कालकरम जिवजाकेहाथा  
 दो० रामहिं सौपिअ जानकी, नाइ कमल पद माथ ॥

सुतकहँ राजसमर्पिबन, जाइभजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथदीन दयाल रघुराई \* बाघौ सनमुष गएन पाई  
 चाहिअकरनसोसबकरिवीते \* तुह्य सुरअसुरचराचर जीते  
 संतकहहिंआसिनीतिदसानन \* चौथेपन जाइहि नृपकानन  
 तासुभजनकीजिअ तहँभरता \* जौकरता पालक संहरता

सोइरघुबीर प्रनत अनुरागी ✽ भजहुनाथममतामदत्यागी  
मुनिवरजतनकरहिंजेहिजागी ✽ भूपराजतजि होहिं विरागी  
सोइ कोसलाधीस रघुराया ✽ आएउकरन तोहिपर दाया  
जौंषिय मानहुमोर सिषावन ✽ सुजसहोइतिहुँपुरअतिपावन

दो० असकहिनयननीर भरि, गहिपद कंपित गात ॥

नाथभजहुनरघुनाथहि, अचलहोइअहिवात ॥ ७ ॥

तब रावन मयसुता उठाई ✽ कहइलागपल निजप्रभुताई  
सुनतई प्रियावृथाभयमाना ✽ जगजोधाको मोहि समाना  
वरुनकुबेर पवन जमकाला ✽ भुजबलजितेउंसकलदिगपाला  
देव दनुज नर सब बसमोरे ✽ कवनहेतु उपजा भयतोरे  
नानाविधितेहिकहेसिबुझाई ✽ सभा बहोरि बैठसो जाई  
मंदोदरी हृदय अस जाना ✽ कालवस्यउपजाअभिमाना  
सभाआइ मंत्रिन्ह तेंहिंबूझा ✽ करबकवनविधि रिपुसैंजूझा  
कहहिंसचिवसुनुनिसिचरनाहा ✽ बारबार प्रभु पृछहु काहा  
कहहुकवनभयकरिअविचारा ✽ नरकपिभालु अहार हमारा  
दो० सबकेवचनस्रवनसुनि, कहप्रहस्तकरजोरि ।

नीतिविरोधनकरिअप्रभु, मंत्रिन्हमतिअतिथोरि ८ ॥

कहहिंसचिवसठठकुरसोहाती ✽ नाथनपूरआव एहि भाँती  
बारिधिनाघिएककपिआवा ✽ तासुचरित मनमहंसवगावा  
छुधानरही तुम्हाहि तबकाहू ✽ जारतनगर कसनधरि पाहू  
सुनतनीक आगे दुषपावा ✽ सचिवनअसमतप्रभुहिसुनावा  
जेहिंबारीस बंधाएउ हेल्ला ✽ उतरे सेन समेत सुबेल्ला  
सोभनुमनुज पाव हम भाई ✽ वचनकहहिंसब गालफुलाई

तातवचनममसुनुअतिआदर\*जनिमनगुनहुमोहिकरिकादर  
 प्रियवानीजेसुनहिं जेकहहीं \* अइसे नरनिकाइजगअहहीं  
 वचनपरमहित सुनतकठोरे \* सुनहिंजेकहहिंतेनरप्रभुथोरे  
 प्रथमवसीठ पठउसुनुनीती \* सीतादेइ करहु पुनि प्रीती  
 दो० नारिपाइ फिरिजाहिं जौं, तौ न बढाइअ रारि ॥

नाहितसनमुषसमरमहिं, तातकरिअहठिमारि ॥ ९ ॥

यहमत जउं मानहुप्रभुमोरा \* उभयप्रकार सुजसजगतोरा  
 सुतसन कहदसकंठ रिसाई \* असिमतिमठकेहिंतेहिसिषाई  
 अबहींते उर संसय होई \* वेनु मूलसुत भएहु घमोई  
 सुनिपितुगिरापरुषअतिघोरा \* चलाभवनकहिवचनकठोरा  
 हितमत तोहिन लागतकैसे \* कालविवसकहुं भेषज जैसे  
 संध्यासमयजानि दससीसा \* भवनचलेउनिरषतभुजबीसा  
 लंका सिषर उपर अगारा \* अतिविचित्र तहंहोइअषारा  
 बैठ जाइतेहि मंदिर रावन \* लागे किन्नर गुनगन गावन  
 बाजहिं तालपषाउज बीना \* नृत्यकरहिं अपछरा प्रबीना  
 दो० सुनासीरसत सरिससो, संतत करइ विलास ।

परम प्रवलरिषु सीसपर, तद्यपिसोचनत्रास ॥ १० ॥

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा \* उतरे सेनसहित अतिभीरा  
 सिषर एक उतंग अतिदेषी \* परमरम्य समसुअ विसेषी  
 तहँतरुक्सलयसुमनसुहाए \* लल्लिमनरचिनिजहाथडसाये  
 तापररुचिरमृदुल मृगछाला \* तेहिआसनआसीन कृपाला  
 प्रभुकृतसीसकपीस उछंगा \* वामदहिनदिसिचापनिषंगा  
 दुहुँकरकमल सुधारतवाना \* कहलंकेस मंत्रलागि काना

बडभागी अंगद हनुमाना ✽ चरनकमलचापताविधिनाना  
प्रभुपाछे लछिमन वीरासन ✽ कटिनिषंगकर वानसरासन  
दो० एहिबिधि कृपारूपगुन, धामराम आसीन ॥

धन्य तेनरणहि ध्यानजे, रहत सदा लयलीन ॥

पूरबदिसा विलोकि प्रभु, देषा उदितमयंक ॥

कहतसबहिदेपहु ससिहि, मृगपति सरिसअसंक ११

पूरबदिसिगिरिगुहानिवासी ✽ परम प्रताप तेजबलरासी  
मत्त नाग तम कुंभविदारी ✽ ससिकेसरी गगन बनचारी  
विथुरे नभ मुक्ताहलतारा ✽ निसि सुंदरी केर सिंगारा  
कहप्रभु ससिमहंमेचकताई ✽ कहहुकांहनिजनिजमतिभाई  
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ✽ ससिमहं प्रगट भूमिकैझाई  
मारेहु राहुससिहि कह कोई ✽ उरमहं परी स्यामता सोई  
कोउकहजबविधिरतिमुषकीन्हा ✽ सारभागससिकरहरिलीन्हा  
छिद्रसो प्रगटइंदु उरमाहीं ✽ तेहिमगदेषिअनभपरिछाहीं  
प्रभुकहगरल बंधु ससिकेरा ✽ अतिप्रियनिजउर दीन्हबसेरा  
विष संजुतकरनिकरपसारी ✽ जारत विरहवंत नरनारी  
दो० कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससितुम्हार प्रियदास ।

तबमूरति विधुउर बसति, सोइ स्यामता अभास ॥

पवन तनयके बचनसुनि, विहंसैराम सुजान ॥

दछिनदिसिअवल्लोकिप्रभु, बोलेकृपानिधान १२ ॥

देषु विभीषन दछिन आसा ✽ घनघमंड दामिनीबिलासा  
मधुर मधुर गरजै घनघोरा ✽ होइदृष्टिजन उपल कठोरा  
कहतविभीषनसुनहुकृपाला ✽ होइनतडितन बारिदमाला



लंका सिपर उपर अगारा \* तहँ दसकंधर देष अपारा  
 छत्र मेघटंबर सिर धारी \* मोइजनुजलदघटा अतिकारा  
 मंदोदरी सवन ताटंका \* मोइप्रभु जनुदामिनीदमंका  
 बाजहिं ताल मृदंग अनूपा \* मोइरवमधुर सुनहु सुरभूपा  
 प्रभुमुसुकानसमुझिअभिमाना \* चाप चढाइ वान संधाना  
 दो० छत्र मुकुट ताटंकसव, हते एकही वान ॥

सबके देषत महि परे, मरमन कोऊ जान ॥

असकौतुक करि रामसर, प्रविसेउ आइनिषंग ॥

रावन सभा ससंक सब, देषिमहा रसभंग १३ ॥

कंपन भूमिन मरुत विसेषा \* अस्त्रसस्त्र कछुनयनन देषा  
 सोचहिंसवनिजहृदयमझारी \* असगुनभयउ भयंकरभारी  
 दसमुष देषि सभा भय पाई \* विहंसिवचनकह जुगतिबनाई  
 सिरौंगिरे संततसुभ जाही \* मुकुटपरेकस असगुनताही  
 सयनकरहुनिजनिजगृहजाई \* गवनेभवन सकल सिरनाई  
 मंदोदरी सोच उर वसेऊ \* जवतेसवनपूर महि षसेऊ  
 सजलनयनकह जुगकरजोरी \* सुनहुप्रानपतिविनतीमोरी  
 कंत राम बिरोध परिहरहू \* जानिमनुजजनिहठ उरधरहू  
 दो० विस्व रूप रघुवंसमानि, करहु वचन विस्वासु ॥

लोक कल्पना वेदकर, अंगअंग प्रतिजासु १४ ॥

पदपाताल सीसअज धामा \* अपरलोकअंगअंगविश्रामा  
 भृकुटिविलासभयंकरकाला \* नयनदिवाकरकचघनमाला  
 जासुघ्रान अस्विनी कुमारा \* निमिअरुदिवस निमेषअपारा  
 सवन दिसादस वेदवषानी \* मारुतस्वासनिगम निजवानी

अधरलोभजमदसनकराला \* मायाहाम बाहुदिग पाला  
 अननअनलअंबुपतिजीहा \* उतपतिपालनप्रलयसमीहा  
 रोम राजि अष्टा दस भारा \* अस्थिसैल सारितानसजारा  
 उदर उदधि अधगोजातना \* जगमयप्रभुकहवेद कल्पना

दो० अंहकार सिवबुद्धि अज, मन ससि चित्त महान ॥

मनुज बास सचराचर, रूप राम भगवान ॥

असविचारिसुनु प्रानपति, प्रभुसनवयर बिहाइ ॥

प्रीतिकरहु रघुवीरपद, ममअहिवात नजाइ १५ ॥

बिहंसानारिवचनसुनिकाना \* अहोमोह महिमा बलवाना  
 नारिसुभाउसत्यकविकहहीं \* अवगुनआठ सदाउर रहहीं  
 साहसअनृत चपलतामाया \* भयअबिवेकअसौचअदाया  
 रिपुकर रूपसकल तैं गावा \* अतिविसालभयमोहिसुनावा  
 सोसब प्रिया सहज बसमोरे \* समुझिपरा प्रसाद अवतोरै  
 जानिउँ प्रियातोरि चतुराई \* एहिविधिकहेउमोरिप्रभुताई  
 तबवतकही गूढमृग लोचनि \* समुझतसुपदसुनतभयमोचनि  
 मंदोदरिमनमहँअसठययऊ \* पिआहिकालवसमतिभ्रमभयऊ

दो० एहिविधि करत विनोदबहु, प्रात प्रगट दसकंध ॥

सहज असंक लंक पति, सभा गएउ मदअंध ॥

सो० फूलइ फरइ न बेत, जदपि सुधा वरपहिं जलद ॥

मूरुषहृदयनचेत, जौंरुमिलहिंविंरंचिसिव १६ ॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई \* पृछामतसब सचिव बोलाई  
 कहहुबेगिका करिअ उपाई \* जामवंत कह पद सिरनाई  
 सुनुसरबज्ञ सकल उरवासी \* बुधिवलतेज धर्मगुन रासी

मंत्रकहौनिजमतिअनुसारा \* दूत पठाइअ बालि कुमारा  
 नींकमंत्र सबके मन माना \* अंगदसनकह कृपानिधाना  
 बालितनयबुधिवलगुनधामा \* लंकाजाहु तातमम कामा  
 बहुतबुझाइतुम्हहिंकाकहउँ \* परम चतुरमें जानत अहउँ  
 काज हमार तासु हित होई \* रिपुसनकरेहु बतकही सोई  
 सो० प्रभुअज्ञाधरिसीस, चरनबंदिअंगदउठेउ ॥

सोइगुनसागरईस, रामकृपाजापरकरउ ॥

स्वयंसिद्धतबकाज, नाथमोहिअदारदिण ॥

असविचारिजुबराज, तनपुलकितहरषितहिण १७ ॥

बंदिबचन उरधरि प्रभुताई \* अंगदचलेउसवहि सिरनाई  
 प्रभुप्रताप उरसहजअसंका \* रनबाँकुरा बालि सुतबंका  
 पुर पैठत रावन कर बेटा \* षेलत रहा होइगै भेटा  
 बातहिं बात करष बढिआई \* जुगलअतुलबलपुनितरुनाई  
 तेहि अंगदकहँ लात उठाई \* गहिपदपटकेउभूमि भँवाई  
 निसिचरनिकरदेषिभटभारी \* जहँतहँचलेनसकहिं पुकारी  
 एकएकसन मरमन कहहीं \* समुझितासुबधचुपकरिरहहीं  
 भएउकोलाहलनगरमझारी \* आवाकपि लंका जेहिजारी  
 अवधौंकाहकरिहि करतारा \* अतिसभीतसबकरहिंविचारा  
 बिनुपूछे मगदेहिं दिषाई \* जेहिविलोक सो जाइसुषाई  
 दो० गएउ सभा दरबार तब, सुमिरि राम पदकंज ॥

सिंह ठवनिइतउतचितव, धीरवीरबलपुंज ॥ १८ ॥

तुरत निसाचर एक पठावा \* समाचार रावनहि जनावा  
 सुनतबिहँसिबोलादससीसा \* आनहु बोलिकहाँकर कीसा

आएसु पाइ दूतबहु धाए \* कपिकुंजरहिवोलि लै आए  
अंगद दीष दसानन वैसे \* साहितप्रानकज्जलगिरिजैसे  
भुजाबिटप सिरसुंग समाना \* रोमावली लताजनु नाना  
मुषनासिकानयनअरुकाना \* गिरिकंदरा षोहअनुमाना  
गएउसभा मननेकुन मुरा \* वालितनय अतिबलवाँकुरा  
उठे सभासदकपि कहंदेपी \* रावन उरभा क्रोध विसेपी  
दो० जथा मत्तगज जूथमहं, पंचाननचालि जाइ ॥

रामप्रताप सुमिरि मन, बैठसभा सिरनाइ ॥ १९ ॥

कह दसकंठ कवनतै बंदर \* मैं रघुवीर दूत दसकंधर  
ममजनकहितोहिरही मिताई \* तवहित कारनआएउं भाई  
उत्तमकुल पुलस्तिकरनाती \* सिवविरंचि पूजेहु बहुभाँती  
वरपाएहु कीन्हैहु सबकाजा \* जीतेहु लोकपालसब राजा  
नृपअभिमानमोहवसकिंवा \* हरिआनिहु सीताजगदंबा  
अवसुभकहासुनहुतुम्हमोरा \* सबअपराधछमिहिप्रभुतोरा  
दसन गहहुनिन कंठकुठारी \* परिजनसहितसंगनिजनारी  
सादरजनक सुताकरिआगे \* एहिविधिचलहु सकलभयत्यागे  
दो० प्रनतपाल रघुवंस मनि, त्राहि त्राहि अवमोहि ॥

आरतगिरासुनतप्रभु, अभयकरैगे तोहि ॥ २० ॥

रेकपिपोत बोलु सँभारी \* मूढनजानोहि मोहि सुरारी  
कहुनिजनामजनककरभाई \* केहिनाते मानिए मिताई  
अंगद नाम वालि कर बेटा \* तासो कबहुं भइही भेटा  
अंगदवचन सुनतसकुचाना \* रहावालि वानर मैंजाना  
अंगदतहीं वालिकर बालक \* उपजेहुवंसअनलकुलघालक



गर्भनगणहुव्यर्थतुम्हजाएहु \* निज सुपतापस दूतकहाएहु  
 अबकहुकुसलवालि कहैं अहैं \* बिहँसिवचनतव अंगद कहैं  
 दिनदसगण वालि पहिं जाई \* बूझैहुकुसलसपा उरलाई  
 रामविरोध कुसलजसिहोई \* सोसव तोहि सुनाइहि सोई  
 सुनुमठ भेद होइ मन ताके \* श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाके

दो० हमकुल घालक सत्य तुम्ह, कुलपालकदसमीस ॥

अंधौबधिरन असकहहिं, नयन कानतववीस ॥२१॥

सिवविरंचिसुर मुनिसमुदाई \* चाहत जासुचरन सेवकाई  
 तासुदूत होइ हम कुलवोरा \* अइसिहुमतिउरविहरनतोर  
 सुनिकठोर बानी कपिकेरी \* कहत दसानन नयन तरैरी  
 षलतवकठिन वचनसबसहऊँ \* नीतिधर्म में जानत अहऊँ  
 कहकपिधर्म सीलता तोरी \* हमहुँ सुनीकृतपरत्रियचोरी  
 देष्यौं नयन दूत रषवारी \* बूडिन मरहु धर्मव्रत धारी  
 काननाकविनभगिनिनिहारी \* लुमाकीन्हि तुमधरमबिचारी  
 धर्मसीलता तवजग जागी \* पावा दरस हमहु बडभागी

दो० जनिजल्पसिजटजंतुकपि, मठबिलोकुममवाहु ॥

लोकपाल बलविपुलससि, ग्रसन हेतु सबराहु ॥

पुनिनभसरममकरनिकर, कमलन्हिपरकरिवास ॥

मोभत भयउमरालइव, संभुसहित कैलास ॥ २२ ॥

तुम्हरेकटकमांझ सुनुअंगद \* मोसनभिरिहिकवनजोधावद  
 तवप्रभु नारिविरह बलहीना \* अनुजतासु दुषदुषीमलीना  
 तुम सुग्रीव कुलदुम दोऊ \* अनुजहमार भीरुअतिसोऊ  
 जामवंत मंत्री अति बूढा \* सोकिहोइ अब समरारूढा

सिल्पिकर्मजानहिनलनीला ✽ है कपिएक महाबल सीला  
आवाप्रथमनगरजेहिं जारा ✽ सुनतवचनकहवालिकुमारा  
सत्यवचनकहुनिसिचरनाहा ✽ साँचेहुकीस कीन्ह पुरदाहा  
रावननगर अल्पकपि दहई ✽ सुनिअसवचनसत्यकोकहई  
जो अतिसुभटसराहेहुरावन ✽ सो सुग्रीवकेर लघु धावन  
चलै बहुत सो वीर न होई ✽ पठवाषवरि लेन हम सोई

दो० सत्य नगर कपि जारेउ, विनुप्रभु आयसु पाइ ॥  
फिरिन गएउ सुग्रीवपहिं, तेहिभय रहा लुकाइ ॥  
सत्य कहहि दसकंठ सब, मोहि न सुनि कछुकोह ॥  
कोउन हमारे कटक अस, तोसन लरतजो सोह ॥  
प्रीतिविरोधसमानसन, करिअनीतिअसिआहि ॥  
जौंमृगपतिवधमेहुकन्हि, भलकिकहै कोउताहि ॥  
जद्यपि लघुता राम कहैं, तोहि बधे बड दोष ॥  
तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्रि जाति कर रोष ॥  
वक्रउक्ति धनवचन सर, हृदय दहेउ रिपुकीस ॥  
प्रतिउत्तर सदसिन्ह मनहु, काहतभटदससीस ॥  
हंसिबोलेउ दसमौलि तव, कपिकरबहुगुन एक ॥  
जो प्रतिपालै तासुहित, करै उपाय अनेक २३ ॥

धन्यकीसजोनिजप्रभुकाजा ✽ जहँतहँनाचै परिहरि लाजा  
नाचिकूदिकरि लोग रिझाई ✽ पतिहित करै धर्म निपुनाई  
अंगदस्वामि भक्तवजाती ✽ प्रभुगुनकसनकहसिएहिभांती  
मैगुनगाहक परम मुजाना ✽ तवकदुरटनिकरौंनहिंकाना  
कहकपितव गुनगाहकताई ✽ सत्य पवनसुत मोहि सुनाई

वनविधंसिसुतवाधि पुरजारा \* तदपिनतेहिकछुकृतअपकारा  
 सोइविचारितवप्रकृतिसुहाई \* दसकंधर में कीन्हि छिठाई  
 देषेउँआइजोकछुकपिभाषा \* तुम्हरे लाज न रोपनमाषा  
 जौअसिमातिपितुषाएहुकीसा \* कहिअसबचनहँसादससीसा  
 पितहिषाई पातेउँपुनितोही \* अबहीसमुझिपरा कछुमोही  
 बालिविमलजसभाजनजानी \* हतौँनतोहिअधमअभिमानी  
 कहु रावन रावन जगकेते \* मेंनिजस्रवन सुनेसुनु जेते  
 बलिहिजितनएकगएउपताला \* राषेउवाँधिसिसुन्हहयसाला  
 पेलहिं बालक मारहिं जाई \* दयालागिवलिदीन्हछोडाई  
 एक बहोरि सहस भुज देषा \* धाइधराजिमि जंतुविसेषा  
 कौतुकलागिभवन लै आवा \* सोपुलस्तिमुनिजाइछोडावा  
 दो० एक कहतमोहि सकुच अति रहावालि की काँष ॥

इन्हमहँ रावनतैं कवन, सत्यबदहि तजिमाँष २४॥

सुनुसठ सोइरावनबलसीला \* हरगिरिजानजासुभुजलीला  
 जान उमापति जासु सुराई \* पूजेउँजेहिसुर सुमन चढाई  
 सिरसरोजानेजकरन्हिउतारी \* पूजेउँअमितवार त्रिपुरारी  
 भुजविक्रमजानहिंदिगपाला \* सठअजहँजिन्हके उरसाला  
 जानहिंदिगजउरकठिनाई \* जवजवभिरउँजाइवरिआई  
 जिन्हके दसनकरालनफूटे \* उर लागत मूलकइव दूटे  
 जासुचलतडोलतिइमिधरनी \* चढतमत्तगजजिमिलघुतरनी  
 सोइरावनजगविदितप्रतापी \* मुनेहिनस्रवनअलीकप्रलापी  
 दो० तेहिरावन कहँलघुकहसि, नरकर करसिवषान ॥

रैकपि बरैर पर्वषल, अबजाना तबज्ञान ॥ २५ ॥

सुनिअंगदसकोप कहवानी \* बोलुसँभारिअधम अभिमानि  
सहसबाहुभुज गहन अपारा \* दहनअनलसमजासुकुठारा  
जासुपरसु सागर परधारा \* बूढेनृप अगनित बहुवारा  
तासुगर्व जेहि देषत भागा \* सोनरक्योँ दससीसअभागा  
राममनुज कसरे सठ बंगा \* घन्वी काम नदीपुनि गंगा  
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूपा \* अन्नदान अरु रस पीयूषा  
बैनतेयषग अहिसहसानन \* चिंतामनिपुनिउपल दसानन  
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा \* लाभकिरवुपतिभगति अकुंठा

दो० सेनसहित तबमानमार्थि, वन उजारि पुरजारि ॥

कसरेसठहनुमान कपि, गएउजोतवसुतमारि ॥२६॥

सुनुरावन परिहरि चतुराई \* भजसिन कृपासिंधु रघुराई  
जौषल भएसिरामकरद्रोही \* ब्रह्मरुद्र सकराषि न तोही  
मूढवृथाजनि मारसिगाला \* रामवयर असहोइहि हाला  
तवसिरनिकरकपिन्हकेआगे \* परिहहिं धरनि रामसरलागे  
तेतव सिर कंदुकसमनाना \* पेलिहहिंभालुकीसचौगाना  
जबहिंसमरकोपिहिरघुनायक \* छुटिहहिं अतिकरालबहुसायक  
तबकिचलिहिअसगालतुम्हारा \* अस विचारिभुजरामउदारा  
सुनत बचन रावन परजरा \* जरतमहानल जनु धृतपरा

दो० कुंभकरन असबंधुमम, सुतप्रसिद्ध सकारि ॥

मोरपराक्रमनहिंसुनेहि, जितेउँचराचरझारि ॥२७॥

सठ साषामृग जोरि सहाई \* बाँधा सिंधु इहै प्रभुताई  
नाघहिं षग अनेक बारीसा \* मूरनहोहिते सुनु सठकीसा



ममभुज सागर बलजलपूरा \* जहं बूटेबहु सुरनर मूरा  
 बीसपयोधि अगाध अपारा \* कोअमवीर जो पाइहिपारा  
 दिगपालन्ह में नीर भरावा \* भूपसुजस पलमोहिं सुनावा  
 जौपैसमरसुभट तब नाथा \* पुनिपुनिकहसिजासुगुनगाथा  
 तबवसीठपठवतकोहि काजा \* रिपुसनप्रीतिकरतनहिं जाजा  
 हरिगिरिमथननिरषि ममबाहू \* पुनिसठकपिनिज प्रभुहिसराहू

दो० मूरकवन रावन सरिस, स्वकर काटि जेहिसीसै ॥

हुने अनलअतिहरष बहु, बारसाषि गौरीस २८ ॥

जरतबिलोके उँजवहिं रूपाला \* विधिकेलिषेअंकनिजभाला  
 नरकेकर आपन वध बाँची \* हसे उँजानिविधिगिराअमाँची  
 सोउमनसमुझिनासनहिंभारे \* लिषाविरंचिजरठ मतिभारे  
 आनवीरबल सठ ममआगे \* पुनिपुनिकहसि लाजपतित्यागे  
 कहअंगद सलज्जजगमाहीं \* रावनतोहिसमानकोउनाहीं  
 लाजवंततव सहज सुभाऊ \* निजमुपनिजगुन कहसिनकाऊ  
 सिरअरु सैलकथा चितरही \* ताते बार बीस तैं कही  
 सोभुजबल रापेहु उरघाली \* जीतेहु सहसबाहु बलिवाली  
 सुनु मतिमंद देहि अबपूरा \* काटेसीस कि होइ असूरा  
 इंद्रजालिकहँकहिअन बीरा \* काटइनिजकर सकलसरीरा

दो० जरहि पतंग मोहवस, भार वहहिं परबृंद ॥

तेनहिं मूर कहावहिं, समुझि देषु मतिमंद ॥ २९ ॥

अवजनिवतवढावपल करही \* सुनुममवचनमानपरि हरही  
 दसमुखमैन वसीठी आएउ \* असविचारिरघुवीर पठाएउ

बारबार अस कहइ कृपाला ✽ नहिंगजारिजसवधेसृकाला  
मनमहंसमुशिवचन प्रभुकेरे ✽ सहेउँ कठोर वचन सठतेरे  
नाहितकरि सुषभंजन तोरा ✽ लैजातेउँ सीताहि वरजोरा  
जानेउँतबवलअधम सुरारी ✽ मूनेहरि आनिहि परनारी  
तै निसिचर पतिगर्व बहूता ✽ मैरयुपति सेवक करदूता  
जौनराम अपमानहिं उरऊँ ✽ तोहिदेपतअसकौतुककरऊँ  
दो० तोहिपटकिमहि सेनहति, चौपटकरि तबगाउँ ॥

तबजुवतिन्हसमेतसठ, जनकसुतहिलैजाउँ ॥ ३० ॥

जौ असकरोँ तदपिनबडाई ✽ मुएहिवधेनाहिकहु मनुसाई  
कौलकामबस कृपिनविमूढा ✽ अतिदरिद्रअजसीअतिबूढा  
सदा रोग बस संतत क्रोधी ✽ बिशुबिसुषश्रुतिसंतविरोधी  
तनपोषक निंदक अधपानी ✽ जीवतसब समचौदह प्रानी  
असविचारिषलवधउँनतोही ✽ अवजनिरिसउपजावसिमोहा  
सुनिसकोप्रकहानिसिचरनाथा ✽ अधरदसनदसिमीजतहाथा  
रेकपिअधममरनअबचहसी ✽ छोटेबदन बातबडि कहसी  
कटुजल्पसिजडकपिबलजाके ✽ बलप्रताप बुधितेजन ताके  
दो० अगुनअमान जानितेहि, दीन्हपितावनवास ॥

सोदुषअरुजुवतीविरह, पुनिनिसिदिनममत्रास ॥

जिन्हकवलकर गर्वतोहि, अइसेमनुजअनेक ॥

पाहिंनिसाचरदिवसनिशि, मूढसमुश्रुतजिटैक ३० ॥

जवतेहिंकीन्ह रामकै निंदा ✽ क्रोधवंतअतिभएउकपिंदा  
हरिहर निंदासुने जो काना ✽ होतपाप गोघात समाना  
कटकटानकपिकुंजर भारी ✽ दुहुं भुजदंढतमकिमहिमारी

डौलतधरनि सभासद पसे \* चलेभाजि भयमारुत ग्रसे  
 गिरत सँभारिउठादसकंधर \* मृतलपरे मुकुटअति सुंदर  
 कछुतेहिलैनिजसिरन्हिसवारे \* कछुअंगद प्रभुपास पवारे  
 आवतमुकुट देषिकपिभागे \* दिनहींलूकपरन विधिलागे  
 की रावन करिकोप चलाए \* कुलिसचारिआवतअतिधाए  
 कहप्रभुहंसिजनिहृदयडेराहू \* लूकनअसनिकेतुनहिं राहू  
 ए किरीट दसकंधर केरे \* आवतवालि तनयके प्रेरे

दो० तरकि पवनसुत करगहेउ, आनि धरे प्रभुपास ॥

कौतुक देषहिं भालुकपि, दिनकर सरिस प्रकास ॥

उहाँ सकोप दसानन, सबसन कहत रिसाइ ॥

धरहुकपिहिधरिमारहु, सुनिअंगदमुमुकाइ ॥ ३१ ॥

एहिविधिवेगिसुभटसवधावहु \* पाहुभालुकपिजहँजहँपावहु  
 मर्कटहीन करहु महिजाई \* जिअतधरहु तापस दौभाई  
 पुनिसकोप बोलेउजुवराजा \* गालवजावत तोहि नलाजा  
 मरुगरकाटिनिलजकुलघाती \* बलविलोकिविहरतिनाहछाती  
 रेत्रिय चोर कुमारग गामी \* षलमलरामिभंदमतिकामी  
 सन्यपात जलपसि दुवाँदा \* भयेमिकालवसषलमनुजादा  
 याको फल पावहुगे आगे \* वानरभालु चपेटन्हि लागे  
 राममनुजबोलत अमिवानी \* गिरहिंनतवरसनाअभिमाना  
 गिरिहहिंसना समय नाही \* मिरन्हिसमेतममरमहिमाहीं

सो० मोनरक्यों दसकंध, बालि बध्योजेहिंएकसर ।

बीसहुलोचनअंध, धिगतवजन्मकुजातिजड ॥

तबसोनितकी प्यास, तृषितरामसायकनिकर ।  
तजौं तोहितोहिवास, कटुजल्पकनिसिचरअधम३२॥

मैंतब दसन तोरिवेलायक \* आएसुमोहिनदीन्हधुनायक  
असिरिसहोतिदसौमुखतोरौं \* लंकागहि समुद्रमहैं वोरौं  
गूलरिफल समान तवलंका \* बसहुमध्यतुम्हजंतु असंका  
मैं वानर फट पातन वारा \* आयतु दीन्हनराम उदारा  
जुगुतिसुनत रावन मुसुकाई \* मूढसिपिहिकहैं बहुतझुठाई  
वालिनकबहुं गालअसमारा \* मिलितपसिन्हतैंभएसिलवारा  
सांचहु मैं लवार भुजबीहा \* जौन उपारिउतबदसजीहा  
समुझिरामप्रतापकपिकोपा \* सभामाँझपनकरि पदरोपा  
जउंममचरनसकसिसठटारी \* फिरहिं राम सीता मैं हारी  
सुनहुसुभटसबकहदससीसा \* पदगहि धरनिपछारहुकीसा  
इंद्रजीत आदिक बलवाना \* हरषिउठे जहंतहंभटनाना  
अहटहिंकरिबलविपुलउपाई \* पदनटरै बैठहिंसिर नाई  
पुनिउठिअपटहिंसुरआराती \* टरैनकीसचरन एहिभाँती  
पुरुषकुयोगी जिमिउरगारी \* मोहबिटपनहिसकहिउपारी  
दो० कोटिन्ह मेघनाद सम, सुभट उठे हरषाई ॥

अपटहिं टरै न कपिचरन, पुनि बैठहिं सिरनाइ ॥

भूमिनछाडतकपि चरन, देषत रिपु मद भाग ॥

कोटिबिघ्नतेसंतकर, मनाजिमिनीतिनत्याग ॥ ३३ ॥

कपिवलदोषि मकलहियहारै \* उठाआपुकपि के परचारै  
गहतचरन कहवालिकुमारा \* ममपदगहेन तोर उवारा  
गहसिन रामचरन मठजाई \* सुनतफिरामन अतिसकुचाई



भयउ तेज हत श्री सब गई \* मध्यदिवस जिमि ससिसोहई  
 सिंहासन बैठेउ सिरनाई \* मानहुंसंपति सकल गँवाई  
 जगदात्मापान पतिरामा \* तासुविमुषकिमिलह बिस्रामा  
 उमारामकीभृकुटिविलासा \* होइ विस्वपुनि पावइनासा  
 तूनतेकुलिसकुलिसतूनकरई \* तासुदूत पनकहुकिमिटरई  
 पुनिकपिकहीनीतिविधिनाना \* माननताहि कालनिअराना  
 रिपुमदमथिप्रभु गुजस गुनायो \* यहकहिचल्योवालि नृपजायो  
 हतौन पेत पेलाइ पेलाई \* तोहिअबहिं काकरों बडाई  
 प्रथमहितासुतनयकपिमारा \* सोसुनिरावन भयउ दुषारा  
 जातुधान अंगद पनदेषी \* भद्रव्याकुलसब भएबिसेपी

दो० रिपुबलधरपि हरषिकपि. बालितनयवलपुंज मा० प० २४

पुलक सरीर नयन जठ, गहेराम पदकंज ॥

सांझजानि दसकंधर, भवन गएउबिलपाइ ॥ नवाइ ॥

मन्दोदरी रावनहि, बहुरिकहा समुझाय ॥ ३४ ॥

कंतसमुझिमनतजहु कुमतिही \* सोहन समरतुम्हहि रघुपतिही  
 रामानुज लघुरेष पचाई \* सोउनहिंनाँघेहुअसि मनुमाई  
 पियतुम्हताहिजितवसंग्रामा \* जाकेदूत केर यह कामा  
 कौतुक सिंधुनाधि तबलंका \* आएउ कपिकेहरी असंका  
 रषवारे हतिविपिन उजारा \* देपततोहि अक्षतेहिं मारा  
 जारिसकलपुरकीन्हेसिलारा \* कहाँरहा बलुगर्व तुम्हारा  
 अबपतिमृषागालजनिमारहु \* मोरकहाकछु हृदयविचारहु  
 पतिरघुपतिहिनृपतिजनिमानहु \* अग जगनाथ अतुलबल जानहु  
 बान प्रताप जान मारीचा \* तासुकहानहिं मानेहिनीचा

जनकसभाअगिनितभुअपाला \* रहेतुम्हौवलअतुल विसाला  
भजिधनुषजानकी विआही \* तवसंग्रामजितेहु किनताही  
सुरप ते सुतजानै वल थोरा \* राषाजियतआँपि एकफोरा  
सूपनषाके गतितुम्ह देषी \* तदपिहृदयनाहिलाजविसेषी  
दो० बधिविराधपरदूषनहि, लीला हत्यो कबंध ।

बालिएकसरमारयो, तेहिजानहुदसकंध ॥ ३५ ॥

जेहिजलनाथ बंधाएउहेला \* उतरेप्रभु दलसहित सुबेला  
कारुनीक दिनकरकुल केतू \* दूतपठाएउ तव हित हेतू  
सभामाँझ जेहेतव बलमथा \* करिवरूथमहँ मृगपतिजथा  
अंगदहनुमत अनुचर जाके \* रनवाँकुरे बीर अति वाँके  
तेहिकर्हापयपुनिपुनिनरकहहू \* सुधामान ममता मद वहहू  
अहहकंत कृतराम विरोधा \* कालविवसमनउपजनबोधा  
कालदंडगाहि काहुन मारा \* हरै धर्म बलबुद्धि विचारा  
निकटकालजेहिआवतसाँई \* तेहिभ्रमहोइ तुम्हारेहिनाँई  
दो० दुइसुतमारे दहेउपुर, अजहुँ पूरपियदेहु ॥

कृपासिंधुरघुनाथभजि, नाथविमल जसरेहु ॥ ३६ ॥

नारिवचनसुनिविसिषममाना \* सभागएउ उठिहोतबिहाना  
बैठजाइ सिंघासन फूली \* अतिअभिमानत्राससबभूली  
इहाँराम अंगदहि बोलावा \* आइ चरन पंकज सिरनावा  
अति आदर समीप बैठारी \* बोलेबिहंसि कृपाल परारी  
बालितनयकोतुकअतिमोही \* तातसत्य कहूछुँ तोही  
रावन जातुधान कुलटीका \* भुजबलअतुलजासुजगलीका  
तासुमुकुट तुम्हचारिचलाए \* कहहुतातकवनी विधिपाए

सुनुसर्वज्ञ प्रनत सुषकारी \* मुकुटनहोहिं भूपगुन चारी  
मामदाम अरुदंड विभेदा \* नृप उरवमहिं नाथ कह वेदा  
नीति धर्मके चरन सुहाए \* असजिय जानि नाथ पहिं आए

दो० धर्महीन प्रभुपद विमुष, काल विवसदससीस ॥

तेहि परिहरि गुन आए, सुनहु कोसलाधीस ॥

परम चतुरताश्रवन सुनि, हिहंमे राम उदार ॥

समाचार पुनि सब कहै, गढ़के बालिकुमार ३७ ॥

रिपुके समाचार जब पाए \* रामसचिव सब निकट बोलाए  
लंका बाँके चारि दुआरा \* केहिविधिलागि अ हरहु विचारा  
तब कपीसरि चले मविभीषन \* सुमिरि हृदय दिनकर कुलभूषन  
करि विचारति न्हमंत्र दृढावा \* चारि अनीक पिकटक बनावा  
जथा जोग सेनापति कीन्है \* जूयस कल बोलि तब लीन्है  
प्रभुप्रताप कहि सब समुझाए \* सुनिकपि सिंहनाद करि धाए  
हरषित रामचरन सिरनावहिं \* गहिगिरि सि परवीर सब धावहिं  
गर्जहिं तर्जहिं भालुकपीसा \* जयरवुवीर कोसलाधीसा  
जानत परमदुर्ग अतिलंका \* प्रभुप्रताप कपि चले उअसंका  
घटाटोप करि चहुँदिसिधेरी \* मुपहिनिमान बजावहिं भेरी  
दो० जयतिराम जयलल्लिमन, जयकपीम सुग्रीव ॥

गज्जहिं सिंहनाद कपि, भालु महाबलसीव ॥ ३८ ॥

लंका भएउ कोलाहल भारी \* सुनादसानन अति अहंकारी  
देषहु बनरन्ह केरि दिठार्ई \* बिहंसिनि साचर सेनबोलाई  
आए कीस काल के प्रेरे \* छुधावंत सब निमिचर मेरे  
अस कहि अट्टाहास सठकीन्हा \* गृहबैठे अहार विधि दीन्हा

सुभटसकलचारिहु दिसिजाहू \* धरिधारिमालुकीस सब षाहू  
उमारावनहिअस अभिमाना \* जिमिटिडिमषगसूतउताना  
चले निसाचर आयसुमांगी \* गहिकरभिंडि पालवरसांगी  
तौमर मुद्गर परसु प्रचंडा \* मूलकृपान परिघरि पंडा  
जिमिअरुनो पलनिकरनिहारो \* धावहिंसठषगमांस अशरी  
चोचभंगदुखतिन्हहिनमूझा \* तिमिधाए मनुजाद अबूझा  
दो० नानायुध सरचापधर, जातु धान बलबीर ॥

कोटकगूरान्हिचढिगए, कोटिकोटिरनधीर ३९

कोटिकगूरान्हि सोहहिंकेसे \* मेरुकेसृंगान्हि जगुघन बैसे  
बाजहिंढोलनिसान जुझाऊ \* सुनिधुनिहोइभटन्हिमनचाऊ  
बाजहिं भेरिनफीरि अपारा \* सुनिकादर उरजाहिं दरारा  
देषिन्हजाइकपिन्हके ठट्टा \* अतिविसालतनभालुसुभट्टा  
धावहिंगनहिनअवघटघाटा \* पर्वतफोरि करहिं गहिवाटा  
कटकटाहिंकोटिन भटगर्जहिं \* दसनओठकाटहिं अतितर्जहिं  
उतरावन इत राम दोहाई \* जयति जयतिजयपरीलराई  
निसिचरसिषरसमूह दहावहिं \* कूदिधरहिंकपिफेरि चलावहिं  
छं० धरि कुधर पंड प्रचंड, मर्कट भालुगढपर डारहीं ॥

झपटहिंचरनगहिपटकिमहिभजिचलतबहुरिपचारहीं  
अतितरलतरुनप्रताप तर्पहिंतमकिगढचढिचढिगए ॥  
कपिभालु चढि मंदिरन्ह जहँतहँरामजसगावतभाए ॥

दो० एक एक निसिचर गहि, पुनिकपिचले पराइ ॥  
ऊपर आपुहेठभट, गिरहिधरनि पर आइ ॥ ४० ॥

रामप्रताप प्रबल कपिजूथा \* मर्दहिंनिसिचरसुभटवरूथा



चढे दुर्ग पुनि जहंतहं बानर \* जयरघुवीर प्रताप दिवाकर  
 चले निमाचर निकर पराई \* प्रबलपवनजिमिघन समुदाई  
 हा हा कार भएउ पुरभारी \* रोवहिं बालक आतुर नारी  
 सब मिलिदेहिं रावनहिंगारी \* राजकरत एहिमृत्यु हंकारी  
 निजदलविचलसुनीतेहिकाना \* फेरिसुभट लंकेस रिसाना  
 जोरन विमुख फिरामैं जाना \* सोमैं हतव कराल कृपाना  
 सर्वसषाड भोग करिनाना \* समरभूमिभए बल्लभप्राना  
 उग्रवचनसुनि सकलडेराने \* चलेक्रोधकरि सुभट लजाने  
 सन्मुख मरन वीरकै सोभा \* तबतिन्हतजाप्रानकरलोभा  
 दो० बहु आयुध धरसुभटसब, भिरहिं पचारि पचारि ॥

व्याकुलकिएभालुकपि, परिघात्रिमूलान्हमारि ॥ ४१ ॥

भयआतुर कपि भागनलागे \* जद्यपिउमाजीतिहहिं आगे  
 कोउकहकहँअंगदहनुमंता \* कहँनलनील दुविदबलवंता  
 निजदलविकलसुनाहनुमाना \* पालिमं द्वार रहा बलवाना  
 मेघनाद तहँ करै लराई \* टूटन द्वार परम कठिनाई  
 पवनतनयमनभाअतिक्रोधा \* गर्जेउप्रलयकालसमजोधा  
 कूदिलंक गढ ऊपर आवा \* गहिगिरिमेघनाद कहँधावा  
 भंजेउ रथ सारथी निपाता \* ताहिहृदय महँमारोसिलाता  
 दुसरे मूत विकल तेहिजाना \* स्यंदनघालितुरतगृह आना  
 दो० अंगद सुना पवनसुत, गढपर गएउ अकेल ॥

रनबाँकुरा बालिसुत, तरकिचढेउकपि षेल ॥ ४२ ॥

जुद्ध विरुद्ध क्रुद्ध द्यौ बंदर \* रामप्रतापसुमिरि उरअंतर  
 रावन भवन चढे द्यौ धाई \* करहिं कोसलाधीस दोहाई

कलससहितगाहिभवनढहावा \* देषिनिसाचर पतिभयपावा  
नारि वृंदकर पीटहिं छाती \* अब दुइ कपिआएउतपाती  
कपिलीलाकरितिन्हहिडेरावहिं \* रामचंद्रकर सुजस सुनावहिं  
पुनि करगाहि कंचन केषंभा \* कहेन्हिकरिअउतपातअरंभा  
गर्जि परेरिपु कटक मझारी \* लागे मर्दइभुज बल भारी  
काहुहिलात चपेटन्हि केहू \* भजहुन रामहिसोफल लेहू  
दो० एक एकसो मर्दहिं, तोरि चलावहिं मुंड ॥

रावनआगेपरहिते, जनु फूटहिंदधिकुंड ॥ ४३ ॥

महामहा मुषिआजे पावहिं \* तेपदगाहि प्रभुपासचलावहिं  
कहइविभीषनतिन्हकेनामा \* देहिराम तिन्हहूँ निजधामा  
पलमयुजादहिजामिषभोगी \* पावहिंगति जोजाचतजोगी  
उमाराममृदुचितकरुनाकर \* वयरभावमुमिरत मोहिनिसिचर  
देहिंपरमगतिसोजियजानी \* असकृपाल कोकहहुभवांनी  
असप्रभुसुनिनभजहिंभ्रमत्यागी \* नरमति मंदतेपरम अभागी  
अंगद अरु हनुमंत प्रवेसा \* कीन्ह दुर्गअसकह अवधेसा  
लंका द्वौ कपि सोहहिं कैसे \* मथहि सिंधुदुइ मंदरजैसे  
दो० भुजवलरिपुदलदल मलि, देषि दिवसकर अंत ॥

कृदेजुगलविगतस्रम, आएजहं भगवन्त ॥ ४४ ॥

प्रभुपदकमलसीसतिन्हनाए \* देषिसुभट रघुपति मनभाए  
रामकृपाकरि जुगलनिहारें \* भएविगत स्रमपरम सुषारें  
गए जानि अंगद हनुमाना \* फिरेभालु मर्कट भटनाना  
जातुधान प्रदोष बलपाई \* धाएकरि दससीस दोहाई  
निसिचरअनीदोषिकपिफिरे \* जहंतहं कटकटाइभटाभिरे

द्वौ दलप्रबल पचारि पचारी \* लरतसुभटनहिंमानहिंहारी  
 महावीर निसिचर सबकारे \* नाना बरन बलीमुष भारे  
 सबलजुगलदलसमबलजोधा \* कौतुककरतलरतकरिक्रोधा  
 प्राबिट सरद पयोद घनेरे \* लरत मनहु मारुतके प्रे  
 अनिपअकंपनअरुअतिकाया \* विचरुतसेनकीन्हि इन्हमाया  
 भएउनिमिषमहँअतिअंधियारा \* वृष्टि होइ रुधि रोपल छारा  
 दो० देषिनिबिडतमदसहादिसि, कपिदलभएउषभार ॥

एकहिएकनदेषई, जहँतहँकरहिंपुकार ॥ ४५ ॥

सकलमरमरघुनायकजाना \* लिएबोलि अंगद हनुमाना  
 समाचार सबकहि समुझाए \* सुनतकोपिकपि कुंजरधाए  
 पुनिकृपालहँसिचापचढावा \* पावक सायकसपदिचलावा  
 भएउप्रकासकतहुँतमनाहीं \* ज्ञानउदयजिमिसंसयजाहीं  
 भालु बलीमुष पाई प्रकासा \* धाएहरषि विपत समत्रासा  
 हनूमान अंगद रन गाजे \* हाँकसुनत रजनीचर भाजे  
 भागतभटपटकहिं धरिधरनी \* करहिं भालुकपि अद्भुतकरनी  
 गहिपदडारहिं सागर माहीं \* मकरउरगक्षधरिधरिषाहीं  
 दो० कछु मारे कछु घायल, कछु गढ चढे पराइ ॥

गर्जहिं भालु बलीमुष, रिपुदलबल विचलाइ ॥ ४६ ॥

निसाजानिकपि चारिउअनी \* आएजहाँ कोसला धनी  
 रामकृपाकरि चितवाजबहीं \* भएविगत समवानर तबहीं  
 उहाँदसानन सचिव हँकारे \* सबसनकहोसि सुभटजेमारे  
 आधा कटककपिन संघ रा \* कहहुवेगिकाकरिअविचारा  
 माल्यवंतअतिजरठनिसाचर \* रावन मातु पिता मंत्रीवर

बोलावचननीतिअतिपावन ✽ सुनहुतातकछुमोरसिपावन  
जबते तुम्ह सीताहरिआनी ✽ असगुनहोहिंनजाहिंवषानी  
बेद पुरान जासु जस गायो ✽ रामबिमुषकाहु न सुषपायो  
दो० हिरन्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥

जेहि मारे सोइ अवतरेउ, कृपा सिंधु भगवान ॥

कालरूप पलवन दहन, गुनागार घन बोध ॥

सिवविरंचिजेहिसेवहिं, तासों कवन विरोध ॥ ४७ ॥

परिहरि बयर देहु बैदेही ✽ भजहुकृपानिधि परमसनेही  
ताके बचन वान सम लागे ✽ करिआमुहँकरिजाहिअभागे  
बूढभएसि नतमरतेउँ तोही ✽ अबजनिनयनदेषावसिमोही  
तेहिंअपनेमनअसअनुमाना ✽ बध्योचहतएहिकृपानिधाना  
सोउठिगयउ कहत दुर्वादा ✽ तबसकोप बोलेउ घननादा  
कौतुक प्रात देषिअहु मोरा ✽ करिहौंबहुत कहों का थोरा  
सुनिसुतबचनभरोसाआवा ✽ प्रीति समेत अंक बैठावा  
करतविचारभएउभितुसारा ✽ लागेकपि पुनि चहँ दुआरा  
कोपिकपिन्ह दुर्घट गढघेरा ✽ नगरकोलाहल भएउघनेरा  
विविधायुधधरनिसिचरधाए ✽ गढते पर्वत सिषर ढहाए  
छं० ढाहेमहीधरसिषरकोटिन्हविविधविधिगोलाचले ॥

घहरातजिमिपविपात गर्जतजनुप्रलयके बादले ॥

मर्कटविकटभटजुटतकटतनलटततनजर्जरभए ॥

गहिसेलतेहिगढपरचलावाहिंजहँसोतहँनिसिचरहए ॥

दो० मेघनाद सुनिस्रवन अस, गढपुनि छेका आइ ॥

उतरयो वीर दुर्गते, सन्मुष चल्यो बजाइ ४८ ॥



कहँ कोसअधीस द्वौ भ्राता \* धन्वीसकललोक विष्ण्याता  
 कहँ न ऊनीलशुविद सुग्रीवा \* अंगद हनुमंत बल सीवा  
 कहाँ बिभीषन भ्राता द्रोही \* आजसवाहिहठि मारौं ओही  
 असकहिकठिनवानसंधाने \* अतिसयक्रोधस्रवनलगिताने  
 सर समूह सो छाड़ै लागा \* जनुसपत्न धावहिं बहुनागा  
 जहँतहँ परतदेषिअहि बानर \* सन्मुषहोइनसकेतोहिअवंसर  
 जहँतहँ भागिचऊँकपिरीछा \* विसरी सवाहि युद्धकै ईछा  
 सो कपिभालु नरनमइंदेषा \* कीन्हैसिजेहिनप्राणअवसेषा  
 दो० दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर ॥

सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बल धीर ॥४९॥

देषिपवनसुतकटक बेहाला \* क्रोधवंत जनुवायेउ काला  
 महासैल एक तुरत उपारा \* अतिरिस मेघनाद परडारा  
 आवत देषि गयो नभ सोई \* रथ सारथी तुरग सब षोई  
 बार बार पचार हनुमाना \* निकटनआवमरमसोजाना  
 रघुपतिनिकटगएउघननादा \* नाना भांतिकहोसि दुर्वादा  
 अस्र सस्र आयुध सब डारे \* कौतुक्हीं प्रभुकाटि निवारे  
 देषिप्रताप मूढ पिसिआना \* करैलागमाया विधि नाना  
 जिमिकोउकरै गरुडसँषेला \* डरपावै गहिस्वलप सपेला  
 दो० जासु प्रबल माया बस, सिब विरंचि बड छोट ।

ताहि देषावै निसिचर, निजमायामतिषोट ॥ ५० ॥

नभचढिवरषविपुल अंगारा \* महितेप्रगट होंहिं जलधारा  
 नानाभांति पिसाचपिसाची \* मारुकाटुधुनिबोलहिं नाची  
 विष्टा पूयरुधिर कचहाडा \* वरषइकबहुं उपलबहुछाडा

वरपिधूरिकीन्हेसिआंधियारा \* मूझन आपन हाथ पसारा  
कपि अकुलाने माया देषे \* सबकरमरन बनाएहि लेषे  
कौतुक दंपिराम मुसुकाने \* भएसभीतसकल कपिजाने  
एक बान काटी सब माया \* जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया  
कृपादृष्टि कपिभालुवि श्रोके \* भएप्रबल रनरहहिं नरोके  
दो० आयसु मांगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ ॥  
लछिमन चले कुद्धहोइ, बान सरासन हाथ ॥ ५१ ॥

छतजनयन उरबाहु विसाला \* हिमिगिरिनिभतनकछुएकलाला  
उहाँ दसानन सुभट पठाए \* नाना अस्र सस्त्रगाहि धाए  
भूधर नष बिटपाधुध धारी \* धाए कपि जयराम पुकारी  
भिरेसकल जोरी सनजोरी \* इतउतजयइच्छानहिंथोरी  
मुठिकन्हलातन्हगांतन्हकाटहि \* कपिजयसीलमारिपुनिडाटहि  
मारु मारु धरुधरु धरुमारु \* सीसतोरि गहिभुजा उपारु  
असिरव पूरिही नव पंडा \* धावहिं जहँतहँरुंड प्रचंडा  
देषहिं कौतुक नभसुर वृंदा \* कबहुँकविसमयकबहुँअनंदा  
दो० रुधिर गाढभारिभरि जम्यो, ऊपर धूरिउडाइ ।

जनुअंगाररासिन्हपर मृतकधूमरह्योछाइ ॥ ५२ ॥  
घायलवीर विराजहिं कैसे \* कुमुमितकिंसुककेतरु जैसे  
लछिमन मेघनाद दौजोधा \* भिहिंपरसपरकरिअतिक्रोधा  
एकहि एकसकै नाहिं जीती \* निसिचरछलबलकरैअनीती  
क्रोधवंत तब भएउ अनंता \* भजेउ रथ सारथी तुरंता  
गाना विधि प्रहारकर सेषा \* राक्षस भएउ प्रानअवसेषा  
वनसुतानिजमनअनुमाना \* संकटभएउहरिहिममप्राना

बीर घातिनी छाडिसिसांगी \* तेजपुंजलछिमन उर लागी  
मुरुछा भईमात्तिके लागे \* तबचालिगएउनि कट भयत्यागे

दो० मेगनाद समकोटि सत, जोधा रहे उठाइ ॥

जगदाधार सेषकिमि, उठइ चले पिसिआइ ॥ ५३ ॥

सुनुगिरिजा क्रोधानलजामु \* जारैभुवन चारि दसआसु  
सक संग्राम जीतिको ताही \* सेवहिसुरनर अगजगजाही  
यह कौतूहल जानै सोई \* जापर कृपा रामकी होई  
संध्या भई फिरी दौ बाहनी \* लगेसंभारननिजनिजअनी  
व्यापकब्रह्मअजितभुवनेस्वर \* लछिमनकहाँ धूझकरुनाकर  
तबलगिलै आएउ हनुमाना \* अनुजदेषिप्रभुअतिदुषमाना  
जामवंत कह बैद सुषेना \* लंकारह को पठई लेना  
धरि लघुरूपगएउ हनुमंता \* आनेउभवन समेत तुरंता

दो० राम पदार बिंद सिर, नाएउ आइ सुषेन ॥

कहा नामगिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५४ ॥

रामचरन सरसिज उरराषी \* चलाप्रभंजन सुतबल भाषी  
उहाँदूत एक मरम जनावा \* रावनकाल नेमिगृह आवा  
दसमुष कहामरमतोहेसुना \* पुनिपुनिकालनेमिसिरधुना  
देषततुम्हीहैनगरजैहिंजारा \* तासुपंथ को रोकन पारा  
भजिरघुपतिकरुहितआपना \* छाँडहु नाथ मृषा जल्पना  
नीलकंज तन सुंदर स्यामा \* हृदय राषु लोचनाभिरामा  
में तैं मोर मूढता त्यागू \* महामोह निसि मूततजागू  
कालब्याल करभक्षक जोई \* सपनेहुसमरकिजीतिअसोई

दो० सुनि दसकंठ रिसानअति, तेहिमनकीन्ह विचार ॥

रामदूत कर मरौवरु, येहपल रतमल भार ५५ ॥

असकहिचलारचिसिमगमाया ✽ सरमांदिर वरवाग बनाया  
मारुतसुतदेषा सुभ आश्रम ✽ मुनिहिबूझि जलपिअउँजाइश्रम  
राछस कपट वेषतहँ सोहा ✽ मायापति दूतहिचह मोहा  
जाइ पवनसुत नाएउमाथा ✽ लाग सो कहै रामगुन गाथा  
होतमहा रनरावन रामहि ✽ जितिहहिंरामनसंसय यामहि  
इहाँ भए भैं देषों भाई ✽ ज्ञानदृष्टिबलमोहिआधिकाई  
माँगाजलतेहिदीन्हकमंडल ✽ कहकपिनहिँअघाउँ थोरैजल  
सरमज्जनकरि आतुरआवहु ✽ दिक्षादेउँ ज्ञान जेहि पावहु

दो० सरपैठतकपि पदगहा, मकरी तव अकुलान ॥

मारीसोधरिदिव्यतन, चलीगगन चढिजान ५६ ॥

कपितबदरसभइउँनिःपापा ✽ मिटातातमुनिवर करसापा  
मुनिनहोइयह निसिचरघोरा ✽ मानहुसत्य वचनकपिमोरा  
असकहिगई अपछराजबहीं ✽ निसिचरनिकटगएउकपितबहीं  
कहकपि मुनिगुरदक्षिनालेहू ✽ पाछे हमहिंमंत्र तुम्ह देहू  
सिर लंगूर लपेटि पछारा ✽ निजतन प्रगटोसि मरतीबारा  
रामरामकहिछाँडेसि प्राणा ✽ मुनिमनहरषिचलेउ हनुमाना  
देषा सैलन औषध चीन्हा ✽ सहसाकपिउपारि गिरिलीन्हा  
गहिगिरिनिसिनभधावतभएऊ ✽ अवधपुरीऊपर कपि गएऊ

दो० देषाभरत बिसालअति, निसिचरमन अनुमानि ॥

बिनुफर सायकमारेउ, चापश्रवनलगितानि ५७ ॥

परेउसुरुछिमहि लागतसायक ✽ सुमिरत रामराम रघुनायक



मुनिप्रियवचनभरत तवधाए \* कपिसमीपअति आतुरआए  
 विकलविलोकिकीमउरलावा \* जागतनहिं बहुभाँतिजगावा  
 मुषमलीन मनभए दुषारी \* कहतवचनभरि लोचनवारी  
 जेहिबिधिरामबिमुषमोहिकीन्हा \* तेहिपुनियहदारुनदुषदीन्हा  
 जौं मोरेमनवच अरुकाया \* प्रीतिरामपदकमल अमाया  
 तौकपिहोउविगतश्रममूला \* जौं मोपररघुपाति अनुकूल  
 सुनतवचनउठिबैठकपीमा \* कहिजयजयतिकोसलाधीसा  
 मो० लीन्हकपिहिउरलाइ, पुलकिततन लोचनसजल ॥

प्रीतिनहृदयसमाइ, सुमिरिरामरघुकुल तिलक ५८॥

तातकुसलकहुमुषनिधानकी \* महितअनुजअरुमातु जानकी  
 कपिसवचरितसमानवषाने \* भएदुषी मनमहँ पछिताने  
 अहहदैव मैकतजगजाएउँ \* प्रभुके एकहु काज नआएउँ  
 जानिकुअवँसरमनधरिवोरा \* पुनिकपि मनबोले बलवीरा  
 तातगहरुहोइहितोहिजाता \* काज नसाइहिहोत प्रभाता  
 चढुममसायक मैलसमेता \* पठवउँ तोहिजहँकृपा निकेता  
 सुनिकपिमनउपजाअभिमाना \* मोरेभारचलिहि किमिवाना  
 राम प्रभाव विचारिवहोरी \* बाँदिचरनगाहिकपि करजोरी  
 दो० तव प्रताप उर राषि प्रभु, जैहौं नाथ तुरंत ॥

अस कहि आयसु पाइपद, बाँदि चले हनुमंत ॥

भरत बाहुबल सीलगुन, प्रभु पद प्रीतिअपार ॥

मनमहँजात सराहत, पुनिपुनिपवनकुमार ५९ ॥

उहाँ राम लल्लिमननहिनिहारी \* बोले वचन मनुज अनुहारी  
 अर्धरातिगईकपिनहिआयउ \* रामउठाइ अनुज उरलायउ

सकहुनहुषितदेषिमोहिकाऊ ✽ बंधुसदातवमृदुल सुभाऊ  
 ममहितलागि तजेहुपितुमाता ✽ सहेहुविपिन हिमआतपवाता  
 सो अनुराग कहाँ अबभाई ✽ उठहुनसुनि ममवचविकलाई  
 जों जनतेउँ वनबंधु विछोहू ✽ पितावचनमनतेउँ नहिंओहू  
 सुतवितनारिभवनपरिवारा ✽ होहिंजाहिं जगवारहिं वारा  
 असविचारिजिय जागहुताता ✽ मिलै न जगतसहोदर भ्राता  
 जथापंषविनु षणअतिदीना ✽ मनिविनुफनिकरिवरकरहीना  
 असममजिवनबंधुविनुतोही ✽ जों जडदेव जियावै मोही  
 जैहों अवध कौन मुहँलाई ✽ नारिहेतु प्रियभाइ गँवाई  
 वरुअपजससहतेउँ जगमाहीं ✽ नारिहानि विसेषछातिनाहीं  
 अब अपलोकसोकसुततोरा ✽ सहिहिनिठुरकठोरउरमोरा  
 निज जननी के एक कुमारा ✽ ताततासु तुम्ह प्रानअधारा  
 सोपेसिमोहितुम्हहिगहिपानी ✽ सबविधिसुषदपरमहितजानी  
 उतर काह देहों तेहिजाई ✽ उठिकिनमोहिसिपावहु भाई  
 बहुविधिसोचतसोचबिमोचन ✽ स्रवतसलिलराजिवदललोचन  
 उमा एक अपंड रघुराई ✽ नरगतिभगत कृपाल देषाई  
 सो० प्रभु प्रलाप सुनि कान, विकलभए बानर निकर ॥

आइ गएउ हनुमान, जिमिकरुनामहँवीररस ॥६०॥

हरषिराम भेटेउ हनुमाना ✽ अतिकृतज्ञप्रभुपरमसुजाना  
 तुरतवैद तब कीन्हि उपाई ✽ उठिबैठे लछिमन हरषाई  
 हृदयलाइ प्रभु भेटेउ भ्राता ✽ हरषे सकलभालु कपिब्राता  
 कपिपुनि बैदतहाँ पहुँचावा ✽ जेहिंविधितबहिंताहिलैआवा  
 यहवृतांत दसानन सुनेऊ ✽ अतिविषादपुनिपुनिसिरधुनेऊ

व्याकुलकुंभकरनपहिंआवा \* विविधजतनकरि ताहिजगावा  
जागानिसिचर देखियकैसा \* मानहुकाल देहधरि बैसा  
कुंभकरन बूझा कहु भाई \* काहे तब सुषरहे सुषाई  
कथाकही सबतेहिं अभिमानी \* जेहिप्रकार सीताहरिआनी  
तातकपिन्हसबनिसिचरमारे \* महा महा जोधा संघारे  
दुर्मुष सुररिषु मनुज अहारी \* भटअतिकाय अकंपनभारी  
अपरमहोदर आदिक बीरा \* परे समरमाहि सवरन धीरा  
दो० सुनि दसकंधर वचनतब, कुंभकरन बिलषान ॥

जगदंबाहरिआनिअब, सठ चाहत कल्यान ॥ ६१ ॥

भलनकीन्हतौनिसिचरनाहा \* अबमोहिआइजगएहिकाहा  
अजहूँतातत्यागिअभिमाना \* भजहुराम होइहि कल्याना  
हैं दससीस मनुजरघुनायक \* जाके हनूमान से पायक  
अहह बंधुतैं कीन्हि षोटाई \* प्रथमाहि मोहिनसुनाएहिआई  
कीन्हेउप्रभुबिरोधतेहिदेवक \* सिवविरंचि हरिजाके सेवक  
नारदमुनिमोहिज्ञानजोकहा \* कहतेउँतोहि समय निर्वहा  
अबभरिअंकभेटुमोहिंभाई \* लोचन सुफल करौंमैं जाई  
स्यामगात सरसीरुह लोचन \* देपौंजाइ तापत्रय मोचन  
दो० राम रूपगुन सुमिरत, मगन भएउ छनएक ॥

रावनमाँगेउ कोटिघट, मदअरुमहिषअनेक ॥ ६२ ॥

महिषषाइकरिमदिरापाना \* गर्जा बज्रा घात समाना  
कुंभकरन दुर्मद रन रंगा \* चलादुर्गतजि सेनन संग  
देषिविभीषन आगे आएउ \* परेउचरननिजनामसुनाएउ  
अनुजउठाइहृदयतेहिलायो \* रघुपतिभक्तजानिमनभायो

तातलात रावनमोहि मारा ✽ कहतपरमहित मंत्रविचारा  
तेहिगलानिरधुपतिपहिंआएउं ✽ देषिदीन प्रभुके मनभाएउं  
सुनुसुतभए उकालवसरावन ✽ सोकिमानअवपरम सिषावन  
धन्यधन्य तैंधन्य विभीषन ✽ भएहुतातानिसिचरकुलभूषन  
बंधुवंस तैं कीन्ह उजागर ✽ भजेहुरामसोभा सुष सागर  
दो० वचनकर्ममनकपटतजि, भजेहुरामरनधीर ।  
जाहुननिजपरमूझमोहि, भएउंकालवसवीर ॥ ६३ ॥

बंधुवचनसुनिचलाविभीषन ✽ आएउजहँत्रैलोक विभूषन  
नाथ भूधरा कार सरीरा ✽ कुंभकरन आवत रनधीरा  
एतनाकपिन्हसुनाजवकाना ✽ किलकिलाइ धाए बलवाना  
लिउउाइ विटपअरु भूधर ✽ कटकटाइ डारहिं ताऊपर  
कोटिकोटिगिरिसिपरप्रहारा ✽ करहिभालुकपिएकर वारा  
सुरयो नमनतनदरयो नदरयो ✽ जिमिगजअर्कफलनि कोमारयो  
तवमारुतसुत सुठिकाहन्यो ✽ परयोधरनिब्याकुलसिरधुन्यो  
पुनिउठितोहिंमारेउहभुमंता ✽ घुभिंत भूतल परेउ तुरंता  
पुनिनलनीलहिअवनिपछारेसि ✽ जहँतहँपटकि २ भटडारेसि  
चलीबली सुषसेन पराई ✽ अतिभयत्रसितनकोउसमुहाई  
दो० अंगदादिकपिसुरछित, करिसमेतसुग्रीव ॥  
काँपदाविकपिराजकहँ, चलाअमितवलसीव ॥ ६४ ॥

उमाकरतरधुपति नरलीला ✽ पेलगरुडजिमिअहिगनमीला  
भृकुटि भंगजो कालहिपाई ✽ ताहिकि सोहै ऐसि लराई  
जगपावनिकीरतिविस्तरिहहिं ✽ गाइगाइभवनिधिनरतरिहहिं  
सुरछागइ मारुत सुतजागा ✽ सुग्रीवाहिं तव पोजन लगा



सुग्रीवहँ कै मुरछा बीती \* निबुकिगए उतेहिष्टतकप्रतीती  
 काटेसिदसननासिकाकाना \* गर्जिअकामचले उतेहि जाना  
 गहे उचरनगहि भूमि पछारा \* अतिलाघवउठिपुनि हिमारा  
 पुनिआएउप्रभुपहिंबलवाना \* जयतिजयतिजयकृपानिधाना  
 नाककानकाटे जियजानी \* फिराक्रोधकरिभइमनग्लानी  
 सहजभीमपुनिबिनुश्रुतिनासा \* देषतकपिदलउपजी त्रासा  
 दो० जयजयजयरघुवंसमनि, धाएकपि देहह ।

एकहिवारतासुपर, छाडेन्हिगिरितरुजूह ॥

कुंभकरन रनरंग विरुद्धा \* सन्मुषचला कालजनु क्रुद्धा  
 कोटिकोटिकपिधरिधरिषाई \* जनु टिड्डीगिरि रुहासमाई  
 कोटिन्हगहिसरीर सनमदा \* कोटिन्हमीजिमिलवमहिगदी  
 मुषनासा श्रवनन्हिकीवाटा \* निसरिपराहिंभालुकपिठाटा  
 रनमदमत्त निसाचर दर्पा \* विस्वग्रसिंहजनुएहविधिअर्पा  
 मुरेसुभट सबफिरहिं न फेरे \* मूझन नयन मुनहिं नहिंदेरे  
 कुंभकरनकपिफौजबिडारी \* सुनिधाई रजनीचर धारी  
 देषी राम विकल कटकाई \* रिपुअनीकनाना विधिआई  
 दो० सुनु सुग्रीव विभीषन, अनुज समारेहु सेन ॥

मैं देषों पलबल दलहि, बोले राजिवनयन ॥ ६६ ॥

कर सारंग साजिकटिभाथा \* अरिदलदलनचले रघुनाथा  
 प्रथमकीन्हप्रभुधनुषटंकोरा \* रिपुदलवधिरभयउसुनिसोरा  
 सत्यसंध छाँडे सर लक्षा \* कालसर्प जनुचले सपक्षा  
 जहँतहँ चले विपुल नाराचा \* लगेकटनभटविकटपिसाचा  
 कटहिंचरनउरसिरभुजदंडा \* बहुतकबीर होहिं सतपंडा

धुमिधुमिघायल महि परहीं \* उठिसंभारिसुभटपुनिलरहीं  
लागतवानजलदजिमिगाजहिं \* बहुतकदेषिकठिनसरभाजहिं  
रुंद प्रचंड मुंड विनुधावहिं \* धरुधरुमारुमारुधुनिगावहिं  
दो० छनमहँ प्रभुके सायकन्हि काटे विकट पिसाच ॥  
पुनिरघुवीर निपंगमहँ, प्रविसे सवनाराच ॥ ६७ ॥

कुंभकरन मन दीष विचारी \* हतिछनमाँझ निसाचरधारी  
भाअतिक्रुद्ध महावल वीरा \* कियोमृगनायकनादगंभीरा  
कोपि महीधरलेइ उपारी \* डारै जहँ मर्कट भटभारी  
आवत देषिसैल प्रभु भारे \* सरन्हिकाटिरजसमकरिडारे  
पुनिधनुतानिकोपिरघुनायक \* छाँडेअति करालबहु सायक  
तनमहँप्रविसिनिसरिसरजाहीं \* जिमिदामिनिघनमाँझसमाहीं  
सोनित श्रवत सोहतनकारे \* जनुकज्जल गिरिगेरुपनारे  
विकलविलोकिभालु कपिधाए \* विहँसाजवहिंनिकटकपिआए  
दो० महा नाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस ॥  
महिपटकै गजराजइव, सपथ करैदससीस ३८ ॥

भागे भालु वलीसुष जूथा \* वृकविलोकिजिमिमेषवरूथा  
चलेभागिकपि भालुभवानी \* विकल पुकारत आरतवानी  
यहनिमिचरहुकालसमअहई \* कपिकुलदेसपरन अवचहई  
कृपा बारिधरराम परारी \* पाहि पाहि प्रनतारतिहारी  
सकरुनवचनसुनतभगवाना \* चलेसुधारि सरासन बाना  
रामसेन निज पाछे घाली \* चले सकोप महावल साली  
पैचि धनुष सरसत संधाने \* छूटे तीर सरीर समाने  
लागत सरधावा रिस भरा \* कुधरडगमगत डोलतिधरा

लीन्हएकतेहि मैल उपाटी \* रघुकुलतिलकमुजामोड़काटी  
धावा बाँम बाहुँ गिरिधारी \* प्रभुसो उमुजाकाटिमहिपारी  
काटे मुजा मोहपल कैसा \* पक्षहीन मंदर गिरि जैसा  
ऊग्रबिलोकनिप्रभुहिविलोका \* ग्रमन चहत मानहु त्रैलोका

दो० करिचिक्कारघोरआति धावा वदनपमारि ।

गगनसिद्धसुरत्रासित हा हा होतिपुकारि ६० ॥

सभयदेवकरुनानिधिजान्यौ \* स्रवनप्रजंतसरासन तान्यौ  
विसिपानिकरनिमिवरमुपभरेऊ \* तदपि महाबल भूमिनपरेऊ  
सरन्हिभरामुषमन्मुष धावा \* कालत्रोने मजीवजनु आवा  
तवप्रभुकोपितीव्रसरलीन्हा \* धरते भिन्नतासुमिर कीन्हा  
सोसिरपरेउ दमानन आगे \* विकल भएउजामफनिमानित्यागे  
धरनि धसै धरधाव प्रचंडा \* तवप्रभुकाटि कीन्हदुइषंडा  
परेभूमिजामि नभते भूधर \* हेठदाविकपिभालुनिसाचर  
तासु तेजप्रभु वदन समाना \* सुरमुनिमवाहिंअचंभवमाना  
सुरदुंदुभी वजावाहिं हरषहिं \* आस्तुतिकरहिंसुमनबहुवरषहिं  
करिविनतीसुरसकलसिधाए \* तेही समय देवरिषि अए  
गगनो परिहरि गुनगनगाए \* रुचिरवीर रसप्रभु मनभाए  
बेगिहतहु षलकहि मुनिगए \* राम समरमहि सोभतभए

छं० संग्रामभूमिविराजरघुपाति अतुलबलकोशलधनी ॥

श्रमबिंदुमुषराजीवलोचनरुचिरतनसोनितकनी ॥

भुजजुगलफेरतसरसरासनभालुकपिचहुँदिसिवने ॥

कहदासंतुलसी कहिनसकलविसेषजेहिआननघने ॥

दो० निमिचर अधममलाकर, ताहिदीन्ह निजधाम ॥  
गिरिजातेनरमंदमति, जेनभजहिं श्रीराम ॥ ७० ॥

दिनके अंत फिरी द्यौ अनी ✽ समरभईसुभटन्ह समघनी  
रामकृपा कपिदल बलवाढा ✽ जिमितूनपाइलागअतिडाढा  
छीजहिंनिमिचरदिनअरुताती ✽ निजमुषकहेसुकृत जेहिभाँती  
बहु विलाप दसकंधर करई ✽ बंधुसीस पुनि पुनि उरधरई  
रोवहिंनारि हृदयहतिपानी ✽ तासुतेजबल विपुल बषानी  
मेघनादतेहिअवसरआएउ ✽ कहिवहुकथापितासमुझाएउ  
देषेहु कालि मोरि मनुसाई ✽ अबहिंबहुतका करौं बडाई  
इष्टदेव सैं बलरथ पाएउं ✽ सो बलतातनतोहि देषाएउं  
एहि विधि जल्पतभएउबिहाना ✽ चहुँदुआर लागे कपि नाना  
इतकपिभालुकालसमबीरा ✽ उतरजनीचरअति रनधीरा  
लरहिंसुभटनिज निजजयहेतू ✽ बरनिन जाइ समर षणकेतू

दो० मेघनाद माया मय, रथ चढिगएउ अकास ॥

गजैउअट्टहासकरि, भइकपिकटकहिनास ॥ ७१ ॥

सक्तिमूल तरवारि कृपाना ✽ अस्रसस्रकुलि सायुध नाना  
टारै परसु परिघ पाषाना ✽ लागेउ वृष्टि करै बहु बाना  
दसदिसि रहेवान नभ छाई ✽ मानहु मघा मेघ झरिलाई  
धरुधरुमारु सुनिअधुनिकाना ✽ जोमारै तेहि कोउन जाना  
गहिगिरितरुअकासकपिधावहिं ✽ देषहितेहिनदुषित फिरिआवहिं  
अवघटबाटघाटगिरिकंदर ✽ मायाबल कीन्हेसि सरपंजर  
जाहिकहाँव्याकुलभयेबंदर ✽ सुरपाति बाँदि परेउजनुमंदर  
मारुतसुत अंगद नलनीला ✽ कीन्हेसिविकलसकलबलसीला



पुनिलल्लिमनसुग्रीव विभीषन \* सरन्हिमारि कीन्हेसिजर्जरतन  
 पुनि रघुपति में जूझै लागा \* सरछाँदै होइलागहिं नागा  
 व्याल पासवस भए परारी \* स्ववसअनंतएक अविकारी  
 नटइवकपटचरितकरनाना \* सदा स्वतंत्रएक भगवाना  
 रनसोभा लगिप्रभुहिंबंधायो \* नागपास देवन्ह भयपायो  
 दो० गिरिजा जासुनामजपि, मुनिकाटहिं भवपास ॥

मोकि बंधतर आवै, व्यापकविस्व निवास ७२ ॥

चरित रामके सगुनभवानी \* तर्किनजाहिं बुद्धि बलवानी  
 अस विचारि जेतझविरागी \* रामहिंभजहिंतर्कसबत्यागी  
 व्याकुलकटक कीन्हघननादा \* पुनिभा प्रगट कहै दुर्वादा  
 जामवंत कह पलरहु ठाढा \* सुनिकरिताहिक्रोध अतिबाढा  
 बूढजानि मठ छाडेउं तोही \* लागेसिअधम पचारै मोही  
 असकहितरलत्रिमूलबलायो \* जामवंतकरगहि सोइधायो  
 मारेसि मेघनाद केछाती \* पराभूमि घुर्मित सुरघाती  
 पुनिरिमानगहि चरनफिरायो \* महिपछारिनिजबल देषायो  
 वर प्रसाद मो मरैन मारा \* तबगहि पदलंका परडारा  
 इहाँदेव रिषिगरुड पठायो \* रामसमीपसपादि मो आयो  
 दो० षग पति सब धरिषाए, माया नाग बरूथ ॥

माया विगतभएसब, हरषे बानर जूथ ॥

गहगिरि पादपउपलनष, धाएकीसरिसाइ ॥ मा० पा० २५

चले तमीचर बिकलतर, गढपरचढेपराइ ७३ ॥

मेघनाद के मुरछा जागी \* पितहिविलोकिलाजअतिलागी  
 तुरत गएउ गिरिवर कंदरा \* करोंअजयमष असमनधरा

इहाँ विभीषन मंत्र विचारा ✽ सुनहुनाथवल अतुलउदारा  
 मेघनाद मषकरै अपावन ✽ पलमायावी देव सतावन  
 जौंप्रभु सिद्धहोइ सोपाइहि ✽ नाथवेगिपुनिजीतिनजाइहि  
 सुनिरघुपतिअतिसयसुषमाना ✽ बोले अंगदादि कपिनाना  
 लल्लिमन संग जाहु सब भाई ✽ करहु विधंसयज्ञ करजाई  
 तुम्हलल्लिमनमारेहुरनओही ✽ देखिसभयसुरदुषअतिमोही  
 मारेहु तेहि बलबुद्धि उपाई ✽ जेहिछीजै निसिचरसुनुभाई  
 जामवंत सुग्रीव विभीषन ✽ सेनसमेतरहेहु तीनिउजन  
 जवरघुबीरदीन्ह अनुसासन ✽ कटिनिषंगकसिसाजिसरासन  
 प्रभुप्रताप उर धरिन धीरा ✽ बोले घनइवगिरा गंभीरा  
 जौंतेहिआजबधेबिनुआवउँ ✽ तौरघुपति सेवक नकहावउँ  
 जौं सतसंकर करहिं सहाई ✽ तदपि हतौं रघुबीर दोहाई  
 दो० रघुपति चरन नाइसिर, चलेउ तुरंत अंत ॥

अङ्गद नीलमयंद नल, संगसुभट हनुमंत ॥ ७४ ॥

जाइ कपिन्हसो देषा वैसा ✽ आहुतिदेतरुधिर अरुमैंसा  
 कीन्हकपिन्हसबजज्ञविधंसा ✽ जवनउठै तबकरहिं प्रसंसा  
 तदपिनउठै धरेन्हिकचजाई ✽ लातन्हिहतिहति चलेपराई  
 लैत्रिमूल धावा कपि भागे ✽ आएजहँ रामानुज आगे  
 आवा परम क्रोध कर मारा ✽ गर्जघोर खवारहिं बारा  
 कोपिमरुत सुतअंगद धाए ✽ हतित्रिमूलउरधरनिगिराए  
 प्रभुकहँछाडिसिमूल प्रचंडा ✽ सरहति कृतअनंत जुगपंडा  
 उठिबहोरिमारुति जुवराजा ✽ हताहिकोषितोहिघांउनबाजा  
 फिरे बीररिपु मरैन मारा ✽ तबधावाकरि घोर चिकारा

आवतदेपिकुद्ध जनु काला \* लल्लिमनछाँडेविसिषकराला  
 देषिसिआवतपविसमवाना \* तुरतभएउ पलअन्तरधाना  
 विविध वेषधरि करै लराई \* कबहुँकप्रगट कबहुँदुरिजाई  
 देषि अजय रिपुटरपेकीसा \* परमक्रुद्धतब भएउअहीसा  
 लल्लिमनमनअसमंत्रदृढावा \* एहिपापिहि में बहुत पेलवा  
 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा \* सरसंधानकीन्ह करिदापा  
 छाँडा वान माझ उर लागा \* मरतीवार कपटसब त्यागा  
 दो० रामानुज कहँराम कहँ, असकहिछाँडेसि प्रान ॥

धन्य धन्यतबजननी, कहअंगद हनुमान ॥ ७५ ॥

बिनुप्रयास हनुमानउठायो \* लंकाद्वारराषि पुनिआयो  
 तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा \* चढिविमान आए नभसर्वा  
 वरषिसुमन हुँदुभी बजावहिं \* श्रीरघुनाथविमलजसगावहिं  
 जय अनंत जय जगदाधारा \* तुम्हप्रभुसबदेवन्हिनिस्तारा  
 अस्तुतिकरि सुरसिद्धसिधाए \* लल्लिमनकृपासिंधुपहिंआए  
 सुतवधसुना दसाननजवहीं \* मुरल्लितभएउ परेउमहितवहीं  
 मंदोदरी रुदन कर भारी \* उरताडतिबहु भाँतिपुकारी  
 नगरलोग सबब्याकुलसोचा \* सकलकहहिं दसकंधरपोचा  
 दो० तब दसकंठ विविध विधि, समुझाई सबनारि ॥

नस्वररूप जगतसब, देषहुहृदय विचारि ॥ ७६ ॥

तिन्हहिज्ञान उपदेसा रावन \* आपुनमंदकथा सुभपावन  
 पर उपदेस कुसल बहुतेरे \* जे आचरहिंते नरन घनेरे  
 निसासिरानि भएउभिनुसारा \* लगेभालु कपिचारिहु द्वारा  
 सुभट बोलाइ दसाननबोला \* रनसन्मुष जाकरमनडोला

सो अवहीं वरु जाउ पराई \* संजुगविमुषभए न भलाई  
निजभुजबलमइँवयरवढावा \* देहों उतरुजोरिपुचढिआवा  
असकहि मरुतवेगरथसाजा \* बाजे सकल जुझाऊ वाजा  
चलेवीर सब अतुलित वली \* जनुकज्जलकै आंधी चली  
असगुनअमितहोहिंतेहिकाला \* गनैनभुजबलगर्व विसाला

छं० अतिगर्वगनइनसगुनअसगुनस्रवहिंआयुधहाथतैं ॥

भटगिरतरथतेवाजिगज चिक्करतभाजहिंसाथतैं ॥

गोमायुगीधकरार पर रवस्वान बोलहिंअतिघने ॥

जनुकालदूत उलूकबोलहिं वचन परमभयावने ॥

दो० ताहि किसंपति सगुनसुभ, सपनेहु मन विश्राम ॥

भूतद्रोहरत मोहवस, रामविमुष रतिकाम ॥ ७७ ॥

चलेउनिसाचरकटकअपारा \* चतुरंगिनी अनीबहु धारा  
विविध भांतिवाहनरथयाना \* विपुलवरनपताकध्वजनाना  
चले मत्त गज जूथ घनेरे \* प्राविटजलद मरुतजनुप्रेरे  
वरनवरन विरदैत निकाया \* समरसूरजानिहिं बहुमाया  
अतिविचित्रवाहिनीविराजी \* वीरवसंत सेन जनुसाजी  
चलतकटकदिगसिंधुरडगहीं \* छुभितपयोधिकुधरडगमगहीं  
उठी रेनुरावि गएउ छपाई \* मरुतथकितवसुधाअकुलाई  
पवननिमान घोररववाजहिं \* प्रलयसमयकेघनजनुगाजहिं  
भेरि नफीरि वाज सहनाई \* मारु राग सुभट सुषदाई  
केहरिनाद वीर सब करहीं \* निजनिज बल पौरुष उच्चरहीं  
कहै दसानन सुनहु सुभट्टा \* मर्दहुभालु कपिन्हके ठट्टा  
हों मारिहों भूप द्यौ भाई \* असकहिसन्मुषफौज रेंगाई



यहसुधिसकलकपिन्हजवपाई \* धाए करि रघुवीर दोहाई  
छं० धाए विसाल कराल मर्कट भालु काल समानते ॥

मानहु सप ३ उडाहिं भूधर वृंद नाना वानते ॥

नषदसन सेल महा दुमारुध सबलसंकन मानहीं ॥

जयराम रावनमतगजमृगराज सुजसवषानहीं ॥

दो० दुहुदिसि जयजयकारकरि, निजनिज जोरीजानि ॥

भिरेवीरइत रामहित, उतरावनाहि वषानि ॥७८॥

रावन रथी विरथ रघुवीरा \* देषिविभीषनभएउ अधीरा

अधिक प्रीतिमन भासंदेहा \* बंदिचरनकह सहित सनेहा

नाथनरथ नहिंतनपदत्राना \* केहिविधिजितववीरबलवाना

सुनहुसषाकह कृपानिधाना \* जेहिजयहोइसोस्यंदनआना

सौरजधीरज तेहिरथ चाका \* सत्यसीलट्टटध्वजा पताका

बलविवेक दमपरहित घोरे \* क्षमा कृपा समता रजुजोरे

ईस भजन सारथी सुजाना \* विरतिचर्म संतोष कृपाना

दान परसु बुधि सक्तिप्रचंडा \* वरविज्ञान कठिनको दंडा

अमलअचलमनत्रोन समाना \* संजमनियमसिलीमुषनाना

कवच अभेद विप्र गुर पूजा \* एहिसमविजय उपायनदूजा

सषाधर्म मयअस रथ जाके \* जीतनकहँन कतहुँरिपुताके

दो० महा अजय संसार रिपु, जीति सकै सोवीर ॥

जाके असरथ होइट्टट, सुनहुसषा मतिधीर ॥

सुनिप्रभु वचन विभीषन, हरषि गहे पदकंज ॥

एहिमिसि मोहि उपदेसहु, रामकृपासुषपुंज ॥

उतपचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान ॥

लरतनिसाचरभालुकपि, करिनिजनिजप्रभुआन ७९

सुरब्रह्मादि सिद्ध मुनिनाना ✽ देषत रन नभ चढेबिमाना  
हमहँ उमा रहेतेहि संगी ✽ देषत राम चरितरन रंगा  
सुभट समरसदुहंदिसमाते ✽ कपिजयसीलराम बल ताते  
एकएक सनभिरहिंपचारहिं ✽ एकन्हएकमर्दिमहि पारहिं  
मारहिंकाटहिंधरहिंपछारहिं ✽ सीसतोरिसीसन्हसनमारहिं  
उदरविदारहिंभुजा उपारहिं ✽ गहिपदअवनिपटकिभट्टारहि  
निसिचरभटमहिगाढहिंभालू ✽ ऊपर ढारिदेहिं बहु बालू  
बीरबली मुष जुद्ध विरुद्धे ✽ देषिअतविपुलकालजनुक्रुद्धे

छं० क्रुद्धे कृतांतसमान कपितन स्रवतसोनितराजहीं ॥  
मर्दिहिंनिसाचरकटकभटबलवंतघनजिमिगाजहीं ॥  
मारहिंचपेटन्हिडाटिदांतन्हकाटिलात हमीजहीं ॥  
चिक्करहिंमर्कटभालुछलबलकरहिंजेहिंष रुछीजहीं ॥  
धरिगालफारहिं उरविदारहिं गलअंतावरिमेलहीं ॥  
प्रह्लादपतिजनुविविधतनधरिसमरअंगनषेलहीं ॥  
धरुमारुकाटुपछारुघोरगिरागगनमहिभरिरीही ॥  
जयरामजोतूनतेकुलिस करकुलिसतेकरतूनसही ॥

दो० निजदल विचलत देषेसि बीस भुजा दसचाप ॥

रथचढिचलेउ दसानन फिरहुफिरहुकरिदाप ८० ॥

धाएउ परमक्रुद्ध दसकंधर ✽ सन्मुष चलेहुहदे बंदर  
गहिकर पादपउ पल पहारा ✽ डारेन्हितापर एकहिवारा  
लागहिं सैलवज्रतन तामू ✽ पंडपंड होइ फूटहिं आसू  
चला न अचल रहारथरोपी ✽ रनदुर्मद रावन अतिकोपी  
इतउतझपाटिदपाटिकपिजोधा ✽ मर्दलाग भएउअतिक्रोधा

चलेपराइ भालु कपि नाना \* त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना  
 पाहि पाहि रघुवीर गोसाँई \* यहपल पाइकालकी नाई  
 तेहिदेपे कपि सकल पराने \* दसहुचाप मायक संधाने  
 छं० संधानिधनुसरनिकरछाडेसि उरगजिमि उडिलागहीं ॥  
 रहेपूरिमरधरनीगगनादिसि विदिमिकहकपिभागहीं ॥  
 भयोअतिकोलाहलविकलकपिदलभालुबोलहिंआतुरे  
 रघुवीर करुनासिंधु आरत बंधु जनरक्षक हरे ॥

दो० निजदल विकल देषिकटि, कसि निपंग धनुहाथ ॥  
 लल्लिमनचले कुद्धहोइ, नाइराम पदमाय ८१ ॥

रे षलका मारसिकपि भालू \* मोहिविलोकु तोरमें कालू  
 षोजत रहेउँ तोहिसुतघाती \* आजनिपाति जुटावौंछाती  
 असकहिछाडेसिवानप्रचंडा \* लल्लिमनकियेसकलसतपंडा  
 कोटिन्ह आयधुरावन डारे \* तिलप्रवानकरिकाटिनिवारे  
 पुनिनिजवानन्हकीन्हप्रहारा \* स्यंदनभंजि मारथी मारा  
 सतसत सरमारे दस भाला \* गिरिमृगन्हजतुप्रबिसहिंव्याला  
 पुनि सतसर माराउर माहीं \* परेउधरनितलसुधिकछु नाहीं  
 उठाप्रबल पुनिमुरछा जागी \* छाडिमिब्रह्मदीन्हजोसाँगी  
 छं० जो ब्रह्मदत्त प्रचंड मक्ति अनंत उर लागी सही ॥

परयोवीरविकलउठाव दसमुपअतुलबलमहिमारही  
 ब्रह्मांडभुवन विराजजाके एकमिरजिमिरजकनी ॥  
 तेहिचहउठावनमूढरावनजाननहिंविभुअनधनी ॥  
 दो० देषि पवनसुत धाएउ, बोलत वचन कठोर ॥  
 आवतकपिहिन्हयोतेहिं, सुष्टिप्रहार प्रघोर ८२ ॥

जानु टेककपि भूमिनगिरा ✽ उठासँभारि बहुत रिसभरा  
मुठिकाएक ताहिकपिमारा ✽ परेउसैल जनुवज्र प्रहारा  
मुरुछागै बहोरि सो जागा ✽ कपिवलविपुलसराहनलागा  
धिगाधिगममपौरुष धिगमोही ✽ जौतै जियतउठेसिसुरद्रोही  
असकहिलछिमनककहँपिल्यायो ✽ देषिदसानन विसमयपायो  
कहरघुबीरसमुझि जियभ्राता ✽ तुम्हकृतांत भक्षक सुरत्राता  
सुनतबचन उठिवैठकृपाला ✽ गर्डगगन सोसकति कराला  
पुनिकोदंड बानगहि धाए ✽ रिपुसन्मुषअतिआतुरआए

छं० आतुरबहोरिविभंजिस्यंदनमूतहतिब्याकुलकियो ।  
गिरयोधरनिदसकंधरविकलतरबानसतवेध्योहियो ॥  
सारथी दूसरघालिरथतेहितुरतलंकालै गयो ।  
रघुबीरबंधुप्रतापपुंजबहोरि प्रभुचरनन्हिनयो ॥ ९ ॥

दो० उहाँदसानन जागिकर, करैलाग कछुजग्य ॥  
रामविरोधविजयचह, सठहठवसअतिअग्य ॥ ८३ ॥

इहाँबिभीषन सब सुधिपाई ✽ सपदि जाइरघुपतिहिसुनाई  
नाथकरै रावन एकजागा ✽ सिद्धभएनहिंमरिहिअभागा  
पठवहुनाथ बेगिभट बंदर ✽ करहिं विधंस आवदसकंधर  
प्रातहोतप्रभु सुभट पठाए ✽ हनुमदादि अंगद सबधाए  
कौतुककूदि चढे कपिलंका ✽ पैठे रावन भवन असंका  
जग्यकरत जबही सो देषा ✽ सकलकपिन्हमाक्रोध विसेषा  
रनतेनिलजभाजिगृहआवा ✽ इहाँआइ बकध्यान लगावा  
असकहिअंगद मारालाता ✽ चितवनसठस्वारथमनराता



छं० नहिंचितवजबकरिकोपकपिगहिदसन्हलातन्हमारही।  
 धरिकेसनारिनिकारिवाहेरतेति दीनपुकारही ॥  
 तबउठेउक्रुद्धकृतांतसमगहिचरनवानरडारई ।  
 एहिबीचकपिन्हविधंसिकृतमपदोपिमनमहंहारई ॥१०॥

दो० जज्ञविधंसि कुसल कपि, आए रघुपति पास ॥  
 चलेउनिसाचरक्रुद्धहोइ, त्यागिजिवनकैआस ॥८४॥

चलतहोहिंअति असुभभयंकर \* बैठहिंगीधउडाइ सिरन्हपर  
 भएउकालबसकाहुनमाना \* कहेसिवजावहुजुद्ध निसाना  
 चली तमीचर अनीअपारा \* बहुगजरथपदाति असवारा  
 प्रभु सन्मुख धाए पल कैसे \* सलभसमूह अनल कहँजैसे  
 इहाँदेवतन्हअस्तुतिकीन्ही \* दारुनविपतिहमहिंएहिदीन्ही  
 अबजनिराम पेलवहु एही \* अतिसयदुषित होति वैदेही  
 देववचनसुनिप्रभुमुसुकाना \* उठि रघुवीर सुधारे बाना  
 जटा जूट दृढबाँधे माथे \* मोहहिं सुमनबीचविचगाँथे  
 अरुननयनवारिद तनस्यामा \* अपिललोकलोचनाभिरामा  
 कटितटपरिकरकस्यौनिपंगा \* करकोदंड कठिन सारंगा

छं० सारंग कर सुंदरनिषंग सिलीमुपाकरकटिकस्यौ ॥  
 भुजदंडपीन मनोहरायत उरधरासुरपद लस्यौ ॥  
 कहदासतुलसी जबहिंप्रभु सरचापकर फेरनलंगे ॥  
 ब्रह्मांडदिग्गजकमठअहिमाहिसिंधुभृधरदुगमगे ॥

दो० सोभा दोषिहराषि सुर, वरषहिं सुमन अपार ॥  
 जयजयजय करुनानिधि, लुबिबलुनआगार ॥८५॥

एही बीच निसाचर अनी \* कसमसातआई अति घनी

देषि चले सन्मुष कपि भट्टा \* प्रलय कालकेजनु घनघट्टा  
 बहुकृपानि तरवार चमंकहिं \* जनुदहदिसिदामिनीदमंकहिं  
 गजरथतुरग चिकारकठोर \* गर्जहिं मनहुं बलाहक घोरा  
 कपि लंगूर विपुल नभछाए \* मनहु इंद्रधनु उए सुहाए  
 उठेधूरि मानहुं जल धारा \* बान बुंदभै दृष्टि अपारा  
 दुहुँदिसि पर्वत करहिंप्रहारा \* बज्रपात जनु बारहिं बारा  
 रघुपति कोपिवानझरिलाई \* घायल भै निसिचरसमुदाई  
 लागत बान वीर चिकरहीं \* घुर्मिघुर्मिजहंतहं महिपरहीं  
 श्रवहिं सैलजनु निर्झरभारी \* सोनित सरिकादरभयकारी  
 छं० कादरभयंकर रुधिरसरिता बाढिपरम अपावनी ॥  
 दोउकूल दलरथ रेतचक्र अवर्त्त बहति भयावनी ॥  
 जलजंतु गजपदचरतुरग परविविधवाहनकोगने ॥  
 सरसक्ति तोमरसर्पचाप तरंग चर्म कमठघने ॥  
 दो० वीर परहिं जनुतीर तरु मज्जाबहु बह फेन ॥  
 कादर देषि डरहिं तहं, सुभटन्ह के मनचेन ॥ ८६ ॥  
 मज्जहिंभूपपिसाचबेताला \* प्रथममहा श्रोटींग कराला  
 काककंकलै भुजा उडाहीं \* एकते छीनि एकलै पाहीं  
 एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई \* सठहु तुम्हार दरिद्रन जाई  
 कहरत भटघायेल तट गिरे \* जहं तहं मनहु अर्द्धजलपरे  
 पैचहिं भीध आंततट भए \* जनु बंसीपेलहिं चितदए  
 बहुभट ब्रह्महिं चढेपग जाहीं \* जनुनावरिषेलहिं सरिमाहीं  
 जोगिनि भरिभरिषपरसंचहिं \* भूतपिसाच बधू नभनंचहिं  
 भटकपालकरतालबजावहिं \* चामुंडानाना विधि गावहिं

जंबुक निकर कटकटकट्टहिं \* पाँहिहुआहिंअघाहिंदपट्टहिं  
 कोटिन्ह रुंदमुंदविनुडोल्लहिं \* सीसपरेमहिं जयजय बोल्लहिं  
 छं० बोल्लहिंजो जयजय मुंदरुंद प्रचंडसिरविनुधावहीं ॥  
 षप्परन्हिषगगअलुइझजुझहिंसुभटभटन्हट्टहावहीं ॥  
 बानरनिसाचर निकरमर्दहिं रामवल दर्पितभए ॥  
 संग्रामअंगनसुभटसोवहिं रामसर निकरन्हिहये ॥

दो० रावन हृदय विचारा, भा निसिचर संघार ॥

मैं अकेलकपि भालुबहु, माया करउँ अपार ॥ ८७ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादे देषा \* उपजाउरअतिछोभविसेषा  
 सुरपतिनिजरथतुरतपठावा \* हरषसहितमातलिलै आवा  
 तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा \* हराषिचढे कोसलपुर भूपा  
 चंचल तुरग मनोहर चारी \* अजरअमरमनसम गतिकारी  
 रथारूढ रघुनाथहि देषी \* धाएकपि बलपाइ बिसेषी  
 सहीनजाइ कपिन्हकै मारी \* तब रावन माया बिस्तारी  
 सो माया रघुवीरहिं बांची \* लल्लिमनकपिन्हसो मानीसांची  
 देषीकपिन्ह निसाचरअनी \* बहुअंगदलल्लिमन कपिधनी

छं० बहुबालिसुतलल्लिमनकपीसबिलोकिमरकटअपडरे ॥

जनुचित्रलिपितसमेतलल्लिमनजहँसोतहँचितवाहिंषरे ॥

निजसेनचकिताबिलोकिहँसिरसरचापसजिकोसलधनी

मायाहरीहरिनिमिषमहँ हरषी सकल मर्कटअनी ॥

दो० बहुरि राम सबतन चितइ, बोले वचन गँभीर ॥

द्वंद्वजुद्धदेषहु सकल, समित भएअति वीर ॥ ८८ ॥

असकहिरथरघुनाथचलावा \* विप्रचरनपंकज सिरनावा

तब लंकेस क्रोध उरछावा \* गर्जत तर्जत सन्मुष धावा  
जीतेहु जेभट संजुग माहीं \* सुनुतापस मैंतिन्हसमनाहीं  
रावननाम जगतजसजाना \* लोकप जाके बंदी पाना  
परदूषन विराध तुम्ह मारा \* बधेहुव्याधइवबालि विचारा  
निसिचरनिकरसुभटसंगारेहु \* कुंभकरनघननादहि मारेहु  
आज वयर सब ले उँनिवाही \* जौरन भूमिभाजिनहिंजाही  
आजुकरौं पलु काल हवाले \* परेहु कठिन रावनके पाले  
सुनिदुर्वचन कालवस जाना \* बिहँसिबचन कहकृपानिधाना  
सत्यसत्य सबतब प्रभुताई \* जल्पसिजनिदेषा उमनुसाई

छं० जनिजल्पनाकरिसुजसनासहिनीतिसुनहिकरहिछमा  
संसारमहँपूरुषत्रिविधिपाटलरसालपनससमा ॥

एकसुमनप्रदइकसुमनफलएकफलइकेवललागहीं ॥

एककहहिंकहहिंकरहिंअपरएककरहिंकहतनबागहीं॥

दो० राम वचन सुनि बिहँसा, मोहिं सिषावत ज्ञान ॥

वयरकरतनहिं तबडारे, अबलागे प्रियप्रान ॥ ८९ ॥

कहि दुर्वचन क्रुद्ध दसकंधर \* कुलिससमान लागछाँडैसर  
नानाकारसिली मुष धाए \* दिसिअरुबिदिसिगगनमहिछाए  
पावकसर छाँडेउ रघुबीरा \* छनमहँजरे निचासर तीरा  
छाडिसितीव्रसक्तिषिसिआई \* बान संगप्रभु फेरि चलाई  
कोटिन्हचक्र त्रिमूलपवारइ \* बिनुप्रयासप्रभुकाटिनिवारइ  
निफल होहिं रावन सरकैसे \* पलकेसकल मनोरथ जैसे  
तब सतवान सारथी मारेसि \* परेउ भूमिजयरामपुकारेसि  
राम कृपाकरि सूत उठावा \* तबप्रभुपरम क्रोध कहँपावा



छं० भयेकुद्धजुद्धविरुद्ध रघुपति त्रोनसायक कसमसे ॥  
 कोदंडधुनिअतिचंडसुनिमनुजाद भयमारुतग्रसे ॥  
 मंदोदरी उर कंप कपति कमठ भूभूधर त्रसे ॥  
 चिक्करहिंदिगगजदसनगहिमहिदेपिकौतुकसुरहंसे ॥  
 दो० तानेउ चाप श्रवन लगि, छाँटे विसिष कराल ॥  
 राममार्गनगन चले, लहलहात जनुव्याल ॥ ९० ॥

चलेवान सपक्ष जनु उरगा \* प्रथमहिहत्यो सारथीतुरगा  
 रथाविभांजिहाति केतुपताका \* गर्जाअति अंतरबल थाका  
 तुरतआनरथचटिषिसिआना \* अस्रसस्रछाँटेसिविधिनाना  
 विफलहोहिं सब उद्यमताके \* जिमिपरद्रोहनिरतमनसाके  
 तब रावन दसमूल चलावा \* बाजिचारिमहिमारिगिरावा  
 तुरग उठाइ कोपिरघुनायक \* पैंचिसरामन छाँटे सायक  
 रावन सिर सरोज बन चारी \* चलिरघुवीर मिलीमुषधारी  
 दस दस बान भालदस मारे \* निसरि गयेचलेरुधिर पनारे  
 स्रवतरुधिर धाएउबलवाना \* प्रभुपुनिकृत धनुसरसंधाना  
 तीस तीर रघुवीर पवारे \* भुजन्हिसमेतसीसमहि पारे  
 रामबहोरि भुजा सिर छीने \* काटतही पुनिभए नबीने  
 प्रभुबहु बारबाहु सिरहए \* कटतझटितपुनि नूतनभए  
 पुनिपुनिप्रभुकाटतभुजसीसा \* अतिकौतुकीकोसला धीसा  
 रहेछाइ नभ सिरअरु बाहू \* मानहुँ अमितकेतु अरुबाहू  
 छं० जनुराहुकेतु अनेक नभपथ स्रवतसोनितधावहीं ॥  
 रघुवीर तीर प्रचंड लागहिं भूमिगिरनन पावहीं ॥  
 एकएकसरसिर निकर छेदेनभ उडतइमि सोहहीं ॥  
 जनुकोपिदिनकरकरनिकरजहंतहँ बिधुतुदपोहहीं ॥

दो० जिमिजिमिप्रभुहरतासुसिर, तिमितिमिहोहिअपार॥  
 सेवतविषय विवर्धजिमि, नितनितनूतनमार ॥९१॥  
 दसमुषदेपि सिरन्हकै वाढी ✽ विसरामरनभई रिसगाढी  
 गजैउमूढ महा अभिमानी ✽ धाएउदसौ सरासन तानी  
 समरभूमिदसकंधर कोप्यो ✽ वरषिवानरघुपतिरथतोप्यो  
 दंड एक रथ देषिन परेऊ ✽ जनुनिहारमहँदिनकरदुरेऊ  
 हाहाकारसुरन्हजब कीन्हा ✽ तबप्रभुकोपिकामुक लीन्हा  
 सरनिवारिरिपुके सिरकाटे ✽ तेसिदिसिविदिसिगगनमहिपाटे  
 काटेसिरनभ मारग धावहिं ✽ जयजयधुनिकरिभयउपजावहिं  
 कहँलछिमन सुग्रीव कपीसा ✽ कहँरघुवीर कोसला धीसा

छं० कहँरामकहिसिरनिकरधाएदेपिमर्कटभजिचले ।  
 संधानिधनुरघुवंसमनिहँसिसरनिसिरवेधेभले ॥  
 सिरमालिकाकरकालिकागहिवृंदवृंदन्हिवहुमिलीं  
 करिरुधिरसारिमज्जनमनहुँसंग्रामवटपूजनचलीं ।

दो० पुनिदसकंठ क्रुद्ध होइ, छाँडी सक्तिप्रचंड  
 चलीविभीषन सन्मुष, मनहुँ कालकरदंड ॥ ९२ ॥

आवतदेपिसक्ति अतिघोरा ✽ प्रनतारति भंजनपन मोरा  
 तुरत विभीषन पाछे मेरा ✽ सन्मुषराम सहेउसो सेरा  
 लागिसक्ति सुरछा कछु भई ✽ प्रभुकृतपेल सुरन्ह विकलई  
 देपिविभीषन प्रभुस्रमपायो ✽ गहिकरगदा क्रुद्ध होइधायो  
 रेकुभाग्य सठमंद कुबुद्धे ✽ तैसुरनर मुनि नाग बिरुद्धे  
 सादर सिवकहँ सीसचढाए ✽ एकएक के कोटिन्ह पाए  
 तोहिकारनपल अबलगिवांच्यो ✽ अबतवकालसीसपर नाच्यो

रामविमुषसठचहसि संपदा \* असकहिहनेसिमाँझउरगदा  
छं० उरमाँझगदा प्रहार घोरकठोर लागतमहिपरचो ॥

दसवदनसोनितस्रवतपुनिसंभारिधायोरिसभरचो ॥

दौभिरेअति बलमल्लजुद्धविरुद्ध एक एकहिहने ॥

रघुवीरबलदर्पित विभीषन घालिनहिंताकहुँ गने ॥

दो० उमा विभीषन रावनहिं, सन्मुष चितवकिकाउ ॥

सोअवभिरत कालज्यौं, श्रीरघुवीर प्रभाउ ॥

देषा स्रमित विभीषनभारी \* धाएउ हनूमान गिरिधारी

रथतुरंग सारथी निपाता \* हृदयमाँझतेहि मारेसिलाता

ठाढरहा अतिअंपित गाता \* गएउविभीषनजहँजनत्राता

पुनिरावनकपिहतेउप्रचारी \* चलेउगगनकपि पूँछपसारी

गहेसिपूँछकपिसहित उडाना \* पुनिफिरिभिरेउप्रबलहनुमाना

लरतअकासजुगलसमयोधा \* एकहिएक हनत करिक्रोधा

सोहहिँनभल्लबलबहु करहीं \* कज्जलगिरिसुमेरुजनुलरहीं

बुधिवलनिसिचरपरैनपारचो \* तबमारुतसुतप्रभु संभारचो

छं० संभारिश्रीरघुवीरधीरपचारिकपि रावनहन्यौ ॥

महिपरतगुनिउठिलरतदेवन्हजुगलकहँजयजयभन्यौ

हनुमंत संकट देषि मर्कट भालु क्रोधातुरचले ॥

रनमत्तरावन सकलसुभट प्रचंड भुजबल दलमले ॥

दो० तब रघुवीर पचारे, धाए कीस प्रचंड ॥

कपिवलप्रबलदेषितेहिं, कीन्हप्रगट पाषंड ॥

अंतर्ध्यान भएउ छनएका \* पुनि प्रगटे षलरूप अनेका

रघुपतिकटकभालुकपिजेते \* जहँतहँ प्रगट दसानन तेते

देषैकपिन्ह अमितदससीसा \* जहँतहँभजैभालु अरुकीसा  
भागे वानर धरहिं न धीरा \* त्राहित्राहिलछिमनरघुवीरा  
दहदिसिधावहिकोटिन्हरावन \* गज्जहँघोरकठोर भयावन  
डरे सकल सुर चले पराई \* जयकै आस तजहुअवभाई  
सबसुर जिते एक दसकंधर \* अबबहुभएतकहु गिरिकंदर  
रहेविरंचि संभु मुनि ज्ञानी \* जिन्हजिन्हप्रभुमहिमाकछुजानी

छं० जाना प्रताप तेरहेनिर्भय कपिन्हरिपुमानेफुरे ॥  
चलेविचलि मर्कटभालुसकलकृपालपाहिभयातुरे ॥  
हनुमंत अंगद नीलनल अतिबल्लरतरनबाँकुरे ॥  
मर्दाहि दसाननकोटिकोटिन्ह कपटभूभटअंकुरे ॥

दो० सुरवानर देषे विकल, हस्यौ कोसलाधीस ॥  
सजि सारंग एकसर, हतेसकलदससीस ॥९५॥

प्रभुछनमहँ मायासबकाटी \* जिमिरविउएजाहितमफाटी  
रावन एकदेषि सुर हरषे \* फिरेसुमन बहुप्रभु पर वरषे  
भुजउठायरघुपति कपिफेरे \* फिरे एक एकन्ह तब टेरे  
प्रभुबलपाइ भालुकपिधाए \* तरलतमाकिसंजुगमाहिआए  
अस्तुति करत देवतन्हिदेषे \* भएउँ एकमें इन्हके लेषे  
सठहुसदातुम्हमोर मरायल \* असकहिकोपिगगनपथधायल  
हा हा कार करत सुरभागे \* पलहु जाहु कहँ मोरे आगे  
देषिविकल सुर अंगदधायो \* कूदिचरनगहिभूमि गिरायो

छं० गहिभूमिपारयोलातमारचोबालिसुतप्रभुपहिंगयो ॥  
संभारिउठि दसकंठ घोर कठोर रवगर्जतभयो ॥



करिदाप चापचढाइ दससंधानि मरबहु वरषई ॥

किएसकलभटघायलभयाकुलदोषिनिजबलहरषई ॥

दो० तब रघुपति रावनके, सीम भुजा मरचाप ॥

काटे भए बहोरिजिमि, कर्ममूढ कर पाप ॥ ९६ ॥

सिरभुजबाढि दोषि रिपुकेरी \* भालुकपिन्हारिसभई घनेरी  
मरतनमूढ कटेहु भुजसीसा \* धाएकोपिभालु भटकीसा  
बालितनयमारुतिनलनीला \* बानरराजदुबिद बलसीला  
बिटपमहीधर करहिं प्रहारा \* सोइगिरितरुगहिकपिन्हसोमारा  
एकनषन्हिरिपुबपुषविदारी \* भागिचलहिंएकलातन्हमारी  
तवनलनीलसिरन्हचढिगयऊ \* नषन्हिलिलारविदारतभयऊ  
रुधिरदोषिविषाद उर भारी \* तिन्हहिधरन्हकहँभुजापसारी  
गहेनजाहिकरन्हिपरफिरहीं \* जनुजुगमधुपकमल बनचरहीं  
कोपिकूदि दौ धरेसि बहोरी \* महिपटकतभजेभुजामरौरी  
पुनिसकोपदसधनुकरलीन्हे \* मरन्हिमारिघायलकपिकीन  
हनुमदादिमुरुल्लितकरिवंदर \* पाइप्रदोष हरष दसकंध  
मुरुल्लितदोषिसकलकपिवीरा \* जामवंत धाएउ रनधीरा  
संग भालु भूवर तरुधारी \* मारनलगे पचारि पचारि  
भएउ क्रुद्ध रावन बलवाना \* गहिपदमहिपटकैभटनान  
दोषिभालुपतिनिजदलघाता \* कोपिमाँझ उरमारैसि लात  
छं० उरलात घात प्रचंडलागत विकलरथते महिपरा ॥

गहेभालुबीसहुकरमनहुंकमलन्हिबसेनिसिमधुकरा ।  
मुरुल्लितबिलोकिबहोरिपदहतिभालुपतिप्रभुपहिंगयो  
निसिजानिस्यंदनघालितेहितबसुतजतनकरतभयो ॥

दो० मुरछा विगत भालु कपि, सब आए प्रभुपाम ॥

निसिचर सकल रावनहिं, घेरिरहेअतित्रास ॥ ९७ ॥

तेहीनिसि सीता पहिंजाई \* त्रिजटा कहिसबकथा सुनाई  
 मिरभुजवाढिसुनतरिपुकेरी \* सीता उरभइ त्रास घनेरी  
 मुषमलीन उपजा मनभीता \* त्रिजटा सनबोली तबसीता  
 होइहिकहा कहसिकिनमाता \* केहिबिधिमरिहि बिस्वदुषदाता  
 रघुपति सरसिरकटेहुनमरई \* विधिविपरीतचरितसबकरई  
 मोरअभाग्यजिआवतओही \* जेहिहोहरिपद कमलबिछोही  
 जेहिंकृतकपटकनकमृगझूठा \* अजहुंसोदैव मोहि पररूठा  
 जेहिबिधिमोहिदुषदुसहसहाए \* लछिमन कहँकटु वचनकहाए  
 रघुपतिबिरहसविषसरभारी \* ताकितकि मारवार बहुमारी  
 ऐसेहुदुष जोराष ममप्राना \* सोइबिधिताहिजिआवनआना  
 बहुबिधिकरति बिलापजानकी \* करिकरिसुरतिकृपानिधानकी  
 कह त्रिजटासुनुराजकुमारी \* उरसर लागत मरै सुरारी  
 प्रभुताते उर हतैं न तेही \* एहिके हृदयबसति बैदेही

छं० एहिके हृदयबस जानकी जानकी उरमम वास है ॥

ममउदरमुअनअनेक लागतवानसब करनास है ॥

सुनिबचनहरषविषादमनअतिदेषिपुनित्रिजटाकहा ॥

अबमरिहिरिपुएहिविधिसुनहिसुंदरतिजाहिसंसयमहा

दो० काटतासिरहोइहि विकल, छुटिजाइहि तब ध्यान ॥

तवरावनहिहृदयमहं, मरिहहिरामसुजान ॥ ९८ ॥

असकेहिवहुतभाँतिसमुझाई \* पुनित्रिजटानिज भवनसिधाई

राम सुभाउ सुमिरि बैदेही \* उपजी बिरहविथाअतितेही

निसिहिसामिहिनिंदतिबहुभाँती \* जुगसमभई सिरातिनराती  
 करतिविलापमनहिंमनभारी \* रामविरह जानकी दुषारी  
 जबअतिभएउविरहउरदाहू \* फरकेउ वामनयनअरुवाहू  
 सगुनविचारि धरीमनधीरा \* अबमिलिहहिंकृपाल धुवीरा  
 इहाँ अर्द्धनिसि रावनजागा \* निजसारथिसनषीशनलागा  
 सठरन भूमिल्लटाइसि मोही \* धिगाधिगअधम मंदमतितोही  
 तेहिपदगहिबहु विधिसमुझावा \* भोरभए रथचढि पुनिधावा  
 सुनि आगवनदसामननकरा \* कपिदलपर भरभयउघनेरा  
 जहँतहँ भूधर बिटषउपारी \* धाएकट कटाइ भटभारी

छं० धाएजो मर्कट बिकटभालु करालकर भूधरधरा ॥  
 अतिकोप करहिं प्रहारमारतभजिचलेरजनीचरा ॥  
 बिचलाइ दल बलवंतकीसन्ह घेरि पुनिरावनालयो ॥  
 चहुँदिसिचपेटन्हिमारिनषन्हिविदारितनव्याकुलकियो ॥

दो० देषि महा मर्कट प्रबल, रावन कीन्ह विचार ।  
 अंतरहित होइनिमिषमहँ, कृत माया विस्तार ॥९९॥

छं० जब कीन्ह तेहिपाषंड । भए प्रकट जंतु प्रचण्ड ॥  
 बेताल भूत पिसाच । कर धरे धनु नाराच ॥  
 जोगिनि गहे करवाल । एकहाथ मनुज कपाल ॥  
 करिमय मोनित पान । नाचहिं करहिं बहुगान ॥  
 धरु मारुबोलिहिं घोर । रहिपूरि धुनि चहुँआर ॥  
 मुषबाइ धावहिं पान । तब लगे कीस परान ॥  
 जहँजाहिमर्कट भागि । तहँ वरत देषहिं आगि ॥  
 भएबिकल वानरभालु । पुनि लाग वरषै बालु ॥

जहँतहँथकितकरिकीस । गजेंउ बहुरि दससीस ॥  
 लछिमन कपीस समेत । भए सकलबीर अवेत ॥  
 हा राम हा रघुनाथ । कहिसुभट मीजाहिँहाथ ॥  
 एहिविधिसकलवलतोरि । तेहिँकीन्ह कपट बहोरि ॥  
 प्रगटैसिविपुल हनुमान । धाए गहे पाषान ॥  
 तिन्हराम घेरे जाइ । चहुँदिसि बरूथ बनाइ ॥  
 मारहुधरहु जानिजाइ । कट कटहिँ पूछ उठाइ ॥  
 दहदिसि लंगूर विराज । तेहिमध्य कोसल राज ॥

छं० तेहिमध्यकोसलराज सुंदरस्याम तनसोभालही ॥  
 जनुइन्द्र धनुषअनेक कीबरवारि तुंग तमालही ॥  
 प्रभुदोषिहरष विषाद उरसुरचंदजयजयजयकरी ॥  
 रघुबीर एकहितीर कोपिनिमेषमहँ माया हरी ॥  
 मायाविगतकपिभालुहरषेविटपिगिरिगाहिसुवाफिरे ॥  
 सरनिकर छँडेरामरावनबाहु सिरपुनि महिनिरे ॥  
 श्रीराम रावनसमरचरित अनेककल्प जोगावहीं ॥  
 सतसेषसारद निगमकवि तेउ तदपिपारनपावहीं ॥

दो० ताकेगुन गन कछु कहे, जडमति तुलसी दास ॥  
 जिमि निजवल अनुरूपते, माछी उडै अकाश ॥  
 काटैसिर भुज बारबहु, मरतन भट लंकेस ॥  
 प्रभुकीडत सुरसिद्ध मुनि, ब्याकुलदोषिकलेस १०० ॥

काटत बढहिँसीस समुदाई \* जिमिप्रतिलाभलोभअधिकई  
 मरैन रिपुसमभएउ विसेषा \* राम विभीषनतन तब देषा  
 उमा काल मरुजाकी ईछा \* सोप्रभुजनकर प्रीतिपरीछा



मुनुसर्वग्य चराचर नायक \* प्रनतपालसुरमुनिमुषदायक  
 नाभि कुंड पियूष वसयाके \* नाथजिअतरावन बलताके  
 सुनतविभीषनबचनकृपाला \* हरषिगहेकर बान कराला  
 असुभ होन लागे तब नाना \* रोवहिंपरसृकाल बहुस्वाना  
 बोलहिं षग जग आरतिहेतू \* प्रगट भएनभ जहंतहं केतू  
 दसदिसिदाहहोनअतिलागा \* भएउपरबबिनुरविउपरागा  
 मंदोदरि उरकंपित भारी \* प्रतिमास्रवहिंनयनमगवारी  
 छं० प्रतिमारुदहिंपविपातनभअतिवातबहडोलतिमही ॥

वरषहिंबलाहकरुधिरकचरजअसुभअतिसककोकही  
 उतपातअमितबिलोकिनभसुरबिकलबोलहिंजयजए  
 सुरसभयजानिकृपालरघुपति चापसरजोरतभए ॥

दो० षैंचि सरासन स्रवन लगि, छुंटे सर एकतीस ॥

रघुनायक सायक चले, मानहुंकाल फनीस १०१ ॥

सायकएक नाभिसर सोषा \* अपरलगे भुजसिरकरिरोषा  
 लैसिर बाहु चले नाराचा \* सिरभुजहीन रुंडमहिनाचा  
 धरनि धसै धरधाव प्रचंडा \* तबसरहति प्रभुकृतदुइपंडा  
 गर्जेउ मरत घोर रवभारी \* कहाँ राम रनहतौ पचारी  
 डोली भूमि गिरतदसकंधर \* छुभितसिंधुसरिदिग्गजभूष  
 धरनिपरैउ द्यौ पंड बढाई \* चापिभालु मर्कट समुदा  
 मंदोदरि आगे भुज सीसा \* धरिसरचलेजहाँ जग दीस  
 प्रविमे सब निषंग महुँओई \* देषि सुरन्ह दुंदुभी बजा  
 तासुतेज समान प्रभुआनन \* हरषे देषि संभु चतुरान  
 जयजय धुनि पूरीब्रह्मण्डा \* जयरघुवीर प्रबलभुजदण्ड

वरषहिंसुमन देव मुनिवृंदा ✽ जयकृपाल जय जयतिमुकुंदा

छं० जय कृपाकंद मुकुंदद्वंद्व हरनसरन सुषप्रदप्रभो ॥

पलदलविदारन परमकारन कारुणीकसदाविभो ॥

सुरसुमन वरषहिं हरषसंकुल बाजहुंहुमि गहगही ॥

संग्राम अंगन राम अंग अनंद बहु सोभालही ॥

सिरजटामुकुटप्रमूनविचविचअतिमनोहरराजहीं ॥

जनुनीलगिरिपरताडितपटलसमेत उडगनभ्राजहीं ॥

भुजदंड सरकोदंड फेरतरुधिर कनतन अतिबने ॥

जनु रायमुनी तमाल परवैठी विपुल सुषअपने ॥

दो० कृपादृष्टि करिदृष्टि प्रभु, अभय किए सुरवृंद ॥

भालुकीस सबहरषे, जयसुष धाममुकुंद १०२ ॥

पति सिर देषत मंदोदरी ✽ मुरुछितविकल धरनिषसिपरी

जुवतिवृंद रोवत उठिधाँई ✽ तेहि उठाइ रावन पहिआँई

पतिगतिदेषितेकरहिंपुकारा ✽ छूटे कचनहिं वपुष संभारा

उरताडनाकरहिंविधिनाना ✽ रोवत करहिं प्रताप बषाना

तबबल नाथडोल नितधरनी ✽ तेजहीन पावकससि तरनी

सेषकमठसहिसकहिंनभारा ✽ सोतनुभूमिपरेउ भरिछारा

वरुन कुबेर सुरेस समीरा ✽ रनसन्मुष धरकाहु न धीरा

भुजबलजितेहुकालजमसँई ✽ आज परेहु अनाथकी वाँई

जगतविदिततुम्हारि प्रभुनाई ✽ सुतपरिजनबलवरनि नजाई

रामविमुषअसहालतुम्हारा ✽ रहानकोउकुल रोवनिहारा

तबवसविधिप्रपंच सबनाथा ✽ सभय दिसिप नितनावहिमाथा

अवतवासिरभुजजंबकषाहीं ✽ रामविमुषयहअनुचितनाहीं

कालविवसपतिकहान माना \* अगजगनाथमनुज करिजाना

लं० जानेउमनुजकरिदनुजकानननदहनपावकहरिस्वयं ॥

जेहिनमतसिवब्रह्मादिसुरपियभजेहुनहिंकरुनामयं ॥

आजन्मते परद्रोहरतपापौघमय तवतन अयं ॥

तुम्हहँदियोनिजधाम रामनमामि ब्रह्मनिरामयं ॥

दो० अहह नाथ रघुनाथसम, कृपासिंधु नहिंआन ॥

जोगिचंददुर्लभगति, तोहिदीनंहभगवान ॥१०३॥

मंदोदरी वचन सुनि काना \* सुरमुनिमिद्धसवन्हि सुषमाना

अजमहेस नारद मनकादी \* जेमुनिवर परमारथ बादी

भरिलोचनरघुपतिहिनिहारी \* प्रेममगन सबभएउ सुषारी

रुदन करत देषी सब नारी \* गएउविभीषन मनदुषभारी

बंधुदसाबिलोकिदुष कीन्हा \* तवप्रभुअनुजहि आयेपुदीन्हा

लल्लिमन हिवहुविधिसमुभायो \* बहुरिविभीषनप्रभुपहिंआयो

कृपादृष्टि प्रभुताहिविलोका \* करहुकृयापरिहरि सबसोका

कीन्हिहकृयाप्रभुआएसुमानी \* विधिवतदेसकाल जियजानी

दो० मंदोदरी आदि सब, देइ तिलांजलि ताहि ॥

भवनगई रघुपतिगुन, गन बरनत मनमाहिं ॥१०४॥

आइविभीषनपुनि सिरनायो \* कृपासिंधुतवअनुजबोलायो

तुम्हकापीसअंगद नलनीला \* जामवंत मारुतिनय सीला

सब मिलिजाहु विभीषनसाथा \* सारेहुतिलककहेउ रघुनाथा

पितावचनमें नगरनआवौं \* आपुसरिसकपिअनुजपठावौं

तुरतचलेकपिसुनिप्रभुवचना \* कीन्हीजाइतिलककीरचना

सादर सिंघासन बैठारी \* तिलकसारिअस्तुतिअनुसारी

जोरिपानि सबहीसिर नाए ✽ सहिताविभीषनप्रभुपहिंआए  
तवरघुवीर बोलिकपिलीन्हे ✽ कहिप्रियवचनसुषीसबकीन्हे  
छं० किएसुषीकहिवानीसुधासमवलतुम्हारेरिपुहयो ।  
पायोविभीषनराजतिहुँपुरजसतुम्हारोनितनयो॥  
मोहिसहितसुभकीरतितुम्हारीपरमप्रीतिजेगाइहैं ।  
संसार सिंधुअपारपारप्रयासविनुनरपाइहैं ॥

दो० प्रभुकेवचनसवनसुनि, नहिंअघाहिकपिपुंज ।

बारबारसिरनावहिं, गहहिंसकलपदकंज १०५ मा० पा० २६

पुनिप्रभुबोलिलिएउहनुमाना ✽ लंका जाहु कहेउ भगवाना  
समाचारजानकिहिसुनावहु ✽ तासुकुसललैतुम्हचलिआवहु  
तबहनुमंत नगरमहँ आए ✽ सुनिनिसिचरीनिसाचरधाए  
बहुप्रकार तिन्हपूजाकीन्ही ✽ जनकसुतादेषाइपुनिदीन्ही  
दूरिहिते प्रनामकपिकीन्हा ✽ रघुपति दूत जानकीचीन्हा  
कहहुतातप्रभु कृपानिकेता ✽ कुसलअनुजकपिसेनसमेता  
सबविधिकुसलकोसलाधीसा ✽ मातुसमर जीत्यौ दससीसा  
अविचलराजविभीषनपायो ✽ सुनिकपिवचनहरषउरछायो  
छं० अतिहरषमनतनपुलकलोचनसजलकहपुनिपुनिरमा॥  
कादेउँतोहित्रैलोकमहँकपिकिमपिनहिंवानीसमा ॥  
सुनुमातुमैंपायोंअषिलजगराजआजनसंसयं ॥  
रनजीतिरिपुदलबंधुजुतपस्यामिराममनामयं ॥

दो० सुनुसुतसदगुनसकलतब, हृदयवसहुहनुमंत ।

सानुकूलकोसलपति, रहहुसमेत अनंत १०६ ॥

अबसोइजतनकरहुतुमताता ✽ देषौंनयन स्याम मृदुगाता



तबहुमान रामपहिं जाई \* जनकसुता कै कुमलमुनाई  
 सुनिसंदेस भानुकुल भूषन \* बोलिलिएजुवराजविभीषन  
 मारुतसुतकेसंग सिधावहु \* सादरजनकसुतहिले आवहु  
 तुरतहिसकलगएजहं सीता \* सेवहिंसवनिमिचरी विनीता  
 बेगिविभीषनतिन्हहिमिपायो \* तिन्हबहुविधिमजनकरवायो  
 दिव्यवसन भूषन पहिराए \* मिविकारुचिरसाजिपुनित्याए  
 तापरहरषि चढीं बैदेही \* सुमिरिराम सुपधामसनेही  
 बेतपानिरक्षकचहुं पासा \* चलेसकलमन परम हुलासा  
 देषनभालु कीस सब आए \* रक्षककोपि निवारन धाए  
 कहरघुबीर कहा मममानहु \* सीताहि सपापयादे आनहु  
 देषहु कपिजननी की नाई \* बिहनिक्कहारघुनाथ गोसाँई  
 सुनिप्रभुवचनभालुकपिहरषे \* नभतेतुरन्ह सुमन बहुवरषे  
 सीता प्रथम अनल महंराषी \* प्रकटकीन्हिचहअंतरसाषी  
 दो० तेहि कारन करुना निधि, कहे कछुक दुर्बाद ॥

सुनतजातुधानीसब, लागी करै विपाद ॥ १०७ ॥

प्रभुके वचन सीस धरिसीता \* बोलीमनक्रम वचनपुनीता  
 लल्लिमनहोहु धरमके नेगी \* पावकप्रकटकरहु हुहबेगी  
 सुनिलल्लिमनसीताके बानी \* विरहविवेकधरमनितिसानी  
 लोचनसजलजोरिकर दोऊ \* प्रभुमनकछुकहिसकतनकोऊ  
 दोषिराम रूप लल्लिमन धाए \* पावकप्रगटि काठ बहुलाए  
 पावक प्रबल दोषि बैदेही \* हृदयहरषनहि भयकछुतेही  
 जौमनवचक्रमममउरमाहीं \* तजिरघुबीर आनगतिनाहीं  
 तौकृसान सबके गतिजाना \* मोकहंहोउ श्रीपंड समाना

छं० श्रीषण्डसमपावकप्रवेश कियोसुमिरि प्रभुमैथिली ॥  
जयकोसलेसमहेसबंदित चरनरजअति निर्मली ॥  
प्रतिबिंबअरुलौकिक कलंक प्रचंड पावक महँजरे ॥  
प्रभुचरित काहुनलपेनभ सुरसिद्ध सुनिदेषहिंपरे ॥  
तब अनल भूसुररूपकरगहिसत्य श्रीश्रुतिविदितजो ॥  
जिमिशीर सागरहंदिरा रामहिसमर्पी आनिसो ॥  
सोरामवामविभागराजातिरुचिर अति सोभाभली ॥  
नवनीलनीरजनिकट मानहु कनकपंकजकीकली ॥  
दो० वरपहिं सुमनहराषि सुर, बाजहिं गगनानिसान ॥  
गावहिं किन्नर सुरवधू, नाचहिं चढी विमान ॥  
जनरुचिता समेत प्रभु, सोभा अमित अपार ॥  
दोषिभालुकपिहरषे जयरघुपतिसुपसार ॥ १०८ ॥

तत्परघुपति अगुसासन पाई ✽ मातलिचलेउ चरनसिरनाई  
आए देव सदा स्वारथी ✽ वचनकहहिंजनु परमारथी  
दीनबंहु दयालु रघुराया ✽ देवकीन्हि देवन्ह परदाया  
विस्वद्रोहस्त यहपल कामी ✽ निजअघगएउकुमारगगामी  
तुम्हसगरूपजल अविनासी ✽ सदाएक रससहज उदासी  
अकल मपुनजजधनवचनामय ✽ अजितअमोघ सत्तिकरुनामय  
मीन कनक सुकर नरहरी ✽ वामन परसुराम वपुधरी  
जब जवनाथ सुरनहुपपायो ✽ नानातन धरितुम्हइनसायो  
यसपल मरिइनसदासुरद्रोही ✽ कामलौभमदरतअतिकोही  
अवसमिरोमनिलदपदपावा ✽ यहहमरेमन विसमयआवा  
हम देवता पदम अधिकारी ✽ स्वारथरतप्रभुगतिविसारी

भव प्रवाह संतत हम परे \* अब प्रभुपाहिसरन अनुसरे  
दो० करिविनती सुरसिद्ध सब, रहे जहँतहँ करजोरि ॥

अतिसप्रेमतनपुलकिविधि, अस्तुतिकरतबहोरि १०९

जय राम सदा सुष धामहरे \* रघुनायक सायक चाप धरे  
भव बारन दारन सिंहप्रभो \* गुनसागर नागरनाथ विभो  
तनकाम अनेक अनूपछवी \* गुनगावत सिद्ध मुनींद्रकवी  
जसुपावन रावन नाग महा \* षगनाथजथा करिकोपगहा  
जनरंजन भंजन सोकभयं \* गतक्रोध सदाप्रभु बोधमयं  
अवतार उदार अपार गुनं \* महिभार विभंजनज्ञानघन  
अजब्यापकमेकमनादिसदा \* करुना कररामनमामिमुदा  
रघुवंस विभूषन दूषनहा \* कृतभृत विभीषन दीनरहा  
गुनग्याननिधानअमानअजं \* नितरामनमामिविभुंबिरजं  
भुजदंडं प्रचंड प्रताप बलं \* पलुचंड निकंड महाकुसलं  
बिनुकारन दीन दयालहितं \* छविधामनमामिरमासाहितं  
भवतारन कारन काज परं \* मन संभव दारुन दोषहरं  
सरचाप मनोहर त्रोनधरं \* जलजारुन लोचनभूष वरं  
सुषमंदिर सुंदर श्री रमनं \* मदमार मुधाममता समनं  
अनवद्य अपंडन गोचरगो \* सवरूप सदासब होइनसो  
इति वेदवदंति नदंत कथा \* रविआतपभिन्ननाभिन्नजथा  
कृतकृत्य विभोसब बानरए \* निरपंतितवानन सादरए  
धिग जीवन देव सरीर हरे \* तबभाक्ति विनाभव भूलिपरे  
अबदीनदयाल दया करिए \* मतिमोरिविभेद करीहरिए  
जेहिते विपरीत कृया करिए \* दुषसोसुषमानि सुषीचरिए

पल पंडन मंडन रम्य छमा ✽ पदपंकज सेवित संभुउमा  
नृप नायक दे वरदान मिदं ✽ चरनांबुज प्रेम सदासुभदं  
दो० विनयकीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अतिगात ॥

सोभासिंधुविलोक्त, लोचननहीं अघात ॥ ११० ॥

तेहिअवँसरदसरथतहँ आए ✽ तनयविलोकिनयनजलछाए  
अनुजसहितप्रभुबंदनकीन्हा ✽ आसिरवादपिता तबदीन्हा  
तातसकल तब पुन्यप्रभाऊ ✽ जीत्यौअजयनिसाचर राऊ  
मुनिसुतबचनप्रीतिअतिवादी ✽ नयनसलिलरोमावल्लिठादी  
रघुपति प्रथमप्रेमअनुमाना ✽ चितैपितहिदीन्हेउदृढज्ञाना  
ताते उमा मोक्ष नहिं पायो ✽ दसरथभेदभगति मनलायो  
सगुनोपासक मोक्षन लेहीं ✽ तिन्हकहँरामभगतिनिजदे  
वारवार करि प्रभुहिप्रनामा ✽ दसरथहरषि गये सुरधामा  
दो० अनुजजानकी सहित प्रभु, कुसल कोसलाधीस ॥

सोभादेपिहरषिमन, अस्तुतिकरसुरईस ॥ १११ ॥

छं० जयराम सोभाधाम । दायकप्रनत विस्त्राम ॥  
धृतत्रोन वरसर चाप । भुजदंडप्रबल प्रताप ॥  
जयदूषनारि परारि । मर्दन निसाचरधारि ॥  
यहदुष्ट मारेउ नाथ । भएदेव सकलसनाथ ॥  
जयहरन धरनी भार । महिमा उदारअपार ॥  
जय रावनारि कृपाल । किएजातुधानविहाल ॥  
लंकेस अति बलगर्व । किए बस्य सुर गंधर्व ॥  
मुनिसिद्धनरषगनाग । हठि पंथ सबके लाग ॥  
परद्रोह रतअति दुष्ट । पायो सो फल पापिष्ट ॥



अवसुनहु दीनदयाल । राजीव नयन विसाल ॥  
 मोहिरहाअतिअभिमान । नहिंको उमोहिसमान ॥  
 अबदेषि प्रभु पदकंज । गतमान प्रदहुष पुंज ॥  
 कोउब्रह्मनिर्गुनध्याव । अव्यक्तजेहिश्रुतिगाव ॥  
 मोहिभावकोसलधूप । श्री राम सगुनसरूप ॥  
 बैदेहि अनुज समेत । ममहृदय करहु निकेत ॥  
 मोहि जानिएनिजदास । दे भक्ति रमा निवास ॥  
 छं० दे भक्ति रमानिवास त्रास हरनसरन सुषदायकं ॥  
 सुषधामरामनमामिकामअनेक छवि रघुनायकं ॥  
 सुरचंद रंजनद्वंद्वभंजन मनुजतन अतुलिवतबलं ॥  
 ब्रह्मदि संकर सेव्यराम नमामि करुना कोमलं ॥  
 दो० अबकरि कृपाबिलोकिमोहि आयसु देहु कृपाल ॥  
 काहकरोंसुनि प्रियवचन, बोले दीन दयाल ॥११२॥  
 सुनुसुरपतिकपिभालु हमारे \* परेशुमिनिसिचरन्हि जेमारे  
 ममहितलागितजेइ हप्राना \* सकलजिआउसुरेससुजाना  
 सुनुषगेस प्रभुकै यहवानी \* अतिअगाधजानहिंसुनज्ञानी  
 प्रभुसकत्रिभुवनमारिजिआई \* केवल सकहिदीन्हि बडाई  
 सुधावरषिकपिभालुजिआए \* हरषिउठेसब प्रभुपहिं आए  
 सुधाचाष्टि भै दुहुं दल ऊपर \* जिएभालुकपिनहिंरजनीवर  
 रामाकार भए तिन्हकै मन \* मुक्त भए छूटे भव बंधना  
 सुरअंसिकसबकपिअरुरीछा \* जिएसकल रघुपतिकी ईछा  
 रामसरिको दीनहितकारी \* कीन्हैमुकुत निप्ताचर झारी  
 फलमल घामकामरतरावन \* गतिपाई जोमुनिवर गावन

दो० सुमनवरपि सबसुरचले, चढिचढिरुचिर विमान ॥  
दोषि सुअँसर प्रभुपहिँ, आएउ संभु सुजान ॥  
परमप्रीतिकरजोरिजुग, नलिन नयन भरिवारि ॥  
पुलकिततनगदगदागिरा, विनयकरतत्रिपुरारि ११३

मामभिरक्षयरघुकुलनायक ❀ धृतवरचाप रुचिरकरसायक  
मोहमहाघनं पटलप्रभंजन ❀ संसयविपिनअनलसुररंजन  
अगुनसगुनगुनमंदिर सुंदर ❀ भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर  
कामक्रोधमदगज पंचानन ❀ बसहुनिरंतरजनमनकानन  
विषयमनोरथ पुंजकंजवन ❀ प्रबल तुषार उदार पारमन  
भववारिधि मंदर परमंदर ❀ वारय तारय संसृतिहुस्तर  
स्यामगातराजीव विलोचन ❀ दीनबंधु प्रनतारति मोचन  
अनुजजानकीसहितनिरंतर ❀ बसहुरामनृप ममउर अंतर  
मुनिरंजनमाहि मंडलमंडन ❀ तुलसिदासप्रभुनाम विषडन  
दो० नाथजबहिँ कोसलपुरी, होइहि तिलक तुम्हार ॥

कृपासिंधु मैं आउव, देषन चरितउदार ॥ ११४ ॥

करिविनती जबसंभुसिधाए ❀ तवप्रभुनिकटविभीषनआए  
नाइचरनसिर कहसृदुबानी ❀ विनयसुनहुप्रभुसारंगपानी  
सकुलसदलप्रभुरावनमारयो ❀ पावनजसत्रिभुवनविस्तारयो  
दीनमलीनदीनमाति जाती ❀ मोपरकृपाकीन्हि बहुभाँती  
अवजन गृहपुनीतप्रभुकीजै ❀ मज्जनकरियसमरश्रमछीजै  
देसकोस मंदिर संपदा ❀ देहुकृपालकपिन्ह कहँ मुदा  
सबविधिनाथमोहिअपनाइअ ❀ पुनिमोहिसहितअवभपुरजाइअ  
सुनतवचन मृदुदीनदयाला ❀ सजलभएदौ नयनविसाला

दो० तोरकोसगृह मोरसब, मत्यवचन सुनुभ्रात ॥  
 भरतदसासुमिरतमोहि, निमिषकल्पसमजात ॥  
 तापस वेषगात कृस, जपत निरंतर मोहि ॥  
 देशोंवेगिसो जतन करू, सषा निहोरों तोहि ॥  
 बीते अवधि जाउँ जौं, जिअत न पावों बीर ॥  
 सुमिरतअनुज प्रीतिप्रभु, पुनिपुनिपुलकमरीर ॥  
 कोहुकल्पभरिराजतुम्ह, मोहिसुमिरेहुमनमाहिं ॥  
 पुनिममधामपाइहहु, जहाँसंतसबजाहिं ॥ ११५ ॥

सुनतविभीषन वचनरामके \* हरषिगहेपद कृपा धामके  
 बानर भालु सकल हरषाने \* गहिप्रभुपदगुनविमलवषाने  
 बहुरिविभीषनभवनसिधायो \* मनिगनवसनविमानभरायो  
 लैपुष्पक प्रभु आगे राषा \* हंसिकरि कृपासिंधुतवभाषा  
 चढिविमानसुनुमषाविभीषन \* गगनजाइ वरषहु पटभूषन  
 नभपरजाइ विभीषनतबहीं \* वरषिदिमनिअंबर सबहीं  
 जोइजोइमनभावै सोइलेहीं \* मनिमुषमेलिडारिकपिदेहीं  
 हंसैरामश्री अनुज समेता \* परमकौतुकी कृपा निकेता

दो० मुनिजेहिध्यान न पावहिं, नेतिनेति कहबेद ॥  
 कृपासिंधुसोइ कपिन्हसन, करतअनेक विनोद ॥  
 उमाजोगजपदानतप, नानामषव्रतनेम ॥

रामकृपानहिंकरहितसि, जसिनिष्केवलप्रेम ११६॥

भालुकपिन्हपट भूषणपाये \* पहिरिपहिरिरघुपतिपहिंआए  
 नानाजिनसदेषि सबकीसा \* पुनिपुनिहंसतकोसलाधीसा  
 चितैसबन्हिपरकीन्हीदाया \* बोले मृदुल वचन रघुराया

तुम्हरे बलमें रावन मार्यौं ✽ तिलकविभीषन कहँ पुनिसारन्यौं  
निजनिजगृहअब तुम्हसबजाहू ✽ सुमिरेहुमोहिटरपहु जनिकाहू  
सुनत वचन प्रेमाकुलवानर ✽ जोरिपानि बोले सब मादर  
प्रभुजोइकहहुतुम्हहि समोहा ✽ हमरेहोत वचनगुनि मोहा  
दानजानिकपिकिएसनाथा ✽ तुम्हत्रैलोक ईम रघुनाथा  
सुनिप्रभुवचनलाज हममरहौं ✽ मसककहूँ पगपति हितकरहीं  
देषिराम रूप वानर रीछा ✽ प्रेममगन नहिं गृह के ईछा

दो० प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, राम रूप उरराषि ॥  
हरषविषादसहितचले, विनय विविधविधिभाषि ॥  
कपिपति नील रीछ पति अंगद नल हनुमान ॥  
सहित विभीषन अपरजे, जूषपकपि बलवान ॥  
कहिनसकहिकछु प्रेमवस, भरिभरिलोचन वारि ॥  
सन्मुषचितवहिरामतन, नयननिमेषनिवारि ॥ ११७

अतिसय प्रीतिदेषि रघुराई ✽ लीन्हेसकल विमान चढाई  
मनमहँ विप्रचरनसिरनायो ✽ उत्तरदिसिहिविमान चजाया  
चलतविमान कोलाहलहोई ✽ जय रघुवीर कहै सब कोई  
सिंघासनअति उच्चमनोहर ✽ श्रीसमेत प्रभु बैठे तापर  
राजतराम सहित भामिनी ✽ मेरुमंग जनुघन दामिनी  
रुचिरविमानचलेउअतिआतुर ✽ कीन्हीसुमन वृष्टिहरपे गुर  
परमपुषदचलित्रिविधव्यारी ✽ सागरमरसरि निर्मल वारी  
सगुन होहिं सुंदर चहुं पासा ✽ मनप्रसन्ननिर्मल नभआसा  
कहं रघुवीर देषुरन सीता ✽ लल्लिमनइहांहृत्योइंद्रजीता  
हनूमान अंगद के मारे ✽ रनमहि परे निसाचर भारे



कुंभकरन रावन दौ भाई \* इहाँ हते सुरमुनि दुषदाई  
 दो० इहाँ सेतु बाँध्यो अरु थापेउं सिव सुष धाम ॥  
 सीता सहित कृपानिधि, संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥  
 जहँ जहँ कृपासिंधु बन, कीन्ह वास विस्राम ॥  
 सकलदेषाए जानकिहि, कहे सबन्हि केनाम ॥११८॥

तुरत बिमान तहाँ चलि आवा \* दंडकवन जहँ परम सुहावा  
 कुंभजादि मुनि नायक नाना \* गए राम सबके अस्थाना  
 सकल रिषिन्हसन पाइ अमीसा \* चित्रकूट आएउ जगदीसा  
 तहँ करि मुनिन्ह कर संतोषा \* चला बिमान तहाँ ते चोषा  
 बहुरि राम जानकिहि देपाई \* जमुना कलिमलहर निसोहाई  
 पुनि देषी सुरसरी पुनीता \* राम कहा प्रनाम करु सीता  
 तीरथपति पुनि देषु प्रयागा \* निरपत जन्मकोटि अधभागा  
 देषु परम पावनि पुनि बेनी \* हरनि मोक हरिलोक निसेनी  
 पुनि देषु अवधपुरी अति पावनि \* त्रिविध ताप भवरोग नसावनि  
 दो० सीता सहित अवध कहँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम ॥

सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरि पितराम ॥  
 पुनि प्रभु आइ त्रिवेनी, हरि पित मज्जन कीन्ह ॥  
 कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहँ, दान विविध विधि दीन्ह ११९  
 प्रभु हनुमंताहि कहा बुझाई \* धरि बटुरूप अवधपुर जाई  
 भरताहि कुसल हमारि सुनाएहु \* समाचार लै तुम्ह चलि आएहु  
 तुरत पवन सुत गवनत भयऊ \* तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ  
 नाना विधि मुनि पूजा कीन्ही \* अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही  
 मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी \* चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी

इहां निषाद सुना प्रभुआए ✽ नावनाव कहँलोग बुलाए  
सुरसरिनाघिजानतवआयो ✽ उतरेउतट प्रभुआयसुपायो  
तव सीता पूजी सुरसरी ✽ बहुप्रकार पुनिचरनन्हिपरी  
दीन्हिअसीस हराषिमनगंगा ✽ सुंदरितवअहिवात अभंगा  
मुनत गुहाधाएउ प्रेमाकुल ✽ आएउ निकटपरम सुषमंकुल  
प्रभुहिसहित विलोकिबैदेही ✽ परेउअवनितनमुधिनहितेही  
प्रीतिपरम विलोकि रघुराई ✽ हराषिउठाइ लियो उरलाई

छं० लियोहृदयलाइकृपानिधान सुजान रायरमापती ॥  
बैठारि परम समीप बूझी कुसल मोकर बीनती ॥  
अबकुसलपदपंकज विलोकिविरंचिसंकर सेव्यजे ॥  
सुषधाम पूरन कामराम नमामि राम नमामिते ॥  
सबभाँतिअधमनिषादसोहरिभरतज्यौंउरलायउ ॥  
मतिमंदतुलसीदास सोप्रभु मोहबस बिसरायउ ॥  
यहरावनारिचरित्र पावनराम पदरति प्रदसदा ॥  
कामादिहरविग्यान करसुरसिद्धमुनिगावहिंमुदा ॥

दो० समरविजय रघुबीर के, चरितजे सुनहिं सुजान ॥  
विजयविवेक विभूति नित, तिन्हहिंदेहिं भगवान ॥  
यह कलिकाल मलाय तन, मन करिदेषु विचार ॥  
श्रीरघुनाथनामतजि, नाहिनआनअधार १२० ॥

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने  
विमल विज्ञान संपादिनी नामषष्ठः

✽ सोपानः संपूर्ण ✽

ग्रंथसंख्या १३०४



❀ शुद्धशुद्ध पत्र लङ्काकाण्ड १ ❀

लङ्काकाण्ड ।

पत्र अक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०३	६	भजसित	भजसिन
४०४	१०	मंताव	मतीव
४११	२२	जन	जनु
४११	१५	सुपद	सुषद
४१५	१५	धन	धनु
४१५	२२	होत	होइ
४१५	२३	दंढ	दंड
४१५	६	हरि	हर
४२०	१२	एहिविधि	एहिवधि
४२३	१२	जहँजहँ	जहँतहँ
४२४	११	सुधा	मुधा
४२४	१२	जूथ	जूथप
४२५	४	परिघरि	परिघगिरि
४२२	३	कोटि	कोट
४२२	३	मेगनाद	मेघनाद
४३३	३	पूझ	वूझ
४३३	१७	गहिकपि	कहिकपि
४४२	२०	प्रभुपद्र	प्रभुपद
४४५	६	तझ	तझ
४४५	१६	पवन	पनव
४४६	१	टेक	टेकि
४४६	४	सेल	सैल
४४६	१	जानुटेक	जानुटेकि
४५१	५	ककहँपि	कहँकपि
४५१	२	रूपनि	रूपान
४५१	१६	भूप+प्रथम	भूत+प्रमथ
४५२	२१	ब्रह्महि	बहहि
४५३	१६	हँसिर	हँसि
४५४	३	डारे	डरे
४५४	३	कपति	कंपति
४५४	५	तेसिदिसि	तेदिसि
४५६	१०	अति अंपित	अतिकंपित
४५६	१५	प्रभु	प्रभुहि
४५६	२२	सुत	सूत
४६०	१२	रावनालयो	रावनलियो
४६१	१४	महिनिरे	महिगिरे
४६२	२१	ओई	आई
४६३	५	अनन	अनंग
४६५	६	घन	घनं
४६५	११	रुतभूत	रुतभूप
४६६	११	निजदे	निजदेहि
४७२	७	जीत्यौ	जीत्यौ
४७२	७	कोहु	करेहु
४७४	६	कर	करे
		इति	





❀ श्रीः ❀

## अथ रामायण उत्तरकाण्ड ।

श्रीगणेशायनमः

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

श्लोक - कंकीकंठाभनीलंसुरवरविलशद्विप्रपादाञ्जचिन्हं । शोभाब्जं  
पीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नं ॥ पाणौनाराचचापंकपिनिकरजुतंबंधु  
नामेव्यमानं । नौमीडयं जानकीशंरघुवरमनिशंपुष्पकारुढरामं ॥ १ ॥ को  
शलेंद्रपदकंजमंजुलौकोमलावजमहेशवंदितौ । जानकीकरसरोजलालितौ  
चिन्तकस्यमनभृंगसंगितौ ॥ २ ॥ कुंदइंदुदरगौर सुंदरंश्रविकापतिम  
भीष्टसिद्धिदं । कारुणीककलकंजलोचनंनौमिशंकरमनंग मोचनं ॥ ३ ॥

दो० रहाएकदिन अवधिकर, अति आरत पुर लोग ॥  
जहँतहँ सोचहिं नारिनर, कसतन रामवियोग ॥  
सगुन होहिं सुंदर सकल, मन प्रसन्न सबकेर ॥  
प्रभु आगवन जनाव जगु, नगर रम्यचहु फेर ॥  
कोसल्यादि मातु सब मन अनंद असहोइ ॥  
आएउप्रभु श्रीअनुज जुत, कहनचहतअवकेइ ॥  
भरत नयन सुज दक्षिन, फरकत बारहिं बार ॥  
जानिमगुन मनहरष अति, लागे करन विचार ॥

रहेउएकदिनअवधिअधारा ❀ समुझतमनदुषभएउअपारा  
कारनकवननाथनहिआएउ❀जानिकुटिलकिधामोहिविसराएउ  
अहहधन्यलछिमनवडमागी❀राम पदारविंद अनुरागी  
कपटीकुटिलमोहिप्रभुचीन्हा❀तातेनाथ संगनहिं लीन्हा

जौकरनी समुझै प्रभु मोरौ \* नहिनिस्तारकलपसतकोरी  
जनअवगुनप्रभुमाननकाऊ \* दीनबंधु अतिमृदुल सुभाऊ  
मोरे जिअ भरोस दृढ़ सोई \* मिलिहहिरामसगुनसुभहोई  
बीते अवधि रहहिजों प्राणा \* अधमकवनजगमोहिसमाना

दो० राम विरह सागर महं भरत मगन मन होत ॥

विप्ररूप धरि पवन सुत, आइ गएउ जनु पोत ॥

बैठे देषि कुसासन, जटा मुकुट कृत गात ॥

रामरामरघुपतिजपत, स्रवतनयनजलजात ॥ १ ॥

देषत हनूमान अति हरषेउ \* पुलकगातलोचनजलवरषेउ  
मनमहँबहुतभाँतिसुषमानी \* बोलेउ स्रवनसुधासमवानी  
जासुविरह सोचहु दिनराती \* रटहुनिरंतर गुनगन पाँती  
रघुकुलतिलकसुजनसुषदाता \* आएउकुसलदेवमुनित्राता  
रिपुरनजीतिसुजससुरगावत \* सीतासाहितअनुजप्रभुआवत  
सुनत वचन विसरे सबदूषा \* तृपावंत जिमि प इपियूषा  
कोतुम्ह तात कहाँते आए \* मोहिपरमप्रिय वचनसुनाए  
मारुत सुतमैं कपिहनुमाना \* नामभोरसुनु कृपा निधाना  
दीनबंधु रघुपति करकिंकर \* सुनतभरत भेंटेउठि सादर  
मिलतप्रेमनहिहृदयसमाता \* नयनस्रवतजलपुलकितगाता  
कपितवदरससकल दुषबीते \* मिलेआजमोहि रामपिरीते  
बार बार बूझी कुसलाता \* तोकहंदेउँ काह सुनु भ्राता  
यह संदेस सारिस जगमाहीं \* करिविचारदेषेउँकछु नाहीं  
नाहिन तात उरिनमैं तोही \* अबप्रभु चरितसुनावहुमोही  
तब हनुमंत नाइ पद माथा \* कहेसकलरघुपतिगुन गाथा

कहुकपिकवहुं कृपालुगुसाँई \* सुमिरहिंमोहि दासकी नाँई  
 लं० निजदासज्यौरवुबंस भूपनकवहुं ममसुमिरनकरयौ ॥  
 सुनिभरतवचनविनीतअतिकपिपुलकितनचरनन्हिरयौ  
 रवुबीरनिजमुषजासुगुनगनकहत अगजग नाथजो ॥  
 काहेनहोइ विनीत परम पुनीत सदगुन सिंधुसो ॥

दो० रामप्रान प्रियनाथ तुम्ह, सत्य वचनममतात ॥  
 पुनिपुनि मिलतभरतसुनि, हरषन हृदय समात ॥

सो० भरतचरनसिरनाइ, तुरतगएउ कपिरामपहिं ॥  
 कहीकुसलसबजाइ, हरषिचलेउप्रभुजानचाहि ॥ २ ॥

हरषि भरतकोसलपुर आए \* समाचार सबगुरहि सुनाए  
 पुनि मंदिर महें बातजनाई \* आवत नगर कुसल रवुराई  
 सुनतसकलजननीउठिधाई \* कहिप्रभुकुसलभरतसमुझाई  
 ममाचार पुरवासिन्ह पाए \* नरअरुनारिहरषि सभधाए  
 दधिदुर्वा रोचन फलफूल \* नव तुलसीदल मंगल मूला  
 भरिभरिहेमथारवर भामिनि \* गावतचली सिंधुरागामिनि  
 जेजेसेहिंतेसेहिंउठि धावाहिं \* बालवृद्ध कहें संगन लावाहिं  
 एक पकन्हकहें बूझाहिभाई \* तुम्ह देपे दयाल रवुराई  
 अवधपुरी प्रभुआवत जानी \* भई सकल सोभाकै पानी  
 बहइसुहावन त्रिविधसमीरा \* भइसरजूअति निर्मल नीरा

दो० हरषित गुर परिजनअनुज, भूसुरचंद समेत ॥  
 चलेभरतमन प्रेम अति, सन्मष कृपा निकेत ॥  
 बहुतकचढीअटारिन्हि, निरपहिं गगन विमान ॥  
 देषि मधुर सुर हरषित, करहिं, सुमंगल गान ॥



राकामसि रघुपति पुर सिंधुदेषि हरषान ॥

बढयोकोलाहलकरतजनु नारितरंगसमान ॥ ३ ॥

इहाँमानुकुलकमलदिवाकर \* कपिन्हदेपावतनगर मनोहर  
सुनु कपीस अंगद लंकेसा \* पावनपुरी रुचिर यह देसा  
जद्यपि सब बैकुंठ वषाना \* वेदपुरान विदित जगजाना  
अवधपुरसिमाप्रियनहिंसो रु \* यहप्रमंग जानइ कोउकोऊ  
जन्म ममिममपुरीसुहावनि \* उत्तरदिसिवहसरजू पावनि  
जामज्जनते विनहिप्रयासा \* ममसमीपनर पावहिं वासा  
अतिप्रियमोहि इहाँकेवासी \* मम धामदापुरी सुषरासी  
हरषेसबकपि सुनि प्रभुवानी \* धन्यअवधजो राम वषानी

दो० आवत देषि लोग सब कृपामिंधु भगवान ॥

नरग निकट प्रभप्रेरेउ, उतरेउ ममिविमान ॥

उतरिबहेउप्रभ पुष्पकहिं, तुम्हकुबेर पहिंजाहु ॥

प्रेरितरामचलेउसो, हरप विरहअतिताहु ॥ ४ ॥

आए भरत संग सब लोग \* कृततनश्री रघुवीर वियोगा  
वामदेव बसिष्ट मुनिनायक \* देषेप्रभुमहिधरि धनुसायक  
धाइधरे गुर चरन सरोरुह \* अजसहितअतिपुलकतनोरुह  
भोटिकुसल बूझी मुनिराया \* हमरेकुसल तुम्हारिहिदाया  
सकलद्विजन्हामनिन एउमाया \* धर्मदुरंधर रघुकुल नाथा  
गहेभरतपुनि प्रभुपद पंकज \* नमत जिन्हहियुरमुनिसंकरअज  
परेभूमिनाहि उठत उठाए \* बलकरि कृपामिंधु उरलाए  
स्यामल गात रोमभये ठाढ़े \* नवराजीव नयन जल बाढ़े

छं० राजीवलोचनश्रवतजलतनललितपुलकावलिवनी ॥  
 अतिप्रेमहृदयलगाइअनुजहिमिलेप्रभुत्रिभुअनधनी॥  
 प्रभुमिलतअनुजहिसोहमोपहिंजातिनहिंउपमाकही॥  
 जनुप्रेम अरुसिंगारतन धरिमिले बरसुषमालही ॥  
 बूझतकृपानिधिकुमलभरतहिवचन बेगिन आवई ॥  
 मुनुसिवासोसुषवचन मनतेभिन्नजानि जोपावई ॥  
 अबकुसलकोसलनाथआरतजानि जनदरसनदियो ॥  
 बूढतविरहवारीसकृपानिधान मोहिकरगहिलियो ॥

दो० पुनिप्रभुहरषिसत्रुहन, भेंटेहृदय लगाय ।

लछिमन भरतमि लेतव, परमप्रेमदोउभाइ ॥ ५ ॥

भरतानुजलछिमनपुनिभेटे ✽ दुसह विरह संभव दुषमेटे  
 सीताचरन भरत सिरनावा ✽ अनुजसमेत परम सुषपावा  
 प्रभुबिलोकि हरषे पुरवासी ✽ जनितवियोगविपतिसवनासी  
 प्रेमातुर सब लोग निहारी ✽ कौतुक कीन्ह कृपालपरारी  
 अमितिरूपप्रगटेतेहिकाला ✽ जथाजोगमिलेसबहिकृपाला  
 कृपादृष्टिरघुबीर बिलोकी ✽ किएसकलनरनारिविसौकी  
 छनमहिसवहिमिलेभगवाना ✽ उमामरम यह काहुनजाना  
 एहिविधिसवहिसुषीकरिरामा ✽ आगे चले सीलगुन धामा  
 कौसल्यादि मातु सब धाई ✽ निरषिवछजनु धेनु लवाई

छं० जनुधेनुबालकवच्छतजिगृहचरनवनपरवसगई ॥

दिनअंतपुररुष श्रवतथनहुंकारकरि धावतभई ॥

अतिप्रेमप्रभुसबमातुभेटीवचनमृदुबहुविधिकहे ॥

गइविषमविपतिवियोगभवातिन्हहरषसुषअगनितलहे

दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा, राम चरन रतिजानि ॥  
 रामहिं मिलत कइकई, हृदय बहुत सकुचानि ॥  
 लल्लिमनसब मातन्हमिलि, हरषेआसिष पाइ ॥  
 कैकइ कहँपुनिपुनिमिले, मनकर लोभन जाइ ॥ ६ ॥

सासुन्हसबानि मिली बैदेही \* चरनन्हलागिहरषअतितेही  
 देहिं असीसबूझि कुसलाता \* होइअचलतुम्हारअहिवाता  
 सबरघुपतिमुषकमलबिलोकहि \* मंगलजानिनयनजलरोकहि  
 कनकथार आरती उतारहि \* बारबार प्रभुगात निहारहि  
 नानाभांति निछावरिकरहीं \* परमानंद हरष उर भरहीं  
 कौसल्यापुनिपुनिरघुबीरहि \* चितवतिपाकृसिंधुरनधीरहि  
 हृदयविचारति बारहि बारा \* कवनभाँतिलंकापति मारा  
 अतिसुकुमार जुगुल मेरेबारे \* निसिचरसुभटमहाबलभारे

दो० लल्लिमन अरुसीतासहित प्रभुहि बिलोकति मातु ॥  
 परमानंद मगन मन, पुनिपुनिपुलकित गातु ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नलनीला \* जामवंत अगद सुभसीला  
 हनुमदादि सब बानर बीरा \* धरे मनोहर मनुज सरीरा  
 भरत सनेह सीलव्रत नेमा \* सादरसबबरनहिं अतिप्रेमा  
 देशि नगर वासिन्हकै रीती \* सकलसराहहिं प्रभुपदप्रीती  
 पुनिरघुपतिसबसषाबोलाए \* मुनिपदलागहुसकलसिषाये  
 गुरवासिष्ट कुलपूज्य हमारे \* इन्हकी कृपा दुजजरन मारे  
 एसब सषा सुनहु मुनि मेरे \* भए समर सागर कहँ बेरे  
 ममहितलागिजन्मइन्हहारे \* भरतहुतेमोहिअधिकपियारे  
 सुनिप्रभवचन मगनसबभए \* निमिषिनिमिषिउपजतसुषनए

दो० कौसल्या के चरनन्हि, पुनितिन्ह नाएउ माथ ॥  
 आसिष दीन्हैहरषितुम्ह, प्रिय ममजिमिरघुनाथ ॥  
 सुमन वृष्टि नभ संकुळ, भवनचले सुष कंद ॥  
 चहे अटारिन्ह देषाहें, नगर नारि नर वृंद ॥ ८ ॥

कंचन कलसविचित्रसवारे ✽ सबहिधरेसजिनिजनिजद्वारे  
 बंदनवार पताका केतू ✽ सबन्हि बनाए मंगल हेतू  
 बीथी सकल सुगंध सिचाई ✽ गजमानिरचि बहुचौकपुराई  
 नाना भाँति सुमंगल साजे ✽ हरषिनगर निसान बहुबाजे  
 जहँतहँनारिनिछावरिकरहीं ✽ देहिंअसीस हरषउर भग्हीं  
 कंचन थार आरती नाना ✽ जुबतीसजेकरहिं सुभगाना  
 करहिं आरतीआरति हरके ✽ रघुकुलकमल बापनदिनकरके  
 पुर सोभा संपति कल्याना ✽ निगमसेष सारदा बषाना  
 तेउयहचारितदेषिठगिरहहीं ✽ उमा तासुगुननर किमिकहहीं

दो० नारिकुमुदिनीअवधसर, रघुपतिबिरहदिनेस ।  
 अस्तभएविकसतभइँ, निरषिराम राकेस ॥  
 होहिंसगुनसुभ विविधिविधि, बाजहिंगगननिसान ।  
 पुरनरनारिसनाथकरि, भवनचले भगवान ॥ ९ ॥

प्रभुजानी कैकई लजानी ✽ प्रथम तासुगृहगए भवानी  
 ताहिप्रबोधिबहुतसुषदीन्हा ✽ पुनिनिजभवनगवनहरिकीन्हा  
 कृपासिंधु जबमंदिर गए ✽ पुरनरनारि सुषीसब भए  
 पुरवसिष्ट द्विज लिए बोलाई ✽ आजसुघरी सुदिन समुदाई  
 सबद्विजदेहुहरषिअनुसासन ✽ रामचंद्र बैठहिं सिंघासन  
 सुनिवासिष्ट केवचन सुहाए ✽ सुनतसकलविप्रन्हआतिभाए



कहहिंवचनमृदु विप्रअनेका \* जंगअभिरामरामअभिषेका  
 अवमुनिवरविलंबनहिंकीजे \* महाराजकहैं तिलककरीजे  
 दो० तवमुनिकहे उसुमंत्रसन, सुनतचलेउहरषाइ ॥

रथअनेकबहुबाजिगज, तुरतसँवारेजाइ ॥

जःतहँधावनपठइपुनि, मंगलद्रव्यमगाइ ॥

हरषसमेतवासिष्टपद, पुनिसिरनाएउआइ ॥ १० ॥

अवधपुरी अतिरुचिर बनाई \* देवन्हसुमन वृष्टिशरलाई  
 रामकहा सेवकन्ह बुलाई \* प्रथमसपन्हअन्हवावहुजाई  
 सुनतवचनजहँतहँ जनधाए \* सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए  
 पुनिकरुनानिधिभरतहँकारे \* निज कररामजटा निरुआरे  
 अन्हवाएप्रभु तीनिउ भाई \* भगतबछल कृपाल रघुराई  
 भरत भाग्यप्रभु कोमलताई \* सेषकोटिसतसकहिं नगाई  
 पुनिनिज जटा रामविवराए \* गुर अनुसासन मागिनहाए  
 करिमज्जन प्रभु भूषन साजे \* अंगअनंग कोटिछबिलाजे

दो० सासुन्ह सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ ॥

दिव्य वसन वरभूषन, अँग अँग सजे बनाइ ॥

रामबाम दिसि सोभति, रमारूप गुन पानि ॥

देषिमातुसब हरषीं, जन्म सुफल निजजानि ॥

सुनुषगस तेहिं अवसर, ब्रह्मा सिव मुनिवृंद ॥

चढिबिमान आएसब, सुरदेषनसुषकंद ॥ ११ ॥

प्रभुबिलोकिमुनिमनअनुरागा \* तुरतदिव्य सिंघासन मागा  
 रबिसमतजसो वरनिनजाई \* बैठेरामाद्विजन्ह सिरनाई  
 जनकसुता समेत रघुराई \* पेषिप्रहरषेमुनि समुदाई

वेदमंत्र तवद्विजन उचारे ❀ नभसुरमुनिजयजयतिपुकारे  
प्रथमतिलकवसिष्ठमुनिकीन्हा ❀ पुनिसवविप्रन्हआयसुदीन्हा  
सुतविलोके हरषीमहंतारी ❀ बारबार आरती उतारी  
विप्रन्हदानविविधिविधिदीन्हे ❀ जाचकसकलअजाचककीन्हे  
सिंघासनपर त्रिभुवन साँई ❀ देषिसुरन्ह दुंदुभी बजाई

छं० नभदुंदुमी बाजहिं विपुल गंधर्व किन्नर गावहीं ॥  
नाचहिंअपल्लरा वृंदपरमानंद सुर मुनिपावहीं ॥  
भरतादिअनुज बिभीषणांगदहनुमदादिसमेतते ॥  
गहेछत्रचामरव्यजनधनुअसिचर्मसक्ति विराजते ॥  
श्रीसहित दिनकर वसभूषन कामबहुछवि सोहई ॥  
नवअंबुधर वरगात अंबर पीत सुर मनमोहई ॥  
मुकुटांगदादिविचित्रभूषन अंगअंगन्हिप्रतिसजे ॥  
अंभोजनयनविसाल उरभुज धन्यनरनिरषंतिजे ॥

दो० वह सोभा समाज सुष, कहतुन बनै षगेस ॥  
बरनै सारद सेषश्रुति, सोरस जान महेस ॥  
भिन्नभिन्नअस्तुतिकरि, गएसुरनिजनिजधाम ॥  
बंदी बेषवेदतब, आए जहँ श्रीराम ॥  
प्रभ सर्वज्ञ कीन्ह अति, आंदर क्रिपा निधान ॥  
लषे उनकाहू मरमकछु, लगेकरनगुनगान ॥ १२ ॥

छं० जयसगुन निर्गुन रूपरूप अनूप भूप सिरोमने ॥  
दसकंधरादिप्रचंडानिसिचर प्रबलपलभुजबलहने ॥  
अवतार नरपंसार भारविभंजि दारुन दुषदहे ॥  
जयप्रनतपाल दयाल प्रभुसंजुक्त साकि नाममहे ॥

तवविषममायावससुरासुर नागनर अगजगहरे ॥  
 भवपंथभ्रमतअमित दिवसनिसिकालकर्मगुननिभरे ॥  
 जेनाथकरि करुना बिलोके त्रिविधि दुषतेनिर्वहे ॥  
 भवषेद छेदनद सहमकह रक्षराम नमामहे ॥  
 जेज्ञानमान विमततवभव हरनिभक्तिन आदरी ॥  
 तेपाइ सुरदुर्लभ पदादपि परतहम देषत हरी ॥  
 बिस्वासकरि सब आसपरिहरिदासतव जे होइ रहे ॥  
 जपिनामतव विनुस्रमतरहिं मवनाथ सोस्मरामहे ॥  
 जेचरनसिवअजपूज्यरजसुभपरामिमुनिपतिनीतिरी ॥  
 नषनिर्गता मुनिवन्दिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥  
 ध्वजकुलिसअंकुसकंजजुतवनफिरतकंटककिनलहे ॥  
 पदकंज द्वंद्वमुकुंद राम रमेस निरय भजामहे ॥  
 अव्यक्तमूलमनादितरुत्वचचारि निगमागमभने ॥  
 षट्कंध साषा पंचवीस अनेक पर्न सुमन घने ॥  
 फलजुगलविधिकटुमधुरबेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे ॥  
 पल्लवतफूलत नवलनित संसार बिटप नमामहे ॥  
 जेब्रह्म अजमद्वैतमनुभव गम्यमनपर ध्यावहीं ॥  
 तेकहहुजानहुनाथहमतवसगुनजसनित गावहीं ॥  
 करुनायतन प्रभुसदगुनाकरदेव यहवर मागहीं ॥  
 मनवचनकर्मविकारतजि तवचरनहम अनुरागहीं ॥

दो० सबके देषत बेदन, बिनती कीन्हि उदार ॥  
 अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥

बैनतेय सुनुसंभु तव, आए जहँ रघुवीर ॥

बिनय करत गदगद गिरा, पूरित पुलकसरीर ॥१३॥

छन्द ।

जयराम रमारमनं समनं । भवतापभयाकुलपाहिजनं ॥  
 अवधेस सुरेस रमेस विभो । सरनागतमागतपाहिप्रभो ॥  
 दससीसविनासनवीसभुजा । कृतदूरिमहामहि भूरिरुजा ॥  
 रजनीचर वृन्द पतंग रहे । सरपावक तेज प्रचंड दहे ॥  
 महिमंडल मंडन चारुतरं । धृतसायक चाप निषंगवरं ॥  
 मदमोह महा ममतारजनी । तमपुंज दिवाकर तेजअनी ॥  
 मनजातकिरातनिपातकिण । मृगलोगकुभोगसरे न हिण ॥  
 हतिनाथअनाथनिपाहिहरे । विषयावन पाँवर भूलि परे ॥  
 बहुरोगवियोगन्हि लोगहण । भवदंघ्रि निरादरके फलण ॥  
 भवसिंधु अगाध परे नरते । पदपंकज प्रेमन जे करते ॥  
 अतिदीनमलीनदुषीनितही । जिन्हकेपदपंकजप्रीतिनहीं ॥  
 अवलंबभवंत कथाजिन्हके । प्रियसंतअनंतसदातिन्हके ॥  
 नहिरागन रोषन मानमुदा । तिन्हकेसमबैभववा विपदा ॥  
 एहिते तव सेवक होत सुदा । मुनित्यागतजोगभरोससदा ॥  
 करिप्रेमनिरंतर नेम लिये । पद पंकज सेवतसुद्ध हिये ॥  
 सम ॥ नि निरादरअदरही । सबसंतसुषी विचरतिमही ॥  
 मुनिमानस पंकजभृगभजे । रघुवीर महारन धीर अजे ॥  
 तवनामजपामिनमामिहरी । भवरोगमहागद मानअरी ॥  
 गुनसील कृपा परमा यतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥  
 रघुनंद निकंदय दंडधनं । महिपालबिलोकयदीनजनं ॥



दो० बारबार बर मागों, हरषि देहु श्रीरंग ।  
 पदसरोज अनपायनी, भगतिसदासतसंग ॥  
 बरनिउमापतिरामगुन, हरषिगएकैलास ।  
 तबप्रभुकपिन्हदिवाए, सबविधिषुषप्रदवास ॥ १४ ॥

सुनुषगपतियहकथापावनी \* त्रिविधतापभवभय दावनी  
 महाराजकरसुभ अभिषेका \* सुनतलहहिंनरविरतिविवेका  
 जेसकामनरसुनहिंजेगावहिं \* सुषसंपतिनानाविधिपावहिं  
 सुरदुर्लभ सुषकरि जगमाहीं \* अंतकाल रघुपति पुरजाहीं  
 सुनहिंविमुक्तविरतिअरुविषई \* लहहिंभगतिगतिसंपतिनितई  
 षगपति रामकथा में बरनी \* स्वमतिविआसत्रामदुषहरनी  
 विरतिविवेकभगतिट्टकरनी \* मोहनदी कहें सुंदर तरनी  
 नित नवमंगल कौसलपुरी \* हरषित रहहिं लोग सबकुरी  
 नितनइप्रीति रामपदपंकज \* सबकेजिन्हहिनमतसिवमुनिअज  
 मंगन बहुप्रकार पहिराये \* द्विजन्हदाननानाविधिपाए  
 दो० ब्रह्मानंद मगनकपि, सबके प्रभुपद प्रीति ॥

जातन जानेदिवस तिन्ह, गए मासषट बीति १५ ॥  
 बिसरे गृहसपनेहुसुधिनाहीं \* जिमिपरद्रोह संतमनमाहीं  
 तबरघुषति सबसषा बोलाए \* आइसबन्हि सादरसिरनाये  
 परम प्रीति समीप बैठारे \* भगतसुपद मृदुवचन उचारे  
 तुम्हअतिकीन्हिमोरिसेवकाई \* सुषपरकेहिबिधि करोंबड़ाई  
 तातेमोहितुम्हअतिप्रियलागे \* ममहितलागिभवनसुषत्यागे  
 अनुजराज संपति बैदेही \* देह गेह परिवार सनेही  
 सबममाप्रियनहिंतुम्हहिसमाना \* मृषानकहहुँ मोर यह बाना

सबके प्रिय सेवक यहनीती ✽ मोरे अधिक दासपर प्रीती  
दो० अवगृह जाहुसषा सब, भजेहु मोहि दृढ नेम ॥

सदा सर्वगत सर्वहित, जानिकरेहु अतिप्रेम ॥ १६ ॥

सुनिप्रभुवचनमगनसब भए ✽ को हमकहाँ विसरितनगए  
एकटकरहे जोरि करआगे ✽ सकहिंनकछु कहिअतिअनुरागे  
परम प्रेम तिन्हकरप्रभुदेषा ✽ कहाविविध विधि ज्ञानविसेषा  
प्रभुसन्मुख कछु कहननपारहिं ✽ पुनिपुनिचरन सरोजनिहारहिं  
तबप्रभुभूषन वसन मगाए ✽ नाना रंग अनूप सुहाए  
सुग्रीवहिं प्रथमहि पहिराए ✽ वसनभरतनिजहाथ बनाए  
प्रभुप्रेरित, लल्लिमन पहिराए ✽ लंकापति रघुपति मनभाए  
अंगद बैठरहा नहिं डोला ✽ प्रीतिदेषि प्रभुताहिन बोला  
दो० जामवंत नीलादि सब, पहिराए रघुनाथ ॥

हिएधरि रामरूप सब, चले नाइ पद माथ ॥

तबअंगद उठिनाइ सिर, सजलनयनकरजोरि ॥

अतिविनीत बोलेउवचन, मनहुप्रेमरसबोरि ॥ १७ ॥

सुनुसर्वज्ञ कृपा सुषसिंधो ✽ दीन दयाकरि आरत बंधो  
मरती बेरनाथ मोहि वाली ✽ गएउ तुम्हारे कोछे घाली  
असरनसरन विरद संभारी ✽ मोहिजनितजहुभगतहितकारी  
मोरेतुम्ह प्रभुगुर पितुमाता ✽ जाउँकहाँतजिपदजलजाता  
तुम्हहिबिचारि कहहुनरनाहा ✽ प्रभुतजि भवन काजममकाहा  
बालकज्ञान बुद्धि बलहीना ✽ राषहुसरन नाथ जनदीना  
नीचिटहलगृहकेसबकरिहों ✽ पदपंकज बिलोकि भवतरिहों  
असकहिचरनपरेउप्रभुपाही ✽ अबजनिनाथकहहुगृहजाही

दो० अंगद बचन विनीत सुनि रघुपति करुना सीव ॥  
 प्रभु उठाइ उर लाएउ, सजल नयन राजीव ॥  
 निज उरमाल बसन मानि, बालि तनय पहिराइ ॥  
 विदाकीन्हि भगवानतब, बहुप्रकार समुझाइ ॥ १८ ॥

भरतअनुज सौमित्रिसमेता \* पठवनचले भगतकृतचेता  
 अंगद हृदयप्रेम नहिं थोरा \* फिरि फिरिचितवगमकीओरा  
 बार बार कर दंड प्रनामा \* मनअसरहन कहहिं मोहिरामा  
 रामविलोकनिबोलनिचलनी \* सुमिरिसुमिरिसोचतिहँसिमिलनी  
 प्रभुरुषदेषिबिनय बहुभाषी \* चलेउ हृदयपद पंकजराषी  
 अतिआदरसबकपिपहुचाए \* भाइन्हसहितभरतपुनिआए  
 तबसुग्रीव चरनगहि नाना \* भाँतिबिनयकीन्हेहुमाना  
 दिनदसकरिरघुपतिपदसेवा \* पुनितब चरन देषिहों देवा  
 पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा \* सेवहु जाइ क्रिपा आगारा  
 असकहिकपिसबचलेनुरंता \* अंगद कहै सुनहु हनुमंता

दो० कहेहु दंडवत प्रभुसैं, तुम्हहिकहों कर जोरि ॥  
 बार बार रघुनायकहि, सुरति कराएहु मोरि ॥  
 असकहिचलेउ बालिसुत, फिरिआएउ हनुमंत ॥  
 तासुप्रीति प्रभुसन कही, मगन भए भगवंत ॥  
 कुलिसहुचाहि कठोरअति, कोमलकुसुमहुचाहि ॥  
 चित्तषगेस राम कर, समुझिपरै कहुकाहि ॥ १९ ॥

पुनिकृपाललियो बोलनिषादा \* दीन्हे भूषन बसन प्रसादा  
 जाहुभवनममसुमिरनकरेहु \* मनक्रम बचनधर्मअनुसरेहु  
 तम्हमममषाभरतसम भ्राता \* सदारहेउ पुर आवतजाता

बचनसुनतउपजा सुषभारी ✽ परेउचरन भरिलोचन बारी  
चरननलिनउरधरिगृहआवा ✽ प्रभुसुभाउपरिजनन्हिसुनावा  
रघुपतिचरित देषि पुरबासी ✽ पुनिपुनिकहहिंधन्य सुषरासी  
राम राज बैठे त्रैलोका ✽ हरषित भएगएसब सोका  
बयरन कर काहसन कोई ✽ राम प्रताप विषमता षोई  
दो० बरनास्रम निजनिज धरम, निरत वेदपथ लोग ।

चलहिंसदापावाहिं सुषहिं, नहिंभयसोकनरोग ॥२०॥  
देहिकदैविक भौतिक तापा ✽ रामराजनहिं काहुहिब्यापा  
सवनर करहिं परस्पर प्रीती ✽ चलहिंस्वधर्मनिरतश्रुतिनीति  
चारिउ चरनधर्म जगमाहीं ✽ पूरिहा सपनेहुँ अघनाहीं  
राम भगतिरतनरअरुनारी ✽ सकलपरमगतिकेअधिकारी  
अल्पमृत्यु नहिंकवनिउपीरा ✽ सबसुंदर सबविरुज सरीरा  
नहिंदरिद्रकोउदुषीन दीना ✽ नहिंकोउअबुधनलक्षनहीना  
सब निर्दभ धर्मरत पुनी ✽ नर अरुनारि चतुरसब गुनी  
सबगुनज्ञ पंडित सबज्ञानी ✽ सबकृतज्ञ नहिंकपटसयानी  
दो० राम राज नभगेससुनु, सचराचर जगमाहिं ॥

कालकर्म सुभाव गुन, कृतदुष काहुहि नाहिं ॥ २१ ॥  
भूमि सप्त सागर मेषला ✽ एकभूप रघुपति कोसला  
भुअनअनेक रोमप्रतिजामू ✽ यहप्रभुता कछुबहुतन तामू  
सो महिमा समुझत प्रभुकेरी ✽ यह बरनतहीनता घनेरी  
सोउमहिमाषगेसजिन्हजानी ✽ फिरियह चरिततिन्हहुरतिमानी  
सोउजानेकर फलयहलीला ✽ कहहिंमहामुनिबरदमसीला  
राम राज करसुष संपदा ✽ बरनिन सकैफनीस सारदा



सब उदार सब परउपकारी \* विप्रचरन सेवक नरनारी  
 एक नारिव्रत रतसबज्ञारी \* तेमनवचक्रमपतिहितकारी  
 दो० दंडजतिन्हकर भेदजहँ, नर्तकनृत्य समाज मा० पा० २७  
 जीतहुमनहिसुनिअअस, रामचन्द्र के राज ॥ २२ ॥

फूलहिंफरहिंसदातरुकानन \* रहहिंएकसंग गज पंचानन  
 षगमृग सहज बयर विसराई \* सबन्हिपरस्पर प्रीति बढाई  
 कूँजहिंषगमृग नाना वृंदा \* अभयचरहिंबनकरहिंअनंदा  
 सीतल सुरभि पवनबहमंदा \* गुंजतअलिले चलि मकरंदा  
 लताबिटप मागेमधु चवहीं \* मनभावतो धेनुपय सबहीं  
 ससिसंपन्न सदारह धरनी \* वेताभइकृत जुगकै करनी  
 प्रगटीगिरिन्हविविधिमनिपानी \* जगदात्मा भूपजिय जानी  
 सरिता सकल बहहिंवरवारी \* सीतलअमलस्वादसुषकारी  
 सागर निज मरजादा रहहीं \* डारहिंरत्न तटन्हिनरलहहीं  
 सरसिजसंकुलसकलतडागा \* अतिप्रसन्नदसदिसाविभागा  
 दो० विधुमाहि पूरमयूषन्हि, रवितप जेतनेहिं काज ॥

मागे बारिद देहिं जल, रामचंद्र के राज ॥ २३ ॥

कोटिन्हवाजिमेधप्रभुकीन्हे \* दानअनेकद्विजन्हकहँदीन्हे  
 श्रुतिपथ पालक धर्मधुरंधर \* गुनातीत अरुभोग पुरंदर  
 पति अनुकूल सदारहसीता \* सोभाषानिसुसील विनीता  
 जानति कृपासिंधु प्रभुताई \* सेवति चरनकमल मनलाई  
 जद्यपि गृहसेवक सेवकिनी \* विपुलसकल सेवाविधिगुनी  
 निजकरगृह परिचरजाकरई \* रामचंद्र आयसु अनुसरई  
 जेहिविधि कृपासिंधुसुप्रमानइ \* सोइकरश्रीसेवा विधिजानई

कौसल्यादि सासुगृह माहीं \* सेवइसबन्हि मानमदनाहीं  
उमा रमा ब्रह्मानि बंदिता \* जगदंबा संतत मनिंदिता  
दो० जासु कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवन सोइ ॥

रामपदारविंदरति, करतिसुभावहि षोइ ॥ २४ ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई \* रामचरनरतिअतिअधिकाई  
प्रभुमुषकमलविलोकतरहहीं \* कवहुं कृपालहमहिकछु कहहीं  
राम करहिं भ्रातन्हपरप्रीति \* नानाभांति सिषावहिं नीति  
हरषित रहहिं नगरकेलोगा \* करहिंसकलसुरदुलभ भोगा  
अहानिसिविधिहिमनावतरहहीं \* श्रीरघुबीर चरनरति चहहीं  
दुइसुत सुंदर सीता जाए \* लवकुस वेद पुरानन्ह गाए  
दोउ विजईविनईगुन मंदिर \* हरिप्रतिबिंबमनहुअतिसुंदर  
दुइदुइ सुतसब भ्रातन्ह केरे \* भएरूप गुनसील घनेरे  
दो० ज्ञानगिरा गोतीत अज, माया मन गुनपार ॥

सोइसच्चिदानंदघन, करनर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरजूकरिमज्जन \* बैठहिंसभासंगद्विजसज्जन  
वेद पुरान वसिष्ठ वषानहिं \* सुनहिरामजद्यपिसब जानहिं  
अनुजन्हसंश्रुतभोजनकरहीं \* दैषिसकलजननीसुष भरहीं  
भरत सत्रुहन दोनौ भाई \* सहितपवनसुत उपवनजाई  
बूझहिं बैठि राम गुनगाहा \* कहहनुमानसुमतिअवगाहा  
मुनतविमलगुनअतिसुषपावहिं \* बहुरिवहुरिकरिविनयकहावहिं  
सबके गृहगृह होहिं पुराना \* रामचरितपावनविधिनाना  
नरअरुनारिरामगुन गानहिं \* करहिंदिवसनिसिजातनजानहिं  
दो० अवध पुरी वासिन्ह कर, सुष संपदा समाज ॥

महससपनहिकहिसकहिं, जहंनृपराजविराज २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीसा \* दरसन लागि कोसलाधीसा  
 दिनप्रतिसकल अयोध्या आवहि \* देषिनगर विरागविसरावहि  
 जातरूपमनिरचित अटारी \* नाना रंग रुचिर गचढारी  
 पुरचहुँ पास कोटआति सुंदर \* रचे कंगूरा रंग रंगवर  
 नवग्रहनिकर अनीकबनाई \* जनुघेरी अमरावाति आई  
 महिबहु रंगरचितगचकाँचा \* जोबिलोकिमुनिवरमननाँचा  
 धवलधाम ऊपर नभ चुंबत \* कलसमनहुँरविससिदुतिनिंदत  
 बहुमनिरचितशरोषाभ्राजहि \* गृहगृहप्रतिमनिदीपभिराजहि  
 छं० मनिदीप राजहि भवनभ्राजहि देहरीविदुमरची ॥

मनिषंभभीतिविरंचिविरचीकनकमनिमरकतषची ॥  
 सुंदरमनोहर मदिरायतअजिररुचिफाटिकन्हिरचे ॥  
 प्रति द्वारद्वार कपाटपुरट बनाइबहु वज्रन्हिषचे ॥  
 दो० चारु चित्र साला गृह, गृहप्रति लिषे बनाइ ॥  
 रामचरितजेनिरषमुनि, तेमनलेहिँचोराइ ॥

सुमन बाटिकासवहिँ लगाई \* विविधिभांतिकरि जतनबनाई  
 लताललित बहुजाति सुहाई \* फूलहिंसदा वसंतकी नाई  
 गुंजत मधुकरमुषर मनोहर \* मारुतत्रिविधिसदाबहसुंदर  
 नानाषगवालकन्हिजिआए \* बोलतमधुर उडात सुहाए  
 मोरहंस सारस पारावत \* भवननिपरसोभाअतिपावत  
 जहँतहँदेषहिँ निजपरिल्लाहीं \* बहुविधिकूजहिँनृत्यकराहीं  
 मुकसारिका पढावहिँवालक \* कहहुरामरघुपतिजनपालक  
 राजदुआरसकलविधि चारु \* बीथी चौहट रुचिर बजारु  
 छं० बाजार रुचिर न बनैवरनत वस्तुबिनुगथ पाइए ॥

जहँभूपरमानिवास तहँकीसंपदा किमिगाइए ॥

बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुकुबेरते ॥

सबसुषी सबसच्चरित सुंदरनारिनर सिधु जरठजे ॥

दो० उत्तरदिसि सरजूबह, निर्मल जल गंभीर ॥

बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंकनहिं तीर ॥ २८ ॥

दूरि फराक रुचिरसो घाटा \* जहँजलपिअहिं बाजिगजठाटा  
पनिघट परममनोहरनाना \* तहाँनपुरुषकरहिं अस्नाना  
राजघाट सबविधि सुंदरवर \* मज्जहितहाँवरनचारिउनर  
तीर तीर देवन्हके मंदिर \* चहुँदिसितिन्हके उपवनसुंदर  
कहुँकहुँ सरितातीर उदासी \* बसहिंज्ञानरतमुनिसन्यासी  
तीर तीर तुलसिका सुहाई \* बृंद बृंद बहुमुनिन्ह लगाई  
पुरसोभाकश्रुवरनि न जाई \* बाहेरनगर परम रुचिराई  
देषतपुरी अपिल अघभागा \* बनउपवन बापिकातडागा

छं० बापी तडाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ॥

सोपान सुंदर नीर निर्मलदेषि सुरमुनिमोहहीं ॥

बहुरंग कंजअनेक षगकूजहिं मधुप गुंजारहीं ॥

आराम रम्य पिकादि षगरवजनुपथिक हंकारहीं ॥

दो० रमानाथ जहँ राजा, सो पुर वरनि किजाइ ॥

अनिमादिक सुषसंपदा, रहीअवध सबछाइ २९ ॥

जहँतहँनररघुपतिगुन गावहिं \* बैठिपरसपर इहै सिषावहिं  
भजहुप्रनतप्रातिपालकरामहिं \* सोभासील रूपगुन धामाहिं  
जलजबिलोचनस्यामलगातहि \* पलकनयनइवसेवकत्राताहि  
धृत सररुचिर चापतुनरिहि \* संतकंजवनरवि रनधीरहि  
कालकरालब्यालषगराजहि \* नमतारामअकाम ममताजहि



लोभमोहमृगज्जथकिरातहि \* मनमिजकरिहरिजनपुषदातहि  
 संसयसोकनिविड तमभानुहि \* दनुजगहनघनदहनकुमानुहि  
 जनकमुता समेतरघुवीरहि \* कमनभजहुभंजनभवभोरहि  
 बहुवासनामसकहिभरासिहि \* मदाएकरसअजअ विनासिहि  
 मुनिरंजनभंजनमहिभारहि \* तुलसिदामकेप्रभुहि उदारहि  
 दो० एहिबिधि नगरनारिनर, करहिराम गुनगान ॥

सानुकूल सबपर रहहिं, संतत कृपानिधान ३० ॥

जबते राम प्रताप पगेमा \* उदितभए उअतिप्रवलदिनेसा  
 पूरिप्रकास रहेउ तिहुंलोका \* बहुतन्हसुपबहुतनमनसोका  
 जिन्हहिसोकतेकहौं वषानी \* प्रथमअविद्यानिसानसानी  
 अघउलूकजहंतहाँ लुकाने \* काम क्रोधकैरव सकुचाने  
 विविधिकर्मगुनकालसुभाऊ \* एचकोर सुपलहिंन काऊ  
 मत्सर मानमोह मदचोरा \* इन्हकरहुंनरनकवनिहुंओरा  
 धरम तडागज्ञान विज्ञाना \* एपंकज विकसे विधिनाना  
 सुषसंतोष विराग विवेका \* बिगतसौंके कोक अनेका  
 दो० यहप्रताप रविजाके, उरजवकरै प्रकाम ॥ नवाह =

पछिले बाढहिं प्रथमजे, कहते पावहिंनाम ॥ ३१ ॥

भ्रातन्हसाहितराम एकवारा \* संगपरमप्रिय पवन कुमार  
 सुंदर उपवन देषन गए \* मवतरु कुसुमितपल्लवनए  
 जानिसमयसनकादिकआए \* तेजपुंज गुनसील सुहाए  
 ब्रह्मानंद सदा लयलीना \* देषत बालक बहु कालीना  
 रूपधरे जनु चारिउ वेदा \* समदरसी मुनिविगतविभेदा  
 आसावसनव्यसन यहतिनहीं \* रघुपतिचरितहोइतहंसुनहीं

तहाँ रहे सनकादि भवानी ✽ जहँघट संभवमुनिवरझानी  
रामकथा मुनिवरबहु बरनी ✽ ज्ञानजोनिपावकजिमिप्ररनी

दो० देषिराममुनि आवत, हरषि दंडवत कीन्ह ॥

स्वागतपृच्छि पीतपट, प्रभु बैठन कहँदीन्ह ॥ ३२ ॥

कीन्ह दंडवत तीनिउ भाई ✽ सहितपवनसुतसुषआधिकई  
मुनिरघुपतिछविअतुलबिलोकी ✽ भएमगनमन सके न रोकी  
स्यामलगातसरोरुह लोचन ✽ सुंदरता मंदिर भवमोचन  
एकटकरहे निमेषन लावहिं ✽ प्रभुकरजोरे सीस नवावहिं  
तिन्हकै दसा देषि रघुबीरा ✽ श्रवतनयनजलपुलकसरीरा  
करगहि प्रभु मुनिवर बैठारै ✽ परममनोहर वचन उचारै  
आजुधन्यमैं सुनहु मुनीसां ✽ तुम्हरे दरसजाइ अघषीसा  
बडे भाग पाइय सतसंगा ✽ विनहिप्रयासहोहिभवभंगा

दो० संतसंग अपवर्गकर, कामीभव कर पंथ ॥

कहहिंसंतकवि कोविद, श्रुतिपुरान सदग्रंथ ॥ ३३ ॥

मुनिप्रभुवचनहरषिमुनिचारी ✽ पुलकिततनअस्तुतिअनुसारी  
जयभगवंतअनंत अनामय ✽ अनघअनेक एककरुनामय  
जयनिर्गुनजयजयगुनसागर ✽ सुषमंदिरसुंदर अतिनागर  
जयइंदिरा रमन जय भूधर ✽ अगुपमअजअनादिसोभाकर  
ज्ञाननिधानअमानमानप्रद ✽ पावन सुजस पुरान बेदबद  
तज्ञकृतज्ञ अज्ञता भंजन ✽ नामअनेक अनामनिरंजन  
सर्व सर्वगत सर्व उरालय ✽ बससिसदाहमकहुँपरिपालय  
द्वंद्वविपति भवफंद विभंजय ✽ हृदिबसिरामकाममदगंजय

दो० परमानंदकृपाय तन, मनपरिपूरन काम ॥

प्रेमभगतिअनपायनी, देहुहमहिं श्रीराम ॥ ३४ ॥

देहुभगतिरघुपति अतिपावनि \* त्रिविधितापभवदापनसावनि  
प्रनतकामसुरधेनु कल्पतरु \* होइप्रसन्न दीजे प्रभु यहवरु  
भववारिधिकुंभजरघुनायक \* सेवतसुलभसकलसुषदायक  
मनसंभव दारुन दुषदारय \* दीनबंधु समता विस्तारय  
आसत्रासहरिषादिनिवारक \* विनयविवेकविरति विस्तारक  
भूपमौलिमनि मंडनधरनी \* देहिभगतिसंमृत्तिसरितरनी  
मुनिमन मानसहंसनिरंतर \* चरनकमलबंदित अजसंकर  
रघुकुलकेतु सेतुप्रति रक्षक \* कालकरमसुभावगुनभक्षक  
तारनतरन हरन सब दूषन \* तुलसिदासप्रभुत्रिभुवनभूषन

दो० बार बार अस्तुतिकरि, प्रेमसहित सिरनाइ ।

ब्रह्मभवनसंनकादिगे, अतिअभीष्ट वरपाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिकविधिलोकसिधाए \* भ्रातन्ह रामचरन सिरनाए  
पूछतप्रभुहिसकलसकुचाहीं \* चितवहिंसब मारुतसुतपाहीं  
सुनीचहहिं प्रभुमुषकै बानी \* जोसुनिहोइसकलभ्रमहानी  
अंतर जामी प्रभुसब जाना \* बूझत कहहु काह हनुमाना  
जोरिपानि कहतबहनुमंता \* सुनहु दीनदयाल भगवंता  
नाथभरत कछु पूछनचहहीं \* प्रस्नकरतमनसकुचतअहहीं  
तुम्हजानहुकपिमोरसुभाऊ \* भरतहिमोहिकछुअंतरकाऊ  
मुनिप्रभुवचनभरतगहेचरना \* सुनहुनाथप्रनतारति हरना

दो० नाथन मोहि संदेह कछु, सपनेहु सोक न मोह ।

केवल कृपा तुम्हारिहि, कृपा नंद संदोह ॥ ३६ ॥

करौं क्रिपानिधि एक ठिठार्ई \* में सेवक तुम्ह जन सुषदाई  
 संतन्ह कै महिमा रघुदाई \* बहुविधि वेद पुरानन्ह गाई  
 श्रीमुषतुम्ह पुनिकीन्हि बडाई \* तिनपर प्रभुहि प्रीति अधिकाई  
 सुनाचहौं प्रभुतिन्ह कर लक्षण \* क्रिपा सिंधु गुन ज्ञान विचक्षण  
 संत असंत भेद बिलगाई \* प्रनतपाल मोहिक हहु बुझाई  
 संतन्ह कै लक्षण सुनु भ्राता \* अगनित श्रुति पुरान विष्याता  
 संत असंतन्हि कै असि करनी \* जिमि कुठार चंदन आचरनी  
 काटै परसु मलय सुनु भाई \* निज गुन देइ सुगंध बसाई  
 दो० ताते सुरसी सन्ह चढत, जग बल्लभ श्री पंड ॥

अनल दाहि पीटत घनहिं, परसु बदन यह दंड ॥ ३७ ॥

विषय अलंपट सील गुना कर \* परदुष दुष सुष सुष देषे पर  
 सम अभूत रिपु विमद विरागी \* लोभामरष हरष भय त्यागी  
 कोमल चित दीनन्ह परदाया \* मनवचक्रममम भगति अमाया  
 सबहि मान प्रद आपु अमानी \* भरत प्रानसम मम ते प्रानी  
 विगत काममम नाम परायन \* साँति विरति विनीत मुदितायन  
 सीतलता सरलता मयत्री \* द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री  
 एसव लक्षण बसाहिं जासु उर \* जानेहु तात संत संतत फुर  
 समदम नियम नीति नहिं डोलहिं \* परुष वचन कबहूँ नहिं बोलहिं  
 दो० निंदा अस्तुति उभय सम, ममता मम पद कंज ॥

ते सज्जन मम प्रान प्रिय, गुन मंदिर सुष पुंज ॥ ३८ ॥

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ \* भूलेहु संगति करियन काऊ  
 तिन्ह कर संग सदा दुषदाई \* जिमि कपिलहि घालइ हरहाई  
 पलन्ह हृदय अति ताप बिसेषी \* जरहिं सदा पर संपति देषी



जहँकहुँ निंदा सुनहिं पराई \* हरषहिं मनहुँपरी निधिपाई  
 कामक्रोध मदलोभ परायन \* निर्दयकपटीकुटिलमलायन  
 बयर अकारन सब काहूसो \* जोकरहित अनहितताहूसो  
 झूठइ लेना झूठइ देना \* झूठइ भोजन झूठ चबेना  
 बोलहिंमधुर वचनजिमिमोरा \* पाइमहा अहिहृदय कठोरा

दो० पर द्रोही परदार रत, पर धन पर अपवाद ॥

ते नर पाँवर पापमय, देहधरे मनुजाद ॥ ३९ ॥

लोभइ ओढनलोभइ डामन \* सिस्नोदरपरजमपुर त्रासन  
 काहूकी जो सुनहिं बडाई \* स्वास लंहिंजनु जूडीआई  
 जब काहूकै देषहिं विपती \* सुषीभए मानहुजग नृपती  
 स्वारथरत परिवार विरोधी \* लंपटकाम लोभअतिक्रोधी  
 मातुपितागुरविप्रन मानहिं \* आपुगएअरुघालहिंआनहिं  
 करहिं मोहबस द्रोह परावा \* संतसंग हरिकथा न भावा  
 अवगुनसिंधुमंद मतिकामी \* वेदविदूषक परधन स्वामी  
 विप्र द्रोह परद्रोह विसेषा \* दंभ कपट जियधरे सुवेषा  
 दो० ऐसे अधम मनुज षल, कितजुग त्रेता नाहिं ॥

दापरकछुकचंदबहु, होइहहिकलिजुगमाहिं ॥ ४० ॥

पराहितसारिस धर्मनहिं भाई \* परपीडा समनहिं अधमाई  
 निर्णय सकल पुरान बेदकर \* कहेउँतातजानहिंकोबिदनर  
 नर सरीर धरि जेपरपीरा \* करहितेसहहिं महाभवभीरा  
 करहिंमोहबसनरअघनाना \* स्वारथरतपरलोक नसाना  
 कालरूप तिन्हकहं मैभ्राता \* सुभअरुअसुभकर्मफलदाता  
 अस विचारि जेपरम सयाने \* भजहिं मोहिसंसृत दुषजाने

त्यागहिं कर्मसुभासुभदायक \* भजहिं मोहिं सुरनरमुनिनायक  
संत असंतन्ह के गुन भाषै \* तेन परहिं भवजिन्ह लपिराषे

दो० सुनहु तात माया कृत, गुन अरु दोष अनेक ॥

गुन यह उभयन देषि अहि, देषि असो अविवेक ॥४१॥

श्रीमुषवचन सुनत सब भाई \* हरषे प्रेम न हृदय समाई  
करहिं विनय अतिवारहि वारा \* हनू मानहि य हरष अपारा  
पुनिरघुपति निज मंदिर गए \* एहि विधि चरित करत नित नए  
बार बार नारद मुनि आवहिं \* चरित पुनीत राम के गावहिं  
नित नव चरित देषि मुनि जाहीं \* ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं  
मुनि विरंचि अतिसय सुप्रमानहिं \* पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं  
सनकादिक नारद हिसराहहिं \* जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं  
मुनि गुन गान समाधि विसारी \* सादर सुनहिं परम अधिकारी

दो० जीवन मुक्त ब्रह्म पर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ॥

जे हरि कथान करहिं रति, हिन्ह के हिय पाषान ॥४२॥

एक बार रघुनाथ बोलाए \* गुरद्विज पुरवासी सब आये  
बैठे गुरमुनि अरु द्विज सज्जन \* बोले वचन भगत भव भंजन  
सुनहु सकल पुरजन मम बानी \* कहौं न कछु ममता उर आनी  
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई \* सुनहु करहु जौ तुमहि सुहाई  
सोई सेवक प्रियतम मम सोई \* मम अनुसासन मानै जोई  
जों अनीति कछु भाषौं भाई \* तौ मोहि बरजहु भय विसराई  
बड़े भाग मानुष तन पावा \* सुरदुर्लभ सदग्रंथ हि गावा  
साधन धाम मोल्लकर द्वारा \* पाइन जेहिं परलोक सँवारा

दो० सोपरत्र दुषपावै, सिर धुनि धुनि पछिताइ ॥

कालहि कर्महि इश्वरहि, मिथ्या दोसलगाइ ॥४३॥

एहितनकरफलविषयनभाई \* स्वर्गौंस्वल्प अंत दुषदाई  
नरतनपाइ विषय मनदेहीं \* पलटिसुधाते सठ विष लेहीं  
ताहिकबहुँ भलकहै न कोई \* गुंजा ग्रहै परस मनि षोई  
आकरचारि ललु चौरासी \* जोनिभ्रमतयहजिवअबिनासी  
फिरत सदा मायाकर प्रेरा \* कालकर्म सुभाव गुन घेरा  
कबहुँककरि करुनानर देही \* देतईस बिनु हेतु सनेही  
नरतन भववारिधि कहँ बेरो \* सन्मुष मरुत अनुग्रह मेरो  
करन धार सदगुर दृढनावा \* दुर्लभसाज सुलभ करिपावा

दो० जो न तरै भवसागर, नर समाज असपाइ ॥

सोकृतनिंदक मंदमति, आत्माहनगतिजाइ ॥४४॥

जौं परलोक इहाँ सुष चहहू \* सुनिममवचनहृदयदृढगहहू  
सुलभ सुषद मारग यहभाई \* भगतिमोरिपुरान श्रुतिगाई  
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका \* साधनकठिननमनकहँटेका  
करत कष्ट बहु पावै कोऊ \* भक्तिहीनमोहिप्रियनहिंसोऊ  
भक्ति सुतंत्र सकलसुषषानी \* बिनुसतसंग न पावहिंप्रानी  
पुन्यपुंजबिनुमिलहिं नसंता \* सतसंगति संसृत कर अंता  
पुन्यएक जगमहँनहिं दूजा \* मनक्रम वचन बिप्रपदपूजा  
सानुकूल तोहि पर मुनिदेवा \* जोतजि कपटकरै द्विजसेवा  
दो० औरौ एक गुप्त मत, सबहि कहौं करजोरि ॥

संकर भजन बिनानर, भगति न पावै मोरि ॥ ४५ ॥

कहहुभगतिपथकवनप्रयासा \* जोगनमषजपतपउपवासा

सरलसुभावनमन कुटिलाई ✽ जथालाभ संतोष सदाई  
मोरदास कहाइ नर आसा ✽ करइतौकहहुकहा विस्वासा  
बहुत कहोंका कथा बढाई ✽ एहि आचरन बस्यमें भाई  
बैरन विग्रह आसन त्रासा ✽ सुषमयताहिसदासबआसा  
अनारंभ अनिकेत अमानी ✽ अनघ अरोषदक्ष विज्ञानी  
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ✽ त्रिनसमविषयस्वर्गअपवर्गा  
भगतिपक्षहठ नहिं सठताई ✽ दुष्ट तर्कसब दूरि बहाई

दो० ममगुन ग्राम नामरत, गत ममतामदमोह ॥

ता कर सुष सोइ जानै, परा नंद संदोह ॥ ४६ ॥

सुनतसुधासम वचन रामके ✽ गहेसब निपद कृपा धामके  
जननि जनकगुर बंधु हमारे ✽ कृपा निधान प्रानते प्यारे  
तनधन धामराम हितकारी ✽ सबविधितुम्हप्रनतारतिहारी  
असिसिपतुम्हबिनुदइनकाऊ ✽ मातु पिता स्वारथरतओऊ  
हेतरहित जगजुग उपकारी ✽ तुम्हतुम्हार सेवक असुरारी  
स्वारथमतिसकलजगमाहीं ✽ सपनेहु प्रभुपरमारथ नाहीं  
सबके वचन प्रेमरस साने ✽ सुनिरघुनाथ हृदय हरषाने  
निजनिजगृहगएआयसुपाई ✽ बरनत प्रभु बतकही सुहाई  
दो० उमा अवध वासी नर, नारिकृता रूप ॥

ब्रह्मसच्चिदानंदधन, रघुनायक जहँ भूष ॥ ४७ ॥

एकवार बसिष्ट मुनि आए ✽ जहाँराम सुषधाम सुहाए  
अतिआदररघुनायककीन्हा ✽ पदपषारि पादोदक लीन्हा  
रामसुनहु मुनिकहकरजोरी ✽ क्रिपासिंधुबिनतीकछुमोरी  
देषि देषि आचरन तुम्हारा ✽ होतमोह ममहृदय अपारा



माहिमाअमितिबेदनहिंजाना \* मैकैहि भांतिकहों भगवाना  
 उपरोहित्य कर्म अति मंदा \* वेदपुरान सुमृति करनिंदा  
 जवनलेउँ में तवविधिमोही \* कहालाभ आगे सुततोही  
 परमात्मा ब्रह्म नर रूपा \* होइहि रघुकुल भूषन भूपा  
 दो० तवमेंहृदयविचारा, जोगजग्यव्रतदान ॥

जाकहँकरिअसोपैहों, धमनएहिसमआन ॥

जपतपनियमजोगनिजधर्मा \* श्रुतिसंभव नाना सुभकर्मा  
 ज्ञानदयादमतीरथ मज्जन \* जहँलगिधर्मकहतश्रुतिसज्जन  
 आगमनिगम पुराणअनेका \* पढ़ेसुनेकर भलप्रभु एका  
 तवपदपंकज प्रीति निरंतर \* सबसाधन करयहफल सुंदर  
 छूटै मलकि मलहिके धोए \* धृतकिपावकोइबारिविलोए  
 प्रेमभगति जलबिनु रघुराई \* अभिअंतरमलक बहुनजाई  
 सोइसर्वज्ञतज्ञ सोइ पंडित \* सोइगुनग्रह विज्ञानअपंडित  
 दक्षसकल लक्षण जुत सोई \* जाकेपद मरोज रतिहोई  
 दो० नाथ एकवर मागों, रामकृपा करिदेहु ॥

जन्मजन्मप्रभुपदकमल, कवहुँघटै जनिनेहु ॥ ४९ ॥

असकहिमुनिवसिष्टगृहआए \* कृपासिंधुक मनअति भाए  
 हनूमानभरतादिक भ्राता \* संगलिए सेवक सुखदाता  
 पुनिकृपालु पुरवाहेर गए \* गजरथ तुरंग मँगावत भए  
 देखिकृपाकरिसकल सराहे \* दिएउचितजिन्ह जिन्हजेइचाहे  
 हरनसकलश्रम प्रभुश्रमपाई \* गएजहाँ मीतल अंबरआई  
 भरतदीन्हनिजवसनडसाई \* बैठेप्रभु सेवहिं सब भाई  
 मारुत सुततव मारुतकरई \* पुलकवपुष लोचनजलभरई

हनूमान समनहिं बडभार्गी \* नहिंको उरामचरन अनुरागी  
गिरिजा जासुप्रीतिसेवकाई \* बारबारप्रभु निजमुष गाई  
दो० तेहि अवसर मुनिनारद, आए करतल बीन ॥

गावनलगेरामकल, कीरतिसदा नवीन ॥ ५० ॥

मामवलोकय पंकज लोचन \* कृपाबिलोकनिसोच विमोचन  
नीलतमरसस्याम कामअरि \* हृदय कंजमकरंद मधुपहरि  
जातुधान बरूथ बलभंजन \* मुनिसज्जनरंजनअघगंजन  
भूसुर सासिनव वृंदबलाहक \* असरनसरनदीनजनगाहक  
भुजबलविपुल भारमहिषंडित \* परदूषन विराध बध पंडित  
रावनारि सुष रूप भूपवर \* जय दसरथकुलकुमुद सुधाकर  
सुजसपुरानविदित निगमागम \* गावतसुरमुनि संतसमागम  
कारुणीकव्यलीकमदपंडन \* सबविधिकुसलकोसलामंडन  
कलिमलमथन नाम ममताहन \* तुलसिदासप्रमुपाहि प्रनतजन  
दो० प्रेम सहित मुनि नारद, बरनि राम गुन ग्राम ॥

सोभासिंधु हृदयधरि, गएजहाँविधिधाम ॥ ५१ ॥

गिरिजासुनहुविसदयहकथा \* मैंसबकही मोरिमति जथा  
रामचारित सतकोटिअपारा \* श्रुति सारदान बरनै पारा  
राम अनंत अनंत गुनानी \* जन्मकर्म अनंत नामानी  
जलसीकरमहिरज गनिजाहीं \* रघुपतिचरितनवरनि सिराहीं  
विमलकथा हरिपद दायनी \* भगतिहोइ मुनिअनपायनी  
उमाकहेउँ सब कथासुहाई \* जोभुसुंढि षगपतिहिमुनाई  
रुछकरामगुनकहेउँवषानी \* अबकाकहौंसोकहहुभवानी  
गुनिसुभकथा उमाहरषानी \* बोलींअति विनीतमृदुबानी

धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी \* सुनेउं रामगुन भवभयहारी

दो० तुम्हरी क्रिपा कृपायतन, अबकृत कृत्य न मोह ॥

जानेउं राम प्रताप प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥

नाथ तवानन ससि श्रवत, कथा सुधा रघुवीर ॥

श्रवनपुटन्हिमनपानकरि, नहिअघातमतिधीर ५२॥

राम चरित जेसुनत अघाहीं \* रस विसेषजानातिन्ह नाहीं

जीवन मुक्त महामुनि जेऊ \* हरिगुनसूनहिं निरंतरतेऊ

भवसागर चह पारजो पावा \* रामकथा ताकहें दृढनावा

विषइन्हकहेंपुनिहरिगुनग्रामा \* श्रवनसुषदअरुमन अभिरामा

श्रवनवंत असकोजग माहीं \* जाहिनरघुपतिचरितसुहाहीं

तेजड जीवनिजात्माघाती \* जिन्हहिनरघुपति कथासोहाती

हरिचरित्र मानस तुम्हगावा \* सुनिमेंनाथअमितिसुषपावा

तुम्हजोकहीयह कथासुहाई \* कागभुसुंढि गरुड प्रतिगाई

दो० विरति ज्ञान विज्ञान दृढ, राम चरन अतिनेह ॥

बायसतन रघुपति भगति, मोहि परम संदेह ५३ ॥

नर सहस्रमहँ सुनहु पुरारी \* कोउएकहोइ धर्मव्रत धारी

धर्मसीलकोटिक महँकोई \* विषयविमुष विरागरत होई

कोटिविरक्तमध्य श्रुतिकहई \* सम्यकज्ञानसकृतकोउलहई

ज्ञानवंत कोटिक महँकोऊ \* जीवन मुक्तसकृतजग सोऊ

तिन्हसहस्रमहसबसुषपानी \* दुर्लभ ब्रह्म लीन विज्ञानी

धर्मसील विरक्त अरुज्ञानी \* जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्राणी

सबते सो दुर्लभ सुर राया \* रामभगति रतगतमद माया

सोहरिभगतिकागकिमिपाई \* बिस्वनाथ मोहिकहहुबुझाई

दो० राम परायन ज्ञान रत, गुनागार मति धीर ॥

नाथ कहहु केहि कारन, पाएउ काग सरीर ५४ ॥

यहप्रभुचरित पवित्र सुहावा ✽ कहहुकृपाल कागकहँ पावा  
तुम्हकेहिभाँतिसुनामदनारी ✽ कहहुमोहिअतिकौतुकभारी  
गरुड महाज्ञानी गुन रासी ✽ हरिसेवकअतिनिकटनिवासी  
तेहिकेहिहेतु कागसन जाई ✽ सुनीकथासुनिनिकरबिहाई  
कहहु कवनविधि भासंवादा ✽ दोउहरिभगतकागउरगादा  
गौरिगिरा सुनि सरलसुहाई ✽ बोले सिव सादर सुषपाई  
धन्यसती पावन मति तोरी ✽ रघुपतिचरनप्रीतिनहिं थोरी  
सुनहु परमपुनीत इतिहासा ✽ जोसुनिसकलसोकभ्रमनासा  
उपजै रामचरन बिस्वासा ✽ भवनिधितरनरबिनहिप्रयासा  
दो० औसिय प्रस्नबिहंग पति, कीन्हि कागसन जाइ ॥

सो सब सादर कहिहों, सुनहु उमामनलाइ ५५ ॥

मैजिमिकथासुनीभवमोचनि ✽ सोप्रसंगसुनुसुमुखिसुलोचनि  
प्रथमदक्ष गृह तब अवतारा ✽ सतीनाम तब रहा तुम्हारा  
दक्षयज्ञ तबभा अपमाना ✽ तुम्हअतिक्रोधतजेतबप्राना  
ममअनुचरन्हकीन्हमषभंगा ✽ जानहुतुम्हसो सकलप्रसंगा  
तबअतिसोचभएउ मनमोरे ✽ दुषीभएउँ वियोग प्रियतोरे  
सुंदर बनगिरि सरिततडागा ✽ कौतुक देषतफिरौबिभागा  
गिरिसुमेर उत्तर दिसि दूरी ✽ नीलसैल एक सुंदर भूरी  
तासुकनकमयसिपरसोहाए ✽ चारि चारु मोरे मन भाए  
तिन्हपरएकएक बिट्पबिसाला ✽ बटपीपर पाकरी रसाला  
सैलो परि सर सुंदर सोहा ✽ मानिसोपानदेषिमनमोहा



दो० सीतल अमल मधुरजल, जलज विपुल बहुरंग ॥

कूँजत कलरव हंसगन, गुंजत मञ्जुल भृंग ॥५६॥

तेहिगिरि रुचिरवसैषगसोई \* तासुनास कल्पांत न होई  
 मायाकृत गुनदोष अनेका \* मोहमनोज आदिअविवेका  
 रहेब्यापि समस्त जगमाहीं \* तेहिगिरिनिकट कबहुं नहिजाहीं  
 तहँवसिहरिहिभजैजिगिकागा \* सोसुनु उमासहितअपुरागा  
 पीपर तरुतर ध्यानसो धरई \* जापजग्य पाकरितर करई  
 आँमछाँह कर मानस पूजा \* तजिहरिभजनकाजनहिंदूजा  
 वरतर कहहरि कथा प्रसंगा \* आवहिंसुनहिअनेकविहंगा  
 रामचरितविचित्रविधिनाना \* प्रेम सहितकर सादर गाना  
 सुनहिंसकलमतिविमलमराला \* बसहिंनिरंतरजे तेहि ताला  
 जबमें जाइसो कौतुक देषा \* उरउपजा आनंद विसेषा  
 दो० तवकछुकाल मरालतन, धरितहँ कीन्ह निवास ॥

सादर मुनि रघुपाति गुन, पुनि आएँ कैलास ॥५७॥

गिरिजाकहेउँसोसबईतिहासा \* मैजेहिसमयगएउँषगपासा  
 अबसो कथा सुनहु जेहिहेतू \* गएउकागपहिं षगकुलकेतू  
 जवरघुनाथ कीन्हरनक्रीडा \* समुझतचरितहोतमोहिब्रीडा  
 इंद्रजीत कर आपु बंधायो \* तव नारदमुनिगरुडपठायो  
 बंधन काटि गयो उरगादा \* उपजा हृदय प्रचंड विषादा  
 प्रभुबंधन समुझत बहुभाँती \* करत विचार उरग आराती  
 व्यापकब्रह्म बिरजवागीसा \* माया मोह पार परमीसा  
 सो अवतार मुनेउँजगमाहीं \* देखेउँ सो प्रभाव कटुनाहीं

दो० भव बंधनते छूटहिं, नर जप जाकर नाम ।

पर्व निशाचर बांधउ, नागपास सोइ राम ॥ ५८ ॥

नानाभाँति मनहिसमुझावा ✽ प्रगटनज्ञानहृदयभ्रमछावा  
 पेद पिन्न मनतर्क बढाई ✽ भएउमोहबसतुहरिहिनाई  
 व्याकुलगएउदेवारिषिपाहीं ✽ कहैसिजोसंसयनिजमनमाहीं  
 सुनिनारदहिलागिअतिदाया ✽ सुनुषगप्रबल रामकै माया  
 जोज्ञानिन्हकरचितअपहरई ✽ बरिआई विमोह मन करई  
 जेहिं बहुवार नचावा मोही ✽ सोइव्यापी बिहंगपतितोही  
 महा मोह उपजा उर तोरे ✽ मिटिहिनबेगिकहेषग मोरे  
 चतुरानन पहि जाहु षगेसा ✽ सोइकरेहु जेहिहोइ निदेसा  
 दो० असकहि चले देवारिषि, करत राम गुन गान ।

हरि मायाबल बरनत, पुनिपुनि परमसुजान ॥ ५९ ॥

तवषगपतिविरंचिपहिंगएउ ✽ निज संदेह सुनावत भएउ  
 सुनिविरंचिरामहिंसिरनावा ✽ समुझिप्रतापप्रेमअतिछावा  
 मनमहँकरइविचार विधाता ✽ मायाबसकविकोविद ज्ञाता  
 हरिमायाकरअमितप्रभावा ✽ विपुलवारजेहिमोहिनचावा  
 अगजगमयजगममउहराजा ✽ नहिंआचरजमोहिषगराजा  
 तव बोले विधि गिरा सुहाई ✽ जान महेश राम प्रभुताई  
 वयन तेय संकर पहिं जाहू ✽ तात अनतपूछहु जनिकाहू  
 तहँ होइहि तव संसयहानी ✽ चलेउबिहंगसुनतविधिवानी  
 दो० परमातुरबिहंग पति, आएउ तव मोपास ।

जातरहेउँ कुबेरग्रिह, रहिहु उमा कैलास ॥ ६० ॥

तेहिममपदसादरशिरनावा ✽ पुनि आपन संदेह सुनावा

मुनिताकरविनती मृदुवानी \* प्रेमसहितमें कहेउँभवानी  
 मिलेहुगरुडमारगमहँ मोही \* कवनभाँति समुझावौतोही  
 तबहि होइ सब समय भंगा \* जबबहुकालकरियसतसंगा  
 मुनिअ तहाँ हरिकथासुहाई \* नानाभाँतिमुनिन्हजोगाई  
 जेहिमहँआदिमध्यअवमाना \* प्रभुप्रतिपाद्य रामभगवाना  
 नितहरि कथाहोत जहँभाई \* पठवौतहाँ सुनहुतुम्ह जाई  
 जाइहि सुनत सकल संदेहा \* रामचरन होइहि अतिनेहा  
 दो० विन सतसंगन हरिकथा, तेहिविनु मोह न भाग ।

मोहगए विनु राम पद, होइन दृढ अनुराग ॥६१॥

मिलहिनरघुपतिविनअनुरागा \* किएजोग तपज्ञान विरागा  
 उत्तरदिसिसुन्दरगिरिनीला \* तहरहकाकभसुंठि सुसीला  
 रामभगति पथपरमप्रवीना \* ज्ञानी गुनगृह बहुकालीना  
 रामकथा सो कहइ निरंतर \* सादरसुनहिंविबिधविहंगवर  
 जाइसुनहु तहँ हरिगुनभूरी \* होइहिमोहजनित दुष दूरी  
 में जबतेहि सबकहा बुझाई \* चलेउहरषिममपदसिरनाई  
 ताते उमा न में समुझावा \* रघुपति कृपामरममें पावा  
 होइहिकीन्हकबहुँअभिमाना \* सोषावै चह कृपा निधाना  
 कछुतेहितेपुनिमें नहिराषा \* समुझै षग षगही कै भाषा  
 प्रभुमाया बलवंत भवानी \* जाहि न मोहकवनअसजानी  
 दो० ज्ञानी भगत सिरोमनि, त्रिभुवन पति करजान ।

ताहि मोह माया नर, पाँवर करहिं गुमान ॥

सिव विरंचि कहँ मोहै, कोहै बपुरा आन ।

असजियजानिभजहिंमुनि, मायापतिभगवान॥६२॥

गएउ गरुड जहँवसैमुमुंडी \* मतिअकुंठहरिमगातिअपंडी  
 देषिसैल प्रसन्न मन भएऊ \* मायामोह सोच सब गएऊ  
 करितडागमज्जनजलपाना \* बटतर गयउ हृदय हरषाना  
 वृद्ध वृद्ध बिहंग तहँ आए \* सुनै रामके चरित सुहाए  
 कथा अरंभकरइ सोइचाहा \* तेही समयगयउ षगनाहा  
 आवत देषिसकलषगराजा \* हरषेउ बायससहितसमाजा  
 अतिआदरषगपतिकरकीन्हा \* स्वागतपूछिसुआसन दीन्हा  
 करिपूजा समेत अनुरागा \* मधुरवचन तबबोलेउ कागा  
 दो० नाथ कृतारथ भयउमई, तब दरसन षगराज ॥

आयसु देहु सोकरौं अब, प्रभु आयहु केहिकाज ॥

सदा कृतारथरुतुम्ह, कहमृदुवचनषगेस ॥ मा० प० २८

जेहिकै अस्तुति सादर, निजमुष कीन्हिमहेस ॥ ६३ ॥

सुनहुतातजेहिकारन आएउं \* सोसबभएउदरस तबपाएउं  
 देषिपरम पावनतबआश्रम \* गएउ मोहसंसयनाना भ्रम  
 अबश्रीरामकथाअतिपावनि \* सदासुषद दुष पुंजनसावनि  
 सादर तात सुनावहु मोही \* बारबार बिनवौं प्रभु तोही  
 सुनतगरुडकै गिराविनीता \* सरल सुप्रेम सुषद सुपुनीता  
 भएउतासुमनपरमउछाहा \* लागकहइ रघुपति गुनगाहा  
 प्रथमहिंअतिअतुरागभवानी \* रामचरित सरकहोसि बषानी  
 पुनिनारदकर मोहअपारा \* कहोसिवहुरि रावन अवतारा  
 प्रभु अवतार कथापुनिगाई \* तबसिसुचरितकहोसिमनलाई  
 दो० बालचरितकहिविविधिबिधि, मनमहँपरम उछाह ॥

रिषिआगमनकहोसिपुनि, श्रीरघुवीर विवाह ॥ ६४ ॥



बहुरिराम अभिषेक प्रसंगा\* पुनिनृप वचन राजरसभंगा  
 पुरवासिन्हकरविरहविषादा\* कहेसिरामलल्लिमन संवादा  
 विपिनगवनकेवटअनुरागा\* सुरसरिउतारिनिवासप्रयागा  
 बालमीकप्रभुमिलनवषाना\* चित्रकूटजिमिवसे भगवाना  
 सचिवागवननगरनृपमरना\* भरतागवन प्रेम बहु वरना  
 करिनृप कृया मंगपुरवासी\* भरत गएजहँ प्रभु सुषरासी  
 पुनिरघुपतिबहुविधि प्रभुआए\* लै पादुका अवधपुर आए  
 भरतरहानिसुरपतिसुतकरनी\* प्रभुअरुअत्रिभेट पुनिवरनी  
 दो० कहि विराधवध जेहिबिधि, देहत जी सरभंग ॥

वरनि सुतीछन प्रीतिपुनि, प्रभुअगास्तिस्तसंग॥६५॥  
 कहि दंडकवन पावनताई\* गीधमइत्री पुनि तेहिं गाई  
 पुनिप्रभु पंचवटी कृतवासा\* भंजीसकलमुनिन्हकी त्रासा  
 पुनिलल्लिमनउपदेसअनूपा\* मूपनषाजिमिकीन्हिकुरूपा  
 परदूषन वधबहुरि वषाना\* जिमिसवमरमदसाननजाना  
 दसकंधर मारीच वतकही\* जेहिबिधिभईसोसवतोहिकहीं  
 पुनि माया सीता करहरना\* श्रीरघुवीरविरहकछु वरना  
 पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही\* बाधिकबंधसबरिहिगतिदीन्ही  
 बहुरिविरह वरनत रघुवीरा\* जेहिबिधि गएसरोवर तीरा  
 दो० प्रभु नारद संवाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग ॥

पुनि सुग्रीव मितार्ई, बालि प्रान कर भंग ॥

कपिहिं तिलक करिप्रभुकृत, सैल प्रवरषनवास ॥

वरनतवरषा सरद रितु, रामरोष कपि त्रास ॥ ६६ ॥

जेहिबिधिकपिपतिकीसपटाए\* सीताषोज सकलादिसि धाए

विवरप्रवेस कीन्हजेहिभांती \* कपिन्ह बहोरिमिलासंपाती  
 सुनिसबकथा समीरकुमारा \* नाघतभएउपयोधि अपारा  
 लंकाकपिप्रवेसजिमिकीन्हा \* पुनिसीताहिधीरजजिमिदीन्हा  
 वनउजारिरावनहि प्रबोधी \* पुरदाहिनाघेउबहुरि पयोधी  
 आए कपिसब जहँ रघुराई \* वैदेहीकी कुसल सुनाई  
 सेनसमेत जथा रघुवीरा \* उतरेजाइ वारिनिधि तीरा  
 मिलाविभीषनजेहिविधिआई \* सागर निग्रह कथा सुनाई

दो० सेतुवाँधिकपिसेनाजिमि, उतरी सागरपार ।

गएउबसीठावीरवर, जिहिविधिवालिकुमार ॥

निसिचरकीस लराई, वरनिसिविविधि प्रकार ।

कुंभकरनघननादकर, वलपौरुषसंधार ॥ ६७ ॥

निसिचरनिकरमरनविधिनाना \* रघुपति रावनसमर बषाना  
 रावनवध मंदोदरि सोका \* राज विभीषन देवअसोका  
 सीता रघुपति मिलनवहोरी \* सुरन्हकीन्हि अस्तुतिकरजोरी  
 पुनिपुष्पकच्छटिकपिन्हसमेता \* अवधचलेप्रभुक्रिपानिकेता  
 जेहिविधिरामनगरनिजआए \* वायस विसदचरित सबगाए  
 कहेसिवहोरिरामअभिषेका \* पुरवरनननृप नीतिअनेका  
 कथासमस्त सुसुंद बषानी \* जोमैं तुम्हसनकही भवानी  
 सुनिसवराम कथाषगनाहा \* कहतबचनमनपरम उछाहा

सो० गएउमोरसंदेह, सुनेउँसकलरघुपतिचरित ।

भएउरामपदनेह, तवप्रसादवायसतिलक ॥

मोहिभएउअतिमोह, प्रभुबंधनरनमहँनिराषि ॥

चिदानंदसंदोह, रामविकलकारनकवन ॥ ६८ ॥

देषिचरितअतिनरअनुसारी \* भएउ हृदयमम संसयभारी  
 सोइभ्रमअवहित करिमेमाना \* कीन्हअनुग्रहक्रिपानिधाना  
 जोअतिआतपव्याकुलहोई \* तरुछाया सुषजानै सोई  
 जौनहिहोतमोहअतिमोही \* मिलतेउँतातकवन विधितोही  
 सुनतेउँ किमिहरि कथासुहाई \* अतिविचित्रवहुविधितुम्हगाई  
 निगमागम पुरान मतएहा \* कहाहिंसिद्धमुनि नहिंसंदेहा  
 संतविसुद्ध मिलहिं परितेही \* चितवहिंरामक्रिपाकरिजेही  
 रामकृपातव दरसन भएऊ \* तवप्रसादसब संसय भएऊ  
 दो० सुनिविहंगपतिवानी, सहितविनयअगुराग ।

पुलकगातलोचनसजल, मनहरषेउअतिकाग ॥

श्रोतासुमतिसुसीलसुचि, कथारसिकहरिदास ।

पाइउमाअतिगोप्यमत, सज्जनकरहिंप्रकास ॥६९॥

बोलेउकाक भुसुंढि बहोरी \* नभग नाथपर प्रीतिनथोरी  
 सबविधि नाथपूज्यतुम्हमेरे \* कृपापात्र रघुनायक केरे  
 तुम्हहिनसंसय मोहनमाया \* मोपरनाथ कीन्हितुम्हदाया  
 पठैमोहमिस षगपति तोही \* रघुपतिदीन्हिवडाई मोही  
 तुम्हनिजमोह कहीषगसाई \* सोनहिकछुआचरजगोसाई  
 नारदभवविरंचि मनकादी \* जेमुनिनायक आतम वादी  
 मोहनअंधकीन्ह केहिकेही \* कोजगकाम नचावन जेही  
 त्रिस्नाकेहिन कीन्ह वौरहा \* केहिकरहृदय क्रोधनहिदहा

दो० ज्ञानी तापस मूरकवि, कोविद गुन आगार ॥

केहिकै लोभ बिडंबना, कीन्हिन एहिसंसार ॥

श्रीमदवक्रन कीन्ह केहि, प्रभुता बधिरन काहि ।

मृगलोचनिकेनैनसर, कोअसलागनजाहि ॥७०॥

गुनकृत सन्यपातनहि केही ✽ कोउनमानमदतजेउनिबेही  
जोवनज्वरकोहिनहिबलकावा ✽ ममताकेहिकरजसननसावा  
मत्सर काहि कलंकन लावा ✽ काहिनसोकसमीरडोलावा  
चिंतासापिनि कोनाहिंषाया ✽ कोजगजाहिनब्यापीमाया  
कीट मनोरथ दारु सरीरा ✽ जेहिनलागघुनकोअसधीरा  
सुतविक लोक ईषना तीनी ✽ केहिकैमतिइन्हकृतनमलीनी  
यस सब मायाकर परिवारा ✽ प्रवलअमितिकोवरनै पारा  
सिव चतुराननजाहिडेराहीं ✽ अपरजीव केहि लेषे माहीं  
दो० ब्यापि रहेउ संसार महँ, माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाषंड ॥

सो दासी रघुबीर के, समुझै मिथ्या सोपि ।

छूटन राम कृपाबिन, नाथ कहौ पदरोप ॥७१॥

जोमायासब जगहि नचावा ✽ जासुचरितलषिकाहुनपावा  
सोइप्रभुभूविलास षगराजा ✽ नाचनटीइवसहितसमाजा  
सोहे सच्चिदानंदधन रामा ✽ अज विज्ञानरूपबल धामा  
ब्यापकब्याप्यअषंडअनंता ✽ अषिलअमोघसक्तिभगवंता  
अगुन अदभ्र गिरागोतीता ✽ समदरसी अनवद्यअजीता  
निर्मम निराकार निरमोहा ✽ नित्य निरंजन सुष संदोहा  
प्रकृतिपारप्रभु सबउरबासी ✽ ब्रह्मनिरीहविरजअबिनासी  
इहाँ मोहकर कारन नाहीं ✽ रबिसन्मुषतमकबहुँनजाहीं  
दो० भगत हेतु भगवान प्रभु, रामधरेउ तन भूप ।

किए चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥



यथा अनेक वेष धरि, नृत्य करे नटकोइ ।  
सोइसोइ भाव देषावै, आपुन होइन सोइ ॥ ७२ ॥

असि रघुपतिलीलाउरगारी \* दनुजविमोहनिजनसुषकारी  
जेमतिमालिनविषयवसकामी \* प्रभुपरमोहधरहिंइमिस्वामी  
नयनदोष जाकहँ जब होई \* पीतवरनससिकहँ कहसोई  
जबजेहिदिसिभ्रमहोइषगेसा \* सोकहपछिमगएउदिनेसा  
नौकारूढ चलत जग देषा \* अचलमाहेवसआपुहिलेषा  
बालकभ्रमहिनिभ्रमहिगृहादी \* कहहिंपरस्पर मिथ्याबादी  
हरिविषइक असमोहाविहंगा \* सपनेहुनहिं अज्ञान प्रसंगा  
मायावस मतिमंद अभागी \* हृदयजमनिकाबहुविधिलागी  
तेसठ हठवस संसय करहीं \* निजअज्ञान रामपरधरहीं

दो० काम क्रोध मदलोभरत, गृहासक्त दुषरूप ।

तेहिकिमिजानाहिरघुपतिहि, मूढपरे तम कूप ॥

निर्गुन रूपसुलभ अति, सगुन जान नहिं कोइ ।

सुगमअगमनानाचरित, सुनिमुनिमनभ्रमहोई ७३ ॥

सुनुषपेस रघुपति प्रभुताई \* कहोंजथामति कथासुहाई  
जेहिविधिमोहभएउप्रभुमोहीं \* सोउसवकथासुनावों तोहीं  
रामकृपा भाजनतुम्ह ताता \* हरिगुनप्रीतिमोहिसुषदाता  
तातेनहि कछुतुम्हाहिदुरावों \* परमरहस्य मनोहर गावों  
मुनहु रामकर सहजसुभाऊ \* जनअभिमाननराषहिंकाऊ  
संसृत मूल मूल प्रद नाना \* सकलसोकदायकअभिमाना  
ताते करहिं कृपानिधिदूरी \* सेवकपर ममता अतिभूरी  
जिमिसिसुतनब्रनहोइगुसाई \* मातुचिराव कठिनकी नाई

दो० जदपि प्रथम दुषपावै, रोवै बाल अधीर ॥  
व्याधि नास हित जननी, गनतिनसो सिमुपीर ॥  
तिमिरधुपति निजदासकर, हरहिं मानहित लागि ॥  
तुलसिदास ऐसेप्रभुहि, कसनभजहु भ्रमत्यागि ७४

रामकृपा आपनि जडताई ✽ कहौंषगेस सुनहु मनलाई  
जबजवराममनुजतनधरहीं ✽ भक्तहेतु लीला बहुकरहीं  
तब तब अवधपुरी में जाऊँ ✽ बालचरितविलोकिहरषाऊँ  
जन्म महोत्सव देषों जाई ✽ वरषपांचतहँ रहउँ लुभाई  
इष्टदेव मम बालक रामा ✽ सोभावपुषकोटि सतकामा  
निजप्रभुवदननिहारिनिहारी ✽ लोचनसुफलकरों उरगारी  
लघुवायस वपुधरि हरिसंगा ✽ देषों बाल चरित बहुरंगा

दो० लरिकार्ई जहँ जहँ फिरत, तहँ तहँ संग उडाउँ ॥  
जूठानि परइ अजिर महँ, सो उठाइ करि पाउँ ॥  
एकवार अतिसै सब, चरित किए रघुवीर ॥  
सुमिरतप्रभुलीलासोइ, पुलकित भएउसरीर ७५ ॥

कहैभुसुंढि सुनहु षगनायन ✽ राम चरितसेवक सुषदायक  
नृपमंदिर सुंदर सब भांती ✽ षचितकनकमनिनानाजाती  
वरनिनजाइ रुचिरअंगनाई ✽ जहँषेलहिं नितचारिउ भाई  
बालविनोद करत रघुराई ✽ विचरतअजिरजननिमुषदाई  
मरकतमृदुलकलेवरस्थामा ✽ अंगअंग प्रतिल्लबिबहुकामा  
नवराजीव अरुन मृदुचरना ✽ पदजरुचिरनषससिदुतिहरना  
ललितअंककुलिसादिकचारी ✽ नूपुर चारु मधुर रवकारी  
चारुपुरट मनिरचित बनाई ✽ कटिकिंकिनिकलमुषरसुहाई

दो० रेषात्रय सुंदर उदर, नाभी रुचिर गंभीर ॥

उरआयतभ्राजतविविधि, बालविभूषनचीर ॥७६॥

अरुनपानिनषकरज मनोहर \* बाहुविसाल विभूषन सुंदर  
कंधबाल केहरि दर ग्रीवा \* चारुचिवुकआननल्लविसीवाँ  
कलवलबचन अधरअरुनारे \* दुइदुइदसन विसद बरवारे  
ललितकपोल मनोहरनासा \* मकलसुषदससिकरसमहासा  
नीलकंजलोचन भवमोचन \* भ्राजतभालतिलकगोरोचन  
विकटभृकुटिसमश्रवनसुहाए \* कुंचितकचमेचकल्लबिछाए  
पीतशीनिशंगुली तन सोही \* किलकनिचितवनि भावतिमोही  
रूपरासि नृपअजिरविहारी \* नाचहिनिजप्रतिबिंबनिहारी  
मोहिसनकरहिविविधिविधिक्रीडा \* बरनतमोहिहोतिअतिब्रीडा  
किलकतमोहिधरनजबधावहिं \* चलोंभागि तबपूप देषावहिं

दो० आवत निकट हसहिंप्रभु, भाजत रुदन कराहिं ॥

जाउँ समीप गहनपद, फिरिफिरि चितइ पराहिं ॥

प्राकृत सिमुइव लीला, देषि भएउ, मोहि मोह ॥

कवन चरित्र करतप्रभु, चिदानंद संदोह ॥ ७७ ॥

एतना मन आनत षगराया \* रघुपतिप्रेरित व्यापी माया  
सोमायान दुषद मोहिकाहीं \* आनजीव इवसंसृत नाहीं  
नाथ इहांकलु कारन आना \* सुनहुसोसावधानहरिजाना  
ज्ञान अषंड एक सीता बर \* माया बस्यजीव सचराचर  
जों सबके रह ज्ञान एकरस \* ईश्वरजीवहिभेद कहहुकस  
मायाबस्य जीव अभिमानी \* ईसबस्य माया गुन पानी  
परबसजीव स्वबस भगवंता \* जीव अनेक एक श्रीकंता

मुधाभेद जद्यपि कृतमाया \* विनुहरिजाइनकोटिउपाया  
 दो० राम चन्द्रके भजन विनु, जोचह पद निर्वान ॥  
 ज्ञानवंत अपिसो नर, पसु विनु पूछ विषान ॥  
 राका पति षोडसउआहिं, तारा गन समुदाइ ॥  
 सकलगिरिन्हदवलाइअ, विनुविरातिनजाइ ॥७८॥  
 ऐसेहिंहरिविनुभजनषगेसा \* मिटइन जीवन्ह केरकलेसा  
 हरिसेवकहिनव्यापअविद्या \* प्रभुप्रेरितव्यापै तेहि विद्या  
 ताते नासन होइ दासकर \* भेदभगति बाढे विहंगव  
 भ्रमतेचकितराममोहिदेषा \* विहँसे सोसुनु चरितविसेषा  
 तेहिकौतुककर मरमनकाहू \* जाना अनुजन मातुपिताहू  
 जानुपानिधाए मोहिधरना \* स्यामलगातअरुनकरचरना  
 तबमें भागि चलेउँउरगारी \* रामगहन कहँ भुजा पसारी  
 जिमिजिमिदूरिउडाउँअकासा \* तहँहरि भुजदेषों निज पासा  
 दो० ब्रह्मलोक लागि गएउँ मैं, चितएउँ पाछे उडात ॥  
 जुग अंगुलकर बीचसब, रामभुजहि मोहि तात ॥  
 मप्तावरन भेद करि, जहाँ लगे गति मोरि ॥  
 गएउँतहाँप्रभुभुजनिरषि, व्याकुलभएउँबहोरि ७९॥  
 मूँदेउँनयनत्रासितजबभएउँ \* पुनिचितवतकोसलपुरगएउँ  
 मोहिविलोकिराममुसुकाहीं \* विहँसततुरतगएउँमुषमाहीं  
 उदरमाँझ सुनु अंडज राया \* देषउँबहु ब्रह्मांड निकाया  
 अतिविचित्रतहँलोकअनेका \* रचनाअधिक एकते एका  
 कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा \* अगनितउडगनरविरजनीसा  
 अगनितलोकपालजमकाला \* अगनितभूधरभूमि बिसाला



सागरसरिसरविपिनअपारा \* नानाभाँति सृष्टि विस्तारा  
सुरमुनिसिद्धनागनरकिन्नर \* चारि प्रकारजीव मचराचर

दो० जोनहिं देषा नहिं सुना, जो मन हूँन समाइ ॥  
सोसब अद्भुत देषेउँ, वरनि कवनि विधि जाइ ॥  
एक एक ब्रह्मांड महँ, रहों वरष मत एक ॥  
एहिबिधि देषत फिरौंमैं, अंड कटाह अनेक ॥

लोकलोकप्रतिभिन्नविधाता \* भिन्नाविष्णुसिवमनुदिसित्राता  
नर गंधर्व भूत बेताला \* किन्नरनिसिचरपमुषगव्याला  
देव दनुज गननाना जाती \* सकलजीवतहँआनहिभाँती  
महिसारिसागरसरगिरिनाना \* सवप्रपंच तहँ आनै आना  
अंडकोस प्रतिप्रतिनिजरूपा \* देषे उँजिनसअनेक अनूपा  
अवधपुरी प्रतिभुवननिनारी \* सरजू भिन्नभिन्न नरनारी  
दसरथ कौसल्या सुनुताता \* विविधरूपभरतादिकभ्राता  
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा \* देषों वाल विनोद अपारा

दो० भिन्न भिन्नमैं दीषसब, अतिबिचित्र हरिजान ॥  
अगनित भुवन फिरेउँप्रभु, रामन देषेउँ आन ॥  
सोइसिसुपनसोइसोभा, सोइक्रिपालरघुवीर ॥  
भुवनभुवनदेषतफिरौं, प्रेरितमोहसमीर ॥ ८१ ॥

भ्रमतमोहि ब्रह्मांड अनेका \* बीते मनहु कलप सतएका  
फिरतफिरतनिजआश्रमआएउँ \* तहँपुनिरहिकलुकालगँवाएउँ  
निजप्रभुजन्मअवधसुनिपाएउँ \* निर्भरप्रेमहरषिउठिधाएउँ  
देषों जन्म महोत्सव जाई \* जेहिबिधिप्रथम कहामेंगाई

राम उदर देषेउँ जगजाना ✽ देषत बनइन जाइ बषाना  
तहँ पुनि देषेउरामसुजाना ✽ मायापतिकृपाल भगवाना  
करोँ विचार बहोरि बहोरी ✽ मोहकलिलव्यापितिमतिमोरी  
उभएघरी महँ में सबदेषा ✽ भएउँश्रमातिमनमोहविसेषा

दो० देषिकृपाल विकल मोहि, बिहँसे तब रघुबीर ॥

बिहँसतहीं सुष बाहेर, आएउँ सुनु मतिधीर ॥

सोइ लरिकार्ई मोसन, करन लगे पुनिराम ॥

कोटि भांति समुझावों, मनन लहै विश्राम ॥ ८३ ॥

देषिचरित येह सो प्रभुताई ✽ समुझत देह दसा बिसराई  
धरनिपरेउँसुषआव न बाता ✽ त्राहित्राहिआरतजनत्राता  
प्रेमाकुलप्रभुमोहि बिलोकी ✽ निजमायाप्रभुता तबरोकी  
करसरोजप्रभुमम सिरधरेऊ ✽ दीनदयाल सकल दुष हरेऊ  
कीन्हराममोहिविगतबिमोहा ✽ सेवक सुषद कृपा संदोहा  
प्रभुताप्रथमविचारिविचारी ✽ मनमहँहोइ हरषअतिभारी  
भगत बछलता प्रभुकै देषी ✽ उपजीममउर प्रीतिविसेषी  
सजलनयनपुलकित हरजोरी ✽ कीन्हि उँबहुविधिविनयबहोरी

दो० सुनि सप्रेम मम बानी, देषिदीन निज दास ॥

वचन सुषद गंभीर मृदु बोले रमा निवास ॥

काग भसुंढी माँगुवर, अति प्रसन्न मोहिजानि ॥

अनिमादिकसिधिअपररिधि, मोछसकलसुषषानि ८३  
ज्ञानविवेक विरति विज्ञाना ✽ मुनिदुर्लभगुनजे जगनाना  
अजु देउँ सब संसयनाहीं ✽ मागुजोतोहिभावमनमाहीं  
सुनिप्रभुवचनअधिकअनुरागेउँ ✽ मनअनुमानकरनतबलागेउँ

प्रभुकह देन सकल सुषसही \* भगति आपनी देन न कही  
 भगतिहीन गुनसवसुष ऐसे \* लवनविना बहुविंजन जैसे  
 भजनहीन सुषकवने काजा \* असविचारिवोले उँषगराजा  
 जौं प्रभुहोइ प्रसन्न बरदेह \* मोपर करहु कृपा अह नेह  
 मनभावत बर माग उँस्वामी \* तुम्ह उदारउर अंतरजामी

दो० अविरल भगति विसुद्धि तब, श्रुतिपुरान जोगाव ॥

जेहिषोजत जोगीसमुनि, प्रभुप्रसाद कोउपाव ॥

भगत कल्पतरु प्रनतहित, कृपासिंधु सुषधाम ॥

सोइनिजभगतिमोहि प्रभु, देहुदयाकरिराम ॥ ८४ ॥

एवमरुकहिरघुकुलनायक \* बोले बचन परम सुषदायक  
 सुनुवायसतई सहज सयाना \* काहेनमागसि असबरदाना  
 सबसुषषानि भगतितैंमागी \* नहिं जगकोउतोहिसमवडभागी  
 जोमुनिकोटिजतननहिलहरी \* जेजपजोग अनलतनदहरी  
 रीझे उँ देषि तोरि चतुराई \* मागेहुभगतिमोहिअतिभाई  
 मुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे \* सबसुभगुनवसिहहिं उरतोरै  
 भगतिज्ञान विज्ञान विरागा \* जोगचरित्र रहस्य विभागा  
 जानवतैं सबही कर भेदा \* मम प्रसादनहिं साधनषेदा

दो० माया संभव भ्रम सब, अब न व्यापिहहिं तोहि ॥

जानेसु ब्रह्मअनादि अज, अगुन गुनाकर मोहि ॥

मोहि भगत प्रिय संतत, अस विचारि सुनुकाग ॥

कायबचनमनममपद, करेसुअचलअनुराग ॥ ८५ ॥

अवसुनुपरमविमलममबानी \* सत्यसुगमनिगमादिवषानी  
 निज सिद्धांत सुनावौं तोही \* सुनिमनधरुसबताजिभजुमोही

मम माया संभव संसारा ✽ जीव चराचरविविध प्रकारा  
सबममप्रियसबममउपजाए ✽ सबते अधिक मनुजमोहिभाए  
तिन्हमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी ✽ तिन्हमहँनिगमधर्म अनुसारी  
तिन्हमहँप्रियविरक्तपुनिज्ञानी ✽ ज्ञानिहुते अतिप्रिय विज्ञानी  
तिन्हतेपुनिमोहिप्रियनिजदासा ✽ जेहिगति मोरिनदूसरिआसा  
पुनिपुनि सत्यकहौं तोहिपाहीं ✽ मोहिसेवकसमप्रिय कोउनाहीं  
भगतिहीन विरंचि किनहोई ✽ सबजीवहु समप्रिय मोहिसोई  
भगतिवंत अतिनीचौ प्रानी ✽ मोहिप्रानप्रियआसि ममवानी  
दो० सुचिसुसीलसेवकसुमति, प्रिय कहु काहिन लाग ॥

श्रुतिपुरान कहनीतिआसि, सावधान सुनुकाग ८६ ॥

एकपिताके विपुल कुमारा ✽ होहिप्रियकंगुनसीलअचारा  
कोउपंडितकोउतापसज्ञाता ✽ कोउ धनवंतमूर कोउदाता  
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई ✽ सबपरपिताहिप्रीति समहोई  
कोउपितुभगतबचन मनकर्मा ✽ सपनेहु जानन दूसर धर्मा  
सोसुतप्रियपिपुप्रानसमाना ✽ जद्यपिसोसबभाँतिअयाना  
एहिविधि जीव चराचर जेते ✽ त्रिजगदेवनर अपुरसमेते  
अषिलविस्वयहमोरउपाया ✽ सबपरमोहि बरावरि दाया  
तिन्हमहँजोपरिहरिमदमाया ✽ भजहिमोहिमन बचअरुकाया  
दो० पुरुष नपुंसक नारिवा, जीव चराचर कोइ ॥

सर्वभाव भजकपट तजि, मोहिपरम प्रिय सोइ ॥

सो० सत्यकहौं षगतोहि, सुचि सेवक मम प्रान प्रिय ॥

असविचारिभजुमोहि, परिहरिआस भरोससब ८७॥

कबहूँकालन व्यापिहितोही ✽ सुमिरेसुभजेसुनिरंतरमोही



प्रभुवचनामृतमुनिनअघाऊँ \* तनपुलकितमनअति हरषाऊँ  
 सोसुष जानैमन अरुकाना \* नहिं रसनापहिंजाइ वषाना  
 प्रभुसोभासुषजानहिंनयना \* कहिकिमिसकहिंतिन्हहिनहिबयना  
 बहुविधिमोहिप्रबोधिसुषदेई \* लगे करन सिसु कौतुक तेई  
 सजलनयनकछुमुषकरि रूपा \* चितैमातु लागी अति भूषा  
 देषि मातु आतुर उठिधाई \* कहि मृदुवचनलि ए उरलाई  
 गोद राषि कराव पयपाना \* रघुपतिचरितललितकरगाना

सो० जेहिसुषलागि पुरारि, असुभ वेषकृत सिवसुषद ॥

अवधपुरी नर नारि, तेहिसुष महँसंतत मगन ॥

सोई सुष लवलेस, जिन्ह वारक सपनेहु लहे उ ॥

तेनहिंगनहिं षगेस, ब्रह्मसुषहि सज्जन सुमति ८८ ॥

मैं पुनिअवधरहे उँकछुकाला \* देषे उँवाल विनोद रसाला  
 रामप्रसाद भगति बरपाए उँ \* प्रभुपदवंदिनिजाश्रमआए उँ  
 तबते मोहिन व्यापी माया \* जवतेरघुनायक अपनाया  
 यह सब गुप्त चरितमैं गावा \* हरिमायाजिमिमोहिनचावा  
 निजअनुभवअबकहौं षगेसा \* विनुहरिभजननजाहिंकलेसा  
 राम कृपाविनु सुनु षगराई \* जानिन जाइ राम प्रभुताई  
 जाने विनुन होइ परतीती \* विनुपरतीति होइनहिंप्रीति  
 प्रीतिविनानहिंभगतिदिहाई \* जिमिषगपति जलकैचकनाई

सो० विनुगुर होइकिज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग विनु ॥

गावहिं वेद पुरान, सुषकिलहिअ हरिभगतिविनु ॥

कोउविश्राम किपाव, तातसहज संतोष विनु ॥

चलैकिजलविनुनाव, कोटिजतनपचिपचिमरिअ ८९

बिनु संतोष न कामनसाहीं \* कामअछतसुषसपनेहुंनाहीं  
 रामभजनबिनुमिहिकि कामा \* थलविहानितरुकबहुँकिजामा  
 बिनुविज्ञान किसमताआवै \* कोउअवकासकिनभबिनुपावै  
 श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई \* बिनुमहिगंधकि पावै कोई  
 बिनुतपतेजकिकराविस्तारा \* जलबिनुरसकि होई संसारा  
 सीलकिमिलबिनुबुधसेवकाई \* जिमिविनुतेजनरूपगोसांई  
 निज पुषबिनुमनहोईकिथीरा \* परसकिहोईविहीन समीरा  
 कवानि असिद्धकिबिनबिस्वासा \* बिनुहरिभजननभवभयनासा  
 दो० बिनुबिस्वास भगति नहिं, तोहबिनुद्रवहिनराम ।

राम कृपाबिनु सपनेहु, जीवन लह विश्राम ॥  
 सो० असविचारमातिधीर, तजिकुतर्क संसय सकल ॥

भजहु रामरघुवरि, करुनाकरसुंदरसुषद ॥ ९० ॥  
 निजमतिसरिसनाथ में गाई \* प्रभुप्रताप महिमा पमराई  
 कहेउँनकछुकरिजुगुति विसेषा \* यहसबमैनिजनयनन्हिदेषा  
 महिमा नामरूप गुनगाथा \* सकलअमितअनंतरघुनाथा  
 निजनिजमतिमुनिहरिगुनगावहिं \* निगमसेषसिवपारनपावहिं  
 तुम्हहिआदिषगमसकप्रजंता \* नभउडाहिनहिपावहिंअंता  
 तिमिरघुपतिमहिमाअवगाहा \* तातकबहुँकोउपावकिथाहा  
 रामकामसतकोट सुभगतन \* दुर्गाकोटिअमितअरिमर्दन  
 सककोटिसतसारिसविलासा \* नभसतकोटिअमितअवकासा  
 दो० मरुतकोटिसत विपुल बल, रविसतकोटिप्रकास ।

ससिसत कोटि सुसीतल, समन सकल भवत्रास ॥

कालकोटि सत सारिस अति, दुस्तर दुर्ष दुरंत ।

धूमकेतुसतकोटिसम दुराधरष भगवंत ॥ ९१ ॥

प्रभुअगाध ततकोटिपताला \* समनकोटिसतसरिसकराला  
 तीरथअमितकोटिसमपावन \* नामअषिलअघपूगनसावन  
 हिमगिरिकोटिअचलखुबीरा \* सिंधुकोटिसत सम गंभीरा  
 कामधेनु सतकोटि समाना \* सकलकामदायकभगवाना  
 सारदकोटि अमित च गुराई \* विधिसतकोटिसृष्टि निपुनाई  
 विष्णुकोटिसत पालनकर्ता \* रुद्रकोटि मत सम संघर्ता  
 धनदकोटिसतसमधनवाना \* माया कोटि प्रपंचनिधाना  
 भारधरनसतकोटि अहीसा \* निरवधिनिरुपमप्रभु जगदीसा

छं० निरुपमन उपमाआनरामसमान रामनिगमकहे ।

जिमिकोटिसत पद्योतसमरविकहतअतिलघुतालहे ॥

एहिभाँतिनिजनिजमतिविआसमुनीमहरिहि म्यानहीं

प्रभुमाव गाहकअतिकृपाल सप्रेममुनिसुषमानहीं ॥

दो० राम अमित गुन सागर, थाहकि पावै कोइ ।

संतनसनजसकछु सुनेउँ, तुम्हहिंसुनाएउँसोइ ॥

सो० भावबस्य भगवान, सुषनिधान करुना भवन ।

ताजिममतामदमान, भजिअसदासीतारवन ॥९२॥

मुनि भुसुंढिकेवचन सुहाए \* हरषित षगपतिपंष फुलाए

नयननीरमनअति हरषाना \* श्रीरघुपति प्रताप उरआना

पाछिलमोहसमुझिपाछिताना \* ब्रह्मअनादिमनुजकरिमाना

पुनिपुनिकागचरनसिरनावा \* जानि राम सम प्रेमबढावा

गुरबिनुभव निधितरैनकोई \* जौंबिरंचि संकर सम होई

संसय सर्पग्रसेउमोहिताता \* दुषदलहरिकुतर्क बहु बाता

तवसरूप गारुडिरघुनायक \* मोहिजियाएउजनसुषदायक

तबप्रसादमममोह नसाना ✽ रामरहस्य अनूपम जाना

दो० ताहि प्रसंसि विविधि विधि, सीसनाइ कर जोरि ॥

वचन विनीत सप्रेममृदु, बोलेउ गरुड बहोरि ॥

प्रभु अपने अविवेकते, बूझों स्वामी तोहि ॥

कृपासिंधुसादरकहहु, जानिदासनिज मोहि ॥ ९३ ॥

तुम्ह सरवज्ञ तज्ञतमपारा ✽ सुमतिसुसीलसरल आचारा

ज्ञानविरति विज्ञाननिवासा ✽ रघुनायककेतुम्ह प्रियदासा

कारन कवन देहयह पाई ✽ तातसकलमोहिकहहु बुझाई

रामचरित सरसुंदरस्वामी ✽ पाएहुकहाँ कहहु नभगामी

नाथसुनामैं अससिवपाहीं ✽ महाप्रलयहुँ नास तव नाहीं

मुधावचन नहिईश्वरकहई ✽ सोउ मोरे मन संसय अहई

अगजग जीव नागनरदेवा ✽ नाथसकलजग कालकलेवा

अंडकटाहअमितलयकारी ✽ काल सदादुरति क्रमभारी

सो० तुम्हहिंनव्यापतकाल, अतिकराल कारन कवन ॥

मोहि सोकहहु कृपाल, ज्ञान प्रभाव किजोगवल ॥

दो० प्रभु तव आश्रम आए, मोर मोह भ्रम भाग ॥

कारनकवनसोनरथसब, कहहु सहित अनुराग ॥ ९४ ॥

गरुडगिरासुनिहरपेउकागा ✽ बोलेउ उमापरम अनुरागा

धन्यधन्यतवमतिउरगारी ✽ प्रस्नतुम्हारिमोहिअतिप्यारी

सुनितव प्रस्नसप्रेम सुहाई ✽ बहुतजनमकैसुधिमोहिआई

सबनिज कथाकहों मैगाई ✽ तात सुनहु सादर मनलाई

जपतपमषसमदमव्रतदाना ✽ विरति विवेकजोग विज्ञाना

सबकर फलरघुपातिपदप्रेमा ✽ तेहिबिनु कोउनपावै छेमा



एहितन राम भगतिमेंपाई \* तातें मोहि ममताअधिकाई  
जेहितें कछुनिजस्वारथहोई \* तेहिपर ममताकरसब कोई  
सो० पन्नगारिअसि नीति श्रुतिसम्मत सज्जन कहाहिं ॥

अतिनीचहुसनप्राति, करिअजानिनिजपरम हित ॥  
पाट कीट तैं होइ, तेहि तैं पाटंवर रुचिर ॥

कृमपालै सब कोइ, परम अपावन प्रान सम ॥९५॥

स्वारथ साँच जीवकहँएहा \* मनक्रम बचनरामपद नेहा  
सोइपावनसोइसुभगसरीरा \* जोतन पाइ भजै रघुबीरा  
रामविमुषलहिविधिसमदेही \* कविकोविदन प्रसंसहि तेही  
रामभगतिएहितनउरजामी \* तातेमोहि परमप्रिय स्वामी  
तजौन तननिजइल्लामरना \* तनबिनुवेदभजननहिं वरना  
प्रथममोहमोहिवहुतबिगोवा \* रामविमुष सुषकबहुँन सोवा  
नाना जन्म कर्मपुनिनाना \* किए जोग जपतपमष दाना  
कवनजोनिजनमेउजहँनहीं \* मैषगेसभ्रभिभ्रमि जगमाहीं  
देषेउकरि सबकरम गोसाई \* सुषीनभएउँ अबहि कीनाई  
सुधिमोहिनाथजन्मबहुकरं \* सिवप्रसादमति मोहन घेरी

दो० प्रथम जन्मके चरित अब, कहीं सुनहु विहगेस ॥

सुनि प्रभु पदरति उपजै, जातें मिटहि कलेस ॥

पूरुव कल्प एक प्रभ, जुग कलिजुग मल मूठ ॥

नरअरुनारिअधर्मरत, सकलनिगम प्रतिकूल ॥९६॥

तेहिकलिजुगकोसलपुरजाई \* जनमत भएउँ मूढ़ तनपाई  
सिवसेवकमनक्रमअरुवानी \* आनदेवनिंदक अभिमानी  
धनमदमत परम वाचाला \* उग्रबुद्धि उरदंभ विसाला

जदपिरहे उरघुपतिरजधानी \* तदपिनकछुमहिमातबजानी  
अवजानामइ अवधप्रभावा \* निगमागम पुरानअसगावा  
कवनेहुजन्म अवधवमजोई \* राम परायन सो परि होई  
अवधप्रभाव जान तबप्रानी \* जबउरबसहिं रामधनुपानी  
सोकलिकालकठिनउरगारी \* पापपरायन सब नरनारी  
दो० कलिमल ग्रसेधर्मसब, लुप्त भएसदग्रंथ ।

दंभिन्हनिजमति कल्पिकरि, प्रगटकिएबहुपंथ ॥

भएलोग सबमोहबस, लोभग्रसे सुभकर्म ।

मुनुहरिजानज्ञाननिधि, कहौंकछुककलिधर्म ॥ ९७ ॥

वरनधर्मनहिं आश्रम चारी \* श्रुतिविरोधरत सबनरनारी  
द्विजश्रुतिबेचकभूपप्रजासन \* कोउनहिंमाननिगमअनुसासन  
मारगसोइजाकहँजोइभावा \* पंडितसोइ जो गालबजावा  
मिथ्यारंभ दंभरत जोई \* ताकहँसंत कहै सब कोई  
सोइसयान जो परधन हारी \* जोकरदंभ सोबड आचारी  
जोकह झूठ मसषरी जाना \* कलिजुगसोइगुनवंतवषाना  
निराचार जोश्रुतिपथत्यागी \* कलिजुगसोइज्ञानीसोविरागी  
जाकेनषअरुजटा विसाला \* सोइतापसप्रसिद्धकलिकाला  
दो० असुभ वेष पूषनधरें, भक्षा भक्ष जेपाहिं ।

तेइजोगी तेइमिद्धनर, पूजितकलिजुगमाहिं ॥

सो० जेअपकारी चार, तिन्हकरगौरवमान्यतेइ ।

मनक्रमवचन लवार, तेइवकताकलिकालमहँ ॥ ९८ ॥

नारिविवसनरसकलगोसाँई \* नाचहिंनट मर्कट की नाई  
मूद्रद्विजन्ह उपदेसहिंज्ञाना \* मेलिजनेऊ लेहिं कुदाना

सबनरकाम लोभरत क्रोधी \* देवविप्र गुरुसंत विरोधी  
 गुनमंदिर सुंदर पतित्यागी \* भजहिंनारिपरपुरुषअभागी  
 सौभागिनी विभूषन हीना \* विधवन्ह के संगारनवीना  
 गुरसिष, वधिर अंधकालेषा \* एकनसुनै एकनहिं देषा  
 हरैसिष्यधन सोक न हरई \* सोगुर घोरनरकमहं परई  
 मातृपितावालकन्हिवेलावहिं \* उदरभरैसोइ धर्मसिपावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान विनुनारिनर, कहहिंनदूसरिवात ।

कौडीलागि मोहबस, करहिं विप्रगुरघात ॥

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन, हमतुमते कछुघाटि ।

जानैब्रह्मसोविप्रवर, आँषिदेषावहिंटाटि ॥ ९९ ॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने \* मोहद्रोह ममता लपटाने  
 तेइअभेदवादी ज्ञानी नर \* देषा में चरित्र कलिजुगकर  
 आपुगए अरुतिन्हहूँघालहिं \* जेकहुँसतमारगप्रतिपालहिं  
 कल्पकल्पभरिएकएकनरका \* परहिंजेदूषहिंश्रुतिकरितरका  
 जेवरनाधम तेलि कुम्हारा \* स्वपचकिरातकोलकलवारा  
 नारिमुई गृह संपति नासी \* मूढमुडाइ होहिं सन्यासी  
 तेविप्रनसन आपु पुजावहिं \* उभयलोकनिजहाथनसावहिं  
 विप्र निरच्छर लोलुपकामी \* निराचारसठ बृषलीस्वामी  
 सुद्रकरहिं जपतपव्रतनाना \* बैठि बरासन कहहिं पुराना  
 सबनरकालिपतकरहिंअचारा \* जाइनवरनिअनीतिअपारा

दो० भए बरनसंकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग ।

करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक वियोग ॥

श्रुति मंमत हरिभक्ति पथ, संजुतविरति विवेक ॥

तेहिनचलहिंनरमोहवम, कल्पहिंपंथअनेक ॥ १०० ॥

बहुदाम सवारहिं धाम जती \* विषयाहरिलीन्हिरहीविरती  
तपसी धनवंत दरिद्र गृही \* कलिकौतुकतातनजातकही  
कुलवंतिनिकारहिंनारिसती \* गृहआनहिं चेरिनिबेरिगती  
सुतमानहिंमातुपितातबलौं \* अबलानन दीषनहीं जबलौं  
ससुरारि पिआरि लगीजबतें \* रिपुरूप कुटुंब भए तबतें  
नृप पाप परायन धर्मनहीं \* करिदंडविडंब प्रजानितहीं  
धनवंत कुलीन मलीन अपी \* द्विजचिन्हजनेउउधारतपी  
नहिमान पुरानन वेदहिजो \* हरि सेवकसंतसही कलिसो  
कबिवृंद उदार दुनी नसुनी \* गुनदूषक ब्रातन कोपिगुनी  
कलिवारहिं वार दुकाल परै \* विनु अन्नदुषी सबलोग मरै

दो० सुनु षगेस कलि कपट हठ, दंभ द्वेष पाषंड ॥

मान मोह मारादि मद, व्यापि रहे ब्रह्मंड ॥

तामस धर्म करहिं नर, जपतप ब्रतमष दान ॥

देवनवरषहिंधरनिपर, वएनजामहिंधान ॥ १०१ ॥

अबलाकच भूषन भूरि छुधा \* धनहीनदुषी ममता बहुधा  
सुष चाहहिं मूढन धर्म रता \* मतिथोरिकठोरिनकोमलता  
नरपीडित रोगन भोगकहीं \* अभिमानबिरोधअकारनहीं  
लघु जीवन संवत पंच दसा \* कलपांतननास गुमानअसा  
कलिकालविहालकिएमनुजा \* नहिंमानतकोअनुजातनुजा  
नहिंतोष विचारन सीतलता \* सबजानिकुजातिभएमंगता  
इरिषा परुपाक्षर लोलुपता \* भरिपूरिही समता विगता



सबलोगवियोग विमोक हए \* वरनाश्रम धर्म अचार गए  
 दमदान दयानहिं जानपनी \* जडता परबंचनताति घनी  
 तनपोषक नारि नरा सगरे \* परनिंदकजे जगमो वगरे  
 दो० सुनुव्यालारि काल कलि, मल अवगुन आगार ॥  
 गुनौबहुत कलि जुगकर, बिनु प्रयास निसतार ॥  
 कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मष अरु जोग ॥  
 जोगतिहोइसोकलिहरि, नामतैपावहिंलोग ॥ १०२ ॥

कृतजुग सबजोगी विज्ञानी \* करिहरिध्यानतरहिं भवप्रानी  
 त्रेताविविध जग्य नर करहीं \* प्रभुहि समर्पिकर्मभव तरहीं  
 द्वापरकरि रघुपति पद पूजा \* नरभवतरहिं उपायन दूजा  
 कलिजुगकेवलहरिगुनगाहा \* गावतनर पावहिं भवथाहा  
 कलियुगजोगनजग्यनज्ञाना \* एकअधार राम गुनगाना  
 सबभरोसताजिजोभजरामहि \* प्रेमसमेत गावगुन ग्रामहिं  
 सोइभवतर कछुसंसय नाहीं \* नामप्रतापप्रगट कलिमाहीं  
 कलिकर एकपुनीत प्रतापा \* मानस पुन्यहोहिं नहिपापा  
 दो० कलिजुग समजुगआन नहिं, जौनरकर विश्वास ॥  
 गाइराम गुनगन विमल, भवतर विनहिंप्रयास ॥  
 प्रगट चारिपद धर्मकें, कलिमहँ एक प्रधान ॥  
 जेनकेन विधि दीन्हें, दानकरै कल्याण ॥ १०३ ॥

नितजुग धर्म होहिं सबकरे \* हृदय राम मायाके प्रेरे  
 सुद्ध सत्व समता विग्याना \* कृतप्रभाव प्रसन्न मनजाना  
 सत्वबहुत रजकछु रतिकर्मा \* सबविधिसुष त्रेताकर धर्मा  
 बहुरजस्वल्पमत्व कछुनामस \* द्वापर धर्महरष भयमानस

तामम बहुत रजोगुन थोरा \* कलिप्रभावविरोधचहुँओरा  
बुधजुग धर्मजानिमनमाहीं \* तजि अघर्मरतिधर्म कराहीं  
कालधर्मनहिं व्यापहिंताही \* रघुपतिचरनप्रीतिअतिजाही  
नटवृत्तविकटकपटपगराया \* नटसेवकहिन व्यापै माया  
दो० हरिमायाकृतदोषगुन, विनुहरि भजनन जाहिं ।

भजियरामतजिकाभसब, असविचारमनमाहिं ॥

तेहिकलिकालवरषबहु, बसेउँअवध विहगेस मा०पा० २९

परेउदुकालविपतिबस, तब मैं एगउँ विदेस ॥१०४॥

गएउँ उजेनी सुनु उरगारी \* दीन मलीन दरिद्र दुषारी  
गएँ कालकछु संपति पाई \* तहंपुनि करों संभु सेवकाई  
विप्रएक बैदिक सिव पूजा \* करैसदातेहि काजन दूजा  
परम साधु परमारथ विंदक \* संभुउपासकनहिंहरिनिंदक  
तोहे सेवों मैं कपट समेता \* द्विजदयालअतिनीति निकेता  
वाहिजनमू देषि मोहिसाई \* विप्र पढाव पुत्र की नाई  
संभुमंत्रमोहिद्विजवरदीन्हा \* सुभउपदेसविविधाविधकीन्हा  
जपोंमंत्र सिव मंदिर जाई \* हृदयदंभअहमितिअधिकाई  
दो० मैं फलमल संकुल मति, नीच जाति बस मोह ॥

हरिजन द्विजदेषे जरां, करों विष्णु कर द्रोह ॥

सा० गुरनित मोहि प्रबोध, दुषित दोषि आचरनमम ।

मोहिउपजै अतिक्रोध, दंभिहिनीतिकिभावह १०५

एकवार गुरु लीन्ह बोलाई \* मोहिनीतिबहुभांति सिषाई  
सिव सेवाकर फलसुत मोई \* अविरलभगतिरामपद होई  
रामहिंभजहिंतातसिवधाता \* नरपांवर के केतिक बाता

जासुचरनअजसिवअनुरागी\* तासुद्रोहसुषचहासिअभागी  
 हरिकहँ हरिसेवकगुरकहेऊ\* सुनिषगनाथहृदयममदहेऊ  
 अधमजातिमेंविद्यापाए\* भएउँजथाअहिदूधपिआए  
 मानीकुटिलकुभाग्यकुनातो\* गुरकरद्रोहकरोंदिनराती  
 अतिदयालगुरस्वलपनक्रोधा\* पुनिपुनिमोहिसिषावसुबोधा  
 जेहितेनीचबडाईपावा\* सोप्रथमहिहठिताहिनसावा  
 धूमअनलसंभवसुनुभाई\* तेहिबुझावघनपदवीपाई  
 रजमगपरीनिरादररहई\* सबकरपदप्रहारनितसहई  
 मरुतउडावप्रथमतेहिभरई\* पुनिनृपनयनाकिरीटन्हिपरई  
 सुनुषगपतिअससमुझिप्रसंगा\* बुधनहंकरहिअधमकरसंगा  
 कविकोविदगावाहिअसनीती\* पलसनकलहनभलनहिंप्रीती  
 उदासीननितरहिअगोसाई\* पलपरिहरिअस्वानकर्नाई  
 मैषलहृदयकपटकुटिलाई\* गुरहितकहेंनमोहिसोहाई  
 दो० एकवारहरमंदिर, जपतरहेऊँसिवनाम।

गुरआएऊअभिमानतें, उठिनहंकीन्हप्रनाम॥

सोदयालनहिंकहेऊकछु, उरनरोषलवलेस॥

अतिअघगुरअपमानता, साहिनहंसकेमहेस१०६॥

मंदिरमाझभईनभबानी\* रेहतभाग्यअज्ञअभिमानी  
 जद्यपिबतगुरकेनाहिक्रोधा\* अतिकृपालचितसम्यकबोधा  
 तदपिसापसठदेहोंतोही\* नीतिविरोधसुहाइनमोही  
 जोंनहिंदंढकरोंपलतोरा\* भ्रष्टहोइश्रुतिमार्गमोरा  
 जेसठगुरसनइरिषाकरहीं\* रौरवनरककोटिजुगपरहीं  
 त्रिजगजोनिपुनिधरहिंसरारा\* अद्युतजन्मभरिपावाहिंपीरा

बैठिरहेमि अजगरइवपापी ✽ सर्पहोसिपलमलमतिव्यापी  
महा विपट कोटरमहँजाई ✽ रहुअधमाधमअधगति पाई

दो० हाहाकार कीन्ह गुर, दारुनसुनि सिवसाप ॥

कंपित मोहि विलोकि अति, उरउपजा परिताप ॥

करि दंडवत सप्रेमाद्विज, सिवसन्मुख करजोरि ॥

विनयकरतगदगदस्वर, समुझिघोरगतिमोरि ॥ १०७ ॥

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं ✽ विभुंव्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं  
निजनिर्गुणनिर्विकल्पनिरहिं ✽ चिदाकासमाकासवासंभजेहं  
निराकार मोंकारमूलं मुरीयं ✽ गिराज्ञानगोतितमीशगिरीशं  
करालं महाकालकालंकृपां ✽ गुणागार संसार पारं नतोहं  
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गंभीरं ✽ मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरं  
स्फुरन्मौलि हल्लोलिनीचारुगंगा ✽ लसद्बालवालें दुकंठे भुजंगा  
चक्रकुंडलं भ्रूसुनेत्रं विसालं ✽ प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं  
मृगाधीशचर्मावरं मुंडमालं ✽ प्रियशंकरं सर्वनाथं भजामि  
प्रचंडं प्रहृष्टं प्रगल्भं परेश ✽ अखंडं अजंभानुकोटिप्रकाशं  
त्रयःशूलनिर्मलनंशू रपाणि ✽ भजेहं भवानी पतिभावगम्यं  
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी ✽ सदासज्जनानंददाता पुरारी  
चिदानंदसंदोहमोहापहारी ✽ प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी  
नयावदुमानाथपादारविंदं ✽ भजंतीह लोके परेवानराणां  
नतावत्शुषंशांतिसंतापनाशं ✽ प्रसीतप्रभो सर्व भूताधिवासं  
नजानामियोगं जपनैव पूजा ✽ नतोहं सदासर्वदाशं भुतुभ्यं  
जराजन्मदुःखौघतापयमानं ✽ प्रभो पाहि आपनमामीशशंभो



श्लोक—रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ॥  
जेपठंतिनराभक्त्यास्तेषांशं पुःप्रसीदति ॥

दो० सुनि विनती मर्वज्ञ मिव, देषिविप्र अनुरागु ।  
पुनिमंदिर नभवानी, भइद्विजवरवरमाणु ॥  
जौंप्रसन्न प्रभु मोपर, नाथदीन परनेहु ।  
निजपदभगति देइप्रभु, पुनिदूसर वरदेहु ॥  
तवमायावस जीवजड, संतत फिरै भुलान ।  
तिहिपर क्रो वनकरिअ प्रभु, कृपासिंधु भगवान ॥  
संकर दीनदयाल अब, इहिपरहोहु कृपाल ।  
सापअगुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥

एहिकर होइपरमकल्याना \* सोइकरहुअब कृपा निधाना  
विप्रगिरासुनिपरहितमानी \* एवमस्तुइतिभइ नभवानी  
जदपिकीन्हएहिंदारुनगापा \* मेंपुनिदीन्हक्रोधकरि सापा  
तदपि तुम्हारिसाधुतादेपी \* करिहौं एहिपरकृपा विसेपी  
छमा सील जेपर उपकारी \* तेद्विजमोहिप्रियजथा परारी  
मोरसापद्विज व्यर्थनजाइहि \* जन्मसहसअवस्ययहपाइहि  
जनमतमरतदुसहदुष होई \* एहिस्वल्पौनहिंब्यापिहिसोई  
कवनेँउजन्म मतिहिनहिज्ञाना \* सुनहिसूद्रमम वचन प्रवाना  
रघुपाति पुरीजन्मतवभएऊ \* पुनितैमम सेवामन दएऊ  
पुरी प्रभाउ अगुग्रह मोरे \* रामभगतिउपजिहि उरतोरै  
सुनुममवचनसत्यअवभाई \* हरितोषनव्रत द्विज सेवकाई  
अवजनिबरेसुविप्र अपमाना \* जाने सुसंतअनंत समाना  
इंद्रकुलिसमम मूलविसाला \* कालदंड हरिचक्र कराला

जोइन्ह कर मारानहिं मरई \* विप्रद्रोह पावक मो जरई  
अस विवेक रापेहु मनमाहीं \* तुम्हकहैं जगदुलभ कछु नाहीं  
औरों एक आसिषा मोरी \* अप्रतिहत गति होइहि तोरी

दो० सुनि सिव वचन हरषिगुर, एवमस्तु इति भाषि ॥  
मोहि प्रबोधि गएउ गृह, संभु चरन उर राषि ॥  
प्रेरित काल विधिगिरि, जाइ भएउ मैं ब्याल ॥  
पुनि प्रयास विनु सोतन, तजेउँ गए कछु काल ॥  
जोइतन धरौं तजौं पुनि, अनायास हरि जान ॥  
जिमि नूतन पट पहिरै, नर परिहरै पुरान ॥  
सिवराषी श्रुति नीति अरु, मैं नाहिं पावा क्लेश ॥  
एहि विधि धरेउँ विवि विधितन, ज्ञानन गएउ षगेस ॥ ०९

त्रिजगदेवनर जोइ तन धरउँ \* तहँ तहँ राम भजन अनुसरउँ  
एकमूल मोहि बिसर नकाऊ \* गुरकर कोमल सील सुभाऊ  
चर्म देह द्विज कै मैं पाई \* सुरदुलभ पुरान श्रुति गाई  
पेलों तहँ बालकन्ह मीला \* करौं सकल रघुनायक लीला  
प्रौढ भए मोहि पिता पढावा \* समुझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा  
मनतैं सकल बासना भागी \* केवल राम चरन लय लागी  
कहु षगेस अस कवन अभागी \* परी सेव सुर धेनुहि त्यागी  
प्रेममगन मोहि कछु न सोहाई \* हारेउ पिता पढाई पढाई  
भए काल बस जब पितु माता \* मइ बन गयउँ भजन जन वाता  
जहँ जहँ विपिन सुनी स्वर पावौं \* आश्रम जाइ जाइ सिर नावौं  
बूझौं तिन्हहि राम गुन गाहा \* कहहिं सुनौं हरषित षगनाहा  
सुनत फिरीं हरि गुन अनुवादा \* अब्याहत गति संभु प्रसादा

छूटी त्रिविधि ईषना गाढी \* एक लालसा उरअतिवाढी  
 रामचरन वारिज जब देषों \* तबनिजजन्मसुफलकरिलेषों  
 जेहिपूछोंसोइमुनिअसकहई \* इस्वर सर्व भूतमय अहई  
 निर्गुन मतनहिंमोहिसुहाई \* सगुनब्रह्मरति उरअधिकहई

दो० गुरकेवचन सुरति करि, रामचरन मनलाग ॥

रघुपति जसगावत फिरों, छनछननवअनुराग ॥

मेरु सिपरवट छाया, मुनि लोमस आसीन ॥

देविचरन सिरनाएउँ, वचन कहेउँ अतिदीन ॥

मुनिममवचन विनीत मृदु, मुनिकृपाल षगराग ॥

मोहिसादर पूछत भए, द्विज आएहु केहिकाज ॥

तबमें कहा कृपानिधि, तुम्हसर्वज्ञ सुजान ॥

सगुनब्रह्म अवराधन, मोहि कहहु भगवान ॥११०॥

तबमुनीस रघुपतिगुनगाथा \* कहेकछुक सादर पगनाथा  
 ब्रह्मज्ञान रतमुनि विज्ञानी \* मोहिपरम अधिकारीजानी  
 लागे करन ब्रह्म उपदेसा \* अज अद्वैत अगुन हृदयेसा  
 अकलअनीहअनामअरूपा \* अनुभवगम्य अपंड अनूपा  
 मनगोतीतअमलअविनासी \* निर्विकारनिरवधिसुपरासी  
 सोतैं ताहि तोहिनहि भेदा \* बारि बीचिइव गावहिं वेदा  
 विविधिभातिमोहिसुनिसमुझावा \* निर्गुनमतममहृदयनआवा  
 पुनिमें कहेउँनाइ पदसीसा \* सगुन उपासन कहहुमुनीसा  
 रामभगतिज उमममनमीना \* किमिविलगाइमुनीसप्रबीना  
 सोइउपदेस कहहुकरिदाया \* निजनयनन्हिदेषों रघुराया  
 भरिलोचनबिलोकिअवधेसा \* तबमुनिहों निर्गुन उपदेसा

मुनिपुनिकहिहरिकथा अनूपा \* पंडितसगुनमत अगुननिरूपा  
तब में निगुन मतकरि दूरी \* सगुन निरूपों करिहठधूरी  
उत्तर प्रति उत्तर में कीन्हा \* मुनितनभए क्रोधकेचीन्हा  
मुनुप्रभु बहुत अवज्ञा किए \* उपजक्रोध ज्ञानिहुँ केहिए  
अति संघरपन जोंकर कोई \* अनल प्रगट चंदन ते होई  
दो० बारंवार सकोप मुनि करै निरूपन ज्ञान ॥

में अपनेमन बैठ तब करों विविधि अनुमान ॥

क्रोधकि द्वैत बुद्धिविनु द्वैतकिविनु अज्ञान ॥

मायावस परिछिन्नजड जीवकिईस समान ॥१११॥

कबहुँकिदुषसबकरहितताके \* तेहिकिदरिद्रपरसमनिजाके  
परद्रोही की होहिं निसंका \* कामीपुनिकिरहहिंअकलंका  
बंसकिरह द्विजअन हितकोन्हें \* कर्म किहोहिंस्वरूपहिचीन्हें  
काहसुमतिकिषलसंगजामी \* सुभगतिपावकिपर त्रियगामी  
भवकिपरहिपरमात्माविदक \* मुषीकिहोहिंकबहुँहरिनिंदक  
राजकिरहै नीतिविनु जाने \* अघकीरहहिंहरिचरितवषाने  
पावनजस किपुन्यविनुहोई \* विनुअघअजसकि पावैकोई  
लाभकिकिछुहरिभगतिसमाना \* जेहिगावहिं श्रुतिसंतपुराना  
हानिकिजगयेहिसमकिछुमाई \* भजियन रामहि नरतनपाई  
अघकिपिसुनतासमकछुआना \* धर्मकिदया सारिसहरिजाना  
एहिविधिअमिति जुगुतिमनगुनऊँ \* मुनि उपदेसन सादर सुनऊँ  
पुनिपुनि सगुन पक्षमें रोपा \* तबमुनिबोलेउवचनसकोपा  
मूढपरमासिषदेऊँनमानिसि \* उत्तर प्रति उत्तरबहु आनसि  
सत्यवचन बिस्वासनकरही \* वायस इव सबहीते डरही



सठस्वपक्षतबहदय विमाला \* सपदि होहि पक्षी चंडाला  
लीन्हि सापमें सीस चढाई \* नहिंकछुभय न दीनता आई  
दो० तुरत भएउँ मैं कागतब, पुनिमनि पदसिरनाइ ॥

सुमिरि रामरघुवंस मनि, हरषित चलेउँ उडाइ ॥

उमाजे रामचरन रत, विगतकाम मदक्रोध ॥

निजप्रभुमयदेषहिंजगत, केहिसन करहिं विरोध ॥

सुनुषगेसनहिंकछुरिषिदूषन \* उरप्रेरक रघुवंस विभूषन

कृपासिंधुमुनिमतिकरिभोरी \* लीन्ही प्रेम परीक्षा मोरी

मनबचक्रममोहिनिजजनजाना \* मुनिमतिपुनिफेरीभगवाना

रिषिमम महत सीलतादेषी \* रामचरन बिस्वास बिसेपी

अतिविसमैपुनिपुनिपल्लिताई \* सादरमुनिमोहिलीन्हबोलाई

ममपरितोषविविधिविधिकीन्हा \* हरषितराममंत्र तब दीन्हा

बालकरूप रामकर ध्याना \* कहेउमोहिमुनिकृपानिधाना

संदरसुषद मोहिअतिभावा \* सोप्रथमहिं मैंतुमहिंसुनावा

मुनिमोहिकछुककालतहँराषा \* रामचरित मानस तबभाषा

सादर मोहि यहकथासुनाई \* पुनिबोले मुनिगिरा सुहाई

रामचरित सर गुप्त सुहावा \* संभु प्रसाद तात में पावा

तोहिनिजभंगतरामकरजानी \* ताते में सब कहेउ बषानी

रामभगतिजिन्हकेउरनाहीं \* कबहुँनतातकहियतिन्हपाहीं

मुनिमोहिविविधिभांति समुझावा \* मइँसप्रेममुनिपद सिरनावा

निजकरकमलपरसिममसीसा \* हरषितआसिषदीन्हमुनीसा

रामभगति अविरल उरतारे \* बसिहिसदा प्रसाद अवमोरे

दो० सदारामप्रिय होवतुम्ह, सुभगुन भवन अमान ॥

काम रूप इछा मरन, ज्ञान विराग निधान ॥

जेहिआश्रम तुम्हवसवपुनि, सुमिरत श्रीभगवंत ॥  
व्यापिहि तहैन अविद्या, जोजेन एक प्रजंत ॥ ११३ ॥

कालकरमगुन दोष सुभाऊ \* कछुदुषतुम्हहिनव्यापिहिकाऊ  
रामरहस्यललितविधिनाना \* गुप्तप्रगट इतिहास पुराना  
बिनुश्रमतुम्हजानवसवसोऊ \* नितनवनेह रामपद होऊ  
जोइक्षा करिहहु मनमाहीं \* हरिप्रसाद कछु दुलभ नाही  
मुनिमुनिआसिषुनुमतिधोरा \* ब्रह्मगिराभइ गगन गँभीरा  
एवमस्तु तववचमुनिज्ञानी \* यहममभगतकर्म मन बानी  
मुनिनभगिराहरषमोहिभएऊ \* प्रेम मगनसवसंसय गएऊ  
करिबिनतीमुनिआयसुपाई \* पदसरोज पुनिपुनि मिरनाई  
हरषसाहितएहिआश्रमआएऊ \* प्रभुप्रसाद दुलभ वर पाएऊ  
इहांवसतमोहिसुनुषगईसा \* बीतेकलप सात अरु बीसा  
करोंसदा रघुपतिगुनगाना \* सादरसुनहि विहंग मुजाना  
जबजब अवधपुरी रघुबीरा \* धरहिंभगतहितमनुजसरीरा  
तवतव जाइ रामपुर रहऊ \* सिमुलीला विलोकि सुषलहऊ  
पुनिउररापिरामसिसुरूपा \* निजआश्रम आवों षगभृपा  
कथासकलमेंतुम्हहिंसुनाई \* कागदेह जेहि कारन पाई  
कहेउंतातसवप्रसन्नतुम्हारी \* रामभगतिमहिमाअतिमारी

दो० ताते यहतनमोहि प्रिय, भएउ रामपद नेह ।

निजप्रभु दरसन पाएऊ, गएउसकलसंदेह ॥

भगति पक्ष हठकरि रहेऊ, दीन्हमहारिषिसाप ।

मुनिदुलभ वरपाएऊ, देषहुभजन प्रताप ॥ ११४ ॥

जेअसिभगतिजानिपरिहरहीं \* केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं

तेजड कामधेनु ग्रिहत्यागी \* षोजतआकफिरहिंपयलागी  
 मुनुषगेस हरिभगतिविहाई \* जेमुष चाहिंआन टपाई  
 तेसठ महासिंधु विनुतरनी \* पैरिपार चाहिं जडकरनी  
 मुनिमुसुंडिके बचनभवानी \* बोले गरुडहरषि मृदुवानी  
 तवप्रसाद प्रभुममउरमाहीं \* संसयसोक मोहभ्रम नाही  
 मुनेउ पुनीतरामगुनग्रामा \* तुम्हरीकृपा लहेउ विश्रामा  
 एक बात प्रभु पृछों तोही \* कहहुबुझाइकृपानिधि मोही  
 कहहिं संत मुनिवेदपुराना \* नहिंकछुदुलभ ज्ञान समाना  
 सोइमुनितुम्हसनकहेउगुसाई \* नहिंआदरेहु भगतिकी नाई  
 ज्ञानहिभगतिहिअंतरकेता \* सकलकहहुप्रभुकृपा निकेता  
 मुनिउरगारिवचनमुषमाना \* सादर बोलेउकाग सुजाना  
 भगतिहिज्ञानहिनहिंकछुभेदा \* उभय हरहिंभव संभव षेदा  
 नाथमुनीसकहहिंकछुअंतर \* सावधान सोउमुनु विहंगवर  
 ज्ञानविराग जोग विज्ञाना \* एसव पुरुष सुनहु हरिजाना  
 पुरुषप्रताप प्रवलसबभाँती \* अबलाअवलसहजजडजाती  
 दो० पुरुष त्याग मकनारिहि, जो विरक्त मति धीर ।

जो कामी विषया बस, विमुष जो पद रघुवीर ॥

सो० सोउमुनिज्ञाननिधान, मृगनयनीविधुमुषनिरषि ।

विवमहोइहारिजान, नारिविस्वमायाप्रगट ॥ ११५ ॥

इहाँन पक्षपातकछु राषों \* वेद पुरान संत मत भाषों  
 मोहन नारि नारिके रूपा \* पन्नगारि यह रीति अनूपा  
 मायाभगतिसुनहुतुम्हदोऊ \* नारिवर्ग जानै सब कोऊ  
 पुनिरघुवीरहिंभगतिपियारी \* मायाषलुनरतकी विचारी



भगतिहि सानुकूल रघुराया \* तातेतोहिडरपतिअतिमाया  
 रामभगतिनिरुपमनिरुपाधी \* बसै जासुउर सदा अवाधी  
 तेहिविलोकि मायासकुचाई \* करिनसकैकछुनिजप्रभुताई  
 अमविचारिजेमुनिविज्ञानी \* जाचहिंभगतिसकलसुषपानी  
 दो० यह रहस्य रघुनाथ कर, बेगि न जानै कोइ ॥

जो जानै रघुपति कृपा, सपनेहु मोह न होइ ॥

औरौ ज्ञान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रवीन ॥

जोसुनिहोइ रामपद, प्रीति सदा अविछीन ॥११६॥

सुनहुतातयहअकथकहानी \* समुझत बनै न जाइ वषानी  
 ईश्वर अंसजीव अविनासी \* चेतनअमल सहजसुषरासी  
 सोमाया बस भएउ गोसाई \* बँध्योकीर मर्कट की नाई  
 जड चेतनहिं ग्रंथिपरिगई \* जदपि मृषा छटत कठिनई  
 तवते जीव भएउ संसारी \* छटन ग्रंथिनहोइ सुषारी  
 श्रुति पुरानबहु कहेउ उपाई \* छटनअधिकअधिकअरुभाई  
 जीवहृदय तम मोहविसेपी \* ग्रंथिछटि किमिपरै नदेषी  
 अस मजोग ईमजब करई \* तबहुं कदाचित सोनिरुअरई  
 सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई \* जौहरिकृपा हृदय बस आई  
 जपतपव्रतजमानियमअपारा \* जेश्रुतिकहसुभ धर्मअचारा  
 तेइत्रिनहरित चरैजब गाई \* भाव बछसिसुपाइ पेन्हाई  
 नोइनिघाति पात्र विस्वासा \* निर्मलमनअहीर निजदासा  
 परम धर्ममयपय दुहि भाई \* अवटै अनलअकाम बनाई  
 तोष मरुत तब लुमा जुडावै \* धृतिसमजावन देइ जमावै  
 मुदित मथै विचार मथानी \* दमअधार रजुसत्व सुबानी



तव मथिकाढिलेइ नवनीता \* विमलविरागसुभगसुपुनीता  
 दो० जोगअगिनि करि प्रगटतव कर्म सुभासुभलाइ ॥  
 बुद्धि मिरावै ज्ञान धृत, समता मल जरि जाय ॥  
 तव विज्ञान निरूपिनी, बुद्धि विसद धृत पाइ ॥  
 चित्त दियाभरि धरै दृढ, समता दिअटि बनाइ ॥  
 तीनि अवस्था तीनि गुन, तेहि कपासतैं काढि ॥  
 तूलतुरीय मँवारि पुनि, वाती करै सुगाढि ॥

मो० एहिविधिलेसैदीप, तेजरामि विज्ञानमय ॥

जातहिजासुसमीप, जरहिंमदादिक मलभसव ११७

सोहमास्मिइति वृत्तिअपंडा \* दीप सिपासोइपरम प्रचंडा  
 आतमअनुभवसुषुप्रकासा \* तव भवमूल भेद भ्रमनासा  
 प्रबल अविद्याकरपरिवारा \* मोह आदितम मिटैअपारा  
 तवसोइ बुद्धिपाइअँजियारा \* उरगृहबैठि ग्रंथि निरुआरा  
 छोरन ग्रंथि पावजों सोई \* तवयहजीव कृतारथ होई  
 छोरत ग्रंथि जानि षगराया \* विघ्न अनेक करैतव माया  
 रिद्धिसिद्धि प्रेरइ बहुभाई \* बुद्धिहि लोभदिपावहिं आई  
 कलबलल्ललकरिजाहिंसमीपा \* अंचल वात बुझावहिंदीपा  
 होइ बुद्धिजों परम सयानी \* तिन्हतन चितवनअनहितजानी  
 जौतेहिविघ्नबुद्धिनहिवाधी \* तौवहोरिसुर करहिं उपाधी  
 इंद्रो द्वार झरोषा नाना \* तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना  
 आवत देषहिं विषयबयारी \* तेहठिदेहिं कपाट उघारी  
 जबसो प्रभंजन उरगृहजाई \* तवहिंदीप विज्ञान बुझाई  
 ग्रंथिनछटिमिटामोप्रकासा \* बुद्धिविकलभइविषयवतासा

इंद्रिन्हमृरन्ह ज्ञान मोहाई \* विषय भोग पर प्रीतिसदाई  
विषय समीरबुद्धिकृतभोरी \* तेहिविनुदीपकोवारं बहोरी  
दो० तबफिरि जीव विविधि विधि, पावैसंसृत क्लेश ॥

हरिमाया अतिदुस्तर, तरिन जाइ बिहगेश ॥

कहत कठिनसमुझत कठिन, साधतकाठिन विवेक  
होइ घुनाक्षर न्यायजौं, पुनिप्रत्यूह अनेक ॥११८॥

ज्ञानपंथ कृपान के धारा \* परत षगेस होइ नहिं बारा  
जो निबिघ्न पंथ निर्वहई \* सोकैवल्य परम पद लहई  
अतिदुर्लभकैवल्यपरमपद \* संतपुराननिगमआगम बढ  
रामभजतसोइमुकुतिगोसाई \* अनइक्षित आवै बरिआई  
जिमिथलविनुजलरहिनसकाई \* कोटिभांतिकोउकरइ उपाई  
तथामोक्ष सुष सुनु षगराई \* राहिनसकैहरिभगति बिहाई  
असविचारिहरिभगतसयाने \* मुक्तिनिरादरभगति लुभाने  
भगतिकरतविनुजतनप्रयासा \* संसृतमूल अविद्या नासा  
भोजनकरिअतृप्तिहितलागी \* जिमिसोअसनपचवडुजठरागी  
असिहरिभगतिसुगममुषदाई \* कोअस मूढनजाहि सोहाई  
दो० मेवक मेव्य भावविनु, भव न तरिय उरगारि ॥

भजहु रामपद पंकज, अससिद्धान्त विचारि ॥

जोचेतन कहं जड करै, जडहि करै चेतन्य ॥

अम समर्थ रघुनायकहि, भजहिंजीवतेधन्य ॥११९॥

कहेउज्ञान सिद्धान्त बुझाई \* सुनहुभगतिमनिक्कै प्रभुताई  
रामभगतिचिंतामनिमुंदर \* बसै गरुड जाकेउर अंतर  
परमप्रकासरूप दिनराती \* नहिंकछुचहिअदिआधृतवाती

मोहदरिद्रनिकटनहिआवा \* लोभवातनहिंताहि बझावा  
 प्रवरुअविद्यातममिटिजाई \* हारहिंसकलसलभ ममुदाई  
 षलकामादिनिकटनहिंजाहीं \* बसैभगति जाके उर माहीं  
 गरलसुधासमअरिहितहोई \* तेहिमनिबिनुमुषपावन कोई  
 व्यापहि मानसरोगनभारी \* जिन्हकेवस सबजीव दुषारी  
 रामभगतिमानि उरबसजाके \* दुष लवलेसन सपनेहु ताके  
 चतुरसिरोमनितेइजगमाहीं \* जेमनिलागि सुजतनकराहीं  
 सोमनिजदपिप्रगट जगअहई \* रामक्रिपाबिनुनहिंकोउलहई  
 सुगम उपाय पाइवे केरे \* नरहत भाज देहिं भट भेरे  
 पावन पर्वत बेद पुराना \* राम कथारुचिराकर नाना  
 ममींसज्जनसुमतिकुदारी \* ग्यानविराग नयन उरगारी  
 भावसाहित षोजै जो प्रानी \* पावभगतिमनिसबसुषषानी  
 मोरेमन प्रभुअस बिस्वासा \* रामतेआधिकराम कर दासा  
 रामसिंधुघन सज्जनधीरा \* चंदन तरुहरि संत समीरा  
 सबकरफलहरिभगतिसुहाई \* सोबिनु संतन काहू पाई  
 असबिचारिजोइकरमतसंगा \* रामभगतितेहिसुलभविहंगा  
 दो० ब्रह्मपयोनिधि मंदर, ज्ञान संत सुर आहि ॥

कथा सुधामाथि काढहिं भगति मधुरता जाहिं ॥  
 बिरतिचर्म असिज्ञान मद, लोभ मांह रिपुमारि ॥  
 जयपाइअसोहरिभगति, देषुषगेस बिचारि ॥१२०॥  
 पुनि सप्रेम बोलेउ षगराऊ \* जोकृपाल मोहिऊपर भाऊ  
 नाथ मोहिनिजसेवकजानी \* सप्तप्रणमम कहहु बषानी  
 प्रथमाहिकहहुनाथमातिधीरा \* सबते दुलभ कवन सरीरा  
 बडदुषकवनकवनसुषभारी \* सोउसंछेपहि कहहु बिचारी



संतअसंत मरमतुम्हजानहु \* तिन्हकरसहजसुभाववषानहु  
 कवनपुन्यश्रुतिविदितबिसाला \* कहहुकवनअघपरमकराला  
 मानसरोग कहहु समुझाई \* तुम्हसर्वज्ञ कृपा अधिकई  
 तातसुनहु सादर अतिप्रीती \* मैं संछेप कहों यह नीती  
 नरतनसमनहिंकवनिउँदेही \* जीवचराचर जाचत जेही  
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी \* ज्ञानविरागभगति सुभदेनी  
 सोतनधरिहरिभजहिंनजेनर \* होहिं विषयरत मंद मंदतर  
 काँच किरिच बदलेते लेहीं \* करते डारि परसमनि देहीं  
 नहिंदरिद्रसम दुषजगमाहीं \* संतमिलनसमसुषजगनाहीं  
 परउपकार वचन मनकाया \* संतसहज सुभाउ षगराया  
 संतसहहिं दुषपरहित लागी \* परदुषहेतु असंत अभागी  
 भृजतरूसम संत कृपाला \* परहितानितसहविपाति बिसाला  
 मनइवषल परबंधन करई \* षालकढाइविपतिसहिमरई  
 षलबिनुस्वारथपरअपकारी \* अहिमूषकइवसुनु उरगारी  
 परसंपदा बिनासि नसाहीं \* जिमि ससिहतिहिमउपलबिलाहीं  
 दुष्टउदय जगअनरथ हेतू \* जथाप्रसिद्ध अधम ग्रहकेतू  
 संत उदय संतत सुषकारी \* विस्वसुषद जिमिइंदुतमारी  
 परमधर्मश्रुतिविदितअहिंसा \* परनिंदासम अघ नगरिमा  
 हरिगुर निंदक दादुर होई \* जन्म सहस्र पावतन सोई  
 द्विजनिंदकबहुनरकभोगकरि \* जगजनमै बायस सरीरधरि  
 सुरश्रुतिनिंदकजेअभिमानि \* रौरव नरक परहिं ते प्राणी  
 होहिं उलूक संत निंदारत \* मोहनिसाप्रियज्ञानभानुगत  
 सबकै निंदाजे जड करहीं \* तेचमगादुर होइ अवतरहीं



सुनहुतात अव मानसरोगा \* जिन्हते दुषपावहिंसवलोगा  
 मोहसकलव्याधिन्हकरमूला \* तेहितेपुनि उपजहिं बहुमूला  
 कामबात कफलोभ अपारा \* क्रोधपित्त नितछाती जारा  
 प्रीतिकरहिं जों तीनि उभाई \* उपजै सन्यपात दुखदाई  
 विषय मनोरथ दुर्गम नाना \* तेसब मूलनाम को जाना  
 ममता दाहु कुंड इरषाई \* हरष विषाद गरह बहुताई  
 परसुष देषिजरनि सोइछाई \* कुष्ट दुष्टतामन कुटिलई  
 अहंकारअतिदुषदहमरुआ \* दंभकपटमदमान नेहरुआ  
 तृष्णाउदर वृद्धिअतिभारी \* त्रिविधिईषनातरुन तिजारी  
 जुगविधिज्वरमत्सरअविवेका \* कहँलगिकहों कुरोगअनेका  
 दो० एकव्याधि वस नरमरहिं, एअसाधि बहुव्याधि ॥

पीढहिंसंतत जीवकहँ, सोकिमि लहइ समाधि ॥

नेमधर्म आचार तप, ज्ञान जज्ञ जप दान ॥

भेषजपुनिकोटिन्हनहिं, रोगजाहिं हरिजान १२१॥

एहिविधिसकलजीवजगरोगा \* सोकहरषभय प्रीतिवियोगी  
 मानस रोग कछुक में गाए \* हहिंसवकेलषिविरलेन्हपाये  
 जानेते छीजहिं कछु पापी \* नासनपावहिंजनपरितापी  
 विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे \* मुनिहु हृदयकानर बापुरे  
 रामकृपा नासहिं सवरोगा \* जों इहिभांति बने संजोगा  
 सदगुर वैद वचन विस्वासा \* मंजम यहनविषयकै आसा  
 रघुपतिभगतिसजीवनिमूरी \* अनूषान श्रद्धामति पूरी  
 एहिविधिभलेहिसोरोगनसाहीं \* नाहितजतनकोटिनहिं जाहीं  
 जानिअतबमनविरुजगोसाई \* जबउरबलविरागअधिकाई

सुमतिछुधा बाढै नित नई \* विषय आस दुर्बलता गई  
 विमलाज्ञानजलजब सांनहाई \* तवरह राम भगति उरछाई  
 सिवअजसुकसनकादिकनारद \* जेमुनि ब्रह्मविचार बिसारद  
 सबकर मतषगनायक एहा \* करिअ रामपद पंकजनेहा  
 श्रुतिपुरान सदग्रंथ कहाहीं \* रघुपतिभगतिबिनासुषनाहीं  
 कमठपीठ जामहिं बरुबारा \* बंध्यासुत बरुकाहुहि मारा  
 फूलहिंनभबरुबहुविधिफूला \* जीवनलहसुषहरिप्रतिकृला  
 तृषाजाइ बरुमृगजल पाना \* बरुजामहिंसससीसाविषाना  
 अंधकार बरुरविहि नसावै \* रामविमुष न जीव सुषपावै  
 हिमते अनल प्रगटबरुहोई \* विमुषराम मुष पावन कोई  
 दो० बारि मथे घृतहोई बरु, सिकता ते बरु तेल ॥

बिनुहरि भजननभवतारिअ, यहसिद्धान्तअपेल ॥  
 मसकहि करौं बिरांचि प्रभु, अजहि मसक तेहीन ॥  
 असविचारि तजि संसय, रामहि भजहिं प्रवीन ॥

श्लोक—विनिश्चितं वदामिते न अन्यथा वचांसि मे ॥

हरिनराभजंति जेति दुस्तरंतरंतिते ॥ १२२ ॥

कहे उनाथहरि चरितअनूपा \* व्याससमासस्वमति अनरूपा  
 श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी \* रामभजियसबकाजबिसारी  
 प्रभुरघुपतितजिसेइअकाही \* मोहिसेसठ परममता जाही  
 तुम्ह विज्ञान रूपनहिं मोहा \* नाथकीन्हिमोपरअतिछोहा  
 पूछेहु रामकथाअति पावनि \* सुकसनकादिसंभुमन भावनि  
 सतसंगति दुर्लभ संसारा \* निमिषि दंडभरि एकौबारा  
 देषुगरुडनिज हृदयविचारी \* मैं रघुवीरभजन अधिकारी

सकुनाधमसबभाँतिअपावन\* प्रभुमोहिकीन्हिविदितजगपावन

दो० आजुधन्यमें धन्यअति, जद्यपिसबविधिहीन ॥

निजजनजानि राममोहि, संतसमागमदीन ॥

नाथजथामति भाषेउँ, राषेउँ नाहिकछुगोइ ॥

चरितसिंधुरघुनायक, थाहाकि पावै कोइ ॥ १२३ ॥

सुमिरि रामके गुनगननाना \* पुनिपुनिहरषभुसुंढिसुजाना

महिमानिगमनेतिकरिगाई \* अनुलित बलप्रताप प्रभुताई

सिवअज पूज्यचरन रघुराई \* मोपरकृपा परम मृदुल्राई

अससुभाउकहुँ सुनउँनदेषों \* केहिषगेसरघुपति समलेषों

साधक सिद्ध विमुक्त उदासी \* कविकोविदकृतज्ञ सन्यासी

जोगी मूर सुतापस ज्ञानी \* धर्म निरत पंडित विज्ञानी

तरहिँनबिनुसेए ममस्वामी \* रामनमामिनमामिनमामी

सरन गए मोसे अध रासी \* होहिंसुद्धनमामिअविनासी

दो० जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय मूल ॥

सो कृपाल मोहितोहिपर, सदा रहउ अनुकूल ॥

सुनि भुसुंढिके बचन सुभ, देषिराम पदनेह ॥

बोलेउ प्रेमसहित गिरा, गरुड विगत संदेह ॥ १२४ ॥

मैंकृत कृत्य भएउँतबबानी \* सुनिरघुवीरभगतिरससानी

रामचरन नूतन रति भई \* मायाजनितविपति सबगई

मोहजलधिवोहिततुम्हभए \* मोकहँ नाथविविध सुषदए

मोपहिँहोइन प्रतिउपकारा \* बंदौंतब पदवारहिँ बारा

पूरन काम राम अनुरागी \* तुम्हसमतातनकोउबडभागी

संतबिटपसरितागिरिधरनी \* परहित हेतुसबन्ह कैकरनी

संतहृदय नवनीत समाना \* कहाकविन्हपरिकहेनजाना  
निज परिताप द्रवेनवनीता \* परदुष द्रवहिंसंत सुपुनीता  
जीवनजन्मसुफलमम भएऊ \* तवप्रसाद सब संसय गएऊ  
जानेहुसदामोहिनिजकिंकर \* पुनिपुनिउमाकहइबिहंगवर  
दो० तासुचरनसिरनाइकरि, प्रेमसहित मतिधीर ॥

गएउगरुड बैकुंठतब, हृदयराषि रघुवीर ॥

गिरिजासंत समागम, समन लाभ कछुआन ॥

बिनुहरि कृपान होइसो, गावहिं बेदपुरान ॥ १२५ ॥

कहेउपरम पुनीतइतिहासा \* सुनतश्रवनछूटहिंभव पासा  
प्रनत कल्पतरुककृणा पुंजा \* उपजै प्रीति रामपद कंजा  
मनक्रमबचनजानिअघजाई \* सुनहिंजेकथा श्रवन मनलाई  
तीर्थाटन साधन समुदाई \* जोग विराग ज्ञान निपुनाई  
नानाकर्म धर्म व्रत दाना \* संजमदम जपतपमष नाना  
भूत दयाद्विज गुर सेवकाई \* विद्या विनय विवेक बडाई  
जहँ लगिसाधनबेद बषानी \* सबकरफलहरिभगतिभवानी  
सोरघुनाथभगतिश्रुति गाई \* राम कृपा काहू एक पाई  
दो० मुनिदुर्लभ हरिभगति नर, पावहिं विनहिं प्रयास ॥

जेयहकथा निरंतर, सुनहिं मानि बिस्वास ॥ १२६ ॥

सोइ सर्वज्ञगुनी सोइ ज्ञाता \* सोइमहिमंडित पंडितदाता  
धर्मपरायनसोइ कुल वाता \* रामचरन जाकर मन राता  
नीतिनिपुनसोइपरमसयाना \* श्रुतिसिद्धान्तनीकतेहिजाना  
सोइकविकोविदसोइरनधीरा \* जो छल छौंढिभजै रघुवीरा  
धन्य दंस सो जहँ मुरसरी \* धन्यनारिपतिव्रत अनुसरी



धन्यसो भूप नीति जोकरई \* धन्यसो द्विजनिजधर्मनटरई  
 सोधनधन्यप्रथमगतिजाकी \* धन्यपुन्यरतमतिसोईपाकी  
 धन्यघरीसोई जब सतसंगा \* धन्यजन्मद्विजभगतिअभंगा  
 दो० सोकुल धन्यउमा सुनु, जगत पूज्य सुपुनीत ॥

श्रीरघुवीर परायन, जेहिनर उपज विनीत ॥१२७॥

मति अनुरूप कथामें भाषी \* जद्यपिप्रथम गुप्तकरि राषी  
 तबमनप्रीतिदोषि अधिकारई \* तौ में रघुपति कथा सुनाई  
 यहनकहियसठहीहठसीलहि \* जो मनआइनसुनहरि लीलहि  
 कहियनलोभिहिकोविहिकामिहि \* जोनभजइसचराचरस्वामिहि  
 द्विजद्रोहिहिनसुनाइअकबहूँ \* सुरपतिसरिसहोइनृप जबहूँ  
 रामकथा के तेइअधिकारी \* जिन्हकेसतसंगतिअतिप्यारी  
 गुरुपद प्रीति नीति रत जेई \* द्विज सेवक अधिकारी तेई  
 ताकहूँ यहविसेष सुषदाई \* जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई  
 दो० रामचरन रति जोचह, अथवाँ पद निर्वाण ॥

भावसहित सोयह कथा, करौश्रवन पुटपान १२८॥

रामकथा गिरजा में बरनी \* कलिमलसमनि मनोमलहरनी  
 संसृत रोग सजीवन मूरी \* रामकथा गावाहिं श्रुतिमूरी  
 एहिमह रुचिर सप्तसोपाना \* रघुपति भगतिकेर पंथाना  
 अतिहरि कृपाजाहि परहोई \* पाउँ देइ एहि मारग सोई  
 मनकामना सिद्धिनर पावा \* जेयहकथाकपटताजि गावा  
 कहाहिंसुनहिअनुमोदनकरहीं \* तेगोपदइवभव निधि तरहीं  
 सुनिसबकथाहृदयअतिभाई \* गिरिजाबोली गिरासोहाई  
 नाथ कृपा ममगत संदेहा \* रामचरनउपजेउ नव नेहा

दो० में कृत कृत्य भइउँ अब. तवप्रसाद विस्वेम ॥

उपजीगम भगति दृढ, बीते सकल कल्लेस ॥ १२९ ॥

यह सुभ मंभुउमा संवादा \* सुषसंपादन समन विषादा  
भव भंजन गंजन मंदेहा \* जनरंजन सज्जन प्रियएहा  
राम उपासक जेजग माहीं \* यहसमप्रियतिन्हकेकछुनाहीं  
रघुपतिकृपाजथामतिगावा \* मैं यह पावन चरितसुहावा  
एहिकलिकालनसाधनदूजा \* जोगजग्य जप्रतप ब्रतपूजा  
रामहि सुमिरिय गाइअरामहि \* संततसुनिअरामगुनग्रामहि  
जासुपतित पावन बडवाना \* गावहिंकवि श्रुतिसंतपुराना  
ताहिभजिअमनतजिकुटिलाई \* रामभजे गतिकेहि नहिंपाई

छं० पाईनकेहिगतिपतितपावनरामभजिसुनुसठमना ॥  
गनिकाअजामिलव्याधगीधगजादिषलतारेघना ॥  
आभीरजमनकिरातषसस्वपचादिअतिअघरूपजे ॥  
कहिनाम बारकतेपिपावन होहिराम नमामिते ॥  
रघुवंमभृषनचरित यहनरनारि सुनहिं जेगावहीं ॥  
कलिमलमनोमलधोइविनुश्रमरामधामसिधावहीं ॥  
मत पंचचौपाई मनोहर जानि जोनर उर धरे ॥  
दासुन अविद्या पंचजनित विकार श्रीरघुवरहरे ॥  
मुंदरमुजानाक्रिपानिधान अनाथपरकरप्रीतिजो ॥  
मो एकराम अकामहितनिर्बानप्रदसम आनको ॥  
जाकी कृपालवलेसते मतिमन्द तुलसी दासहूँ ॥  
पायो परम विश्राम राम समान प्रभुनाहीं कहूँ ॥

दो० मोमम दीनन दीनहित, तुम्ह समान रघुवीर मा०प० ३०

अस विचारि रघुवंसमनि, हरहु विषम भवभीर ॥

कामिहिनारिपिआरिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम नवाह ९

तिमिरघुनाथनिरंतरप्रियलागहुमोहिराम ॥ १३० ॥

श्लोक—यत्पूर्वप्रभुणाकृतंसुकविना श्रीशंभुनादुर्गमं ॥

श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यैतुरामायणं ॥

मत्वातद्रघुनाथनामनिरतंस्वांतस्तमःशांतये ॥

भाषावद्धमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसं १ ॥

पुण्यपापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्तिप्रदं ॥

मायामोहमलापहंसुविमलंप्रेमांबुपूरंशुभं ॥

श्रीमद्रामचरित्रमानममिदंभक्त्यावगाहंतिये ॥

तेमंमारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंतिनोमानवाः ॥ २ ॥

इति श्रीराम चरित मानमे सकलकलिकलुप विध्वंसने

अविरल हरिभक्ति सम्पादिनी नामसप्तमः

\* सोपानः संपूर्ण शुभं \*

श्रीजानकी बलभा विजयते ॥

ग्रंथसंख्या श्लोक १४१८



## ॥ आरती ॥

आरतिश्रीरामायनजीकी । कीरतिकलितललितसियपीकी  
गावतब्रह्मादिकमुनिनारद । बालमीक विज्ञान विसारद ॥  
सुकमनकादिसेसअरुसारद । बरनिपवनसुतकीरतिनीकी १  
गावत वेदपुरान अष्टदस । छवोसास्त्रसब ग्रंथन को रस ॥  
मुनिजनधनसंतनकोसर्वस । सारअंससम्मतसबहीकी ॥२॥  
गावत संततसंभु भवानी । अरुघटसंभव मुनि विज्ञानी ॥  
व्यासआदि कविवर्जवषानी । कागधुसुंढिगरुडकेहीकी ३॥  
कलिमलहरनिविषयरसफीकी । सुभगसिंगारभक्तिजुवतीकी  
दलनिरोग भवमूरि अमीकी । तातमातुसबविधितुलसीकी ४

✽ इति आरती संपूर्णम् ✽

## ॥ आरती ॥

जगमगजगमगजोतिजगी है।रामआरतीहोनलगीहै ॥ टेक  
कंचनभवनरतनींसहासन । दासनडाँसेझिलिमिलिडामन ॥  
तापरराजतजगतप्रकासन।देखतल्लविमतिप्रेमपगीहैरामआरती  
महकतधूपवरतमहताबी । झलकत कुंडल रबिल्लविदाबी ॥  
अंगअंगसुन्दरताफाबी । आनंदकीसरिताउमगीहै रामआरती  
घंटाघड़ी मृदंग बजावत । नूपुर पगभरि नाचत गावत ॥  
पूरितसंखहिचवरडोलावत।सुनतहिदूरिबलायभगी रामआरती



रूप देषि जननी हरपतुहैं । अञ्जुरिनदेव सुमन वरसतुहैं ॥  
 करिदंडवतचरनपरसतुहैं । सुमतिरामकेरंगरंगीहैं राम आरती  
 नषसिष छविथरकी । आरती करिये मियवरकी ॥ टेक ॥  
 लालपीतअंबरअतिमाजें । सुषनिरपत मारद भमि लाजें ॥  
 तिलक चिलक भालन परराजें । कुंकुमकेसरकी ॥ आ० ॥ १  
 सीम फूल कुंडल झलकतुहैं । चन्द्रहार मोती हलकतुहैं ॥  
 करकंकनकीछवि छलकतुहैं । जगमगदिनकरकी ॥ आ० ॥ २  
 मृदुतरवन में अधिकललाई । हाम बिलामनकछुकहिजाई ॥  
 चितवनकीगतिअतिसुखदाई । मनहीमनफरकी ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 सिंहासन पर चवर दुरतहैं । साजत बाजतजैजै उचरतुहैं ॥  
 सादरअस्तुतिदेवकरतुहैं । लोटरनि अनुचरकी ॥ आरती ४

✽ ॥ इति ॥ ✽

भवप्रकारकी पुस्तकें मिलने का पता

मुन्शी मथुराप्रसाद बुक्सैलर

मु० राजगोपाल पाठशाला के नीकें

श्री० अयोध्याजी

दूसरा पता

भार्गव बुकडिपो चौक कशीजी

तीसरा पता

पंडित रामरत्न वाजपेयी,

मैनेजर

लखनऊ स्ट्रीम प्रिंटिङ्ग प्रेस लखनऊ

उत्तरकाण्ड ।

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	१४	पाइ	पाइ
	१५	मोर	मोर
४७९	३	पथी	पथी
	१७	एकयकन्ह	एक एकन्ह
४८०	१२	नरग	नगर
	१३	प्रभ	प्रभु
४८३	६	भरही	भरही
४८४	१८	प्रभ	प्रभु
४८६	८	भव	भव
४८७	१६	मुदा	मदा
४८८	१६	दयाकरि	दायाकर
४८९	११	विविथ	विविध
४९३	२३	महस	महेस
४९८	१०	प्रति	श्रुति
५०३	१३	काऊ	कोऊ
५०४	६	धम	धरम
	१३	ग्रह	ग्रिह
	१७	कृपासिंधुक	कृपासिंधुके
५०५	१५	विधि	विधि
५०७	२३	परि	पर
५०८	२३	कटु	कलु
५०९	१	जप	जपि
	१७	उह	उप
५१०	८	विन	विनु
	१०	विन	विनु
	११	भसुंड़ि	भुसुंड़ि
५१४	८	भयउ	गयउ
५१२	६	विधि	विधि
५१५	८	विक	वित
	६	यस	यह
	१४	विन	विनु
	१७	साह	सोइ

शुद्धशुद्ध अक्षरकाल्ड २

पत्र अंक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१६	१	करं	करं
	६	दिम	दिमि
	१७	तदि	ते
४१६	१६	पपेस	पपेस
४१७	१७	फिरन	फिरहि
४१८	१८	राळे	पाळ
४२१	१	जान	नाना
	४	श्रमनि	श्रमनि
	२१	जागा	जाना
४२२	२	जेसे	जेसे
४२४	१	सिद्ध	सिद्धि
	२	मिति	मितिहि
	३	विन	विनु
	१८	विसेपी दपा	विसेपी दपा
	१७	कोट	कोटि
४२६	१	तत कोटि	तत कोटि
	१२	प्रभुभाव	प्रभुभाव
४२७	१७	सोनाथ	सोनाथ
	२	विधि	विधि
४३१	२२	सब जानि	सब जानि
४३३	२	अघम	अघम
	६	विचार	विचारि
	६	काम	काम
४३४	२	हरि	हर
४३५	११	प्रतीत	प्रतीत
४३६	१	पंडित	पंडित
	२	निगुन	निगुन
४४०	१६	माइ	माहि
४४२	२	उपाइ	उपाइ
४४३	२	अवाधी	अवाधी
	१६	संजोग	संजोग
४४४	४	रुड	रुड
४४६	४	मुप	मुप
४४७	२०	वरि	वरि
४४८	६	कुंड	कुंड

इति

